ज्योतिष पीयूष

जन्मकुण्डली कैसे बनायें? कैसे देखें?

महापहोपाध्याय
पं. कल्याणदत्त शर्मा
ज्योतिषाचार्य, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त

ज्योतिष पीयूष

(जन्म कुण्डली कैसे बनाएँ ? कैसे देखें ?)
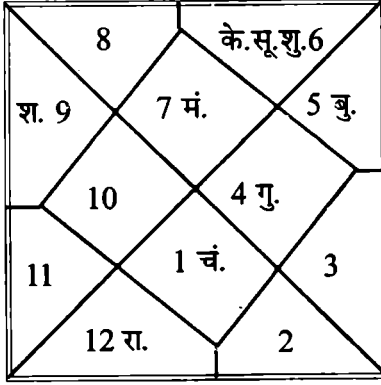
वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा
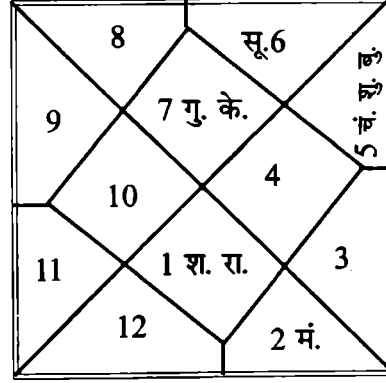
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

लेखक

महामहोपाध्याय पं. कल्याणदत्त शर्मा

ज्योतिषाचार्य, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्-शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

सन् 2012 मूल्य- 160/-

ज्योतिष-पीयूष

(जन्मकुण्डली कैसे बनाएँ? कैसे देखें?)

लेखक

महामहोपाध्याय पं० कल्याणदत्त शर्मा

ज्योतिषाचार्य, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्-शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

चतुर्थ संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

गुरुपूर्णिमा संवत् 2064

ISBN : 81-8255-006-8

मूल्य- 160.00

सम्पर्कसूत्र :

गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज

हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249411

फोन : 01334-260602, फैक्स : 260866

E-mail : shantikunj@awgp.org

Website : www.awgp.org

समर्पण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ॐ वन्दे भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम्।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥

जिन्होंने वशिष्ठ-अरुन्धती, अत्रि-अनसूया जैसे ऋषि कल्प जीवन जीकर इस युग में ऋषि परम्परा को साकार कर दिखाया, देव संस्कृति के गूढ़ तत्त्वों को युगानुकूल और जन सुलभ बनाया, जिनके सान्निध्य में पहुँचकर ज्योतिर्विज्ञान को दुरूहता और रूढ़िवादिता से उबार कर सहज और प्रगतिशील बनाने का संकल्प उभरा, उन्हीं युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा के युगल चरणों में, उन्हीं के दिव्य संरक्षण में विकसित "ज्योतिष पीयूष" श्रद्धा सहित समर्पित है।

\- कल्याण दत्त शर्मा

आमुख

'ज्योतिष' उन विधाओं में से एक है, जिसमें हमारे ऋषियों की चमत्कारी मेधा का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। आज के विद्वान् वर्तमान विज्ञान के तमाम विकसित यंत्रों के उपयोग और क्लिष्ट गणितीय सूत्रों के सहयोग से किए गए शोध कार्यों के बाद जिन निष्कर्षों पर पहुँचे हैं, उन्हें ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले तब स्थापित कर दिया था, जब इस प्रकार के कोई संसाधन नहीं थे। एस्ट्रोलॉजी (फलित ज्योतिष) को लेकर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन एस्ट्रोनामी (गणित ज्योतिष) तो विशुद्ध विज्ञान (प्योर साइंस) का विषय है। भारतीय मनीषियों ने आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के जो सूत्र हजारों साल पहले निर्धारित किए थे, वे आज भी उन्हीं रूपों में यथावत् मान्य हैं। जैसे-आकाश को 27 नक्षत्रों एवं 12 राशियों में वर्गीकृत किया जाना। ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों के बीच की सापेक्ष गति (रिलेटिव स्पीड) का सही-सही आकलन तथा उस आधार पर उसकी आकाशीय स्थितियों का पूर्व निर्धारण। आकाशीय पिण्डों की गति के मापन के लिए कोणीय गति (ऍगुलर वैलॉसिटी) का निर्धारण। उसके लिए आकाश वृत्त को 360 अंशों (डिगरीज) में विभक्त करना। यही नहीं सूक्ष्म मापन के लिए तब निर्धारित अंश, कला, विकला,जो आज डिगरी, मिनिट एवं सैकिण्ड के रूप में स्थापित हैं।

सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण किन खगोलीय परिस्थितियों में संभव होते हैं, इनकी ठीक-ठीक जानकारी तथा उसकी सटीक गणना भी हजारों वर्ष पूर्व विपरीत परिस्थितयों में भी कर ली गई है। ग्रहण के लिए अनिवार्य सूर्य एवं चन्द्र के भासित भ्रमण पथ (एप्रेण्ट पाथ) के संपात बिन्दुओं (एसेन्डिग डिसैन्डिग नोड्स) को राहु एवं केतु के संबोधन से नामित कर उन्हें गणित में शामिल करके ग्रहण के स्पर्श, मध्य एवं मोक्षकाल की सही गणना करने की पद्धति आज भी उसी रूप में मान्य है।

वर्तमान विज्ञान को इस निष्कर्ष पर पहुँचने में बहुत समय लगा कि समस्त आकाशीय पिण्डों में परस्पर सघन सम्बन्ध है तथा ब्रह्माण्ड एक चेतन इकाई की तरह कार्य करता है, किन्तु ज्योतिर्विज्ञान तो हजारों वर्ष पूर्व से इसी अवधारणा को आधार मानकर आकाशीय पिण्डों के पारस्परिक प्रभाव(म्युचुअल एफैक्ट्स) का अध्ययन करता है और सार्थक निष्कर्षों तक पहुँचता रहा है। ऐसे और तमाम तथ्य हैं, जिनके आधार पर इस असाधारण विज्ञान की शोध और स्थापना करने की अद्भुत क्षमता का लोहा मानना पड़ता है।

यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि मध्ययुग में लम्बे समय तक ज्योतिष विद्या उन तथाकथित ज्योतिर्विज्ञों तक ही सीमित रही, जो उसका उपयोग अपने निर्वाह-अर्थोपार्जन के लिए करते रहे। इसी काल में ज्योतिष के साथ तमाम रूढ़िवादी-अन्ध मान्यताएँ जुड़ गईं। इन्हीं कारणों से ज्योतिष विद्या को काफी बदनामी भी झेलनी पड़ी।

लेकिन समय ने करवट ली। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्योतिर्विज्ञान पर शोध कार्य किए जाने लगे। प्रतिभावानों ने उस ओर ध्यान दिया। उसमें प्रवेश कर गए विकारों को हटाकर, संस्कारों को प्रकाशित करने का क्रम चल पड़ा। ज्योतिष विद्या को पुनः उसके जनोपयोगी, विवेक सम्मत रूप में जन-जन तक पहुँचाने के लिए भी प्रयास किए जाने लगे इसी दिशा में **आद. पं. कल्याणदत्त शर्मा जी** का यह लेखन एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में जुड़ा है। उनकी इस रचना को संवारने में श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के वरिष्ठ प्राध्यापक **डॉ० देवी प्रसाद त्रिपाठी** की भूमिका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार इन पूज्य महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करता है।

ज्योतिष अपने स्वाभाविक रूप में एक ऐसी अद्भुत विद्या है, जो भौतिक परिस्थितियों (आकाशीय पिण्डों की सापेक्ष स्थिति) मानसिक स्थितियों (मन-बुद्धि की दिशा और क्षमताओं)तथा चेतन(आध्यात्मिक प्रवाहों) के सुसंयोग से जीवन को समग्रता की ओर ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। किसी भी विद्या का उच्च स्तरीय लाभ उठाने के लिए उसके प्रति वैज्ञानिक जैसी निष्ठा और कलाकार जैसी दक्षता की जरूरत पड़ती है। ज्योतिष के संदर्भ में भी यह अनुशासन जरूरी है। जब उसके हलके ढंग से, कुछ स्थूल क्रिया-कलापों, कर्मकाण्डों तक ही सीमित मानकर चला जाता है, तो उसकी विशिष्टता भी सुप्त या लुप्तप्राय हो जाती है।
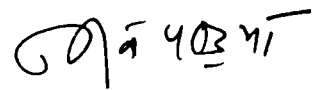
गायत्री परिवार के संस्थापक परम पूज्य युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी कहते रहे हैं कि ज्योतिष को उसके प्रगतिशील रूप में पुन: स्थापित करना जरूरी है। इसके लिए आवश्यक है कि-ज्योतिर्विज्ञान के गणित एवं फलित सूत्रों को जनसुलभ रूप में प्रस्तुत किया जाय, ताकि उसे रूढ़िवादी या अन्धविश्वास के स्तर से उठाकर जीवन के उपयोगी विज्ञान के रूप में समझा-समझाया जा सके।

गणित करने वाले विज्ञ जन इस विज्ञान की गरिमा की रक्षा का अपना दायित्व मानते हुए उसमें आलस्य या प्रमाद न बरतें। लग्न चक्र आदि बनाते समय भचक्र में ग्रहों की ठीक-ठीक स्थिति निर्धारित करें। इसके लिए जातक के जन्म स्थल के आक्षांश-देशान्तर को ध्यान में रखकर उनका संस्कार देकर ही ग्रह स्पष्ट करें। इसके लिए उपयोगी सूत्र एवं तालिकाओं का समावेश इस पुस्तक में किया गया है।

दैवज्ञ (ज्योतिषी)को देवोपासक, सदाचारी, प्रलोभनवृत्ति का त्याग करने वाला तो होना ही चाहिए। तभी साधक दैवज्ञ जिज्ञासु का समाधान भली-भांति कर सकेंगे। फलित के निष्कर्ष इस ढंग से प्रस्तुत किए जाएँ कि व्यक्ति का मनोबल या पुरुषार्थ उससे मन्द या कुन्द न हो, बल्कि उसको विकसित, दिशाबद्ध एवं प्रभावी बनाया जा सके। अन्तर्ग्रही प्रवाह विभिन्न ऋतुओं की तरह अपना प्रभाव प्रकट करते रहते हैं। उनके प्रभावों से बचने और अनुकूल प्रभावों का सदुपयोग निश्चित रूप से किया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र अन्त:ज्योति को परम ज्योति के अनुकूल प्रभावों से पुष्ट एवं समर्थ बनाने के लिए अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाए, ऐसे ही प्रयास किए जाने चाहिए।

ज्योतिष ऋषि आत्माओं का पुण्य प्रसाद है। इसका सदुपयोग करने वालों को चाहिए कि अपने भाव, विचार और प्रयासों को ऋषि अनुशासन के अनुरूप ढालने का प्रयास करें, तभी इस विद्या के साथ समुचित न्याय किया जा सकेगा। विश्वास किया जाता है कि यह **'ज्योतिष पीयूष'** ज्योतिष विद्या के अध्येताओं को उपयुक्त दिशा एवं दक्षता अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा।

ज्योतिष पीयूष का इतनी जल्दी निकलने वाला यह परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण इसकी लोकप्रियता को सिद्ध कर देता है। इस संस्करण में अन्य उन उपयोगी तथ्यों का समावेश कर दिया गया है, जो पिछले संस्करण में नहीं आ पाये थे। इस प्रकार यह संस्करण ज्योतिष की अभिरुचि वाले जिज्ञासुओं के लिए और भी उपादेय सिद्ध होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

डा० प्रणव पण्ड्या
कुलाधिपति
देव संस्कृति विश्वविद्यालय,
शान्तिकुञ्ज हरिद्वार।

गुरुपूर्णिमा संवत् 2064

विषयानुक्रमणिका

ज्योतिष-ग्रह, नक्षत्र और राशियाँ क्या हैं?

ज्योतिष क्या है?

आकाश में स्थित ज्योतिर्पिण्डों के संचार और उनसे बनने वाले गणितागत पारस्परिक संबंधों के पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने वाली विद्या का नाम ज्योतिष शास्त्र है।

ज्योतिष का इतिहास

वेद के 6 अंग-शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष हैं। वेद अपौरुषेय है इसलिये ज्योतिष जो कि वेदांग है वह भी अपौरुषेय है, अर्थात् सृष्टि के आदि से चला आ रहा है। कालक्रम से ज्योतिष शास्त्र के 18 प्रणेता माने गये हैं। यथा—

सूर्य: पितामहो व्यासो वशिष्ठोऽत्रिपराशरः। कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः॥
लोमशो पौलिशश्चैव च्यवनो यवनोभृगुः। शौनकोऽष्ठादश ह्येते ज्योतिशास्त्रप्रवर्तकाः॥

ज्योतिष शास्त्र के उक्त 18 प्रणेताओं के अतिरिक्त ज्योतिष की अपने शोधों और व्याख्या के द्वारा अभिवृद्धि करने वाले विद्वानों की एक लम्बी शृंखला है। ज्योतिष के प्रवर्तक ऋषियों के अनेक ग्रन्थ यवनों के आक्रमणों में नष्ट हो गये तथा बहुत से लुप्त हो गये हैं। फिर भी ज्योतिष की अमूल्य सामग्री प्रकाशित और अप्रकाशित रूप में सभी देशों में विद्यमान हैं।

ज्योतिष का विस्तार

ज्योतिष के प्रणेताओं ने बड़ी सूझबूझ से ग्रह-गणित और ग्रह-रश्मि के प्रभावों— दोनों को मिलाकर त्रिस्कन्ध ज्योतिष शास्त्र का निर्माण किया। स्कन्ध का अर्थ यहाँ विभागों से है। ज्योतिष के तीन भाग हैं। इन तीन भागों की अनेक शाखाएँ हो गई हैं। वाराहमिहिराचार्य ने कहा है-

ज्योतिः शास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम्।

अर्थात् ज्योतिष शास्त्र के विषय के अनुसार अनेक भेद हैं जो तीन स्कन्धों पर टिके हैं। ये तीन स्कन्ध (भाग) हैं:- 1- गणित 2- होरा 3-संहिता। यदि सरल करें, तो एक भाग है गणित-ज्योतिष और दूसरा है फलित-ज्योतिष। गणित में सिद्धान्त, करण, तन्त्र शाखायें हैं। गणित की इन शाखाओं से सृष्टि के आरम्भ से अब तक कितने वर्ष, मास, दिन व्यतीत हुए, बर्ष अयन, ऋतु, ग्रहों की गति, उनके युगों में सूर्य परिभ्रमण की संख्या, सूर्य-चन्द्र ग्रहण, तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि का ज्ञान होता है। इसमें प्राचीन काल के वेध यंत्रों की सहायता भी ली जा रही है। हजारों वर्ष पूर्व ज्योतिष की इस शाखा में भारतीय आचार्यों ने सिद्धता प्राप्त कर अनेक सिद्धान्त-ग्रन्थों की रचना की थी। यह खगोल ज्ञान है जिसे आधुनिक विज्ञान में "अस्ट्रानामी" कहते हैं।

ज्योतिष के बाकी दो स्कन्ध होरा और संहिता फलित खण्ड में आते हैं। वाराहमिहिर के अनुसार होरा शब्द अहोरात्र से अहो का "हो" और रात्र का "रा" मिलाकर बना है। अँग्रेजी में यही शब्द 'आवर' और ग्रीक भाषा में इसे "Hour" नाम से ही जाना जाता है। होरा स्कन्ध को "जातक" भी कहते हैं। होरा शास्त्र में मनुष्य की जन्मकालीन आकाशीय स्थिति का एक नक्शा तैयार किया जाता है। आकाश में जिस राशि-अंश में जहाँ-जहाँ ग्रह होते हैं, उन्हें उन स्थानों पर लिख दिया जाता है। इस नक्शे को ज्योतिष की भाषा में जन्म-लग्न, जन्मांग या जन्म

कुण्डली कहते हैं। इसके आधार पर मनुष्य के जन्म से मृत्यु-पर्यन्त जीवन की घटनाओं की फलित के अनुभूत सिद्धान्तों के अनुसार व्याख्या की जाती है। इसका दार्शनिक आधार पुनर्जन्म और कर्मवाद है।

संहिता भाग में आने वाली विषय सूची बहुत लम्बी है। जैसे-वर्षा, आँधी, भूकंप, नक्षत्र-धूमकेतु, उल्का, ग्रहण-प्रभाव, गृह-निर्माण, भूमि में पानी की स्थिति का ज्ञान, यज्ञादि के मुहूर्त, शकुन, रत्न परीक्षा, ग्रह नक्षत्रों का राष्ट्र पर प्रभाव, अंग-लक्षण आदि अनेक लोकोपयोगी विषय संहिता भाग में हैं। वाराहमिहिर कृत बृहत्संहिता में उपसंहार सहित 106 अध्याय हैं, जिनमें विभिन्न विषयों का वर्णन है। इसका संबंध व्यक्ति विशेष से नहीं वरन् राष्ट्रों और जन समूहों से है।

ज्योतिष की वर्णमाला

ज्योतिष के विस्तार को समझ लेने के बाद अब ज्योतिष की वर्णमाला आकाश में स्थित, ग्रह, राशि, नक्षत्र से परिचय करायेंगे। सबसे पहिले उस स्थान-आकाश को समझना है-जिसमें ग्रह, नक्षत्र, राशियाँ स्थित हैं। भचक्र या आकाश मण्डल में 360 अंश हैं, जैसे कि एक वृत्त में होते हैं। इसे बारह राशियों और 27 नक्षत्रों में विभाजित कर दिया गया है। इससे ग्रह कहाँ स्थित हैं इसका पता लगता है; क्योंकि सभी ग्रह अपने एक निश्चित मार्ग (कक्षा) में निरंतर सूर्य की परिक्रमा किया करते हैं। एक राशि में 30 अंश होते हैं। एक अंश में 60 कला और एक कला में 60 विकला। इस प्रकार आकाश का विभाजन कर दिया गया है। प्रारम्भिक विद्यार्थी के लिये निम्नांकित पैमाना जानना आवश्यक है:-

अन्तरिक्ष माप			कालमाप		
60 विकला	=	1 कला	60 विपल	=	1 पल (24 सेकण्ड)
60 कला	=	1 अंश	60 पल	=	1 घटी (24 मिनट)
30 अंश	=	1 राशि	60 घटी	=	1 अहोरात्र (24 घंटे)
12 राशि	=	भचक्र	30 अहोरात्र	=	1 मास
			12 मास	=	1 वर्ष

ग्रह

भारतीय ज्योतिष में नव ग्रहों का विचार किया जाता है। ये ग्रह हैं- सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु। इन नामों से सभी परिचित हैं; क्योंकि इनमें प्रथम सात के नाम पर सप्ताह के सात दिन विश्व में प्रचलित हैं। प्रथम सात दृश्यमान आकाशीय पिण्ड हैं। राहु-केतु छाया ग्रह हैं। खगोल की दृष्टि से पृथ्वी और चंद्रमा के अण्डाकार भ्रमण-पथ (ORBIT) जिन दो बिन्दुओं पर एक दूसरे को काटते हैं उनमें उत्तरी कटान बिन्दु (North Node) राहु और दक्षिण कटान बिन्दु केतु (South Node) कहे जाते हैं। ये दोनों बिन्दु ग्रहों की तरह गतिशील हैं तथा वक्र (उल्टी) गति से चलते हैं। भारतीय आचार्यों ने प्रज्ञाचक्षु से इनके प्रभाव को अनुभव कर इन्हें ग्रहों में स्थान दिया है। कालान्तर में कुछ वर्ष पूर्व हुई खोज के अनुसार ज्योतिष में नवीन ग्रह यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो शामिल कर लिये गये हैं। यूरेनस की खोज सन् 1789 में, नेपच्यून की 1846 में और प्लूटो की 1930 में हुई है। खगोल की दृष्टि से सूर्य ग्रह (Planet) नहीं, वरन् स्वयं के प्रकाश से प्रकाशवान् तारा (Star) है और चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। फलित में इनके पारस्परिक संबंध को समझने में सरलता हो इसलिये सभी को ग्रह की संज्ञा दी गयी है।

राशि

राशियाँ 12 हैं, इनके नाम हैं:- मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन। प्रत्येक राशि का क्षेत्र 30 अंश है। खगोल और फलित दोनों में विश्व के सभी देश इसी रूप में 12 राशियाँ मानते हैं। इनके नाम उनकी अपनी भाषाओं में हैं, अन्य कोई अन्तर नहीं है। फलित में इनके गुण धर्म में भी कोई मतभेद नहीं है। राशि के द्वारा ग्रहों की स्थिति जानी जाती है। जैसे पृथ्वी पर किसी नगर की सही स्थिति अक्षांश-देशान्तर से जानते हैं। वैसे ही आकाश में ग्रह की स्थिति का ज्ञान राशि, अंश, कला, विकला से होता है। हर राशि का अपना स्वरूप, गुण धर्म है जिस पर राशियों के विस्तृत विवरण में विचार किया जायेगा।

नक्षत्र

नक्षत्र तारा समूहों से बने हैं। इनमें हमारे सूर्य से कई गुना बड़े सूर्य तथा तारे हैं। भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों की संख्या 27 मानी गई है, कहीं अभिजित को लेकर 28 मानते हैं। 27 और 28 दोनों का उपयोग प्राचीन काल से आज तक हो रहा है। नक्षत्रों के नाम इस प्रकार हैं:-

1-अश्विनी	10-मघा	19-मूल
2-भरणी	11-पूर्वाफाल्गुनी	20-पूर्वाषाढ़ा
3-कृत्तिका	12-उत्तराफाल्गुनी	21-उत्तराषाढ़ा
4-रोहिणी	13-हस्त	22-श्रवण
5-मृगशिरा	14-चित्रा	23-धनिष्ठा
6-आर्द्रा	15-स्वाती	24-शतभिषा
7-पुनर्वसु	16-विशाखा	24-पूर्वाभाद्रपद
8-पुष्य	17-अनुराधा	26-उत्तराभाद्रपद
9-आश्लेषा	18-ज्येष्ठा	27. रेवती

इनमें से प्रत्येक नक्षत्र का क्षेत्र 13 अंश 20 कला है। इस प्रकार 27 नक्षत्रों में 360 अंश पूरे होते हैं।

अभिजित नक्षत्र का क्षेत्र इन्हीं के मध्य उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण और श्रवण के आरम्भ के 1/15 भाग को मिला कर है। इसका कुल क्षेत्र 4 अंश 13 मिनट 20 सेकेन्ड है।

राशि परिचय

12 राशियाँ आकाश मण्डल में स्थित हैं। राशि शब्द का अर्थ है ढेर अथवा समूह। चूँकि राशियाँ नक्षत्र समूह से बनी हैं इसलिये इन्हें राशि कहते हैं। अंग्रेजी में इन्हें साइन (Sign) कहते हैं। साइन का अर्थ है निशान, चिह्न। इनसे ग्रहों की स्थिति का पता चलता है। जो वस्तुएँ हम भूमण्डल में देखते हैं उन्हीं के अनुसार आकृति तारों से आकाश में बनी प्रतीत हुई, तो उसे वैसा ही नाम दे दिया गया। यह बात अनुभव में आई है और यह अनुभव हजारों वर्ष का है कि राशि के नाम या आकृति के अनुसार उसके गुण भी होते हैं।

12 राशियों के पूरे रूप को राशि चक्र या भचक्र कहते हैं। पाश्चात्य ज्योतिष में इसे जोडिएक (Zodiac) कहा जाता है। नाड़ीवृत्त के 23.5-23.5 अंश दोनों ओर याने 47 अंश की एक पेटी (Belt) है। इसी के अन्दर हमेशा सूर्य, चन्द्र तथा अन्य ग्रह भ्रमण करते दिखाई देते हैं। इसी को राशि चक्र कहते हैं। इस राशि चक्र का आरम्भ मेष से माना जाता है अर्थात् मेष राशि का नम्बर एक है।

मेष-	1	वृष-	2	मिथुन-	3	कर्क-	4
सिंह-	5	कन्या-	6	तुला-	7	वृश्चिक-	8
धनु-	9	मकर-	10	कुम्भ-	11	मीन-	12

राशियों के क्रमांक (नम्बर) याद रखना चाहिये, क्योंकि जन्मांग के 12 भावों में ये क्रमांक ही लिखे रहते हैं। उदाहरणार्थ अगर किसी के जन्मांग में सबसे ऊपर के खाने (भाव) में क्रमांक 5 लिखा है, तो इसका अर्थ है कि उसकी लग्न क्रमांक 5 की राशि अर्थात् सिंह है। जहाँ चं० लिखा है उसी खाने में अगर 8 संख्या लिखी है, तो इसका अर्थ हुआ कि उसका चन्द्रमा क्रमांक 8 अर्थात् वृश्चिक राशि में है। अर्थात् उसकी जन्म राशि वृश्चिक है।

हर राशि का रूप गुण आकार आदि का विवरण दे रहे हैं उसमें प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग ज्योतिष में किया गया है फलादेश में उसे लक्षणा से घटित किया जाता है।

मेष

मेष का अर्थ है मेढ़ा (नर भेड़)। इस राशि के तारों को मिलाकर यदि काल्पनिक रेखायें खींची जायें, तो मेढ़े का रूप बनता है, इसलिये इसका नाम मेष है। अँगरेजी में इसे एअरिईज (Aries) या (Ram) कहते हैं। यह 0 अंश से 30 अंश तक है। अश्विनी नक्षत्र के चार चरण, भरणी के चार और कृत्तिका के प्रथम चरण से मिलकर यह राशि बनती है। इसके अज, आद्य, विश्व, तुम्बूर भी नाम हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान-गिरिभू, दिशा पूर्व, क्रान्ति रूक्ष, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, पुरुष, चर, दृढ़, ह्रस्व, पशु, शुष्क, अग्नि-तत्त्व, चतुष्पद, लाल वर्ण, उष्ण, पित्त प्रधान, अति शब्द वाली राशि है। यह राशि कालपुरुष का मस्तक है। इस राशि का स्वामी मंगल है।

वृष

वृष का अर्थ है बैल या साँड। अंग्रेजी में इसे (Taurus) या (The Bull) कहते हैं। इसका विस्तार 30 अंश से 60 अंश तक है। कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी के चार चरण और मृगशिरा के दो चरण मिल कर यह राशि बनी है। इसे उक्ष, गो, गोकुल, द्वितीय और ताबुक नाम से भी जानते हैं। यह सम, सौम्य, रात्रिबली, स्थान-सम भू, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, कान्ति रूक्ष, वैश्य जाति, पृष्ठोदयी, स्त्री, स्थिर, ह्रस्व, शुष्क, पृथ्वी तत्त्व, चतुष्पद, श्वेत रंग, शीत गुण, वायु प्रधान, अति शब्द वाली राशि है। यह राशि काल पुरुष का मुख है। इसका स्वामी शुक्र है।

मिथुन

मिथुन का अर्थ है जोड़ा (स्त्री-पुरुष)। अंग्रेजी में इसे (Gemini) या (the twins) कहते हैं। इसका विस्तार 60 अंश से 90 अंश तक है। मृगशिरा के दो चरण, आर्द्रा के चार और पुनर्वसु के तीन चरण मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम युग, नृयुग्म, द्वन्द्व, यम, तृतीय और जितुम हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान-वन भू, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, स्निग्ध, कान्ति, शूद्र जाति, शीर्षोदयी, पुरुष, द्विस्वभाव, मृदु, सम, नर राशि, शुष्क, वायु तत्त्व, द्विपद, हरा रंग, ऊष्ण गुण, सम धातु, दीर्घ शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष की बाहु है। इसका स्वामी बुध है।

कर्क

कर्क का अर्थ है केकड़ा। अंग्रेजी में इसे (Cancer) कहते हैं। यह 90 अंश से 120 अंश तक है। पुनर्वसु का एक चरण, पुष्य के 4 चरण और आश्लेषा के चार चरण मिल कर यह राशि बनी है। इसे कर्कट, चतुर्थ, और कुलीर भी कहते हैं। यह सम, सौम्य, रात्रिबली, स्थान-जल भू, उत्तर दिशा की स्वामिनी, स्निग्ध-कान्ति, विप्र

जाति, पृष्ठोदयी, स्त्री, चर, मृदु, सम, जलचर, जल तत्त्व, अपद, गुलाबी रंग, शीत गुण, कफ धातु, हीन शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का वक्ष है। इसका स्वामी चंद्रमा है।

सिंह

सिंह का अर्थ है शेर। अंग्रेजी में इसे (Leo) कहते हैं। यह 120 अंश से 150 अंश तक है। मघा के चार चरण, पूर्वा फाल्गुनी के चार चरण और उत्तरा फाल्गुनी के एक चरण से मिलकर बनी है। इसके अन्य नाम मृगेन्द्र, पंचम, कंठीरव और लेय हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान-गिरि भू, पूर्व दिशा, स्थिर, दृढ़, दीर्घ, पशु राशि, शुष्क, अग्नि तत्त्व, चतुष्पद, धूम्रवर्ण, उष्ण, पित्त धातु, दीर्घ शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का हृदय है। इसका स्वामी सूर्य है।

कन्या

कन्या का अर्थ है अविवाहित बालिका। इसे अँगरेजी में (Virgo) कहते हैं। यह 150 अंश से 180 अंश तक है। उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण, हस्त के चार चरण और चित्रा नक्षत्र के दो चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम स्त्री, तरुणी, षष्ठ और पाद्योन हैं। यह सम, सौम्य, रात्रिबली, स्थान शुभ भूमि, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, रूक्ष, वैश्य जाति, शीर्षोदयी, स्त्री, द्विस्वभाव, कृष, दीर्घ, मनुष्य राशि, शुष्क, पृथ्वी तत्त्व, द्विपद, वर्ण पीला, गुण-शीत, धातु वायु, अर्द्ध शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का उदर है। इसका स्वामी बुध है।

तुला

तुला तराजू को कहते हैं। अंग्रेजी में इसे (Libra) कहते हैं। यह 180 से 210 अंश तक है। चित्रा के दो चरण, स्वाती के चार चरण और विशाखा नक्षत्र के तीन चरणों से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम पथ, तौलि, तूल, वणिक, घट, सप्तम, जूक हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान वन भू, पश्चिम दिशा की स्वामी, स्निग्ध, शूद्र जाति, शीर्षोदयी पुरुष, चर, दृढ़, दीर्घ, मनुष्य राशि, जल, वायुतत्त्व, द्विपद, वर्ण विचित्र, गुण उष्ण, धातु सम, हीन शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का वस्ति है। इनका स्वामी शुक्र है।

वृश्चिक

वृश्चिक का अर्थ है बिच्छू। अंग्रेजी में इसे (Scorpio) कहते हैं। इसकी स्थिति आकाश में 210 से 240 अंश तक है। विशाखा का चतुर्थ चरण, अनुराधा के चार चरण और ज्येष्ठा के चार चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम कीट, सरीसृप, अलि, अष्टम और कौर्प्य हैं। यह सम, सौम्य, रात्रि बली, स्थान सम भू, उत्तर दिशा की स्वामी, कान्ति स्निग्ध, विप्र जाति, शीर्षोदयी, स्त्री, स्थिर, कृश, दीर्घ कीट राशि, जलीय, जल तत्त्व, बहु पद, वर्ण श्वेत, गुण शीत, धातु कफ, शब्द हीन वाली राशि है। यह काल पुरुष का गुप्तांग है। इसका स्वामी मंगल है।

धनु

धनु का अर्थ है धनुष। इसका आधा अंग नर का और आधा अंग पशु का है। इसे अंग्रेजी में (Sagittarius) कहते हैं। इसका विस्तार 240 अंश से 270 अंश तक है। मूल के चार चरण, पूर्वाषाढ़ा के चार चरण और उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम धन्वी, चाप, शरासन, हय, तौक्षिक, जव, शरधर और नवम् हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान गिरिभू, पूर्व दिशा की स्वामी, रूक्ष कान्ति, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, पुरुष राशि, द्विस्वभाव, दृढ़ सम, नर-पशु, शुष्क, अग्नि तत्त्व, द्विपद, स्वर्ण वर्ण, उष्ण गुण, पित्त धातु, अति शब्दवाली राशि है। यह काल पुरुष की जंघा (जांघ) है। इसका स्वामी गुरु है।

मकर

मकर एक जलीय जन्तु है जिसे मगर भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे (Capricorn) कहते हैं। इसका विस्तार 270 अंश से 300 अंश तक है। उत्तराषाढ़ा के तीन चरण, श्रवण के चार और घनिष्ठा के दो चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम मृगास्य, मृग, नक्र, कुरंग, आकोकेरो और दशम हैं। यह सौम्य, सम, रात्रिबली, स्थान वनभू, दक्षिण दिशा की स्वामी, रूक्ष कान्ति, वैश्य वर्ण, पृष्ठोदयी, वर्ण पीला, गुण शीत, धातु वायु, अति शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का घुटना है। इसका स्वामी शनि है।

कुम्भ

कुम्भ घड़े को कहते हैं। अंग्रेजी में इसे (Aquarius) कहते हैं। यह 300 अंश से 330 अंश तक स्थित है। घनिष्ठा के दो चरण, शत्भिषा के चार चरण और पूर्वाभाद्रपद के तीन चरण से यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम घट, तोपघर और एकादश हैं। यह विषम, उग्र दिवा, बली, स्थान समभू, पशिचम दिशा की स्वामी, स्निग्ध कान्ति, शूद्र जाति, शीर्षोदयी, पुरुष राशि, स्थिर दृढ़, लघु जलधर, जलवायु तत्त्व, अपद, वर्ण हरा गुण ऊष्ण, धातु सम, शब्द फूटा वाली राशि है। यह काल पुरुष की पिण्डली है। इसका स्वामी शनि है।

मीन

मीन मछली को कहते हैं। इसे अंग्रेजी में (Pisces) कहते हैं। यह 330 अंश से 360 अंश तक स्थित है। पूर्वा भाद्रपद का चतुर्थ चरण, उत्तरा भाद्रपद के चार चरण तथा रेवती नक्षत्र के चार चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम मत्स्य, अन्त्य, द्वादश, पृथरोमा, झष, जलचर, मीनाली हैं। यह सम सौम्य, रात्रिबली, स्थान जलभू, उत्तर दिशा की स्वामी, स्निग्ध, विप्र जाति, उभयोदयी, स्त्री, द्विस्वभाव, दृढ़, लघु जलचर, जल तत्त्व, अपद, धूम्रवर्ण, गुण शीत, धातु कफ, हीन शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष के चरण हैं। इसका स्वामी गुरु है।

विशेष सूचनाएँ

12 राशियों को चार तत्त्वों में बाँटा गया है। पाँचवा तत्त्व आकाश व्यापक है, जिसमें यह चारों समाहित होते हैं। इसलिये उसे नहीं लिया गया है।

वर्गीकरण इस प्रकार है:-

अग्नि तत्त्व-	मेष, सिंह, धनु	(1-5-9)
पृथ्वी तत्त्व-	वृष, कन्या, मकर	(2-6-10)
वायु तत्त्व-	मिथुन, तुला, कुम्भ	(3-7-11)
जल तत्त्व-	कर्क, वृश्चिक, मीन	(4-8-12)

अग्नि तत्त्व की राशियों में तीव्रता, उष्णता; पृथ्वी तत्त्व में स्थिरता, भौतिकता; वायु तत्त्व में कल्पना, विचार-विवेक; जल तत्त्व में सरलता, भावुकता (Sentimental) गुण हैं।

राशियों के तीन स्वभाव हैं चर, स्थिर, द्विस्वभाव। चर में क्रियाशीलता, स्थिर में स्थिरता, दृढ़ता, वस्तुस्थितिवादी (Matter of fact) तथा द्विस्वभाव राशियों में चर और स्थिर का मिश्रित गुण होता है।

हर वर्ग में चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशि है, चूँकि तत्त्व तीनों का एक ही है। इसके एक ही तत्त्व की तीन राशियों में सूक्ष्म अन्तर पड़ता है।

उदाहरणार्थ-अग्नि तत्त्व की मेष राशि में क्रिया शक्ति अधिक है, पुरुषार्थ उत्साह है। कार्य तेजी से करता है। कार्य अति शीघ्र करने के कारण कई कार्य अधूरे छूट जाते हैं। अग्नि तत्त्व की सिंह राशि में काम में स्थिरता और परिपक्वता होती है। धनु में कार्य शीघ्र तथा सुलझे ढंग से करता है।

पृथ्वी की वृष (स्थिर) राशि में स्थिरता, क्रियात्मक (Practical) रूप से समझने और करने की शक्ति होती है। यह आदर्शवादी नहीं वरन् क्रियात्मक वस्तुस्थितिवादी होता है। इसी तत्त्व की मकर (चर) राशि क्रियाशील, भौतिकवादी होती है।

"स्व" और वर्तमान का विशेष ध्यान रहता है। कन्या (द्विस्वभाव) राशि में कार्य कुशलता, सजगता, बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्यक्षमता है।

वायु तत्त्व में तुला (चर) राशि में विचार शक्ति, क्रियात्मक रूप और निरीक्षण शक्ति विशेष है। कुम्भ (स्थिर) में विचारों की स्थिरता और स्मरण शक्ति की प्रबलता है। मिथुन (द्विस्वभाव) में अत्यन्त विचारशीलता और गतिशीलता है।

जल तत्त्व में कर्क में क्रियाशीलता, संवेदना-मस्तिष्क से कम, हृदय-भावनाओं से अधिक काम लेने का गुण है। इसी तत्त्व की वृश्चिक राशि में सरलता के साथ विचार अर्थात् मस्तिष्क से अधिक काम लेना और मीन में दोनों के गुण हैं।

उपयोग

ये राशियाँ जब लग्न में उदित होती हैं, तो जातक में उपरोक्त चारित्रिक विशेषताएँ होती हैं तथा इन राशियों में यदि कोई ग्रह स्थित होता है, तो उस पर राशि अपने निजी गुण के साथ ही उस स्थित ग्रह के गुण का भी प्रभाव सम्मिलित हो जाता है। यदि राशि और ग्रह दोनो में समान गुण हुए, तो ग्रह शक्तिशाली हो जाता है और यदि विपरीत गुण धर्म की राशि में है, तो ग्रह के स्वाभाविक गुण में परिवर्तन होता है।

राशियों के इन्हीं गुण धर्मों के आधार पर विभिन्न लग्नों के जातकों की जीवन धारा बहती है। जैसे वायु तत्त्व की लग्न वाले अधिकतर बौद्धिक, लेखक, समाज सुधारक, सन्त होते हैं; पृथ्वी तत्त्व की लग्न वाले भौतिकवादी, दुनियादार, प्रैक्टिकल, व्यापारी, अर्थप्रधान, कूटनीतिज्ञ होते हैं। सन्त तथा आध्यात्मिक बहुत कम होते हैं।

अग्नि तत्त्व में विजेता, शासक, अध्यात्मिक होते हैं। जल तत्त्व में कर्क में महात्मा, महापुरुष तथा शासक और वृश्चिक में वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर, सैनिक होते हैं। मीन में कलाकार, संगीतकार, कवि तथा महात्मा अधिकतर होते हैं।

आचार्यों ने राशियों के कुछ और वर्ग दिये हैं। एक से बारह तक राशियों में जिन राशियों की क्रम संख्या दो से नहीं कटती वे पुरुष, ओज, विषम या पॉजिटिव (Positive) राशियाँ तथा 2 से पूरी कट जाती हैं वे स्त्री, युग्म, सम या निगेटिव राशि कही जाती हैं।

अध्यात्मिक और धार्मिक राशि-कर्क, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ, मीन। बौद्धिक राशि (शास्त्रीय)-मिथुन, तुला, कुम्भ। भौतिक राशि-वृष, कन्या, मकर। अयन राशि-कर्क, मकर। कीट राशि- वृश्चिक (मतान्तर से कर्क) पशु राशि-मेष, वृष, सिंह, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध। नर राशि-मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्द्ध, कुम्भ।

12 राशियों के गुण धर्म के आधार पर ग्रहों के गुण धर्म को ध्यान में रखते हुए ग्रहों को उन राशियों का स्वामित्व दिया गया है। सूर्य-चन्द्र के पास एक-एक राशि है, बाकी ग्रहों को दो-दो राशियों का स्वामी माना गया है।

विवरण इस प्रकार है--

सूर्य-	सिंह
चंद्र-	कर्क
मंगल-	मेष, वृश्चिक
बुध-	मिथुन, कन्या
गुरु-	धनु, मीन
शुक्र-	वृष, तुला
शनि-	मकर, कुम्भ

मेष, कर्क, तुला, मकर-चर। वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ-स्थिर। मिथुन, कन्या, धनु, मीन-द्विस्वभाव राशि हैं।

ग्रह परिचय

भारतीय ज्योतिष में नव ग्रहों का विचार किया जाता है। इसमें सात आकाशीय पिण्ड हैं और दो राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं। नई खोज में ग्रह यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो का फलित में उपयोग पाश्चात्य ज्योतिष में करते हैं। भारतीय ज्योतिष आम तौर से फलित में इन्हें नहीं शामिल करते।

सूर्य

सूर्य खगोल की दृष्टि से पृथ्वी के सबसे निकट का तारा है जो स्वयं के प्रकाश से प्रकाशवान् है, जबकि अन्य ग्रह इसी के प्रकाश से प्रकाशित हैं। इस अर्थ में यह ग्रह न होकर तारा है। परन्तु फलित ज्योतिष में इसकी गणना ग्रहों में ही की जाती है।

पृथ्वी से सूर्य की मध्यम दूरी 9,26,57,209 मील है। यह गैस पिण्ड है जिसका व्यास 8,64,000 मील है। पृथ्वी से इसका आयतन 13 लाख गुना और परिमाण 3 लाख 33 हजार गुना है। सूर्य का नाभिकीय तापमान 4,00,00,000 F अंश है। विज्ञान इसकी उत्पत्ति के विषय में अभी निश्चित रूप से कुछ निर्णय नहीं कर पाया है। हिन्दू वैदिक मान्यता से सूर्य को देवता तथा साक्षात् भगवान् मानते हैं। सूर्य के अन्य नाम भानु, भास्कर, अर्क, तपन, पूषा, हेलि, मार्तण्ड और प्रभाकर हैं।

सूर्य सिंह राशि का स्वामी है। मेष राशि के 10 अंश पर परमोच्च और तुला के 10 अंश पर परम नीच स्थान पर होता है। यह चन्द्र, मंगल, गुरु को अपना मित्र, बुध को सम और शुक्र, शनि को शत्रु मानता है। मित्र ग्रहों की राशियों में स्थित होने पर मित्र गृही, शत्रु ग्रह की राशि में होने पर शत्रु गृही कहा जाता है। भारतीय ज्योतिष आम तौर से सूर्य को पाप ग्रह मानते हैं। मंत्रेश्वर और कल्याण वर्मा ने तथा होरा मकरन्दकार ने इसे पाप नहीं बल्कि क्रूर कहा है। सूर्य पाप ग्रह कदापि नहीं है। जिसकी प्रार्थना के वेदों में सैकड़ों मंत्र हैं, जिसे साक्षात् ब्रह्म मानते हैं, जो ज्योतिष में आत्मा और पिता का कारक है उसके प्रति पाप का विशेषण लगाना अनुचित है। सूर्य तीव्र ग्रह है। कठोर है, इसमें दग्धता का गुण है, लेकिन यह तीव्रता- कठोरता वैसी ही है जैसे पिता की अपने पुत्रों के साथ

होती है। इसीलिये महर्षि वशिष्ठ और पाराशर ने सूर्य के साथ "पाप" शब्द का प्रयोग नहीं किया। पाश्चात्य ज्योतिषी सेफारियल ने सूर्य को शुभ माना है। पाश्चात्य ज्योतिषी इसे अलगाव करने वाला ग्रह मानते है।

ज्योतिष में इसका रूप, गुण, स्वभाव इस प्रकार कहा है —

मधु पिंगल नेत्र, चतुरस्र देह, शुचि, पित्त प्रकृति, बुद्धिमान, थोड़े केश वाला, पुरुष ग्रह है। ऐसा मंत्रेश्वर ने कहा है। कल्याण वर्मा सूर्य को थोड़े बाल वाला, बुद्धिमान, सुन्दर स्वरूप, गम्भीर स्वर, सम शरीर, मधुपिंगल नेत्र, शूर, प्रतापी, स्थिर बताया है। आत्मा, शक्ति, अग्नि, राज्य, हड्डी, आँख, पिता, शासन, पूर्व दिशा, ताँबा आदि का विचार करने में कुण्डली में सूर्य की स्थिति देखी जाती है। इसका अर्थ है कि सूर्य इन विषय वस्तुओं का कारक है। आधुनिक कारकत्वों में शासक वर्ग, प्रधानमंत्री, मन्त्रिमण्डल, आई0ए0एस0 अधिकारी, न्यायाधीश, हृदय रोग, एटामिक एनर्जी, टेलीविजन, रेडियम, हेलियम, रेडियो एक्टीविटी, नेत्र चिकित्सक आते हैं। यह लग्न, नवम और दशम भाव का स्थिर कारक है। इसका अर्थ है जब इन भावों का विचार करें तो सूर्य की स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिये। पाश्चात्य ज्योतिषी सूर्य को सबसे अधिक महत्त्व देते हैं। सूर्य यदि कुण्डली में बलवान् होकर शुभ स्थान में है, तो सूर्य से सम्बन्धित विषयों का शुभ फल प्राप्त होगा।

चन्द्र

खगोल की दृष्टि से चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है; किन्तु ज्योतिष में इसे भी ग्रह माना गया है। पृथ्वी से चन्द्रमा की मध्यम दूरी 238000 मील है। चन्द्रमा का व्यास 2160 मील है। यह 12 राशियों की एक परिक्रमा 27 दिन7 घंटे 43 मिनट में पूरी करता है।

चंद्रमा के अन्य नाम सोम, इन्दु, तारापति, शीतांशु, शशि, राकापति हैं। अँगरेजी में मून (Moon) तथा फारसी में माहताब कहते हैं। चन्द्रमा का शरीर स्थूल, युवा, कृश, श्वेत वर्ण, काले केश, सुन्दर नेत्र, रक्त की प्रधानता, जल तत्त्व, मृदुवाणी शरीर से भी मृदु (कोमल) है। यहाँ स्थूल और कृश दोनों ही चन्द्रमा को कहा है। इसका भाव है शुक्ल पक्ष का स्थूल तथा कृष्णपक्ष का कृश।

मानसिक स्थिति का विचार करने के लिये चन्द्र को देखा जाता है। चन्द्रमा मन और माता का प्रमुख रूप से कारक और स्त्री ग्रह है। हर जलीय पदार्थ का विचार चन्द्रमा से किया जाता है। आधुनिक कारकत्वों में तरल औषधियों, सिंचाई विभाग, आयात-निर्यात, डेरी फार्म तथा मानसिक चिकित्सालय हैं। चन्द्रमा चतुर्थ भाव का स्थिर कारक है।

पृथ्वी के सबसे निकट होने के कारण चन्द्रमा का प्रभाव मनुष्य, वनस्पति, समुद्र और मौसम पर बहुत पड़ता है। भारतीय ज्योतिष में इसीलिये चन्द्रमा को लग्न के समान ही महत्व है। मनुष्य भौतिक शरीर, मन और आत्मा का समुच्चय है। लग्न से शरीर, चन्द्रमा से मन और सूर्य से आत्मा (आत्मिक बल) का विचार किया जाता है। चन्द्रमा के नक्षत्र के आधार पर ही राशि का नाम तथा विंशोत्तरी दशा का विचार किया जाता है।

मंगल

इस ग्रह की बहुत सी बातें पृथ्वी से मिलती जुलती हैं। पृथ्वी से इसकी मध्यम दूरी 48543000 मील है। मंगल का भूमध्यीय व्यास 4219 मील है और नाक्षत्रिक काल 687 दिन है; अर्थात् सूर्य की एक परिक्रमा 15 मील प्रति सेकण्ड मध्यम गति से चल कर 687 दिन में पूरी करता है।

ग्रहों में इसे सेनापति का दर्जा दिया गया है। इसकी जाति क्षत्रिय और युवावस्था बताई गई है। यह शक्ति का प्रतीक है। नैसर्गिक पाप ग्रह माना गया है। इसका रंग लाल है। अग्नि तत्त्व का ग्रह है। वीरता, बल, शस्त्र, युद्ध

सम्बन्धी विषय वस्तुओं का विचार मंगल से किया जाता है। यह सूर्य,चन्द्र, गुरु को मित्र, शुक्र, शनि को सम और बुध को शत्रु मानता है। इसकी अपनी राशि मेष और वृश्चिक है। मकर के 28 अंश पर परमोच्च और कर्क के 28 अंश पर परम नीच होता है। दशम भाव में इसकी स्थिति उत्तम मानी गई है। दशम भाव में यह दिग्बली होता है। मेष, कर्क, सिंह, और धनु लग्न वालों को यह ग्रह शुभ भावों का स्वामी होने से शुभ फलदायक होता है। मंगल जहाँ बैठता है, वहाँ से चौथे, सातवें, आठवें स्थान पर दृष्टि देता है।

बुध

3000 मील व्यास का यह सूर्य से सबसे निकट का ग्रह है। बुध के सूर्य से मध्यम दूरी 36,000,000 मील है। यह 88 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा 29.8 मील प्रति सेकण्ड की गति से चल कर पूरी करता है। पृथ्वी से देखने पर यह सूर्य से 27 अंश से दूर कभी नहीं जाता। इसकी कक्षा (भ्रमण पथ) पृथ्वी की कक्षा से नीचे है।

प्राचीन आचार्यों ने बुध का वर्णन इस प्रकार किया है। जो फलित में उपयोग किया जाता है- सुन्दर देह, हास्य, प्रिय, मधुर भाषी, हरित वर्ण, स्पष्ट वक्ता। इसे काल पुरुष की वाणी कहा गया है। यह पृथ्वी तत्त्व का ग्रह है और सभी ग्रहों में इसका पद युवराज का है। पांडित्य, वाक्शक्ति, कला निपुणता, गणित, लेखन कार्य का विचार बुध से किया जाता है। इसकी स्वराशि मिथुन और कन्या है। कन्या राशि के 15 अंश पर परमोच्च और मीन के 15 अंश पर परम नीच राशि में होता है। शुक्र और सूर्य को यह मित्र और मंगल, गुरु, शनि को सम मानता है। वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर लग्न को शुभ फलदायक होता है। यह नपुंसक ग्रह है। यह जिस ग्रह के प्रभाव में हो उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फलकारक हो जाता है।

गुरु

बृहस्पति (गुरु) सूर्य से 48,33,00,000 मील दूर है। यह सौर मण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। मध्य रेखा पर इसका व्यास 88.700 मील है। 8.1 मील प्रति सेकण्ड की गति से 12 राशियों का भ्रमण 11.9 वर्ष में पूरा करता है। ज्योतिष में इसे देवगुरु, ब्राह्मणवर्ण, ज्ञान का कारक माना गया है। वाराह मिहिर ने गुरु को "गौर गात्र" मंत्रेश्वर ने "पीत द्युति" और कल्याण वर्मा ने "कनक" बताया है। यह विशाल देह, पिंगल वर्ण के केश और नेत्र, कफ, प्रकृति, सर्व शास्त्रों का ज्ञाता, पुष्ट छाती, वाणी सिंह या शंख की भाँति बताई है। यह सतोगुणी, आकाश तत्त्व का पुरुष ग्रह है।

गुरु की स्वराशि धनु और मीन है। कर्क राशि के पाँच अंश पर परमोच्च और मकर के पाँच अंश पर परम नीच होता है। यह सूर्य, चन्द्र, मंगल को मित्र बुध, शुक्र को शत्रु और शनि को सम मानता है। ज्ञान, सद्गुण, पुत्र, मंत्री, धन, सदाचरण, श्रुति, शास्त्र, यज्ञ, तपस्या, मंगल कार्य, तीर्थ यात्रा, अध्ययन-अध्यापन, न्यायाधीश का विचार इस ग्रह से करते हैं।

यह कुण्डली में जिस भाव में है वहाँ से पाँचवें, सातवें, नवें भाव पर अपनी शुभ दृष्टि रखता है। शुभता प्रदान करने में यह प्रथम कोटि का ग्रह है। मेष,कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन लग्न वालों को यह विशेष शुभ है।

शुक्र

इस ग्रह को सभी ने देखा होगा यह सूर्योदय के पूर्व या सूर्यास्त के बाद तीव्र द्युति वाला पूर्वी और पश्चिमी आकाश में दिखता है। इसे प्रभात तारा और सांध्य तारा के नाम से जानते हैं। सूर्य से इसकी मध्यम दूरी 6,72,00,000 मील है। यह लगभग पृथ्वी के बराबर का ग्रह है। पृथ्वी का भूमध्यीय व्यास 7927 मील और शुक्र का 7700 मील है। 21.8 मील प्रति सेकण्ड की गति से 224.7 दिन में 12 राशियों का भ्रमण पूरा करता है।

फलित ज्योतिष में गुरु के समान शुक्र को भी नैसर्गिक शुभ ग्रह मानते हैं। शुक्र दैत्य गुरु, ब्राह्मण वर्ण, राजस प्रकृति, स्त्री ग्रह है। यह जल तत्त्व है। इसका रंग मंत्रेश्वर ने दूर्वा (दूब) के समान कहा है। शरीरस्थ सप्त धातुओं में यह वीर्य का कारक है। संसार की जितनी आमोद-प्रमोद, भोग विलास की वस्तुएँ तथा कलाएँ हैं उन सबका यह ग्रह कारक ग्रह है। शुक्र की स्वराशि वृषभ और तुला है। मीन राशि के 27 अंश पर यह परमोच्च और कन्या के इतने ही अंशों पर परम नीच स्थिति में होता है। यह बुध, शनि को मित्र; सूर्य, चन्द्र को शत्रु और मंगल-गुरु को सम मानता है। वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ लग्न वालों को शुभ फलदायक है।

शनि

नवग्रहों में कक्षा क्रम में यह सूर्य से सबसे दूर का ग्रह है। यह सूर्य से 88 करोड़ 61 लाख मील तथा पृथ्वी से 79 करोड़ 31 लाख 43 हजार मील दूर है। इसका व्यास 75100 मील है। 6 मील प्रति सेकण्ड की गति से अपनी कक्षा पर 29.5 वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। अपनी धुरी पर एक चक्र 10 घ0 14 मि0 में पूरी कर लेता है। इसका द्रव्यमान पृथ्वी से 95 गुना और परिमाप 763 गुना है। पृथ्वी का घनत्व 5.5 है, जबकि इसका घनत्व 0.7 है अर्थात् यह पानी से हल्का है। शनि का सतही तापमान 2400 F है। इसके चारों ओर सात वलय हैं। अंतरिक्ष यान वायजर द्वारा ज्ञात हुआ है कि शनि के 15 चन्द्रमा हैं, इनमें से एक चन्द्रमा 3600 मील व्यास का अर्थात् पृथ्वी से भी बड़ा है।

फलित ज्योतिष में शनि को मंद, असित, सूर्य पुत्र और शनैश्चर भी कहते हैं। राशि चक्र में यह मकर और कुम्भ राशि का स्वामी है। तुला राशि के 20 अंश पर परमोच्च होता है तथा मेष राशि के 20 अंश पर परम नीच अवस्था में होता है। सूर्य के 9 अंश निकट पहुँचने पर अस्त हो जाता है। इसका भाग्योदय वर्ष 36 है, वर्ण नीला माना गया है। पुष्य, अनुराधा, और उत्तरा भाद्रपद इसके नक्षत्र हैं। मूलांक 8 और रत्न नीलम है। शनि की गणना नैसर्गिक पाप ग्रह में की जाती है।

ज्योतिष के आचार्यों ने प्रतीकात्मक भाषा में शनि के रूप का वर्णन इस प्रकार किया है- दुबला, लम्बा, पीले नेत्र, बड़े दाँत, काला शरीर, आलसी, वात प्रकृति, मलिन वृद्ध जैसा, कठोर अंग वाला और लंगड़ा है। पुराणों में शनि को सूर्य पुत्र बताया है। यह बुध, शुक्र को मित्र; सूर्य, चन्द्र, मंगल को शत्रु और गुरु को सम मानता है। इसका गुण आकुंचन है। दु:ख और विपत्तियों का कारक है। इसके अतिरिक्त जड़ता, रोग, मरण, विकृतांग, दास कर्म, वृद्धावस्था, स्नायु, शिशिर ऋतु, नीच जाति, पाप कर्म, काले धान्य, तेल, लोहा, लोकतन्त्र, चमड़ा, ऊसर भूमि, वैज्ञानिक शोध के स्थान तथा अकाल भूकम्प आदि दैवी विपत्तियों का कारक है।

शारीरिक रोगों में वायु विकार, कम्प, हड्डी एवं दाँत के रोग का कारक है। ज्योतिष शास्त्र में इसे सर्वाधिक अशुभ ग्रह माना गया है; किन्तु वृषभ और तुला लग्न वालों के लिए यदि उनकी कुण्डली में शनि की स्थिति मजबूत है तो यह योग कारक शुभफल देने वाला ग्रह हो जाता है। मकर और कुम्भ लग्न को भी लग्नेश होने के कारण शुभ फल देने वाला है। अन्य लग्नों के लिये यह प्राय: अशुभ फल ही देता है। शनि की तीसरी, सातवीं और दसवीं दृष्टि होती है जो कि अशुभ मानी गई है। जब अपनी राशि को अर्थात् मकर और कुम्भ को देखता है, तो वह दृष्टि अशुभ नहीं होती।

राहु-केतु

अभी तक आकाश मण्डल के सात दृश्यमान ग्रहों का वर्णन किया गया है। राहु-केतु आकाशीय पिण्ड नहीं हैं; बल्कि चन्द्रमा और क्रान्ति वृत्त के कटान बिन्दु हैं। पौराणिक कथाओं में इन्हें असुर बताया गया है। पराशर ने

इन्हें "तमौ" अर्थात् अंधकारयुक्त ग्रह कहा है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में छाया ग्रह होते हुए भी इनके प्रभाव को बहुत महत्त्व दिया गया है; किन्तु कुछ बातों में दृश्यमान ग्रहों से इनको अलग रखा है, जैसे दृश्यमान ग्रहों के नाम पर सप्ताह के सात दिन हैं इनके नाम पर कोई दिन नहीं है।

इन्हें किसी राशि का स्वामित्व नहीं दिया गया है। कुछ लोगों ने इनकी स्वराशि और उच्च राशि की कल्पना की है। कुछ विद्वान् राहु की उच्च राशि वृष और मिथुन मानते हैं। इसी प्रकार इनकी मूल त्रिकोण और नीच राशियों की भी कल्पना की गई है। अन्य दृश्यमान ग्रहों की दृष्टियाँ होती हैं। किन्तु अन्ध ग्रह होने से इनकी कोई दृष्टि नहीं होती।

ये जिस-जिस भाव में बैठते हैं, पराशर के कथनानुसार उसी प्रकार का फल देते हैं। प्राय: यह ग्रह जिस भाव में बैठते हैं, उसको किसी न किसी रूप से बिगाड़ते हैं। इन ग्रहों की गणना भी नैसर्गिक पाप ग्रह में है; किन्तु पराशर के मत से केन्द्र के स्वामी के साथ या त्रिकोण के स्वामी के साथ केन्द्र में बैठने पर ये योग कारक अर्थात् शुभफलदायक भी हो जाते हैं। राहु का प्रभाव आकस्मिक होता है। जिसमें सँभलने का मौका नहीं मिलता। राहु मंगल की युति प्राय: दुर्घटना कारक होती है, ऐसी ही स्थिति राहु-शनि की युति में होती है। जब सम्पूर्ण दृश्यमान ग्रह-राहु-केतु के मध्य स्थित होते हैं, तो उसे काल सर्प योग कहते हैं। विंशोत्तरी दशा में राहु के वर्ष 18 और केतु के 7 हैं।

यूरेनस-नेप्च्यून-प्लूटो

उपर्युक्त तीन ग्रह आधुनिक विज्ञान की खोज हैं। भारतीय ज्योतिष में इनका विशेष महत्त्व नहीं है, अब पंचांगों में इनकी स्थिति देते हैं।

यूरेनस

सन् 1781 में सर विलियम हर्शल ने इस ग्रह की खोज की, इसलिये इसे हर्शल भी कहते हैं। यह सूर्य से एक अरब 786 करोड़ 30 लाख मील दूर है और राशि चक्र का एक भ्रमण 84 वर्ष में पूरा करता है। पाश्चात्य विद्वानों ने इसे आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों का ग्रह माना है। इसका प्रभाव भी अशुभ कहा गया है।

नेप्च्यून

इसकी खोज सन् 1846 में एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक तथा एक इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक ने लगभग एक ही समय में की। यह सूर्य से 2 अरब 79 करोड़ 30 लाख मील दूर है। राशि चक्र का एक भ्रमण 164.8 वर्ष में पूरा करता है।

प्लूटो

इस ग्रह की खोज मार्च सन् 1930 में लावेल वेधशाला में की गई। यह सूर्य से 3 अरब 66 करोड़ 60 लाख मील दूर है। राशि चक्र का एक भ्रमण 284.4 वर्ष में पूरा करता है।

नक्षत्र परिचय

भारतीय ज्योतिष मूलत: नाक्षत्रिक ज्योतिष है। महाभारत काल तक इसका यही रूप था। महाभारत में ग्रहों की स्थिति राशियों में नहीं नक्षत्रों में दी हुई है कि अमुक ग्रह अमुक नक्षत्र में स्थित है। आज कल राशियों में बताते हैं। नक्षत्र क्या है? ये विशालकाय तारे हैं जो स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित गैस पिण्ड हैं। ये पृथ्वी से हजारों प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित हैं।

प्रकाश वर्ष क्या है? यह जानने के लिये हमें समझना पड़ेगा कि नक्षत्र आकाश मण्डल में इतनी अधिक दूरी पर है कि सामान्य मीलों की गणना में उनकी दूरी नहीं बताई जा सकती, इसलिये आधुनिक खगोल विज्ञान ने उनकी दूरी नापने के लिये प्रकाश वर्ष (Light year) की यूनिट में काम लिया है। प्रकाश की एक सेकण्ड में एक लाख 86 हजार मील गति होती है, जैसे कि सूर्य इस पृथ्वी से इतनी दूर है कि उसका प्रकाश यहाँ तक आने में 8.3 मिनट लगते हैं, इस प्रकार के अगणित तारे आकाश में विद्यमान हैं। उन सबका अध्ययन करना असम्भव समझ कर केवल क्रान्ति वृत्त में पड़ने वाले तारों का अध्ययन ज्योतिष में किया गया है।

नक्षत्र शब्द का अर्थ है कि जो क्षरित नहीं होता अर्थात् स्थिर हैं उसे नक्षत्र कहते हैं। नक्षत्र पृथ्वी से इतनी अधिक दूरी पर हैं कि वे पृथ्वी से स्थिर प्रतीत होते हैं। वस्तुत: वे भी गतिशील हैं; किन्तु उनकी गति से हजारों वर्षों में नाम मात्र का अन्तर आता है। इस विश्व ब्रह्मांड में स्थिर कोई भी चीज नहीं है। नक्षत्र का अर्थ यह नहीं समझना चाहिये कि यह केवल एक ही तारा है; तारा समूहों से नक्षत्र बने हैं। एक नक्षत्र में एक या एक से अधिक तारे हो सकते हैं। जैसे कि आर्द्रा, चित्रा और स्वाती नक्षत्र में केवल एक-एक तारा है, अन्य नक्षत्रों में एक से अधिक तारे हैं।

इन नक्षत्रों को मिलाकर राशियाँ बनी हैं। आकाश मण्डल के 360 अंशों को 12 समान भागों में विभाजित कर दिया गया है। इस प्रकार एक राशि 30 अंश की हुई। 27 नक्षत्र गणना में लिये जाते हैं। इस प्रकार 360 को 27 से विभाजित करने पर एक नक्षत्र 13 अंश 20 कला के क्षेत्र में आता है अर्थात् एक राशि में 21/4 नक्षत्र होते हैं। एक नक्षत्र का वेदों में और वर्णन है और आज कल भी उसका कई स्थानों में ज्योतिष में उपयोग होता है उसका नाम है "अभिजित"। मुख्य रूप से 27 नक्षत्रों से ही गणना होती है। अभिजित को उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण (अन्तिम 1/4 भाग) और श्रवण के प्रारम्भ में 1/15 भाग में सम्मिलित कर दिया गया है। आकाश में इसका क्षेत्र 276 अंश 40 कला से280 अंश 53 कला 20 विकला तक है, याने इसका कुल क्षेत्र 4 अंश 13 कला 20 विकला का है।

जिस प्रकार राशियों के स्वरूप की आकाश में कल्पना की गई है, वैसा ही हर नक्षत्र के रूप का भी वर्णन है। ज्योतिष में नक्षत्रों का प्रमुख महत्त्व है। विंशोत्तरी दशा जिससे जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का काल निर्धारित किया जाता है, उसका आधार चन्द्रमा का जन्म कालीन नक्षत्र है। मुहूर्त में नक्षत्रों का विशेष स्थान है। विवाह के पूर्व वर-कन्या के गुणों को मिलाने में भी नक्षत्र ही देखा जाता है। बालक के जन्म कालीन नक्षत्र चरण के आधार पर वर्णमाला का एक निर्धारित अक्षर लेकर राशि का नाम रखा जाता है। खेती के काम में नक्षत्र का उपयोग होता है।

तात्पर्य यह कि वेदों के काल से अब तक भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों को प्रमुख स्थान प्राप्त है। तीन-तीन नक्षत्रों को एक-एक ग्रह से संबंधित किया गया है। इस प्रकार नव ग्रहों में 27 नक्षत्रों का विभाजन है। निम्नांकित तालिका में नक्षत्रों के नाम, रूप, उनके देवता और तारा संख्या दी जा रही है। इसमें अश्विनी प्रारम्भिक नक्षत्र है और रेवती अन्तिम है। अश्विनी से आरम्भ कर प्रत्येक नक्षत्र 13 अंश 20 कला क्षेत्र में है। नक्षत्र का एक चरण 3 अंश 20 कला का होता है।

नक्षत्र तालिका

नक्षत्र	आकार	देवता	तारा संख्या
1. अश्विनी	अश्व मुख	अश्विनी कुमार	3
2. भरणी	योनि	यम	3
3. कृत्तिका	छुरा	अग्नि	6
4. रोहिणी	गाड़ी	प्रजापति	5
5. मृगशीर्ष	मृग	सोम	3
6. आर्द्रा	मणि	रुद्र	1
7. पुनर्वसु	घर	अदिति	4
8. पुष्य	बाण	बृहस्पति	3
6. आश्लेषा	चक्र	सर्प	5
10 मघा	भवन	पितर	5
11. पूर्वा फाल्गुनी	मज्व	भग	2
12. उत्तरा फाल्गुनी	शैया	अर्यमा	2
13. हस्त	हाथ	सविता	5
14. चित्रा	मोती	त्वष्टा	1
15. स्वाती	मूँगा	वायु	1
16. विशाखा	तोरण	इन्द्राग्नि	4
17. अनुराधा	चावल	मित्र	4
18. ज्येष्ठा	कुण्डल	इन्द्र	3
19. मूल	सिंह पुच्छ	निऋति	11
20. पूर्वाषाढ़ा	हस्ति दन्त	आप:	2
21. उत्तराषाढ़ा	मज्व	विश्वेदेव	2
22. श्रवण	वामन	विष्णु	3
23. धनिष्ठा	मृदंग	वसु	4
24. शतभिषा	वृत्त	वरुण	100
25. पूर्वा भाद्रपद	मंच	अज एक पाद	2
26. उत्तरा भाद्रपद	युगल	अर्हिबुध्न्य	2
27. रेवती		पूषा	32

* * *

अध्याय-2

नक्षत्र, राशि, ग्रह-परिचय एवं गुणधर्म

जन्म नक्षत्र के अनुसार योनि गणादि का कोष्ठक

चरणानुसार नक्षत्रों के नाम	नक्षत्र	योनि	गण	युञ्जा	नाडी	राशि	स्वामी
चु, चे, चो, ला	अश्विनी	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	मेष	मंङ्गल
ली, लू, ले, लो,	भरणी	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	मंङ्गल
आ, इ, उ, ए,	कृत्तिका	मेष	राक्षस	पूर्व	अन्त्य	मेष 1 व 3	मं 1 शु 3
ओ, वा, वि, वु	रोहिणी	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अन्त्य	वृषभ	शुक्र
वे, वो, का, की,	मृगशिरा	सर्प	देव	पूर्व	मध्य	वृ 2 मिथुन 2	शु 2, बु 2
कु, घ, ङ, छ,	आर्द्रा	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मिथुन	बुध
के, को, हा, ही,	पुनर्वसु	मार्जार	देव	मध्य	आद्य	मिथुन 3 क. 1	बु 3, चं 1
हु, हे, हो, डा,	पुष्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	कर्क	चन्द्र
डी, डू, डे, डो,	आश्लेषा	मार्जार	राक्षस	मध्य	अन्त्य	कर्क	चन्द्र
मा, मी, मु, मे	मघा	मूषक	राक्षस	मध्य	अन्त्य	सिंह	सूर्य
मो, टा, टी, टु	पूर्वाफाल्गुनी	मूषक	मनुष्य	मध्य	मध्य	सिंह	सूर्य
टे, टो, पा, पी	उ० फा०	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	सिंह 1, कन्या 3	सू 1, बु03
पू, ष, ण, ठ	हस्त	महिषी	देव	मध्य	आद्य	कन्या	बुध
पे, पो, रा, री	चित्रा	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	मध्य	क.न्या 2 तुला2	बु. 2 शु 2
रु, रे, रो ता	स्वाती	महिषी	देव	मध्य	अन्त्य	तुला	शुक्र
ती, तू, ते, तो	विशाखा	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अन्त्य	तु. 3 वृ. 1	शु. 3 में 1
ना, नी, नू, ने	अनुराधा	मृग	देव	मध्य	मध्य	वृश्चिक	मंगल
नो, या, यी, यु	ज्येष्ठा	मृग	राक्षस	अन्त्य	आद्य	वृश्चिक	मंगल
ये, यो, भ, भी	मूल	श्वान	राक्षस	अन्त्य	आद्य	धनु	गुरु
भू, ध, फ, ढ	पू. षा.	कवि	मनुष्य	अन्त्य	मध्य	धनु	गुरु
भे, भो, जा, जी,	उ०षा०	नकुल	मनुष्य	अन्त्य	अन्त्य	धनु 1,म.3	गुरु1, श 3
जू, जे, जो, खा	अभिजित्	नकुल	मनुष्य	अन्त्य	अन्त्य		
खी, खू, खे खो	श्रवण	कपि	देव	अन्त्य	अन्त्य	मकर	शनि
गा, गी, गू, गे	घनिष्ठा	सिंह	राक्षस	अन्त्य	मध्य	म.2 कु. 2	शनि
गो,सा, सी, सू	शतभिषा	अश्व	राक्षस	अन्त्य	आघ	कुम्भ	शनि
से, सो, दा, दि	पू० भा०	सिंह	मनुष्य	अन्त्य	आद्य	कु. 3 मी.1	श 3 गु. 1
दु, थ, झ, ञ	उ० भा०	गौ	मनुष्य	अन्त्य	मध्य	मीन	गुरु
दे, दो, चा, ची,	रेवती	गत	देव	पूर्व	अन्त्य	मीन	गुरु

ग्रहों की राशि-स्वामित्व आदि चक्र

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
कौन सा ग्रह किस राशि का स्वामी है	सिंह	कर्क	मेष	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मिथुन
कितने अंश तक उच्चस्थ होता है।	मेष 10 अंश तक	वृष 3 अंश तक	मकर 28	कन्या 15 अंश तक	कर्क 5 अंश तक	मीन 26 अंश तक	तुला 20 अंश तक	मिथुन	धनु
किस राशि के कितने अंश तक नीचस्थ होता है	तुला 10 अंश तक	वृश्चिक 3 अंश तक	कर्क 28 अंश तक	मीन 15 अंश तक	मकर 5 अंश तक	कन्या 27 अंश तक	मेष 20 अंश तक	धनु	मिथुन
किस राशि के कितने अंश तक मूलत्रिकोण होता है	सिंह 1 से 20 अंश तक	वृष 4 से 30 अंश तक	मेष 10 से 18 अंश तक	कन्या 16 से 20 अंश तक	धनु 1 से 13 अंश तक	तुला 1से 10 अंश तक	कुम्भ 1से20 अंश तक	कर्क	सिंह
किस राशि के कितने अंगों में स्वक्षेत्री होता है।	सिंह 21 से 30 अंश तक	कर्क 1 से10 अंश तक	मेष 17 से 30 अंश तक तथा वृश्चिक 1 से 30 अंश तक	कन्या 21 से 30 अंश तक तथा मिथुन 1 से 30 अंश तक	धनु 14 से 30 अंश तक तथा मीन 1 से 30 अंश तक	तुला 11 से 30 अंश तक तथा वृष 1 से 20 अंश तक	कुम्भ 21 से 30 अंश तक तथा मकर 1 से 30 अंश तक	1 से 10 अंश तक कन्या	मीन 1 से 30 अंश तक
ग्रह-मैत्री चक्र मित्र	चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चन्द्र मङ्गल	बुध शनि राहु केतु	बुध शुक्र राहु केतु	बुध शुक्र शनि	बुध शुक्र शनि
सम	बुध	मंगल शुक्र श0 गुरु	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि-केतु	शनि राहु केतु	गुरु	गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि राहु केतु	राहु केतु	बुध राहु केतु	चन्द्र चन्द्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल

ग्रह गुणधर्म

गुणधर्म वर्णजाति	सूर्य राजाक्षत्री	चन्द्र वैश्य	मंगल क्षत्रिय	बुध वैश्य शूद्र	बृहस्पति ब्राह्मण ब्राह्मण	शुक्र ब्राह्मण ब्राह्मण	शनि शूद्र अंत्यज-चांडाल	राहु चांडाल अंत्यजराक्षस म्लेच्छा	केतु इनसे अन्य
रंग मनुष्य का	रक्त रक्तश्याम पाटलीपुष्प समाप	श्वेत गौर	रक्त रक्त गौरदूर्वा कमल का रंग	हरित दूर्वा सदृश्य	पीत (गौर)	द्विज न गौरा न काला	नील वर्ण कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
देवता	अग्नि	जल	अग्निज कार्तिकेय	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्म	राक्षस	
अधिपति	शिव	पार्वती	कार्तिकेय गुह कुमार	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	यम		
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय कोप	पश्चिम	नैऋति कोप	पाप
शुभपापी	पाप	क्षीप पाप पूर्व शुभ	पापी	पापयुत्त पापी पापहीन शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
देह की धातु	हड्डी	रुधिर	चर्बी	त्वचा	चर्बी	वीर्य	स्नायु नसें		
स्थान	देव स्थान	जल स्थान	अग्नि	विहार	खजाना भण्डार	शयन	पुंज, पृथ्वी का चपटीला भाग	वाम्बी सर्पस्थान	बाम्बी
वस्त्र	मोटा	कठोर	टूटा फूटा अग्नि दोष	नवीन	मध्यम	मध्यम	जीर्ण	गुदड़ी रंग बिरंगी	बड़े 2 छेदो से युक्त
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद्	हेमन्त	वसंत	शिशिर		
रसस्वादु	कटु	लवण	तीता	मिश्र	मीठा	खट्टा	क्वाथ कसैला		
धातु	मूल	धातु	धातु	जीव	जीव	मूल	धातु	धातु	
दृष्टि	उर्ध्व (ऊपर को	सम	उर्ध्व	तिरछी	सम	तिरछी	अधो (नीचे)	अधो	
स्त्री, पुरुष	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक		
स्थिर, चर	चर	चर	चर	चर	स्थिर	चर	स्थिर	स्थिर	स्थिर
किरण	उच्च का 10	1	5	5	7	8	5		
गति समय	1 मास	21 दिन	111 मास	1 मास	13 मास	1 मास	30 मास	18 मास	18 मास
दूसरी राशि में जाने के दिन	5 दिन पहिले	3 घटी पहले	8 दिन पूर्व	4 दिन पूर्व	2 मास पूर्व	7 दिन पूर्व	6 मास पूर्व	3 मास पूर्व	

राशि गुण-धर्म

क्रम	गुण धर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
1	चर आदि	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०
2	विषम-सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
3	पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
4	क्रूर-सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
5	वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
6	तत्त्व	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल
7	दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
8	स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
9	रंग	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	गुलाबी	चित्र-वि.	काला	कबरैला	पीला	कबरैला	कबरैला	मछली का रंग
	अन्य मत-	,,	,,	शुकवत	पाटल	थोड़ा सफेद धूम्र	अनेक रंग	कृष्ण	सुवर्ण	,,	चित्त-कबरा	न्योले का रंग	
	(सर्व चि०)	,,	,,	श्याम हरित	रक्त	धूम्र	,,	,,	,,	सुनहरा	फीका पीला	बिल्ली सा श्वेत	
10	उदय	पृष्ठोदय	पृ०	शीर्षो	पृ०	शीर्षो०	शी०	शी०	शी०	पृ०	पृ०	शी०	उभयोदय
	अन्यमत (फलदी)	,,	,,	उभयोदय	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	(सर्व चि०)	,,	,,	पृष्ठो०	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
11	ह्रस्व	सम	सम	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व
	(जा० भरण)	ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	ह्रस्व
12	शुष्कादि	शुष्क	शुष्क	शुष्क	जल	शुष्क	जल	जल	शुष्क	शुष्क	जल	जल	जल
	(मध्य परा०)	निर्जल	सजल	निर्जल	जल	निर्जल	,,	,,	निर्जल	निर्जल	,,	,,	,,
13	रूक्ष	स्निग्ध	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्व	स्निग्ध	रूक्ष	रू०	स्नि०	स्नि०	रू०	रू०	स्नि०
14	पूर्ण आदि	पावजल	अर्धजल	निर्जल	पूर्णजल	निर्जल	निर्जल	पावजल	पाव-जल	अर्ध-जल	पुर्णज	अर्धजल	पूर्ण-जल
15	गुण	रज	रज		सत	सत		रज	तम	सत	तम	तम	सत
16	बली	रात्रिब	रात्रि०	रात्रि.	रात्रि०	दिन०	दिन-बली	दिन०	दिन०	रात्रि	रात्रि०	दि०	दिन-रात्रि की संधि में

देश विदेश के सूर्योदय एवं लग्न निकालने की विधि

अभीष्ट स्थान के मध्यान्तर जानने की प्रक्रिया गणित द्वारा प्रदर्शित करते हैं। अभीष्ट स्थानीय रेखांश प्रादेशिक व जनपदीय भौगोलिक नक्शों द्वारा सुगमता से प्राज्ञत हो जाते हैं। यत्र-तत्र ज्योतिष विषयक पुस्तकों में भी प्रमुख नगरों के रेखांश ज्ञात हो जाते हैं रेखांशों की गणना ग्रीन्विच (लन्दन) से पूर्व और पश्चिम दिशाक्रम से दी गई है और प्रत्येक देश का एक स्थिर रेखांश कल्पनाकर उसके अनुसार उस देश का समय यान्त्रिक घड़ियों द्वारा जानने की प्रथा प्रचलित है। जिसे तद्देशीय स्टैण्डर्ड समय की संज्ञा दी गई है। जैसे भारत वर्ष का स्थिर रेखांश 82 अंश 30 कला कल्पनाकर तदनुसार भारतीय स्टैण्डर्ड समय को यान्त्रिक घड़ियाँ अवगत कराती रहती हैं। वास्तव में इन यान्त्रिक घड़ियों का समय 82 अंश 30 कला पर स्थित प्रदेश का स्थानीय मध्यम समय है जिसे भारतवर्ष में सर्वत्र प्रयोग में लिया जाता है। चूँकि ग्रीन्विच से 82 अंश 30 कला का स्थिर रेखांश 1 अंश में 4 मिनट के हिसाब से 5 घण्टे 30 मिनट का द्योतक होने से भारत वर्ष की यान्त्रिक घड़ियाँ जिस समय प्रात: 5 घंटे 30 मिनट बतलायेगी तब ग्रीन्विच में रात्रि के 12 बजे का ही समय वहाँ की यान्त्रिक घड़ियाँ बतलाती हैं इस कारण भारत वर्ष का समय ग्रिन्विच से 5 घण्टे 30 मिनट अधिक मानकर गणित प्रक्रिया की जाती है अतएव अभीष्ट स्थानीय रेखांखों का स्थिर रेखांश (82 अंश 30 कला) से अन्तर करने की प्रथा भारत वर्ष में प्रचलित है। दिल्ली का रेखांश 77 अंश 13 कला है 1 अंश में 4 मिनट के हिसाब से 308 मिनट 52 सेकण्ड बनता है जो 5 घन्टे 30 मिनट से 21 मिनट 8 सेकण्ड कम है अत: दिल्ली का मध्यमान्तर ऋणात्मक 21 मिनट 8 सेकण्ड है। गणित की सुगमता हेतु यह प्रक्रिया अन्य प्रकार से की जाती है, उस अन्य प्रकार में 82 अंश 30 कला में से दिल्ली के रेखांश 77 अंश 13 कला को घटाने पर 5 अंश 17 कला प्राप्त होते हैं इनको क्रमश: 4 से गुणा करने पर 20 मिनट 68 सेकण्ड प्राप्त हुए जो 21 मिनट 8 सेकण्ड का ही मान है। जिन नगरों का रेखांश भारत वर्ष में 82 अंश 30 कला से कम हैं उनका मध्यान्तर सर्वदा ऋणात्मक होता है तथा जिन नगरों का रेखांश इनसे अधिक होता है उनका मध्यान्तर सर्वदा धनात्मक ही होता है इस प्रक्रिया से भरतवर्ष में सर्वत्र मध्यान्तर का ज्ञान किया जाता है। विषयवस्तु को परिपक्व करने हेतु अहमदाबाद, लखनऊ, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई का मध्यमान्तर उपर्युक्त गणित प्रक्रिया द्वारा प्रदर्शित करने पर-

नगर नाम	पूर्व रेखांश	स्थिर रेखांश	अन्तर अंश कला	मध्यामान्तर (अन्तरX4) मि०	से०
अहमदाबाद	72^0 I36	82^0 I 30	9^0 I54	-39.	36
लखनऊ	80^0 I56	82^0 I 30	1^0 I34	-6.	16^0
मुम्बई	72^0 I50	82^0 I 30	9^0 I40	-38.	40
कोलकाता	88^0 I23	82^0 I 30	5^0 I53	+23.	32
चेन्नई	80^0 I15	82^0 I 30	2^0 I15	-9.	00

इस प्रकार प्रादेशिक व जनपदीय भौगोलिक नक्शे के आधार पर अभीष्ट स्थान का रेखांश ज्ञातकर भारतवर्ष में सर्वत्र मध्यमान्तर जाना जा सकता है। भारतवर्ष के प्रमुख-प्रमुख नगरों के रेखांश व मध्यमान्तरों की सारणी भी सुविधा के लिये इस लेख के साथ सम्बद्ध कर दी गई है। वेलान्तर सारिणी भी संलग्न कर दी गई है। वेलान्तर सारणी समस्त विश्व में अंग्रेजी तारीख के अनुसार प्रत्येक ईसवी सन् में एक-सी ही होती है। कभी-कभी कुछ

सैकण्डों का अन्तर आता है, वह नगण्य है। उपर्युक्त पंक्तियों में मध्यमान्तर ऋण है या धन है। सम्यक् प्रकार से अवगत कराया गया है।

वेलान्तर प्रत्येक ईसवी सन् में 26 दिसम्बर से 14 अप्रैल तक तथा 15 जून से 31 अगस्त तक सर्वदा ऋणात्मक होता है तथा 15 अप्रैल से 14 जून तक एवं 1 सितम्बर से 25 दिसम्बर तक वेलान्तर सर्वदा धनात्मक होता है। मध्यामान्तर और वेलान्तर का संस्कार ही स्पष्टान्तर कहलाता है। यदि वेलान्तर और मध्यमान्तर दोनों ही ऋणात्मक हो, तो दोनों का योग करने पर स्पष्टान्तर के मिनटादि होंगे वे ऋणात्मक, व यदि दोनों ही धनात्मक हों, तो दोनों का योग करने पर स्पष्टान्तर धनात्मक होगा। ऋण व धन चिन्ह के मध्यमान्तर व वेलान्तर में इन दोनों में जिसकी संख्या अधिक होगी उसके अनुसार स्पष्टान्तर चिह्न होगा।

जैसे मध्यमान्तर ऋणात्मक 20 मिनट है और वेलान्तर धनात्मक 14 मिनट है तब दोनों का अन्तर करने पर 6 मिनट शेष स्पष्टान्तर होगा। वह अधिक संख्या वाले 20 मिनट के ऋणात्मक चिह्न का बोधक होगा। अर्थात् स्पष्टान्तर धनात्मक 6 मिनट होगा। यदि वेलान्तर 14 मिनट ऋणात्मक है और मध्यमान्तर 20 मिनट धनात्मक है तो स्पष्टान्तर धनात्मक 6 मिनट होगा। तात्पर्य यह है कि वेलान्तर व मध्यामान्तर के चिन्ह परस्पर विपरीत हो, तो दोनों का अन्तर करके जिस चिह्न की संख्या अधिक हो उसका चिह्न अन्तर में लगा देने पर स्पष्टान्तर ज्ञात हो जाता है। साधारण गणितज्ञ को इस प्रक्रिया का दृढ़ता पूर्व अभ्यास कर लेना चाहिए अन्यथा स्पष्टान्तर गलत हो जाने से दिक्शोधन निश्चित ही त्रुटिपूर्ण होगा। स्पष्टान्तर का यान्त्रिक घड़ी में विपरीत संस्कार करना चाहिए जैसे किसी भी अभीष्ट स्थान पर अभीष्ट दिन का ऋणात्मक-6 मिनट स्पष्टान्तर है तो यान्त्रिक घड़ी के अनुसार 12 बजकर 6 मिनट पर अभीष्ट स्थान पर स्पष्ट मध्याह्न काल होगा अर्थात् वहाँ की धूप घड़ी के 12 बजे का समय होगा। इस समय पर समतल भूमि में मजबूत गड़े हुए लट्ठे व लोहे की मोटी छड़ की छाया के मध्य भाग में रेखा करने पर याम्योत्तरा रेखा बन जायेगी। यदि आपका अभीष्ट दिन में स्पष्टान्तर 6 मिनट धनात्मक हो, तो यान्त्रिक घड़ी के समयानुसार 12 बजने में 6 मिनट पर ही अर्थात् 11 बजकर 54 मिनट पर ही लट्ठे की छाया के मध्य भाग पर रेखा खिंचने पर याम्योत्तरा रेखा प्राप्त होगी। इस याम्योत्तरा रेखा पर लम्ब रूपात्मक पूर्वापर रेखा खिंचने पर ठीक पूर्व व पश्चिम विन्दु का सुगमता से ज्ञान हो जायेगा। याम्योत्तरा रेखा से दक्षिण व उत्तर विंदु ज्ञात हो चुके हैं। अत: इस प्रकार 4 दिशा के विन्दुओं का ज्ञान कर यज्ञ मण्डप का निर्माण करने पर हवन कुण्ड व देवताओं के प्रतीकात्मक यज्ञ स्तम्भ है अपने निर्धारित स्थान पर बनने से यज्ञ कार्य विधि विधान पूर्वक होगा। जिससे नगर व देश एवं राष्ट्र का कल्याण सुनिश्चित होगा। 6 अगस्त को उपर्युक्त 5 नगरों में दिक्शोधन करने की प्रक्रिया प्रदर्शित करते हैं।

6 अगस्त को वेलान्तर सारणी द्वारा 5 मिनट 52 सेकेण्ड वेलान्तर प्राप्त हुआ यह ऋणात्मक है। इसका संकेत भी सारणी से ही ज्ञात हुआ।

मध्यमान्तर और वेलान्तर के संस्कार से स्पष्टान्तर ज्ञात करने हेतु तालिका

नगर नाम	रेखांश	82 30 से अन्तर	शेष 4X मध्यमान्तर	वेलान्तर	स्प0 अ0
अहमदाबाद	72^0 ।36	9^0 ।54	-39^0 ।36	–5.52	– 45.28
लखनऊ	80^0 ।56	1^0 ।34	-6^0 ।16	–5.52	–12.08
मुम्बई	72^0 ।50	9^0 ।40	-38^0 ।40	–552	–44.32
कोलकाता	88^0 ।23	5^0 ।53	$+23^0$ ।32	–552	+17.40
चेन्नई	80^0 ।15	2^0 ।15	-9^0 ।00	–552	–14.52

उपर्युक्त तालिका में केवल कोलकाता में मध्यमान्तर और वेलान्तर के चिह्नों में भिन्नता होने के कारण दोनों का अन्तर किया गया है और शेष में धनात्मक संख्या 23 मि० 32 से० से अधिक होने के कारण स्पष्टान्तर में धनात्मक चिह्न लगा है शेष 4 स्थानों में वेलान्तर और मध्यमान्तर दोनों के एक जैसे ऋणात्मक चिह्न होने से योग करके ऋण का चिह्न स्पष्टान्तर में दिया जा चुका है। स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार यान्त्रिक घड़ी के 12 बजे (दिन) में करने पर अर्थात् स्पष्टान्तर धन हो, तो ऋण करने पर और स्पष्टान्तर ऋण हो, तो धन करने पर 6 अगस्त को अहमदाबाद में 12 घं० 45 मि०, लखनऊ में 12 बजकर 12 मिनट 8 सेकेण्ड, मुम्बई में 12 बजकर 44 मि० 32 सेकेण्ड, कोलकाता में 11 बजकर 42 मिनट 20 सेकेण्ड और चेन्नई (मद्रास) में 12 बजकर 14 मि० 52 से० पर लट्ठे की छाया के मध्य भाग पर रेखा खिंचने पर याम्योत्तरा रेखा बन जायेगी उस याम्योत्तरा रेखा पर लम्ब रूप में पूर्व पश्चिम की ओर रेखा खिंचने पर पूर्व व पश्चिम बिन्दु का सही ज्ञान उपर्युक्त नगरों में हो जायेगा इसके अनन्तर यज्ञ मण्डप का निर्माण करने पर देवताओं के प्रतीकात्मक स्तम्भ सही दिशा में स्थापित हो जायेंगे एवं कुण्डों का भी निर्माण सही दिशा में होने से यज्ञ कार्य निश्चित सफलता प्रदान करेगा। यह दिक्शोधन का प्रकार अत्यन्त सरल है इसमें त्रुटि होने की सम्भावना ही नहीं है परन्तु यान्त्रिक घड़ी को रेडियो से मिलाकर ही यह प्रक्रिया करने पर सही दिक्शोधन होगा। हमारे प्राचीन आचार्यों ने इस दिक्शोधन का प्रकार लिखा है वह अत्यन्त जटिल है। इस प्रकार से किसी भी दिन स्पष्ट मध्यान्ह काल में दिक्शोधन किया जा सकता है परन्तु उस दिन मध्यान्ह काल में सूर्य का प्रकाश अवश्य होना चाहिए अन्यथा लट्ठे की अथवा शंकु की छाया ही उपलब्ध नहीं होने से रेखा खिंचना सम्भव ही नहीं होगा। ऐसी स्थिति प्राय: वर्षा ऋतु में होती है अत: अभीष्ट स्थल पर चाहे जिस दिन आकाश स्वच्छ रहने पर दिक्शोधन कर लिया जाय तदन्तर कभी भी यज्ञ मण्डप बनाया जा सकता है।

सूर्य घटिका

उपर्युक्त उदाहरण में 6 अगस्त को अहमदाबाद में सूर्य घटिका बनानी हो, तो लट्ठे को 2 फुट के करीब ऊँचाई के चबूतरे पर स्थपति करके शंकु की लम्बाई के तुल्य त्रिज्या से एक परिधि बनाकर तट पार रखनी चाहिए। यान्त्रिक घड़ी का सही स्टैण्डर्ड समय रेडियो द्वारा बनाकर 12 घं0 45 मि0 28 से0 पर शंकु के मध्य भाग पर रेखा खिंच कर फिर 15-15 मिनट बाद अर्थात् 1 बजकर 28 सेकेण्ड, 1 बजकर 15 मिनट 28 सेकेण्ड, 1 बजकर 30 मिनट 28 सेकेण्ड से, 1 बजकर 45 मि0 28 से0 पर 6 अगस्त को परिधि पर चिह्न लगाने पर सूर्य घटिका बन जायेगी अथवा त्रिप्रश्नाधिकारोक्त अभीष्ट काल की अंगुलात्मक छाया से नतांशज्या दिन में प्राप्तकर समय ज्ञात करना चाहिंये। रात्रि में ग्रह व नक्षत्रों के माध्यम से आधुनिक काल में जन्म पत्रिका की निर्माण विधि प्राचीन परम्परागत पद्धतियों के अनुसार करने पर बड़ी कठिनाई पड़ती है तथा समय भी अधिक लगाना पड़ता है इसलिए सूर्योदय काल, सूर्यास्त काल ग्रह स्पष्ट लग्न व दशम स्पष्ट विंशोत्तरी दश का आनयन षडवर्ग चक्र आदि की गणित आधुनिक गणित परम्परा से करने पर अत्यन्त सुविधा रहती है एवं समय की भी बचत होती है तथा गणित में सूक्ष्मता आती है। अत: सर्वप्रथम देश-विदेश के सूर्योदय काल निकालने का प्रकार प्रदर्शित करते हैं सूर्योदय के जितने घण्टे व मिनटादि के पश्चात् जन्म हुआ है उनको घटी पलादि में परिणत करने को ही जन्म कालीन इष्टकाल कहते हैं। जन्म समय का ज्ञान सभी स्थानों पर स्टैण्डर्ड समय में होता है अत: सूर्योदय काल को भी स्टैण्डर्ड समय में ज्ञात कर लेने से अधिक सुविधा हो जाती है तथा गलती होने की सम्भावना नहीं होती। सूर्योदय का गणितागतकाल प्रथम सूर्य घटिका के आधार पर ही ज्ञात होता है उसमें स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार करने पर सूर्योदयकाल स्टैण्डर्ड समय में प्राप्त हो जाता है। जन्म समय में से स्टैण्डर्ड सूर्योदय काल को घटाने पर जो शेष घण्टे मिनट आदि हों उन्हें घटी पलादि में परिणत करने पर जन्मेष्टकाल बन जाता है। सूर्योदय ज्ञात करने

हेतु चर मिनटादि का ज्ञान होना परमावश्यक है। चरमिनट स्थानीय अक्षांश और जन्म दिन के सूर्य की क्रान्ति पर अवलम्बित है अत: अक्षांश और सूर्य क्रान्ति की परिभाषा सर्व प्रथम ज्ञात होनी चाहिए।

अक्षांश–भूमण्डल पर जो भूमध्य रेखा बनी है वह विषुवद्वृत्त जो आकाश को ठीक बराबर के दो भागों में विभाजित करता है उसकी व्यास रेखा है अत: यह भी भूमण्डल को ठीक-ठीक 2 भागों में विभाजित करती है। भूमध्य रेखा पर स्थित होने पर उत्तरी ध्रुव व दक्षिण ध्रुव क्षितिज पर सटे हुए दिखाई देते हैं। भूमध्यरेखा से उत्तर व दक्षिण हटने पर दोनों ध्रुव क्षितिज पर सटे हुए दृष्टिगोचर नहीं होते। यदि आप इस रेखा से 5 अंश उत्तर हटकर खड़े होंगे तो आपको उत्तरी ध्रुव आकाश में ऊँचा उठा हुआ दृष्टिगोचर होगा जो क्षितिज से 5 अंश की ऊँचाई पर होगा और दक्षिण ध्रुव क्षितिज से 5 अंश नीचे चले जाने के कारण दिखाई नहीं देगा। इसी प्रकार इस रेखा से दक्षिण की ओर 5 अंश हटकर खड़े होने पर दक्षिण ध्रुव क्षितिज से 5 अंश ऊँचाई पर आकाश में दृष्टिगोचर होगा और उत्तरी ध्रुव क्षितिज से नीचे चले जाने के कारण दिखाई नहीं देगा। यहाँ यह प्रश्न भी उठता है कि हम को कौन-सा ध्रुव आकाश में दृष्टिगोचर हो रहा है। उत्तरी गोलार्द्ध में भू मध्य रेखा से उत्तरी ध्रुव ही आपको आकाश में दिखाई दे रहा है। दक्षिण गोलार्द्ध में दक्षिण ध्रुव ही आपको दृष्टिगोचर हो रहा है अत: इससे यह सिद्ध होता है कि ध्रुवोन्नति का नाम अक्षांश है जिस नगर ग्रामादि का जो अक्षांश होगा उसके बराबर ही वहाँ ध्रुव की ऊँचाई होगी। भूमध्य रेखा पर प्रतिदिन ही दिन और रात बराबर होते हैं अर्थात् ठीक 12 घन्टे का दिन और 12 घन्टे की रात्रि होती है। साक्ष देशों में दिनमान व रात्रिमान घटता-बढ़ता रहता है। केवल 21 मार्च और 23 सितम्बर को ही साक्ष देशों में दिन व रात्रि का मान बराबर होता है क्योंकि इस दिन सूर्य भूमध्य रेखा के ऊपर आकाश में बने विषुवद्वृत्त पर ही भ्रमण करता है इसलिए उस दिन क्रान्ति का मान शून्य होता है। सूर्य की क्रान्ति के घटाव व बढ़ाव के आधार पर ही साक्ष देशों के दिनमान व रात्रिमान का घटाव-बढ़ाव होता रहता है। भूमध्यरेखा से उत्तर की ओर 23॥ के आसन्न अंश एवं दक्षिण की ओर भी 23॥ के आसन्न अंश तक सूर्य का हटाव होता है। यह 23॥ अंश का हटाव 22 जून को उत्तर की ओर तथा 22 दिसम्बर को दक्षिण की ओर होता है। 22 जून को सायन कर्क संक्रमण तथा 22 दिसम्बर को सायन मकर संक्रमण होता है इनको ही क्रमश: कर्क रेखा व मकर रेखा के नाम से जाना जाता है। 22 जून को सबसे बड़ा दिन व 22 दिसम्बर को सबसे छोटा दिन होगा। यह उत्तर अक्षांशीय नगरों में होता है (2) दक्षिण अक्षांश के नगरों में इसके विपरीत होता है। अर्थात् 22 जून को सबसे छोटा दिन व 22 दिसम्बर को सबसे बड़ा दिन होता है। भारतवर्ष में उत्तरीध्रुव आकाश में दिखाई देता है अत: समूचे भारत वर्ष के नगर ग्रामादि का उत्तर अक्षांश है और ग्रीन्विच से पूर्व होने के कारण भारतवर्ष का रेखांश पूर्व माना गया है।

क्रान्ति–भूमध्य रेखा से 21 मार्च के बाद सूर्य उत्तर गोल में प्रवेश करता है और प्रतिदिन क्रान्ति तुल्य अंशादि के हिसाब से 23॥ अंश के आसन्न तक उत्तर की तरफ बढ़कर पुन: भूमध्यरेखा की ओर लौटना शुरू कर देता है 23॥ अंश क्रान्ति का मान 22 जून को होता है अत: 22 जून से दक्षिणायन होने से दक्षिण की ओर अर्थात् भूमध्य रेखा की ओर अपचीयमान होता हुआ 23 सितम्बर को भूमध्यरेखा के ऊपर भ्रमण करके दक्षिण गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। 22 दिसम्बर तक दक्षिण की ओर बढ़कर उत्तरायन में प्रवेश कर भूमध्यरेखा की ओर बढ़ता है तथा 21 मार्च को पुन: भूमध्यरेखा पर आ जाता है। प्रतिवर्ष इसी क्रम से सूर्य का भ्रमण होता है। अक्षांश व क्रान्ति की परिभाषा से परिचित होना परमावश्यक था। अतएव यह चर्चा की गई। भूमध्य रेखा से जिस दिन जितना सूर्य का हटाव अंशादि माप में होता है उस दिन वही क्रान्ति का मान होता है। अभीष्ट नगरादि का अक्षांश तो सर्वदा स्थिर रहता है केवल क्रान्ति ही प्रतिदिन बदलती रहती है। यहाँ यह भी समझ लेना चाहिए प्रतिवर्ष प्रत्येक तारीख को क्रान्तिमान एकसा होता है।

21 मार्च से 22 सितम्बर तक सूर्य उत्तरगोल में रहता है तथा क्रान्ति उत्तरा होती है अर्थात् सायन मेषादि संक्रमण से सायन कन्याराशि की समाप्तितक सूर्य उत्तरगोल में रहता है। 23 सितम्बर से 20 मार्च तक (सायनतुलादि से सायन मीनान्त तक) सूर्य दक्षिणगोल में रहता है तथा क्रान्ति दक्षिण होती है। 21 मार्च से 22 सितम्बर तक 6 घन्टे में चर मिनट घटाने पर धूपघड़ी के समय का सूर्योदय काल ज्ञात होता है। 23 सितम्बर से 20 मार्च तक 6 घन्टे में चर मिनट जोड़ने पर धूपघड़ी के समय का सूर्योदयकाल ज्ञात होता है। भूमध्यरेखा को निरक्षदेश, विषुवद् रेखा के नाम से भी जाना जाता है।

भूमध्य रेखा को ही विषुवद् रेखा, निरक्षदेशीय रेखा, सायन मेषादि व सायन तुलादि रेखा एवं विषुवद् वृत्तीय व्यास रेखा कहते हैं। सूर्य 21 मार्च से 22 सितम्बर तक उत्तर गोल में रहने के कारण अक्षांश व क्रान्ति द्वारा उत्पन्न चर मिनटादि को 6 घन्टे में घटाने पर स्थानीय सूर्य घटिका के समय का सूर्योदय काल ज्ञात हो जाता है। इसी प्रकार 23 सितम्बर से 20 मार्च तक सूर्य के दक्षिण गोल में रहने के कारण चर मिनटादि को 6 घण्टे में जोड़ने पर स्थानीय सूर्य घटिका के समय का सूर्योदय काल ज्ञात हो जाता है, परन्तु यह नियम उत्तर अक्षांश के देशों में ही लागू होता है। जिन देशों का दक्षिण अक्षांश होता है उन देशों में 21 मार्च से 22 सितम्बर तक चरमिनटादि को 6 घण्टे में जोड़ने पर तथा 23 सितम्बर से 20 मार्च तक चरमिनटादि को 6 घण्टे में घटाने पर स्थानीय सूर्य घटिका के समय का सूर्योदयकाल ज्ञात हो जाता है। तात्पर्य यह है कि उत्तर अक्षांश से विपरीत चर का संस्कार करने पर दक्षिण अक्षांश के नगरों का स्थानीय समय का सूर्योदय काल ज्ञात होता है इसका दूसरा सुगम तरीका यह है कि उत्तर अक्षांश की गणित प्रक्रिया से स्थानीय समय (सूर्यघटिका समय) निकाल कर उस सूर्योदय काल को 12 घण्टे में घटा देने पर दक्षिण अक्षांश स्थित नगरों का सूर्योदय काल ज्ञात हो जाता है। यह काल धूप घड़ी के समय का आता है। इसमें स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार करने पर स्टैण्डर्ड में आता है।

चर साधन–अभीष्ट नगर के अक्षांश और अभीष्ट दिन की क्रान्ति को परस्पर गुणाकर गुणनफल को दो से गुणा करके 25 का भाग देने पर चर मिनटादि उपलब्ध होते हैं। अक्षांश x क्रान्ति x 2 भागे 25 = चर मिनट व सेकेण्ड। अक्षांश में तथा क्रान्ति में अंश और कला होते हैं गुणन प्रक्रिया में सरलता लाने हेतु कलात्मक मान को दशमलव में परिणतकर लेना चाहिए। जिन महानुभाओं को दशमलव में कठिनाई प्राप्त हो वे अक्षांशों के और क्रान्ति के कलात्मक मान का योग करलें वह योग 60 के आसन्न हो जाने पर कलात्मक मान दोनों पक्षों में से हटाकर किसी भी पक्ष के अंशात्मक मान में एक संख्या जोड़कर फिर केवल अंशात्मक मानों का गुणा करके फिर उसे पुन: दो से गुणाकर 25 का भाग देने पर चर मिनटादि प्राप्त हो जायेंगे। उदाहरणार्थ किसी नगर का अक्षांश 28 अंश 39 कला है और अभीष्ट दिन की क्रान्ति का मान 10 अंश 25 कला है तो कलात्मक मान 39 में 25 का योग करने पर 64 हुआ यह 60 से कुछ अधिक अत: अक्षांश के 28 अंश को 29 मान कर क्रान्ति के 10 अंश से गुणाकर लेने पर सरलता आ जाती है अथवा क्रान्ति के 10 अंश में 1 बढ़ाकर 11 अंश को अक्षांश के 28 अंशों से गुणाकर लेना चाहिए। इस गुणनफल को 2 से गुणाकर 25 का भाग देने पर चर मिनटादि प्राप्त हो जायेगा।

$\frac{29x10\ x2}{25}$=23.2 मिनट। $\frac{28x\ 11x\ 2}{25}$

इस स्थूल प्रक्रिया से दोनों प्रकार से गणित करने पर केवल 1 मिनट का अन्तर पड़ता है जो नगण्य है, परन्तु इस प्रकार से गुणन व भजन में सरलता आ जाती है। इस प्रक्रिया को दशमलव में परिणत करने पर 28.65x10.42=२९८.५४ $= \frac{298.54}{25}$। $= \frac{298.54x2}{25} = \frac{597.08}{25}$ = 23.88 =23 मि. 53 से.

=23 मिनट 53 सेकेण्ड = 24 मिनट चर। इन दोनों प्रकार से 24 मिनट के आसन्न चर मिनट प्राप्त होते हैं। सूक्ष्म प्रकार से चरमिनटादि प्राप्त करने हेतु अक्षस्पर्शज्या को क्रान्ति स्पर्श ज्या से गुणन करने पर चरज्या प्राप्त होती है। चरज्या को चाप में परिणत करके 4 से गुणा करने पर चर मिनटादि सूक्ष्म मान से प्राप्त होते हैं।

28.65 = 28 अंश 39 कला की स्पर्शज्या = .54635

10.417 अंश =10 अंश 25 कला की स्पर्शज्या = .18384

दोनों का गुणनफल = .10044 चरज्या।

चरज्या का चाप 5.7645। चाप x 4= चरमिनट सूक्ष्म 23.06 मि. = 23 मि. 4 से. चर का मान। यह सूक्ष्म प्रक्रिया प्रत्येक गणितज्ञ को सुलभ नहीं होती। अत: दशमलव पद्धति अथवा कलाओं का योग करके उपर्युक्त प्रक्रिया से ही चरसाधन कर लेना चाहिए। सूर्योदय काल में केवल घन्टे और मिनट ही लिखें जाते हैं सेकण्डों को अर्द्धाधिक रूप ग्राह्यम् इस नियमानुसार 1 मिनट जोड़कर या छोड़कर काम चला लिया जाता है। इस कारण 1 मिनट का अन्तर नगण्य माना गया है। प्राय: सभी गणितज्ञ स्थूल पद्धति से ही चरमिनट की गणित करते हैं। चरसारिणी भी यहाँ संलग्न कर दी गई है, जिससे बिना गणित किये ही चरमिनटादि प्राप्त हो जाते हैं। उपरोक्त नगरों का 6 अगस्त का सूर्योदय काल ज्ञान करने हेतु 6 अगस्त को क्रान्ति का मान सारिणी द्वारा ज्ञात करने पर 16 अंश 47 कला प्राप्त हुई। क्रान्ति का मान भूमण्डल में सर्वत्र अभीष्ट स्थान में बराबर होता है देशभेद से इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता नगरों के अक्षांशों का मान यत्र-तत्र सर्वत्र उपलब्ध है-

नगर नाम	अक्षांश अशं कला	क्रान्ति अंश काला	$\frac{\text{अक्षांश x क्रान्ति x2}}{25}$ = चरमिनटादि
अहमदाबाद	23/02	16.47,	$\frac{23\ x16.8\ x\ 2}{25}$ = 30 मिनट 54 सेकेण्ड
लखनऊ	26/51	16.47,	$\frac{26.85\ x\ 16.8\ x2}{25}$=32 मिनट 36 सेकेण्ड 5=36.08 मि
मुम्बई	18/58	16.47,.	$\frac{19.\ x\ 16.8\ x\ 2}{२५}$= 25 मिनट 32 सेकेण्ड = 25.53 मि
कोलकाता	22/35	16.47,	$\frac{22.6\ x\ 16.8\ x\ 2}{25}$= 30 मिनट 22 सेकेण्ड =30.38 मि

चेन्नई 13/04 16.47, $\frac{13 \times 16.8 \times 2}{25}$ = 17 मिनट 28 सेकेण्ड = 17.47 मि.

कलात्मक मान के योग द्वारा

अहमदाबाद	लखनऊ	मुम्बई	कोलकाता	चेन्नई
$\frac{23 \times 17 \times 2}{25}$	$\frac{27 \times 17 \times 2}{25}$	$\frac{19 \times 17 \times 2}{25}$	$\frac{22 \times 17 \times 2}{25}$	$\frac{13 \times 17 \times 2}{25}$=17 मि.41 से
=31 मि०17से०	= 36 मि०43से०	=25मि०50से०	=29 मि०55 से०	= 17मि० 41 से०

इस प्रकार दोनों प्रकार से लगभग चरमिनट का मान बराबर ही है। सारणी द्वारा जो चर मिनटादि प्राप्त होंगे उनमें सूक्ष्मता अधिक है अत: सारणी द्वारा प्राप्त चरमिनटादि मान ही ग्रहण करना चाहिए। सारणी के अभाव में इस गणित प्रक्रिया से चरमान निकालने पर कोई खास अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि सेकण्डात्मक मान छोड़कर घन्टे-मिनट में ही सूर्योदय को लिखा जाता है अत: 1 मिनट का अन्तर ही क्षम्य एवं नगण्य है। 21 मार्च से 23 सितम्बर तक (चाहे जो ईसवी सन् हो) 6 घन्टे में चर मिनटों को घटाने पर धूपघड़ी के समय का सूर्योदय काल ज्ञात होता है। अत: 6 अगस्त को 6 घण्टे में चर मिनटों को घटाने पर धूपघड़ी के समय का सूर्योदय काल ज्ञात होता है। अत: 6 अगस्त को चरमिनट 6 घण्टे में घटाने पर-

अहमदाबाद	मुम्बई		कोलकाता		लखनऊ	चेन्नई
6/00	6/0	10/0	6/0	10/0	6/00	6/00
-31	-25	6/20	-30	-5/12	-36	-17
5/29	5/35	3/40	5/30	4/48	5/24	5/43
+46	+45	9/10 इष्टम	-18	12/0 घ.प.	+12	+ 15
=I.S.T. 6/15	6/20 सूर्योदय		5/12	इष्टकाल	5/12	5/28 I.S.T. सूर्योदय

अहमदाबाद में सूर्य घड़ी के अनुसार 5 बजकर 29 मिनट पर सूर्योदय 6 अगस्त को हुआ इसमें 6 अगस्त के स्पष्टान्तर 46 मिनट का विपरीत संस्कार करने पर 6 बजकर 15 मिनट भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार सूर्योदय काल हुआ। स्पष्टान्तर का साधन दिक्शोध यन्त्र के विवरण में किया जा चुका है वहाँ अहमदाबाद का स्पष्टान्तर 45 मिनट 28 सेकण्ड ऋणात्मक लिखा है उसका विपरीत संस्कार अर्थात् धनात्मक संस्कार करने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय का सूर्योदय काल ज्ञात हुआ है इसी प्रकार मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई व लखनऊ के सूर्योदय काल बनाये गये हैं। इसमें सेकण्डों का मान नहीं लिखा है केवल मिनटों का ही मान सुगमता के लिए किया गया है। गणितज्ञ चाहे तो सेकेण्डात्मक मानकर भी प्रयोग कर सकते हैं। पिछली पंक्तियों में बतलाया जा चुका है भारत वर्ष के सभी नगरादि के उत्तर अक्षांश व पूर्व रेखांश है। उपर्युक्त प्रक्रिया समस्त भारतवर्ष में लागू है ही परन्तु इसके अतिरिक्त जिन विदेशीय नगरों का उत्तर अक्षांश व पूर्व रेखांश होगा वहाँ भी इस गणित प्रक्रिया से सूर्योदय काल का साधन होगा। समस्त भूमण्डल का 4 भागों में वर्गीकरण किया गया है। (1) उत्तर अक्षांश व पूर्व रेखांश (2) उत्तर अक्षांश व पश्चिम रेखांश (3) दक्षिण अक्षांश व पूर्व रेखांश (4) दक्षिण अक्षांश व पश्चिम रेखांश। नम्बर (1) का सूर्योदयकाल ज्ञात करने का विवरण दिया जा चुका है। अब नम्बर (2) का विवरण प्रारम्भ करते हैं-उत्तर अक्षांश व पश्चिम रेखांश पर स्थित नगरों में सर्व प्रथम मध्यमान्तर की चर्चा इस प्रकार है। भारतवर्ष में

पूर्व रेखांश है। अत: भारतवर्ष के स्थिर रेखांश (82.30^0) से कम रेखांश वाले नगरों का मध्यमान्तर ऋणात्मक होता है और अधिक रेखांश पर स्थित नगरों का मध्यमान्तर धनात्मक होता है, किन्तु पश्चिम रेखांश पर स्थित नगरों में इसके विपरीत मध्यमान्तर होता है। अर्थात् अभीष्ट देशीय स्थिर रेखांश से अभीष्ट नगर का रेखांश कम हो, तो मध्यमान्तर धनात्मक तथा स्थिर रेखांश से अधिक रेखांश पर स्थित नगरों का ऋणात्मक मध्यमान्तर होता है। प्रत्येक राष्ट्र का ग्रीन्विच से पूर्व व पश्चिम रेखांश निश्चित किया हुआ है। जैसे मॉरीशस का पूर्व 60 अंश पर स्थित रेखांश निश्चित किया हुआ है। अमेरिका में न्यूयार्क के आसन्न नगरों का पश्चिम 75 अंश पर स्थित रेखांश निश्चित किया गया है। इसी प्रकार जर्मन, रूस, केनिया, ईरान, ईराक आदि राष्ट्रों के स्थिर रेखांश निश्चित है। स्थिर रेखांश को स्तम्भ माना गया है। 15 अंश घण्टे के बराबर होता है। अत: स्थिर रेखांशों को घन्टात्मक समय में भी लिखा जाता व समझा जाता है। भारतवर्ष में 82 अंश 30 कला स्थिर रेखांश पूर्व में है अत: 5 घं० 30 मि० आगे है। जब ग्रीन्विच में रात्रि के 12 बजे होंगे तब भारतीय स्टैण्डर्ड समय प्रात: 5 बजकर 30 मिनट होगा। मॉरीशस का स्तम्भ पूर्व 60 अंश है अर्थात् 4 घण्टे पूर्व है अत: ग्रीन्विच के 12 बजे के समय मॉरीशस का स्टैण्डर्ड समय प्रात: 4 बजे का होगा। इसी प्रकार अमेरिका में जहाँ 75 अंश पश्चिम रेखांश पर स्तम्भ है ग्रीन्विच के रात्रि के 12 बजे के समय रात्रि के 7 बजे का अमेरिकन स्टैण्डर्ड समय होगा। इस कारण ही अमेरिका और भारत के बीच 10 घन्टे 30 मिनट का अन्तर माना गया है। भारत और मॉरीशस से 1 घन्टे 30 मिनट का अन्तर माना गया है। इस कारण अपने अपने राष्ट्र के स्तम्भ द्वारा मध्यमान्तर निकाला जाता है पूर्व स्तम्भ में मध्यमान्तर का जो चिन्ह होता है वह पश्चिम स्तम्भ में उलट जाता है। इस बदलाव का प्रमुख कारण 1 अंश में 4 मिनट के हिसाब से पूर्व रेखांश में बढ़ता है तथा पश्चिम रेखांश में 4 मिनट घटता है। यदि किसी राष्ट्र का पश्चिम 75 अंश रेखांश (स्थिर रेखांश पर स्तम्भ है) और अभीष्ट नगर का उस ही राष्ट्र में 74 अंश पश्चिम रेखांश है तो जब ग्रीन्विच में रात्रि के 12 बजे होंगे तब 75 अंश पश्चिम स्तम्भ पर 5 घण्टे कम का समय होगा अर्थात् रात्रि के 7 बजेगें और अभीष्ट नगर जो 74 अंश पर है वहाँ 7 बजकर 4 मिनट होंगे इससे सिद्ध हुआ कि पश्चिम रेखांश में मध्यमान्तर के चिन्ह का बदलाव हो जाता है। दिल्ली का रेखांश भारत के स्तम्भमान (82/30 अंश) से कम है। इसलिए ऋणात्मक है। जबकि पश्चिम रेखांश से अधिक है यह स्थिति उत्तरोत्तर पूर्व रेखांश में बढ़ाव पश्चिम रेखांश में घटाव के कारण बनती है। मध्यमान्तर निकालने की प्रक्रिया पूर्व रेखांश स्थित नगर और पश्चिम रेखांश स्थित नगरों की एक सी है केवल चिन्ह में वैपरीत्य है नम्बर (2) उत्तर अक्षांश व पश्चिम रेखांश पर स्थित नगरों में मध्यमान्तर का ही चिन्ह बदलता है शेष प्रक्रिया भारतवर्ष की तरह ही सूर्योदय काल निकालने की है। नम्बर (3) दक्षिण अक्षांश व पूर्व रेखांश सम्पूर्ण प्रक्रिया भारतवर्ष की तरह ही है केवल चरमिनटादि का विपरीत संस्कार करना चाहिए। 21 मार्च से 22 सितम्बर तक चरमिनटों को 6 घण्टे में जोड़ना चाहिए तथा 23 सितम्बर से 20 मार्च तक चरमिनट 6 घण्टे में घटाना चाहिए। मध्यमान्तर निकालने हेतु अभीष्ट राष्ट्र का स्तम्भ प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे मॉरीशस का अक्षांश दक्षिण है और रेखांश पूर्व है। मॉरीशस का स्तम्भ 4 घण्टे अर्थात् 60 अंश है अत: अभीष्ट नगर के रेखांश का 60 अंश से अन्तर कर शेष को 4 से गुणा करने पर जो मध्यमान्तर के मिनटादि प्राप्त हो उनका ऋण व धन का चिन्ह भारतवर्ष की तरह समझना चाहिए।

दूसरा सरल प्रकार यह है कि भारत की प्रक्रिया के अनुसार धूपघड़ी के समय का सूर्योदय काल निकाल कर उसे 12 घण्टे में घटा देने पर दक्षिण अक्षांश स्थित नगरों का सूर्योदय काल बन जाता है। इससे स्थानीय स्पष्टान्तर का संस्कार करने पर स्टैण्डर्ड समय का सूर्योदय काल बन जाता है। नम्बर (4) दक्षिण अक्षांश व पश्चिम रेखांश जिन नगरों का अक्षांश दक्षिण हो और रेखांश पश्चिम हो वहाँ चरमिनट और मध्यमान्तर इन दोनों के चिन्ह भारतवर्ष से विपरीत कल्पना करके गणित करने पर सूर्योदय काल निकलता है। जो प्रकार मॉरीशस का दिया है उस प्रकार से स्थानीय समय (सूर्यघटिका) सूर्योदय निकाल कर अपने राष्ट्र के स्तम्भ से मध्यमान्तर भारतवर्ष की

तरह निकालकर ऋण व धन चिन्हों का परिवर्तन कर उमसें वेलान्तर का संस्कार करके स्पष्टान्तर निकाल कर उसका विपरीत संस्कार करने पर स्टैण्डर्ड समय का सूर्योदय काल ज्ञात हो जाता है। जैसे भारतवर्ष में मध्यमान्तर का चिन्ह धनात्मक हो, तो दक्षिण अक्षांश स्थित नगरों का मध्यमान्तर ऋणात्मक मानना चाहिए तथा भारतवर्ष में ऋणात्मक मध्यमान्तर आता हो तो यहाँ धनात्मक मध्यमान्तर मानकर स्पष्टान्तर निकालना चाहिए।

उत्तर अक्षांश व पश्चिम रेखांश-

	अक्षांश उत्तर	रेखांश पश्चिम	मध्यान्तर
स्तम्भ 750न्यूयार्क—5 घण्टे	40/43	74/00	+4 मिनट
स्तम्भ 80 अंश मेक्सिको—6 घं०	19/26	99/1	—36/4

देश विदेशों की सूर्योदय काल की प्रक्रिया ऊपर लिखी जा चुकी है। नीचे सोदाहरण गणित के प्रकार का विवरण इस प्रकार है- 6 अगस्त को न्यूयार्क और मैस्किको में सूर्योदय काल निकालने के दोनों स्थानों के चर मिनट गणितागत मान से 6 अगस्त को क्रान्ति का मान 16 अंश 45 कला 16.75 45 कला = .75 42 कला =.70 न्यूयार्क का अक्षांश 40/42' उत्तर है। अत:

$$\frac{16.75 \times 40.7 \times 2}{25} = 54 \text{ मिनट } 32 \text{ सेकेण्ड}$$

(16.75') स्पर्शज्या x (40.70) स्पर्शज्या = चरज्या = 2588714 इनका चाप = 15.004 इसे 4 गुणा करने पर 60 मिनट 0 सेकेण्ड चर का मान प्राप्त हुआ। चरसारणी द्वारा चरमिनट 59 मिनट के आसन्न मिलते हैं। 3 प्रकारों में चरमान में भिन्नता है। जिसमें 60 मिनट 0 सेकेण्ड का मान सूक्ष्म होने से शुद्ध चरमान है। इस चरमान को 6 अगस्त को उत्तराक्रान्ति है अत: 6 घण्टे में घटाने पर 5 घण्टे 0 मिनट अर्थात् न्यूयार्क की धूपघड़ी के 5 बजकर 0 मिनट है। इससे वहाँ का स्पष्टान्तर = (+4) मिनट मध्यामान्तर -5 मि0 50 सेकेण्ड वेलान्तर = -1 मि0 50 से0 का उपर्युक्त सूर्योदय में विपरीत संस्कार करने पर (5 घं0 0 मिनट)+(1 मिनट 50 सेकेण्ड)= 5 बजकर 1 मिनट 50 सेकेण्ड अर्थात् 5 बजकर 2 मिनट न्यूयार्क स्टैण्डर्ड समय का सूर्योदय काल ज्ञात हुआ।

मैक्सिको-19 अंश/26 अंश उत्तर अक्षांश/99 अंश/1' पश्चिम रेखांश स्तम्भ 90 अंश है इसको 99 अंश 1 कला में घटाने पर 9 अंश 1 कला मान प्राप्त हुआ उसे 4 से गुणा करने पर 36 मिनट 4 सेकेण्ड मध्यान्तर प्राप्त हुआ। चूंकि स्तम्भ पश्चिम रेखांश का है इसलिए भारतवर्ष के विपरीत चिन्ह होने के कारण ऋणात्मक मध्यमान्तर हुआ। भारत के नियमानुसार धनात्मक मध्यमान्तर आता है अत: मध्यमान्तर के विषय में यह सूत्र स्मृति में रखना चाहिए कि पश्चिम रेखांश पर स्थित नगर का पूर्व रेखांश स्थित नगर के विपरीत चिन्ह होता है अर्थात् भारतवर्ष पद्धति में स्तम्भ (82.30') अभीष्ट नगर के रेखांश से अधिक है तो मध्यमान्तर ऋणात्मक होगा। यदि अभीष्ट नगर का रेखांश स्तम्भ से अधिक होगा तो मध्यमान्तर चिह्न इसके विपरीत होगा। ऋणात्मक 36 मि0 4 से0 में 6 अगस्त के ऋणात्मक 5 मिनट 52 सेकेण्ड को जोड़ने पर **41 मिनट 56 से0** ऋणात्मक स्पष्टान्तर हुआ। इसका विपरीत संस्कार करने पर धूपघड़ी के समय का सूर्योदय काल स्टैण्डर्ड समय में परिणत होगा। मैक्सिको अक्षांश उत्तर 19.4334 रेखांश 99 अंश, क्रान्ति 16.75 (6 अगस्त को) इसमें चरमिनट का ज्ञान—

$$\frac{16.75 \times 19.4334 \times 2}{25} = 26 \text{ मिनट } 2 \text{ सेकेण्ड स्थूल}$$

स्पर्शज्या (16.75) x स्पर्शज्या (19.4334) = चरज्या

=106184 इसका चाप 6.0954 इस चाप को 4 से गुणा करने पर 24.3815 मिनट = 24 मिनट 23 सेकेण्ड = चरमिनटादि प्राप्त हुए। चरसारणी द्वारा भी 24 मिनट के आसन्न चरमिनट प्राप्त होते हैं। उत्तरा क्रान्ति होने से इन चर मिनटों को 6 घण्टे में घटाने पर 5 घण्टे 36 मिनट मैस्किको की धूपघड़ी के अनुसार सूर्योदय काल प्राप्त हुआ। इसमें उपर्युक्त ऋणात्मक 41 मिनट 56 से0 का विपरीत संस्कार करने पर (5 घं0 36 मिनट) + (41 मिनट 56 सेकेण्ड = 6 घण्टा 17 मिनट 56 सेकेण्ड = 6 घंटा 18 मिनट) मैस्किको के स्टैण्डर्ड समयानुसार सूर्योदयकाल ज्ञात हुआ। यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि चरसारणी जो भारतीय कुण्डली विज्ञान में दी हुई है उसके द्वारा चरमिनट का आनयन अधिक शुद्ध है अत: अक्षांश को क्रान्ति से गुणाकर गुणनफल को 2 से गुणा करके 25 का भाग देने पर जो चर मिनटादि निकलते हैं वह स्थूल मान है। इसका प्रयोग तो चरसारणी के अभाव में ही करना चाहिए। अत्यंत सूक्ष्ममान तो चरज्या के आधार पर ही निकलता है जो साधारण गणितज्ञ के लिए कठिन पड़ता है।

(3) दक्षिण अक्षांश और पूर्व रेखांश-मॉरीशस अक्षांश दक्षिण 20 अंश 18 कला पूर्व रेखांश 57 अंश 33 कला, 60 स्तम्भ अंश पूर्व मध्यमान्तर 9 मिनट 48 सेकेण्ड से ऋणात्मक। मोम्बासा दक्षिण अक्षांश 4.00 रेखांश 39/40 पूर्व स्तम्भ 45 अंश पूर्व, मध्यमान्तर 21 मिनट 20 से ऋणात्मक। वेलान्तर 6 अगस्त को 5 मिनट 52 से0 ऋणात्मक, स्पष्टान्तर 27 मिनट 12 से0 ऋणात्मक।

सारणी द्वारा मॉरीशस का चरमिनटादि 25 मि० 33 सेकेण्ड इस चरमान का विपरीत संस्कार करने पर अर्थात् उत्तरक्रान्ति 16.75 होने से भारतवर्ष में 6 घण्टे में इस चरमान को घटाया जाता है, परन्तु दक्षिण अक्षांश के देश में 6 घण्टे में जोड़ने पर 6 बजकर 25 मिनट 33 सेकेण्ड मॉरीशस की धूपघड़ी के समयानुसार सूर्योदय काल हुआ इसमें -9।48-5।52 = स्पष्टान्तर 15 मिनट 40 से ऋणात्मक का विपरीत संस्कार करने पर 6 बजकर 41 मिनट 13 सेकेण्ड अर्थात् 6 बजकर 41 मिनट मॉरीशस के स्टैण्डर्ड समयानुसार सूर्योदय काल प्राप्त हुआ। (मॉरीशस का स्टैण्डर्ड समय 6 बजकर 41 मिनट सूर्योदय का है)। लीमा का अक्षांश दक्षिण 12 अंश 2 कला, पश्चिम रेखांश 77 अंश 2 कला। स्तम्भ-5 घण्टे (-75 अंश) पश्चिम 75 अंश है। दक्षिण अक्षांश और पश्चिम रेखांश में भारतवर्ष के विपरीत संस्कार चरमिनट और मध्यमान्तरमिनट में होता है। 6 अगस्त को लीमा में सूर्योदय ज्ञात करने हेतु मध्यमान्तर का मान निम्नोक्त है-पश्चिम 75 अंश स्तम्भ है लीमा का 77 अंश 2 कला पश्चिम रेखांश है। 77 अंश /2 को पश्चिम स्तम्भ 75 अंश को घटाने पर 2 अंश 2 कला शेष रहा इसे 4 से गुणा करने पर 8 मिनट 8 से0 मध्यमान्तर प्राप्त हुआ, पश्चिम रेखांश होने के कारण यह ऋणात्मक है। 6 अगस्त को वेलान्तर ऋणात्मक वेलान्तर 5 मि0 52 से0 है। मध्यमान्तर और वेलान्तर दोनों ऋणात्मक होने से 8 मिनट 8 सेकेण्ड और ऋण 5 मिनट 52 सेकेण्ड का योग करने पर 14 मिनट का ऋणात्मक स्पष्टान्तर प्राप्त हुआ।

लीमा का दक्षिण अक्षांश 12 अंश 2 कला है 6 अगस्त को 16 अंश 45 कला क्रान्ति उत्तरा है।

अक्षस्पर्शज्या x क्रान्तिस्पर्शज्या = चरज्या/चरज्या का चाप निकालकर 4 से गुणा करने पर चर मिनट प्राप्त होते हैं।

इस चाप को 4 से गुणा करने पर 14.6824 मिनट अर्थात् 14 मिनट 41 सेकेण्ड चरमिनट प्राप्त हुए, इन चरमिनटों को उत्तरा क्रान्ति होने से दक्षिण अक्षांश में 6 घण्टे में जोड़ने पर 6 बजकर 14 मिनट 41से0 (6 बजकर 15 मिनट) पर लीमा की सूर्यघड़ी के अनुसार समय प्राप्त हुआ। इसमें उपर्युक्त ऋणात्मक 14 मिनट का विपरीत संस्कार करने पर 6 बजकर 29 मिनट स्टैण्डर्ड समय (लीमा) का सूर्योदय ज्ञात हुआ। चर सारणी से भी 14 मिनट 42 सेकेण्ड चरमिनट प्राप्त हुआ।

ब्राजिल में (Riodejaneiro) का दक्षिण अक्षांश 22 अंश 54 कला और पश्चिम रेखांश 43 अंश 12 कला है। 6 अगस्त को उत्तराक्रान्ति 16.75 है। इस स्थान पर भी (लीमा) की तरह की सूर्योदय ज्ञात होगा। स्पर्शज्या (16.75) X स्पर्शज्या (22.9) चरज्या 0.1271 इसका चाप 7.2453 है इस चाप को 4 से गुणा करने पर 28.9812 मिनट अर्थात् 28 मिनट 52 सेकेण्ड चरमिनट प्राप्त हुए। चर सारणी द्वारा 29 मिनट 36 सेकेण्ड चरमिनट प्राप्त किये।

दक्षिण अक्षांश होने से चरमिनट धनात्मक— 6.00 + 29 = 6.29 धूपघड़ी का समय —1 = 6/28 (एस० टी०) स्तम्भ -3 पश्चिम रेखांश 45/0 है स्पष्टान्तर 1 मि. 20 से. धनात्मक इसका विपरीत संस्कार किया है- 45/0-43/12 = 1.48, (1.48) X 4 = + 7 मिनट 12 से0 = मध्यमान्तर +7/12 -5/52 = + 1/20 स्प0 अ0 = 6/29-1 = 6.28 स्टैण्डर्ड समय का सूर्योदय।

> वाणी का दुरुपयोग मनुष्य को जीवन के सभी पहलुओं में असफल बनाता है। झूठ बोलकर, धोखा देकर, चालाकी भरे शब्दों का व्यवहार करके मनुष्य दूसरों को भ्रम में डाल देता है। ऐसे व्यक्तियों का कोई साथ नहीं देता। ऐसे धूर्त, चालाक, लम्पट, वाचाल व्यक्तियों से सभी बचने का प्रयत्न करते हैं।
>
> **—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य**

वैदेशिक नगरों की सूर्योदय निर्माण तालिका

6 अगस्त को वेलान्तर–5/52/क्रान्ति उत्तरा 16.75 अंश है।

नगरनाम	स्तम्भ	अक्षांश	रेखांश	मध्य-मान्तर	वेलान्तर	स्पष्टान्तर	चर-मिनट सारणी से	धूपघड़ी के समय का सूर्योदय	स्टैण्डर्ड समय का सू0 उ0
लीमा (पेरु)	-5घन्टे पश्चिम रेखांश 75अंश	अ0क0 12/2 दक्षिण अक्षांश	अं0 क 77/2 पश्चिम	77/2 -75/0 2/2 (2/2)4 =8/8 ऋणा-त्मक = 8 मि. - 8 से मध्यमान्तर	मि से0 -5/52	-8/8 -5/52 -14 ।00 स्प. अ.	मि. से. + 14 /42	6/0/0 + 14/42 6/14/42	6/14/42 +14 ।00 6 ।28 ।42 = 6 ब 28 मि स्टैण्डर्ड
लोस एंगेलेस यू.एस.ए 205	स्तम्भ - 8 घन्टे पश्चिम रेखांश 120 अंश	34/3 उत्तर अक्षांश	अं क. 118/1 7 पश्चिम	120 ।00- 118 ।17 1 ।43 4 (1 ।43)= 9 ।43 मि	-5 ।52 मि. से.	+6 ।52 -5 ।52 + 1 ।00 स्प. अ	-48 मि.	6/0 -48 5 ।12 स्प अ. -1 5 ।11	5 ।12 -1 स्पष्ट. 5 ।11 स्टैण्डर्ड सू.उ
(ब्राजिल) रियोडिजे- नीरो	-3 घन्टे 45 अंश पश्चिम	22 ।54 दक्षिण अक्षांश	43 ।12 पश्चिम	- 45 ।00 43 ।12 (1 ।48)4 + 7 ।12 मि. से.	+7 ।12 -5/52 +1/20 स्प. अ.	+7 ।12 - 5 ।52 +1 ।20 स्प. अ.	मि से + 29 ।27	6 ।0 ।0 +29 ।27 6 ।29 ।27	6 ।29 ।27 -1 ।20 6 ।28 ।7 स्टै. सू. उ
टोक्यो जापान	+ 9 घन्टे 135 अंश पूर्व	35 ।40 उत्तर	139 ।3 3 पूर्व	139 ।33 -135 ।0 (4 ।33)4 +18 ।12 मि. से. म. अ.		+ 18 ।12 -5 ।52 +12 ।20 स्प. अ +12 मि. 20 सें.	-49 मि.	6 ।0 ।0 -49 ।0 5 ।11 धूपघड़ी	5 ।11 -12 ।20 4 ।58 ।40 स्टै. सू.उ
वासिंगटन	-5 घन्टे 75 अंश पश्चिम	38 ।55 उत्तर	77 ।4 पश्चिम	77 ।4 -75 ।0 2/4 4(2 ।4) =8 ।16 मि. से ऋण	-5 ।52	-8 ।16 -5 ।52 -14 ।8 स्प. अ	-54 मि.	6 ।0 ।0 -54 ।0 5 ।6 धूपघड़ी	5 ।6 +14 मि. 5 ।20 s.t. स्टै. सू. उ

इष्टकाल निर्माण विधि- जन्मकालीन स्टैण्डर्ड समय में अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड सूर्योदय काल को घटाकर शेष को $2^{1/2}$ से गुणा करने पर इष्ट घटी व पल जो प्राप्त होंगे वह ही इष्टकाल के नाम से जाना जाता है।

6 अगस्त 2000 (ईस्वीसन्) को प्रात: 10 बजे का इष्टकाल विदेश के नगरों का बनाने का प्रकार निम्नोक्त है

नगरनाम	स्टै0 सूर्योदय	जन्म समय	अन्तर	इष्टकाल घटीपल	नगर	स्टै. सूर्योदय	जन्म समय	अन्तर	इष्टकाल घटीपल
लीमा (पेरु) Lima (Peru)	6 ।29	प्रात: 10 बजे	10 ।0 -6 ।29 3 ।31 घ. मि.	(3 ।31) X 5 ÷2 = 8 ।47 ।30 घ. प. वि.	लोस ऐंगलेस U.S.A Los Angeles	5 ।11	10 बजे प्रात:	10 ।0 -5 ।11 4 ।49 12 ।2 ।30 इष्टम्	घ प वि 12 ।2 ।30 (4 ।49)X5 ÷2 =12 ।2 ।30
न्यूयार्क U.S.A. New York	5 ।2	10 ।0 -5 ।3 4 ।57	10 ।0 -5 ।3 4 ।57	घ. प. वि 12 ।22 ।30 (4 ।57) X 5 ÷ 2 =12 ।22 ।30	रियोडिजेनीरो ब्राजिल Riode Janeoro Brasil	6 ।28	10 बजे प्रात:	10 ।0 -6 ।28 3 ।32	घ. प 8 ।50 (3 ।32)X5 ÷2=8 ।50 घ. प.
टोक्यो	4 ।59	10 बजे प्रात:	10 ।0 4 । 59 5 । 1	घ. प. वि 12 ।32 ।30 इष्टम् (5 ।1) X 5 ÷2 = 12 ।32 ।30	वाशिंगटन	5 ।20	10 बजे प्रात:	10 ।00 5 ।20 4 ।40	11 ।40 घ. प. (4 ।40) X 5 ÷2 11 ।40घ. प.

नगरनाम	स्टै0 सूर्य उदय	जन्म समय	अन्तर	इष्टकाल घटीपल	नगर	स्टै. सूर्योदय	जन्म समय	अन्तर	इष्टकाल घटीपल
मॉरीशस	6 ।41	10 बजे प्रात:	10 ।0 6 ।41 3 ।19	घ. प. वि. 8 ।17 ।30 (3 ।19)X 5 ÷2 = 8 ।17 ।30 घ. प. वि.	मैक्सिको	6 ।18	प्रात: 10 ।00 6 ।18 3 ।42	10.00 6 ।18 3 ।42	घ. प. 9 ।15 (3 ।42) X 5÷2 = 9 घ15 प.

अक्षांश स्पर्शज्या क्रान्तिस्पर्शज्या चरज्या। चरज्या का चाप बनाकर 4से गुणा करने पर चरमिनट प्राप्त होते हैं। इस प्रक्रिया से चरमिनट का जो मान आता है उसमें और सारणी द्वारा चरमिनट में कभी-कभी 1 मिनट अन्तर पड़ जाता है। सर्वदा नहीं पड़ता, अतः यह नगण्य है। उपयुर्क्त तालिका में सारणी द्वारा चरमिनट लिये गये हैं।

नगरनाम	स्तम्भ	अक्षांश	रेखांश	मध्यमान्तर	वेलान्तर	स्पष्टान्तर	चरमिनट	धूपघडी सू. उ.	स्टै. सूर्योदय
सिडनी आस्ट्रेलिया	10 घन्टे पूर्व 150 रेखांश	33।52 दक्षिण	पूर्व 151।12	151।12 150।0 1।12 (1।12)4 =4।18 +4।48 म. अ.	-5।52	-5।52 +4।48 -1।4 स्प. अ	45।42	6।0।0 45।42 6।45 ।42 3।13 8।2।30 इष्टम्	6।45।42 + 1।4 6।46।46 स्टै. सू. उ. 10।0 -6।47 3।13 8।2।30 इष्टम्
विलिंगटन	+ 12 घन्टे 180 पूर्व रेखांश	41।16 दक्षिण 10।00 -7।25 2।35 घ. मि.	174।47 पूर्व रेखांश	180।0 -174।47 5।13 (5।13)4 = - 20।52 मि. से.	-5।52	-20।52 -5।12 स्प. अ -26मि. 4 सें.	+ 59।8 10।0 -7।25 2।35 6।27 ।30 इष्टम्	6।0।0 +59।8 6।59।8	6।59।8 +26।4 7।25।12 7।25 स्टै. सू. उ घ. प. 6।27।30 इष्टम्

तुम किसी भी समाज में अथवा साथियों के संग आते-जाते समय पूरे मौनव्रती मत बनो। दूसरों को खुश करने का और उनको शिक्षा देने का प्रयत्न अवश्य करो। बहुत संभव है कि तुमको भी बदले में कुछ आनंदवर्धक अथवा शिक्षाप्रद सामग्री अवश्य मिल जाएगी। जब कोई कुछ बोलता हो तो तुम आवश्यकता पड़ने पर भले ही चुप रहा करो, परन्तु जब सब लोग चुप हो जाते हैं तब तुम सबों की शून्यता को भंग करो। सब तुम्हारे कृतज्ञ होंगे।

—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

क्रान्ति सारिणी

दिनांक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	दिनांक
जनवरी	23	22	22	22	22	22	22	22	22	22	21	21	21	21	21	20	20	20	20	20	19	19	19	19	19	18	18	18	18	17	17	जनवरी
+	2	57	51	45	39	32	24	17	9	0	51	41	31	21	10	59	48	36	24	11	58	44	30	16	2	47	32	16	0.0	44	27	+
फरवरी	17	16	16	16	16	15	15	15	14	14	14	13	13	13	12	12	12	11	11	11	10	10	9	9	9	8	8	8	7	x	x	फरवरी
+	11	53	36	18	0	42	23	5	46	26	7	47	27	7	46	26	5	44	22	1	39	18	56	34	11	49	27	4	52	x	x	+
मार्च	7	7	6	6	6	5	5	5	4	4	3	3	3	2	2	1	1	1	0	+0	−0	0	0	1	1	2	2	2	3	3	4	मार्च
+	41	18	55	32	9	46	23	0	36	13	49	26	2	38	15	51	27	4	41	16	8	31	55	19	42	6	29	53	16	40	3	−
अप्रैल	4	4	5	5	5	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9	10	10	10	11	11	11	12	12	12	13	13	13	14	14	14	x	अप्रैल
−	26	49	12	35	58	21	44	6	28	51	13	35	57	19	40	2	23	44	5	25	46	6	26	46	6	26	45	4	23	41	x	−
मई	15	15	15	15	16	16	16	17	17	17	17	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	21	मई
−	0	18	36	53	11	28	44	1	17	33	49	4	19	34	48	2	16	29	43	55	8	20	32	43	54	5	15	25	35	41	53	−
जून	22	22	22	22	22	22	22	22	22	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	x	जून
−	1	9	17	24	31	38	44	49	55	0	4	8	12	15	18	20	22	24	25	26	27	27	26	25	24	22	20	18	15	11	x	−
जुलाई	23	23	22	22	22	22	22	22	22	22	22	22	21	21	21	21	21	21	20	20	20	20	20	19	19	19	19	19	18	18	18	जुलाई
−	8	4	59	54	48	43	37	31	24	16	9	1	52	43	34	25	15	5	54	43	32	20	8	56	43	30	17	3	49	35	20	−
अगस्त	18	17	17	17	17	16	16	16	15	15	15	15	14	14	14	13	13	13	12	12	12	11	11	11	10	10	10	9	9	9	8	अगस्त
−	5	50	35	19	3	47	30	13	56	39	21	3	45	27	8	40	31	11	52	32	13	53	32	12	51	31	10	49	27	6	45	−
सितम्बर	8	8	7	7	6	6	6	5	5	5	4	4	3	3	3	2	2	1	1	1	0	−0	+0	0	0	1	1	1	2	2	x	सितम्बर
−	23	1	39	17	55	33	10	48	25	8	40	17	54	31	8	45	22	59	35	12	49	25	2	21	45	8	31	55	18	41	x	+
अक्तूबर	3	3	3	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	8	8	8	9	9	9	10	10	10	11	11	12	12	12	13	13	13	14	अक्तूबर
+	5	28	51	14	38	1	24	47	9	32	55	18	40	3	25	47	9	31	53	14	36	57	18	39	0	21	41	2	22	41	1	+
नवम्बर	14	14	14	15	15	15	16	16	16	17	17	17	17	18	18	18	18	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	x	नवम्बर
+	20	40	59	17	36	54	12	29	47	4	21	37	53	9	25	40	55	10	24	38	51	4	17	30	42	53	5	15	26	36	x	+
दिसम्बर	21	21	22	22	22	22	22	22	22	22	22	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	23	दिसम्बर
+	46	55	4	12	20	28	35	41	48	53	59	4	8	12	15	18	21	23	25	26	26	27	26	26	24	23	21	18	15	11	7	+
दिनांक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	दिनांक

वेलान्तर सारिणी

दिनांक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	दिनांक
जनवरी	3	4	4	4	5	5	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9	10	10	10	10	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	जनवरी
-	32	0	28	25	22	45	9	34	0	24	48	11	35	57	19	39	0	19	38	56	14	30	47	2	17	30	43	54	6	16	26	-
फरवरी	13	13	13	13	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	13	13	13	13	13	13	13	13	12	12	12	×	×	फरवरी
-	30	40	50	56	1	5	9	12	14	15	16	15	15	13	11	8	4	0	55	49	42	34	27	19	10	0	51	40	34	×	×	-
मार्च	12	12	12	11	11	11	11	10	10	10	10	9	9	9	9	8	8	8	7	7	7	7	6	6	6	5	5	5	4	4	4	मार्च
-	29	17	5	52	39	25	11	56	41	25	10	54	38	21	5	48	31	13	56	38	21	3	45	27	9	51	33	14	56	38	20	-
अप्रैल	4	3	3	3	2	2	2	2	1	1	1	0	0	-0	+0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	×	अप्रैल
-	2	42	26	8	51	34	17	0	43	26	10	54	38	24	9	14	20	33	47	0	13	24	36	47	58	8	18	27	36	44	×	+
मई	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	मई
+	52	59	6	12	18	22	27	31	35	38	40	42	43	43	43	42	41	39	37	33	30	26	22	16	11	4	58	51	44	35	27	+
जून	2	2	2	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	+0	-0	0	0	0	1	1	1	1	2	2	2	2	2	3	3	3	×	जून
+	19	10	0	50	40	29	19	7	56	44	32	20	8	13	17	30	43	56	9	22	36	49	2	15	28	40	53	6	18	30	×	-
जुलाई	3	3	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	जुलाई
-	42	53	4	15	26	36	46	56	5	13	22	30	37	44	51	57	2	7	12	16	20	23	25	26	28	28	28	27	27	25	22	-
अगस्त	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	3	3	3	3	2	2	2	2	1	1	1	1	0	0	अगस्त
-	18	14	10	4	59	52	46	39	31	22	13	3	53	42	31	19	7	54	41	27	13	58	43	17	12	55	38	20	3	45	27	-
सितम्बर	0	0	0	0	1	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9	9	×	सितम्बर
+	8	19	31	51	10	30	51	11	32	53	14	35	56	17	38	0	21	42	3	24	46	7	28	49	9	30	51	11	31	51	×	+
अक्तूबर	10	10	10	11	11	11	12	12	12	12	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	अक्तूबर
+	11	30	49	7	26	44	2	19	36	52	8	23	38	52	6	19	32	43	55	0	16	25	34	42	50	56	3	8	13	17	20	+
नवम्बर	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	15	15	15	15	15	15	14	14	14	14	13	13	13	13	12	12	12	11	11	×	नवम्बर
+	22	24	25	24	24	22	19	16	12	6	0	53	46	28	28	17	6	54	41	27	13	57	42	25	8	49	30	10	50	29	×	+
दिसम्बर	11	10	10	9	9	9	8	8	7	7	6	6	6	5	5	4	4	3	3	2	2	1	1	0	+0	-0	0	1	1	2	2	दिसम्बर
+	8	45	22	58	34	9	44	17	51	24	57	29	1	32	3	34	5	36	0	37	7	37	7	37	7	29	52	22	51	20	49	-
दिनांक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	दिनांक

चरसाधन विधि

अक्षस्पर्शज्या और क्रान्ति स्पर्शज्या का परस्पर गुणनफल ही चरज्या का स्वरूप होता है। चरज्या का चाप बनाकर उस चाप को 4 से गुणा करने पर चर के मिनट व सेकेण्ड प्राप्त हो जाते हैं जो सूर्योदय के निर्माण पद्धति में प्रयुक्त होते हैं। जिन्हें उपर्युक्त पद्धति में कठिनता का अनुभव होता हो वे इस सरल प्रक्रिया से भी चर मिनट प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु इस प्रक्रिया में क्रान्ति और अक्षांश की संख्या जहाँ अधिक होती है वहाँ स्थूलता अधिक आ जाने के कारण निम्नोक्त सारिणी के आधार पर सुगमता से चर मिनटादि प्राप्त कर सकते हैं। क्रान्ति और अक्षांश के गुणनफल को 2 से गुणाकर 25 का भाग देने पर चर मिनटादि प्राप्त हो जाते हैं। यहाँ क्रान्ति और अक्षांश की कलाएँ 30 से अधिक, जहाँ प्राप्त हों वहाँ क्रान्ति अथवा अक्षांश की संख्या में एक बढ़ाकर प्रक्रिया करनी चाहिए जिससे कुछ सूक्ष्मता के चरमान प्राप्त हो जाता है। चर सारिणी द्वारा चर ज्ञात करने के लिए सारिणी के ऊर्ध्व भाग में क्रान्ति की संख्या और बाँयी तरफ अक्षांश की संख्या लिखी हुई है अत: अभीष्ट अक्षांश के कोष्टक में अभीष्ट क्रान्ति के कोष्टक को मिलाकर देखने पर जो मिनट व सेकेण्ड प्राप्त हों वे ही चर मिनटादि होते हैं। सारणी से उपलब्ध अंक सूक्ष्मता से प्राप्त होते हैं स्पर्शज्या के गुणनफल की चरज्या के चाप को 4 से गुणा करने पर जो अंक प्राप्त होते हैं उसके समकक्ष ही होते हैं। अत: सारणी का ही प्रयोग करना अधिक उपयुक्त है। पाठकगण इस सारिणी का भलीभाँति उपयोग कर सकेंगे।

लग्न सारिणी देखने की विधि–अभीष्ट तारीख के सूर्य के राशि अंक ले, अभीष्ट अक्षांश की सारिणी में बाँयी तरफ राशि तथा दाहिने ऊपर तरफ अंश का कोष्ठक देखें। इष्ट काल में जोड़ें। जो फल प्राप्त हो उसे पुन: उस अक्षांश की सारिणी में देखें, वह लग्न के राशि अंश कला विकला प्रतिविकल के रूप में प्राप्त होगा।

6 अगस्त 2000 ई० के प्रात: 10 बजे सूर्य के राशि अंश 3/19/ इसका 12 अक्षांश पांडिचेरी में फल 21.54,14 इष्टकाल 9/45 दोनों को योग 31.39.14. इसे पुन: 12 की सारिणी में देखा- फल 5/ 6/31/35/7 के आसन्न। इस प्रकार कन्या लग्न प्राप्त हुई।

क्रान्त्यंश												चरसारिणी												
अक्षांश	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	4	8	13	17	21	25	29	34	38	42	47	51	55	0	4	9	13	18	22	27	32	37	42	47
2	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	3	3	3	3
	8	17	25	34	42	50	59	8	16	25	33	42	51	0	9	18	27	37	45	55	4	14	24	34
3	0	0	0	0	1	1	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	3	3	4	4	4	4	5	5
	13	25	38	50	3	16	28	41	54	7	20	33	46	0	13	27	40	55	8	22	37	51	6	21
4	0	0	0	1	1	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	4	4	5	5	5	6	6	6	7
	17	34	50	7	24	41	58	12	29	48	5	24	42	0	18	36	54	12	31	50	9	29	48	8
5	0	0	1	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	8	8	8
	21	42	3	24	45	7	28	50	10	32	54	16	38	0	23	45	7	31	54	19	42	6	31	56
6	0	0	1	1	2	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	6	7	7	8	8	9	9	10	11
	25	50	16	41	6	32	57	23	49	15	42	7	34	0	47	54	22	50	18	46	15	44	14	44
7	0	0	1	1	2	2	3	3	4	4	5	5	6	7	7	8	8	9	9	10	10	11	11	12
	29	59	28	58	29	57	27	57	27	58	28	59	30	1	32	4	36	9	42	15	48	22	57	32
8	0	1	1	2	2	3	3	4	5	5	6	6	7	8	8	9	9	10	11	11	12	13	13	14
	34	7	41	15	49	23	56	31	6	41	16	51	26	2	38	14	51	28	6	44	22	1	41	21
9	0	1	1	2	3	3	4	5	5	6	7	7	8	9	9	10	11	11	12	13	13	14	15	16
	38	16	54	33	11	49	27	6	45	24	4	43	23	3	44	25	6	48	30	13	56	41	25	11
10	0	1	2	2	3	4	4	5	6	7	7	8	9	10	10	11	12	13	13	14	15	16	17	18
	42	25	7	50	32	15	58	41	24	8	51	36	20	5	50	36	23	8	55	43	31	20	10	1
11	0	1	2	3	3	4	5	6	7	7	8	9	10	11	11	12	13	14	15	16	17	18	18	19
	47	34	20	7	54	40	28	16	3	51	40	29	17	7	56	47	38	29	27	14	7	1	56	58
12	0	1	2	3	4	5	5	6	7	8	9	10	11	12	13	13	14	15	16	17	18	19	20	21
	51	42	33	24	16	9	59	50	43	36	28	21	15	9	3	59	54	20	47	45	43	42	42	42
13	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	22
	55	51	46	42	38	34	30	20	23	20	17	15	13	12	11	11	11	12	14	17	20	25	30	36
14	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	23	24	25
	0	0	0	0	0	0	1	2	3	5	7	9	12	15	19	24	29	34	42	20	58	8	8	30
15	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	13	14	15	16	17	18	19	21	22	23	24	26	27
	4	9	13	17	21	27	31	38	44	50	57	4	10	19	27	38	48	59	10	24	35	52	7	21

क्रान्त्यंश												चरसारिणी												
अक्षांश	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
16	1	2	3	4	5	6	8	9	10	11	12	13	15	16	17	18	20	21	22	23	25	26	27	29
	9	18	27	36	44	54	4	14	25	36	47	59	10	24	36	52	7	23	40	57	17	37	58	20
17	1	2	3	4	6	7	8	9	11	12	13	14	16	17	19	20	21	22	24	25	26	28	29	31
	13	27	40	54	8	22	36	51	6	20	38	54	11	29	48	7	27	48	10	33	58	23	50	18
18	1	2	3	5	6	7	9	10	11	13	14	15	17	18	18	21	22	24	25	27	28	30	31	33
	18	36	51	12	31	50	9	28	48	8	29	50	22	34	59	23	48	14	43	10	41	10	43	16
19	1	2	4	5	6	8	9	11	12	13	15	16	18	19	21	22	24	25	27	28	30	31	33	35
	23	45	8	31	54	18	37	6	30	55	21	47	14	42	11	40	10	42	14	48	23	59	37	16
20	1	2	4	5	7	8	10	11	13	14	16	17	19	20	22	23	25	27	28	30	32	33	35	37
	23	55	22	50	16	46	15	44	13	43	14	45	27	50	23	57	33	10	41	27	8	49	33	18
21	1	3	4	6	7	9	10	12	13	15	17	18	20	21	23	25	26	28	30	32	33	35	37	39
	32	4	36	9	42	15	48	22	57	31	7	43	20	59	37	17	58	14	23	8	54	41	31	22
22	1	3	4	6	8	9	11	13	13	16	17	19	21	23	24	26	28	30	31	33	35	37	39	41
	37	14	51	29	6	44	22	1	40	20	59	42	25	8	52	37	23	11	59	49	42	35	30	27
23	1	3	5	6	8	10	11	13	15	17	18	20	22	24	26	27	29	31	33	35	37	39	41	43
	42	24	6	48	32	14	57	41	25	10	56	42	30	18	6	56	50	43	30	33	31	30	41	34
24	1	3	5	7	8	10	12	14	16	18	19	21	23	25	27	29	31	33	35	37	39	41	43	45
	47	34	21	8	56	44	32	21	11	1	52	43	36	30	24	20	18	16	16	18	22	47	34	54
25	1	3	5	7	9	11	13	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	39	41	43	45	47
	52	44	36	28	21	14	8	59	57	52	48	45	43	42	43	44	47	52	57	5	15	26	40	56
26	1	3	5	7	9	11	13	15	17	19	21	23	25	27	30	32	34	36	38	40	43	45	47	50
	57	54	52	49	37	45	44	43	43	44	46	48	52	56	2	9	18	28	40	54	13	28	48	10
27	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	27	29	31	33	35	37	40	42	45	47	49	52
	2	5	7	10	13	7	21	26	31	37	44	52	2	12	23	36	51	6	25	45	7	32	58	27
28	2	4	6	8	10	12	14	17	19	21	23	25	28	30	32	35	37	39	42	44	47	49	52	54
	8	12	23	13	40	49	58	8	19	31	44	57	12	28	46	5	25	48	12	38	6	38	11	47
29	2	4	6	8	11	13	15	17	20	22	24	27	29	31	34	36	39	41	44	46	49	51	54	57
	13	26	40	53	7	22	37	52	9	26	44	4	25	48	10	35	2	27	1	33	8	46	27	9
30	2	4	6	9	11	13	16	18	21	23	25	28	30	33	35	38	40	43	45	48	51	53	56	59
	19	37	56	15	35	55	16	37	0	22	46	12	39	6	36	7	40	15	52	31	13	57	45	35
31	2	4	7	9	12	14	16	19	21	24	26	29	31	34	37	39	42	45	47	50	53	56	59	62
	24	59	13	37	2	29	55	23	50	21	50	21	54	27	4	41	21	2	46	28	20	12	6	4
32	2	5	7	10	12	15	17	20	22	25	27	30	33	35	38	41	44	46	49	52	55	58	61	64
	30	0	30	1	32	4	36	1	43	17	54	32	10	47	33	16	3	52	42	35	30	30	31	37

क्रान्त्यंश												चरसारिणी												
अक्षांश	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
33	2	5	7	10	13	15	18	20	23	26	28	31	34	37	40	42	45	48	51	54	57	60	63	67
	36	12	46	25	2	39	16	57	37	18	59	44	29	16	5	56	48	44	40	41	44	51	57	13
34	2	5	8	10	13	16	19	21	24	27	30	32	35	38	41	44	47	50	53	56	60	63	66	69
	42	24	5	49	32	16	1	45	32	19	6	58	49	44	39	36	36	37	43	51	1	15	33	54
35	2	5	8	11	14	16	19	22	25	28	31	34	37	40	43	46	49	52	55	59	62	65	69	72
	48	36	25	14	1	53	44	35	24	22	17	14	13	13	15	19	27	36	44	4	22	44	10	40
36	2	5	8	11	14	17	20	23	26	29	32	35	38	41	44	48	51	54	57	61	64	68	71	75
	54	49	44	35	35	31	28	27	26	27	29	32	37	45	50	6	20	37	57	20	47	17	51	30
37	3	6	9	12	15	18	21	24	27	30	33	36	40	43	46	49	53	56	60	63	67	70	74	78
	1	2	3	5	6	10	14	19	25	33	41	52	5	19	36	55	17	41	7	40	15	54	39	24
38	3	6	9	12	15	18	22	25	28	31	34	38	41	44	48	51	55	58	62	66	69	73	77	81
	8	15	23	32	41	47	1	13	26	41	56	14	34	54	20	47	17	49	25	5	48	36	28	25
39	3	6	9	13	16	19	22	26	29	32	36	39	42	46	50	53	57	60	64	68	72	76	80	84
	14	29	44	0	15	32	50	8	29	50	14	39	5	36	8	42	20	58	46	34	26	23	25	32
40	3	6	10	13	16	20	23	27	30	34	37	41	44	48	51	55	59	63	67	71	75	79	83	87
	21	43	5	27	47	14	38	4	33	22	33	6	41	18	58	41	28	17	10	6	10	16	28	45
41	3	6	10	13	17	20	24	28	31	35	38	42	46	49	53	57	61	65	69	73	77	82	86	91
	29	57	25	56	27	56	30	4	39	16	55	35	19	58	53	44	39	38	40	47	78	15	37	5
42	3	7	10	14	18	21	25	29	32	36	40	44	47	50	55	59	63	68	72	76	80	85	89	93
	36	12	49	26	0	43	23	5	48	31	19	6	59	50	51	51	55	4	15	31	53	20	53	32
43	3	7	11	14	18	22	26	30	33	37	41	45	49	53	57	62	66	70	74	79	83	88	93	98
	44	28	12	57	43	27	18	7	58	51	56	44	44	47	53	2	16	33	55	22	54	32	16	7
44	3	7	11	15	19	23	27	31	35	39	43	47	51	55	59	64	68	73	77	82	87	91	96	100
	52	44	34	29	23	18	14	10	12	10	17	23	32	40	57	18	41	9	41	19	2	52	48	100
45	4	8	12	16	20	24	28	32	36	40	44	49	53	57	62	66	73	75	80	85	90	95	100	105
	0	0	1	2	5	4	10	19	27	37	47	5	24	45	10	40	13	51	34	23	18	19	0	45
46	4	8	12	16	20	25	29	33	37	42	46	50	55	59	64	69	73	79	83	88	93	98	104	109
	9	.17	27	37	48	0	13	28	46	5	27	52	21	50	26	6	50	39	33	34	41	56	18	49
47	4	8	12	17	21	25	30	34	39	43	48	52	57	62	66	71	76	81	86	91	97	102	108	114
	18	35	53	12	32	51	16	40	7	36	8	42	17	2	48	38	33	34	41	50	14	42	19	4
48	4	8	13	17	22	26	31	35	40	45	49	54	59	64	69	74	79	84	89	95	100	106	112	118
	27	53	21	49	18	39	21	55	30	10	52	37	26	18	15	17	24	36	56	22	56	39	30	32
49	4	9	13	18	23	27	32	37	42	46	51	56	61	66	71	77	82	87	93	98	104	117	116	123
	36	13	50	27	5	47	29	13	0	49	41	37	36	40	49	3	10	48	90	58	49	47	55	14

क्रान्त्यंश	चरसारिणी																							
अक्षांश	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
50	4	9	14	19	23	28	33	38	43	48	53	58	63	69	74	79	85	91	96	102	108	115	121	128
	46	32	19	7	56	47	39	34	31	31	35	42	53	9	29	56	28	4	54	50	54	8	33	11
51	4	9	14	19	24	29	34	40	45	50	55	60	66	71	77	82	88	94	100	106	113	119	126	133
	56	53	51	49	49	50	53	0	7	18	33	52	16	44	17	57	44	37	39	47	11	43	27	25
52	5	10	15	20	25	30	36	41	46	52	57	63	68	74	80	86	92	98	104	111	117	124	131	138
	7	15	23	32	43	54	10	27	47	7	37	9	45	26	14	8	6	19	36	4	43	34	38	58
53	5	10	15	21	26	32	37	42	48	54	59	65	71	77	83	89	95	102	108	115	122	129	137	144
	18	37	57	18	40	4	31	56	32	8	48	32	22	17	19	28	45	10	46	32	30	41	8	52
54	5	11	16	22	27	33	38	44	50	56	62	68	74	80	86	93	99	106	113	120	127	135	143	151
	30	1	33	4	40	16	55	37	52	11	4	2	7	17	34	0	32	16	9	15	34	9	0	10
55	5	11	17	22	28	34	40	46	52	58	64	70	76	83	90	96	103	110	117	125	132	140	149	157
	43	26	10	56	43	31	24	18	18	20	28	41	59	36	0	42	33	35	49	17	59	58	16	56
56	5	11	17	23	29	35	41	48	54	60	67	73	80	86	93	100	107	115	122	130	138	147	156	165
	56	52	50	48	49	51	57	7	19	35	0	28	4	46	38	38	39	11	47	38	45	11	0	13
57	6	12	18	24	30	37	43	50	56	63	69	76	83	90	97	104	117	120	128	136	144	153	163	173
	10	20	31	44	56	10	36	1	28	1	40	25	18	19	26	49	10	5	5	21	56	54	16	7
58	6	12	19	25	32	38	45	51	58	65	72	79	86	94	101	109	117	125	133	142	151	161	171	181
	24	49	15	42	12	44	17	59	44	34	30	26	44	4	34	16	10	19	45	32	36	8	9	46
59	6	13	20	26	33	40	47	54	61	68	75	82	90	98	105	113	122	130	139	149	158	169	179	191
	40	20	1	44	29	18	10	6	6	16	30	52	23	4	56	56	20	56	59	8	50	1	47	15
60	6	13	20	27	34	41	49	56	63	71	78	86	94	102	110	119	127	137	146	156	166	117	189	201
	56	52	50	50	46	57	7	21	41	6	42	25	17	20	37	5	54	0	27	19	41	39	18	50
61	7	14	21	28	36	43	51	58	66	74	82	90	98	106	115	124	133	143	153	164	175	187	199	213
	13	27	42	59	19	43	11	46	19	12	5	12	11	55	38	36	54	33	37	7	19	10	54	45
62	7	15	22	30	37	45	53	61	69	77	85	94	102	111	121	130	140	150	161	172	184	197	211	227
	32	4	38	17	50	36	24	16	15	21	46	7	56	51	3	32	24	40	26	47	52	49	53	27
63	7	15	23	31	39	47	55	64	72	80	89	98	107	117	126	137	147	158	170	182	192	209	225	243
	51	43	37	33	32	37	47	2	26	59	42	19	46	11	55	0	29	29	4	21	32	51	40	37
64	8	16	24	32	41	49	58	66	75	84	93	103	112	122	133	144	155	167	179	193	207	223	241	263
	12	25	40	58	20	46	11	59	48	46	55	21	57	58	18	2	16	6	38	4	38	43	58	37
65	8	17	25	34	43	52	61	70	79	88	98	108	118	129	140	151	163	176	190	205	221	240	262	289
	35	11	49	30	15	4	4	10	25	52	33	24	42	17	14	47	52	40	23	14	37	11	11	19
66	8	18	27	36	45	54	64	73	83	93	103	114	124	136	147	160	174	173	202	219	238	260	289	354
	59	0	2	9	20	37	1	36	21	19	33	4	56	13	57	32	28	28	36	19	15	38	44	40

लघुरित्क सारिणी

अंश/घंटा

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	मिनट
0	—	1.3802	1.0792	9031	7781	6812	6021	5351	4771	4260	3802	3388	3010	0
1	3.1584	1.3730	1.0756	9007	7763	6798	6009	5341	4762	4252	3795	3382	3004	1
2	2.8573	1.3660	1.0720	8983	7745	6784	5997	5330	4753	4244	3788	3375	2998	2
3	2.6812	1.3590	1.0685	8959	7728	6769	5985	5320	4744	4236	3780	3368	2992	3
4	2.5563	1.3522	1.0649	8935	7710	6755	5973	5310	4735	4228	3773	3362	2986	4
5	2.4594	1.3454	1.0614	8912	7692	6741	5961	5300	4726	4220	3766	3355	2980	5
6	2.3802	1.3388	1.0580	8888	7674	6726	5949	5289	4717	4212	3759	3349	2974	6
7	2.3133	1.3323	1.0546	8865	7657	6712	5937	5279	4708	4204	3752	3342	2968	7
8	2.2553	1.3258	1.0511	8842	7639	6698	5925	5269	4699	4196	3745	3336	2962	8
9	2.2041	1.3195	1.0478	8819	7622	6684	5913	5259	4690	4188	3737	3329	2956	9
10	2.1584	1.3133	1.0444	8796	7604	6670	5902	5249	4682	4180	3730	3323	2950	10
11	2.1170	1.3071	1.0411	8773	7587	6656	5890	5239	4673	4172	3723	3316	2944	11
12	2.0792	1.3010	1.0378	8751	7570	6642	5878	5229	4664	4164	3716	3310	2938	12
13	2.0444	1.2950	1.0345	8728	7552	6628	5866	5219	4655	4156	3709	3303	2933	13
14	2.0122	1.2891	1.0313	8706	7535	6614	5855	5209	4646	4148	3702	3297	2927	14
15	1.9823	1.2833	1.0280	8683	7518	6600	5843	5199	4638	4141	3695	3291	2921	15
16	1.9542	1.2775	1.0248	8661	7501	6587	5832	5189	4629	4133	3688	3284	2915	16
17	1.9279	1.2719	1.0216	8639	7484	6573	5820	5179	4620	4125	3681	3278	2909	17
18	1.9031	1.2663	1.0185	8617	7467	6559	5809	5169	4611	4117	3674	3271	2903	18
19	1.8796	1.2607	1.0153	8595	7451	6546	5797	5159	4603	4109	3667	3265	2897	19
20	1.8573	1.2553	1.0122	8573	7434	6532	5786	5149	4594	4102	3660	3258	2891	20
21	1.8361	1.2499	1.0091	8552	7417	6519	5774	5139	4585	4094	3653	3252	2885	21
22	1.8159	1.2445	1.0061	8530	7401	6505	5763	5129	4577	4086	3646	3246	2880	22
23	1.7966	1.2393	1.0030	8509	7384	6492	5752	5120	4568	4079	3639	3239	2874	23
24	1.7781	1.2341	1.0000	8487	7368	6478	5740	5110	4559	4071	3632	3233	2868	24
25	1.7604	1.2289	0.9970	8466	7351	6465	5729	5100	4551	4063	3625	3227	2862	25
26	1.7434	1.2239	0.9940	8445	7335	6451	5718	5090	4542	4055	3618	3220	2856	26
27	1.7270	1.2188	0.9910	8424	7318	6438	5706	5081	4534	4048	3611	3214	2850	27
28	1.7112	1.2139	0.9881	8403	7302	6425	5695	5071	4525	4040	3604	3208	2845	28
29	1.6960	1.2090	0.9852	8382	7286	6412	5684	5061	4516	4032	3597	3201	2839	29
30	1.6812	1.2041	0.9823	8361	7270	6398	5673	5051	4508	4025	3590	3195	2833	30
31	1.6670	1.1993	0.9794	8341	7254	6385	5662	5042	4499	4017	3583	3189	2827	31
32	1.6532	1.1946	0.9765	8320	7238	6372	5651	5032	4491	4010	3576	3183	2821	32
33	1.6398	1.1899	0.9737	8300	7222	6359	5640	5023	4482	4002	3570	3176	2816	33
34	1.6269	1.1852	0.9708	8279	7206	6346	5629	5013	4474	3994	3563	3170	2810	34
35	1.6143	1.1806	0.9680	8259	7190	6333	5618	5003	4466	3987	3556	3164	2804	35
36	1.6021	1.1761	0.9652	8239	7174	6320	5607	4994	4457	3979	3549	3157	2798	36
37	1.5902	1.1716	0.9625	8219	7159	6307	5596	4984	4449	3972	3542	3151	2793	37
38	1.5786	1.1671	0.9597	8199	7143	6294	5585	4975	4440	3964	3535	3145	2787	38
39	1.5673	1.1627	0.9570	8179	7128	6282	5574	4965	4432	3957	3529	3139	2781	39
40	1.5563	1.1584	0.9542	8159	7112	6269	5563	4956	4424	3949	3522	3133	2775	40
41	1.5456	1.1540	0.9515	8140	7097	6256	5552	4947	4415	3942	3515	3126	2770	41
42	1.5351	1.1498	0.9488	8120	7081	6243	5541	4937	4407	3934	3508	3120	2764	42
43	1.5249	1.1455	0.9462	8101	7066	6231	5531	4928	4399	3927	3501	3114	2758	43
44	1.5149	1.1413	0.9435	8081	7050	6218	5520	4918	4390	3919	3495	3108	2753	44
45	1.5051	1.1372	0.9409	8062	7035	6205	5509	4909	4382	3912	3488	3102	2747	45
46	1.4956	1.1331	0.9383	8043	7020	6193	5498	4900	4374	3905	3481	3096	2741	46
47	1.4863	1.1290	0.9356	8023	7005	6180	5488	4890	4365	3897	3475	3089	2736	47
48	1.4771	1.1249	0.9330	8004	6990	6168	5477	4881	4357	3890	3468	3083	2730	48
49	1.4682	1.1209	0.9305	7985	6975	6155	5466	4872	4349	3882	3461	3077	2724	49
50	1.4594	1.1170	0.9279	7966	6960	6143	5456	4863	4341	3875	3454	3071	2719	50
51	1.4508	1.1130	0.9254	7947	6945	6131	5445	4853	4333	3868	3448	3065	2713	51
52	1.4424	1.1091	0.9228	7929	6930	6118	5435	4844	4324	3860	3441	3059	2707	52
53	1.4341	1.1053	0.9203	7910	6915	6106	5424	4835	4316	3853	3434	3053	2702	53
54	1.4260	1.1015	0.9178	7891	6900	6094	5414	4826	4308	3846	3428	3047	2696	54
55	1.4180	1.0977	0.9153	7873	6885	6081	5403	4817	4300	3838	3421	3041	2691	55
56	1.4102	1.0939	0.9128	7854	6871	6069	5393	4808	4292	3831	3415	3034	2685	56
57	1.4025	1.0902	0.9104	7836	6856	6057	5382	4798	4284	3824	3408	3028	2679	57
58	1.3949	1.0865	0.9079	7818	6841	6045	5372	4789	4276	3817	3401	3022	2674	58
59	1.3875	1.0828	0.9055	7800	6827	6033	5361	4780	4268	3809	3395	3016	2668	59
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	

लघुरित्क सारिणी

	अंश/घंटा											मिनट
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
0	2663	2341	2041	1761	1498	1249	1015	0792	0580	0378	0185	0
1	2657	2336	2036	1756	1493	1245	1011	0788	0577	0375	0182	1
2	2652	2330	2032	1752	1489	1241	1007	0785	0573	0371	0179	2
3	2646	2325	2027	1747	1485	1237	1003	0781	0570	0368	0175	3
4	2640	2320	2022	1743	1481	1233	0999	0777	0566	0365	0172	4
5	2635	2315	2017	1738	1476	1229	0996	0774	0563	0361	0169	5
6	2629	2310	2012	1734	1472	1225	0992	0770	0559	0358	0166	6
7	2624	2305	2008	1729	1468	1221	0988	0767	0556	0355	0163	7
8	2618	2300	2003	1725	1464	1217	0984	0763	0552	0352	0160	8
9	2613	2295	1998	1720	1459	1213	0980	0759	0549	0348	0157	9
10	2607	2289	1993	1716	1455	1209	0977	0756	0546	0345	0154	10
11	2602	2284	1988	1711	1451	1205	0973	0752	0542	0342	0150	11
12	2596	2279	1984	1707	1447	1201	0969	0749	0539	0339	0147	12
13	2591	2274	1979	1702	1443	1197	0965	0745	0535	0335	0144	13
14	2585	2269	1974	1698	1438	1193	0962	0741	0532	0332	0141	14
15	2580	2264	1969	1694	1434	1190	0958	0738	0529	0329	0138	15
16	2574	2259	1965	1689	1430	1186	0954	0734	0525	0326	0135	16
17	2569	2254	1960	1685	1426	1182	0950	0731	0522	0322	0132	17
18	2564	2249	1955	1680	1422	1178	0947	0727	0518	0319	0129	18
19	2558	2244	1950	1676	1417	1174	0943	0724	0515	0316	0126	19
20	2553	2239	1946	1671	1413	1170	0939	0720	0512	0313	0122	20
21	2547	2234	1941	1667	1409	1166	0935	0716	0508	0309	0119	21
22	2542	2229	1936	1662	1405	1162	0932	0713	0505	0306	0116	22
23	2536	2223	1932	1658	1401	1158	0928	0709	0501	0303	0113	23
24	2531	2218	1927	1654	1397	1154	0924	0706	0498	0300	0110	24
25	2526	2213	1922	1649	1392	1150	0920	0702	0495	0296	0107	25
26	2520	2208	1917	1645	1388	1146	0917	0699	0491	0293	0104	26
27	2515	2203	1913	1640	1384	1142	0913	0695	0488	0290	0101	27
28	2509	2198	1908	1636	1380	1138	0909	0692	0484	0287	0098	28
29	2504	2193	1903	1632	1376	1134	0906	0688	0481	0284	0095	29
30	2499	2188	1899	1627	1372	1130	0902	0685	0478	0280	0091	30
31	2493	2183	1894	1623	1368	1127	0898	0681	0474	0277	0088	31
32	2488	2178	1889	1618	1364	1123	0894	0678	0471	0274	0085	32
33	2483	2173	1885	1614	1359	1119	0891	0674	0468	0271	0082	33
34	2477	2168	1880	1610	1355	1115	0887	0671	0464	0267	0079	34
35	2472	2164	1875	1605	1351	1111	0883	0667	0461	0264	0076	35
36	2467	2159	1871	1601	1347	1107	0880	0663	0458	0261	0073	36
37	2461	2154	1866	1597	1343	1103	0876	0660	0454	0258	0070	37
38	2456	2149	1862	1592	1339	1099	0872	0656	0451	0255	0067	38
39	2451	2144	1857	1588	1335	1095	0869	0653	0448	0251	0064	39
40	2445	2139	1852	1584	1331	1091	0865	0649	0444	0248	0061	40
41	2440	2134	1848	1579	1326	1088	0861	0646	0441	0245	0058	41
42	2435	2129	1843	1575	1322	1084	0858	0642	0438	0242	0055	42
43	2430	2124	1838	1571	1318	1080	0854	0639	0434	0239	0052	43
44	2424	2119	1834	1566	1314	1076	0850	0635	0431	0236	0049	44
45	2419	2114	1829	1562	1310	1072	0847	0632	0428	0232	0046	45
46	2414	2109	1825	1558	1306	1068	0843	0628	0424	0229	0042	46
47	2409	2104	1820	1553	1302	1064	0839	0625	0421	0226	0039	47
48	2403	2099	1816	1549	1298	1061	0835	0622	0418	0223	0036	48
49	2398	2095	1811	1545	1294	1057	0832	0618	0414	0220	0033	49
50	2393	2090	1806	1540	1290	1053	0828	0615	0411	0216	0030	50
51	2388	2085	1802	1536	1286	1049	0825	0611	0408	0213	0027	51
52	2382	2080	1797	1532	1282	1045	0821	0608	0404	0210	0024	52
53	2377	2075	1793	1528	1278	1041	0817	0604	0401	0207	0021	53
54	2372	2070	1788	1523	1274	1038	0814	0601	0398	0204	0018	54
55	2367	2065	1784	1519	1270	1034	0810	0597	0394	0201	0015	55
56	2362	2061	1779	1515	1266	1030	0806	0594	0391	0197	0012	56
57	2356	2056	1774	1510	1261	1026	0803	0590	0388	0194	0009	57
58	2351	2051	1770	1506	1257	1022	0799	0587	0384	0191	0006	58
59	2346	2046	1765	1502	1253	1018	0795	0583	0381	0188	0003	59
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	

लघुरित्थ सारिणी द्वारा ग्रह स्पष्ट करने की विधि– लघुरित्थ से ग्रह स्पष्ट करने के लिए पञ्चाङ्ग में दिए गए ग्रह स्पष्ट के भारतीय स्टैण्डर्ड समय तथा जन्म समय के भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर करने पर घण्टों मिनिटों में चालन आता है। यदि जन्म समय पञ्चाङ्ग में दिए गए ग्रह स्पष्ट समय से कम हो तो चालन ऋण, अधिक होने पर धन होता है। इस प्रकार सारिणी में अण्टे के नीचे तथा मिनिटों के सामने का चालन दशमलवात्मकलघुरित्थ लेकर तथा अभीष्ट ग्रह की दैनिक गति यदि अंशात्मक हो तो अंश के नीचे तथा कला के सामने दशमलवात्मक लघुरित्थ को लेकर चालन में लघुरित्थ में जोड़ने पर जो प्राप्त हो, वह सारिणी में जिस अंश के नीचे तथा जिस कला के सामने मिले वही चालन फल होगा। यदि चालन ऋण हो तो पञ्चाङ्ग के ग्रह स्पष्ट में ऋण तथा यदि धन हो तो धन करने पर जन्म कालीन ग्रह स्पष्ट होगा। यह ध्यान रहे कि सारिणी में घण्टे या अंश तथा मिनिट या कला का लघुरित्थ एक ही आता है। तथा जहाँ (3 अंश के नीचे से अन्त तक) लघुरित्थ के आगे दशमलव नहीं दिए गए हैं, वहाँ दशमलव सहित लेना चाहिए, जैसे 9031 के स्थान पर .9031 इत्यादि।

साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन का प्रकार :

जन्मकालिक स्टैण्डर्ड समय में अभीष्ट नगर का मध्यमान्तर यदि **धनात्मक** हो, तो उसका योग करना **ऋणात्मक** हो, तो घटाकर शेष घन्टे मिनट में, 1 घन्टे में 10 सेकण्ड तथा 6 मिनट में 1 सेकण्ड के हिसाब से जो मिनट व सेकण्ड प्राप्त हों उन्हें जोड़कर अभीष्ट जन्म समय के मास, तारीख व सन् के घन्टे के मिनटादि सारणी द्वारा प्राप्त करके उपर्युक्त घन्टे मिनटादि में योगकर स्थानीय संस्कार के मिनट सेकण्डादि का संस्कार कर देने पर जन्म समय तक का साम्पातिक काल घन्टे मिनट व सेकण्ड में प्राप्त हो जाता है। इस उपकरण से अभीष्ट अक्षांश की सारणी द्वारा लग्न के राश्यादि ज्ञातकर उसमें अयनांशजन्य कला का जो सारणी में उपलब्ध हैं उन्हें जोड़कर या घटाकर जैसा (चिन्ह सारणी में दिया हो) लग्न के राशि अंश कला विकलादि का ज्ञान करना चाहिये। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए यदि जन्म समय दिन के मध्यम मान के 12 बजे के पूर्व का हो, तो जन्म समय में 12 घन्टे जोड़कर गणित करना चाहिये। यहाँ साम्पातिक काल की गणना दिन के 12 बजे से दूसरे दिन के 12 बजे तक की जाती है। सारणी में दिन के 12 बजे के समय के घन्टे, मिनट व सेकण्ड दिये हैं जिनका उपर्युक्त गणित प्रक्रिया में योग किया गया है। यहाँ दिन के 1 बजे को 1 घन्टा और रात्रि के 1 बजे को 13 घन्टे मान कर गणित करने की प्रक्रिया लागू है इस प्रकार दूसरे दिन यदि प्रात: 9 बजे का जन्म है तो इसमें 12 जोड़कर 21 घन्टे मानकर 10 बजे हो, तो 22 घन्टे 11 बजे हो, तो 23 घन्टे मानना चाहिये। और सारणी से गत दिन के घन्टे मिनट सेकण्ड ग्रहण करना चाहिये। अभिप्राय यह है कि रात्रि के 12 बजे के बाद से दिन के 12 बजे तक जन्म समय में 12 घन्टे जोड़कर सारणी से गत तारीख का साम्पातिक काल जोड़ना चाहिये। साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन की प्रक्रिया = (Tables of Ascendants) टेबल्स ऑफ एसेन्डेन्ट नामक पुस्तक के बिना सम्भव नहीं है। अत: यह पुस्तक पुस्तक विक्रताओं के पास सुलभता से प्राप्त हो जाती है यहाँ उस पुस्तक की प्रतिलिपि, विस्तार भय से इस पुस्तक में नहीं लगाई गयी है उस पुस्तक के आदि में 2,3 उदाहरण देकर गणित की प्रक्रिया समझाकर तारीख मास व सन् की सारणी, अयनांश संस्कार सारणी दशम लग्न सारणी का विवरण देकर 00 अक्षांश से 60 अक्षांश तक की लग्न सारणी घन्टे मिनट के हिसाब से दी गई है। अन्त में प्रमुख प्रमुख भारतवर्ष के नगरों के अक्षांश रेखांश व मध्यमान्तर का दिग्दर्शन कर विदेश के भी प्रमुख नगरों के अक्षांशादि दिये गये है। उस तालिका में ही स्थानीय संस्कार के मिनट व सेकेण्ड दिये हैं जिसका उपयोग ऊपर गणित प्रक्रिया में किया गया है। अत: विक्रेताओं से वह पुस्तक अवश्य उपलब्ध कर लेवें उसके बिना उपर्युक्त गणित प्रक्रिया करना असम्भव है।

विदेश के कुछ नगरों के लग्नानयन की प्रक्रिया निम्नोक्त है। भारतवर्ष का स्तम्भ 5 घन्टे 30 मि. पूर्व (82 अंश 30 कला ग्रिनविच से) दिया गया है इस प्रकार से ही अन्य विदेशों के स्तम्भ कोलकाता से प्रकाशित अंग्रेजी पञ्चाङ्ग में दिये गये हैं वहाँ से उपलब्ध कर लेवें तथा इन पञ्चाङ्गों में ही देश विदेश के नगरों के अक्षांश, रेखांश व मध्यमान्तर भी दिये गये हैं जो गणित प्रक्रिया में सहायक है। ज्योतिष के प्रमुख ग्रन्थों में भी अक्षांश रेखांश व मध्यमान्तर प्राप्त हो जाते हैं। भारतीय कुण्डली विज्ञान ग्रन्थ से भी स्तम्भ रेखांश अक्षांश मध्यमान्तर देश-विदेश के प्राप्त कर सकते हैं।

6 अगस्त 2000 ई को 10 बजे प्रात: किसी जातक का जन्म हुआ है जन्म स्थान मुंबई व कोलकाता मानकर साम्पातिक काल द्वारा गणित प्रक्रिया प्रदर्शित की जाती है। इस ही प्रकार भारतवर्ष में किसी भी नगर में उत्पन्न जातक के लग्न की राश्यादि की गणना की जा सकती है।

मुंबई:- अक्षांश 18।58 उत्तर/ रेखांश 72।50 पूर्व/ मध्यमान्तर-38 मि. 40 से./ जन्मसमय प्रात: 10 बजे (6 अगस्त 2000 ई)। यहाँ दिन के 12 बजे से पूर्व का जन्म समय होने के कारण 10 बजे में 12 घन्टे जोड़ने पर जन्मसमय 22 घन्टे मान कर गणित की प्रक्रिया की गई है एवं सारणी से गतदिन 5 अगस्त के घन्टे मिनटादि प्राप्त

किये हैं। 22 घं. 00 मि. में मुंबई का ऋणात्मक 38 मि. 40 मध्यमान्तर घटाने पर 21 ।21 ।20 शेष में 1 घन्टे में 10 सेकण्ड के हिसाब से 3 मि. 33 से. का योग करने पर 21 घं. 21मि. 20 से. में 3 मि. 33 से. का योग 21 ।24 ।53 प्राप्त हुआ। सारणी द्वारा 5 अगस्त के (8 घं. ।53 मि.। 25 से.) और सन् 2000 के धनात्मक 3 मि. 5 से. प्राप्त कर 29 ।24 ।53 में जोड़ने पर 30 घं. ।21मि.। 23 से प्राप्त हुये इस में सारणी द्वारा प्राप्त स्थानीय संस्कार के 5 सेकण्ड घटाने पर 30 घं.। 21 मि.। 18 साम्पातिककाल के घन्टे मिनट व सेकण्ड प्राप्त कर मुंबई के अक्षांश 19 की लग्न सारणी में 30 ।21 ।18 में से 24 घन्टे घटाने पर 6 ।21 ।18 का फल देखने पर:- 6 घं. 20 मि. का फल (5रा ।11अ ।44क) प्राप्त हुआ शेष 1 मि. 18 से. अर्थात् 78 सेकण्ड का फल प्राप्त करने हेतु 6 घं. 20 मि. और 6 घं. 24 मि. के फल का अन्तर (5रा. ।12अ. ।41क)-(5रा ।11अ ।44क) = 57 कला मिला यहाँ 4 मि. अर्थात् 240 से. में 57 कला प्राप्त होती है तो 75 सेकण्ड में 57 X 78 = (57 X 78) भाग 240 = 18.76 =18 क. 31 वि फल प्राप्त हुआ इसे उपर्युक्त 5रा.। 11अ.। 44क. में जोड़ने पर 5रा.। 12अ. ।2क.। 31 वि ज्ञात हुआ इस में अयनांश संस्कार सारणी द्वारा ऋणात्मक 52 कला घटाने पर 5 ।11 ।10 ।31 निरयन लग्न स्पष्ट का मान ज्ञात हुआ।

कोलकाता:-अक्षांश 22 ।35 उत्तर। रेखांश 88 ।23 पूर्व मध्यमान्तर+23 मि. 32 सेकण्ड। जन्मसमय प्रातः 10 बजे (6 अगस्त 2000 ई) 10+12 =22.00 बजे में मध्यमान्तर जोड़ने पर 22घ ।23मि ।32से.। इसमें 1 घन्टे में 10 से. का संस्कार 224 से. (3 मि. 44 से.) जोड़ने पर 22घं. ।27मि. ।16से. इसमें 5 अगस्त के मास तारीख व सन् का योग 8 घं.। 56मि.। 30 से. को जोड़ने पर 31 घ ।23 मि.। 46 से. इस में स्थानीय संस्कार +4 सेकण्ड जोड़ने पर 31 ।23 ।50 अर्थात् 7 घं. 23 मि. 50 से. साम्पातिक काल प्राप्त हुआ।

इस उपकरण से कोलकाता के अक्षांश की सारणी द्वारा फल:-(7 घं. 20 मि.) का फल 5रा ।25अ ।24क प्राप्त हुआ। 7 घं. 24 मि. और 7 घं. 20 मि. के फल का अन्तर (5रा. ।26अ ।19क)-(5रा ।25अं ।24क) = 55 कला मिला अनुपात करने पर 4 मि. अर्थात् 240 से. में 55 कला शेष 3 मि. 50 से. (230 से.) में (230 X 55) भाग 240 = 52.7 = 52 कला 42 वि. जो फल मिला इसको 5 ।25 ।24 में जोड़ने पर 5रा. ।26अ. ।16क. ।42वि. प्राप्त हुआ इसमें 52 क. घटाने पर 5 रा.25अ.24क.42 वि. निरयन लग्न प्राप्त हुआ। इस प्रकार कोलकाता का 5 रा. 25 अं. 24 क. 42 वि. निरयन लग्न स्पष्ट हुआ। आगे 5 ।25 ।22 ।24 राश्यादि लग्न कल्पनाकर भाव स्पष्ट किये हैं।

भारतवर्ष में समस्त नगरों का साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन उपर्युक्त दोनों मुंबई व कोलकाता के उदाहरण के अनुसार किया जाता है। वैदेशिक जिन नगरों का उत्तर अक्षांश व पूर्व रेखांश हैं उनकी भी गणित प्रक्रिया उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार की जाती है मध्यमान्तर उस देश के स्तम्भ से निकालना चाहिये मध्यमान्तर का चिन्ह भारत वर्ष के अनुसार ही मानना चाहिये अर्थात् अभीष्ट नगर का रेखांश स्तम्भ के रेखांश से कम हो, तो मध्यमान्तर ऋण अधिक हो, तो धन मध्यमान्तर मान कर गणित करनी चाहिये। जिन वैदेशिक नगरों का अक्षांश उत्तर हो और रेखांश पश्चिम हो, तो मध्यमान्तर का चिन्ह बदलकर अर्थात् भारत वर्ष में मध्यमान्तर धनात्मक हो, तो वहाँ ऋणात्मक और भारत में यदि ऋणात्मक हो, तो वहाँ धनात्मक मध्यान्तर मानकर गणित प्रक्रिया भारतवर्ष की तरह ही करनी चाहिये।

जिन देशों का अक्षांश दक्षिण हो वहाँ चरमिनट का चिन्ह बदलकर धूपघड़ी के समय का सूर्योदय ज्ञात करना चाहिये। अथवा भारत वर्ष की तरह सूर्योदय ज्ञात कर उसको 12 घन्टे में घटाने पर सूर्योदय धूपघड़ी के समय का ज्ञात होगा। तत्पश्चात् अभीष्ट देशीय स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार करके स्टैण्डर्ड समय का सूर्योदय काल बनाना चाहिये।

दक्षिण अक्षांश जिन देशों का हो वहाँ साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन करते समय सम्पूर्ण प्रक्रिया भारतवर्ष की तरह करने पर जो साम्पातिकाल घन्टे मिनट व सेकण्ड में अभीष्ट अक्षांश की सारणी से फल लेने को प्राप्त हो उसमें 12 घन्टे जोड़ने पर जो साम्पातिक काल प्राप्त हो उससे सारणी द्वारा फल प्राप्त कर अयनांश संस्कार करने के बाद जो लग्न के राश्यादि प्राप्त हों उसमें 6 राशि जोड़कर लग्न स्पष्ट समझना चाहिये। यह प्रक्रिया दक्षिण अक्षांश और पूर्व रेखांश की है।

जिन देशों का दक्षिण अक्षांश और पश्चिम रेखांश हो उन देशों के चरमिनटों का और मध्यमान्तर मिनटादि का भारतवर्ष के विपरीत चिन्ह बदलकर लग्नानयन करना आवश्यक है। यदि भारत में 6 घन्टे में चरमिनट जोड़े गये हो, तो वहाँ चरमिनट 6 घन्टे में घटाकर धूपघड़ी के समय का सूर्योदय ज्ञात करना यदि भारत में चरमिनट घटायें तो वहाँ चरमिनट जोड़ना तथा भारत में यदि मध्यमान्तर धनात्मक हो, तो वहाँ ऋणात्मक और भारत में ऋणात्मक हो, तो वहाँ धनात्मक मध्यमान्तर मान कर गणित करना तथा साम्पातिक काल में 12 घन्टे जोड़कर अक्षांश सारणी से लग्न के राश्यादि ज्ञातकर उसमें 6 राशि जोड़कर लग्न स्पष्ट जानना चाहिये उसमें अयनांश संस्कार की कला का संस्कार धन वा ऋण जैसा हो वह करने पर वास्तविक लग्न के राश्यादि प्राप्त होंगे।

यहां वैदेशिक नगरों का लग्नायन प्रदर्शित किया जाता है।

न्यूयार्क (U.S.A) स्तम्भ-5 घन्टे (पश्चिम 75 अंशरेखांश) स्तम्भ

अक्षांश 40।43 उत्तर/ रेखांश 74।00 पश्चिम। मध्यमान्तर +4 मिनट जन्म समय न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड 10 बजे प्रात: (6 अगस्त 2000 ई.)

10 +12 = 22।00

+4 मि. म.अ — 1 घन्टे में 10 से. के हिसाब से 22X10 220 से. धन

22घं.।4मि.।00से. — 3. मि. 41 से

3मि.।41से. — 5 अगस्त का सारणी में 8घं।53 मि।25 से

22।7।41 S.D. — सन् 2000 क " + 3।5

+ 8।56।30 S.D. — 8।56।30

31।4।11 — + 1 मि. 43 न्यूयार्क का

+ 1।43 — संस्कार सारणी से

31।5।54 7 घन्टे 5 मि. 54 से. साम्पातिक काल (उपकरण)

—24

उपकरण:-7।5।54

अक्षांश (40।43) = 41 अंश की अक्षांश की सारणी से फल का आनयन

(7 घं. 4 मि.) का फल सारणी में 5।19।38। सारणी में 7।8 का फल 5।20।26 शेष 1 मि. 54 से. = 114 से.। 7।4 का फल - 5।19।39=00।47 = ४ मिनट का अन्तर

1 मि. 54 से. का फल (4 मि.)=240 से। 4 मि.=240 से. का अन्तर

अनुपात द्वारा 114 को 47 कला से गुणाकर 240 का भाग देने पर

(114 X 47)भाग 240 = 22.325 =22क.20वि.

इस 22क. 20 वि. को (7 घं. 4 मि.) के फल 5रा. ।19अं. ।39क में जोड़ने पर 5 रा. 20 अं. 1 क. 20 वि. प्राप्त हुआ इसमें अयनांश संस्कार 52 कला घटाने पर 5 रा. 19 अ. 9 क. 20 वि. निरयन लग्न न्यूयॉर्क का सम्पन्न हुआ।

आगे भाव स्पष्ट में लग्न 5 ।19 ।14 ।4 मानकर भाव स्पष्ट किये गये हैं।

वैदेशिक नगरों के लग्नानयन की विधि

यहाँ लीमा, न्यूयॉर्क, टोक्यो व सिडनी इन 4 नगरों के लग्नानयन की प्रक्रिया प्रदर्शित की गई है।

साम्पातिक काल के माध्यम से लग्नानयन करने हेतु अभीष्ट राष्ट्र का स्तम्भ (स्थिर रेखांश) अभीष्ट नगर के अक्षांश और रेखांश की जानकारी परमावश्यक है जो दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गो में तथा ज्योतिष के ग्रन्थों में एवं भारतीय कुण्डली विज्ञान ग्रन्थ में दी गई हैं वहाँ से उपलब्ध कर लेवें।

लीमा (Lima) पेरु (Peru):- लीमा के अक्षांश (दक्षिण) 12 अंश 2 कला, रेखांश पश्चिम 77 अंश 2 कला तथा राष्ट्र का स्थिर रेखांश 75 अंश पश्चिम (-5 घन्टे) साम्पातिक काल से लग्न स्पष्ट जानने के लिये अभीष्ट नगर का मध्यमान्तर ज्ञात करना परमावश्यक होता है, अत: लीमा के स्तम्भ (स्थिर रेखांश) और लीमा नगर के रेखांशों के अन्तर को 4 से गुणा करने पर मध्यमान्तर ज्ञात होगा। (77।2)-(75।00) =2।2 (2।2)x4 = 8 मि. 8 सेकण्ड लीमा का मध्यमान्तर ऋणात्मक है। जिन देशों का रेखांश पश्चिम होता है उनका रेखांश (स्थिर रेखांश) से अधिक होता है तो मध्यमान्तर ऋण तथा स्थिर रेखांश (स्तम्भ) से जिनका रेखांश कम होता है उनका मध्यमान्तर धनात्मक होता है।

6 अगस्त 2000 ई. को लीम में किसी का जन्म प्रात: 10 बजे लीमा के स्टैण्डर्ड समय पर होगा तो 10 बजे में 12 घन्टे जोड़ने पर 22 घन्टे जन्म समय मानकर गणित करनी पड़ती है तथा गतदिन अर्थात् 5 अगस्त 2000 ई. का सारणी से साम्पातिक काल ग्रहण किया जायेगा। साम्पातिक काल की सारणी में दिन के मध्यम मध्यान्ह समय के घन्टे, मिनट और सेकण्ड दिये गये हैं अत: यहां दिन के मध्यम मध्यान्ह से दूसरे दिन के मध्यम मध्यान्ह तक गणना करने के कारण दिन के 1 बजे को 1 घन्टा तथा उस ही दिन के रात्रि के 11 बजे को 13 घन्टा मानकर गणित करने का विधान है, इस प्रकार दूसरे दिन के 1 बजे तक को 23 घन्टा माना जाता है। यदि 6 तारीख को 8 बजे प्रात: जन्म हो, तो उसे 20 घन्टे, 7 बजे हो तो 19 घन्टे, 10 बजे हो तो 22 घन्टे एवं 11 बजे प्रात: जन्म हो, तो 23 घन्टे जन्म समय मानकर साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन की प्रक्रिया करना अनिवार्य है। यह नियम सर्वत्र ही लागू होता है।

साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन में सर्वप्रथम अभीष्ट नगर के मध्यमान्तर का संस्कार करना पड़ता है मध्यमान्तर धन हो, तो जन्म समय जोड़कर ऋण हो, तो घटाकर आगे की क्रिया करनी चाहिये।

मध्यमान्तर संस्कार करने पर जो घन्टे मिनटादि हो, तो उनमें 1 घन्टे में 10 से. तथा 6 मिनट में 1 सेकण्ड के हिसाब से जो मिनटादि प्राप्त हों उन्हें सर्वदा उन घन्टे मिनटादि में जोड़कर स्थानीय संस्कार जो सारणी में लिखित हैं उन्हें जैसा धन व ऋण लिखा हो उतने मिनट व सेकण्ड का संस्कार करने पर दिन के 12 बजे से जन्म समय का साम्पातिक काल प्राप्त हो जाता है। इसमें सारणी द्वारा अभीष्ट दिन के 12 बजे का साम्पातिक काल अर्थात् प्रस्तुत उदाहरण में 5 अगस्त सन् 2000 ई. का साम्पातिक काल उपर्युक्त साम्पातिक में जोड़ने पर जो घन्टे मिनट व सेकण्ड प्राप्त हों उनको उपकरण मानकर अभीष्ट नगर के अक्षांश की सारणी में जो फल प्राप्त हो उसमें अयनांश संस्कार जो सारणी में दिया है उसका संस्कार करने पर अभीष्ट नगर में उत्पन्न बालक के जन्म समय का लग्न स्पष्ट होगा अभीष्ट अक्षांशों की सारणी में 4,4 मिनट के अन्तर पर घं. मि. व सेकण्ड दिये हैं अत: अनुपात द्वारा शेष मिनटादि का फल ग्रहण करना चाहिये।

लीमा का दक्षिण अक्षांश है उपर्युक्त क्रिया द्वारा प्राप्त उपकरण के घन्टों में 12 घन्टे जोड़कर (12 अंश की अक्षांश की सारणी) जो लीमा के अक्षांश की सारणी है उस में से लग्न के राश्यादि प्राप्तकर उसमें अयनांश संस्कार जो सारणी में उपलब्ध है उसका संस्कार करने के पश्चात् जो लग्न के राश्यादि प्राप्त हों उसमें 6 राशि जोड़ने पर दक्षिण अक्षांश के नगरों के लग्न के राशि अंश कला व विकला प्राप्त होंगें। अर्थात् स्पष्ट लग्न के राश्यादि प्राप्त होंगे। उत्तर अक्षांश जिन देशों का है उनमें यह दक्षिण अक्षांश के नगरों की विशेष प्रक्रिया लागू नहीं है। वहां जो उपकरण के घं. मि. से. प्राप्त हों उनके द्वारा ही सारणी से फल ग्रहण करने पर अयनांश का संस्कार कर देने पर ही लग्न के स्पष्ट राश्यादिक प्राप्त हो जाते हैं।

इष्ट काल के घटी व पलों में अभीष्ट दिन के सूर्य के राशि व अंश का फल जोड़ने पर उस योगतुल्य घटयादि पर अभीष्ट अक्षांश घटी पल की सारणी में जो राशि व अंश प्राप्त हों वह ही लग्न के राशि व अंश होते हैं, लेकिन जिन देशों का दक्षिण अक्षांश होता है वहां सूर्य की राशि में 6 राशि जोड़कर अभीष्ट अक्षांश घटी पल की सारणी से उपलब्ध सूर्यफल के घटयादि को इष्टकाल में जोड़ने पर अभीष्ट अक्षांश की सारणी से जो लग्न के राशि व अंश प्राप्त हों उन में 6 राशि जोड़ने पर दक्षिण अक्षांश के नगरों के लग्न के राश्यादि होंगें।

उपर्युक्त नियमानुसार लीमा में 10 बजे प्रातः जिसका जन्म 6 अगस्त 2000 ई. में हुआ है उसके लग्नानयन की विधि प्रदर्शित की जाती है। 10+12 =22 बजे जन्म समय इसमें लीमा के ऋणात्मक मध्यमान्तर के 8 मि. 8 से. घटाने पर 21 घं. 51 मि. 52 से. शेष रहे। इसमें 1 घन्टे में 10 से. व 6 मिनट में 1 सेकण्ड के हिसाब से 21x10=210से. में 51 मि. के 6 मिनट में 1 से. के हिसाब से 8 सेकण्ड जोड़कर 218 से. अर्थात् 3 मि. 38 से. 21 घं. 51 मि. 52 से. में जोड़ने पर 21 घन्टे 55 मि. 30से. प्राप्त हुये। इसमें 5 अगस्त 2000 ई का साम्पातिक काल सारणी द्वारा 9घं.।53मि.।25से. (5 अगस्त)+(3। 5 (3मि.।5से. (सन् 2000)दोनो का योग 8घं.। 56मि.।30से. को 21 घं. 55 मि. से 30 से. में जोड़ने पर 30।52।00 घन्टादि प्राप्त हुये इसमें स्थानीय संस्कार लीमा का 1मि.45से. जो सारणी में लिखा है उसका योग करने पर 30 घं. 53मि.45से. प्राप्त हुआ इसमें लीमा का दक्षिण अक्षांश होने से 12 घन्टे जोड़ने पर 42घं. 53 मि. 45 से. साम्पातिक काल बना इसमें 24 घन्टे घटाने पर 18 घं. 53 मि. 45 से. उपकरण से 12 अक्षांश की सारणी में (18 घन्टे 52 मि.) के 11 रा.22 अं.32क तथा शेष 1 मि. 45 से अर्थात् 105 सेकण्ड का अनुपात द्वारा प्राप्त फल 31 क. 4 वि. को उपर्युक्त राश्यादि में जोड़ने पर 11।23।03।04 राश्यादि लग्न प्राप्त हुआ इसमें सन् 2000 का अयनांश संस्कार 52 कला सारणी से प्राप्त कर उसको घटाकर शेष में 6 राशि जोड़ने पर (11रा.।23अ।3क।4वि)-52 कला = 11रा.।22अं।11क।4वि. में 6 राशि जोड़ने पर 5।22।11।4 लग्न स्पष्ट 10 बजे प्रातः लीमा नगर का प्राप्त हुआ अनुपात के लिये सारणी में लिखित 18 घन्टे 52 मि. 18 घं. 56 के राश्यादि का अन्तर करने पर (11।23।43)-(11।22।32) = 1 अंश 11 कला = 71 कला4 मिनट अर्थात् 240 सेकण्ड का अन्तर है तब अनुपात द्वारा शेष 1 मि. 45 से. (105से.) का फल 105से.x71भाग 31क.4वि. प्राप्त हुआ।

न्यूयार्क नगर का 6 अगस्त सन् 2000 ई. के प्रातः 10 बजे न्यूयार्क स्टैण्डर्ड समय का लग्नानयन पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित 5 रा. 19 अं. 9 क. 20 वि. है।

यदि 6 अगस्त 2000 ई को रात्रि के 10 बजे का लग्नानयन करना हो, तो उपर्युक्त 10 बजे में 12 घन्टे का योग कर 22 घन्टे जन्म समय कल्पित किया है उसकी आवश्यकता नहीं है तथा जो गतदिन 5 अगस्त का साम्पातिक काल सारणी से प्राप्त किया है इसकी जगह 6 अगस्त 2000 ई. का सारणी से साम्पातिक काल ग्रहण करना चाहिये।

यह प्रक्रिया सर्वत्र अन्य देशों में भी लागू है। अत: इस भिन्नता को गणित की प्रक्रिया में अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये। अत: जन्म समय 10 बजे मानकर तथा 6 अगस्त 2000 ई का सारणी से फल ग्रहण करके सम्पूर्ण प्रक्रिया उपर्युक्त प्रकार से ही करना चाहिये।

सिडनी (आस्ट्रेलिया) सिडनी का लग्नानयन प्रात: 10 बजे (6 अगस्त 2000 ई)

सिडनी के अक्षांश 33 अंश 52 कला दक्षिण रेखांश 151 अं. 12 क. पूर्व स्तम्भ 10 घन्टे पूर्व (150 अंश) पूर्व (151।12)-(150)=1।12 (1।12) X4 + 4 मि. 48 सेकण्ड।

अत: सिडनी का मध्यमान्तर धनात्मक 4 मि. 48 से. प्राप्त हुआ।

10+12 =22 (22 घं. ।00मि. ।00से)+(4मि. 48 से.) =22।4।48। इसमें 1 घन्टे में 10 सेकण्ड के हिसाब से 22X10+1=221से. अर्थात् 3 मि. 41 सेकण्ड का योग करने पर 22 घं. 8 मि. 29 सेकण्ड साम्पातिक काल अवगत होने पर इसमें 5 अगस्त 2000 ई. का सारणी से प्राप्त 8 घं. 56 मि. 30 सेकण्ड का योग करने पर 31 घं. 4 मि. 59 सेकण्ड में स्थानीय संस्कार सिडनी का 45सेकण्ड घटाने पर और घन्टों में 24 घन्टे घटाने पर 7 घं.4मि.14से. साम्पातिक काल को उपकरण मानकर इसमें दक्षिण अक्षांश होने के कारण 12 घन्टे का योग करने पर 19 घं.4मि. का फल 34 अक्षांश की सारणी से 00 राशि 1 अंश 12 कला फल प्राप्तकर शेष 14 सेकण्ड का अनुपात द्वारा 5 कला 5 विकला प्राप्त फल को (00रा.।1अं.।12क)+(5।5) जोड़ने पर 00 रा.1अं.17क 5 वि. में अयनांश संस्कार के 52 कला को घटा कर 6 राशि का योग करने पर 6 रा. 00अंश 25 कला 5 वि. लग्न स्पष्ट सिडनी का सम्पन्न हुआ।अनुपात के लिये 19 घं.8मि. और 19 घं. 4 मि. के सारणी का फल जो प्राप्त हुआ (00।2।39)-(00।1।12=1 अंश 27 कला= 87 कला 4 मि.=240 सेकण्ड का फल मिला। इस पर अनुपात करने पर (87X14) भाग 240=5.075=5क.5वि. फल प्राप्त हुआ इस का ही ऊपर योग किया गया है।

टोक्यो नगर का लग्नानयन:-

Tokyo टोक्यो 6 अगस्त 2000 ई. के प्रात: 10 बजे का लग्न ज्ञात करना है। इस नगर का स्तम्भ 9 घन्टे पूर्व (135 अंश पूर्व) है तथा अक्षांश 35 अं0 40क. उत्तर और रेखांश 139अं.33क.पूर्व है। (139।33)-(135अंश) =4अं033क. (4।33) X4=16मि।।32से.।

अर्थात् 18 मि. 12से. मध्यमान्तर धनात्मक टोक्यो का है पूर्व रेखांश जिन नगरों का होता है वहां अभीष्ट नगर का रेखांश स्तम्भ (स्थिर रेखांश) से अधिक हो, तो मध्यमान्तर धन होता है यदि स्तम्भ से कम हो, तो ऋण होता है। पश्चिम रेखांशीय नगरो में इसका उलटा होता है।

जन्म समय प्रात: 10 बजे का है अत: 12 घन्टे का योग कर 22 घन्टे जन्म समय मानकर गणित की प्रक्रिया करनी है, तथा सारणी से 5 अगस्त 2000 ई. का साम्पातिक काल 8 घं. 56 मि.30से. लीम के लग्नानयन में है वह ही यहां लिया गया है।

(22घं. ।00मि.) +(18मि.12से= 22घं. ।18मि. ।12से. =L.M.T. इसमें 1 घन्टे में 10 सेकण्ड के हिसाब से 22X10+3=223से. =3मि. 43से. का योग करने पर 22।21।55S.D. इसमें सारणी से प्राप्त 8।56।30 का योग करने पर 31घं. ।18मि. ।25से. प्राप्त हुये इसमें स्थानीय संस्कार टोक्यो का सारणी से प्राप्त ऋण 37 सेकण्ड घटाने पर 31घं. ।17मि. ।48से. में 24 घन्टे घटाने पर 7 घं. 17 मि. 48 से. साम्पातिक काल प्रात: 10 बजे तक प्राप्त हुआ इस को उपकरण मानकर 35 अं.40क =(36अंश)अक्षांश की लग्न सारणी से (7 घं.16 मि) का फल 5 रा.22 अं. 43 क. मिला।

शेष 1 मि.48 से. = 108 सेकण्ड का अनुपात द्वारा प्राप्त फल 22 क. 30 वि. का 5।22।43 में योग करने पर 5रा.।23 अं.। 5क.। 30 वि. राश्यादि में अयनांश संस्कार ऋणात्मक 52 कला घटाने पर 5रा. ।22अं. ।13क.30वि. राश्यादि लग्न स्पष्ट टोक्यो के स्टैण्डर्ड 10 बजे प्रातः काल का सम्पन्न हुआ।

अनुपात के लिये (7 घं.20मि.) का फल सारणी में 7रा. ।23अं. ।33क और 7घं.16मि. का 5रा. ।22अं. ।43क. दोनों का अन्तर करने पर 50 कला 4 मि. अर्थात् 240 सेकण्ड का फल प्राप्त हुआ अतः 50X108भाग 240=22.5=22 कला 30वि. मिला।

इष्टकाल द्वारा लग्नानयन:-

अभीष्ट दिन के सूर्य के राशि व अंश का फल अभीष्ट अक्षांश की घटी व पल की लग्न सारणी से लेकर इष्टकाल के घटी व पलों में जोड़कर जो घट्यादि (घटीपल) प्राप्त हों उन्हें अभीष्ट अक्षांश की सारणी में देखने पर लग्न के राशि व अंश मिल जाते हैं। यह प्रक्रिया उन नगरों के लिये है, जिनका अक्षांश उत्तर हो। जिन देशों का अक्षांश दक्षिण होता है वहाँ सूर्य के राशि व अंशो में 6 राशि जोड़कर लग्न सारणी से फल लेकर इष्टकाल में जोड़ने पर जो लग्न के राशि व अंश प्राप्त हों उसमें 6 राशि जोड़ने पर दक्षिण अक्षांश के नगरों के लग्न के राशि व अंश प्राप्त होते हैं।

लीमा के दक्षिण अक्षांश 12।2 हैं अतः 6 अगस्त 2000ई. के लीमा के 10 बजे प्रातःकाल के इष्ट घटी व पल एवं विपल में 6 अगस्त के सूर्य के 3 राशि 20 अंश में 6 राशि जोड़कर 12 अक्षांश की सारणी में फल देखने पर अर्थात् 9 राशि 20 अंश का फल सारणी में 53 घटी 13 पल प्राप्त हुआ इसे लीमा के 6 अगस्त 2000 ई के इष्टकाल 8 घटी 47 पल 30 विपल में जोड़ने पर 62घ. ।00प. ।30वि प्राप्त हुये इसमें 60 घटी घटाने पर 2 घटी 00 पल 30 वि. शेष का फल पुनः सारणी में देखने पर 11 राशि 21 अंश लग्न के प्राप्त हुये इसमें 6 राशि जोड़ने पर 5 राशि के 21 अंश लीमा के ज्ञात हुये यह सारणी का स्थूल (लगभग) फल हैं साम्पातिक काल द्वारा सीमा के लग्न के 5 राशि 22 अंश उपर्युक्त गणित में प्राप्त हुये हैं। लीमा का इष्टकाल पिछले विवरण में 8घ.47प.30वि. लिख चुके हैं।

इस प्रकार पिछले विवरण में सिडनी का इष्टकाल 8घ.2प.30वि. लिखा जा चुका है। सिडनी का 33अं. 52 कला दक्षिण अक्षांश होने के कारण सूर्य के राशि व अंश 3रा. ।20अं. में 6 राशि जोड़कर 9 राशि 20 अंश का फल 34 अक्षांश की सारणी में देखने पर 54 घटी 32 पल मिला इसे सिडनी के इष्टकाल में जोड़ने पर 62घ.34प.30वि प्राप्त में 60 घटी घटाने पर 2घ.34प.30वि. का फल पुनः सारणी में देखने पर 00।00 राशि व अंश प्राप्त हुआ इसमें 6 राशि जोड़ने पर 6 राशि 00 अंश सिडनी में लग्न के प्राप्त हुये साम्पातिक काल से भी 6रा.और00शून्य अंश लग्न ज्ञात हुआ है।

टोक्यो का इष्टकाल पिछले विवरण में 12घ.32प.30वि. लिखा जा चुका है। इसमें सूर्य के 3 राशि 20 अंश का फल (35।40 उत्तर अक्षांश) का 36 अक्षांश की लग्न सारणी में 20घ.31पल मिला इसे इष्टकाल में जोड़ने पर 33 घटी 3पल30 वि. को पुनः लग्न सारणी में देखने पर 5 राशि 22 अंश लग्न के राश्यंश प्राप्त हुये। साम्पातिक काल द्वारा भी 5रा.22अं. गणितागत आये हैं।

न्यूयार्क का इष्टकाल पिछले विवरण में 12घ.22पल30वि. लिखा गया है इसमें सूर्य के राशि 3 और अंश 20 का फल (40अं.43क.) 41 की लग्न अक्षांश सारणी में 20 घटी 6 पल मिला इसको 12घ.22प.30वि. में जोड़ने पर 32 घ.28प.30वि. को पुनः सारणी में देखने पर 5 राशि 19 अंश न्यूयार्क के लग्न के प्राप्त हुये। साम्पातिक काल द्वारा भी 5रा.19अं. लग्न मिला है जिन देशों का उत्तर अक्षांश हो उसमें सूर्य के राशि व अंशो में 6 राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती, और लग्न सारणी द्वारा प्राप्त लग्न के राश्यंश में 6 राशि जोड़ने की भी आवश्यकता नहीं होती।

साम्पातिक काल निकालने की विधि

ज्योतिष शास्त्र कालविधान शास्त्र कहलाता है। विभिन्न खगोलीय पदार्थों के वेधादि ज्ञानार्थ साम्पातिक काल की पद-पद पर आवश्यकता होती है। साम्पातिक काल के ज्ञान लिए यहाँ 3 सारिणियाँ दी गई हैं। साम्पातिक सारिणी सं. 1 से एक वर्ष के अन्तर्गत महीनों तथा दिनों के साम्पातिक काल का ज्ञान होता है । इस प्रकार अभीष्ट दिन के मध्याह्न 12.00 बजे का साम्पातिक काल प्राप्त होता है। 12.00 बजे के बाद साम्पातिक काल के ज्ञान के लिए स्थानीय मध्यम समय के 1 घंटे में 10 सेकेण्ड के हिसाब से तथा 6 मिनट में 1 सेकेण्ड के हिसाब से स्थानीयमध्यम समय में जोड़कर तथा स्थानीय संस्कार करने पर12.00 बजे के साम्पातिक काल में जोड़ने पर अभीष्ट काल का साम्पातिक काल ज्ञात होता है। यदि रात्रि के 12.00 बजे के बाद का साम्पातिक काल अभीष्ट हो, तो मध्याह्नोत्तर स्टैण्डर्ड समय में 12.00 घंटे के बाद का साम्पातिक काल निकालना चाहिए। रात्रि 12 बजे के बाद यदि दूसरे दिन प्रातः 9 बजे जातक का जन्म हो जो उसमें 12 घंटे जोड़कर 21 घंटे माने, 10 बजे हो तो 22 घंटे मानकर गणित करनी चाहिए और साम्पातिक काल सारिणी नं. 1 से गत तारीख (अर्थात् 26 अप्रैल 9 बजे के काल के 21 घंटे मानकर 25 अप्रैल की साम्पातिक काल सारिणी नं. 1 का फल) का साम्पातिक काल ग्रहण कर गणित करनी चाहिए। स्टैण्डर्ड समय में मध्यमान्तर का यथावत् संस्कार करने पर स्थानीय मध्यम समय ज्ञात होता है। भारत के प्रमुख नगरों के रेखांश तथा मध्यमान्तर पुस्तक में दिए गए हैं।

उदाहरण— कल्पना कीजिए 25 अप्रैल 2002 को अपराह्न 1.30 बजे हरिद्वार में साम्पातिक काल ज्ञात कर लग्न निकालना है।

साम्पातिक काल सारिणी संख्या 1 से 25 अप्रैल का फल-		2 घं. 11 मि. 16 से.
साम्पातिक काल सारिणी संख्या 2 से 2002 का फल -	+	1 मि. 11 से.
25 अप्रैल 2002 मध्याह्न 12.00 का साम्पातिक काल	=	2 घं. 12 मि. 27 से.
25 अप्रैल 2002 का मध्याह्नोत्तर स्टैण्डर्ड समय	-	1 घं. 30 मि. 00 से.
हरिद्वार का मध्यमान्तर-		17 मि. 28 से.
		1 घं. 12 मि. 32 से.
सारिणी नं. 3 से फल-	+	11 से.
		1 घं. 12 मि. 43 से.
स्थानीय हरिद्वार का संस्कार-	+	3 से.
25 अप्रैल 2002 का मध्याह्नोत्तर स्थानीय मध्यम समय-		1 घं. 12 मि. 46 से.
25 अप्रैल 2002 मध्याह्न 12.00 का साम्पातिक काल-	+	2 घं. 12 मि. 27 से.
अभीष्ट साम्पातिक काल=		3 घं. 25 मि. 13 से.

इस अभीष्ट साम्पातिक काल को हरिद्वार अक्षांश 30^0 की साइडीरियल टाइम-लग्न सारिणी में 3 घंटा 25 मि. 13 सेकेण्ड का फल 4 राशि 3 अंश 30 कला 40 विकला के आसन्न मिलता है इसमें अयनांश संस्कार करने के बाद इस प्रकार सिंह लग्न की जन्म कुण्डली बनायी जानी चाहिए।

साम्पातिक काल

सारिणी-1

स्थानीय मध्यम समय दिन के १२.०० बजे

82½° पूर्व रेखांश

दिनांक	साम्पातिक काल	दिनांक	साम्पातिक काल	दिनांक	साम्पातिक काल	दिनांक	साम्पातिक काल	दिनांक	साम्पातिक काल
	जनवरी		फरवरी		अप्रैल		मई		जुलाई
	घं. मि. सै.		घं. मि. सै.		घं. मि. सै.		घं. मि. सै.		घं. मि. सै.
1	18 41 48	16	21 4[illegible] 0	1	0 36 39	17	3 38 0	1	6 35 25
2	18 45 45	17	21 [illegible] 7	2	0 40 35	18	3 41 56	2	6 39 22
3	18 49 42	18	21 51 3	3	0 44 32	19	3 45 53	3	6 43 18
4	18 53 38	19	21 55 0	4	0 48 28	20	3 49 50	4	6 47 15
5	18 57 35	20	21 58 56	5	0 52 25	21	3 53 46	5	6 51 11
6	19 1 31	21	22 2 53	6	0 56 21	22	3 57 43	6	6 55 8
7	19 5 28	22	22 6 49	7	1 0 18	23	4 1 39	7	6 59 4
8	19 9 24	23	22 10 46	8	1 4 14	24	4 5 36	8	7 3 1
9	19 13 21	24	22 14 43	9	1 8 11	25	4 9 33	9	7 6 58
10	19 17 18	25	22 18 39	10	1 12 8	26	4 13 29	10	7 10 54
11	19 21 14	26	22 22 36	11	1 16 4	27	4 17 26	11	7 14 51
12	19 25 11	27	22 26 32	12	1 20 1	28	4 21 22	12	7 18 47
13	19 29 7	28	22 30 29	13	1 23 57	29	4 25 19	13	7 22 44
14	19 33 4	29	22 34 25	14	1 27 54	20	4 29 15	14	7 26 40
15	19 37 0			15	1 31 50	31	4 33 12	15	7 30 37
16	19 40 57		मार्च	16	1 35 47			16	7 34 33
17	19 44 53			17	1 39 43		जून	17	7 38 30
18	19 48 50			18	1 43 40			18	7 42 27
19	19 52 47	1	22 34 25	19	1 47 37			19	7 46 23
20	19 56 43	2	22 38 22	20	1 51 33	1	4 37 8	20	7 50 20
21	20 0 40	3	22 42 18	21	1 55 30	2	4 41 5	21	7 54 16
22	20 4 36	4	22 46 15	22	1 59 26	3	4 45 2	22	7 58 13
23	20 8 33	5	22 50 12	23	2 3 23	4	4 48 58	23	8 2 9
24	20 12 29	6	22 54 8	24	2 7 19	5	4 52 55	24	8 6 6
25	20 16 26	7	22 58 5	25	2 11 16	6	4 56 51	25	8 10 2
26	20 20 22	8	23 2 1	26	2 15 12	7	5 0 48	26	8 13 59
27	20 24 19	9	23 5 58	27	2 19 9	8	5 4 44	27	8 17 56
28	20 28 16	10	23 9 54	28	2 23 6	9	5 8 41	28	8 21 52
29	20 32 12	11	23 13 51	29	2 27 2	10	5 12 37	29	8 25 49
30	20 36 9	12	23 17 47	30	2 30 59	11	5 16 34	30	8 29 45
31	20 40 5	13	23 21 44			12	5 20 31	31	8 33 42
	फरवरी	14	23 25 41		मई	13	5 24 27		अगस्त
		15	23 29 37			14	5 28 24		
		16	23 33 34	1	2 34 55	15	5 32 20		
1	20 44 2	17	23 37 30	2	2 38 52	16	5 36 17	1	8 37 38
2	20 47 58	18	23 41 27	3	2 42 48	17	5 40 13	2	8 41 35
3	20 51 55	19	23 45 23	4	2 46 45	18	5 44 10	3	8 45 31
4	20 55 51	20	23 49 20	5	2 50 41	19	5 48 6	4	8 49 28
5	20 59 48	21	23 53 16	6	2 54 38	20	5 52 3	5	8 53 25
6	21 3 45	22	23 57 13	7	2 58 35	21	5 56 0	6	8 57 21
7	21 7 41	23	0 1 10	8	3 2 31	22	5 59 56	7	9 1 18
8	21 11 38	24	0 5 6	9	3 6 28	23	6 3 53	8	9 5 14
9	21 15 34	25	0 9 3	10	3 10 24	24	6 7 49	9	9 9 11
10	21 19 31	26	0 12 59	11	3 14 21	25	6 11 46	10	9 13 7
11	21 23 27	27	0 16 56	12	3 18 17	26	6 15 42	11	9 17 4
12	21 27 24	28	0 20 52	13	3 22 14	27	6 19 39	12	9 21 0
13	21 31 20	29	0 24 49	14	3 26 10	28	6 23 35	13	9 24 57
14	21 35 17	30	0 28 45	15	3 30 7	29	6 27 32	14	9 28 54
15	21 39 14	31	0 32 42	16	3 34 4	30	6 31 29	15	9 32 50

साम्पातिक काल सारिणी

सारिणी-1 आगे

दिनांक	साम्पातिक काल
	अगस्त
	घं. मि. सै.
16	9 36 47
17	9 40 43
18	9 44 40
19	9 48 36
20	9 52 33
21	9 56 29
22	10 0 26
23	10 4 23
24	10 8 19
25	10 12 16
26	10 16 12
27	10 20 9
28	10 24 5
29	10 28 2
30	10 31 58
31	10 35 55
	सितम्बर
1	10 39 52
2	10 43 48
3	10 47 45
4	10 51 41
5	10 55 38
6	10 59 34
7	11 3 31
8	11 7 27
9	11 11 24
10	11 15 21
11	11 19 17

दिनांक	साम्पातिक काल
	सितम्बर
	घं. मि. सै.
12	11 23 14
13	11 27 10
14	11 31 7
15	11 35 3
16	11 39 0
17	11 42 56
18	11 46 53
19	11 50 50
20	11 54 46
21	11 58 43
22	12 2 39
23	12 6 36
24	12 10 32
25	12 14 29
26	12 18 25
27	12 22 22
28	12 26 19
29	12 30 15
30	12 34 12
	अक्तूबर
1	12 38 8
2	12 42 5
3	12 46 1
4	12 49 58
5	12 53 54
6	12 57 51
7	13 1 48
8	13 5 44

दिनांक	साम्पातिक काल
	अक्टूबर
	घं. मि. सै.
9	13 9 41
10	13 13 37
11	13 17 34
12	13 21 30
13	13 25 27
14	13 29 23
15	13 33 20
16	13 37 16
17	13 41 13
18	13 45 10
19	13 49 6
20	13 53 3
21	13 56 59
22	14 0 56
23	14 4 52
24	14 8 49
25	14 12 45
26	14 16 42
27	14 20 39
28	14 24 35
29	14 28 32
30	14 32 28
31	14 36 25
	नवम्बर
1	14 40 21
2	14 44 18
3	14 48 14
4	14 52 11

दिनांक	साम्पातिक काल
	नवम्बर
	घं. मि. सै.
5	14 56 8
6	15 0 4
7	15 4 1
8	15 7 57
9	15 11 54
10	15 15 50
11	15 19 47
12	15 23 43
13	15 27 40
14	15 31 37
15	15 35 33
16	15 39 30
17	15 43 26
18	15 47 23
19	15 51 19
20	15 55 16
21	15 59 12
22	16 3 9
23	16 7 6
24	16 11 2
25	16 14 59
26	16 18 55
27	16 22 52
28	16 26 48
29	16 30 45
30	16 34 41
	दिसम्बर
1	16 38 38

दिनांक	साम्पातिक काल
	दिसम्बर
	घं. मि. सै.
2	16 42 35
3	16 46 31
4	16 50 28
5	16 54 24
6	16 58 21
7	17 2 17
8	17 6 14
9	17 10 10
10	17 14 7
11	17 18 4
12	17 22 0
13	17 25 57
14	17 29 53
15	17 33 50
16	17 37 46
17	17 41 43
18	17 45 39
19	17 49 36
20	17 53 33
21	17 57 29
22	18 1 26
23	18 5 22
24	18 9 19
25	18 13 15
26	18 17 12
27	18 21 8
28	18 25 5
29	18 29 2
30	18 32 58
31	18 36 55

साम्पातिक काल सारिणी २

(यह प्रथम सारिणी के फलादेश को भी दर्शाता है)

वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार
	मि. से.		मि. से.		मि. से.		मि. से.		मि. से.
1800	+0 52	1810	−0 47	1820*	−2 27	1829	+0 47	1839	−0 53
1801	−0 5	1811	−1 45	1820†	+1 29	1830	−0 10	1840*	−1 50
1802	−1 2	1812*	−2 42	1821	+0 32	1831	−1 8	1840†	+2 6
1803	−1 59	1812†	+1 14	1822	−0 25	1832*	−2 5	1841	+1 9
1804*	−2 57	1813	+0 17	1823	−1 23	1832†	+1 51	1842	+0 12
1804†	+1 0	1814	−0 40	1824*	−2 20	1833	+0 54	1843	−0 46
1805	+0 3	1815	−1 37	1824†	+1 36	1834	−0 3	1844*	−1 43
1806	−0 55	1816*	−2 35	1825	+0 39	1835	−1 0	1844†	+2 13
1807	−1 52	1816†	+1 22	1826	−0 18	1836*	−1 58	1845	+1 16
1808*	−2 49	1817	+0 25	1827	−1 15	1836†	+1 59	1846	+0 19
1808†	+1 7	1818	−0 33	1828*	−2 12	1837	+1 2	1847	−0 38
1809	+0 10	1819	−1 30	1828†	+1 44	1838	+0 4	1848*	−1 36

* जनवरी तथा फरवरी मात्र

† मार्च से दिसम्बर

साम्पातिक काल सारिणी-2

वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार
	मि. सै.		मि. सै.		मि. सै.		मि. सै.		मि. सै		मि. सै.
1848†	+ 2 21	1882	+ 1 25	1916†	− 0 29	1950	− 0 26	1984*	− 1 21	2018	+ 1 41
1849	+ 1 24	1883	+ 0 28	1917	− 0 28	1951	− 1 24	1984†	+ 2 36	2019	+ 0 43
1850	+ 0 26	1884*	− 0 29	1918	− 1 25	1952*	− 2 21	1985	+ 1 38	2020*	− 0 14
1851	− 0 31	1884†	+ 3 27	1919	− 2 23	1952†	+ 1 36	1986	+ 0 41	2020†	+ 3 42
1852*	− 1 28	1885	+ 2 30	1920*	− 3 20	1953	+ 0 38	1987	− 0 16	2021	+ 2 45
1852†	+ 2 28	1886	+ 1 33	1920†	+ 0 37	1954	− 0 19	1988*	− 1 13	2022	+ 1 48
1853	+ 1 31	1887	+ 0 36	1921	− 0 21	1955	− 1 16	1988†	+ 2 43	2023	+ 0 50
1854	+ 0 34	1888*	− 0 22	1922	− 1 18	1956*	− 2 13	1989	+ 1 46	2024*	− 0 7
1855	− 0 24	1888†	+ 3 35	1923	− 2 15	1956†	+ 1 43	1990	+ 0 48	2024†	+ 3 50
1856*	− 1 21	1889	+ 2 38	1924*	− 3 12	1957	+ 0 46	1991	− 0 9	2025	+ 2 53
1856†	+ 2 36	1890	+ 1 40	1924†	+ 0 44	1958	− 0 12	1992*	− 1 6	2026	+ 1 56
1857	+ 1 38	1891	+ 0 43	1925	− 0 13	1959	− 1 9	1992†	+ 2 21	2027	+ 0 58
1858	+ 0 41	1892*	− 0 14	1926	− 1 11	1960*	− 2 6	1993	+ 1 53	2028*	0 0
1859	− 0 16	1892*	+ 3 42	1927	− 2 8	1960†	+ 1 52	1994	+ 0 56	2028†	+ 3 57
1860*	− 1 13	1893	+ 2 45	1928*	− 3 5	1961	+ 0 54	1995	− 0 2	2029	+ 3 0
1860†	+ 2 43	1894	+ 1 48	1928†	+ 0 51	1962	− 0 3	1996*	− 1 59	2230	+ 2 3
1861	+ 1 46	1895	+ 0 50	1929	− 0 6	1963	− 1 1	1996†	+ 2 58	2031	+ 1 5
1862	+ 0 49	1896*	− 0 7	1930	− 1 3	1964*	− 1 58	1997	+ 2 0	2032*	+ 0 8
1863	− 0 9	1896†	+ 3 49	1931	− 2 1	1964†	+ 1 59	1998	+ 1 3	2032†	+ 4 5
1864*	− 1 6	1897	+ 2 52	1932*	− 2 58	1965	+ 0 59	1999	+ 0 6	2033	+ 3 8
1864†	+ 2 50	1898	+ 1 55	1932†	+ 0 59	1966	+ 0 2	2000*	− 0 51	2034	+ 2 11
1865	+ 1 53	1899	+ 0 57	1933	+ 0 1	1967	− 0 53	2000†	+ 3 6	2035	+ 1 13
1866	+ 0 56	1900	0 0	1934	− 0 56	1968*	− 1 50	2001	+ 2 8	2036*	+ 0 16
1867	− 0 1	1901	− 0 57	1935	− 1 53	1968†	+ 2 6	2002	+ 1 11	2036†	+ 4 12
1868*	− 0 59	1902	− 1 55	1936*	− 2 50	1969	+ 1 9	2003	+ 0 14	2037	+ 3 15
1968†	+ 2 58	1903	− 2 52	1936†	+ 1 6	1970	+ 0 11	2004*	− 0 44	2038	+ 2 18
1869	+ 2 1	1904*	− 3 49	1937	+ 0 9	1971	− 0 46	2004†	− 3 13	2039	+ 1 20
1870	+ 1 3	1904†	+ 0 7	1938	− 0 49	1972*	− 1 43	2005	+ 2 16	2040*	+ 0 23
1871	+ 0 6	1905	− 0 50	1939	− 1 46	1972†	+ 2 14	2006	+ 1 19	2040†	+ 4 19
1872*	− 0 51	1906	− 1 48	1940*	− 2 43	1973	+ 1 16	2007	+ 0 12	2041	+ 3 22
1872†	+ 3 5	1907	− 2 45	1940†	+ 1 13	1974	+ 0 19	2008*	− 0 36	2042	+ 2 25
1873	+ 2 8	1908*	− 3 42	1941	+ 0 16	1975	− 0 38	2008†	+ 3 20	2043	+ 1 27
1874	+ 1 11	1908†	+ 0 14	1942	− 0 41	1976*	− 1 35	2009	+ 2 23	2044*	+ 0 30
1875	+ 0 13	1909	− 0 43	1943	− 1 38	1976†	+ 2 21	2010	+ 1 26	2044†	+ 4 27
1876*	− 0 44	1910	− 1 40	1944*	− 2 36	1977	+ 1 24	2011	+ 0 29	2045	+ 3 30
1876†	+ 3 12	1911	− 2 38	1944†	+ 1 21	1978	+ 0 26	2012*	− 0 29	2046	+ 2 33
1877	+ 2 15	1912*	− 3 35	1945	+ 0 24	1979	− 0 31	2012†	+ 3 28	2047	+ 1 35
1878	+ 1 18	1912†	+ 0 22	1946	− 0 34	1980*	− 1 28	2013	+ 2 31	2048*	+ 0 38
1879	+ 0 21	1913	− 0 36	1947	− 1 31	1980†	+ 2 29	2014	+ 1 34	2048†	+ 4 34
1880*	− 0 37	1914	− 1 33	1948*	− 2 28	1981	+ 1 31	2015	+ 0 36	2049	+ 3 37
1880†	+ 3 20	1915	− 2 30	1948†	+ 1 28	1982	+ 0 34	2016*	− 0 21	2050	+ 2 40
1881	+ 2 23	1916*	− 3 27	1949	+ 0 31	1983	− 0 24	2017	+ 2 38	2051	+ 1 42

समय विस्तार अन्तर संस्कार

समय	संस्कार	समय	संस्कार	समय	संस्कार	समय	संस्कार	समय	संस्कार
घं.	मि. सै.	घं.	मि. सै.	घं.	मि. सै.	मि.	मि. सै.	मि.	मि. सै.
1	+ 0 10	8	+ 1 19	15	+ 2 28	22	+ 3 37	24	+ 0 4
2	0 20	9	1 29	16	2 38	23	3 47	30	0 5
3	0 30	10	1 39	17	2 48	24	+ 3 57	36	0 6
4	0 39	11	1 48	18	2 57	m	m s	42	0 7
5	0 49	12	1 58	19	3 7	6	+ 0 1	48	0 8
6	0 59	13	2 8	20	3 17	12	0 2	54	0 9
7	+ 1 9	14	+ 2 18	21	+ 3 27	18	+ 0 3	60	+ 0 10

अयनांश संस्कार

पूर्वोक्त प्रकार से साम्पातिक काल (नक्षत्र काल) से लग्न के राश्यादि ज्ञातकर अन्त में इस (अयनांश शुद्धिकरण) सारणी के आधार पर अभीष्ट सन् (खिष्टाब्द) जिसका लग्नानयन किया है उस सन् का संस्कार ऋण अथवा धन दिया है, वही संस्कार करने पर वास्तविक लग्न के राश्यादि ज्ञात होंगे

वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार	वर्ष	संस्कार
A.D.	0 '	A.D.	0 '	A.D.	0 '	A.D.	0 '	A.D.	0 '
1000	+13 4	1814	+1 44	1863	+1 3	1912	+0 22	1961	—0 19
1100	11 41	1815	1 43	1864	1 2	1913	0 21	1962	0 20
1200	10 17	1816	1 42	1865	1 1	1914	0 20	1963	0 21
1300	8 54	1817	1 41	1866	1 0	1915	0 19	1964	0 22
1350	8 12	1818	1 41	1867	0 59	1916	0 18	1965	0 23
1400	7 30	1819	1 40	1868	0 59	1917	0 18	1966	0 23
1420	7 13	1820	1 39	1869	0 58	1918	0 17	1967	0 24
1440	6 57	1821	1 38	1870	0 57	1919	0 16	1968	0 25
1460	6 40	1822	1 37	1871	0 56	1920	0 15	1969	0 26
1480	6 23	1823	1 36	1872	0 55	1921	0 14	1970	0 27
1500	6 7	1824	1 35	1873	0 54	1922	0 13	1971	0 28
1520	5 50	1825	1 35	1874	0 54	1923	0 13	1972	0 28
1540	5 33	1826	1 34	1875	0 53	1924	0 12	1973	0 29
1560	5 16	1827	1 33	1876	0 52	1925	0 11	1974	0 30
1580	5 0	1828	1 32	1877	0 51	1926	0 10	1975	0 31
1600	4 43	1829	1 31	1878	0 50	1927	0 9	1976	0 32
1610	+4 35	1830	+1 30	1879	+0 49	1928	+0 8	1977	—0 33
1620	4 26	1831	1 30	1880	0 49	1929	0 8	1978	0 33
1630	4 18	1832	1 29	1881	0 48	1930	0 7	1979	0 34
1640	4 9	1833	1 28	1882	0 47	1931	0 6	1980	0 35
1650	4 1	1834	1 27	1883	0 46	1932	0 5	1981	0 36
1660	3 53	1835	1 26	1884	0 45	1933	0 4	1982	0 37
1670	3 44	1836	1 25	1885	0 44	1934	0 3	1983	0 38
1680	3 36	1837	1 25	1886	0 44	1935	0 3	1984	0 39
1690	3 28	1838	1 24	1887	0 43	1936	0 2	1985	0 39
1700	3 19	1839	1 23	1888	0 42	1937	+0 1	1986	0 40
1710	3 11	1840	1 22	1889	0 41	1938	0 0	1987	0 41
1720	3 3	1841	1 21	1890	0 40	1939	—0 1	1988	0 42
1730	2 54	1842	1 20	1891	0 39	1940	0 2	1989	0 43
1740	2 46	1843	1 20	1892	0 39	1941	0 2	1990	0 44
1750	2 37	1844	1 19	1893	0 38	1942	0 3	1991	0 44
1760	2 29	1845	1 18	1894	0 37	1943	0 4	1992	0 45
1770	2 21	1846	1 17	1895	0 36	1944	0 5	1993	0 46
1780	+2 12	1847	+1 16	1896	+0 35	1945	—0 6	1994	—0 47
1790	2 4	1848	1 15	1897	0 34	1946	0 7	1995	0 48
1800	1 56	1849	1 15	1898	0 33	1947	0 8	1996	0 49
1801	1 55	1850	1 14	1899	0 33	1948	0 8	1997	0 49
1802	1 54	1851	1 13	1900	0 32	1949	0 9	1998	0 50
1803	1 53	1852	1 12	1901	0 31	1950	0 10	1999	0 51
1804	1 52	1853	1 11	1902	0 30	1951	0 11	2000	0 52
1805	1 51	1854	1 10	1903	0 29	1952	0 12	2020	1 9
1806	1 51	1855	1 10	1904	0 29	1953	0 13	2040	1 25
1807	1 50	1856	1 9	1905	0 28	1954	0 13	2060	1 42
1808	1 49	1857	1 8	1906	0 27	1955	0 14	2080	1 59
1809	1 48	1858	1 7	1907	0 26	1956	0 15	2100	2 16
1810	1 47	1859	1 6	1908	0 25	1957	0 16	2200	3 40
1811	1 46	1860	1 5	1909	0 24	1958	0 17	2300	5 3
1812	1 46	1861	1 5	1910	0 23	1959	0 18	2400	6 27
1813	+1 45	1862	+1 4	1911	+0 23	1960	—0 18	2500	—6 51

लग्न सारिणी अक्षांश 11^0 0' उत्तर

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 11 25	3 22 45	5 7 0	6 21 15	8 2 35	9 15 56	11 7 0	0 28 4
4	12 20	23 42	8 0	22 11	3 29	16 59	8 11	0 29 6
8	13 15	24 39	9 1	23 8	4 24	18 2	9 23	1 0 8
12	14 9	25 36	10 1	24 4	5 19	19 5	10 34	1 10
16	15 4	26 33	11 1	25 1	6 14	20 9	11 45	2 12
20	15 58	27 31	12 2	25 57	7 9	21 13	12 57	3 14
24	16 53	28 28	13 2	26 53	8 4	22 17	14 8	4 15
28	17 47	3 29 26	14 2	27 49	8 59	23 21	15 19	5 16
32	2 18 42	4 0 23	5 15 2	6 28 45	8 9 55	9 24 26	11 16 30	1 6 16
36	19 36	1 21	16 2	6 29 41	10 50	25 31	17 41	7 17
40	20 31	2 19	17 2	7 0 37	11 45	26 37	18 52	8 17
44	21 25	3 17	18 2	1 33	12 41	27 42	20 3	9 17
48	22 20	4 15	19 2	2 28	13 37	28 48	21 14	10 16
52	23 14	5 13	20 2	3 24	14 33	9 29 54	22 24	11 16
56	24 9	6 12	21 2	4 19	15 29	10 1 0	23 34	12 15
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	2 25 3	4 7 10	5 22 2	7 5 15	8 16 25	10 2 7	11 24 45	1 13 14
4	25 58	8 8	23 2	6 10	17 21	3 14	25 55	14 13
8	26 52	9 7	24 2	7 5	18 17	4 21	27 5	15 11
12	27 47	10 6	25 1	8 0	19 14	5 28	28 14	16 10
16	28 41	11 5	26 1	8 55	20 10	6 36	11 29 24	17 8
20	2 29 36	12 4	27 0	9 50	21 7	7 44	0 0 33	18 6
24	3 0 31	13 3	28 0	10 45	22 4	8 52	1 42	19 4
28	1 25	14 2	29 0	11 40	23 2	10 0	2 51	20 1
32	3 2 20	4 15 1	5 29 58	7 12 35	8 23 59	10 11 9	0 4 0	1 20 58
36	3 15	16 0	6 0 57	13 29	24 56	12 18	5 8	21 56
40	4 10	17 0	1 56	14 24	25 54	13 27	6 16	22 53
44	5 5	17 59	2 55	15 19	26 52	14 36	7 24	23 50
48	6 0	18 59	3 54	16 13	27 50	15 46	8 32	24 46
52	6 55	19 58	4 53	17 8	28 49	16 55	9 39	25 43
56	7 50	20 58	5 52	18 2	8 29 47	18 5	10 46	26 39
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 8 45	4 21 58	6 6 50	7 18 57	9 0 46	10 19 15	0 11 53	1 27 35
4	9 41	22 58	7 48	19 51	1 45	20 26	13 0	28 31
8	10 36	23 58	8 47	20 46	2 44	21 36	14 6	1 29 27
12	11 32	24 58	9 45	21 40	3 44	22 46	15 12	2 0 23
16	12 27	25 58	10 43	22 35	4 43	23 57	16 18	1 19
20	13 23	26 58	11 41	23 29	5 43	25 8	17 23	2 15
24	14 19	27 58	12 39	24 24	6 43	26 19	18 29	3 10
28	15 15	28 58	13 37	25 18	7 44	27 30	19 34	4 5
32	3 16 11	4 29 58	6 14 31	7 26 13	9 8 44	10 28 41	0 20 30	2 5 1
36	17 7	5 0 58	15 32	27 7	9 45	10 29 52	21 43	5 56
40	18 3	1 58	16 29	28 2	10 47	11 1 3	22 47	6 51
44	18 59	2 59	17 27	28 56	11 48	2 15	23 51	7 46
48	19 56	3 59	18 24	7 29 51	12 50	3 26	24 55	8 41
52	20 52	4 59	19 21	8 0 45	13 52	4 37	25 58	9 36
56	21 49	6 0	20 18	1 40	14 54	5 49	27 1	10 31
60	3 22 45	5 7 0	6 21 15	8 2 35	9 15 56	11 7 0	0 28 4	2 11 25

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	: 0°—54'	0°—57'	1°—0'	1°—3'	1°—6'	1°—9'	1°—11'
विचलन 3 मिनट	40'	43'	45'	47'	49'	52'	53'
विचलन 2 मिनट	27	29	30	32	33	35	36
विचलन 1 मिनट	14	14	15	16	17	17	18

लग्न सारिणी अक्षांश $12^0 0'$ उत्तर

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 11 50	3 23 2	5 7 0	6 20 58	8 2 10	9 15 35	11 7 0	0 28 25
4	12 45	23 59	8 0	21 54	3 5	16 38	8 12	0 29 28
8	13 39	24 56	9 0	22 50	3 59	17 41	9 24	1 0 30
12	14 34	25 52	10 0	23 46	4 54	18 45	10 36	1 32
16	15 28	26 49	10 59	24 43	5 49	19 49	11 48	2 34
20	16 23	27 46	11 59	25 39	6 44	20 53	13 0	3 36
24	17 17	28 43	12 59	26 35	7 39	21 57	14 12	4 37
28	18 12	3 29 41	13 59	27 31	8 34	23 2	15 24	5 38
32	2 19 6	4 0 38	5 14 59	6 28 26	8 9 29	9 24 7	11 16 35	1 6 39
36	20 0	1 35	15 58	6 29 22	10 25	25 13	17 47	7 40
40	20 55	2 33	16 58	7 0 17	11 20	26 18	18 58	8 40
44	21 49	3 31	17 58	1 13	12 16	27 24	20 10	9 40
48	22 43	4 28	18 57	2 8	13 12	28 30	21 21	10 40
52	23 38	5 26	19 57	3 4	14 8	9 29 37	22 32	11 40
56	24 32	6 24	20 56	3 59	15 4	10 0 44	23 43	12 39
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	2 25 26	4 7 22	5 21 56	7 4 54	8 16 0	10 1 51	11 24 54	1 13 38
4	26 21	8 20	22 55	5 49	16 56	2 53	26 4	14 37
8	27 15	9 19	23 55	6 44	17 52	4 5	27 15	15 36
12	28 9	10 17	24 54	7 39	18 49	5 13	28 25	16 34
16	29 4	11 15	25 53	8 34	19 45	6 21	11 29 35	17 32
20	2 29 58	12 14	26 52	9 28	20 42	7 30	0 0 45	18 30
24	3 0 53	13 13	27 51	10 23	21 39	8 38	1 54	19 28
28	1 47	14 11	28 50	11 18	22 37	9 47	3 4	20 26
32	3 2 42	4 15 10	5 29 49	7 12 13	8 23 34	10 10 56	0 4 13	1 24 23
36	3 37	16 9	6 0 47	13 7	24 32	12 6	5 22	22 21
40	4 32	17 8	1 46	14 2	25 30	13 15	6 30	23 18
44	5 26	18 7	2 45	14 56	26 28	14 25	7 39	24 15
48	6 21	19 6	3 43	15 51	27 26	15 35	8 47	25 11
52	7 16	20 6	4 41	16 45	28 24	16 45	9 55	26 8
56	8 11	21 5	5 40	17 39	8 29 23	17 56	11 2	27 4
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 9 6	4 22 4	6 6 38	7 18 34	9 0 22	10 19 6	0 12 9	1 28 0
4	10 1	23 4	7 36	19 28	1 21	20 17	13 16	28 56
8	10 56	24 3	8 34	20 22	2 20	21 28	14 23	1 29 52
12	11 52	25 3	9 32	21 17	3 20	22 39	15 30	2 0 48
16	12 47	26 2	10 29	22 11	4 20	23 50	16 36	1 44
20	13 43	27 2	11 27	23 5	5 20	25 2	17 42	2 40
24	14 38	28 2	12 25	24 0	6 20	26 13	18 47	3 35
28	15 34	4 29 1	13 22	24 54	7 21	27 25	19 53	4 31
32	3 16 30	5 0 1	6 14 19	7 25 48	9 8 22	10 28 36	0 20 58	2 5 26
36	17 26	1 1	15 17	26 43	9 23	10 29 48	22 3	6 21
40	18 22	2 1	16 14	27 37	10 24	11 1 0	23 7	7 16
44	19 18	3 1	17 11	28 32	11 26	2 12	24 11	8 11
48	20 14	4 0	18 8	7 29 26	12 28	3 24	25 15	9 6
52	21 10	5 0	19 4	8 0 21	13 30	4 36	26 19	10 1
56	22 6	6 0	20 1	1 15	14 32	5 48	27 22	10 55
60	3 23 2	5 7 0	6 20 58	8 2 10	9 15 35	11 7 0	0 28 25	2 11 50

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	0°—54'	0°—57'	1°—0'	1°—3'	1°—6'	1°—9'	1°—12'
विचलन 3 मिनट	40'	43'	45'	47'	49'	52'	54'
विचलन 2 मिनट	27	29	30	32	33	35	36
विचलन 1 मिनट	14	14	15	16	17	17	18

लग्न सारिणी

पूना तथा अन्य समीपस्थ नगरों के लिए अक्षांश 18° 31' उत्तर

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 14 35	3 24 53	5 7 0	6 19 7	7 29 25	9 13 5	11 7 0	1 0 55
4	15 29	25 47	7 57	20 2	8 0 19	14 10	8 17	1 59
8	16 23	26 42	8 54	20 56	1 13	15 15	9 33	3 3
12	17 17	27 37	9 51	21 51	2 7	16 21	10 50	4 7
16	18 11	28 32	10 48	22 45	3 2	17 26	12 6	5 10
20	19 5	3 29 27	11 45	23 40	3 56	18 32	13 22	6 13
24	19 59	4 0 22	12 42	24 34	4 51	19 39	14 39	7 15
28	20 52	- 1 17	13 39	25 28	5 46	20 46	15 55	8 17
32	2 21 46	4 2 12	5 14 36	6 26 22	8 6 41	9 21 53	11 17 11	1 9 19
36	22 39	3 7	15 33	27 16	7 36	23 1	18 27	10 21
40	23 33	4 3	16 30	28 10	8 31	24 9	19 43	11 22
44	24 26	4 58	17 27	29 4	9 26	25 17	20 58	12 23
48	25 20	5 54	18 24	6 29 58	10 22	26 26	22 14	13 24
52	26 13	6 49	19 21	7 0 51	11 17	27 35	23 29	14 24
56	27 6	7 45	20 18	1 45	12 13	28 45	24 44	15 24
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	2 27 59	4 8 41	5 21 15	7 2 39	8 13 9	9 29 54	11 25 59	1 16 24
4	28 53	9 37	22 11	3 32	14 5	10 1 4	27 13	17 24
8	2 29 46	10 33	23 8	4 26	15 2	2 15	28 27	18 23
12	3 0 40	11 29	24 5	5 20	15 59	3 26	11 29 41	19 22
16	1 33	12 25	25 1	6 13	16 55	4 37	0 0 55	20 21
20	2 27	13 21	25 58	7 7	17 52	5 49	2 8	21 19
24	3 20	14 17	26 54	8 0	18 50	7 1	3 22	22 17
28	4 13	15 13	27 50	8 53	19 47	8 13	4 35	23 15
32	3 5 7	4 16 10	5 28 47	7 9 47	8 20 45	10 9 25	0 5 47	1 24 13
36	6 0	17 6	5 29 43	10 40	21 43	10 38	6 59	25 10
40	6 53	18 2	6 0 39	11 33	22 41	11 52	8 11	26 7
44	7 47	18 59	1 35	12 27	23 39	13 5	9 23	27 4
48	8 40	19 55	2 31	13 20	24 38	14 19	10 34	28 1
52	9 34	20 52	3 27	14 14	25 37	15 33	11 45	28 58
56	10 28	21 49	4 23	15 7	26 36	16 47	12 56	1 29 55
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 11 21	4 22 45	6 5 19	7 16 1	8 27 36	10 18 1	0 14 6	2 0 51
4	12 15	23 42	6 15	16 54	28 36	19 16	15 15	1 47
8	13 9	24 39	7 11	17 47	8 29 36	20 31	16 25	2 43
12	14 2	25 36	8 6	18 40	9 0 36	21 46	17 34	3 38
16	14 56	26 33	9 2	19 34	1 37	23 2	18 43	4 34
20	15 50	27 30	9 57	20 27	2 38	24 17	19 51	5 29
24	16 44	28 26	10 53	21 21	3 39	25 33	20 59	6 24
28	17 38	4 29 24	11 48	22 14	4 41	26 49	22 7	7 19
32	3 18 32	5 0 21	6 12 43	7 23 8	9 5 43	10 28 5	0 23 14	2 8 14
36	19 26	1 18	13 38	24 1	6 45	10 29 21	24 21	9 9
40	20 20	2 15	14 33	24 55	7 47	11 0 38	25 28	10 4
44	21 15	3 12	15 28	25 49	8 50	1 54	26 34	10 58
48	22 9	4 9	16 23	26 43	9 53	3 10	27 39	11 53
52	23 4	5 6	17 18	27 37	10 57	4 27	28 45	12 47
56	23 58	6 3	18 13	28 31	12 1	5 43	0 29 50	13 41
60	3 24 53	5 7 0	6 19 7	7 29 25	9 13 5	11 7 0	1 0 55	2 14 35

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°—54'	0°—56'	0°—57'	0°—59'	1°—0'	1°—2'	1°—3'	1°—5'
विचलन 3 मिनट	40'	42'	43'	44'	45'	46'	47'	40'
विचलन 2 मिनट	27	28	29	30	30	31	32	33
विचलन 1 मिनट	14	14	14	15	15	16	16	16

लग्न सारिणी अक्षांश 19^0 0' उत्तर

मुंबई अक्षांश 18^0 58' उत्तर/अहमद नगर तथा जगदलपुर 19^0 5' उत्तर

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 14 48	3 25 1	5 7 0	6 18 59	7 29 12	9 12 53	11 7 0	1 1 7
4	15 42	25 55	7 57	19 54	8 0 6	13 58	8 17	2 11
8	16 36	26 50	8 54	20 48	1 0	15 3	9 34	3 15
12	17 30	27 45	9 51	21 42	1 54	16 9	10 51	4 19
16	18 24	28 39	10 48	22 36	2 49	17 15	12 7	5 22
20	19 17	3 29 34	11 44	23 31	3 43	18 21	13 24	6 25
24	20 11	4 0 29	12 41	24 25	4 38	19 28	14 41	7 28
28	21 4	1 24	13 38	25 19	5 33	20 35	15 57	8 30
32	2 21 58	4 2 19	5 14 35	6 26 13	8 6 28	9 21 42	11 17 13	1 9 32
36	22 51	3 14	15 32	27 6	7 23	22 50	18 30	10 34
40	23 45	4 9	16 28	28 0	8 18	23 58	19 46	11 35
44	24 38	5 5	17 25	28 54	9 13	25 7	21 2	12 36
48	25 32	6 0	18 22	6 29 48	10 9	26 16	22 18	13 37
52	26 25	6 55	19 19	7 0 41	11 4	27 25	23 33	14 37
56	27 18	7 51	20 15	1 35	12 0	28 35	24 48	15 37
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	2 28 11	4 8 46	5 21 12	7 2 29	8 12 56	9 29 45	11 26 3	1 16 37
4	29 5	9 42	22 8	3 22	13 52	10 0 55	27 18	17 37
8	2 29 58	10 38	23 5	4 16	14 49	2 6	28 33	18 36
12	3 0 51	11 34	24 1	5 9	15 45	3 17	11 29 47	19 35
16	1 44	12 30	24 58	6 2	16 42	4 29	0 1 1	20 34
20	2 38	13 26	25 54	6 56	17 39	5 41	2 15	21 32
24	3 31	14 22	26 50	7 49	18 36	6 53	3 29	22 30
28	4 24	15 18	27 46	8 42	19 34	8 5	4 42	23 28
32	3 5 18	4 16 14	5 28 42	7 9 36	8 20 32	10 9 18	0 5 55	1 24 26
36	6 11	17 10	5 29 38	10 29	21 30	10 31	7 7	25 24
40	7 4	18 6	6 0 34	11 22	22 28	11 45	8 19	26 21
44	7 58	19 2	1 30	12 16	23 26	12 59	9 31	27 18
48	8 51	19 59	2 26	13 9	24 25	14 13	10 43	28 15
52	9 44	20 55	3 22	14 2	25 24	15 27	11 54	1 29 11
56	10 38	21 52	4 18	14 55	26 23	16 42	13 5	2 0 8
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 11 31	4 22 48	6 5 14	7 15 49	8 27 23	10 17 56	0 14 15	2 1 4
4	12 25	23 45	6 9	16 42	28 23	19 12	15 25	2 0
8	13 19	24 41	7 5	17 35	8 29 23	20 27	16 35	2 56
12	14 12	25 38	8 0	18 28	9 0 23	21 42	17 44	3 51
16	15 6	26 35	8 55	19 22	1 24	22 58	18 53	4 47
20	16 0	27 32	9 51	20 15	2 25	24 14	20 2	5 42
24	16 54	28 28	10 46	21 9	3 26	25 30	21 10	6 37
28	17 47	4 29 25	11 41	22 2	4 28	26 47	22 18	7 32
32	3 18 41	5 0 22	6 12 36	7 22 56	9 5 30	10 28 3	0 23 25	2 8 27
36	19 35	1 19	13 31	23 49	6 32	10 29 19	24 32	9 22
40	20 29	2 16	14 26	24 43	7 35	11 0 36	25 39	10 17
44	21 24	3 12	15 21	25 36	8 38	1 53	26 45	11 11
48	22 18	4 9	16 15	26 30	9 41	3 9	27 51	12 6
52	23 12	5 6	17 10	27 24	10 45	4 26	0 28 57	13 0
56	24 6	6 3	18 5	28 18	11 49	5 43	1 0 2	13 54
60	3 25 1	5 7 0	6 18 59	7 29 12	9 12 53	11 7 0	1 1 7	2 14 48

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—6'	1°—8'	1°—9'	1°—11'	1°—12'	1°—14'	1°—15'	1°—17'
विचलन 3 मिनट	49'	51'	52'	53'	54'	55'	56'	58'
विचलन 2 मिनट	33	34	35	36	36	37	38	39
विचलन 1 मिनट	17	17	17	18	18	19	19	19

लग्न सारिणी अक्षांश 21^0 30' उत्तर

(बालसोरे 21^0 30' उत्तर, सम्बलपुर 21^0 28' उत्तर, भडौच 21^0 41' इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 15 54	3 25 43	5 7 0	6 18 17	7 28 6	9 11 50	11 7 0	1 2 10
4	16 48	26 37	7 56	19 11	29 0	12 55	8 18	3 15
8	17 42	27 31	8 52	20 4	7 29 53	14 1	9 37	4 20
12	18 35	28 25	9 47	20 58	8 0 46	15 7	10 56	5 24
16	19 29	3 29 19	10 43	21 51	1 41	16 13	12 15	6 28
20	20 22	4 0 12	11 39	22 45	2 35	17 20	13 34	7 32
24	21 15	1 6	12 35	23 38	3 30	18 28	14 52	8 35
28	22 9	2 0	13 31	24 31	4 24	19 36	16 11	9 38
32	2 23 2	4 2 55	5 14 26	6 25 24	8 5 19	9 20 44	11 17 29	1 10 40
36	23 54	3 49	15 22	26 18	6 14	21 53	18 47	11 42
40	24 47	4 44	16 18	27 11	7 9	23 2	20 5	12 44
44	25 40	5 38	17 14	28 4	8 4	24 11	21 23	13 45
48	26 33	6 32	18 10	28 57	8 59	25 22	22 41	14 46
52	27 26	7 27	19 5	6 29 50	9 55	26 32	23 58	15 46
56	28 19	8 22	20 1	7 0 43	10 51	27 43	25 15	16 47
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	2 29 12	4 9 16	5 20 56	7 1 36	8 11 47	9 28 54	11 26 32	1 17 47
4	3 0 5	10 11	21 52	2 29	12 43	10 0 6	27 48	18 46
8	0 58	11 6	22 47	3 22	13 39	1 18	11 29 5	19 46
12	1 50	12 1	23 43	4 15	14 36	2 30	0 0 21	20 45
16	2 43	12 56	24 38	5 8	15 32	3 43	1 37	21 44
20	3 36	13 51	25 33	6 0	16 29	4 56	2 52	22 42
24	4 29	14 46	26 29	6 53	17 27	6 10	4 7	23 40
28	5 22	15 41	27 24	7 46	18 24	7 23	5 22	24 38
32	3 6 15	4 16 36	5 28 19	7 8 39	8 19 22	10 8 38	0 6 36	1 25 36
36	7 7	17 31	5 29 14	9 31	20 20	9 53	7 50	26 33
40	8 0	18 27	6 0 9	10 24	21 18	11 8	9 4	27 31
44	8 53	19 22	1 4	11 17	22 16	12 23	10 17	28 28
48	9 46	20 18	1 59	12 10	23 15	13 39	11 30	1 29 24
52	10 38	21 12	2 54	13 2	24 14	14 55	12 42	2 0 21
56	11 31	22 8	3 49	13 55	25 14	16 11	13 54	1 17
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 12 24	4 23 4	6 4 44	7 14 48	8 26 13	10 17 27	0 15 6	2 2 3
4	13 17	23 59	5 38	15 41	27 13	18 44	16 17	3 9
8	14 10	24 55	6 33	16 34	28 14	20 2	17 28	4 5
12	15 3	25 50	7 28	17 27	8 29 14	21 19	18 38	5 1
16	15 56	26 46	8 22	18 19	9 0 15	22 36	19 48	5 56
20	16 49	27 42	9 16	19 12	1 16	23 55	20 58	6 51
24	17 42	28 38	10 11	20 5	2 18	25 12	22 7	7 46
28	18 35	4 29 33	11 5	20 58	3 20	26 31	23 16	8 41
32	3 19 28	5 0 29	6 12 0	7 21 51	9 4 22	10 27 49	0 24 24	2 9 36
36	20 22	1 25	12 54	22 45	5 25	10 29 7	25 32	10 30
40	21 15	2 21	13 47	23 38	6 29	11 0 26	26 39	11 25
44	22 9	3 17	14 41	24 31	7 32	1 45	27 47	12 19
48	23 2	4 13	15 35	25 25	8 36	3 4	28 53	13 13
52	23 56	5 8	16 29	26 19	9 40	4 23	0 29 59	14 7
56	24 50	6 4	17 23	27 12	10 45	5 42	1 1 5	15 1
60	3 25 43	5 7 0	6 18 17	7 28 6	9 11 50	11 7 0	1 2 10	2 15 54

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	0°—53'	0°—55'	0°—56'	0°—58'	1°—0'	1°—1'	1°—3'	1°—5'
विचलन 3 मिनट	40'	41'	42'	43'	45'	46'	47'	49'
विचलन 2 मिनट	27	28	28	29	30	31	32	33
विचलन 1 मिनट	13	14	14	15	15	15	16	16

लग्न सारिणी अक्षांश 22^0 0' उत्तर

(मंडालय 21^0 59' उत्तर, विलासपुर 22^0 5' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 16 8	3 25 52	5 7 0	6 18 8	2 27 52	9 11 36	11 7 0	1 2 24
4	17 2	26 45	7 56	19 2	28 46	12 42	8 19	3 29
8	17 55	27 39	8 51	19 55	7 29 40	13 48	9 39	4 33
12	18 49	28 33	9 47	20 49	8 0 33	14 54	10 58	5 38
16	19 42	3 29 26	10 43	21 42	1 27	16 1	12 17	6 42
20	20 35	4 0 20	11 38	22 35	2 22	17 8	13 36	7 45
24	21 28	1 14	12 34	23 28	3 16	18 16	14 55	8 48
28	22 21	2 8	13 29	24 22	4 10	19 24	16 14	9 51
32	2 23 14	4 3 2	5 14 25	6 25 15	8 5 5	9 20 32	11 17 33	1 10 54
36	24 7	3 56	15 21	26 8	6 0	21 41	18 51	11 56
40	25 0	4 50	16 16	27 1	6 55	22 51	20 10	12 58
44	25 53	5 45	17 12	27 54	7 50	24 0	21 28	13 59
48	26 46	6 39	18 7	28 47	8 45	25 11	22 46	15 0
52	27 39	7 33	19 2	6 29 40	9 41	26 21	24 3	16 1
56	28 32	8 28	19 58	7 0 33	10 36	27 32	25 21	17 1
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	2 29 24	4 9 22	5 20 53	7 1 25	8 11 32	9 28 44	11 26 38	1 18 1
4	3 0 17	10 17	21 48	2 18	12 28	9 29 56	27 55	19 1
8	1 10	11 12	22 44	3 11	13 25	10 1 8	11 29 12	20 0
12	2 2	12 6	23 39	4 4	14 21	2 21	0 0 28	20 59
16	2 55	13 1	24 34	4 56	15 18	3 34	1 44	21 58
20	3 48	13 56	25 29	5 49	16 15	4 47	3 0	22 57
24	4 40	14 51	26 24	6 42	17 12	6 1	4 15	23 55
28	5 33	15 46	27 19	7 34	18 10	7 15	5 30	24 53
32	3 6 26	4 16 41	5 28 14	7 8 27	8 19 7	10 8 30	0 6 45	1 25 50
36	7 18	17 36	5 29 9	9 20	20 5	9 45	7 59	26 48
40	8 11	18 31	6 0 4	10 12	21 3	11 0	9 13	27 45
44	9 4	19 26	0 59	11 5	22 2	12 16	10 26	28 42
48	9 56	20 21	1 54	11 58	23 1	13 32	11 40	1 29 39
52	10 49	21 16	2 48	12 50	24 0	14 48	12 52	2 0 35
56	11 42	22 12	3 43	13 43	24 59	16 5	14 5	1 32
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 12 35	4 23 7	6 4 38	7 14 36	8 25 59	10 17 22	0 15 16	2 2 28
4	13 27	24 2	5 32	15 28	26 59	18 39	16 28	3 24
8	14 20	24 58	6 27	16 21	27 59	19 57	17 39	4 19
12	15 13	25 53	7 21	17 14	8 29 0	21 14	18 49	5 15
16	16 6	26 48	8 15	18 7	9 0 1	22 32	20 0	6 10
20	16 59	27 44	9 10	19 0	1 2	23 50	21 9	7 5
24	17 52	28 39	10 4	19 53	2 4	25 9	22 19	8 0
28	18 45	4 29 35	10 58	20 46	3 6	26 27	23 28	8 55
32	3 19 35	5 0 31	6 11 52	7 21 39	9 4 9	10 27 46	0 24 36	2 9 50
36	20 32	1 26	12 46	22 32	5 12	10 29 5	25 44	10 44
40	21 25	2 22	13 40	23 25	6 15	11 0 24	26 52	11 38
44	22 18	3 17	14 34	24 18	7 18	1 43	27 59	12 33
48	23 11	4 13	15 27	25 11	8 22	3 2	0 29 6	13 27
52	24 5	5 9	16 21	26 5	9 27	4 21	1 0 12	14 20
56	24 58	6 4	17 15	26 58	10 31	5 41	1 18	15 14
60	3 25 52	5 7 0	6 18 8	7 27 52	9 11 36	11 7 0	1 2 24	2 16 8

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—6'	1°—8'	1°—9'	1°—11'	1°—13'	1°—15'	1°—17'	1°—19'
विचलन 3 मिनट	49'	51'	52'	53'	55'	56'	58'	59'
विचलन 2 मिनट	33	34	35	36	37	38	39	40
विचलन 1 मिनट	17	17	17	18	18	19	19	20

लग्न सारिणी कोलकाता अक्षांश 22° 35' उत्तर

(खड़कपुर 22° 30' उत्तर, इन्दौर 22° 43' उत्तर, जामनगर 22° 27' इत्यादि)

साम्पातिक काल (सै. ° ')

मिनट	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
0	2 16 24	3 26 2	5 7 0	6 17 58	7 27 36	9 11 20	11 7 0	1 2 40
4	17 18	26 55	7 55	18 52	28 30	12 26	8 20	3 45
8	18 11	27 48	8 50	19 45	7 29 24	13 32	9 40	4 49
12	19 4	28 42	9 46	20 39	8 0 17	14 39	10 59	5 54
16	19 58	3 29 35	10 42	21 32	1 11	15 46	12 19	6 58
20	20 51	4 0 29	11 37	22 25	2 6	16 53	13 38	8 1
24	21 44	1 23	12 32	23 18	3 0	18 1	14 58	9 5
28	22 37	2 17	13 28	24 11	3 54	19 9	16 17	10 8
32	2 23 29	4 3 11	5 14 23	6 25 3	8 4 49	9 20 18	11 17 36	1 11 10
36	24 22	4 4	15 19	25 56	5 44	21 27	18 56	12 12
40	25 15	4 58	16 14	26 49	6 38	22 37	20 15	13 14
44	26 8	5 53	17 9	27 42	7 33	23 47	21 33	14 16
48	27 1	6 47	28 4	28 35	8 29	24 58	22 52	15 17
52	27 54	7 41	18 59	6 29 28	9 24	26 8	24 9	16 17
56	28 46	8 35	19 55	7 0 21	10 20	27 19	25 27	17 18
	1 घं.	**4 घं.**	**7 घं.**	**10 घं.**	**13 घं.**	**16 घं.**	**19 घं.**	**22 घं.**
0	2 29 39	4 9 29	5 20 50	7 1 13	8 11 15	9 28 31	11 26 45	1 18 18
4	3 0 32	10 23	21 45	2 6	12 11	9 29 43	28 3	19 18
8	1 24	11 18	22 40	2 58	13 8	10 0 56	11 29 20	20 17
12	2 16	12 12	23 35	3 51	14 4	2 8	0 0 37	21 16
16	3 9	13 7	24 29	4 43	15 1	3 22	1 53	22 15
20	4 2	14 2	25 24	5 36	15 58	4 36	3 9	23 14
24	4 54	14 56	26 19	6 29	16 55	5 51	4 25	24 12
28	5 46	15 51	27 14	7 21	17 53	7 5	5 40	25 10
32	3 6 39	4 16 46	5 28 9	7 8 14	8 18 50	10 8 20	0 6 55	1 26 7
36	7 31	17 41	29 4	9 6	19 48	9 35	8 9	27 5
40	8 24	18 36	5 29 58	9 59	20 46	10 51	9 24	28 2
44	9 17	19 31	6 0 53	10 51	21 45	12 7	10 38	28 59
48	10 9	20 25	1 48	11 44	22 44	13 23	11 52	1 29 56
52	11 2	21 20	2 42	12 36	23 43	14 40	13 4	2 0 52
56	11 54	22 15	3 37	13 28	24 42	15 57	14 17	1 49
	2 घं.	**5 घं.**	**8 घं.**	**11 घं.**	**14 घं.**	**17 घं.**	**20 घं.**	**23 घं.**
0	3 12 47	4 23 10	6 4 31	7 14 21	8 25 42	10 17 15	0 15 29	2 2 45
4	13 39	24 5	5 25	15 14	26 42	18 33	16 41	3 40
8	14 32	25 1	6 19	16 6	27 43	19 51	17 52	4 36
12	15 25	25 56	7 13	16 59	28 43	21 8	19 2	5 31
16	16 18	26 51	8 7	17 52	8 29 44	22 27	20 13	6 27
20	17 11	27 46	9 2	18 45	9 0 45	23 45	21 23	7 22
24	18 04	28 41	9 56	19 38	1 47	15 4	22 33	8 16
28	18 57	4 29 37	10 49	20 31	2 50	26 24	23 42	9 11
32	3 19 49	5 0 32	6 11 43	7 21 23	9 3 52	10 27 43	0 24 51	2 10 6
36	20 42	1 28	12 37	22 16	4 55	10 29 2	25 59	11 0
40	21 35	2 23	13 31	23 9	5 59	11 0 22	27 7	11 54
44	22 28	3 18	14 25	24 2	7 2	1 41	28 14	12 48
48	23 21	4 14	15 18	24 56	8 6	3 1	0 29 21	13 42
52	24 15	5 10	16 12	25 49	9 11	4 20	1 0 28	14 36
56	25 8	6 5	17 6	26 42	10 15	5 40	1 34	15 30
60	3 26 2	5 7 0	6 17 58	7 27 36	9 11 20	11 7 0	1 2 40	2 16 24

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	0°—53'	0°—55'	0°—57'	0°—59'	1°—0'	1°—2'	1°—4'	1°—6'
विचलन 3 मिनट	40'	41'	43'	44'	45'	46'	48'	49'
विचलन 2 मिनट	27	28	29	30	30	31	32	33
विचलन 1 मिनट	13	14	14	15	15	15	16	16

लग्न सारिणी अक्षांश 23^{0} 0' उत्तर

(अहमदाबाद 23^{0} 2' उत्तर, जबलपुर 23^{0} 9' उत्तर, उज्जैन 23^{0} 11' इत्यादि)

साम्पातिक काल

मिनट	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 16 35	3 26 9	5 7 0	6 17 51	7 27 25	9 11 9	11 7 0	1 2 51
4	17 29	27 2	7 55	18 44	28 18	12 15	8 20	3 56
8	18 22	27 55	8 50	19 38	7 29 12	13 21	9 40	5 1
12	19 15	28 49	9 46	20 31	8 0 6	14 28	11 0	6 5
16	20 9	3 29 42	10 41	24 24	1 0	15 35	12 20	7 10
20	21 2	4 0 36	11.36	22 17	1 54	16 43	13 40	8 13
24	21 55	1 29	12 31	23 10	2 48	17 51	15 0	9 17
28	22 48	2 23	13 27	24 3	3 42	18 59	16 20	10 20
32	2 23 40	4 3 17	5 14 22	6 24 55	8 4 37	9 20 8	11 17 39	1 11 22
36	24 33	4 10	15 17	25 48	5 32	21 17	18 59	12 24
40	25 26	5 4	16 12	26 41	6 26	22 27	20 18	13 26
44	26 19	5 58	17 7	27 34	7 21	23 37	21 37	14 28
48	27 11	6 52	18 2	28 26	8 17	24 48	22 56	15 29
52	28 4	7 46	18 57	6 29 19	9 12	25 59	24 14	16 29
56	28 56	8 40	19 52	7 0 12	10 8	27 10	25 32	17 30
	1 घं.	**4 घं.**	**7 घं.**	**10 घं.**	**13 घं.**	**16 घं.**	**19 घं.**	**22 घं.**
0	2 29 49	4 9 34	5 20 47	7 1 4	8 11 3	9 28 22	11 26 50	1 18 30
4	3 0 42	10 28	21 42	1 57	11 59	9 29 34	28 8	19 30
8	1 34	11 23	22 37	2 49	12 56	10 0 47	11 29 26	20 29
12	2 26	12 17	23 32	3 42	13 52	2 0	0 0 43	21 28
16	3 19	13 11	24 26	4 34	14 49	3 14	1 59	22 27
20	4 11	14 6	25 21	5 27	15 46	4 28	3 16	23 26
24	5 4	15 0	26 16	6 19	16 43	5 43	4 32	24 24
28	5 56	15 55	27 11	7 11	17 40	6 57	5 47	25 22
32	3 6 49	4 16 49	5 28 5	7 8 4	8 18 38	10 8 13	0 7 2	1 26 20
36	7 41	17 44	29 0	8 56	19 36	9 28	8 17	27 17
40	8 33	18 39	5 29 54	9 49	20 34	10 44	9.32	28 14
44	9 26	19 34	6 0 49	10 41	21 33	12 1	10 46	1 29 11
48	10 18	20 28	1 43	11 34	22 32	13 17	12 0	2 0 8
52	11 11	21 23	2 37	12 26	23 31	14 34	13 13	1 4
56	12 3	22 18	3 32	13 18	24 30	15 52	14 26	2 1
	2 घं.	**5 घं.**	**8 घं.**	**11 घं.**	**14 घं.**	**17 घं.**	**20 घं.**	**23 घं.**
0	3 12 56	4 23 13	6 4 26	7 14 11	8 25 30	10 17 10	0 15 38	2 2 57
4	13 48	24 8	5 20	15 4	26 30	18 28	16 50	3 52
8	14 41	25 3	6 14	15 56	27 31	19 46	18 1	4 48
12	15 34	25 58	7 8	16 49	28 31	21 4	19 12	5 43
16	16 26	26 53	8 2	17 41	8 29 32	22 23	20 23	6 39
20	17 19	27 48	8 56	18 34	9 0 33	23 42	21 33	7 34
24	18 12	28 43	9 50	19 27	1 35	25 1	22 43	8 28
28	19 5	4 29 38	10 43	20 20	2 38	26 21	23 52	9 23
32	3 19 57	5 0 33	6 11 37	7 21 12	9 3 40	10 27 40	0 25 1	2 10 18
36	20 50	1 29	12 31	22 5	4 43	10 29 0	26 9	11 12
40	21 43	2 24	13 24	22 58	5 47	11 0 20	27 17	12 6
44	22 36	3 19	14 18	23 51	6 51	1 40	28 25	13 0
48	23 29	4 14	15 11	24 45	7 55	3 0	0 29 32	13 54
52	24 22	5 10	16 5	25 38	8 59	4 20	1 0 39	14 48
56	25 16	6 5	16 58	26 31	10 4	5 40	1 45	15 42
60	3 26 9	5 7 0	6 17 51	7 27 25	9 11 9	11 7 0	1 2 51	2 16 35

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—7'	1°—9'	1°—10'	1°—12'	1°—14'	1°—16'	1°—18'	1°—20'
विचलन 3 मिनट	50'	52'	52'	54'	55'	57'	58'	60'
विचलन 2 मिनट	34	35	35	36	37	38	39	40
विचलन 1 मिनट	17	17	18	18	19	19	20	20

लग्न सारिणी अक्षांश 25^{0} 23' उत्तर

(वाराणसी 25^{0} 19' उत्तर, हैदराबाद (पाक.) 25^{0} 22' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 17 42	3 26 50	5 7 0	6 17 10	7 26 18	9 10 2	11 7 0	1 3 58
4	18 35	27 42	7 54	18 3	27 11	11 9	8 22	5 4
8	19 28	28 35	8 49	18 55	28 5	12 16	9 45	6 9
12	20 21	3 29 27	9 43	19 48	28 58	13 23	11 7	7 14
16	21 14	4 0 20	10 37	20 40	7 29 52	14 30	12 30	8 19
20	22 6	1 13	11 31	21 32	8 0 46	15 38	13 52	9 23
24	22 59	2 6	12 25	22 25	1 40	16 47	15 13	10 27
28	23 52	2 59	13 20	23 17	2 34	17 56	16 35	11 30
32	2 24 44	4 3 52	5 14 14	6 24 9	8 3 28	9 19 6	11 17 57	1 12 33
36	25 36	4 45	15 8	25 1	4 22	20 16	19 18	13 35
40	26 28	5 38	16 2	25 53	5 17	21 27	20 40	14 37
44	27 21	6 30	16 56	26 45	6 11	22 38	22 1	15 39
48	28 13	7 23	17 50	27 37	7 6	23 50	23 21	16 40
52	29 5	8 17	18 44	28 29	8 1	25 2	24 42	17 41
56	2 29 57	9 10	19 38	6 29 21	8 57	26 15	26 2	18 42
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 0 49	4 10 3	5 20 32	7 0 13	8 9 52	9 27 28	11 27 22	1 19 42
4	1 41	10 56	21 26	1 5	10 48	28 41	11 28 42	20 42
8	2 33	11 50	22 20	1 57	11 44	9 29 55	0 0 1	21 41
12	3 25	12 43	23 14	2 49	12 41	10 1 9	1 20	22 40
16	4 17	13 36	24 8	3 40	13 37	2 24	2 38	23 39
20	5 8	14 30	25 2	4 32	14 34	3 40	3 56	24 38
24	6 0	15 24	25 55	5 24	15 31	4 56	5 14	25 36
28	6 52	16 18	26 49	6 16	16 29	6 12	6 31	26 34
32	3 7 44	4 17 11	5 27 42	7 7 8	8 17 26	10 7 29	0 7 48	1 27 31
36	8 36	18 5	28 36	8 0	18 24	8 46	9 4	28 29
40	9 28	18 58	5 29 30	8 52	19 22	10 4	10 20	1 29 26
44	10 20	19 52	6 0 24	9 43	20 21	11 22	11 36	2 0 23
48	11 11	20 46	1 17	10 35	21 20	12 40	12 51	1 19
52	12 3	21 40	2 10	11 27	22 19	13 59	14 5	2 16
56	12 55	22 34	3 4	12 19	23 18	15 18	15 19	3 12
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 13 47	4 23 28	6 3 57	7 13 11	8 24 18	10 16 38	0 16 32	2 4 8
4	14 39	24 22	4 50	14 3	25 18	17 58	17 45	5 3
8	15 31	25 16	5 43	14 55	26 19	19 18	18 58	5 59
12	16 23	26 10	6 37	15 47	27 20	20 39	20 10	6 54
16	17 15	27 4	7 30	16 39	28 21	21 59	21 22	7 49
20	18 7	27 58	8 22	17 32	8 29 23	23 20	22 33	8 43
24	18 59	28 52	9 15	18 24	9 0 25	24 42	23 44	9 38
28	19 51	4 29 46	10 8	19 16	1 27	26 3	24 54	10 32
32	3 20 43	5 0 40	6 11 1	7 20 8	9 2 30	10 27 25	0 26 4	2 11 26
36	21 35	1 35	11 54	21 1	3 33	10 28 47	27 13	12 20
40	22 28	2 29	12 47	21 54	4 37	11 0 9	28 22	13 14
44	23 20	3 23	13 40	22 46	5 41	1 31	0 29 30	14 8
48	24 12	4 17	14 33	23 39	6 46	2 53	1 0 37	15 2
52	25 5	5 11	15 25	24 32	7 51	4 15	1 44	15 55
56	25 57	6 6	16 18	25 25	8 56	5 38	2 51	16 49
60	3 26 50	5 7 0	6 17 10	7 26 18	9 10 2	11 7 0	1 3 58	2 17 42

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	: 0°—52'	0°—54'	0°—56'	0°—58'	1°—0'	1°—2'	1°—4'	1°—6'
विचलन 3 मिनट	39'	40'	42'	43'	45'	46'	48'	49'
विचलन 2 मिनट	26	27	28	29	30	31	32	33
विचलन 1 मिनट	13	14	14	15	15	16	16	17

लग्न सारिणी अक्षांश 26^0 0' उत्तर

(गुवाहाटी 26^0 10' उत्तर, दरभंगा 26^0 10' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 17 59	3 27 0	5 7 0	6 17 0	7 26 1	9 9 44	11 7 0	1 4 16
4	18 52	27 52	7 54	17 52	26 54	10 51	8 23	5 22
8	19 45	28 45	8 48	18 44	27 47	11 58	9 46	6 27
12	20 38	3 29 37	9 42	19 36	28 41	13 5	11 9	7 32
16	21 30	4 0 30	10 36	20 29	7 29 34	14 13	12 32	8 37
20	22 23	1 22	11 30	21 21	8 0 28	15 21	13 54	9 41
24	23 15	2 15	12 24	22 13	1 22	16 30	15 17	10 45
28	24 8	3 7	13 18	23 5	2 16	17 40	16 39	11 48
32	2 25 0	4 4 0	5 14 12	6 23 57	8 3 10	9 18 50	11 18 1	1 12 51
36	25 52	4 53	15 6	24 49	4 4	20 0	19 23	13 54
40	26 44	5 46	15 59	25 40	4 59	21 11	20 45	14 56
44	27 37	6 38	16 53	26 32	5 53	22 22	22 7	15 58
48	28 29	7 31	17 47	27 24	6 48	23 34	23 28	16 59
52	2 29 21	8 24	18 41	28 16	7 43	24 47	24 49	18 0
56	3 0 12	9 17	19 35	29 8	8 39	26 0	26 10	19 0
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 1 4	4 10 10	5 20 28	6 29 59	8 9 34	9 27 13	11 27 30	1 20 1
4	1 56	11 3	21 22	7 0 51	10 30	28 27	11 28 50	21 0
8	2 48	11 57	22 16	1 43	11 26	9 29 41	0 0 10	22 0
12	3 40	12 50	23 9	2 35	12 22	10 0 56	1 30	22 59
16	4 32	13 43	24 3	3 26	13 19	2 11	2 48	23 58
20	5 23	14 36	24 57	4 18	14 15	3 27	4 7	24 56
24	6 15	15 30	25 50	5 10	15 13	4 43	5 25	25 55
28	7 7	16 23	26 44	6 1	16 10	6 0	6 43	26 53
32	3 7 59	4 17 16	5 27 37	7 6 53	8 17 7	10 7 17	0 8 0	1 27 50
36	8 50	18 10	28 30	7 45	18 5	8 35	9 17	28 47
40	9 42	19 3	5 29 24	8 37	19 4	9 53	10 33	1 29 44
44	10 34	19 57	6 0 17	9 28	20 2	11 12	11 49	2 0 41
48	11 25	20 51	1 10	10 20	21 1	12 30	13 4	1 38
52	12 17	21 44	2 3	11 12	22 0	13 50	14 19	2 34
56	13 9	22 38	2 57	12 4	23 0	15 10	15 33	3 30
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 14 1	4 23 32	6 3 50	7 12 56	8 23 59	10 16 30	0 16 47	2 4 26
4	14 52	24 25	4 43	13 48	25 0	17 50	18 0	5 21
8	15 44	25 19	5 36	14 39	26 0	19 11	19 13	6 17
12	16 36	26 13	6 29	15 31	27 1	20 32	20 26	7 12
16	17 28	27 7	7 22	16 23	28 2	21 53	21 38	8 7
20	18 20	28 1	8 14	17 16	8 29 4	23 15	22 49	9 1
24	19 11	28 54	9 7	18 8	9 0 6	24 37	24 0	9 56
28	20 3	4 29 48	10 0	19 0	1 9	25 59	25 10	10 50
32	3 20 55	5 0 42	6 10 53	7 19 52	9 2 12	10 27 21	0 26 20	2 11 44
36	21 47	1 36	11 45	20 45	3 15	10 28 43	27 30	12 38
40	22 39	2 30	12 38	21 37	4 19	11 0 6	28 39	13 32
44	23 31	3 24	13 30	22 30	5 23	1 28	0 29 47	14 26
48	24 24	4 18	14 23	23 22	6 28	2 51	1 0 55	15 19
52	25 16	5 12	15 15	24 15	7 33	4 14	2 2	16 13
56	26 8	6 6	16 8	25 8	8 38	5 37	3 9	17 6
60	3 27 0	5 7 0	6 17 0	7 26 1	9 9 44	11 7 0	1 4 16	2 17 59

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—8'	1°—10'	1°—12'	1°—14'	1°—16'	1°—18'	1°—20'	1°—23'
विचलन 3 मिनट	51'	52'	54'	55'	57'	58'	1°—0'	1—2'
विचलन 2 मिनट	34	35	36	37	38	39	40	42
विचलन 1 मिनट	17	18	18	19	19	20	20	21

लग्न सारिणी अक्षांश 27^0 30' उत्तर

(मथुरा 27^0 28' उत्तर, डिब्रूगढ़ 27^0 29' उत्तर, काठमांडू 27^0 42' इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	से. ° '	से. ° '	से. ° '	से. ° '	से. ° '	से. ° '	से. ° '	से. ° '
0	2 18 43	3 27 26	5 7 0	6 16 34	7 25 17	9 8 58	11 7 0	1 5 1
4	19 35	28 18	7 53	17 25	26 10	10 5	8 24	6 8
8	20 27	3 29 10	8 46	18 17	27 3	11 13	9 49	7 14
12	21 20	4 0 2	9 40	19 9	27 56	12 21	11 14	8 19
16	22 12	0 54	10 33	20 1	28 50	13 29	12 38	9 24
20	23 5	1 46	11 27	20 53	7 29 43	14 38	14 2	10 28
24	23 57	2 38	12 20	21 44	8 0 37	15 47	15 26	11 32
28	24 49	3 30	13 13	22 35	1 31	16 57	16 50	12 35
32	2 25 41	4 4 22	5 14 6	6 23 27	8 2 25	9 18 8	11 18 13	1 13 38
36	26 33	5 14	15 0	24 18	3 19	19 19	19 37	14 41
40	27 25	6 6	15 53	25 10	4 13	20 30	21 0	15 43
44	28 17	6 59	16 46	26 1	5 8	21 42	22 23	16 45
48	2 29 8	7 51	17 39	26 52	6 3	22 54	23 46	17 46
52	3 0 0	8 43	18 33	27 44	6 58	24 7	25 8	18 47
56	0 51	9 36	19 26	28 35	7 53	25 21	26 30	19 48
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 1 43	4 10 28	5 20 19	6 29 27	8 8 48	9 26 35	11 27 52	1 20 48
4	2 35	11 21	21 13	7 0 18	9 43	27 50	11 29 13	21 48
8	3 26	12 14	22 6	1 10	10 39	9 29 5	0 0 34	22 47
12	4 17	13 6	22 58	2 1	11 35	10 0 21	1 55	23 47
16	5 8	13 58	23 51	2 52	12 32	1 37	3 15	24 46
20	6 0	14 51	24 44	3 43	13 28	2 54	4 35	25 44
24	6 51	15 44	25 37	4 34	14 25	4 11	5 54	26 42
28	7 43	16 37	26 30	5 26	15 22	5 29	7 12	27 40
32	3 8 34	4 17 30	5 27 23	7 6 17	8 16 20	10 6 48	0 8 31	1 28 38
36	9 26	18 23	28 16	7 9	17 18	8 6	9 49	1 29 35
40	10 17	19 16	5 29 9	8 0	18 16	9 25	11 6	2 0 32
44	11 8	20 9	6 0 2	8 52	19 14	10 45	12 23	1 28
48	11 59	21 2	0 54	9 43	20 13	12 5	13 39	2 25
52	12 50	21 54	1 46	10 34	21 13	13 26	14 55	3 21
56	13 42	22 47	2 39	11 25	22 12	14 47	16 10	4 17
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 14 33	4 23 41	6 3 32	7 12 17	8 23 12	10 16 8	0 17 25	2 5 12
4	15 25	24 34	4 24	13 9	24 12	17 30	18 39	6 7
8	16 16	25 27	5 17	14 0	25 13	18 52	19 53	7 2
12	17 8	26 20	6 9	14 52	26 14	20 14	21 6	7 57
16	17 59	27 13	7 1	15 43	27 15	21 37	22 18	8 52
20	18 50	28 7	7 54	16 35	28 17	23 0	23 30	9 47
24	19 42	29 0	8 46	17 27	8 29 19	24 23	24 41	10 41
28	20 33	4 29 54	9 38	18 19	9 0 22	25 47	25 52	11 35
32	3 21 25	5 0 47	6 10 30	7 19 11	9 1 25	10 27 10	0 27 3	2 12 29
36	22 16	1 40	11 22	20 3	2 28	28 34	28 13	13 23
40	23 7	2 33	12 14	20 55	3 32	10 29 58	0 29 22	14 17
44	23 59	3 27	13 6	21 48	4 36	11 1 22	1 0 31	15 10
48	24 51	4 20	13 58	22 40	5 41	2 46	1 39	16 4
52	25 43	5 14	14 50	23 33	6 46	4 11	2 47	16 57
56	26 35	6 7	15 42	24 25	7 52	5 36	3 54	17 50
60	3 27 26	5 7 0	6 16 34	7 25 17	9 8 58	11 7 0	1 5 1	2 18 43

यथानुरूप करने वाला भाग ।

विचलन 4 मिनट :	0°—51'	0°—53'	0°—56'	0°—58'	1°—0'	1°—2'	1°—4'	1°—6'
विचलन 3 मिनट	38'	40'	42'	43'	45'	46'	48'	49'
विचलन 2 मिनट	26	27	28	29	30	31	32	33
विचलन 1 मिनट	13	13	14	15	15	16	16	17

लग्न सारिणी अक्षांश 28^0 0' उत्तर

(अलीगढ़ 27^0 54' उत्तर, बीकानेर 28^0 1' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 18 57	3 27 35	5 7 0	6 16 25	7 25 3	9 8 43	11 7 0	1 5 17
4	19 49	28 27	7 53	17 17	25 56	9 50	8 25	6 23
8	20 42	3 29 18	8 46	18 8	26 49	10 58	9 50	7 29
12	21 34	4 0 10	9 39	19 0	27 42	12 6	11 15	8 34
16	22 27	1 2	10 33	19 51	28 35	13 14	12 40	9 39
20	23 19	1 54	11 26	20 43	7 29 28	14 23	14 5	10 44
24	24 11	2 45	12 19	21 34	8 0 22	15 33	15 29	11 48
28	25 3	3 37	13 12	22 26	1 16	16 43	16 53	12 51
32	2 25 55	4 4 29	5 14 5	6 23 17	8 2 9	9 17 53	11 18 18	1 13 55
36	26 47	5 21	14 58	24 8	3 3	19 4	19 42	14 57
40	27 38	6 13	15 51	24 59	3 58	20 16	21 5	15 59
44	28 30	7 5	16 44	25 51	4 52	21 28	22 28	17 1
48	2 29 22	7 58	17 37	26 42	5 47	22 41	23 52	18 3
52	3 0 13	8 50	18 30	27 33	6 42	23 54	25 15	19 4
56	1 4	9 42	19 23	28 24	7 37	25 8	26 37	20 4
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 1 56	4 10 34	5 20 16	6 29 16	8 8 32	9 26 23	11 27 59	1 21 4
4	2 47	11 27	21 9	7 0 7	9 27	27 38	11 29 21	22 4
8	3 39	12 19	22 2	0 58	10 23	9 28 53	0 0 43	23 4
12	4 30	13 12	22 55	1 49	11 19	10 0 9	2 3	24 3
16	5 21	14 4	23 47	2 40	12 16	1 26	3 24	25 2
20	6 13	14 57	24 40	3 31	13 12	2 43	4 44	26 0
24	7 4	15 49	25 33	4 23	14 9	4 0	6 4	26 58
28	7 55	16 42	26 26	5 14	15 6	5 19	7 23	27 56
32	3 8 46	4 17 34	5 27 18	7 6 5	8 16 4	10 6 37	0 8 41	1 28 54
36	9 37	18 27	28 11	6 56	17 2	7 56	10 0	1 29 51
40	10 28	19 20	29 3	7 47	18 0	9 16	11 17	2 0 48
44	11 20	20 13	5 29 56	8 39	18 58	10 36	12 34	1 44
48	12 11	21 5	6 0 48	9 30	19 57	11 57	13 51	2 41
52	13 2	21 58	1 41	10 21	20 56	13 17	15 7	3 37
56	13 53	22 51	2 33	11 13	21 56	14 39	16 22	4 33
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 14 44	4 23 44	6 3 26	7 12 4	8 22 56	10 16 1	0 17 37	2 5 28
4	15 36	24 37	4 18	12 56	23 56	17 23	18 52	6 23
8	16 27	25 30	5 10	13 47	24 56	18 45	20 6	7 18
12	17 18	26 23	6 2	14 38	25 57	20 8	21 19	8 13
16	18 9	27 16	6 55	15 30	26 59	21 32	22 32	9 8
20	19 1	28 9	7 47	16 22	28 1	22 55	23 44	10 2
24	19 52	29 2	8 39	17 13	8 29 3	24 18	24 56	10 57
28	20 43	4 29 55	9 31	18 5	9 0 5	25 42	26 7	11 51
32	3 21 34	5 0 48	6 10 23	7 18 57	9 1 9	10 27 7	0 27 17	2 12 44
36	22 26	1 41	11 15	19 49	2 12	28 31	28 27	13 38
40	23 17	2 34	12 6	20 41	3 16	10 29 55	0 29 37	14 32
44	24 9	3 27	12 58	21 33	4 21	11 1 20	1 0 46	15 25
48	25 0	4 21	13 50	22 26	5 26	2 45	1 54	16 18
52	25 52	5 14	14 42	23 18	6 31	4 10	3 2	17 11
56	26 43	6 7	15 33	24 11	7 37	5 35	4 10	18 4
60	3 27 35	5 7 0	6 16 25	7 25 3	9 8 43	11 7 0	1 5 17	2 18 57

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—8'	1°—10'	1°—12'	1°—15'	1°—17'	1°—20'	1°—22'	1°—25'
विचलन 3 मिनट	51'	52'	54'	56'	58'	1 — 0'	1 — 1'	1 — 4'
विचलन 2 मिनट	34	35	36	38	39	40	41	43
विचलन 1 मिनट	17	18	18	19	19	20	21	21

लग्न सारिणी अक्षांश 30^0 0' उत्तर

(हरिद्वार 29^0 56' उत्तर, क्वेटा (पाक.) 30^0 12' उत्तर, देहरादून 30^0 19' इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै.
0	2 19 56	3 28 10	5 7 0	6 15 50	7 24 4	9 7 39	11 7 0	1 6 21
4	20 49	29 1	7 52	16 41	24 56	8 46	8 27	7 28
8	21 41	3 29 52	8 45	17 32	25 49	9 54	9 54	8 34
12	22 33	4 0 43	9 37	18 23	26 41	11 2	11 22	9 40
16	23 24	1 34	10 29	19 13	27 34	12 11	12 49	10 45
20	24 16	2 25	11 21	20 4	28 27	13 21	14 16	11 50
24	25 8	3 16	12 14	20 55	7 29 20	14 31	15 42	12 54
28	25 59	4 8	13 6	21 46	8 0 13	15 42	17 9	13 58
32	2 26 51	4 4 59	5 13 58	6 22 36	8 1 7	9 16 53	11 18 35	1 15 1
36	27 42	5 50	14 50	23 27	2 1	18 5	20 1	16 4
40	28 33	6 42	15 43	24 18	2 55	19 17	21 27	17 6
44	2 29 25	7 33	16 35	25 8	3 49	20 30	22 53	18 8
48	3 0 16	8 22	17 27	25 59	4 43	21 44	24 18	19 10
52	1 7	9 16	18 19	26 50	5 37	22 58	25 43	20 11
56	1 58	10 7	19 11	27 40	6 32	24 13	27 7	21 11
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 2 49	4 10 59	5 20 4	6 28 31	8 7 27	9 25 29	11 28 31	1 22 11
4	3 40	11 50	20 56	6 29 22	8 23	26 45	11 29 55	23 11
8	4 31	12 42	21 48	7 0 12	9 18	28 2	0 1 18	24 11
12	5 21	13 34	22 40	1 3	10 14	9 29 19	2 41	25 10
16	6 12	14 25	23 32	1 53	11 10	10 0 37	4 3	26 8
20	7 3	15 17	24 24	2 44	12 7	1 55	5 25	27 7
24	7 53	16 9	25 15	3 35	13 3	3 14	6 46	28 5
28	8 44	17 1	26 7	4 25	14 0	4 34	8 6	1 29 2
32	3 9 35	4 17 53	5 26 59	7 5 16	8 14 58	10 5 54	0 9 26	2 0 0
36	10 25	18 45	27 51	6 7	15 55	7 14	10 46	0 57
40	11 16	19 36	28 43	6 57	16 53	8 35	12 5	1 53
44	12 7	20 28	5 29 35	7 48	17 52	9 57	13 23	2 50
48	12 57	21 20	6 0 26	8 39	18 50	11 19	14 41	3 46
52	13 48	22 12	1 18	9 29	19 49	12 42	15 58	4 42
56	14 38	23 4	2 10	10 20	20 49	14 5	17 15	5 37
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 15 29	4 23 57	6 3 1	7 11 11	8 21 49	10 15 29	0 18 31	2 6 33
4	16 20	24 49	3 53	12 2	22 49	16 53	19 47	7 28
8	17 10	25 41	4 44	12 53	23 49	18 17	21 2	8 23
12	18 1	26 33	5 36	13 44	24 50	19 42	22 16	9 17
16	18 52	27 25	6 27	14 35	25 52	21 7	23 30	10 11
20	19 42	28 17	7 18	15 27	26 54	22 33	24 43	11 5
24	20 33	4 29 10	8 10	16 18	27 56	23 59	25 55	11 59
28	21 24	5 0 2	9 1	17 9	8 28 59	25 25	27 7	12 53
32	3 22 14	5 0 54	6 9 52	7 18 1	9 0 2	10 26 51	0 28 18	2 13 47
36	23 5	1 46	10 44	18 52	1 6	28 18	0 29 29	14 40
40	23 56	2 39	11 35	19 44	2 10	10 29 44	1 0 39	15 33
44	24 47	3 31	12 26	20 36	3 15	11 1 11	1 49	16 26
48	25 37	4 23	13 17	21 27	4 20	2 38	2 58	17 19
52	26 28	5 15	14 8	22 19	5 26	4 6	4 6	18 11
56	27 19	6 8	14 59	23 11	6 32	5 33	5 14	19 4
60	3 28 10	5 7 0	6 15 50	7 24 4	9 7 39	11 7 0	1 6 21	2 19 56

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°—50'	0°—53'	0°—55'	0°—58'	1°—0'	1°—3'	1°—5'	1°—8'
विचलन 3 मिनट	37'	40'	41'	43'	45'	47'	49'	51'
विचलन 2 मिनट	25	27	28	29	30	32	33	34
विचलन 1 मिनट	13	13	14	15	15	16	16	17

लग्न सारिणी अक्षांश 31^0 0' उत्तर

(शिमला 31^0 6' उत्तर, लुधियाना और फिरोजपुर 30^0 55' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 20 27	3 28 28	5 7 0	6 15 32	7 23 33	9 7 5	11 7 0	1 6 55
4	21 19	3 29 18	7 52	16 23	24 25	8 13	8 28	8 2
8	22 11	4 0 9	8 44	17 13	25 18	9 21	9 57	9 8
12	23 3	1 0	9 36	18 4	26 10	10 29	11 25	10 14
16	23 54	1 51	10 28	18 54	27 3	11 38	12 53	11 19
20	24 46	2 41	11 19	19 45	27 55	12 48	14 22	12 24
24	25 37	3 32	12 11	20 35	28 48	13 59	15 50	13 29
28	26 28	4 23	13 3	21 26	7 29 41	15 10	17 17	14 33
32	2 27 19	4 5 14	5 13 55	6 22 16	8 0 35	9 16 21	11 18 45	1 15 36
36	28 11	6 5	14 47	23 6	1 28	17 33	20 12	16 39
40	29 2	6 56	15 38	23 57	2 22	18 46	21 39	17 41
44	2 29 52	7 47	16 30	24 47	3 16	20 0	23 5	18 43
48	3 0 43	8 38	17 22	25 37	4 10	21 14	24 32	19 44
52	1 34	9 29	18 14	26 28	5 5	22 29	25 58	20 46
56	2 25	10 20	19 5	27 18	5 59	23 44	27 23	21 46
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 3 16	4 11 11	5 19 57	6 28 8	8 6 54	9 25 0	11 28 48	1 22 46
4	4 6	12 2	20 49	28 59	7 49	26 17	0 0 13	23 46
8	4 57	12 54	21 41	6 29 49	8 45	27 34	1 37	24 45
12	5 47	13 45	22 32	7 0 39	9 40	9 28 52	3 0	25 44
16	6 38	14 36	23 24	1 30	10 36	10 0 11	4 24	26 43
20	7 28	15 27	24 15	2 20	11 33	1 30	5 46	27 41
24	8 19	16 19	25 7	3 10	12 29	2 49	7 8	28 39
28	9 9	17 10	25 58	4 0	13 26	4 10	8 29	1 29 37
32	3 9 59	4 18 2	5 26 50	7 4 51	8 14 23	10 5 31	0 9 50	2 0 34
36	10 50	18 53	27 41	5 41	15 21	6 52	11 11	1 31
40	11 40	19 45	28 33	6 32	16 19	8 14	12 30	2 27
44	12 30	20 36	5 29 24	7 22	17 17	9 37	13 49	3 24
48	13 21	21 28	6 0 15	8 13	18 16	11 0	15 8	4 20
52	14 11	22 19	1 6	9 3	19 15	12 23	16 26	5 15
56	15 1	23 11	1 58	9 54	20 14	13 47	17 43	6 11
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 15 52	4 24 3	6 2 49	7 10 44	8 21 14	10 15 12	0 19 0	2 7 6
4	16 42	24 55	3 40	11 35	22 14	16 37	20 16	8 1
8	17 32	25 46	4 31	12 26	23 14	18 2	21 31	8 55
12	18 23	26 38	5 22	13 17	24 16	19 28	22 46	9 50
16	19 13	27 30	6 13	14 8	25 17	20 55	24 0	10 44
20	20 3	28 21	7 4	14 58	26 19	22 21	25 14	11 38
24	20 54	4 29 13	7 55	15 49	27 21	23 48	26 27	12 32
28	21 44	5 0 5	8 46	16 41	28 24	25 15	27 39	13 25
32	3 22 34	5 0 57	6 9 37	7 17 32	8 29 27	10 26 43	0 28 50	2 14 19
36	23 25	1 49	10 28	18 23	9 0 31	28 10	1 0 1	15 12
40	24 15	2 41	11 19	19 14	1 36	10 29 38	1 12	16 5
44	25 6	3 32	12 9	20 6	2 40	11 1 6	2 22	16 57
48	25 56	4 24	13 0	20 57	3 46	2 35	3 31	17 50
52	26 47	5 16	13 51	21 49	4 52	4 3	4 40	18 42
56	27 37	6 8	14 42	22 41	5 58	5 32	5 48	19 35
60	3 28 28	5 7 0	6 15 32	7 23 33	9 7 5	11 7 0	1 6 55	2 20 27

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—10'	1°—13'	1°—15'	1°—18'	1°—20'	1°—23'	1°—25'	1°—28'
विचलन 3 मिनट	52'	55'	56'	58'	1 — 0'	1 — 2'	1 — 4'	1 — 6'
विचलन 2 मिनट	35	37	38	39	40	42	43	44
विचलन 1 मिनट	18	18	19	20	20	21	21	22

लग्न सारिणी अक्षांश 33^0 0' उत्तर

(जम्मू 32^0 43' उत्तर, बनु 30^0 0' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 21 29	3 29 4	5 7 0	6 14 56	7 22 31	9 5 54	11 7 0	1 8 6
4	22 21	3 29 54	7 51	15 46	23 22	7 2	8 31	9 13
8	23 12	4 0 44	8 42	16 36	24 14	8 10	10 2	10 20
12	24 4	1 34	9 33	17 26	25 6	9 19	11 33	11 26
16	24 55	2 24	10 24	18 16	25 58	10 29	13 4	12 32
20	25 46	3 14	11 15	19 5	26 51	11 39	14 34	13 37
24	26 37	4 4	12 6	19 55	27 43	12 50	16 5	14 41
28	27 27	4 54	12 57	20 45	28 36	14 2	17 35	15 45
32	2 28 18	4 5 44	5 13 48	6 21 35	7 29 29	9 15 14	11 19 5	1 16 48
36	29 9	6 34	14 39	22 24	8 0 22	16 27	20 35	17 51
40	2 29 59	7 24	15 30	23 14	1 15	17 41	22 4	18 54
44	3 0 50	8 15	16 21	24 4	2 9	18 55	23 33	19 56
48	1 40	9 5	17 12	24 53	3 3	20 10	25 2	20 57
52	2 30	9 55	18 3	25 43	3 57	21 26	26 30	21 58
56	3 20	10 46	18 54	26 33	4 51	22 42	27 57	22 59
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 4 10	4 11 36	5 19 45	6 27 22	8 5 45	9 23 59	11 29 24	1 23 59
4	5 1	12 26	20 35	28 12	6 40	25 17	0 0 51	24 58
8	5 51	13 17	21 26	29 2	7 35	26 36	2 17	25 58
12	6 41	14 7	22 17	6 29 51	8 31	27 55	3 43	26 56
16	7 30	14 58	23 8	7 0 41	9 26	9 29 15	5 8	27 55
20	8 20	15 48	23 58	1 31	10 22	10 0 35	6 32	28 53
24	9 10	16 39	24 49	2 20	11 18	1 56	7 56	1 29 51
28	10 0	17 29	25 40	3 10	12 15	3 18	9 19	2 0 48
32	3 10 50	4 18 20	5 26 30	7 4 0	8 13 12	10 4 41	0 10 42	2 1 45
36	11 40	19 11	27 21	4 50	14 9	6 4	12 4	2 42
40	12 29	20 2	28 12	5 40	15 7	7 28	13 25	3 38
44	13 19	20 52	29 2	6 30	16 5	8 52	14 45	4 34
48	14 9	21 43	5 29 53	7 19	17 3	10 17	16 5	5 30
52	14 58	22 34	6 0 43	8 9	18 2	11 43	17 24	6 25
56	15 48	23 25	1 34	8 59	19 2	13 9	18 42	7 20
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 16 38	4 24 15	6 2 24	7 9 50	8 20 1	10 14 36	0 20 0	2 8 15
4	17 27	25 6	3 14	10 40	21 1	16 3	21 17	9 9
8	18 17	25 57	4 5	11 30	22 2	17 30	22 34	10 3
12	19 7	26 48	4 55	12 20	23 3	18 58	23 50	10 57
16	19 56	27 39	5 45	13 10	24 4	20 27	25 5	11 51
20	20 46	28 30	6 36	14 1	25 6	21 56	26 19	12 45
24	21 36	4 29 21	7 26	14 51	26 9	23 25	27 33	13 38
28	22 25	5 0 12	8 16	15 42	27 12	24 55	28 46	14 31
32	3 23 15	5 1 3	6 9 6	7 16 33	8 28 18	10 26 25	0 29 58	2 15 24
36	24 5	1 54	9 56	17 23	8 29 19	27 55	1 1 10	16 17
40	24 55	2 45	10 46	18 14	9 0 23	10 29 26	2 21	17 9
44	25 44	3 36	11 36	19 5	1 28	11 0 56	3 31	18 2
48	26 34	4 27	12 26	19 56	2 34	2 27	4 41	18 54
52	27 24	5 18	13 16	20 48	3 40	3 58	5 50	19 46
56	28 14	6 9	14 6	21 39	4 47	5 29	6 58	20 38
60	3 29 4	5 7 0	6 14 56	7 22 31	9 5 54	11 7 0	1 8 6	2 21 29

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°—49'	0°—52'	0°—55'	0°—58'	1°—1'	1°—4'	1°—7'	1°—10'
विचलन 3 मिनट	37'	39'	41'	43'	46'	48'	50'	52'
विचलन 2 मिनट	25	26	28	29	31	32	34	35
विचलन 1 मिनट	12	13	14	15	15	16	17	18

लग्न सारिणी अक्षांश 34^0 0' उत्तर

(पेशावर 34^0 01' उत्तर, श्रीनगर 34^0 06' उत्तर इत्यादि)

अंश	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 22 2	3 29 22	5 7 0	6 14 38	7 21 58	9 5 16	11 7 0	1 8 44
4	22 53	4 0 12	7 51	15 27	22 50	6 24	8 32	9 51
8	23 44	1 1	8 41	16 17	23 41	7 33	10 5	10 58
12	24 35	1 51	9 32	17 6	24 33	8 42	11 37	12 4
16	25 26	2 40	10 22	17 56	25 25	9 52	13 9	13 10
20	26 17	3 30	11 13	18 45	26 17	11 3	14 41	14 15
24	27 7	4 20	12 4	19 35	27 10	12 14	16 13	15 19
28	27 58	5 9	12 54	20 24	28 2	13 26	17 45	16 23
32	2 28 48	4 5 59	5 13 45	6 21 14	7 28 55	9 14 39	11 19 16	1 17 27
36	2 29 38	6 49	14 35	22 3	7 29 48	15 52	20 47	18 30
40	3 0 29	7 39	15 26	22 52	8 0 41	17 6	22 18	19 32
44	1 19	8 29	16 16	23 42	1 34	18 21	23 48	20 34
48	2 9	9 19	17 7	24 31	2 28	19 37	25 18	21 35
52	2 59	10 9	17 57	25 20	3 21	20 53	26 47	22 36
56	3 49	10 59	18 48	26 10	4 15	22 10	28 16	23 36
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 4 39	4 11 48	5 19 38	6 26 59	8 5 10	9 23 27	11 29 44	1 24 36
4	5 28	12 38	20 28	27 48	6 4	24 46	0 1 12	25 36
8	6 18	13 29	21 19	28 38	6 59	26 5	2 39	26 35
12	7 8	14 19	22 9	6 29 27	7 54	27 25	4 5	27 34
16	7 57	15 9	23 0	7 0 16	8 50	9 28 45	5 31	28 32
20	8 47	15 59	23 50	1 6	9 46	10 0 6	6 57	1 29 30
24	9 36	16 49	24 40	1 55	10 42	1 28	8 21	2 0 28
28	10 26	17 39	25 31	2 45	11 38	2 51	9 46	1 25
32	3 11 15	4 18 29	5 26 21	7 3 34	8 12 35	10 4 14	0 11 9	2 2 22
36	12 5	19 20	27 11	4 24	13 32	5 39	12 32	3 18
40	12 54	20 10	28 1	5 13	14 30	7 3	13 54	4 14
44	13 44	21 0	28 51	6 3	15 28	8 29	15 15	5 10
48	14 33	21 51	5 29 41	6 52	16 26	9 55	16 35	6 6
52	15 22	22 41	6 0 31	7 42	17 25	11 21	17 55	7 1
56	16 12	23 32	1 22	8 32	18 24	12 48	19 14	7 56
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 17 1	4 24 22	6 2 12	7 9 21	8 19 24	10 14 16	0 20 33	2 8 50
4	17 50	25 12	3 1	10 11	20 24	15 44	21 50	9 45
8	18 40	26 3	3 51	11 1	21 24	17 13	23 7	10 39
12	19 29	26 53	4 41	11 51	22 25	18 42	24 23	11 32
16	20 18	27 44	5 31	12 41	23 26	20 12	25 39	12 26
20	21 8	28 34	6 21	13 31	24 28	21 42	26 54	13 19
24	21 57	4 29 25	7 11	14 22	25 30	23 13	28 8	14 12
28	22 46	5 0 15	8 1	15 12	26 33	24 44	0 29 21	15 5
32	3 23 36	5 1 6	6 8 51	7 16 2	8 27 37	10 26 15	1 0 34	2 15 58
36	24 25	1 56	9 40	16 53	28 41	27 47	1 46	16 50
40	25 15	2 47	10 30	17 43	8 29 45	10 29 19	2 57	17 43
44	26 4	3 38	11 20	18 34	9 0 50	11 0 51	4 8	18 35
48	26 54	4 28	12 9	19 25	1 56	2 23	5 18	19 27
52	27 43	5 19	12 59	20 16	3 2	3 55	6 27	20 19
56	28 33	6 9	13 48	21 7	4 9	5 28	7 36	21 10
60	3 29 22	5 7 0	6 14 38	7 21 58	9 5 16	11 7 0	1 8 44	2 22 2

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट :	1°—12'	1°—15'	1°—17'	1°—20'	1°—23'	1°—26'	1°—29'	1°—32'
विचलन 3 मिनट	54'	56'	58'	1°—0'	1°—2'	1°—4'	1°—7'	1°—9'
विचलन 2 मिनट	36	38	39	40	42	43	45	46
विचलन 1 मिनट	18	19	19	20	21	22	22	23

लग्न सारिणी अक्षांश 39^0 0' उत्तर

(लिस्बन 38^0 44' उत्तर, वाशिंगटन 38^0 55' उत्तर इत्यादि)

मिनट	सा्म्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 24 52	4 0 56	5 7 0	6 13 4	7 19 8	9 1 47	11 7 0	1 12 13
4	25 41	1 44	7 48	13 52	19 58	2 56	8 41	13 21
8	26 31	2 31	8 37	14 39	20 48	4 5	10 22	14 28
12	27 21	3 19	9 25	15 27	21 39	5 15	12 2	15 34
16	28 10	4 7	10 14	16 14	22 29	6 26	13 43	16 40
20	28 59	4 54	11 2	17 2	23 20	7 38	15 23	17 45
24	2 29 48	5 42	11 50	17 49	24 11	8 50	17 3	18 50
28	3 0 37	6 30	12 39	18 37	25 2	10 3	18 42	19 53
32	3 1 26	4 7 18	5 13 27	6 19 25	7 25 53	9 11 18	11 20 21	1 20 57
36	2 15	8 6	14 15	20 12	26 44	12 33	22 0	21 59
40	3 3	8 53	15 4	21 0	27 36	13 49	23 38	23 1
44	3 52	9 41	15 52	21 47	28 28	15 5	25 16	24 3
48	4 40	10 29	16 40	22 35	7 29 21	16 23	26 52	25 3
52	5 29	11 17	17 29	23 22	8 0 13	17 42	11 28 29	26 4
56	6 17	12 5	18 17	24 10	1 6	19 1	0 0 4	27 3
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 7 5	4 12 53	5 19 5	6 24 57	8 1 59	9 20 22	0 1 39	1 28 3
4	7 54	13 41	19 54	25 45	2 52	21 43	3 13	1 29 2
8	8 42	14 29	20 42	26 33	3 46	23 6	4 47	2 0 0
12	9 30	15 17	21 30	27 20	4 40	24 29	6 19	0 58
16	10 18	16 5	22 18	28 8	5 34	25 53	7 51	1 55
20	11 6	16 53	23 6	28 56	6 29	27 18	9 21	2 52
24	11 53	17 41	23 55	6 29 43	7 24	9 28 45	10 51	3 49
28	12 41	18 29	24 43	7 0 31	8 19	10 0 12	12 20	4 45
32	3 13 29	4 19 17	5 25 31	7 1 19	8 9 15	10 1 40	0 13 48	2 5 41
36	14 17	20 5	26 19	2 7	10 11	3 9	15 15	6 36
40	15 4	20 54	27 7	2 54	11 8	4 39	16 42	7 31
44	15 52	21 42	27 55	3 42	12 5	6 9	18 7	8 26
48	16 40	22 30	28 43	4 30	13 2	7 41	19 31	9 20
52	17 27	23 18	5 29 31	5 18	14 0	9 13	20 54	10 14
56	18 15	24 6	6 0 19	6 6	14 58	10 47	22 17	11 8
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 19 3	4 24 55	6 1 7	7 6 55	8 15 57	10 12 21	0 23 38	2 12 1
4	19 50	25 43	1 55	7 43	16 57	13 56	24 59	12 54
8	20 37	26 31	2 43	8 31	17 56	15 31	26 18	13 47
12	21 25	27 20	3 31	9 20	18 57	17 7	27 37	14 39
16	22 13	28 8	4 19	10 8	19 57	18 44	0 28 55	15 32
20	23 0	28 56	5 7	10 57	20 59	20 22	1 0 11	16 24
24	23 48	4 29 45	5 54	11 45	22 1	22 0	1 27	17 16
28	24 35	5 0 33	6 42	12 34	23 3	23 39	2 42	18 7
32	3 25 23	5 1 21	6 7 30	7 13 23	8 24 7	10 25 18	1 3 57	2 18 58
36	26 11	2 10	8 18	14 12	25 10	26 57	5 10	19 49
40	26 58	2 58	9 6	15 1	26 15	10 28 37	6 22	20 40
44	27 46	3 46	9 53	15 50	27 20	11 0 17	7 34	21 31
48	28 33	4 35	10 41	16 39	28 26	1 58	8 45	22 21
52	3 29 21	5 23	11 29	17 29	8 29 32	3 38	9 55	23 12
56	4 0 8	6 12	12 16	18 18	9 0 39	5 19	11 4	24 2
60	4 0 56	5 7 0	6 13 4	7 19 8	9 1 47	11 7 0	1 12 13	2 24 52

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°—48'	0°—5[illegible]'	0°—54'	0°—57'	1°—0'	1°—3'	1°—6'	1°—9'	1°—12'
विचलन 3 मिनट	36'	38'	40'	43'	45'	47'	49'	52'	54'
विचलन 2 मिनट	24	26	27	29	30	32	33	35	36
विचलन 1 मिनट	12	13	14	14	15	16	17	17	18

लग्न सारिणी अक्षांश 40^0 0' उत्तर

(बीजिंग 39^0 55' उत्तर, फिलाडेलफिया 39^0 57' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 25 28	4 1 16	5 7 0	6 12 44	7 18 32	9 1 0	11 7 0	1 13 0
4	26 17	2 3	7 48	13 32	19 22	2 9	8 43	14 8
8	27 7	2 50	8 36	14 19	20 12	3 18	10 26	15 15
12	27 56	3 37	9 24	15 6	21 1	4 28	12 8	16 22
16	28 45	4 25	10 12	15 53	21 52	5 39	13 51	17 27
20	2 29 34	5 12	11 0	16 40	22 42	6 51	15 33	18 32
24	3 0 22	5 59	11 48	17 27	23 32	8 4	17 14	19 36
28	1 11	6 47	12 36	18 15	24 23	9 17	18 56	20 40
32	3 2 0	4 7 34	5 13 24	6 19 2	7 25 14	9 10 32	11 20 37	1 21 43
36	2 48	8 21	14 11	19 49	26 5	11 47	22 18	22 46
40	3 36	9 9	14 59	20 36	26 57	13 3	23 57	23 47
44	4 24	9 56	15 47	21 23	27 48	14 21	25 37	24 49
48	5 12	10 44	16 35	22 10	28 40	15 39	27 15	25 49
52	6 0	11 31	17 23	22 58	7 29 33	16 58	11 28 53	26 49
56	6 48	12 19	18 11	23 45	8 0 25	18 18	0 0 30	27 49
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 7 36	4 13 6	5 18 59	6 24 32	8 1 18	9 19 39	0 2 7	1 28 48
4	8 24	13 54	19 46	25 19	2 11	21 1	3 42	1 29 47
8	9 12	14 41	20 34	26 10	3 4	22 24	5 17	2 0 45
12	9 59	15 29	21 22	26 54	3 58	23 48	6 51	1 42
16	10 47	16 16	22 10	27 41	4 52	25 13	8 24	2 39
20	11 35	17 4	22 58	28 28	5 46	26 39	9 56	3 36
24	12 22	17 52	23 45	6 29 16	6 41	28 6	11 27	4 33
28	13 10	18 39	24 33	7 0 3	7 36	9 29 34	12 57	5 28
32	3 13 57	4 19 27	5 25 21	7 0 50	8 8 32	10 1 3	0 14 26	2 6 24
36	14 44	20 15	26 8	1 38	9 27	2 33	15 54	7 19
40	15 32	21 2	26 56	2 25	10 24	4 4	17 21	8 14
44	16 19	21 50	27 44	3 13	11 21	5 36	18 47	9 8
48	17 6	22 38	28 31	4 1	12 18	7 9	20 12	10 2
52	17 54	23 26	5 29 19	4 48	13 15	8 43	21 36	10 56
56	18 41	24 14	6 0 6	5 36	14 13	10 18	22 59	11 49
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 19 28	4 25 1	6 0 54	7 6 24	8 15 12	10 11 53	0 24 21	2 12 42
4	20 15	25 49	1 41	7 12	16 11	13 30	25 42	13 35
8	21 2	26 37	2 29	8 0	17 11	15 7	27 2	14 27
12	21 50	27 25	3 16	8 48	18 11	16 45	28 21	15 20
16	22 37	28 13	4 4	9 36	19 11	18 23	0 29 39	16 12
20	23 24	29 1	4 51	10 24	20 13	20 3	1 0 57	17 3
24	24 11	4 29 49	5 39	11 12	21 14	21 42	2 13	17 55
28	24 58	5 0 36	6 26	12 0	22 17	23 23	3 28	18 46
32	3 25 45	5 1 24	6 7 13	7 12 49	8 23 20	10 25 4	1 4 43	2 19 37
36	26 33	2 12	8 1	13 38	24 24	26 46	5 56	20 28
40	27 20	3 0	8 48	14 25	25 28	10 28 27	7 9	21 18
44	28 7	3 48	9 35	15 15	26 33	11 0 9	8 21	22 8
48	28 54	4 36	10 23	16 4	27 38	1 52	9 32	22 59
52	3 29 41	5 24	11 10	16 53	28 45	3 34	10 42	23 48
56	4 0 28	6 12	11 57	17 43	8 29 52	5 17	11 51	24 38
60	4 1 16	5 7 0	6 12 44	7 18 32	9 1 0	11 7 0	1 13 0	2 25 28

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	1°—15'	1°—19'	1°—22'	1°—26'	1°—29'	1°—33'	1°—36'	1°—40'	1°—43'
विचलन 3 मिनट	56'	59'	1°—1'	1°—4'	1°—7'	1°—10'	1°—12'	1°—15'	1°—17'
विचलन 2 मिनट	38	40	41	43	45	47	48	50	52
विचलन 1 मिनट	19	20	21	22	22	23	24	25	26

लग्न सारिणी अक्षांश 41^0 0' उत्तर

(न्यूयार्क 40^0 49' उत्तर, नेपलस 40^0 51' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 26 5	4 1 35	5 7 0	6 12 25	7 17 55	9 0 11	11 7 0	1 13 49
4	26 54	2 22	7 47	13 11	18 44	1 19	8 45	14 57
8	27 43	3 9	8 35	13 58	19 34	2 29	10 30	16 4
12	28 32	3 56	9 22	14 45	20 23	3 39	12 15	17 10
16	2 29 20	4 43	10 10	15 32	21 13	4 50	13 59	18 16
20	3 0 9	5 30	10 57	16 19	22 3	6 2	15 43	19 21
24	0 57	6 17	11 45	17 5	22 53	7 15	17 27	20 25
28	1 45	7 3	12 32	17 52	23 44	8 29	19 11	21 29
32	3 2 34	4 7 50	5 13 20	6 18 39	7 24 34	9 9 44	11 20 54	1 22 31
36	3 22	8 37	14 7	19 26	25 25	10 59	22 36	23 34
40	4 10	9 24	14 55	20 12	26 16	12 16	24 18	24 35
44	4 57	10 11	15 42	20 59	27 7	13 33	25 59	25 36
48	5 45	10 58	16 30	21 46	27 59	14 52	27 40	26 37
52	6 33	11 45	17 17	22 33	28 51	16 12	11 29 19	27 37
56	7 20	12 32	18 4	23 19	7 29 43	17 32	0 0 58	28 36
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 8 8	4 13 20	5 18 52	6 24 6	8 0 36	9 18 54	0 2 36	1 29 35
4	8 55	14 7	19 39	24 53	1 28	20 17	4 13	2 0 33
8	9 43	14 54	20 26	25 40	2 21	21 40	5 49	1 31
12	10 30	15 41	21 13	26 27	3 15	23 5	7 24	2 28
16	11 17	16 28	22 1	27 14	4 8	24 31	8 59	3 25
20	12 4	17 15	22 48	28 1	5 2	25 58	10 32	4 22
24	12 51	18 2	23 36	28 48	5 57	27 26	12 4	5 18
28	13 38	18 50	24 23	6 29 35	6 52	9 28 55	13 35	6 13
32	3 14 25	4 19 37	5 25 10	7 0 22	8 7 47	10 0 25	0 15 5	2 7 8
36	15 12	20 24	25 58	1 9	8 42	1 56	16 34	8 3
40	15 59	21 12	26 45	1 56	9 38	3 28	18 2	8 58
44	16 46	21 59	27 32	2 43	10 35	5 1	19 29	9 52
48	17 33	22 46	28 19	3 30	11 32	6 36	20 55	10 45
52	18 20	23 33	29 6	4 17	12 29	8 11	22 20	11 39
56	19 7	24 21	5 29 53	5 5	13 27	9 47	23 43	12 32
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 19 54	4 25 8	6 0 40	7 5 52	8 14 25	10 11 24	0 25 6	2 13 24
4	20 41	25 56	1 28	6 40	15 24	13 2	26 28	14 17
8	21 27	26 43	2 15	7 27	16 23	14 41	27 48	15 9
12	22 14	27 30	3 2	8 15	17 23	16 20	0 29 8	16 1
16	23 1	28 18	3 49	9 3	18 24	18 1	1 0 27	16 52
20	23 48	29 5	4 36	9 50	19 25	19 42	1 44	17 44
24	24 34	4 29 53	5 23	10 38	20 26	21 24	3 1	18 35
28	25 21	5 0 40	6 10	11 26	21 29	23 6	4 16	19 26
32	3 26 8	5 1 28	6 6 57	7 12 15	8 22 31	10 24 49	1 5 31	2 20 16
36	26 55	2 15	7 43	13 3	23 35	26 33	6 45	21 7
40	27 41	3 3	8 30	13 51	24 39	10 28 17	7 58	21 57
44	28 28	3 50	9 17	14 40	25 44	11 0 1	9 10	22 47
48	3 29 15	4 38	10 4	15 28	26 50	1 45	10 21	23 37
52	4 0 2	5 25	10 51	16 17	27 56	3 30	11 31	24 26
56	0 49	6 12	11 38	17 6	8 29 3	5 15	12 41	25 16
60	4 1 35	5 7 0	6 12 25	7 17 55	9 0 11	11 7 0	1 13 49	2 26 5

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°–47'	0°–50'	0°–53'	0°–57'	1°–0'	1°–4'	1°–7'	1°–10'	1°–14'
विचलन 3 मिनट	35'	37'	40'	43'	45'	48'	50'	52'	55'
विचलन 2 मिनट	24	25	27	29	30	32	34	35	37
विचलन 1 मिनट	12	13	13	14	15	16	17	18	19

लग्न सारिणी अक्षांश 42° 0' उत्तर

(रोम 41° 55' उत्तर, शिकागो 41° 53' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 26 43	4 1 55	5 7 0	6 12 5	7 17 17	8 29 20	11 7 0	1 14 40
4	27 31	2 42	7 47	12 51	18 6	9 0 28	8 47	15 48
8	28 20	3 28	8 34	13 37	18 55	1 38	10 34	16 55
12	29 8	4 15	9 21	14 24	19 44	2 48	12 22	18 1
16	2 29 57	5 1	10 8	15 10	20 34	3 59	14 8	19 7
20	3 0 45	5 48	10 55	15 56	21 23	5 11	15 55	20 12
24	1 33	6 34	11 42	16 43	22 13	6 24	17 41	21 16
28	2 21	7 21	12 29	17 29	23 3	7 38	19 27	22 19
32	3 3 8	4 8 7	5 13 16	6 18 15	7 23 53	9 8 53	11 21 12	1 23 22
36	3 56	8 54	14 3	19 2	24 44	10 9	22 56	24 24
40	4 44	9 40	14 50	19 48	25 34	11 26	24 40	25 25
44	5 31	10 27	15 37	20 35	26 25	12 44	26 23	26 26
48	6 18	11 13	16 24	21 21	27 17	14 3	28 6	27 26
52	7 6	12 0	17 11	22 7	28 8	15 23	11 29 47	28 26
56	7 53	12 46	17 58	22 54	29 0	16 44	0 1 28	1 29 25
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 8 40	4 13 33	5 18 45	6 23 40	7 29 52	9 18 6	0 3 7	2 0 23
4	9 27	14 20	19 32	24 27	8 0 44	19 29	4 46	1 21
8	10 14	15 7	20 19	25 13	1 37	20 54	6 24	2 19
12	11 1	15 53	21 6	25 59	2 30	22 19	8 0	3 16
16	11 48	16 40	21 53	26 46	3 24	23 46	9 36	4 12
20	12 34	17 27	22 39	27 32	4 17	25 14	11 10	5 9
24	13 21	18 13	23 26	28 19	5 11	26 43	12 44	6 4
28	14 8	19 0	24 13	29 6	6 6	28 13	14 16	6 59
32	3 14 54	4 19 47	5 25 0	6 29 52	8 7 1	9 29 44	0 15 47	2 7 54
36	15 41	20 34	25 47	7 0 39	7 56	10 1 16	17 17	8 49
40	16 28	21 21	26 33	1 26	8 51	2 50	18 46	9 43
44	17 14	22 8	27 20	2 12	9 48	4 24	20 14	10 36
48	18 1	22 54	28 7	2 59	10 44	6 0	21 41	11 30
52	18 47	23 41	28 53	3 46	11 41	7 36	23 6	12 23
56	19 33	24 28	5 29 40	4 33	12 39	9 14	24 31	13 16
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 20 20	4 25 15	6 0 27	7 5 20	8 13 37	10 10 53	0 25 54	2 14 8
4	21 6	26 2	1 14	6 7	14 35	12 32	27 16	15 0
8	21 53	26 49	2 0	6 54	15 34	14 13	28 37	15 52
12	22 39	27 36	2 47	7 42	16 34	15 54	0 29 57	16 43
16	23 25	28 23	3 33	8 29	17 34	17 37	1 1 16	17 35
20	24 12	29 10	4 20	9 16	18 35	19 20	2 34	18 26
24	24 58	4 29 57	5 6	10 4	19 36	21 4	3 51	19 16
28	25 45	5 0 44	5 53	10 52	20 38	22 48	5 7	20 7
32	3 26 31	5 1 31	6 6 39	7 11 39	8 21 41	10 24 33	1 6 22	2 20 57
36	27 17	2 18	7 26	12 27	22 44	26 19	7 36	21 47
40	28 4	3 5	8 12	13 15	23 48	28 5	8 49	22 37
44	28 50	3 52	8 59	14 3	24 53	10 29 52	10 1	23 26
48	3 29 36	4 39	9 45	14 52	25 59	11 1 38	11 12	24 16
52	4 0 23	5 26	10 32	15 40	27 5	3 26	12 22	25 5
56	1 9	6 13	11 18	16 29	28 12	5 13	13 32	25 54
60	4 1 55	5 7 0	6 12 5	7 17 17	8 29 20	11 7 0	1 14 40	2 26 43

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	1°—17'	1°—21'	1°—25'	1°—28'	1°—32'	1°—36'	1°—40'	1°—43'	1°—47'
विचलन 3 मिनट	58'	1°—1'	1°—4'	1°—6'	1°—9'	1°—12'	1°—15'	1°—17'	1°—20'
विचलन 2 मिनट	39	41	43	44	46	48	50	52	54
विचलन 1 मिनट	19	20	21	22	23	24	25	26	27

लग्न सारिणी अक्षांश 43° 0' उत्तर

(सोफिया 42° 40' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 27 22	4 2 16	5 7 0	6 11 44	7 16 38	8 28 26	11 7 0	1 15 34
4	28 10	3 2	7 47	12 30	17 27	8 29 35	8 50	16 42
8	28 58	3 48	8 33	13 16	18 15	9 0 44	10 40	17 49
12	2 29 46	4 34	9 20	14 2	19 4	1 54	12 29	18 55
16	3 0 34	5 20	10 6	14 48	19 53	3 6	14 18	20 0
20	1 22	6 6	10 53	15 34	20 43	4 18	16 7	21 4
24	2 9	6 52	11 39	16 20	21 32	5 31	17 56	22 8
28	2 57	7 38	12 26	17 6	22 22	6 45	19 44	23 11
32	3 3 44	4 8 24	5 13 12	6 17 52	7 23 11	9 8 0	11 21 31	1 24 14
36	4 31	9 10	13 59	18 38	24 1	9 16	23 18	25 16
40	5 18	9 56	14 45	19 24	24 52	10 33	25 4	26 17
44	6 5	10 42	15 32	20 10	25 42	11 51	26 49	27 17
48	6 52	11 28	16 18	20 55	26 33	13 11	11 28 33	28 17
52	7 39	12 15	17 5	21 41	27 24	14 31	0 0 17	1 29 16
56	8 26	13 1	17 51	22 27	28 16	15 53	1 59	2 0 15
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 9 13	4 13 47	5 18 38	6 23 13	7 29 7	9 17 16	0 3 41	2 1 13
4	9 50	14 33	19 24	23 59	7 29 59	18 39	5 21	2 11
8	10 46	15 19	20 11	24 45	8 0 52	20 4	7 0	3 8
12	11 32	16 6	20 57	25 32	1 44	21 31	8 39	4 5
16	12 19	16 52	21 44	26 18	2 37	22 58	10 16	5 1
20	13 5	17 38	22 30	27 4	3 31	24 27	11 52	5 57
24	13 51	18 25	23 16	27 50	4 24	25 57	13 26	6 52
28	14 38	19 11	24 3	28 36	5 18	27 28	15 0	7 47
32	3 15 24	4 19 57	5 24 49	6 29 22	8 6 13	9 29 0	0 16 32	2 8 42
36	16 10	20 43	25 35	7 0 9	7 8	10 0 34	18 3	9 36
40	16 56	21 30	26 22	0 55	8 3	2 8	19 33	10 29
44	17 42	22 16	27 8	1 41	8 59	3 44	21 2	11 23
48	18 28	23 3	27 54	2 28	9 55	5 21	22 29	12 16
52	19 15	23 49	28 41	3 14	10 52	7 0	23 56	13 8
56	20 1	24 36	5 29 27	4 1	11 49	8 39	25 21	14 1
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 20 47	4 25 22	6 0 13	7 4 47	8 12 47	10 10 19	0 26 44	2 14 53
4	21 33	26 9	0 59	5 34	13 45	12 1	28 7	15 44
8	22 19	26 55	1 45	6 21	14 44	13 43	0 29 29	16 36
12	23 5	27 42	2 32	7 8	15 43	15 27	1 0 49	17 27
16	23 50	28 28	3 18	7 55	16 43	17 11	2 9	18 18
20	24 36	4 29 14	4 4	8 42	17 43	18 56	3 27	19 8
24	25 22	5 0 1	4 50	9 29	18 44	20 42	4 44	19 59
28	26 8	0 48	5 36	10 16	19 46	22 29	6 0	20 49
32	3 26 54	5 1 34	6 6 22	7 11 3	8 20 49	10 24 16	1 7 15	2 21 38
36	27 40	2 21	7 8	11 51	21 52	26 4	8 29	22 28
40	28 26	3 7	7 54	12 38	22 56	27 53	9 42	23 18
44	29 12	3 54	8 40	13 26	24 0	10 29 42	10 54	24 7
48	3 29 58	4 40	9 26	14 14	25 5	11 1 31	12 6	24 56
52	4 0 44	5 27	10 12	15 2	26 11	3 20	13 16	25 45
56	1 30	6 13	10 58	15 50	27 18	5 10	14 25	26 33
60	4 2 16	5 7 0	6 11 44	7 16 38	8 28 26	11 7 0	1 15 34	2 27 22

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°—46'	0°—49'	0°—52'	0°—56'	1°—0'	1°—4'	1°—8'	1°—12'	1°—15'
विचलन 3 मिनट	34'	37'	39'	42'	45'	48'	51'	54'	57'
विचलन 2 मिनट	23	25	26	28	30	32	34	36	38
विचलन 1 मिनट	12	12	13	14	15	16	17	18	19

लग्न सारिणी अक्षांश 44^{0} 0' उत्तर

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	2 28 1	4 2 36	5 7 0	6 11 24	7 15 59	8 27 30	11 7 0	1 16 30
4	28 49	3 22	7 46	12 9	16 47	28 39	8 53	17 37
8	2 29 37	4 8	8 32	12 55	17 35	8 29 48	10 45	18 44
12	3 0 24	4 53	9 18	13 40	18 23	9 0 58	12 37	19 50
16	1 12	5 39	10 4	14 26	19 12	2 9	14 29	20 55
20	1 59	6 24	10 50	15 11	20 1	3 21	16 21	21 59
24	2 46	7 10	11 37	15 57	20 50	4 35	18 12	23 3
28	3 33	7 55	12 23	16 42	21 39	5 49	20 2	24 6
32	3 4 20	4 8 41	5 13 9	6 17 28	7 22 28	9 7 4	11 21 52	1 25 8
36	5 7	9 27	13 55	18 13	23 18	8 20	23 41	26 9
40	5 54	10 12	14 41	18 59	24 8	9 38	25 29	27 10
44	6 41	10 58	15 27	19 44	24 58	10 56	27 17	28 11
48	7 27	11 44	16 13	20 30	25 48	12 16	11 29 4	1 29 10
52	8 14	12 29	16 59	21 15	26 39	13 37	0 0 49	2 0 9
56	9 0	13 15	17 45	22 1	27 30	14 59	2 33	1 7
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 9 46	4 14 1	5 18 31	6 22 46	7 28 21	9 16 22	0 4 17	2 2 5
4	10 32	14 47	19 17	23 32	7 29 13	17 46	5 59	3 3
8	11 18	15 32	20 3	24 18	8 0 5	19 12	7 40	3 59
12	12 4	16 18	20 49	25 3	0 57	20 39	9 20	4 56
16	12 50	17 4	21 35	25 49	1 50	22 7	10 58	5 52
20	13 36	17 50	22 21	26 35	2 43	23 37	12 36	6 47
24	14 22	18 36	23 7	27 20	3 36	25 8	14 12	7 42
28	15 8	19 22	23 53	28 6	4 29	26 40	15 47	8 36
32	3 15 54	4 20 8	5 24 38	6 28 52	8 5 24	9 28 13	0 17 20	2 9 31
36	16 40	20 53	25 24	6 29 38	6 18	9 29 48	18 52	10 24
40	17 25	21 39	26 10	7 0 24	7 13	10 1 24	20 23	11 17
44	18 11	22 25	26 56	1 10	8 8	3 2	21 52	12 10
48	18 57	23 11	27 42	1 56	9 4	4 40	23 21	13 3
52	19 42	23 57	28 28	2 42	10 1	6 20	24 48	13 55
56	20 28	24 43	29 13	3 28	10 57	8 1	26 14	14 47
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 21 14	4 25 29	5 29 53	7 4 14	8 11 55	10 9 43	0 27 38	2 15 39
4	21 59	26 15	6 0 45	5 0	12 53	11 27	0 29 1	16 30
8	22 45	27 1	1 31	5 47	13 51	13 11	1 0 23	17 21
12	23 30	27 47	2 16	6 33	14 50	14 56	1 44	18 12
16	24 16	28 33	3 2	7 19	15 49	16 43	3 4	19 2
20	25 1	4 29 19	3 48	8 6	16 50	18 31	4 22	19 52
24	25 47	5 0 5	4 33	8 53	17 51	20 19	5 40	20 42
28	26 32	0 51	5 19	9 40	18 52	22 8	6 56	21 32
32	3 27 18	5 1 37	6 6 5	7 10 27	8 19 54	10 23 58	1 8 11	2 22 21
36	28 3	2 23	6 50	11 14	20 57	25 48	9 25	23 10
40	28 49	3 10	7 36	12 1	22 1	27 39	10 39	23 59
44	3 29 34	3 56	8 21	12 48	23 5	10 29 31	11 51	24 48
48	4 0 20	4 42	9 7	13 36	24 10	11 1 23	13 2	25 37
52	1 5	5 28	9 52	14 23	25 16	3 15	14 12	26 25
56	1 51	6 14	10 38	15 11	26 23	5 8	15 21	27 13
60	4 2 36	5 7 0	6 11 24	7 15 59	8 27 30	11 7 0	1 16 30	2 28 1

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	1°—18'	1°—22'	1°—27'	1°—31'	1°—36'	1°—40'	1°—44'	1°—48'	1°—52'
विचलन 3 मिनट	58'	1°—1'	1°—5'	1°—8'	1°—12'	1°—15'	1°—18'	1°—21'	1°—24'
विचलन 2 मिनट	39	41	44	46	48	50	52	54	56
विचलन 1 मिनट	20	21	22	23	24	25	26	27	28

लग्न सारिणी अक्षांश 51^0 0' उत्तर

(बोन 50^0 44' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	2 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	3 3 10	4 5 12	5 7 0	6 8 48	7 10 50	8 19 32	11 7 0	1 24 28
4	3 54	5 54	7 43	9 31	11 34	20 38	9 21	25 32
8	4 39	6 36	8 25	10 13	12 19	21 45	11 41	26 36
12	5 23	7 18	9 8	10 55	13 3	22 53	14 2	27 39
16	6 6	8 0	9 50	11 37	13 48	24 2	16 21	28 41
20	6 50	8 43	10 33	12 19	14 33	25 12	18 39	1 29 41
24	7 34	9 25	11 16	13 1	15 19	26 24	20 57	2 0 42
28	8 17	10 7	11 58	13 43	16 4	27 36	23 13	1 41
32	3 9 1	4 10 49	5 12 41	6 14 26	7 16 50	8 28 51	11 25 27	2 2 39
36	9 44	11 31	13 23	15 8	17 36	9 0 6	27 40	3 37
40	10 27	12 14	14 6	15 50	18 22	1 23	11 29 51	4 34
44	11 10	12 56	14 48	16 32	19 8	2 42	0 2 0	5 31
48	11 53	13 38	15 31	17 14	19 55	4 2	4 7	6 26
52	12 36	14 20	16 13	17 56	20 42	5 24	6 12	7 21
56	13 19	15 3	16 56	18 39	21 29	6 48	8 15	8 16
	1..	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 14 2	4 15 45	5 17 38	6 19 21	7 22 16	9 8 13	0 10 15	2 9 10
4	14 45	16 27	18 21	20 3	23 4	9 41	12 13	10 3
8	15 28	17 10	19 3	20 45	23 52	11 10	14 9	10 56
12	16 10	17 52	19 46	21 28	24 40	12 41	16 2	11 48
16	16 53	18 35	20 28	22 10	25 29	14 14	17 53	12 40
20	17 36	19 17	21 11	22 52	26 18	15 49	19 42	13 32
24	18 18	19 59	21 53	23 35	27 7	17 26	21 28	14 23
28	19 1	20 42	22 36	24 17	27 57	9 19 6	23 12	15 13
32	3 19 43	4 21 24	5 23 18	6 24 59	7 28 47	9 20 48	0 24 54	2 16 3
36	20 25	22 7	24 1	25 42	7 29 37	22 32	26 34	16 53
40	21 8	22 49	24 43	26 24	8 0 28	24 18	28 11	17 42
44	21 50	23 32	25 25	27 7	1 20	26 7	0 29 46	18 31
48	22 32	24 14	26 8	27 50	2 12	27 58	1 1 19	19 20
52	23 15	24 57	26 50	28 32	3 4	9 29 51	2 50	20 8
56	23 57	25 39	27 32	29 15	3 57	10 1 47	4 19	20 56
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 24 39	4 26 22	5 28 15	6 29 58	8 4 50	10 3 45	1 5 47	2 21 44
4	25 21	27 4	28 57	7 0 41	5 44	5 45	7 12	22 31
8	26 4	27 47	5 29 40	1 23	6 39	7 48	8 36	23 18
12	26 46	28 29	6 0 22	2 6	7 34	9 53	9 58	24 5
16	27 28	29 12	1 4	2 50	8 29	12 0	11 18	24 52
20	28 10	4 29 54	1 46	3 33	9 26	14 9	12 37	25 38
24	28 52	5 0 37	2 29	4 16	10 23	16 20	13 54	26 24
28	3 29 34	1 19	3 11	4 59	11 21	18 33	15 9	27 10
32	4 0 16	5 2 2	6 3 53	7 5 43	8 12 19	10 20 47	1 16 24	2 27 56
36	0 59	2 44	4 53	6 26	13 18	23 3	17 36	28 41
40	1 41	3 27	5 17	7 10	14 19	25 21	18 48	2 29 27
44	2 23	4 10	6 0	7 54	15 19	27 39	19 58	3 0 12
48	3 5	4 52	6 42	8 37	16 21	10 29 58	21 7	0 57
52	3 47	5 35	7 24	9 21	17 24	11 2 19	22 15	1 41
56	4 29	6 17	8 6	10 6	18 28	4 39	23 22	2 26
60	4 5 12	5 7 0	6 8 48	7 10 50	8 19 32	11 7 0	1 24 28	3 3 10

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°—42'	0°—45'	0°—49'	0°—54'	0°—59'	1°—4'	1°—9'	1°—14'	1°—19'
विचलन 3 मिनट	31'	34'	37'	40'	44'	48'	52'	55'	59'
विचलन 2 मिनट	21	23	25	27	30	32	35	37	40
विचलन 1 मिनट	11	11	12	14	15	16	17	19	20

लग्न सारिणी अक्षांश 51^0 32' उत्तर

(लिपजिग 51^0 20' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	3 3 36	4 5 25	5 7 0	6 8 35	7 10 24	8 18 50	11 7 0	1 25 10
4	4 20	6 6	7 42	9 18	11 8	19 55	9 25	26 14
8	5 4	6 48	8 24	10 0	11 53	21 2	11 48	27 18
12	5 47	7 30	9 7	10 41	12 37	22 9	14 12	28 20
16	6 30	8 12	9 49	11 23	13 22	13 18	16 34	1 29 22
20	7 14	8 54	10 31	12 5	14 6	24 28	18 55	2 0 23
24	7 57	9 36	11 13	12 47	14 52	25 39	21 16	1 22
28	8 40	10 18	11 55	13 29	15 36	26 51	23 34	2 20
32	3 9 24	4 11 0	5 12 38	6 14 11	7 16 22	8 28 6	11 25 51	2 3 18
36	10 7	11 42	13 20	14 53	17 8	8 29 21	11 28 6	4 16
40	10 50	12 24	14 2	15 35	17 53	9 0 37	0 0 20	5 12
44	11 32	13 6	14 44	16 16	18 39	1 56	2 31	6 9
48	12 16	13 48	15 37	16 58	19 26	3 16	4 40	7 4
52	12 58	14 30	16 9	17 40	20 12	4 38	6 47	7 58
56	13 40	15 12	16 51	18 22	20 59	6 2	8 51	8 53
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 14 23	4 15 54	5 17 33	6 19 4	7 21 46	9 7 27	0 10 53	2 9 46
4	15 6	16 36	18 16	19 46	22 33	8 54	12 52	10 39
8	15 48	17 18	18 58	20 28	23 21	10 23	14 49	11 31
12	16 30	18 0	19 40	21 10	24 8	11 55	16 43	12 23
16	17 13	18 42	20 22	21 52	24 57	13 28	18 36	13 15
20	17 55	19 24	21 5	22 34	25 46	15 3	20 25	14 6
24	18 37	20 6	21 47	23 16	26 34	16 41	22 12	14 57
28	19 20	20 49	22 29	23 58	27 24	18 21	23 57	15 47
32	3 20 2	4 21 31	5 23 11	6 24 40	7 28 13	9 20 3	0 25 39	2 16 36
36	20 44	22 13	23 54	25 23	29 3	21 48	27 19	17 26
40	21 26	22 55	24 36	26 5	7 29 54	23 35	0 28 57	18 14
44	22 8	23 38	25 18	26 47	8 0 45	25 24	1 0 32	19 3
48	22 50	24 20	26 0	27 30	1 37	27 17	2 5	19 52
52	23 32	25 2	26 42	28 12	2 29	9 29 11	3 37	20 39
56	24 14	25 44	27 24	28 54	3 21	10 1 8	5 6	21 27
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 24 56	4 26 27	5 28 6	6 29 37	8 14 14	10 3 7	1 6 33	2 22 14
4	25 38	27 9	28 48	7 0 20	5 7	5 9	7 58	23 1
8	26 20	27 51	5 29 30	1 2	6 2	7 13	9 22	23 48
12	27 2	28 33	6 0 12	1 44	6 56	9 20	10 44	24 34
16	27 44	29 16	0 54	2 28	7 51	11 29	12 4	25 21
20	28 25	4 29 58	1 36	3 10	8 48	13 40	13 23	26 7
24	29 7	5 0 40	2 18	3 53	9 44	15 54	14 39	26 52
28	3 29 49	1 22	3 0	4 36	10 42	18 9	15 54	27 38
32	4 0 31	5 2 5	6 3 42	7 5 20	8 11 40	10 20 26	1 17 9	2 28 24
36	1 13	2 47	4 24	6 3	12 38	22 44	18 21	29 9
40	1 55	3 29	5 6	6 46	13 38	25 5	19 32	2 29 54
44	2 37	4 11	5 48	7 30	14 38	27 26	20 42	3 0 38
48	3 19	4 53	6 30	8 13	15 40	10 29 48	21 51	1 23
52	4 0	5 36	7 12	8 56	16 42	11 2 12	22 58	2 7
56	4 42	6 18	7 54	9 41	17 46	4 35	24 5	2 52
60	4 5 25	5 7 0	6 8 35	7 10 24	8 18 50	11 7 0	1 25 10	3 3 36

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	1°—24'	1°—30'	1°—36'	1°—44'	1°—52'	2°—0'	2°—8'	2°—16'	2°—24'
विचलन 3 मिनट	1°—3'	1°—7'	1°—12'	1°—18'	1°—24'	1°—30'	1°—36'	1°—42'	1°—48'
विचलन 2 मिनट	42	45	48	52	56	60	1—4	1—8	1—12
विचलन 1 मिनट	21	23	24	26	28	30	32	34	36

लग्न सारिणी अक्षांश 58^0 0' उत्तर

(58^0 उत्तर के समीपस्थ सभी स्थान)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	3 9 30	4 8 11	5 7 0	6 5 49	7 4 30	8 7 58	11 7 0	2 6 2
4	10 9	8 49	7 39	6 27	5 10	8 54	10 34	6 58
8	10 48	9 28	8 17	7 5	5 49	9 52	14 6	7 52
12	11 27	10 6	8 56	7 43	6 28	10 50	17 37	8 46
16	12 5	10 44	9 34	8 21	7 8	11 50	21 4	9 39
20	12 44	11 22	10 13	8 59	7 48	12 51	24 28	10 31
24	13 23	12 0	10 52	9 37	8 27	13 54	11 27 47	11 23
28	14 2	12 38	11 30	10 15	9 7	14 58	0 1 0	12 13
32	3 14 40	4 13 17	5 12 9	6 10 53	7 9 47	8 16 3	0 4 8	2 13 3
36	15 19	13 55	12 47	11 31	10 27	17 10	7 9	13 53
40	15 57	14 33	13 26	12 9	11 8	18 18	10 5	14 42
44	16 36	15 11	14 4	12 48	11 48	19 29	12 53	15 30
48	17 14	15 50	14 43	13 26	12 29	20 41	15 36	16 17
52	17 52	16 28	15 22	14 4	13 10	21 55	18 11	17 5
56	18 31	17 6	16 0	14 42	13 51	23 11	20 41	17 51
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 19 9	4 17 45	5 16 39	6 15 20	7 14 32	8 24 30	0 23 4	2 18 37
4	19 47	18 23	17 17	15 58	15 14	25 51	25 22	19 23
8	20 25	19 1	17 56	16 36	15 55	27 15	27 34	20 9
12	21 4	19 40	18 34	17 14	16 37	8 28 41	0 29 40	20 53
16	21 42	20 18	19 13	17 52	17 19	9 0 11	1 1 42	21 38
20	22 20	20 57	19 51	18 30	18 2	1 43	3 38	22 22
24	22 58	21 35	20 30	19 8	18 44	3 19	5 30	23 6
28	23 36	22 13	21 8	19 46	19 27	4 59	7 17	23 50
32	3 24 14	4 22 52	5 21 47	6 20 24	7 20 10	9 6 43	1 9 1	2 24 33
36	24 52	23 30	22 25	21 2	20 54	8 30	10 41	25 16
40	25 30	24 9	23 3	21 40	21 38	10 22	12 17	25 58
44	26 8	24 47	23 42	22 18	22 22	12 18	13 49	26 41
48	26 46	25 26	24 20	22 56	23 7	14 20	15 18	27 23
52	27 24	26 4	24 59	23 35	23 52	16 26	16 45	28 5
56	28 2	26 43	25 37	24 13	24 37	18 38	18 9	28 46
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 28 40	4 27 21	5 26 15	6 24 51	7 25 23	9 20 56	1 19 30	2 29 28
4	29 18	28 0	26 54	25 29	26 9	23 19	20 49	3 0 9
8	3 29 56	28 38	27 32	26 8	26 55	25 49	22 5	0 50
12	4 0 34	29 17	28 10	26 46	27 43	9 28 24	23 19	1 31
16	1 12	4 29 55	28 49	27 24	28 30	10 1 7	24 31	2 12
20	1 51	5 0 34	5 29 27	28 3	7 29 18	3 55	25 41	2 52
24	2 29	1 13	6 0 5	28 41	8 0 7	6 51	26 50	3 32
28	3 7	1 51	0 43	29 20	0 57	9 52	27 57	4 13
32	4 3 45	5 2 30	6 1 22	6 29 58	8 1 47	10 13 0	1 29 2	3 4 53
36	4 23	3 8	2 0	7 0 37	2 37	16 13	2 0 6	5 33
40	5 1	3 47	2 38	1 16	3 29	19 32	1 9	6 12
44	5 39	4 26	3 16	1 55	4 21	22 56	2 10	6 52
48	6 17	5 4	3 54	2 33	5 14	26 23	3 10	7 32
52	6 55	5 43	4 32	3 12	6 7	10 29 54	4 8	8 11
56	7 33	6 21	5 11	3 51	7 2	11 3 26	5 6	8 50
60	4 8 11	5 7 0	6 5 49	7 4 30	8 7 58	11 7 0	2 6 2	3 9 30

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	0°–38'	0°–42'	0°–47'	0°–52'	0°–58'	1°–4'	1°–11'	1°–19'	1°–28'
विचलन 3 मिनट	28'	31'	35'	39'	43'	48'	53'	59'	1°–6'
विचलन 2 मिनट	19	21	24	26	29	32	36	40	44
विचलन 1 मिनट	10	11	12	13	15	16	18	20	22

लग्न सारिणी अक्षांश 60° 0' उत्तर

(लेनिनग्रेड 59° 55' उत्तर, ओसलो 59° 54' उत्तर इत्यादि)

मिनट	साम्पातिक काल							
	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	3 11 35	4 9 9	5 7 0	6 4 51	7 2 25	8 3 43	11 7 0	2 10 17
4	12 12	9 45	7 37	5 28	3 3	4 35	11 23	11 8
8	12 49	10 22	8 15	6 5	3 40	5 28	15 43	11 58
12	13 26	10 59	8 52	6 42	4 18	6 22	19 59	12 48
16	14 3	11 36	9 29	7 18	4 55	7 16	24 10	13 36
20	14 40	12 13	10 7	7 55	5 33	8 12	11 28 12	14 24
24	15 17	12 50	10 44	8 32	6 11	9 9	0 2 6	15 12
28	15 54	13 27	11 21	9 9	6 49	10 8	5 50	15 58
32	3 16 31	4 14 4	5 11 59	6 9 45	7 7 27	8 11 8	0 9 25	2 16 45
36	17 8	14 41	12 36	10 22	8 5	12 9	12 48	17 30
40	17 45	15 18	13 13	10 59	8 43	13 12	16 2	18 16
44	18 22	15 55	13 51	11 35	9 21	14 16	19 5	19 0
48	18 59	16 32	14 28	12 12	10 0	15 22	21 59	19 44
52	19 36	17 9	15 5	12 49	10 38	16 30	24 43	20 28
56	20 12	17 46	15 43	13 25	11 17	17 41	27 18	21 12
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	3 20 49	4 18 23	5 16 20	6 14 2	7 11 56	8 18 53	0 29 44	2 21 54
4	21 26	19 0	16 57	14 38	12 35	20 8	1 2 3	22 37
8	22 2	19 37	17 34	15 15	13 14	21 25	4 15	23 19
12	22 39	20 14	18 12	15 52	13 54	22 46	6 20	24 1
16	23 15	20 51	18 49	16 28	14 33	24 9	8 19	24 43
20	23 52	21 28	19 26	17 5	15 13	25 36	10 12	25 24
24	24 29	22 5	20 3	17 41	15 53	27 7	11 59	26 5
28	25 5	22 42	20 40	18 18	16 33	8 28 40	13 42	26 46
32	3 25 42	4 23 20	5 21 18	6 18 55	7 17 14	9 0 18	1 15 20	2 27 27
36	26 19	23 57	21 55	19 31	17 55	2 1	16 53	28 7
40	26 55	24 34	22 32	20 8	18 35	3 48	18 24	28 47
44	27 32	25 11	23 9	20 45	19 17	5 41	19 51	2 29 27
48	28 8	25 48	23 46	21 21	19 59	7 40	21 14	3 0 6
52	28 45	26 26	24 23	21 58	20 41	9 45	22 35	0 46
56	29 22	27 3	25 0	22 34	21 23	11 57	23 52	1 25
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	3 29 58	4 27 40	5 25 37	6 23 11	7 22 6	9 14 16	1 25 7	3 2 4
4	4 0 35	28 17	26 14	23 48	22 48	16 42	26 19	2 43
8	1 11	28 55	26 51	24 25	23 32	19 17	27 30	3 22
12	1 48	4 29 32	27 29	25 1	24 16	22 1	28 38	4 0
16	2 25	5 0 9	28 5	25 38	25 0	24 55	1 29 44	4 39
20	3 1	0 47	28 42	26 15	25 44	9 27 58	2 0 48	5 17
24	3 38	1 24	29 19	26 52	26 30	10 1 12	1 51	5 55
28	4 15	2 1	5 29 56	27 29	27 15	4 35	2 52	6 33
32	4 4 51	5 2 39	6 0 33	6 28 6	7 28 1	10 8 10	2 3 52	3 7 11
36	5 28	3 16	1 10	28 43	28 48	11 54	4 51	7 49
40	6 5	3 53	1 47	29 20	7 29 36	15 48	5 48	8 27
44	6 42	4 31	2 24	6 29 57	8 0 24	19 50	6 44	9 5
48	7 18	5 8	3 1	7 0 34	1 12	24 1	7 38	9 42
52	7 55	5 45	3 38	1 11	2 2	10 28 17	8 32	10 20
56	8 32	6 23	4 15	1 48	2 52	11 2 37	9 25	10 57
60	4 9 9	5 7 0	6 4 51	7 2 25	8 3 43	11 7 0	2 10 17	3 11 35

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	1°—38'	1°—50'	2°—4'	2°—20'	2°—38'	2°—58'	3°—22'	3°—50'	4°—22'
विचलन 3 मिनट	1°—13'	1°—22'	1°—33'	1°—45'	1°—58'	2°—13'	2°—31'	2°—52'	3°—16'
विचलन 2 मिनट	49	55	1—2	1—10	1—19	1—29	1—41	1°—55	2—11
विचलन 1 मिनट	25	28	31	35	40	45	51	58	1—6

दशम लग्न सारिणी अक्षांश

(सभी स्थानों के लिए)

साम्पातिक काल

मिनट	0 घं.	3 घं.	6 घं.	9 घं.	12 घं.	15 घं.	18 घं.	21 घं.
	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '	सै. ° '
0	11 7 0	0 24 28	2 7 0	3 19 32	5 7 0	6 24 28	8 7 0	9 19 32
4	8 5	25 28	7 55	20 32	8 5	25 28	7 55	20 32
8	9 11	26 27	8 50	21 32	9 11	26 27	8 50	21 32
12	10 16	27 27	9 45	22 32	10 16	27 27	9 45	22 32
16	11 22	28 26	10 40	23 33	11 22	28 26	10 40	23 33
20	12 27	0 29 25	11 35	24 33	12 27	6 29 25	11 35	24 33
24	13 32	1 0 23	12 30	25 34	13 32	7 0 23	12 30	25 34
28	14 37	1 22	13 26	26 35	14 37	1 22	13 26	26 35
32	11 15 43	1 2 21	2 14 21	3 27 36	5 15 43	7 2 21	8 14 21	9 27 36
36	16 48	3 19	15 16	28 37	16 48	3 19	15 16	28 37
40	17 53	4 17	16 11	3 29 39	17 53	4 17	16 11	9 29 39
44	18 58	5 15	17 7	4 0 41	18 58	5 15	17 7	10 0 41
48	20 3	6 13	18 2	1 42	20 3	6 13	18 2	1 42
52	21 8	7 11	18 58	2 44	21 8	7 11	18 58	2 44
56	22 12	8 8	19 53	3 47	22 12	8 8	19 53	3 47
	1 घं.	4 घं.	7 घं.	10 घं.	13 घं.	16 घं.	19 घं.	22 घं.
0	11 23 17	1 9 5	2 20 49	4 4 49	5 23 17	7 9 5	8 20 49	10 4 49
4	24 21	10 3	21 44	5 52	24 21	10 3	21 44	5 52
8	25 26	11 0	22 40	6 54	25 26	11 0	22 40	6 54
12	26 30	11 57	23 36	7 57	26 30	11 57	23 36	7 57
16	27 34	12 54	24 32	9 0	27 34	12 54	24 32	9 0
20	28 38	13 50	25 28	10 3	28 38	13 50	25 28	10 3
24	11 29 42	14 47	26 24	11 7	5 29 42	14 47	26 24	11 7
28	0 0 46	15 43	27 20	12 10	6 0 46	15 43	27 20	12 10
32	0 1 50	1 16 40	2 28 17	4 13 14	6 1 50	7 16 40	8 28 17	10 13 14
36	2 53	17 36	2 29 13	14 18	2 53	17 36	8 29 13	14 18
40	3 57	18 32	3 0 10	15 22	3 57	18 32	9 0 10	15 22
44	5 0	19 28	1 6	16 26	5 0	19 28	1 6	16 26
48	6 3	20 24	2 3	17 30	6 3	20 24	2 3	17 30
52	7 6	21 20	3 0	18 34	7 6	21 20	3 0	18 34
56	8 8	22 16	3 57	19 39	8 8	22 16	3 57	19 39
	2 घं.	5 घं.	8 घं.	11 घं.	14 घं.	17 घं.	20 घं.	23 घं.
0	0 9 11	1 23 11	3 4 55	4 20 43	6 9 11	7 23 11	9 4 55	10 20 43
4	10 13	24 7	5 52	21 48	10 13	24 7	5 52	21 48
8	11 16	25 2	6 49	22 52	11 16	25 2	6 49	22 52
12	12 18	25 58	7 47	23 57	12 18	25 58	7 47	23 57
16	13 19	26 53	8 45	25 2	13 19	26 53	8 45	25 2
20	14 21	27 49	9 43	26 7	14 21	27 49	9 43	26 7
24	15 23	28 44	10 41	27 12	15 23	28 44	10 41	27 12
28	16 24	1 29 39	11 39	28 17	16 24	7 29 39	11 39	28 17
32	0 17 25	2 0 34	3 12 38	4 29 23	6 17 25	8 0 34	9 12 38	10 29 23
36	18 26	1 30	13 37	5 0 28	18 26	1 30	13 37	11 0 28
40	19 27	2 25	14 35	1 33	19 27	2 25	14 35	1 33
44	20 27	3 20	15 34	2 38	20 27	3 20	15 34	2 38
48	21 28	4 15	16 33	3 44	21 28	4 15	16 33	3 44
52	22 28	5 10	17 33	4 49	22 28	5 10	17 33	4 49
56	23 28	6 5	18 32	5 55	23 28	6 5	18 32	5 55
60	0 24 28	2 7 0	3 19 32	5 7 0	6 24 28	8 7 0	9 19 32	11 7 0

यथानुरूप करने वाला भाग

विचलन 4 मिनट	1°—5'	1°—3'	1°—1'	0°—59'	0°—57'	0°—55'
विचलन 3 मिनट	49'	47'	46'	44'	43'	41'
विचलन 2 मिनट	32	31	31	30	29	28
विचलन 1 मिनट	16	16	15	15	14	14

वैदेशिक नगरों की सारिणी

वैदेशिक नगरों की सारिणी में प्रथम कोष्ठक में नगर व राष्ट्र के नाम तथा दूसरे में उस राष्ट्र का स्तम्भ घण्टात्मक काल में धनचिह्न से ग्रिन्विच (लन्दन) से पूर्व के नगर व राष्ट्र एवं ऋण चिह्न से ग्रिन्विच से पश्चिम के राष्ट्र व नगरों का संकेत है। इस घण्टात्मक काल को 15 से गुणा करने पर उस राष्ट्र का स्तम्भ अंश व कला में परिणत हो जाता है जो मध्यमान्तर प्राप्त करने के लिए होता है। जैसे स्विटजरलैण्ड के जेनेवा का प्रथम कोष्ठक में धनात्मक 1 घण्टा लिखा है इसको 15 से गुणा करने पर 15 अंश पूर्व इस देश का स्तम्भ है। जेनेवा का रेखांश 6 अंश 9 कला है इन दोनों का अन्तर करने पर 8 अंश 51 कला शेष को 4 से गुणा करने पर 32 मि. 24 से. अर्थात् 35 मि. 24 से. ऋणात्मक मध्यमान्तर हुआ। पूर्व रेखांश के नगरों में यदि स्तम्भ के अंश से कम रेखांश हो तो ऋणात्मक अन्यथा धनात्मक होता है। पूर्वोक्त ग्रह स्पष्ट प्रकरण में इसका विस्तार से वर्णन है। इस प्रकार दूसरे कोष्ठक का सर्वत्र विदेशों में उपयोग करना चाहिए। तीसरे कोष्ठक में अक्षांश, चौथे में अभीष्ट नगर के रेखांश, पाँचवे में मध्यमान्तर जो उपर्युक्त प्रक्रिया से उपलब्ध होते हैं, 6वें कोष्ठक में धनात्मक व ऋणात्मक जो घण्टे मिनट दिये गये हैं वे उस राष्ट्र के स्टैण्डर्ड समय और भारत के 5 घण्टे 30 मिनट का जो अन्तर है उसका परिचायक है। जेनेवा का स्तम्भ धनात्मक 1 घण्टा है और भारत का धनात्मक 5 घण्टा 30 मिनट है। दोनों ही देश ग्रिन्विच से पूर्व होने के कारण दोनों का अन्तर करने पर 4 घण्टे 30 मिनट शेष रहा। इसका अर्थ यह हुआ कि जेनेवा का जन्म समय (स्टैण्डर्ड) भारत के स्टै. 5 घं. 30 मि. से 4 घण्टे 30 मि. पीछे है अत: जेनेवा के जन्म समय में 4 घं. 30 मि. जोड़ने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय का जन्म समय होगा। 7वें कोष्टक का उपयोग लग्नानयन में होता है। बांग्लादेश का स्तम्भ धनात्मक 6 घण्टे (90 अंश पूर्व) है। भारत का 5 घं. 30 मि. पूर्व है। अत: बांग्ला देशोत्पन्न जातक के जन्म समय में 30 मिनट कम करने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय ज्ञात होगा। मान लीजिये कि बांग्लादेश में उत्पन्न जातक का जन्म समय प्रात: 10 बजे का है तो इसमें 30 मिनट कम करने पर 9 बजकर 30 मि. भारतीय स्टैण्डर्ड समय होगा। टोकियो (जापान) के जन्म समय 10 बजे में से 3 घण्टा 30 मिनट घटाने पर 6 घण्टा 30 मि. भा. स्टे. टा. होगा। इस प्रकार जिन राष्ट्रों का स्तम्भ ग्रिन्विच से पूर्व में हो उनमें जिसका स्तम्भ 5 घं. 30 मि. से जितना कम घण्टे मिनट हो उतना जन्म समय में जोड़ने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय बनता है। जिन राष्ट्रों का स्तम्भ ग्रिन्विच से पश्चिम में हो वह ऋणात्मक (—) चिह्न से सारिणी में अंकित हैं उनके स्तम्भ के घण्टे सर्वदा भारत के 5 घं. 30 मि. में जोड़ने पर ही भारतीय स्टैण्डर्ड समय बन जाता है। जोड़ने व घटाने वाली समस्या तो केवल पूर्व स्तम्भ वाले राष्ट्रों के साथ ही है। पश्चिम स्तम्भ के तो घण्टे सर्वदा 5 घं. 30 मि. में जुड़ते ही हैं।

विदेशों के प्रमुख नगर एवं स्थान

स्थान	अक्षांश (उ.)		रेखांश (पूर्वी)		स्थानीय समय संस्कार मध्यमान्तर		स्थानीय से भारतीय (स्टै) समय		साम्पातिक संस्कार	
BANGLADESH (Time Zone : +6h)	°	'	°	'	m	s	m	s	m	s
Barisal	22	42	90	22	+1	28	+31	28	-0	05
Bogra	24	51	89	23	-2	28	+27	32	-0	05
Chandpur	23	14	90	38	+2	32	+32	32	-0	05
Chittagong	22	21	91	50	+7	20	+37	20	-0	06
Comilla	23	28	91	12	+4	48	+34	48	-0	06
Cox Bazar	21	27	92	00	+8	00	+38	00	-0	06
Dhaka	23	42	90	25	+1	40	+31	40	-0	05
Dinajpur	25	40	88	38	-5	28	+24	32	-0	04
Faridpur	23	36	89	51	-0	36	+29	24	-0	05
Gaibanda	25	22	89	33	-1	48	+28	12	-0	05
Goalundo	23	49	89	45	-1	00	+29	00	-0	05
Ishurdi	24	08	89	05	-3	40	+26	20	-0	04
Jessore	23	08	89	12	-3	12	+26	48	-0	04
Khulna	22	48	89	35	-1	40	+28	20	-0	05
Kushitia	23	55	89	07	-3	32	+26	28	-0	04
Mymensing	24	45	90	24	-1	36	+31	36	-0	05
Narayanganj	23	38	90	30	+2	00	+32	00	-0	05
Nator	24	25	89	02	-3	52	+26	08	-0	04
Netrakona	24	53	90	45	+3	00	+33	00	-0	05
Noakhali	22	48	91	06	+4	24	+34	24	-0	06
Pabna	24	01	89	16	-2	56	+27	04	-0	04
parbatipur	25	40	88	53	-4	28	+25	32	-0	04
Rajshahi	24	23	88	35	-5	40	+24	20	-0	04
Rangpur	25	45	89	18	-2	48	+27	12	-0	04
Santahar	24	48	89	00	-4	00	+26	00	-0	04
Sirajganj	24	27	89	44	-1	04	+28	56	-0	05
Sylhet	24	55	91	52	+8	28	+37	28	-0	06
Tangail	24	23	89	55	-0	20	+29	40	-0	05
Bhawalpur	29	24	71	40	-13	20	-43	20	+0	07
Bannu	33	00	70	36	-17	36	-47	36	+0	08
Dyderabad	25	23	68	21	-26	36	-56	37	+0	09
Islamabad	22	42	73	10	-7	20	-37	20	+0	06
karachi	24	51	67	01	-31	56	-61	56	+0	10
Lahore	31	35	74	18	-2	48	-32	48	+0	05
Multan	30	12	71	28	-14	08	-44	08	+0	07
Peshawar	34	01	71	34	-13	44	-43	44	+0	07
Quetta	30	12	67	02	-31	56	-61	56	+0	10
Rawalpindi	33	35	73	03	-7	48	-37	48	+0	06
Sukkur	27	43	67	53	-24	28	-54	28	+0	9

स्थान		मध्यरेखासमय घं.	अक्षांश		रेखांश		मध्यमान्तर		भारतीय (स्टै.) समय से म.रे.स		संस्कार भा. स्टै. समय	
			°	'	°	'	मि.	से.	घं..	मि.	मि.	से.
Accra	Ghana	+0	5	31N	0	15W	-1	00	+5	30	+0	54
Addis Ababa	Ethipia	+3	9	02N	38	44E	-25	04	+2	30	+0	29
Aden	Yemen	+3	12	45N	45	04E	+0	16	+2	30	+0	25
Akyab	Burma	+6.5	20	09N	92	55E	-18	20	-1	00	+0	07
Alexandria	Egypt*	+2	31	12N	29	53E	-8	28	+3	30	+0	35
Amsterdum	Nether.	+1	52	22N	4	53E	-40	28	+4	30	+0	51
Ankara	Turkey*	+2	39	57N	32	54E	+11	36	+3	30	+0	33

विदेशों के प्रमुख नगर एवं स्थान

स्थान		मध्यरेखा समय	अक्षांश		रेखांश		मध्यमान्तर		भारतीय (स्टै.) समय से म.रे.स		साम्पातिक संस्कार	
		घं.	°	'	°	'	मि.	सै.	घं.	मि.	मि.	सै.
Athens	Greece	+2	37	54N	23	52E	−24	32	+3	30	+0	38
Auckland	N.Zeland	+12	36	52S	174	42E	−21	12	−6	30	−1	01
Baghdad	Iraq	+3	33	20N	44	27E	−2	12	+2	30	+0	25
Bangkok	Thailand	+7	13	44N	100	30E	−18	00	−1	30	−0	12
Beirut	Lebanon*	+2	33	50N	35	25E	+21	40	+3	30	+0	31
Belgrade	Yugoslavia	+1	44	50N	20	30E	+22	00	+4	30	+0	41
Berlin	Germany	+1	52	32N	13	25E	−6	20	+4	30	+0	45
Birmingham	England*	0	52	30N	1	50W	−7	20	+5	30	+0	55
Bonn	Germany	+1	50	44N	7	04E	−31	44	+4	30	+0	50
Boston	U.S.A*	−5	42	21N	71	04W	+15	44	+10	30	+1	41
Brasilia	Brazil	−3	16	13S	44	29W	+2	04	+8	30	+1	23
Brussels	Belgium	+1	50	52N	4	22E	−42	32	+4	30	+0	51
Bucharest	Romania	+2	44	25N	26	07E	−15	32	+3	30	+0	37
Budapest	Hungary	+1	47	29N	19	03E	+16	12	+4	30	+0	42
Buenos Aires	Argentina	−3	34	35S	58	20W	−53	20	+8	30	+1	32
Cairo	Egypt*	+2	30	08N	31	34E	+6	16	+3	30	+0	34
Canberra	Australia	+10	35	19S	149	00E	−4	00	−4	30	−0	44
Cape Town	S. Africa	+2	33	56S	18	29E	−46	04	+3	30	+0	42
Chicago	U.S.A.*	−6	41	53N	87	38W	+9	28	+11	30	+1	52
Copenhagen	Denmark	+1	55	40N	12	30E	−10	00	+4	30	+0	40
Damascus	Syria*	+2	33	30N	36	14E	+24	56	+3	30	+0	30
Dar-es-Salam	Tanzania	+3	6	50S	39	17E	−22	52	+2	30	+0	28
Djakarta	Indonesia	+7	6	16S	106	53E	+7	32	−1	30	−0	16
Dublin	Ireland	+1	53	20N	6	15W	−85	00	+4	30	+0	58
Edinburgh	Scotland	0	55	56N	3	11W	−12	44	+5	30	+0	56
Frankfurt	Germany	+1	50	06N	8	40E	−25	20	+4	30	+0	48
Geneva	Switz.	+1	46	12N	6	09E	−35	24	+4	30	+0	50
Glasgow	Scotland	0	55	52N	4	15W	−17	00	+5	30	+0	57
Greenwich	England	0	51	29N	0	00	0	00	+5	30	+0	54
Hanoi	Vietnam	+7	21	02N	105	52E	+3	28	−1	30	−0	15
Havana	Cuba*	−5	23	08N	82	22W	−29	28	+10	30	+1	48
Helsinki	Finland	+2	60	09N	24	57E	−20	12	+3	30	+0	38
Hongkong	Hongkong*	+8	22	18N	114	10E	−23	20	−2	30	−0	21
Honolulu	Hawaii Is.	−10	22	00N	156	00W	−24	00	+15	30	+2	37
Istanbul	Turkey*	+2	41	00N	29	00E	−4	00	+3	30	+0	35
Jerusalem	Israel	+2	31	46N	35	14E	+20	56	+3	30	+0	31
Khartoum	Sudan*	+2	15	35N	32	35E	+10	20	+3	30	+0	33
Kabul	Afghan.	+4½	34	33N	69	12E	+6	48	+1	00	+0	09
Kandahar	Afghan.	4½	31	32N	65	30E	−8	00	+1	00	+0	11
Kuala Lumpur	Malaysia	+7½	3	09N	101	43E	−43	08	−2	00	−0	13
Kuwait	Kuwait	+3	29	30N	47	45E	+11	00	+2	30	+0	23
Kwangchow	China	+8	23	06N	113	16E	−26	56	−2	30	−0	20
Lagos	Nigeria	+1	6	25N	3	27E	−46	12	+4	30	+0	52
Leipzig	Germany	+1	51	20N	12	23E	−10	28	+4	30	+0	46
Leeds	England*	0	53	50N	1	35W	+6	20	+5	30	+0	55
Leningrad	Russia	+3	59	57N	30	18E	−58	48	+2	30	+0	34
Lhasa	Tibet	+6	29	40N	91	07E	+4	28	−0	30	−0	06
Lima	Peru	−5	12	02S	77	02W	−8	08	+10	30	+1	45
Lisbon	Portugal	+1	38	43N	9	11W	−96	44	+4	30	+1	00
Liverpool	England*	0	53	25N	2	55W	−11	40	+5	30	+0	56
London	England*	0	51	32N	0	05W	−0	20	+5	30	+0	54
Los Angeles	U.S.A.*	−8	34	03N	118	17W	+6	52	+13	30	+2	12
Madrid	Spain	+1	40	25N	3	41W	−74	44	+4	30	+0	57

स्थान		मध्यरेखा समय	अक्षांश		रेखांश		मध्यमान्तर		भारतीय (स्टै.) समय से म.रे.स		साम्पातिक संस्कार	
		घं.	°	'	°		मि.	सै.	घं.	मि.	मि.	सै.
Manchester	England*	0	53	30N	2	15W	-9	00	+5	30	+0	56
Mandalay	Burma	+6½	22	00N	96	05E	-5	40	-1	00	-0	09
Manila	Philippin	+8	14	30N	121	30E	+6	00	-2	30	-0	26
Mauritius	Ind.Ocen.	+4	20	17S	57	33E	-9	48	+1	30	-0	16
Mecca	Sd. Arabia	+3	21	25N	39	54E	-20	24	+2	30	+0	28
Melbourne	Australia	+10	37	50S	144	59E	-20	04	-4	30	-0	41
Mexico City	Mexico	-6	19	26N	99	01W	-36	04	+11	30	+1	59
Milan	Italy*	+1	45	28N	9	11E	-23	16	+4	30	+0	48
Mombasa	Kenya	+3	4	00S	39	40E	-21	20	+2	30	+0	28
Montreal	Canada*	-5	45	30N	73	34W	+5	44	+10	30	+1	43
Moscow	Russia	+3	55	45N	37	34E	-29	44	+2	30	+0	30
Moulmein	Burma	+6½	16	30N	97	38E	+0	32	-1	00	-0	10
Nairobi	Kenya	+3	1	18S	36	52E	-32	32	+2	30	+0	30
Newcastle	England*	0	52	27N	9	04W	-36	16	+5	30	+1	00
New York	U.S.A.*	-5	40	43N	74	00W	+4	00	+10	30	+1	43
Osaka	Japan	+9	34	40N	135	30E	+2	00	-3	30	-0	35
Oslo	Norway*	+1	59	54N	10	45E	-17	00	+4	30	+0	47
Ottawa	Canda*	-5	45	24N	75	43W	-2	52	+10	30	+1	44
Paris	France	+1	48	50N	2	20E	-50	40	+4	30	+0	53
Pegu	Burma	+6½	17	20N	96	29E	-4	04	-1	00	-0	09
Peking	China	+8	39	55N	116	28E	-14	08	-2	30	-0	22
Perth	Australia	+8	32	00S	115	50E	-16	40	-2	30	-0	22
Philadelphia	U.S.A.*	-5	39	58N	75	17W	-1	08	+10	30	+1	44
Phnom Penh	Campuchia	+7	11	35N	104	57E	-0	12	-1	30	-0	15
Prague	Czeco.	+1	50	05N	14	24E	-2	24	+4	30	+0	45
Prome	Burma	+6½	18	47N	95	15E	-9	00	-1	00	-0	08
Quebec	Canda*	-5	46	48N	71	13W	+15	08	+10	30	+1	41
Rangoon	Burma	+6½	16	47N	96	10E	-5	20	-1	00	-0	09
Rio de Janeiro	Brazil	-3½	22	54S	43	12W	+7	12	+8	30	+1	23
Riyadh	Sd. Arabia	+3	24	39N	46	41E	+6	44	+2	30	+0	13
Rome	Italy*	+1	41	55N	12	27E	-10	12	+4	30	+0	46
Saigon	Vietnam	+8	10	49N	106	41E	-53	16	-2	30	-0	16
San Francisco	U.S.A.*	-8	37	48N	122	25W	-9	40	+13	30	+2	15
Seoul	S. Korea	+9	37	31N	127	06E	-31	36	-3	30	-0	29
Shanghai	China	+8	31	14N	121	28E	+5	52	-2	30	-0	26
Singapore	Singapore	+7½	1	21N	103	54E	-34	24	-2	00	-0	14
Sofia	Bulgaria	+2	42	41N	23	21E	-26	36	+3	30	+0	39
Stockholm	Sweden	+1	59	20N	18	00E	+12	00	+4	30	+0	42
Sydney	Australia	+10	33	52S	151	12E	+4	48	-4	30	-0	45
Taipei	Taiwan*	+8	23	30N	121	00E	+4	00	-2	30	-0	25
Taskent	Russia	+6	41	20N	69	18E	-82	48	-0	30	+0	09
Tehran	Iran	+3½	35	41N	51	26E	-4	16	+2	00	+0	20
Tokyo	Japan	+9	35	40N	139	33E	+18	12	-3	30	-0	37
Toronto	Canada*	-5	43	39N	79	23W	-17	32	+10	30	+1	46
Tripoli	Libya	+1	32	45N	13	15E	-7	00	+4	30	+0	46
Vienna	Austria	+1	48	12N	16	22E	+5	28	+4	30	+0	44
Volgograd	Russia	+4	48	44N	44	25E	-62	20	+1	30	+0	25
Warsaw	Poland*	+1	52	12N	21	00E	+24	00	+4	30	+0	40
Washington DC	U.S.A.*	-5	38	55N	77	04W	-8	16	+10	30	+1	45
Wellington	N.Zealand	+12	41	16S	174	47E	-20	52	-6	30	-1	01
Zurich	Switz.	+1	47	26N	8	22E	-26	32	+4	30	+0	49

लग्न सारिणी बनाने की विधि

हरिद्वार का अक्षांश 30 अंश है, तथा मेषादि राशियों का स्वोदय पलात्मक, घट्यात्मक प्रत्येक मेषादि राशि के समाप्ति के घटी पल का मान एवं प्रत्येक राशि के एक-एक अंशका पल व विपल में मापदण्ड का मान निम्नोक्त सारणी में लिखा है। निरयन मान से 11 राशि के 6 अंश पर तथा सायन मान से मेषारम्भ पर 0 घटी 0 पल ० विपल लिखा है। इस मेषारम्भकाल से ३० अंश तक ७ पल लगातार जोड़ने पर सायन वृषारम्भ के कालम में ३ घटी 30 पल लिखा है जो निरयन मेष राशि के 6 अंश पर है। इसके आगे वृषराशि के एक अंश का मान 8 पल 8 विपल लगातार जोड़ने पर सायन मिथुन राशि के कालम में जो निरयन वृष राशि का भी कालम है 7 घटी 34 पल लिखा है इस प्रकार प्रत्येक राशि के आरम्भ काल में प्रत्येक राशिके एक अंश मान लगातार 30 बार जोड़ने पर सायन राशियों के प्रारम्भ के कालम घटी व पल का योग लिखा है। इस प्राकर भिन्न-भिन्न अक्षांशों के स्वोदय मानों के प्रत्येक राशि के एक-एक अंश का मान पल व विपल में निकाल कर उपर्युक्त प्रक्रिया से सायन मेषादि 12 राशियों के कालम में घटी व पलों का योग प्राप्त होने से अभीष्ट अक्षांश की लग्न सारणीयाँ बन जाती है। जिस प्रकार लंकोदय के मेषादि राशियों में हरिद्वार के चरपल के वियोग व योग से हरिद्वार के प्रत्येक राशि के स्वोदय पल निकालने की विधि है उस प्रकार ही प्रत्येक अक्षांश के 12 राशियों के स्वोदय मान पलात्मक ज्ञात कर प्रत्येक राशि के स्वोदय पलों में 30 का भाग देने पर प्रत्येक राशि के 1 अंश के पल व विपल ज्ञात हो जाते हैं। तथा स्वोदय पलों में 60 का भाग देने पर प्रत्येक राशि के घटीपल में मान प्राप्त हो जाते हैं।

हरिद्वार के स्वोदयपल प्रत्येक राशि के निकालने की विधि ऊपर लिख दी गई है इस प्रकार ही सब देशों के अक्षांशों पर स्वोदयपल प्राप्त हो जाते हैं। हरिद्वार के मीन व मेष 210 पल, वृष कुम्भ के 244, मिथुन मकर के 299, कर्क धनु के 345, सिंह वृश्चिक के 354, और कन्या तुला के 348 पल है प्रत्येक राशि के पलों में 30 का भाग देने पर प्रत्येक राशि के 1 अंश का मान पल व विपल प्राप्त होता है तथा प्रत्येक राशि के स्वोदय पलों में 60 का भाग देने पर घटी व पल में मान प्राप्त होता है।

11 **अक्षांश की पलभा** 2 **अंगुल** 22 **प्रत्यंगुल** / स्वोदयपल मीन मेष का घट्यादिमान 4 घ. 15 पल, वृष कुम्भ का 4 । 40 मिथुन मकर का 5 । 14 कर्क धनु का 5 । 30 सिंह वृश्चिक का 5 । 18 कन्या तुला का 5 । 3 घटी पलों में है। तथा मीन मेष का एक अंश का मान 8 पल 30 विपल वृष कुम्भ का 9 पल 20 विपल मिथुन मकर का 10 । 28 कर्क धनु का 11 । 00 सिंह वृश्चिक का 10 । 36 कन्या तुला का 10 पल और 6 विपल है। पूर्वोक्त तालिका के अनुसार इन उपकरणों से 11 अक्षांश की सारणी का निर्माण किया जा सकता है। 11 राशि 6 अंश पर 00 घटी 00 पल लिखकर 1 राशि 6 अं. 2 रा. 6 अंश पर घट्यात्मक मान का योग अन्य लग्न सारणियों के अनुसार मिलता चला जायगा। इस प्रकार 13,15,17 अक्षांशों की सारणी के उपकरण स्वोदयमान, पलात्मक, घटयात्मक तथा प्रत्येक राशि के एक अंश का मान नीचे तालिका में लिखा है इसके आधार 13,15,17 अक्षांशों की लग्न सारणी का निर्माण कर सकते हैं।

यह हरिद्वार की ३० अक्षांश उत्तर की स्वोदय तालिका है।							
राशि	स्वोदय पल	स्वोदय के घटी व पल	सायन राशि का आरम्भ	निरयन	घटीपल में योग	प्रत्येक राशि के १ अंश का मान	
० मेष	210	3 | 30	वृष	00 | 6	3—30	7 | 0	3 | 30 + 4 | 4
१ वृष	244	4 | 4	मिथुन	1 | 6	7 | 34	8 | 8	7 | 34 + 4 | 59
२ मिथुन	299	4 | 59	कर्क	2 | 6	12 | 33	9 | 58	12 | 33 + 5 | 45
3 कर्क	345	5 | 45	सिंह	3 | 6	18 | 18	11 | 30	18 | 18 + 5 | 54
4 सिंह	354	5 | 54	कन्या	4 | 6	24 | 12	11 | 48	24 | 12 + 5 | 48
5 कन्या	348	5 | 48	तुला	5 | 6	30 | 00	11 | 36	30 | 00 + 5 | 48
6 तुला	348	5 | 48	वृश्चिक	6 | 6	35 | 48	11 | 36	35 | 48
7 वृश्चिक	354	5 | 54	धनु	7 | 6	41 | 42	11 | 48	41 | 52 + 5 | 45
8 धनु	345	5 | 45	मकर	8 | 6	47 | 27	11 | 30	47 | 27 + 4 | 59
9 मकर	299	4 | 59	कुम्भ	9 | 6	52 | 56	9 | 58	52 | 26 + 4 | 4
१० कुम्भ	244	4 | 4	मीन	10 | 6	56 | 30	8 | 8	56 | 30 + 3 | 30
11 मीन	210	3 | 30	मेष	11 | 6	0 | 0 | 0	7 | 00	00 | 00

अक्षांश/ पलभा		स्वोदय पलात्मक मान						स्वोदय घट्यात्मक मान						प्रत्येक राशि का एक का मान पल विपल में					
		मेष मीन	वृष कुंभ	मिथुन मकर	कर्क धनु	सिंह वृश्चिक	कन्या तुला							मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
13	2 | 48	251	281	313	331	317	307	4 | 11	4 | 41	5 | 13	5 | 31	5 | 17	5 | 7	8 | 22	9 | 22	10 | 26	11 | 2	10 | 34	10 | 14
15	3 | 16	246	273	311	333	325	312	4 | 6	4 | 33	5 | 11	5 | 33	5 | 25	5 | 12	8 | 12	9 | 6	10 | 22	11 | 6	10 | 50	10 | 24
18	3 | 43	242	273	310	316	325	334	4 | 2	4 | 33	5 | 10	5 | 34	5 | 16	5 | 25	8 | 4	9 | 6	10 | 20	11 | 8	10 | 50	10 | 32

पाण्डिचेरी, बंगलौर, पोर्टब्लेयर, कोयंबटूर, कालीकट, निकोबार,

12 अक्षांश पलभा (2/33) स्वोदयपल:— 253, 279, 314, 330, 319, 305.

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 8/26	3 22 24	3 30 50	3 39 16	3 47 42	3 56 8	4 4 34	4 13 00	4 22 18	4 31 36	4 40 54	4 50 12	4 59 30	5 8 48	5 18 6	5 27 24	5 36 42	5 46 00	5 55 18	6 4 36	6 13 54	6 23 12	6 32 30	6 41 48	6 51 6	7 00 24	7 9 42	7 19 00	7 28 18	7 37 36	7 46 54
1 वृष 9/18	7 56 12	8 5 30	8 14 48	8 24 6	8 33 24	8 42 42	8 52 00	9 2 28	9 12 56	9 23 24	9 33 52	9 44 20	9 54 48	10 5 16	10 15 44	10 26 12	10 36 40	10 47 8	10 57 36	11 8 04	11 18 32	11 29 00	11 39 28	11 49 56	12 00 24	12 10 52	12 21 20	12 31 48	12 41 16	12 51 44
2 मिथुन 10/28	13 03 12	13 13 40	13 24 8	13 34 36	13 45 4	13 55 32	14 6 00	14 17 00	14 28 00	14 39 00	14 50 00	15 1 00	15 12 00	15 23 00	15 34 00	15 45 00	15 56 00	16 7 00	16 18 00	16 29 00	16 40 00	16 51 00	17 2 00	17 13 00	17 24 00	17 35 00	17 46 00	17 57 00	18 8 00	18 19 00
3 कर्क 11/00	18 30 00	18 41 00	18 52 00	19 3 00	19 14 00	19 25 00	19 36 00	19 46 38	19 57 16	20 7 54	20 18 32	20 29 10	20 39 48	20 50 26	21 1 4	21 11 42	21 22 20	21 32 58	21 43 36	21 54 14	22 4 52	22 15 30	22 26 8	22 36 46	22 47 24	22 58 02	23 8 40	23 19 18	23 29 56	23 40 34
4 सिंह 10/38	23 51 12	24 1 50	24 12 28	24 23 6	24 33 44	24 44 22	24 55 00	25 5 10	25 15 20	25 25 30	25 35 40	25 45 50	25 56 00	26 6 10	26 16 20	26 26 30	26 36 40	26 46 50	26 57 00	27 7 10	27 17 20	27 27 30	27 37 40	27 47 50	27 58 00	28 8 10	28 18 20	28 28 30	28 38 40	28 48 50
5 कन्या 10/10	28 59 00	29 9 10	29 19 20	29 29 30	29 39 40	29 49 50	30 00 00	30 10 10	30 20 20	30 30 30	30 40 40	30 50 50	31 00 00	31 11 10	31 21 20	31 31 30	31 41 40	31 51 50	32 01 00	32 12 10	32 22 20	32 32 30	32 42 40	32 52 50	33 02 00	33 13 10	33 23 20	33 33 30	33 43 40	33 53 50
6 तुला 10/10	34 03 00	34 14 10	34 24 20	34 34 30	34 44 40	34 54 50	35 5 00	35 15 38	35 26 16	35 36 54	35 47 32	35 58 10	36 8 48	36 19 26	36 30 4	36 40 42	36 51 20	37 1 58	37 12 36	37 23 14	37 33 52	37 44 30	37 55 09	38 5 46	38 16 24	38 27 2	38 37 40	38 48 18	38 58 56	39 9 34
7 वृश्चिक 10/38	39 20 12	39 30 50	39 41 20	40 52 6	40 2 44	40 13 22	40 24 00	40 35 00	40 46 00	40 57 00	41 8 00	41 19 00	41 30 00	41 41 00	41 52 00	42 3 00	42 14 00	42 25 00	42 36 00	42 47 00	42 58 00	43 9 00	43 20 00	43 31 00	43 42 00	43 53 00	44 4 00	44 15 00	44 26 00	44 37 00
8 धनु 11/00	44 48 00	44 59 00	45 10 00	45 21 00	45 32 00	45 43 00	45 54 00	46 4 28	46 14 56	46 25 24	46 35 52	46 46 20	46 56 48	47 7 16	47 17 44	47 28 12	47 38 40	47 49 8	47 59 36	48 10 4	48 20 32	48 31 00	48 41 28	48 51 56	49 2 24	49 12 52	49 23 20	49 33 48	49 44 16	49 54 44
9 मकर 10/28	50 5 12	50 15 30	50 26 8	50 36 36	50 47 4	50 57 32	51 8 00	51 17 18	51 26 36	51 35 54	51 45 12	51 54 30	52 3 48	52 13 6	52 22 24	52 31 42	52 41 00	52 50 18	52 59 36	53 8 54	53 18 12	53 27 30	53 36 48	53 46 6	53 55 24	54 4 42	54 14 00	54 23 18	54 32 36	54 41 54
10 कुम्भ 9/18	54 51 12	55 00 30	55 9 48	55 19 6	55 28 24	55 37 42	55 47 00	55 55 26	56 3 52	56 12 18	56 20 44	56 29 10	56 37 36	56 46 2	56 54 28	57 2 54	57 11 20	57 19 46	57 28 12	57 36 38	57 45 4	57 53 30	58 1 56	58 10 22	58 18 48	58 27 14	58 35 40	58 44 6	58 52 22	59 00 58
11 मीन 8/26	00 09 24	59 17 50	59 26 16	59 34 42	59 43 8	59 58 34	00 00 00	0 8 26	0 25 18	0 25 18	0 33 44	0 42 10	0 50 36	0 59 02	1 07 28	1 15 54	1 24 20	1 32 46	1 41 12	1 49 38	1 50 4	2 6 30	2 14 56	2 23 22	2 31 48	2 40 14	2 48 40	2 57 06	3 5 32	3 13 50

उडुपी, अनन्तपुर, अरकोट, बेलूर, चेन्नई, चित्तूर, गुड्डापा, गौरीबिदनौर, हिन्दुपुर, कालाहस्ती, कावालूर, कोलार, मंगलौर, बैलोरी, गुडूर, श्रीहरिकोटा, तिरुपति

(14) अक्षांश। पलभा 2/59/31 स्वोदयपल:— 249, 275, 312, 332, 323, 309

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 8/18	3 19 12	3 27 30	3 35 48	3 44 6	3 52 24	4 00 42	4 9 0	4 18 10	4 27 20	4 36 30	4 45 40	4 54 50	5 4 00	5 13 10	5 22 20
1 वृष 9/10	7 48 00	7 58 10	8 07 20	8 16 30	8 25 40	8 34 50	8 44 00	8 54 24	9 4 48	9 15 12	9 25 36	9 36 00	9 46 24	9 56 48	10 7 12
2 मिथुन 10/24	12 53 36	13 4 00	13 14 24	13 24 48	13 35 12	13 45 36	13 56 0	14 7 4	14 18 8	14 29 12	14 40 16	14 51 20	15 2 24	15 13 28	15 24 32
3 कर्क 11/4	18 21 36	18 32 40	18 43 44	18 54 48	19 5 52	19 16 56	19 28 00	19 38 46	19 49 32	20 00 18	20 11 4	20 21 50	20 32 36	20 43 22	20 54 8
4 सिंह 10/46	23 56 24	23 57 10	24 7 56	24 18 42	24 29 42	24 40 14	24 51 0	25 1 18	25 11 36	25 21 54	25 32 12	25 42 30	25 52 48	26 3 6	26 13 24
5 कन्या 10/18	28 58 12	29 8 30	29 18 48	29 29 6	29 39 24	29 49 42	30 00 00	30 10 18	30 20 36	30 30 54	30 41 12	30 51 30	31 1 48	31 12 6	31 22 24
6 तुला 10/18	34 7 12	34 17 30	34 27 48	34 38 6	34 47 24	34 58 42	35 9 0	35 19 46	35 30 32	35 41 18	35 52 4	36 2 50	36 13 36	36 24 22	36 35 8
7 वृश्चिक 10/46	39 27 24	39 38 10	39 48 56	39 59 42	40 10 28	40 21 14	40 32 0	40 43 04	40 54 8	41 5 12	41 16 16	41 27 20	41 38 24	41 49 28	42 00 32
8 धनु 11/4	44 57 36	45 9 40	45 18 44	45 30 48	45 41 52	45 52 56	46 04 00	46 08 54	46 14 48	46 35 12	46 45 36	46 56 00	47 6 24	47 16 42	47 27 12
9 मकर 10/24	50 13 36	50 24 00	50 34 24	50 44 48	50 55 12	51 5 36	51 16 00	51 25 10	51 34 20	51 43 30	51 52 40	52 1 50	52 11 00	52 20 10	52 29 20
10 कुम्भ 9/10	54 56 00	55 05 10	55 14 20	55 23 30	55 32 40	55 41 50	55 51 00	55 59 18	56 7 36	56 15 54	56 24 12	56 32 30	56 40 48	56 49 6	56 57 24
11 मीन 8/18	59 10 12	59 18 30	59 26 48	59 35 6	59 43 24	59 51 42	00 00 00	0 8 18	0 16 36	0 24 54	0 33 12	0 41 30	0 49 48	0 57 6	1 6 24

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 8/18	5 31 30	5 40 40	5 49 50	5 58 00	6 8 10	6 17 20	6 26 30	6 35 40	6 44 50	6 54 00	7 3 10	7 12 20	7 21 30	7 30 40	7 39 50
1 वृष 9/10	10 17 36	10 28 00	10 38 24	10 48 48	10 58 12	11 9 36	11 20 00	11 30 24	11 40 48	11 51 12	12 1 36	12 12 00	12 22 24	12 32 48	12 43 12
2 मिथुन 10/24	15 35 36	15 46 40	15 57 44	16 8 48	16 19 52	16 30 56	16 42 00	16 53 4	17 4 8	17 15 12	17 26 16	17 37 20	17 48 24	17 58 28	18 10 32
3 कर्क 11/4	21 4 54	21 15 40	21 26 26	21 37 12	21 47 58	21 58 44	22 9 30	22 20 16	22 31 2	22 41 48	22 52 34	23 3 20	23 14 6	23 24 52	23 35 35
4 सिंह 10/46	26 23 42	26 34 00	26 44 18	26 54 36	27 4 54	27 15 12	27 25 30	27 35 48	27 46 6	27 56 24	28 6 42	28 17 00	28 27 18	28 37 36	28 47 54
5 कन्या 10/18	31 32 42	31 43 00	31 53 18	32 3 36	32 13 54	32 24 12	32 34 30	32 44 48	32 55 6	33 5 24	33 15 42	33 26 00	33 39 18	33 46 36	33 56 54
6 तुला 10/18	36 45 54	36 56 40	37 7 26	37 18 12	37 28 58	37 39 44	37 50 30	38 1 46	38 11 2	38 22 48	38 33 35	38 44 20	38 55 6	39 5 52	39 19 38
7 वृश्चिक 10/46	42 11 39	42 22 40	42 33 44	42 44 48	42 55 52	43 6 56	43 19 00	43 29 4	43 40 8	43 51 12	44 2 16	44 13 20	44 25 24	44 35 28	44 46 28
8 धनु 11/4	47 37 36	47 48 00	47 58 24	48 8 48	48 19 12	48 29 36	48 40 00	48 50 24	49 00 48	49 11 12	49 21 36	49 32 00	49 42 24	49 52 42	50 3 12
9 मकर 10/24	52 39 30	52 47 40	52 56 50	53 06 00	53 15 10	53 24 20	53 33 30	53 42 40	53 51 50	54 02 00	54 10 10	54 13 20	54 28 30	54 37 40	54 46 50
10 कुम्भ 9/10	57 5 42	57 14 00	57 22 18	57 30 36	57 38 54	57 47 12	57 55 30	58 3 48	58 12 6	58 20 24	58 28 42	58 36 00	58 45 18	58 53 36	59 1 54
11 मीन 8/18	1 14 42	1 23 00	1 31 18	1 39 36	1 47 54	1 56 12	2 4 30	2 12 48	2 21 6	2 29 24	2 37 42	2 46 00	2 54 10	3 2 39	3 10 54

रायचूर, पनजी, ओंगोली, कुरनूल, काखार, हुबली, गुन्टूर, धावाड, बेलगाँव, बापाटला

(16) अक्षांश। पलभा 3/26/27 स्वोदयपल:- 245, 272, 311, 333, 326, 313

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 8/10	3 16 00	3 24 10	3 32 20	3 40 30	3 48 40	3 56 50	4 5 00	4 14 4	4 23 8	4 32 12	4 41 16	4 50 20	4 59 24	5 8 28	5 17 32	5 26 36	5 35 40	5 44 44	5 53 48	6 2 52	6 11 56	6 21 00	6 30 4	6 38 8	6 48 12	6 57 16	7 6 20	7 15 24	7 24 28	7 33 32
1 वृष 9/4	7 42 36	7 51 40	8 00 44	8 9 48	8 18 52	8 27 56	8 37 00	8 47 22	8 57 44	9 8 6	9 18 28	9 28 50	9 39 12	9 49 34	9 59 56	10 10 18	10 20 40	10 31 02	10 41 24	10 51 46	11 2 8	11 12 30	11 22 52	11 33 14	11 43 36	11 53 58	12 4 20	12 14 20	12 25 4	12 35 26
2 मिथुन 10/22	12 45 48	12 56 10	13 6 32	13 16 54	13 27 16	13 37 38	13 48 00	13 59 6	14 10 12	14 21 18	14 32 24	14 43 30	14 54 36	15 5 42	15 16 48	15 27 54	15 39 00	15 50 6	16 1 12	16 12 18	16 23 24	16 34 30	16 45 36	16 56 42	17 7 48	17 17 54	17 30 00	17 41 6	17 52 12	18 3 18
3 कर्क 11/6	18 14 24	18 25 30	18 36 36	18 47 42	18 58 48	19 9 54	19 21 00	19 31 52	19 42 44	19 53 36	20 4 28	20 15 20	20 26 12	20 37 4	20 47 56	20 58 48	21 9 40	21 20 32	21 31 24	21 42 16	21 53 8	22 4 00	22 14 52	22 25 44	22 36 36	22 47 28	22 58 20	23 9 12	23 20 4	23 30 56
4 सिंह 10/52	23 41 48	23 52 40	24 3 32	24 14 24	24 25 16	24 37 8	24 47 00	24 57 26	25 7 52	25 18 18	25 28 44	25 39 10	25 49 36	26 00 02	26 10 28	26 20 54	26 31 20	26 41 46	26 52 12	27 2 38	27 13 04	27 23 30	27 33 56	27 44 22	27 54 48	28 5 14	28 15 40	28 26 3	28 36 32	28 46 58
5 कन्या 10/26	28 57 24	29 7 50	29 18 16	29 28 42	29 39 8	29 49 34	30 0 0	30 10 26	30 20 52	30 31 18	30 41 44	31 2 10	31 12 36	31 23 2	31 33 28	31 43 54	31 54 20	32 4 46	32 15 12	32 25 38	32 26 4	32 36 30	32 46 56	32 57 22	33 7 48	33 18 14	33 28 40	33 39 6	33 49 32	33 59 58
6 तुला 10/26	34 10 24	34 20 50	34 31 16	34 41 42	34 52 8	35 2 34	35 13 00	35 23 52	35 34 44	35 45 36	35 56 28	36 7 20	36 18 12	36 29 4	36 39 56	36 50 48	37 1 40	37 12 32	37 23 24	37 34 16	37 45 8	37 56 00	38 6 52	38 17 44	38 28 36	38 39 28	38 50 20	39 1 12	39 12 4	39 22 56
7 वृश्चिक 10/52	39 33 48	39 44 40	39 55 32	40 6 24	40 17 16	40 28 8	40 39 00	40 50 6	41 1 12	41 12 18	41 23 24	41 34 30	41 45 36	41 56 42	42 7 48	42 18 54	42 30 00	42 41 6	42 52 12	43 3 18	43 14 24	43 25 30	43 36 36	43 47 42	43 58 48	44 9 54	44 21 00	44 32 6	44 43 12	44 54 18
8 धनु 11/6	45 5 24	45 16 30	45 27 36	45 38 42	45 49 48	46 00 54	46 12 00	46 22 22	46 32 44	46 43 06	46 53 28	47 3 50	47 14 12	47 24 34	47 34 56	47 45 18	47 55 40	48 6 02	48 16 24	48 26 46	48 37 8	48 47 30	48 57 52	49 8 14	49 18 36	49 28 58	49 39 20	49 49 42	50 00 4	50 10 26
9 मकर 10/22	50 20 48	50 31 10	50 41 32	50 51 54	51 2 16	51 12 38	51 23 00	51 32 4	51 41 8	51 50 12	51 59 16	52 8 20	52 17 24	52 26 28	52 35 32	52 44 36	52 53 40	53 2 44	53 11 48	53 20 52	53 29 56	53 39 00	53 48 4	53 57 8	54 6 12	54 15 16	54 24 20	54 33 24	54 42 28	54 51 32
10 कुम्भ 9/4	55 00 36	55 9 40	55 18 44	55 27 48	55 36 52	55 45 56	55 55 00	56 3 10	56 11 20	56 19 30	56 27 40	56 35 50	56 44 00	56 52 10	57 00 20	57 8 30	57 16 40	57 24 50	57 33 00	57 41 10	57 49 20	57 57 30	58 5 40	58 13 50	58 22 00	58 30 10	58 38 20	58 46 30	58 54 40	59 02 50
11 मीन 8/10	59 11 00	59 19 10	59 27 20	59 35 30	59 43 40	59 51 50	00 00 00	0 8 10	0 16 20	0 24 30	0 32 40	0 40 50	0 49 00	0 57 10	1 5 20	1 13 30	1 21 40	1 29 50	1 38 00	1 46 10	1 54 20	2 02 30	2 10 40	2 18 50	2 27 00	2 35 10	2 43 20	2 51 30	2 59 40	3 7 50

अमलापुर, भ्रदाचलम्, बीजापुर, एरेलू, हैदराबाद, काकीनाडा, कराड, खम्माम, सिकन्दराबाद, शोलापुर, श्री काकलुम, सांगली, संतारा, नालगोंडा, ओसामाबाद, राजामुंदरी, रत्नागिरि, सागर , कोल्हापुर, महबूबनगर, मीराज विजयवाडा विशाखापट्टम् , ब्रासिलिया

(17) अक्षांश। पलभा 3/40/7 स्वोद्‌यपल:— 242, 270, 310, 334, 328, 316

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 8/4	3 13 36	3 21 40	3 29 44	3 37 48	3 45 52	3 53 56	4 2 0	4 11 00	4 20 0	4 29 0	4 38 0	4 47 0	4 56 0	5 5 0	5 14 0
1 वृष 9/0	7 38 0	7 47 0	7 56 0	8 5 0	8 14 0	8 23 0	8 32 0	8 42 20	8 52 40	9 3 00	9 13 20	9 23 40	9 34 0	9 44 20	9 54 40
2 मिथुन 10/20	12 40 0	12 50 20	13 00 40	13 11 0	13 21 20	13 31 40	13 42 0	13 53 8	14 4 16	14 15 24	14 26 32	14 37 40	14 48 48	14 59 56	15 11 4
3 कर्क 11/8	18 9 12	18 20 20	18 31 28	18 42 36	18 53 44	19 4 52	19 16 0	19 26 56	19 36 52	19 48 48	19 59 44	20 10 40	20 21 36	20 32 32	20 43 28
4 सिंह 10/56	23 38 24	23 48 20	24 00 16	24 11 12	24 22 8	24 33 4	24 44 00	24 54 32	25 5 4	25 15 36	25 26 8	25 36 40	25 47 12	25 57 44	26 8 16
5 कन्या 10/32	28 56 48	29 7 20	29 17 52	29 28 24	29 36 56	29 49 28	30 0 0	30 10 32	30 21 4	30 31 36	30 42 8	30 52 40	31 3 12	31 13 44	31 24 16
6 तुला 10/32	34 12 48	34 23 20	34 33 52	34 44 24	34 54 56	35 5 28	35 16 0	35 26 56	35 37 52	35 48 48	35 59 44	36 10 40	36 21 36	36 32 32	36 43 28
7 वृश्चिक 10/56	39 38 24	39 49 20	40 00 16	40 11 12	40 22 8	40 33 4	40 44 0	40 55 8	41 6 16	41 17 24	41 28 32	41 39 40	41 50 48	42 1 56	42 13 4
8 धनु 11/8	45 11 12	45 22 20	45 33 28	45 44 36	45 55 44	46 6 52	46 18 0	46 28 20	46 38 40	46 49 0	46 59 20	47 9 40	47 20 0	47 30 20	47 40 40
9 मकर 10/20	50 26 00	50 36 20	50 46 40	50 57 00	51 7 20	51 17 40	51 28 0	51 37 0	51 46 0	51 55 0	52 4 0	52 13 0	52 22 0	52 31 0	52 40 0
10 कुम्भ 9/00	55 4 0	55 13 0	55 22 0	55 31 0	55 40 0	55 49 0	55 58 0	56 6 4	56 14 8	56 22 12	56 30 16	56 38 20	56 46 24	56 54 28	57 2 32
11 मीन 8/4	59 11 36	59 19 40	59 27 44	59 35 48	59 43 52	59 51 56	00 00 00	0 8 4	0 16 8	0 24 12	0 32 16	0 40 20	0 48 24	0 56 28	1 4 32

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 8/4	5 23 0	5 32 0	5 41 0	5 50 0	5 59 0	6 8 0	6 17 0	6 26 0	6 35 0	6 44 0	6 53 0	7 2 0	7 11 0	7 20 0	7 29 0
1 वृष 9/0	10 5 0	10 15 20	10 25 40	10 36 0	10 46 20	10 56 40	11 7 0	11 17 20	11 27 40	11 38 0	11 48 20	11 58 40	12 9 0	12 19 20	12 29 40
2 मिथुन 10/20	15 22 12	15 33 20	15 44 28	15 55 36	16 06 44	16 17 52	16 29 0	16 40 8	16 51 16	17 02 24	17 13 32	17 24 40	17 35 48	17 46 56	17 58 4
3 कर्क 11/8	20 54 24	21 5 20	21 16 16	21 27 12	21 38 8	21 48 4	22 0 0	22 10 56	22 21 52	22 32 48	22 43 44	22 54 44	23 5 36	23 16 32	23 27 28
4 सिंह 10/56	26 18 48	26 29 20	26 39 52	26 50 24	27 00 56	27 11 28	27 22 00	27 32 32	27 43 4	27 53 36	28 04 08	28 14 40	28 25 12	28 35 44	28 46 16
5 कन्या 10/32	31 34 48	31 45 20	31 55 52	32 6 24	32 16 56	32 27 28	32 38 00	32 48 32	32 59 4	33 9 36	33 20 08	33 30 40	33 41 12	33 51 44	34 2 16
6 तुला 10/32	36 54 24	37 5 20	37 16 16	37 27 12	37 38 8	37 49 04	38 00 00	38 10 56	38 21 52	38 32 48	38 43 44	38 54 40	39 5 36	39 16 32	39 27 28
7 वृश्चिक 10/56	42 24 12	42 35 20	42 46 28	42 57 36	43 8 44	43 19 52	43 31 00	43 42 8	43 53 16	44 4 24	44 15 32	44 26 40	44 37 48	44 48 56	45 00 4
8 धनु 11/8	47 51 00	48 1 20	48 11 40	48 22 00	48 32 20	48 42 40	48 53 0	49 3 20	49 13 40	49 24 00	49 34 20	49 44 40	49 55 00	50 5 20	50 15 40
9 मकर 10/20	52 49 00	52 58 0	53 7 0	53 16 0	53 25 0	53 34 0	53 43 0	53 52 0	54 1 0	54 10 0	54 19 0	54 28 0	54 27 0	54 46 0	54 55 0
10 कुम्भ 9/00	57 10 36	57 18 40	57 26 44	57 34 48	57 42 52	57 50 56	57 59 00	58 7 4	58 14 8	58 23 12	58 31 16	59 39 20	58 47 24	58 55 28	59 3 32
11 मीन 8/4	1 12 36	1 20 40	1 28 44	1 36 48	1 44 52	1 52 56	2 02 00	2 9 4	2 17 8	2 25 12	2 33 16	2 41 20	2 4 24	2 57 28	3 5 32

अक्षांश) अहमदनगर, अलीबाग, बहरामपुर, गोपालपुर, मुंबई, कल्याण, खोबाद, मैंडाक नादेड, निजामाबाद, पूना, रंगून पेगू, मेस्किको, जेमिका

19 अक्षांश पलभा 4/8 स्वोदयपल:– 238, 266, 308, 336, 332, 320.

Deb Me	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
0 मेष 7/56	3 10 24	3 18 20	3 26 16	3 34 12	3 42 8	3 50 4	3 58 00	4 6 52	4 15 44	4 24 36
1 वृष 8/52	7 30 48	7 39 40	7 48 32	7 57 24	8 6 16	8 15 8	8 24 00	8 34 16	8 44 32	8 54 48
2 मिथुन 10/16	12 30 24	12 40 40	12 50 56	13 1 12	13 11 28	13 21 44	13 32 00	13 43 12	13 54 24	14 5 36
3 कर्क 11/12	18 00 48	18 12 00	18 23 12	18 34 24	18 45 36	18 56 48	19 8 00	19 19 4	19 30 8	19 41 12
4 सिंह 11/4	23 33 36	23 44 40	23 55 44	24 6 48	24 17 52	24 28 56	24 40 00	24 50 40	25 1 20	25 12 00
5 कन्या 10/40	28 56 00	29 6 40	29 17 20	29 28 00	29 38 40	29 49 20	30 00 00	30 10 40	30 21 20	30 32 00
6 तुला 10/40	34 16 00	34 26 40	34 37 20	34 48 00	34 59 40	35 9 20	35 20 00	35 31 4	35 42 8	35 53 12
7 वृश्चिक 11/4	39 45 36	39 56 40	40 7 44	40 18 48	40 29 52	40 40 56	40 52 00	41 3 12	41 14 24	41 25 36
8 धनु 11/12	45 20 48	45 32 00	45 43 12	45 54 24	46 5 36	46 16 48	46 28 00	46 38 16	46 48 32	46 59 48
9 मकर 10/16	50 34 24	50 44 40	50 54 56	51 05 12	51 15 20	51 25 44	51 36 00	51 44 52	51 53 44	52 2 36
10 कुम्भ 8/52	55 8 48	55 17 40	55 26 32	55 35 24	55 44 16	55 53 8	56 2 00	56 9 56	56 17 52	56 25 48
11 मीन 7/56	59 12 24	59 20 20	59 28 16	59 36 12	59 44 8	59 52 4	00 00 00	0 7 56	0 15 52	0 23 48

Deb Me	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
0 मेष 7/56	4 33 28	4 42 20	4 51 12	5 00 4	5 8 56	5 17 48	5 26 40	5 35 32	5 44 24	5 53 16
1 वृष 8/52	9 5 4	9 15 20	9 25 36	9 35 52	9 45 8	9 56 24	10 6 40	10 16 56	10 27 12	10 37 28
2 मिथुन 10/16	14 16 42	14 28 00	14 39 12	14 50 24	15 10 36	15 12 48	15 24 00	15 35 12	15 46 24	15 57 36
3 कर्क 11/12	19 52 16	20 3 20	20 14 24	20 25 28	20 36 32	20 47 36	20 58 40	21 9 44	21 20 48	21 31 52
4 सिंह 11/4	25 22 40	253 3 20	25 44 00	25 54 40	26 5 20	26 16 00	26 26 40	26 37 20	26 48 00	26 58 40
5 कन्या 10/40	30 42 40	30 53 20	31 4 00	31 14 40	31 25 20	31 36 00	31 46 40	31 57 20	32 8 00	32 18 40
6 तुला 10/40	36 4 16	36 15 20	36 26 24	36 37 28	36 48 32	36 59 36	37 10 40	37 21 44	37 32 48	37 43 52
7 वृश्चिक 11/4	41 36 48	41 47 00	41 59 12	42 10 24	42 21 36	42 32 48	42 44 00	42 55 12	43 6 24	43 17 36
8 धनु 11/12	47 9 4	47 19 20	47 29 36	47 39 52	47 50 8	48 00 24	48 10 40	48 20 56	48 31 12	48 41 28
9 मकर 10/16	52 11 28	52 20 20	52 29 12	52 38 4	52 46 56	52 55 48	53 4 40	53 13 32	53 22 24	53 31 16
10 कुम्भ 8/52	56 33 44	56 41 40	56 49 36	56 57 32	57 5 28	57 13 24	57 21 20	57 29 16	57 37 12	57 45 8
11 मीन 7/56	0 31 44	0 39 40	0 47 36	0 55 32	1 3 28	1 11 24	1 19 20	1 27 16	1 35 12	1 43 8

Deb Me	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 7/56	6 2 8	6 11 00	6 20 52	6 29 44	6 37 36	6 46 28	6 55 20	7 4 12	7 13 4	7 21 56
1 वृष 8/52	10 47 44	10 58 00	11 8 16	11 18 32	11 28 48	11 38 4	11 49 20	11 59 36	12 9 53	12 20 8
2 मिथुन 10/16	16 8 48	16 20 00	16 31 12	16 42 24	16 53 36	17 4 48	17 16 00	17 27 12	17 38 24	17 49 36
3 कर्क 11/12	21 42 56	21 54 00	22 5 4	22 16 8	22 27 12	22 38 16	22 49 20	23 00 24	23 11 28	23 22 32
4 सिंह 11/4	27 9 20	27 20 00	27 30 40	27 41 20	27 52 00	28 2 40	28 13 20	28 24 00	28 34 40	28 45 20
5 कन्या 10/40	32 29 20	32 40 00	32 50 40	33 1 20	33 12 00	33 22 40	33 33 20	33 44 00	33 54 40	34 5 20
6 तुला 10/40	37 54 56	38 6 00	38 17 4	38 28 8	38 39 12	38 50 16	39 1 20	39 12 24	39 23 28	39 34 32
7 वृश्चिक 11/4	43 28 48	43 40 00	43 51 12	44 2 24	44 13 36	44 24 48	44 36 00	44 47 12	44 58 24	45 9 36
8 धनु 11/12	48 51 44	49 02 00	49 12 16	49 22 32	49 32 48	49 43 4	49 53 20	50 03 36	50 13 52	50 24 8
9 मकर 10/16	53 40 8	53 49 00	53 57 52	54 6 44	54 15 36	54 24 28	54 33 20	54 42 12	54 51 4	54 59 56
10 कुम्भ 8/52	57 53 4	58 1 00	58 8 56	58 16 52	58 24 48	58 32 44	58 40 40	58 48 36	58 59 32	59 4 28
11 मीन 7/56	1 51 4	1 59 00	2 6 56	2 14 52	2 22 48	2 30 44	2 38 40	2 46 36	2 54 32	3 2 28

अरवी, अमरेली, अंकलेश्वर, अजन्ता, आकोला, वर्धा, बेरावल, सूरत, संबलपुर, रायपुर, पोरबन्दर, नागपुर, जूनागढ़, जलगाँव, दुर्ग, दमन, धूलिया, कटक, भरोंच बोलनगिर, भुसावल, भद्रक, बलसोर, मक्का, हनोई, पोर्टलुइस

(21) अक्षांश। पलभा 4/36/23 स्वोदय पल 233, 262, 307,337, 336,325

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 7/46	3 6 24	3 14 10	3 21 56	3 29 42	3 37 28	3 45 14	3 53 00	4 00 44	4 10 28	4 19 12	4 27 56	4 36 40	4 45 24	4 54 8	5 3 52
1 वृष 8/44	7 22 36	7 31 20	7 40 4	7 48 48	7 57 32	8 6 16	8 15 00	8 25 14	8 35 28	8 45 42	8 55 56	9 6 10	9 16 24	9 26 38	9 36 52
2 मिथुन 10/14	12 20 36	12 30 50	12 41 4	12 51 18	13 1 32	13 11 46	13 22 00	13 33 14	13 44 28	13 55 42	14 6 56	14 18 10	14 29 24	14 40 38	14 51 52
3 कर्क 11/14	17 51 36	18 2 50	18 14 4	18 25 18	18 36 32	18 47 46	18 59 00	19 10 12	19 21 24	19 32 36	19 43 48	19 55 00	20 6 12	20 17 24	20 28 36
4 सिंह 11/12	23 27 48	23 39 00	23 50 12	24 1 24	24 12 36	24 23 48	24 35 00	24 45 50	24 56 40	25 7 30	25 18 20	25 29 10	25 40 00	25 50 50	26 1 40
5 कन्या 10/50	28 55 00	29 5 50	29 16 40	29 27 30	29 38 20	29 49 10	30 00 00	30 10 50	30 21 40	30 32 30	30 43 20	30 54 10	31 5 00	31 15 50	31 25 40
6 तुला 10/50	34 20 00	34 30 50	34 41 40	34 52 30	35 03 20	35 14 10	35 25 00	35 36 22	35 47 24	35 58 36	36 9 48	36 21 00	36 32 12	36 43 24	36 54 36
7 वृश्चिक 11/12	39 53 48	40 5 00	40 16 12	40 27 24	40 38 36	40 49 48	41 1 00	41 12 14	41 23 28	41 34 42	41 45 56	41 57 10	42 8 24	42 19 38	42 30 52
8 धनु 11/14	45 30 36	45 42 50	45 53 4	46 4 18	46 15 32	46 26 46	46 38 00	46 48 14	46 58 28	47 8 42	47 18 56	47 29 10	47 39 24	47 49 38	47 59 52
9 मकर 10/14	50 43 36	50 53 50	51 4 4	51 14 18	51 24 32	51 34 46	51 45 00	51 53 44	52 2 28	52 11 12	52 19 56	52 28 40	52 37 24	52 46 8	52 54 52
10 कुम्भ 8/44	55 14 36	55 23 20	55 32 04	55 40 48	55 49 32	55 58 16	56 7 00	56 14 46	56 22 32	56 30 18	56 38 4	56 45 50	56 53 36	57 1 22	57 9 8
11 मीन 7/46	59 13 24	59 21 10	59 28 56	59 36 42	59 44 28	59 52 14	00 00 00	00 7 46	0 15 32	0 23 18	0 31 4	0 38 50	0 46 36	0 54 22	1 2 8

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 7/46	5 11 36	5 20 20	5 29 4	5 37 48	5 46 32	5 55 16	6 4 00	6 12 44	6 21 28	6 30 12	6 38 56	6 47 40	6 56 24	7 5 8	7 13 52
1 वृष 8/44	9 47 6	9 57 20	10 7 34	10 17 48	10 27 2	10 38 16	10 48 30	10 58 44	11 8 58	11 19 12	11 29 26	11 39 40	11 49 54	12 00 8	12 10 22
2 मिथुन 10/14	15 3 6	15 14 20	15 25 34	15 36 48	15 48 2	15 59 16	16 10 30	16 21 44	16 32 58	16 44 12	16 55 26	17 6 40	17 17 54	17 29 8	17 40 22
3 कर्क 11/14	20 39 48	20 51 00	21 2 12	21 13 24	21 24 36	21 35 48	21 47 00	21 58 12	22 9 24	22 20 36	22 31 48	22 43 00	22 54 12	23 5 24	23 16 36
4 सिंह 11/12	26 12 30	26 23 20	26 34 10	26 45 00	26 55 50	27 6 40	27 17 30	27 28 20	27 39 10	27 50 00	28 00 50	28 11 40	28 22 30	28 33 20	28 44 10
5 कन्या 10/50	31 37 30	31 48 20	31 59 10	32 10 00	32 20 50	32 30 40	32 42 30	32 53 20	33 24 10	33 15 00	33 25 50	33 36 40	33 47 30	33 58 20	34 09 10
6 तुला 10/50	37 5 48	37 17 00	37 28 12	37 39 24	37 50 36	38 1 48	38 13 00	38 24 12	38 35 24	38 46 36	38 57 48	39 9 00	39 20 12	39 31 24	39 42 36
7 वृश्चिक 11/12	42 42 6	42 53 20	43 4 34	43 15 48	43 27 2	43 38 16	43 49 30	44 00 44	44 11 58	44 23 12	44 34 26	44 45 40	44 56 54	45 8 8	45 19 22
8 धनु 11/14	48 10 6	48 20 20	48 30 34	48 40 48	48 51 2	49 1 16	49 11 30	49 21 44	49 31 58	49 42 12	49 52 26	50 2 40	50 12 54	50 23 8	50 33 22
9 मकर 10/14	53 3 36	53 12 20	53 21 4	53 29 48	53 38 32	53 47 16	53 56 00	54 04 44	54 13 28	54 22 12	54 30 56	54 39 40	54 48 24	54 57 8	54 05 52
10 कुम्भ 8/44	57 16 54	57 24 40	57 32 26	57 40 12	57 47 58	57 55 44	58 3 30	58 11 16	59 19 2	58 26 48	58 34 34	58 42 20	58 50 6	58 57 12	59 5 38
11 मीन 7/46	1 9 54	1 17 40	1 25 26	1 33 12	1 40 58	1 48 44	1 56 30	2 4 16	2 12 2	2 19 48	2 27 34	2 35 20	2 43 6	2 50 52	2 58 38

इन्दौर, उज्जैन, कलकत्ता, जबलपुर, डाकोर, दाहोद, नडियाद, भोपाल, मोरवी, मांडवी, वीरमगाँव, तारकेश्वर, रानाघाट, रतलाम, मऊ, हुगली,
हावडा, दुर्गापुर, धार, देवास, चन्दननगर, विष्णुपुर, भुज, भटपाड़ा बाँकुरा, आनन्द, अम्बिकापुर, अमरकंटक, अहमदाबाद, शान्तिपुर, तेपी, त्रिपोली, हवाना, होनोलूलू, क्रांगचाऊ, मांडले

(23) अक्षांश पलभा 5/5/37 स्वोदयपल— 228, 258, 305, 339, 340, 330.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 7/36	3 0 24	3 10 00	3 17 36	3 25 12	3 37 48	3 40 24	3 48 00	3 56 36	4 5 12	4 '13 48	4 22 24	4 31 00	4 39 36	4 48 12	4 56 48
1 वृष 8/36	7 14 24	7 23 00	7 31 36	7 40 12	7 48 48	7 57 24	8 6 00	8 16 10	8 26 20	8 36 30	8 46 40	8 56 50	9 7 00	9 17 10	9 27 20
2 मिथुन 10/10	12 10 00	12 20 10	12 30 20	12 40 30	12 50 40	13 00 50	13 11 00	13 22 18	13 33 36	13 44 54	13 56 12	14 7 30	14 18 48	14 30 06	14 41 24
3 कर्क 11/18	17 42 12	17 53 30	18 4 48	18 16 6	18 27 24	18 38 42	18 50 00	19 1 20	19 12 40	19 24 00	19 35 20	19 46 40	19 58 00	20 9 20	20 20 40
4 सिंह 11/20	23 22 00	23 33 20	23 44 40	23 56 00	24 7 20	24 18 40	24 30 00	24 41 00	24 52 00	25 3 00	25 14 00	25 25 00	25 36 00	25 44 00	25 58 00
5 कन्या 11/00	28 54 00	29 5 00	29 16 00	29 27 00	29 38 00	29 49 00	30 00 00	30 11 00	30 22 00	30 33 00	30 44 00	30 55 00	31 6 00	31 17 00	31 28 00
6 तुला 11/00	34 24 00	34 35 00	34 46 00	34 57 00	35 8 00	35 19 00	35 30 00	35 41 20	35 52 40	36 4 00	36 15 20	36 26 40	36 38 00	36 49 20	37 00 40
7 वृश्चिक 11/20	40 2 00	40 13 20	40 24 40	40 36 00	40 47 20	40 58 40	41 10 00	41 21 18	41 32 36	41 43 54	41 55 12	42 6 30	42 17 48	42 29 6	42 40 24
8 धनु 11/18	45 41 12	45 52 30	46 3 48	46 15 6	46 26 24	46 37 42	46 49 00	46 59 10	47 9 20	47 19 30	47 29 40	47 39 50	47 50 00	48 00 10	48 10 20
9 मकर 10/10	50 53 00	51 3 10	51 13 20	51 23 30	51 33 40	51 43 50	51 54 00	51 2 36	52 11 12	52 19 48	52 28 24	52 37 00	52 45 36	52 54 12	53 2 48
10 कुम्भ 8/36	55 00 24	55 9 00	55 17 36	55 27 12	55 34 48	55 43 24	56 12 00	56 19 36	56 27 12	56 34 48	56 42 24	56 50 00	56 57 36	57 5 12	57 12 48
11 मीन 7/36	59 14 24	59 22 00	59 28 36	59 37 12	59 44 48	59 52 20	0 0 0	0 7 36	0 15 12	0 22 48	0 38 24	0 32 00	0 45 36	0 53 12	1 00 48

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 7/36	5 5 24	5 14 00	5 22 36	5 31 12	5 39 48	5 48 24	5 57 00	6 5 36	6 14 12	6 22 48	6 31 24	6 40 00	6 48 36	6 57 12	7 5 48
1 वृष 8/36	9 37 30	9 47 40	9 57 50	10 8 00	10 18 10	10 28 20	10 38 30	10 48 40	10 58 50	11 9 00	11 19 10	11 29 20	11 39 30	11 49 40	11 59 50
2 मिथुन 10/10	14 52 42	15 4 00	15 15 18	15 26 36	15 37 54	15 49 12	16 00 30	16 11 58	16 23 06	16 34 24	16 45 42	16 57 00	17 8 18	17 19 36	17 30 54
3 कर्क 11/18	20 32 00	20 43 20	20 54 40	21 6 00	21 17 20	21 28 40	21 40 00	21 51 20	22 2 40	22 14 00	22 25 20	22 36 40	22 48 00	22 59 20	23 10 40
4 सिंह 11/20	26 9 00	26 20 00	26 32 00	26 42 00	26 54 00	27 4 00	27 15 00	27 26 00	27 37 00	27 48 00	27 59 00	28 10 00	28 21 00	28 32 00	28 43 00
5 कन्या 11/00	31 39 00	31 50 00	32 1 00	32 12 00	32 23 00	32 34 00	32 45 00	32 56 00	33 7 00	33 18 00	33 29 00	33 40 00	33 51 00	34 2 00	34 13 00
6 तुला 11/00	37 12 00	37 23 20	37 34 40	37 46 00	37 57 20	38 8 40	38 20 00	38 31 20	38 42 40	38 54 00	39 5 20	39 16 40	39 28 00	39 38 20	39 50 40
7 वृश्चिक 11/20	42 51 42	43 2 00	43 14 18	43 25 36	43 36 54	43 48 12	43 59 30	44 10 48	44 22 6	44 33 24	44 44 42	44 56 00	45 12 18	45 18 36	45 29 54
8 धनु 11/18	48 20 30	48 30 40	48 40 50	48 51 00	49 1 10	49 11 20	49 21 30	49 31 40	49 41 50	49 52 00	50 2 10	50 12 20	50 22 30	50 32 40	50 42 50
9 मकर 10/10	53 11 24	53 20 00	53 8 36	53 17 12	53 25 48	53 34 24	53 43 00	53 51 36	54 00 12	54 8 48	54 17 24	54 26 00	54 34 36	54 43 12	54 51 48
10 कुम्भ 8/36	57 20 24	57 28 00	57 35 36	57 43 12	57 50 48	57 58 24	58 6 00	58 13 36	58 21 12	58 28 48	58 36 24	58 44 00	58 51 36	58 59 12	59 6 48
11 मीन 7/36	1 8 24	1 16 00	1 23 36	1 31 12	1 38 48	1 46 24	1 54 00	2 2 36	2 9 12	2 16 48	2 24 24	2 32 00	2 39 36	2 47 12	2 54 48

आबू, इलाहाबाद, उदयपुर, करांची, काशी, कोटा, जमालपुर, जालोर, झांसी, मालदा, मिर्जापुर, मुंगेर, मोकामा, सतना, सासाराम, राजीगर, नालन्दा, मुगलसराय, खजुराहो, इम्फाल, बूँदी, गया, फरक्का, चुनार, भागलपुर, बेगूसराय

(25) अक्षांश पलभा 5/35/45 स्वोदयपल– 223, 254, 303, 341, 344, 335.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 7/26	2 58 24	3 5 50	3 13 16	3 20 42	3 28 8	3 35 34	3 43 00	3 51 28	3 59 56	4 8 24	4 16 52	4 25 20	4 33 48	4 42 16	4 50 44	4 59 12	5 7 40	5 16 8	5 24 36	5 33 5	5 41 32	5 49 20	5 58 28	6 6 56	6 15 24	6 23 52	6 32 10	6 40 10	6 49 16	6 57 44
1 वृष 8/28	7 6 12	7 14 40	7 23 8	7 31 36	7 40 4	7 49 32	7 57 00	8 7 6	8 17 12	8 27 18	8 37 24	8 47 30	8 57 36	9 7 42	9 17 48	9 27 54	9 38 00	9 48 6	9 58 12	10 8 18	10 18 24	10 28 30	10 38 36	10 48 42	10 58 48	11 8 54	11 19 00	11 29 6	11 39 12	11 49 18
2 मिथुन 10/6	11 59 24	12 9 30	12 19 36	12 29 42	12 39 48	12 49 54	13 00 00	13 11 22	13 22 44	13 34 6	13 45 28	13 56 50	14 8 12	14 19 34	14 30 56	14 42 18	14 53 40	15 5 2	15 16 24	15 27 46	15 39 8	15 50 30	16 1 52	16 13 14	16 24 36	16 35 58	16 47 20	16 58 42	17 10 4	17 21 26
3 कर्क 11/22	17 32 48	17 44 10	17 55 32	18 06 54	18 18 16	18 29 38	18 41 00	18 52 28	19 3 56	19 15 24	19 26 52	19 38 20	19 49 48	20 1 16	20 12 44	20 24 12	20 35 40	20 47 8	20 58 36	21 9 24	21 21 32	21 33 00	21 44 28	21 55 56	22 07 24	22 18 52	22 30 50	22 41 48	22 53 46	23 04 44
4 सिंह 11/28	23 16 12	23 27 40	23 39 08	23 50 36	24 02 4	24 13 32	24 25 00	24 36 10	24 47 20	24 58 30	25 09 40	25 20 50	25 32 00	25 43 10	25 54 20	26 5 30	26 16 40	26 27 50	26 39 00	26 50 10	27 1 20	27 12 30	27 23 40	27 34 50	27 46 00	27 57 10	28 8 20	28 19 30	28 30 40	28 41 50
5 कन्या 11/10	28 53 00	29 4 10	29 15 20	29 26 30	29 37 40	29 48 50	30 00 00	30 11 10	30 22 20	30 33 30	30 44 40	30 55 50	31 7 00	31 18 10	31 29 20	31 40 30	31 51 40	32 2 50	32 14 00	32 25 10	32 36 20	32 47 30	32 58 40	33 9 50	33 21 00	33 32 10	33 43 20	33 54 30	34 5 40	34 16 50
6 तुला 11/10	34 28 00	34 39 10	34 50 20	35 1 30	35 12 40	35 23 50	35 35 00	35 46 28	35 57 56	36 9 24	36 20 52	36 32 20	36 43 48	36 55 16	37 6 44	37 18 12	37 29 40	37 41 8	37 52 36	38 4 4	38 15 32	38 27 00	38 38 28	38 49 56	39 1 24	39 12 52	39 24 20	39 35 48	39 47 16	39 58 44
7 वृश्चिक 11/28	40 10 12	40 21 40	40 33 8	40 44 36	40 56 4	41 7 32	41 19 00	41 30 22	41 41 44	41 53 6	42 4 28	42 15 50	42 27 12	42 38 24	42 59 56	43 1 18	43 12 40	43 24 02	43 35 24	43 47 56	43 59 8	44 10 30	44 21 52	44 33 14	44 44 39	44 55 58	45 7 20	45 18 42	45 30 4	45 41 26
8 धनु 11/22	45 52 48	46 4 10	46 15 32	46 26 54	46 38 16	46 49 38	47 00 00	47 10 6	47 20 12	47 30 18	47 40 24	47 50 30	48 00 36	48 10 42	48 20 48	48 30 54	48 41 00	48 51 6	49 1 12	49 11 18	49 21 24	49 31 30	49 41 36	49 51 42	50 1 48	50 11 54	50 22 00	50 32 6	50 42 12	50 52 18
9 मकर 10/6	51 2 24	51 12 30	51 22 36	51 32 42	51 42 48	51 52 54	52 3 00	52 11 28	52 19 56	52 28 24	52 36 52	52 45 20	52 53 48	53 2 16	53 10 44	53 19 12	53 27 40	53 36 8	53 44 36	53 53 4	54 1 32	54 10 00	54 18 28	54 26 56	54 35 24	54 43 52	54 52 20	55 00 48	55 9 16	55 17 44
10 कुम्भ 8/28	55 26 12	55 34 40	55 43 8	55 51 36	56 00 4	56 8 32	56 17 00	56 24 26	56 31 52	56 39 18	56 46 44	56 54 10	57 1 36	57 9 2	57 16 28	57 23 54	57 31 20	57 38 46	57 46 12	57 53 38	58 1 4	58 8 30	58 15 56	58 23 22	58 30 48	58 38 14	58 45 40	58 53 6	59 00 32	59 7 58
11 मीन 7/26	59 15 24	59 22 50	59 30 16	59 37 42	59 45 8	59 52 34	0 0 0	0 7 26	0 14 52	0 22 18	0 29 44	0 37 10	0 44 36	0 52 2	0 59 28	1 6 54	1 14 20	1 21 46	1 29 12	1 36 38	1 44 4	1 51 30	1 59 56	2 6 22	2 13 48	2 21 14	2 28 40	2 36 6	2 43 32	2 50 58

त्रिपोली ताइपेई, शारजाह, रियाध, दुबई, आबूधाबी

अयोध्या, अलीगढ़, आगरा, इटावा, उन्नाव, कन्नौज, गोरखपुर, फैजाबाद, तेजपुर, सीतामढ़ी, सिलीगुडी, शाहाबाद, रैक्शोल, मोतीहारी, मैनपुरी, लखनऊ, जलपाईगुडी, जैसलमेर, जयपुर, हाथरस, फिरोजाबाद, डिब्रूगढ़, भरतपुर, बाराबंकी (जोहन्सवर्ग)

(27) अक्षांश। पलभा 6/6/52 स्वोदय 217, 250, 303, 343, 348,339

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
मेष 7/14	2 53 36	3 00 50	3 8 04	3 15 18	3 22 32	3 29 46	3 37 00	3 45 20	3 53 40	4 2 00	4 10 20	4 18 40	4 27 00	4 35 20	4 43 40
वृष 8/20	6 57 00	7 5 20	7 13 40	7 22 00	7 30 20	7 38 40	7 47 0	7 57 6	8 7 12	8 17 18	8 27 24	8 37 30	8 47 36	8 57 42	9 7 48
मिथुन 10/6	11 49 24	11 59 30	12 9 36	12 19 42	12 29 48	12 39 54	12 50 00	13 1 26	13 12 52	13 24 18	13 35 44	13 47 10	13 58 36	14 10 2	14 21 28
3 कर्क 11/26	17 24 24	17 35 50	17 47 16	17 58 42	18 10 8	18 21 34	18 33 00	18 44 36	18 56 12	19 7 48	19 19 24	19 31 00	19 42 36	19 54 12	20 05 48
4 सिंह 11/36	23 11 24	23 23 00	23 34 36	23 46 12	23 57 48	24 9 24	24 21 00	24 32 18	24 43 36	24 54 54	25 6 12	25 17 30	25 28 48	25 40 6	25 51 24
5 कन्या 11/18	28 52 12	29 3 30	29 14 48	29 26 6	29 37 24	29 48 42	30 00 00	30 11 18	30 22 36	30 33 54	30 45 12	30 56 30	31 7 48	31 19 6	31 30 24
6 तुला 11/18	34 31 12	34 42 30	34 53 48	35 5 6	35 16 24	35 27 42	35 39 0	35 50 36	36 2 12	36 13 48	36 25 24	36 37 00	36 48 36	37 0 12	37 11 48
7 वृश्चिक 11/36	40 17 24	40 29 00	40 40 36	40 52 12	41 3 48	41 15 24	41 27 00	41 38 26	41 49 52	42 1 18	42 12 44	42 24 10	42 35 36	42 47 2	42 58 28
8 धनु 11/26	46 1 24	46 12 50	46 24 16	46 35 42	46 47 8	47 58 34	47 10 0	47 20 6	47 30 12	47 40 18	47 50 24	48 00 30	48 10 36	48 20 42	48 30 48
9 मकर 10/6	51 12 24	51 22 30	51 32 36	51 42 42	51 52 48	52 2 54	52 13 00	52 21 20	52 29 40	52 38 00	52 46 20	52 54 40	53 3 00	53 11 20	53 19 40
10 कुम्भ 8/20	55 33 00	55 41 20	55 49 40	55 58 00	56 6 20	56 14 40	56 23 0	56 30 14	56 37 28	56 44 42	56 51 56	56 59 10	57 6 24	57 13 38	57 20 52
11 मीन 7/14	59 16 36	59 23 50	59 31 4	59 38 18	59 45 32	59 52 46	00 00 00	0 7 14	0 14 28	0 21 42	0 28 56	0 36 10	0 43 24	0 50 38	0 57 52

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
मेष 7/14	4 52 00	5 00 20	5 8 40	5 17 00	5 25 20	5 33 40	5 42 00	5 50 20	5 58 40	6 7 00	6 15 20	6 23 40	6 32 00	6 40 20	6 48 40
वृष 8/20	9 17 54	9 28 00	9 38 6	9 48 12	9 58 18	10 8 24	10 18 30	10 28 36	10 38 42	10 48 48	10 58 54	11 9 00	11 19 6	11 29 12	11 39 18
मिथुन 10/6	14 32 54	14 44 20	14 55 46	15 7 12	15 18 38	15 30 4	15 41 30	15 52 56	16 4 22	16 15 48	16 27 14	16 38 40	16 50 6	17 1 32	17 12 58
3 कर्क 11/26	20 17 24	20 29 00	20 40 36	20 52 12	21 3 48	21 15 24	21 27 00	21 38 36	21 50 12	22 1 48	22 13 24	22 25 00	22 36 36	22 48 12	22 59 48
4 सिंह 11/36	26 2 42	26 14 00	26 25 18	26 36 36	26 47 54	26 59 12	27 10 30	27 21 48	27 33 6	27 44 24	27 55 42	28 7 00	28 18 18	28 29 36	28 40 54
5 कन्या 11/18	31 41 42	31 53 00	32 4 18	32 15 36	32 26 54	32 38 12	32 49 30	33 00 48	33 12 6	33 23 24	33 34 42	33 46 00	33 57 18	34 8 36	34 19 54
6 तुला 11/18	37 23 24	37 35 00	37 46 36	37 58 12	38 9 48	38 21 24	38 33 00	38 44 36	38 56 12	39 7 48	39 19 24	39 31 00	39 42 36	39 54 12	40 5 48
7 वृश्चिक 11/36	43 9 54	43 21 20	43 32 46	43 44 12	43 55 38	44 7 4	44 18 30	44 29 56	44 41 22	44 52 48	45 4 14	45 15 40	45 27 6	45 38 32	45 49 58
8 धनु 11/26	48 40 54	48 51 00	49 1 6	49 11 12	49 21 18	49 31 24	49 41 30	49 51 36	50 1 42	50 11 48	50 21 54	50 32 00	50 42 06	50 52 12	51 2 18
9 मकर 10/6	53 28 00	53 36 20	53 44 40	53 53 00	54 1 20	54 9 40	54 18 00	54 26 20	54 34 40	54 43 00	54 51 20	54 59 40	55 8 00	55 16 20	55 24 40
10 कुम्भ 8/20	57 28 6	57 35 20	57 42 34	57 49 48	57 57 2	58 4 16	58 11 30	58 18 44	58 25 58	58 33 12	58 40 26	58 47 40	58 54 54	59 2 8	59 9 22
11 मीन 7/14	1 5 6	1 12 20	1 19 34	1 26 48	1 34 2	1 41 16	1 48 30	1 55 44	2 2 58	2 10 12	2 17 26	2 24 40	2 31 54	2 39 8	2 46 22

रेवाड़ी, मथुरा, कासगंज, फर्रुखाबाद, ब्रिसबेन

(28) अक्षांश। (पलभा 6/22/50) स्वोदयमान– 215, 248, 301, 343, 350, 343.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 7/10	2 52 00	2 59 10	3 6 20	3 13 30	3 20 40	3 27 50	3 35 00	3 43 16	3 51 32	3 59 48	4 8 4	4 16 20	4 24 36	4 32 52	4 41 8	4 49 24	4 57 40	5 5 56	5 14 12	5 22 28	5 30 44	5 39 00	5 47 16	5 55 32	6 3 48	6 12 4	6 20 20	6 28 36	6 36 52	6 45 8
1 वृष 8/16	6 53 24	7 1 40	7 9 46	7 18 12	7 26 28	7 34 44	7 43 0	7 53 2	8 3 4	8 13 6	8 23 8	8 33 10	8 43 12	8 53 14	9 3 16	9 13 18	9 23 20	9 33 22	9 43 24	9 53 26	10 3 28	10 13 30	10 23 32	10 33 34	10 43 36	10 53 38	11 3 40	11 13 42	11 23 44	11 33 46
2 मिथुन 10/2	11 43 48	11 53 50	12 3 52	12 13 54	12 23 56	12 33 58	12 44 00	12 55 26	13 6 52	13 18 18	13 29 44	13 41 10	13 52 36	14 4 2	14 15 28	14 28 54	14 38 20	14 49 46	15 1 12	15 12 38	15 24 4	15 35 30	15 46 56	15 58 22	16 9 48	16 21 14	16 32 40	16 44 6	16 55 32	17 6 58
3 कर्क 11/26	17 18 24	17 29 50	17 41 16	18 2 42	18 14 8	18 25 34	18 27 00	18 38 40	18 50 20	19 2 00	19 13 40	19 25 20	19 37 00	19 48 40	20 00 20	20 12 00	20 23 40	20 35 20	20 47 00	20 58 40	21 10 20	21 22 00	21 33 40	21 45 20	21 57 00	22 8 40	22 20 20	22 32 00	22 43 40	22 55 20
4 सिंह 11/40	23 7 00	23 18 40	23 30 20	23 42 00	23 53 40	24 5 20	24 17 00	24 28 26	24 39 52	24 51 18	25 2 44	25 14 10	25 25 36	25 37 2	25 48 28	25 59 54	26 11 20	26 23 46	26 35 12	26 45 38	26 57 4	27 9 30	27 19 56	27 31 22	27 43 48	27 54 14	28 5 40	28 16 6	28 29 32	28 39 58
5 कन्या 11/26	28 51 24	29 2 50	29 14 16	29 25 42	29 37 8	29 48 34	30 00 00	30 11 26	30 22 52	30 34 18	30 45 44	30 57 10	31 8 36	31 20 2	31 31 28	31 42 54	31 54 20	32 5 46	32 17 12	32 28 38	32 40 4	32 51 30	33 2 56	33 14 22	33 25 48	33 37 14	33 48 40	34 00 6	34 11 32	34 22 58
6 तुला 11/26	34 34 24	34 45 50	34 57 16	35 8 42	35 20 8	35 31 34	35 43 0	35 54 40	36 6 20	36 18 00	36 29 40	36 41 20	36 53 00	37 4 40	37 16 20	37 28 00	37 39 40	37 51 20	38 3 00	38 14 40	38 26 20	38 38 00	38 49 4	39 1 20	39 13 00	39 24 40	39 36 20	39 48 00	39 59 40	40 11 20
7 वृश्चिक 11/40	40 23 00	40 34 40	40 46 20	40 58 00	41 9 40	41 21 20	41 33 00	41 43 26	41 55 52	42 7 18	42 18 44	42 30 10	42 41 36	42 53 2	43 4 28	43 15 54	43 27 20	43 38 46	43 50 12	44 1 38	44 13 4	44 24 30	44 35 56	44 47 22	44 58 48	45 10 14	45 21 40	45 33 6	45 44 32	45 55 58
8 धनु 11/26	46 7 24	46 18 50	46 30 16	46 41 42	46 53 8	47 4 34	47 16 0	47 26 2	47 36 4	47 46 6	47 56 8	48 6 10	48 16 12	48 26 14	48 36 16	48 46 18	48 56 20	49 6 22	49 16 24	49 26 26	49 36 28	49 46 30	49 56 32	50 6 34	50 16 36	50 26 38	50 36 40	50 46 42	50 56 44	51 6 46
9 मकर 10/2	51 16 48	51 26 50	51 36 52	51 46 54	51 56 56	52 6 58	52 17 0	52 25 16	52 33 32	52 41 48	52 50 4	52 58 20	53 6 36	53 14 52	53 23 8	53 31 24	53 39 40	53 47 56	53 56 12	54 4 28	54 12 44	54 21 00	54 29 16	54 37 32	54 45 48	54 54 4	55 2 20	55 10 36	55 18 52	55 27 8
10 कुम्भ 8/16	55 35 24	55 43 40	55 51 56	56 00 12	56 8 28	56 16 44	56 25 0	56 32 10	56 39 20	56 46 30	56 53 40	57 00 50	57 8 00	57 15 10	57 22 20	57 29 30	57 36 40	57 43 50	57 51 00	57 58 10	58 5 20	58 12 30	58 19 40	58 26 50	58 36 00	58 41 10	58 48 20	58 55 30	59 2 40	59 9 50
11 मीन 7/10	59 17 00	59 24 10	59 31 20	59 38 30	59 45 40	59 52 50	0 0 0	0 7 10	0 14 20	0 21 30	0 28 40	0 35 50	0 43 00	0 50 10	0 57 20	1 4 30	1 11 40	1 18 50	1 26 00	1 33 10	1 40 20	1 47 30	1 54 40	2 1 50	2 9 00	2 16 10	2 23 20	2 30 30	2 37 40	2 44 50

दिल्ली, गाजियाबाद, टनकपुर, नैनीताल, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गुड़गांव, रोहतक, मुक्तिनाथ, हिसार, रामपुर, पीलीभीत, फरीदाबाद, चूरू, चन्दोसी, बीकानेर, बरेली, अलीगढ़, ल्हासा,

(28/39) अक्षांश। पलभा:— (6/33//22) स्वोदयपल— 213. 247, 300. 344, 351, 345. (कुवैत, डरबन)

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6
7/6	50	57	4	11	18	25	33	41	49	57	5	14	22	30	38	47	55	3	11	20	28	36	44	53	1	9	17	25	34	42
	24	30	36	42	48	54	00	14	28	42	56	10	24	38	52	6	20	34	48	2	16	30	44	58	12	26	40	54	8	22
1 वृष	6	6	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11	11	11
8/14	50	58	7	15	23	31	40	50	00	10	20	30	40	50	00	10	20	30	40	50	00	10	20	30	40	50	00	10	20	30
	36	50	4	18	32	46	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00
2 मिथुन	11	11	12	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	17
10/00	40	50	00	10	20	30	40	51	2	14	25	37	48	00	11	23	34	46	57	9	20	32	43	54	6	17	29	40	52	3
	00	00	00	00	00	00	00	28	56	24	52	20	48	16	44	12	40	8	36	4	32	00	28	56	24	52	20	48	16	44
3 कर्क	17	17	17	17	18	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22
11/28	15	26	38	49	1	12	24	35	47	59	10	22	34	45	57	9	21	32	44	56	7	19	31	42	54	06	18	29	41	53
	12	40	8	36	4	32	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6
4 सिंह	23	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28
11/42	04	16	28	39	51	3	15	26	38	49	01	12	24	35	47	58	10	21	33	44	56	07	19	30	42	53	05	16	28	39
	48	30	12	54	36	18	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	00	00	00	00	00
5 कन्या	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34
11/30	51	02	14	25	37	48	00	11	23	34	46	57	9	20	32	43	55	6	18	29	41	52	4	15	27	38	50	1	13	24
	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	00	30	0	30
6 तुला	34	34	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40
11/30	36	47	59	10	22	33	45	56	8	20	31	43	55	6	18	30	42	53	5	17	28	40	52	3	15	27	39	50	2	14
	00	30	00	30	00	30	02	42	24	6	48	30	12	-54	36	18	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6
7 वृश्चिक	40	40	40	41	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	45
11/42	25	37	49	00	12	24	36	47	58	10	21	33	44	56	07	19	30	42	53	5	16	28	39	50	02	13	25	36	48	59
	48	30	12	54	36	18	00	28	56	24	52	20	48	13	44	12	40	8	36	4	32	00	28	56	24	52	20	48	16	44
8 धनु	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51
11/28	11	22	34	45	57	28	20	30	40	50	00	10	20	30	40	50	00	10	20	30	40	50	00	10	20	30	40	50	00	10
	12	40	8	36	4	32	00	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	00	00	00	00	00	00	00	00
9 मकर	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55
10/00	20	30	40	50	00	10	20	28	36	44	52	1	9	17	25	34	42	50	58	7	15	23	31	39	48	56	4	12	21	29
	00	00	00	00	00	00	00	14	28	42	56	10	24	38	52	6	20	34	48	2	16	30	44	58	12	26	40	54	8	22
10 कुम्भ	55	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59
8/14	37	45	54	2	10	18	27	34	41	48	55	2	9	16	23	30	38	45	52	59	6	13	20	27	34	41	49	56	3	10
	36	50	4	18	32	46	00	6	12	18	24	30	36	42	48	54	00	6	12	18	24	30	36	42	48	54	00	6	12	18
11 मीन	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2
7/6	17	24	31	38	45	52	0	7	14	21	28	35	42	49	56	3	11	18	25	32	39	46	53	00	7	14	22	29	36	43
	24	30	36	42	48	54	0	6	12	18	24	30	36	42	48	54	00	6	12	18	24	30	36	42	48	54	00	6	12	18

अल्मोड़ा, सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, मुलतान, थानेश्वर, रुद्रप्रयाग, मंसूरी, देहरादून, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, एलक्जेन्ड्रिया, न्यूओर्लिन्स, शंघाई

30 , अक्षांश। पलभा:— (6/55/42) स्वोदयपल— 210, 244, 299, 345, 354, 348.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 7/0	2 48 0	2 55 0	3 55 0	3 9 0	3 16 0	3 23 0	3 30 0	3 38 8	3 46 16	3 54 24	4 2 32	4 10 40	4 18 48	4 26 56	4 35 4
1 वृष 8/8	6 45 12	6 53 20	7 1 28	7 9 36	7 17 44	7 25 52	7 34 00	7 43 58	7 53 56	8 3 54	8 13 52	8 23 50	8 33 48	8 43 46	8 53 44
2 मिथुन 9/58	11 33 12	11 43 10	11 53 8	12 3 6	12 13 4	12 23 2	12 33 00	12 44 30	12 56 00	13 7 30	13 19 00	13 30 30	13 42 00	13 53 30	14 5 00
3 कर्क 11/30	1 9 00	17 20 30	17 38 00	17 43 30	17 55 00	18 6 30	18 18 00	18 29 48	18 41 36	18 53 24	18 53 24	19 17 00	19 28 48	19 40 36	19 52 24
4 सिंह 11/48	23 1 12	23 13 00	23 24 48	23 36 36	23 48 24	24 00 12	24 12 00	24 23 36	24 35 12	24 46 48	24 58 24	25 10 00	25 21 36	25 33 12	25 44 48
5 कन्या 11/36	28 50 24	29 2 00	29 13 36	29 25 12	29 36 48	29 48 24	30 00 00	30 11 36	30 23 12	30 34 48	30 46 24	30 58 00	31 9 36	31 21 12	31 32 48
6 तुला 11/36	34 38 24	34 50 00	35 1 36	35 13 12	35 24 48	35 36 24	35 48 00	35 59 48	36 11 36	36 23 24	36 35 12	36 47 00	36 58 48	37 10 36	37 22 24
7 वृश्चिक 11/48	40 31 12	40 43 00	40 54 48	41 06 36	41 18 24	41 30 12	41 42 00	41 53 30	42 5 00	42 16 30	42 28 00	42 39 30	42 51 00	43 2 30	43 14 00
8 धनु 11/30	46 18 00	46 29 30	46 41 00	46 52 30	47 15 30	47 15 30	47 27 00	47 36 58	47 46 56	47 56 54	48 6 52	48 16 50	48 26 48	48 36 46	48 46 44
9 मकर 9/58	51 26 12	51 36 10	51 46 8	51 56 6	52 16 2	52 16 2	52 26 00	52 34 8	52 42 16	52 50 24	52 58 32	53 6 40	53 14 48	53 22 56	53 31 4
10 कुम्भ 8/8	55 41 0	55 49 0	55 57 0	56 5 36	56 21 0	56 21 52	56 30 0	56 37 0	56 44 0	56 51 0	56 58 0	57 5 0	57 12 0	57 19 0	57 26 0
11 मीन 7/0	59 17 00	59 25 00	59 32 00	59 39 00	59 53 00	59 53 0	0 0 0	0 7 0	0 14 0	0 21 0	0 28 0	0 35 0	0 42 0	0 49 0	0 56 0

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 7/0	4 43 12	4 51 20	4 59 28	5 7 36	5 15 44	5 23 52	5 31 00	5 40 8	5 48 16	5 59 24	6 4 32	6 12 40	6 20 48	6 28 56	6 32 4
1 वृष 8/8	9 3 42	9 13 40	9 23 38	9 33 36	9 43 34	9 53 32	10 3 30	10 13 28	10 23 26	10 33 24	10 43 22	10 53 20	11 3 18	11 13 16	11 23 14
2 मिथुन 9/58	14 16 30	14 28 00	14 39 30	14 51 00	15 2 30	15 14 00	15 25 30	15 37 00	15 48 30	15 00 00	15 11 30	15 23 00	16 34 30	16 46 00	15 57 30
3 कर्क 11/30	20 4 12	20 14 00	20 27 48	20 39 36	20 51 24	21 31 12	21 15 00	21 26 48	21 38 36	21 50 24	22 02 12	22 14 00	22 25 48	22 56 36	22 49 24
4 सिंह 11/48	25 56 24	26 8 00	26 19 36	26 31 12	26 42 48	26 54 24	27 06 00	27 17 36	27 29 12	27 40 48	27 52 24	28 4 00	28 15 36	28 27 12	29 39 48
5 कन्या 11/36	31 44 24	31 56 00	32 7 36	32 19 12	32 30 48	32 42 24	32 54 00	33 5 36	33 17 12	33 29 48	33 40 24	33 52 00	34 3 36	34 15 12	34 26 48
6 तुला 11/36	37 34 12	37 46 00	37 57 48	38 9 36	38 21 24	38 33 12	38 45 00	38 56 48	39 08 36	39 20 24	39 32 12	39 44 00	39 55 48	40 07 36	40 19 24
7 वृश्चिक 11/48	43 25 30	43 37 00	43 48 30	44 00 00	44 11 30	44 22 00	44 34 30	44 46 00	44 57 30	45 9 00	45 20 30	45 32 00	45 43 30	45 55 00	46 6 30
8 धनु 11/30	48 56 42	49 6 40	49 16 38	49 26 36	49 36 34	49 46 32	49 56 30	50 6 28	50 16 26	50 26 24	50 36 22	50 46 20	50 56 18	51 6 16	51 16 14
9 मकर 9/58	53 39 12	53 47 20	53 55 28	54 3 36	54 11 44	54 19 52	54 28 00	54 36 8	54 44 16	54 52 24	55 00 32	55 8 40	55 16 48	55 24 56	55 32 4
10 कुम्भ 8/8	57 33 0	57 40 0	57 47 0	57 54 0	58 1 0	58 8 0	58 15 0	58 22 0	58 29 0	58 36 0	58 43 0	58 50 0	58 57 0	59 4 0	59 11 0
11 मीन 7/0	1 3 0	1 10 0	1 17 0	1 24 0	1 31 0	1 38 0	1 45 0	1 52 0	1 59 0	2 6 0	2 13 0	2 20 0	2 27 0	2 34 0	2 41 0

सोलन, फिरोजपुर, उत्तरकाशी, लुधियाना, फरीदकोट, रोपड़, केदारनाथ, यमुनोत्तरी, जलन्धर, होश्यारपुर, गंगोत्री, चंडीगढ़, बद्रीनाथ, कीरो

31 अक्षांश। लभा:— (7/12/37) स्वोदयपल:— 207, 241, 298, 346, 357, 351

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष	2	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6
6/54	45	52	59	6	13	20	27	35	43	51	59	7	15	23	31	39	47	55	3	11	19	27	35	43	51	59	7	15	23	31
	36	30	24	18	12	6	00	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	38	40	42	44	46
1 वृष	6	6	6	7	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11
8/2	39	47	55	3	11	19	28	37	47	58	7	17	27	37	47	57	7	17	27	37	47	57	6	16	26	36	46	56	06	16
	48	50	52	54	56	58	00	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	00	56	52	48	44	40	36	32	28
2	11	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15		16	16	16	16	16
मिथुन	26	36	46	56	6	16	26	37	49	00	12	23	35	46	58	9	21	32	44	55	7	19	30	42	53	5	16	28	39	51
9/56	24	20	16	12	8	4	00	32	4	36	8	40	12	44	16	48	20	52	24	56	28	00	32	4	36	8	40	12	44	16
3 कर्क	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22
11/32	2	14	25	37	48	00	12	23	35	47	59	11	23	35	47	59	11	22	34	46	58	10	22	34	46	58	10	21	33	45
	48	20	52	24	56	28	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42
4 सिंह	22	23	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28
11/54	57	9	21	33	45	57	9	20	32	44	55	7	19	30	42	54	6	17	29	41	52	4	16	27	39	51	3	14	26	38
	36	30	24	18	12	6	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6
5	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34
कन्या	49	1	13	24	36	48	00	11	23	35	46	58	10	21	33	45	57	8	20	32	43	55	7	18	30	42	54	5	18	29
11/42	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6	48	30	12	54	36	18	00	42	24	6
6 तुला	34	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40	40
11/42	40	52	4	15	28	39	51	2	14	26	38	50	2	14	26	38	50	1	13	25	37	49	1	13	25	37	49	00	12	24
	48	30	12	54	36	18	00	54	48	42	36	36	24	18	12	06	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42
7	40	40	41	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	46	46
वृश्चिक	36	48	00	12	24	36	48	59	11	22	34	45	57	8	20	31	43	54	6	17	29	41	52	4	15	27	38	50	1	13
11/54	36	30	24	18	12	6	00	32	4	36	8	40	12	44	16	48	20	52	24	56	28	00	32	4	36	8	40	12	44	16
8 धनु	46	46	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51	51
11/32	24	36	47	59	10	22	34	43	53	3	13	23	33	43	53	3	13	23	33	43	53	3	12	22	32	42	52	2	12	22
	48	20	52	24	56	28	00	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	00	56	52	48	44	40	36	32	28
9	51	51	51	52	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55
मकर	32	42	52	2	12	22	32	40	48	56	4	12	20	28	36	44	52	00	8	16	24	32	40	48	56	4	12	20	28	36
9/56	24	20	16	12	8	4	00	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	38	40	42	44	46
10	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59
कुम्भ	44	52	00	8	16	24	33	39	46	53	00	7	14	21	28	35	42	48	55	2	9	16	23	30	37	44	51	57	4	11
8/2	48	50	52	54	56	58	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42
11	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2
मीन	18	25	32	39	46	53	0	6	13	20	27	34	41	48	55	2	9	15	22	29	36	43	50	57	4	11	18	24	31	38
6/54	36	30	24	18	12	6	0	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42

विलासपुर, (हि०प्र०) गुरुदासपुर, जम्मू, कपूरथला पर्थ कन्धार जेरूसलम

32 अक्षांश। पलभा:— (7/29/54) स्वोदयपल:— 204, 239, 297, 347, 359, 354.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष	2	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6
6/48	42	50	56	3	10	17	24	31	39	47	55	3	11	19	27	35	43	51	59	7	15	23	31	39	47	55	3	11	19	27
	12	00	48	36	24	12	00	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30	28	26	24	22	20	18	16	14
1 वृष	6	6	6	6	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11
7/58	35	43	51	59	7	15	23	32	42	52	2	12	22	32	42	52	2	11	21	31	41	51	1	11	21	31	41	50	00	10
	12	10	8	6	4	2	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42
2	11	11	11	11	12	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	15	16	16	16	16
मिथुन	20	30	40	50	00	10	20	31	43	54	6	17	29	40	52	4	15	27	38	50	1	13	25	36	48	59	11	22	34	46
9/54	36	30	24	18	12	6	00	34	8	42	16	50	24	56	32	6	40	15	46	32	56	30	4	38	12	46	20	54	26	12
3 कर्क	16	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22
11/34	57	9	20	32	43	55	7	18	30	42	54	6	18	30	42	54	6	18	30	42	54	9	18	30	42	54	9	18	30	42
	36	20	44	18	52	26	00	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30	28	26	24	22	20	18	16	14
4 सिंह	22	23	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28
11/58	54	6	18	30	42	54	6	17	29	41	53	5	16	28	40	52	4	15	27	39	51	3	14	26	38	50	2	13	25	37
	12	10	8	6	4	2	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24
5	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34
कन्या	49	1	12	24	36	48	00	11	23	35	47	59	10	22	34	46	58	9	21	33	45	57	8	20	32	44	56	7	19	31
11/48	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24
6 तुला	34	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40	40
11/48	43	55	6	18	30	42	52	5	17	29	41	53	5	17	29	41	53	5	17	29	41	53	5	17	29	41	53	5	17	29
	12	00	48	36	24	12	00	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30	28	26	24	22	20	18	16	14
7	40	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	46	46
वृश्चिक	41	53	5	17	29	41	53	4	16	27	39	50	2	13	25	37	48	00	11	23	34	46	58	9	21	32	44	55	7	19
11/58	12	10	8	6	4	2	00	34	8	42	16	50	24	58	32	6	40	14	48	22	56	30	4	38	12	46	20	54	28	2
8 धनु	46	46	46	47	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51	51
11/34	30	42	53	5	16	28	40	49	58	9	19	29	39	49	59	9	19	28	38	48	58	8	18	28	38	48	58	7	17	27
	36	10	44	18	52	26	00	54	48	42	36	30	24	18	12	6	00	54	48	42	36	30	24	18	12	06	00	54	48	42
9	51	51	51	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55	55
मकर	37	47	57	7	17	27	37	44	52	00	8	16	24	32	40	48	56	4	12	20	28	36	44	52	00	8	16	24	32	40
9/54	36	30	24	18	12	6	00	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30	28	26	24	22	20	18	16	14
10	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59
कुम्भ	48	56	4	12	20	28	36	42	49	56	3	10	16	23	30	37	44	50	57	4	11	18	24	31	38	45	52	58	5	12
7/58	12	10	8	6	4	2	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24
11	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2
मीन	19	26	32	38	46	53	0	6	13	20	27	34	40	47	54	1	8	14	21	29	35	42	48	55	2	8	16	22	28	35
6/48	12	00	48	36	24	12	0	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24

लेह, बरमूला, अनन्तनाग, अमरनाथ, इसलामाबाद, मुलतान, क्वेटा, लोसऐंगल्स, बगदाद, बेरूत, केपटाउन, सिडनी, पोर्टरालिजवेथ, ओसाका

34 अक्षांश पलभा (8/6) स्वोदयमान— 198, 234,295, 348, 364, 360.

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष	2	2	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6
6/36	38	45	51	58	04	11	18	25	33	41	49	57	4	12	20	28	36	43	51	59	7	15	22	30	38	46	54	1	9	17
	24	00	36	12	48	24	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	25	12	00	48	36	24
1 वृष	6	6	6	6	6	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10
7/48	25	33	40	48	56	4	12	21	31	41	51	1	11	20	30	40	50	00	10	19	29	39	49	59	9	18	28	38	48	58
	12	00	48	36	24	12	00	50	40	30	20	10	00	50	40	30	20	10	00	50	40	30	20	10	00	50	40	30	20	10
2 मिथुन	11	11	11	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	15	16	16	16
	8	17	27	37	47	57	7	18	30	41	53	5	16	28	40	51	3	14	26	38	49	1	13	24	36	48	59	11	22	34
9/50	00	50	40	30	20	10	00	38	16	54	32	10	48	26	4	42	20	58	36	14	52	30	8	46	24	2	40	18	56	34
3 कर्क	16	16	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22
11/38	36	47	9	21	32	44	56	8	20	32	44	56	8	20	33	45	57	9	21	33	45	58	10	22	34	46	58	10	22	35
	12	50	28	6	44	22	00	8	16	24	32	40	48	56	4	12	20	28	36	44	52	00	8	16	24	32	40	48	56	4
4 सिंह	22	22	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28
12/8	47	59	11	23	35	47	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36
	12	20	28	36	44	52	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00
5 कन्या	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34	34
12/0	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36
	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00
6 तुला	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40	40	40
12/0	48	00	12	24	36	48	00	12	24	36	48	00	12	24	37	49	01	13	25	37	49	2	14	26	38	50	2	14	26	39
	00	00	00	00	00	00	00	8	16	24	32	40	42	56	4	12	20	28	36	44	52	00	8	16	24	32	40	48	56	4
7 वृश्चिक	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	46	46	46
	51	3	15	27	39	51	4	15	27	38	50	2	13	25	37	48	00	11	23	35	46	58	10	21	33	45	56	8	19	31
12/8	12	20	28	36	44	52	00	38	16	54	32	10	48	26	4	42	20	58	36	14	52	30	8	46	24	2	40	18	56	34
8 धनु	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	50	51	51	51	51
11/38	43	54	6	18	29	41	53	2	12	22	32	42	52	1	11	21	31	41	51	00	10	20	30	40	50	59	9	19	29	39
	12	50	28	6	44	22	00	50	40	30	20	10	00	50	40	30	20	10	00	50	40	30	20	10	00	50	40	30	20	10
9 मकर	51	51	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55	55	55
	49	58	8	18	28	38	48	55	3	11	19	27	34	42	50	58	06	13	21	29	37	45	53	00	8	16	24	31	39	47
9/50	00	50	40	30	20	10	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24	12	00	48	36	24
10 कुम्भ	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59	59
	55	2	10	19	26	34	42	48	55	1	8	15	21	28	34	41	48	54	1	7	14	21	27	34	40	47	54	00	7	13
7/48	12	00	48	36	24	12	00	36	12	48	24	00	36	12	48	24	00	36	10	48	24	00	36	12	48	24	00	36	12	48
11 मीन	59	59	59	59	59	59	00	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2
	20	27	33	40	46	53	00	6	13	19	26	33	39	46	52	59	6	12	19	25	32	39	45	52	58	5	12	18	25	31
6/36	24	00	36	12	48	24	00	36	12	48	24	00	36	12	48	24	00	36	12	48	24	00	36	12	48	24	00	36	12	48

तेहरान, टोक्यो, लेसवीगस, केनबर्रा, ऑकलेन्ड

36 अक्षांश पलभा:— (8/43) स्वोदयपल:— 192, 230, 293, 351, 368, 366

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 6/24	2 33 36	2 40 00	2 46 24	2 52 48	2 59 12	3 5 36	3 12 00	3 19 40	3 27 20	3 35 00	3 42 40	3 50 20	3 58 00	4 5 40	4 13 20
1 वृष 7/40	6 16 00	6 23 40	6 31 20	6 39 00	6 46 40	6 54 20	7 2 00	7 11 46	7 22 32	7 31 18	7 41 4	7 50 50	8 00 36	8 10 22	8 20 8
2 मिथुन 9/46	10 56 24	11 06 10	11 15 56	11 25 42	11 35 28	11 45 14	11 55 00	12 6 42	12 18 24	12 30 6	12 41 48	12 53 30	13 5 12	13 16 54	13 28 36
3 कर्क 11/42	16 35 48	16 47 30	16 59 12	17 10 54	17 22 36	17 34 18	17 46 00	17 58 16	18 10 32	18 22 48	18 34 4	18 47 20	18 59 36	19 11 52	19 24 8
4 सिंह 12/16	22 40 24	22 52 40	23 4 56	23 17 12	23 29 28	23 41 44	23 54 00	24 6 12	24 18 24	24 30 36	24 42 48	24 55 00	25 7 12	25 19 24	25 31 36
5 कन्या 12/12	28 46 48	28 59 00	29 11 12	29 23 24	29 35 36	29 47 48	30 00 00	30 12 12	30 24 24	30 36 36	30 48 48	31 1 00	31 13 12	31 25 24	31 37 36
6 तुला 12/12	34 52 48	35 5 00	35 17 12	35 29 24	35 41 36	35 53 48	36 6 00	36 18 16	36 30 32	36 42 48	36 55 4	37 7 20	37 19 36	37 31 52	37 44 8
7 वृश्चिक 12/16	41 00 24	41 12 40	41 24 56	41 37 12	41 49 28	42 1 44	42 14 00	42 25 42	42 37 24	42 49 6	43 00 48	43 12 30	43 24 12	43 35 54	43 47 36
8 धनु 11/42	46 54 48	47 6 30	47 18 12	47 29 54	47 41 36	47 53 18	48 5 00	48 14 46	48 24 32	48 34 18	48 44 4	48 53 50	49 03 36	49 13 22	49 23 8
9 मकर 9/46	51 59 24	52 9 10	52 18 56	52 28 42	52 38 28	52 48 14	52 58 00	53 5 40	53 13 20	53 21 00	53 28 40	53 36 20	53 44 00	53 51 40	53 59 20
10 कुम्भ 7/40	56 2 00	56 9 40	56 17 20	56 25 00	56 32 40	56 40 20	56 48 00	56 54 24	57 00 48	57 7 12	57 13 36	57 20 00	57 26 24	57 32 48	57 39 12
11 मीन 6/24	59 21 36	59 28 00	59 35 24	59 40 48	59 45 12	59 53 36	0 0 0	0 6 24	0 12 48	0 19 12	0 25 36	0 32 00	0 38 24	0 44 48	0 51 12

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 6/24	4 21 00	4 28 40	4 36 20	4 44 00	4 51 40	4 59 20	5 7 00	5 14 40	5 22 20	5 30 00	5 37 40	5 45 20	5 53 00	6 00 40	6 8 00
1 वृष 7/40	8 29 54	8 39 40	8 49 26	8 59 26	9 8 58	9 18 44	9 28 30	9 38 16	9 48 2	9 57 48	10 7 34	10 17 20	10 27 0	10 36 52	10 46 38
2 मिथुन 9/46	13 40 18	13 52 00	14 3 42	14 15 24	14 27 6	14 38 48	14 50 30	15 2 12	15 13 54	15 25 36	15 37 18	15 49 00	16 00 42	16 12 24	16 24 6
3 कर्क 11/42	19 36 24	19 48 40	20 00 56	20 13 12	20 25 48	20 37 44	20 50 00	21 2 16	21 14 32	21 26 48	21 39 4	21 51 20	22 3 36	22 15 52	22 28 8
4 सिंह 12/16	25 43 48	25 56 00	26 8 12	26 20 24	26 32 36	26 44 48	26 57 00	27 9 12	27 21 24	27 33 36	27 45 48	27 58 00	28 10 12	28 22 24	28 34 36
5 कन्या 12/12	31 49 48	32 2 00	32 14 12	32 26 24	32 38 36	32 50 48	33 3 00	33 15 12	33 27 24	33 39 36	33 51 48	34 4 00	34 16 12	34 28 24	34 40 36
6 तुला 12/12	37 56 24	38 8 40	38 20 56	38 33 12	38 45 28	38 57 44	39 10 00	39 22 16	39 34 32	39 46 48	39 59 4	40 11 20	40 23 36	40 35 42	40 48 8
7 वृश्चिक 12/16	43 59 18	44 11 00	44 22 42	44 34 24	44 46 6	44 56 48	45 12 30	45 21 12	45 32 54	45 44 36	45 56 18	46 8 0	46 18 43	46 31 24	46 43 6
8 धनु 11/42	49 32 54	49 42 40	49 52 26	50 2 12	50 11 58	50 21 44	50 31 30	50 41 16	50 51 2	51 00 58	51 10 34	51 20 20	51 30 6	51 39 52	51 49 38
9 मकर 9/46	54 7 00	54 14 40	54 22 20	54 30 00	54 37 40	54 45 20	54 53 00	55 00 40	55 8 20	55 6 00	55 23 40	55 31 20	55 39 00	55 46 40	55 58 20
10 कुम्भ 7/40	57 45 36	57 52 00	57 58 24	58 4 48	58 11 12	58 17 36	58 24 00	58 30 24	58 36 48	58 43 12	58 49 36	58 56 00	59 2 24	59 8 48	59 15 12
11 मीन 6/24	0 57 36	1 4 00	1 10 24	1 16 48	1 23 12	1 29 36	1 36 00	1 42 24	1 48 48	1 55 12	2 1 36	2 8 00	2 14 24	2 20 48	2 25 12

एथेन्स, लिसबोन, मेलबोर्न

38 अक्षांश पलभा 9/22 स्वोदयपल 185, 224, 291, 353, 374,373.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 6/10	2 28 00	2 34 10	2 40 20	2 46 30	2 52 40	2 58 50	3 5 00	3 12 28	3 19 56	3 27 24	3 34 52	3 42 20	3 48 48	3 56 16	4 3 44
1 वृष 7/28	6 4 12	6 11 40	6 19 8	6 26 36	6 34 4	6 41 32	6 49 00	6 58 42	7 8 24	7 18 6	7 27 48	7 37 30	7 47 12	7 56 54	8 6 36
2 मिथुन 9/42	10 41 48	10 51 30	11 1 12	11 10 54	11 20 36	11 30 18	11 40 00	11 51 46	12 3 32	12 15 18	12 27 4	12 38 50	13 50 36	13 2 22	13 14 8
3 कर्क 11/46	16 22 24	16 34 10	16 45 56	16 57 42	17 9 28	17 21 14	17 33 00	17 45 28	17 57 56	18 10 24	18 22 52	18 35 20	18 47 48	19 00 16	19 12 44
4 सिंह 12/28	22 32 12	22 44 40	22 57 8	23 9 36	23 22 4	23 34 32	23 47 00	23 59 26	24 11 52	24 24 18	24 36 44	24 49 10	25 1 36	25 14 2	25 26 28
5 कन्या 12/26	28 45 25	28 57 50	29 10 16	29 22 42	29 35 8	29 47 34	30 00 00	30 12 26	30 24 52	30 37 18	30 59 44	31 2 10	31 14 36	31 27 2	31 39 28
6 तुला 12/26	34 58 24	35 10 50	35 23 16	35 35 42	35 48 8	36 00 34	36 13 00	36 25 28	36 37 56	36 50 24	37 2 52	37 15 20	37 27 48	37 40 16	37 52 44
7 वृश्चिक 12/28	41 12 12	41 24 40	41 37 8	41 49 36	42 02 4	42 14 32	42 27 00	42 38 46	42 50 32	43 2 18	43 14 4	43 25 50	43 37 36	43 49 22	44 1 8
8 धनु 11/46	47 9 24	47 21 10	47 32 56	47 54 42	47 56 28	48 8 14	48 20 00	48 29 42	48 39 24	48 49 6	48 58 48	49 08 30	49 18 12	49 27 54	49 37 36
9 मकर 9/42	52 12 48	52 32 30	52 52 12	52 41 54	52 41 36	53 1 18	53 11 00	53 18 28	53 25 56	53 33 24	53 40 52	53 48 20	53 55 48	54 3 16	54 10 44
10 कुम्भ 7/28	56 10 12	56 17 40	56 25 8	56 32 36	56 40 4	56 47 32	56 55 00	57 1 10	57 7 20	57 13 30	57 19 40	57 25 50	57 32 00	57 38 10	57 44 20
11 मीन 6/10	59 23 0	59 29 10	59 35 20	59 41 30	59 47 40	59 53 50	00 00 00	0 6 10	0 12 20	0 18 30	0 24 40	0 30 50	0 37 00	0 43 10	0 49 20

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 6/10	4 11 12	4 18 40	4 29 8	4 33 36	4 41 4	4 48 32	4 56 00	5 3 28	5 11 56	5 19 24	5 26 52	5 34 20	5 41 48	5 49 16	5 56 44
1 वृष 7/28	8 16 18	8 26 00	8 35 42	8 45 24	8 55 6	9 4 48	9 14 30	9 24 12	9 33 54	9 43 36	9 53 18	10 3 00	10 12 42	10 22 24	10 32 30
2 मिथुन 9/42	13 25 54	13 37 40	13 49 36	14 1 12	14 12 58	14 24 44	14 36 30	14 48 16	15 00 02	15 11 48	15 23 34	15 35 20	15 47 6	15 58 52	16 10 38
3 कर्क 11/46	19 25 12	19 37 40	19 50 8	20 2 36	20 15 4	20 27 32	20 40 00	20 52 28	21 4 56	21 17 24	21 29 52	21 42 20	21 54 48	22 7 16	22 19 44
4 सिंह 12/28	25 38 54	25 51 20	25 3 46	26 16 12	26 28 38	26 41 4	26 53 30	27 5 56	27 18 22	27 30 48	27 43 14	27 55 40	28 8 6	28 20 32	28 32 58
5 कन्या 12/26	31 51 54	32 4 20	32 16 46	32 29 12	32 41 38	32 54 4	33 6 30	33 18 56	33 31 22	33 43 48	33 56 12	34 8 40	34 21 6	34 33 32	34 45 58
6 तुला 12/26	38 5 12	38 17 40	38 30 8	38 42 36	38 55 4	39 7 32	39 20 00	39 32 28	39 44 56	39 57 24	40 9 22	40 22 20	40 34 48	40 47 16	40 59 44
7 वृश्चिक 12/28	44 12 54	44 24 40	44 36 26	44 48 12	44 59 58	45 11 44	45 23 30	45 35 16	45 47 2	45 59 48	46 10 34	46 22 20	46 34 6	46 45 52	46 57 38
8 धनु 11/46	49 47 18	49 57 00	50 06 42	50 16 24	50 26 06	50 35 48	50 45 30	50 55 12	51 04 54	51 14 36	51 24 18	51 34 00	51 43 42	51 53 24	52 03 6
9 मकर 9/42	54 18 12	54 25 40	54 33 8	54 40 36	54 48 4	54 55 32	55 3 00	55 10 28	55 17 56	55 25 24	55 32 52	55 40 20	55 47 48	55 55 16	56 2 44
10 कुम्भ 7/28	57 50 30	57 56 40	58 2 50	58 8 00	58 15 10	58 21 20	58 27 30	58 33 40	58 39 50	58 46 00	58 52 10	58 58 20	59 4 30	59 10 40	59 16 50
11 मीन 6/10	0 55 30	1 1 40	1 7 50	1 14 00	1 20 10	1 26 20	1 32 30	1 38 40	1 44 50	1 51 00	1 57 10	2 3 20	2 9 30	2 15 40	2 21 50

पेकिंग, अंकारा, वासिंगटन, लिसबोन, बेजिंग

40 अक्षांश पलभा (10/4) स्वोदयपल:— 178 219, 288,356, 379, 380.

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 5/56	2 22 24	2 20 20	2 34 16	2 40 12	2 46 8	2 52 4	2 58 00	3 5 18	3 12 36	3 19 54	3 27 12	3 34 30	3 41 48	3 49 6	3 56 24
1 वृष 7/18	5 53 12	6 00 30	6 7 48	6 15 6	6 22 24	6 29 42	6 37 00	6 46 36	6 56 12	7 5 48	7 15 24	7 25 00	7 34 36	7 44 12	7 53 48
2 मिथुन 9/36	10 27 24	10 37 00	10 46 36	10 56 12	11 5 40	11 15 24	11 25 00	11 36 52	11 48 44	12 00 36	12 12 28	12 24 20	12 36 12	12 48 4	12 59 56
3 कर्क 11/52	16 09 48	16 21 40	16 33 32	16 45 24	16 57 16	17 9 8	17 21 00	17 33 38	17 46 16	17 58 54	18 11 32	18 24 10	18 36 48	18 49 26	19 02 04
4 सिंह 12/38	22 25 12	22 36 50	22 49 28	23 02 06	23 15 44	23 27 22	23 40 00	23 52 40	24 5 20	24 18 00	24 30 40	24 43 20	24 56 00	25 8 40	25 21 20
5 कन्या 12/40	28 44 00	28 56 40	29 9 20	29 22 00	29 35 40	29 47 20	30 00 00	30 12 40	30 25 20	30 38 00	30 50 40	31 3 20	31 16 00	31 28 40	31 41 20
6 तुला 12/40	35 04 00	35 16 40	35 29 20	35 42 00	35 54 40	36 07 20	36 20 00	36 32 38	36 45 16	36 57 54	37 10 32	37 23 10	37 35 48	37 48 26	38 1 4
7 वृश्चिक 12/30	41 23 12	41 35 50	41 48 28	42 1 6	42 13 44	42 26 22	42 39 00	42 50 52	43 2 44	43 14 36	43 26 28	43 38 20	43 50 12	44 2 4	44 13 56
8 धनु 11/52	47 23 48	47 35 40	47 42 32	47 59 24	48 11 16	48 23 8	48 35 00	48 44 36	48 54 12	49 3 48	49 13 24	49 23 00	49 32 36	49 42 12	49 51 48
9 मकर 6/36	52 25 24	52 35 00	52 44 36	52 54 12	53 3 48	53 13 24	53 23 00	53 7 18	53 37 36	53 44 54	53 52 12	53 59 30	54 6 48	54 14 6	54 21 24
10 कुम्भ 7/18	56 18 12	56 25 30	56 32 48	56 40 6	56 47 24	56 54 42	57 2 00	57 7 56	57 13 52	57 19 48	57 25 44	57 31 40	57 37 36	57 43 32	57 49 28
11 मीन 5/56	59 24 24	59 30 20	59 36 16	59 42 12	59 48 8	59 54 04	00 00 00	0 5 56	0 11 52	0 17 48	0 23 44	0 29 40	0 35 36	0 41 32	0 47 28

अंश	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 5/56	4 3 42	4 11 00	4 18 18	4 25 36	4 32 54	4 40 12	4 47 30	4 54 48	5 2 6	5 9 24	5 16 42	5 24 00	5 31 18	5 38 36	5 45 54
1 वृष 7/18	8 3 24	8 13 00	8 22 36	8 32 12	8 41 48	8 51 24	9 1 00	9 10 36	9 20 12	9 29 48	9 39 24	9 49 00	9 58 36	10 8 12	10 17 40
2 मिथुन 9/36	13 11 44	13 23 40	13 35 32	13 47 24	13 59 16	14 11 8	14 23 00	14 34 52	14 46 44	14 58 36	15 10 28	15 22 20	15 34 12	15 46 4	15 58 56
3 कर्क 11/52	19 14 42	19 27 20	19 39 50	19 52 36	20 05 14	20 17 52	20 30 30	20 43 8	20 55 46	21 08 24	21 21 2	21 33 40	21 46 18	21 58 56	22 11 34
4 सिंह 12/38	25 34 00	25 46 40	25 59 20	26 12 00	26 24 40	26 37 20	26 50 00	27 2 40	27 15 20	27 28 00	27 40 40	27 53 20	28 6 00	28 18 40	28 30 20
5 कन्या 12/40	31 54 00	32 6 40	32 19 20	32 32 00	32 44 40	32 57 20	33 10 00	33 22 40	33 35 20	33 48 00	34 00 40	34 13 20	34 26 00	34 38 40	34 51 20
6 तुला 12/40	38 13 42	38 26 20	38 38 58	38 51 36	39 4 14	39 16 52	39 29 30	39 42 8	39 54 46	40 7 24	40 20 2	40 32 40	40 45 18	40 57 56	41 10 34
7 वृश्चिक 12/30	44 25 48	44 37 40	44 49 32	45 1 24	45 13 16	45 25 8	45 37 00	45 48 52	46 00 44	46 12 36	46 24 28	46 36 20	46 48 12	47 00 4	47 11 56
8 धनु 11/52	50 1 24	50 11 00	50 20 36	50 30 12	50 39 48	50 49 24	50 59 00	51 8 36	51 18 12	51 27 48	51 37 24	51 47 00	51 57 36	52 6 12	52 15 48
9 मकर 6/36	54 28 42	54 36 00	54 43 18	54 50 36	54 57 54	55 5 12	55 12 30	55 19 48	55 27 6	55 34 24	55 41 42	55 49 00	55 59 18	56 3 36	56 10 54
10 कुम्भ 7/18	57 55 24	58 1 20	58 7 16	58 13 12	58 19 8	58 25 04	58 31 00	58 36 56	58 42 52	58 48 48	58 54 44	59 00 40	59 6 36	59 12 32	59 18 28
11 मीन 5/56	0 53 24	0 59 20	1 5 16	1 11 12	1 17 8	1 23 4	1 29 00	1 34 56	1 40 52	1 46 48	1 52 44	1 58 40	2 4 36	2 10 32	2 16 28

रोम, बोस्टन, चिकागो, न्यूयार्क, सीफिया, वेलिंगटन, मेड्रिड, तासकेन्ट

42 अक्षांश पलभा (10/48) स्वोदयपल:— 171 213, 286,358, 385, 387.

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 8/24	2 16 48	2 22 30	2 20 12	2 33 54	2 38 36	2 45 18	2 51 00	2 58 2	3 5 4	3 12 6	3 19 8	3 26 10	3 33 12	3 40 14	3 47 16
1 वृष 9/18	5 39 48	5 46 50	5 53 52	5 00 54	6 7 56	6 14 58	6 22 00	6 31 32	6 41 4	6 50 36	7 00 08	7 09 40	7 18 12	7 28 44	7 38 16
2 मिथुन 10/28	10 10 48	10 20 20	10 29 52	10 39 24	10 48 56	10 58 28	11 8 00	11 19 56	11 31 52	11 43 48	11 55 44	12 7 40	12 19 36	12 31 32	12 43 28
3 कर्क 9/10	15 54 24	16 6 20	16 10 16	16 30 12	16 42 8	16 54 4	17 6 00	17 18 54	17 31 48	17 44 42	17 57 36	18 10 30	18 23 24	18 36 18	18 49 12
4 सिंह 10/38	22 15 36	22 28 30	22 41 24	22 54 18	23 7 12	23 20 6	23 33 00	23 45 54	23 58 48	24 11 42	24 24 36	24 37 30	24 50 24	25 3 18	25 16 12
5 कन्या 10/10	28 42 36	28 55 30	29 8 24	29 21 18	29 34 12	29 47 6	30 00 00	30 12 54	30 25 42	30 38 36	30 51 36	31 4 30	31 17 24	31 30 18	31 43 12
6 तुला 10/10	35 9 36	35 22 30	35 35 24	35 48 18	36 1 12	36 14 06	36 27 00	36 38 54	36 52 48	37 5 42	37 18 36	37 31 30	37 44 24	37 57 18	38 10 12
7 वृश्चिक 10/38	41 36 36	41 49 30	42 02 24	42 15 18	42 28 12	42 41 06	42 54 00	43 5 56	43 17 52	43 29 48	43 41 44	43 53 40	44 5 36	44 17 32	44 29 28
8 धनु 11/0	47 40 24	47 54 20	48 4 16	48 16 12	48 28 08	48 40 04	48 54 00	49 1 32	49 11 4	49 20 34	49 30 8	49 39 40	49 49 12	49 58 44	50 7 16
9 मकर 10/28	52 40 48	52 50 20	52 59 52	53 9 24	53 18 24	53 28 56	53 39 00	53 45 2	53, 52 4	53 59 6	54 6 8	54 13 10	54 20 12	54 27 14	54 34 16
10 कुम्भ 9/18	56 26 48	56 33 50	56 40 52	56 47 54	56 54 56	57 1 58	57 9 00	57 14 42	57 20 24	57 26 6	57 31 48	57 37 30	57 43 12	57 49 14	57 54 36
11 मीन 8/26	59 25 58	59 31 30	59 37 12	59 42 54	59 48 36	59 54 18	00 00 00	0 5 42	0 11 24	0 17 6	0 22 48	0 28 30	0 34 12	0 38 54	0 45 36

अंश	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 8/24	3 58 18	4 1 20	4 8 22	4 15 24	4 22 26	4 28 28	4 36 30	4 43 32	4 50 34	4 57 36	5 4 38	5 11 40	5 18 42	5 25 44	5 32 46
1 वृष 9/18	7 47 48	7 57 20	8 8 52	8 16 54	8 25 56	8 35 28	8 45 00	8 54 32	9 4 04	9 13 26	9 23 18	9 32 40	9 42 22	9 51 44	10 1 16
2 मिथुन 10/28	12 55 24	13 7 20	13 19 16	13 31 12	13 43 8	13 55 4	14 7 00	14 18 56	14 30 52	14 42 48	14 54 44	15 6 40	15 18 36	15 30 32	15 42 28
3 कर्क 9/10	19 2 6	19 15 00	19 27 54	19 40 48	19 53 42	20 3 36	20 19 30	20 32 24	20 45 18	20 58 12	21 11 6	21 24 00	21 36 54	21 49 48	22 2 42
4 सिंह 10/38	25 29 6	25 42 00	25 54 54	26 7 48	26 20 42	26 33 36	26 46 30	26 59 24	27 12 18	27 25 12	27 38 6	27 51 00	28 3 54	28 16 48	28 29 42
5 कन्या 10/10	31 56 06	32 09 00	32 21 54	32 34 48	32 47 42	33 00 36	33 13 30	33 26 24	33 39 18	33 52 12	34 5 6	34 18 00	34 30 54	34 43 48	34 56 42
6 तुला 10/10	38 23 6	38 36 00	38 48 54	39 1 48	39 14 42	39 27 36	39 40 30	39 53 24	40 06 18	40 19 12	40 32 6	40 45 00	40 57 54	41 10 48	41 23 42
7 वृश्चिक 10/38	44 41 24	44 53 20	45 5 16	45 17 12	45 29 8	45 41 4	45 53 00	46 4 56	46 16 52	46 28 48	46 40 44	46 52 40	47 4 36	47 16 32	47 28 28
8 धनु 11/0	50 17 48	50 27 20	50 36 52	50 46 24	55 55 56	51 5 28	51 15 00	51 24 32	51 34 4	51 43 36	51 53 18	52 2 40	52 12 12	52 21 44	52 31 16
9 मकर 10/28	54 41 18	54 48 20	54 55 22	55 2 24	55 9 26	55 16 28	55 23 30	55 30 32	55 37 34	55 44 36	55 51 38	55 58 40	56 5 42	56 12 44	56 19 46
10 कुम्भ 9/18	58 00 18	58 6 00	58 11 42	58 17 30	58 23 6	58 28 48	58 34 30	58 40 12	58 45 54	58 51 36	58 57 18	59 3 00	59 8 42	59 14 24	59 20 6
11 मीन 8/26	0 51 10	0 57 00	1 2 42	1 8 24	1 14 28	1 19 48	1 25 30	1 31 12	1 36 54	1 42 36	1 48 18	1 54 00	1 59 42	2 5 24	2 11 6

टोरन्टो, बेलग्रेड

44 अक्षांश पलभा:— (11/35) स्वोदयपल— 163, 206, 283, 361, 392, 395.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 5/26	2 10 24	2 15 50	2 20 16	2 26 42	2 32 08	2 37 34	2 43 00	2 49 52	2 56 44	3 3 44	3 10 28	3 17 20	3 24 12	3 31 4	3 37 56	3 44 48	3 51 40	3 58 32	4 5 24	4 12 16	4 18 8	4 26 0	4 32 52	4 39 44	4 46 36	4 53 28	5 00 20	5 7 12	5 14 4	5 20 56
1 वृष 7/40	5 27 48	5 34 40	5 41 32	5 48 24	5 55 16	6 2 8	6 9 00	6 18 26	6 27 52	6 37 18	6 46 44	6 56 10	7 5 36	7 15 2	7 24 20	7 33 54	7 43 20	7 52 46	8 02 12	8 11 38	8 21 4	8 30 30	8 39 56	8 48 22	8 58 46	9 08 14	9 17 40	9 27 6	9 36 32	9 45 58
2 मिथुन 9/46	9 55 25	10 4 50	10 14 16	10 23 42	10 33 8	10 42 34	10 52 00	11 4 2	11 16 4	11 28 6	11 40 8	11 52 10	12 4 12	12 16 14	12 28 16	12 40 18	12 52 20	13 4 22	13 16 24	13 28 26	13 40 28	13 52 30	14 4 32	14 16 34	14 28 36	14 40 38	14 52 40	15 4 42	15 16 44	15 28 46
3 कर्क 11/42	15 40 48	15 52 50	16 4 52	16 16 54	16 28 56	16 40 58	16 53 00	17 6 4	17 19 8	17 32 12	17 45 16	17 58 20	18 11 24	18 24 28	18 37 32	18 50 36	19 3 40	19 16 44	19 29 48	19 42 52	19 55 56	20 9 00	20 22 4	20 35 8	20 48 12	21 1 16	21 14 20	21 27 24	21 40 28	21 53 32
4 सिंह 12/16	22 6 36	22 19 40	22 32 44	22 45 48	22 58 52	23 11 56	23 25 00	23 38 10	23 51 20	24 4 30	24 17 40	24 30 50	24 45 00	24 57 10	25 10 20	25 23 30	25 36 40	25 49 50	26 3 00	26 16 10	26 29 20	26 42 30	26 55 40	27 8 50	27 22 00	27 35 10	27 48 20	28 1 30	28 14 40	28 27 50
5 कन्या 10/18	28 41 00	28 54 10	29 7 20	29 20 30	29 33 40	29 46 50	30 00 00	30 13 10	30 26 20	30 39 30	30 52 40	31 5 50	31 19 00	31 32 10	31 45 20	31 58 30	32 11 40	32 24 50	32 38 00	32 51 10	33 4 20	33 17 30	33 30 40	33 43 50	33 57 00	34 10 10	34 23 20	34 36 30	34 49 40	35 2 50
6 तुला 12/12	35 16 00	35 29 10	35 42 20	35 55 30	36 8 40	36 21 50	36 35 00	36 48 4	37 1 8	37 14 12	37 27 16	37 40 20	37 53 24	38 6 28	38 19 32	38 32 36	38 45 40	38 58 44	39 11 48	39 24 52	39 37 56	39 51 00	40 4 4	40 17 8	40 30 12	40 43 16	40 56 20	41 9 24	41 22 28	41 35 32
7 वृश्चिक 12/16	41 48 36	42 1 40	42 14 44	42 27 48	42 40 52	42 53 56	43 7 00	43 19 02	43 31 04	43 43 06	43 55 08	44 7 10	44 19 12	44 31 14	44 [illegible] 16	44 55 18	45 7 20	45 19 22	45 31 24	45 43 26	45 55 28	46 7 30	46 19 32	46 31 34	46 43 36	46 55 38	47 7 40	47 19 42	47 31 44	47 43 46
8 धनु 8/18	47 55 48	48 7 50	48 19 52	48 31 54	48 43 56	48 55 58	49 8 00	49 17 26	49 26 52	49 36 18	49 45 44	49 55 10	50 4 36	50 14 2	50 23 28	50 32 54	50 42 20	50 51 46	51 1 12	51 10 38	51 20 4	51 28 30	51 38 56	51 48 22	51 57 48	52 7 14	52 16 40	52 26 6	52 35 32	52 44 50
9 मकर 9/46	52 55 24	53 3 50	53 13 16	53 22 48	53 32 8	53 41 34	53 51 00	53 57 52	54 4 44	54 11 36	54 18 28	54 25 20	54 32 12	54 38 4	54 45 56	54 52 48	54 59 40	55 6 32	55 13 24	55 20 16	55 27 8	55 34 00	55 40 52	55 48 44	55 54 36	56 1 28	56 8 20	56 15 12	56 22 4	56 29 56
10 कुम्भ 7/40	56 35 48	56 42 40	56 49 32	56 56 24	57 3 16	57 10 8	57 17 00	57 22 26	57 27 52	57 33 18	57 38 44	57 44 10	57 49 36	57 55 2	58 00 28	58 5 54	58 11 20	58 16 46	58 22 12	58 27 38	58 33 4	58 38 30	58 43 56	58 49 22	58 54 48	59 00 14	59 5 42	59 11 6	59 16 32	59 21 50
11 मीन 5/26	59 27 24	59 32 50	59 38 16	59 43 42	[illegible]	[illegible]	0 0 0	0 5 26	0 10 52	0 16 18	0 21 44	0 27 10	0 32 36	0 38 2	0 43 28	0 48 54	0 54 20	0 59 46	1 5 12	1 10 38	1 16 4	1 21 30	1 26 56	1 32 22	1 37 48	1 43 14	1 48 40	1 54 06	1 59 32	2 4 50

ओटाबा, मीलन, वेनाइस, क्यूबेक, जेनेवा, बचारेस्ट, बरेनी, मोन्टिअल

(46) अक्षांश। पलभा 12/25/36 स्वोदयपल:— 155, 200, 281, 363, 398, 403

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 5/10	2 04 00	2 9 10	2 14 20	2 19 30	2 24 40	2 9 50	2 35 00	2 41 40	2 48 20	2 55 00	3 1 40	3 8 20	3 15 00	3 21 40	3 28 20
1 वृष 6/40	5 15 00	5 21 40	5 28 20	5 35 00	5 41 40	5 48 20	5 55 00	6 4 22	6 13 44	6 23 6	6 32 28	6 41 50	6 51 12	7 00 34	7 9 56
2 मिथुन 9/22	9 39 48	9 49 10	9 58 32	10 7 54	10 17 16	10 26 38	10 36 00	10 48 6	11 00 12	11 12 18	11 24 24	11 36 30	11 48 36	12 00 42	12 12 48
3 कर्क 12/6	15 26 24	15 38 30	15 50 36	16 2 42	16 14 48	16 26 54	16 39 00	16 52 16	17 5 32	17 18 48	17 32 4	17 45 20	17 58 36	18 11 52	18 15 8
4 सिंह 13/16	21 57 24	22 10 40	22 23 56	22 37 12	22 50 28	23 3 44	23 17 00	23 30 26	23 43 52	23 57 18	24 10 44	24 24 10	24 27 36	24 51 2	25 4 28
5 कन्या 13/26	28 39 24	28 52 50	29 6 16	29 19 42	29 33 8	29 46 34	30 00 00	30 13 26	30 26 52	30 40 18	30 53 44	31 7 10	31 20 36	31 34 2	31 47 28
6 तुला 13/26	35 22 24	35 35 50	35 49 16	36 2 42	36 16 8	36 29 34	36 43 00	36 56 16	37 9 32	37 22 48	37 36 4	37 49 20	38 2 36	38 15 52	38 29 8
7 वृश्चिक 13/16	42 1 24	42 14 40	42 27 56	42 41 12	42 54 28	43 7 44	43 21 00	43 33 6	43 45 12	43 47 18	44 9 24	44 21 30	44 33 36	44 45 42	44 57 48
8 धनु 12/6	48 11 24	48 23 30	48 35 36	48 47 42	48 59 48	49 11 54	49 24 00	49 33 22	49 42 44	49 22 6	50 1 28	50 10 50	50 20 12	50 29 34	50 28 56
9 मकर 9/22	53 8 48	53 18 10	53 27 32	53 36 54	53 46 16	53 55 38	54 5 00	54 11 44	54 18 20	54 25 00	54 31 40	54 38 20	54 45 00	54 51 40	54 58 20
10 कुम्भ 4/40	56 45 00	56 51 40	56 58 20	57 5 00	57 11 40	57 18 20	57 25 00	57 30 10	57 35 20	57 40 30	57 45 40	57 50 50	57 56 00	58 1 10	58 6 20
11 मीन 5/10	59 29 00	59 34 10	59 39 20	59 44 30	59 49 40	59 54 50	00 00 00	0 5 10	0 10 20	0 15 30	0 20 40	0 25 50	0 31 0	0 36 10	0 41 20

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 5/10	3 35 00	3 41 40	3 48 20	3 55 00	4 1 40	4 8 20	4 15 00	4 21 40	4 28 20	4 35 00	4 41 40	4 48 20	4 55 00	5 1 40	5 8 20
1 वृष 6/40	7 19 18	7 28 40	7 38 2	7 47 24	7 56 46	8 6 8	8 15 30	8 24 52	8 34 4	8 43 36	8 52 58	9 2 20	9 11 42	8 21 4	9 30 26
2 मिथुन 9/22	12 24 54	12 37 00	12 48 6	13 1 12	13 13 18	13 15 24	13 37 30	13 9 36	14 1 42	14 13 48	14 25 54	14 38 00	14 50 6	15 2 12	15 14 18
3 कर्क 12/6	18 38 24	18 51 40	19 04 56	19 18 12	19 31 28	19 44 44	19 58 00	20 11 16	20 24 32	20 37 48	20 51 4	20 4 20	21 17 36	21 30 52	21 44 8
4 सिंह 13/16	25 17 54	25 31 20	25 44 46	25 58 12	26 11 38	26 25 4	26 28 30	26 51 56	27 5 22	27 18 48	27 32 14	27 45 40	27 59 6	28 12 32	28 25 58
5 कन्या 13/26	32 00 54	32 14 20	32 27 46	32 41 12	32 44 38	33 8 4	33 21 30	33 34 56	33 48 22	34 1 48	34 15 14	34 28 40	34 42 6	34 55 32	35 8 58
6 तुला 13/26	38 42 24	38 55 40	39 8 56	39 22 12	39 35 28	39 48 44	40 2 00	40 15 16	40 28 32	40 41 48	40 55 8	41 8 20	41 21 36	41 34 52	41 48 8
7 वृश्चिक 13/16	45 9 54	45 22 00	45 34 6	45 46 12	45 58 18	46 10 24	46 22 30	46 34 36	46 46 42	46 58 48	47 10 54	47 23 00	47 35 6	47 47 12	47 59 18
8 धनु 12/6	50 48 18	50 57 40	51 7 2	51 16 24	51 25 46	51 35 8	51 44 30	51 53 52	52 3 14	52 12 36	52 21 58	52 31 20	52 40 42	52 50 4	52 49 26
9 मकर 9/22	55 5 00	55 11 40	55 18 20	55 25 00	55 31 40	55 38 20	55 45 00	55 51 40	55 58 20	56 5 00	56 11 40	56 18 20	56 25 00	56 31 40	56 38 20
10 कुम्भ 4/40	58 11 30	58 16 40	58 21 50	58 27 00	58 32 10	58 37 20	58 42 30	58 47 40	58 52 50	58 58 00	59 3 10	59 8 20	59 13 30	59 40 40	59 23 50
11 मीन 5/10	0 46 30	0 51 40	0 56 50	1 2 00	1 7 10	1 12 20	1 17 30	1 22 40	1 27 50	1 33 00	1 38 10	1 43 20	1 48 30	1 53 40	1 58 50

बोन, फ्रेन्कफर्ट, हाइडलबर्ग, पेगू, लिपजिग

(50) अक्षांश। पलभा 14/18 स्वोदयपल:— 136, 185, 274, 370, 413, 422

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 4/32	1 48 48	1 53 20	1 57 52	2 2 24	2 6 56	2 11 28	2 16 00	2 22 10	2 28 20	2 34 30	2 40 40	2 46 50	2 53 00	2 59 10	3 5 20
1 वृष 6/10	4 44 00	4 50 10	4 56 20	5 2 30	5 8 40	5 14 50	5 21 00	5 30 8	5 39 16	5 48 24	5 57 32	6 6 40	6 15 48	6 24 56	6 34 4
2 मिथुन 9/8	9 00 12	9 9 20	9 18 28	9 27 36	9 36 44	9 45 52	9 55 00	10 7 20	10 19 40	10 32 00	10 44 20	10 56 40	11 9 00	11 21 20	11 33 40
3 कर्क 12/20	14 51 00	15 3 20	15 15 40	15 28 00	15 40 20	15 52 40	16 5 00	16 18 46	16 32 32	16 46 18	17 00 4	17 13 50	17 27 36	17 41 22	17 25 8
4 सिंह 13/46	21 35 24	21 49 10	22 02 56	22 16 42	22 30 28	22 44 14	22 58 00	23 12 4	23 26 8	23 40 12	23 54 16	24 8 20	24 22 24	24 36 28	24 50 32
5 कन्या 14/4	28 35 36	28 49 40	29 03 44	29 17 48	29 31 52	29 45 56	30 00 00	30 14 4	30 28 8	30 42 12	30 56 16	31 10 20	31 24 24	31 38 28	31 52 32
6 तुला 14/4	35 37 36	35 51 40	36 5 44	36 19 42	36 33 52	36 47 56	37 2 00	37 15 46	37 29 32	37 43 18	37 57 4	38 10 50	38 24 36	38 38 22	38 52 8
7 वृश्चिक 13/46	42 32 24	42 36 10	42 59 56	43 13 42	43 27 28	43 41 14	43 55 00	44 7 20	44 19 40	44 32 00	44 44 20	44 56 40	45 9 00	45 21 20	45 33 40
8 धनु 12/20	48 51 00	49 3 20	49 15 40	49 28 00	49 40 20	49 52 40	50 5 00	50 14 8	50 23 16	50 32 24	50 41 32	50 50 40	50 59 48	51 8 56	51 18 4
9 मकर 9/8	53 44 12	53 53 20	54 2 28	54 11 36	54 20 44	54 29 52	54 39 00	54 45 10	54 51 20	54 57 30	55 3 40	55 9 50	55 16 00	55 22 10	55 28 20
10 कुम्भ 6/10	57 7 00	57 13 10	57 19 20	57 25 30	57 31 40	57 37 50	57 44 00	57 48 32	57 53 04	57 57 36	58 2 8	58 6 40	58 11 12	58 15 44	58 20 16
11 मीन 4/32	59 32 48	59 37 20	59 41 52	59 46 24	59 50 56	59 55 28	00 00 00	00 4 32	0 9 4	0 13 36	0 18 8	0 22 40	0 27 12	0 31 44	0 36 16

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 4/32	3 11 30	3 17 40	3 23 50	3 30 00	3 36 10	3 42 20	3 48 30	3 54 40	4 00 50	4 7 00	4 13 10	4 19 20	4 25 30	4 31 40	4 37 50
1 वृष 6/10	6 43 12	6 52 20	7 1 28	7 14 36	7 19 44	7 28 52	7 38 00	7 47 8	8 56 16	8 5 24	8 14 32	8 23 40	8 32 48	8 41 56	8 51 4
2 मिथुन 9/8	11 46 00	11 58 20	12 10 40	12 23 00	12 35 20	12 47 40	13 00 00	13 12 20	13 24 40	13 37 00	13 49 20	14 1 40	14 14 00	14 26 20	14 38 40
3 कर्क 12/20	18 8 54	18 22 40	18 36 26	18 50 12	19 3 58	19 17 44	19 31 30	19 45 16	19 59 2	20 12 48	20 26 34	20 40 20	20 54 6	21 7 52	21 21 38
4 सिंह 13/46	25 4 36	25 18 40	25 32 44	25 46 48	26 00 52	26 41 56	26 29 00	26 43 4	26 57 8	27 11 12	27 25 16	28 39 20	27 53 24	28 07 28	28 31 32
5 कन्या 14/4	32 6 36	32 20 40	32 34 44	32 48 48	33 2 52	33 16 56	33 31 00	33 45 4	33 59 8	34 13 12	34 27 16	34 41 20	34 55 24	35 9 28	35 23 32
6 तुला 14/4	39 5 54	39 19 40	39 33 26	39 47 12	40 00 58	40 14 44	40 28 30	40 42 16	40 56 2	41 9 48	41 23 34	41 37 20	41 51 6	42 4 52	42 18 38
7 वृश्चिक 13/46	45 46 00	45 58 20	46 10 40	46 23 00	46 35 20	46 47 40	47 00 00	47 12 20	47 24 40	47 37 00	47 49 20	48 1 40	48 26 00	48 26 20	48 38 40
8 धनु 12/20	51 27 12	51 36 20	51 45 28	51 54 36	52 3 44	52 12 52	52 22 00	52 31 8	52 40 16	52 49 24	52 58 32	53 7 40	53 16 48	53 25 56	53 35 4
9 मकर 9/8	55 34 30	55 40 40	55 46 50	55 53 00	55 59 10	56 5 20	56 11 30	56 17 40	56 23 50	56 30 00	56 36 10	56 42 20	56 48 30	56 54 40	57 00 50
10 कुम्भ 6/10	58 24 48	58 29 20	58 33 52	58 38 24	58 42 56	58 47 28	58 52 00	58 56 32	59 1 4	59 5 36	59 10 8	59 14 40	59 19 12	59 23 44	59 28 16
11 मीन 4/32	0 40 48	0 45 20	0 49 52	0 54 24	0 58 56	1 3 28	1 8 00	1 12 32	1 17 4	1 21 36	1 26 8	1 30 40	1 35 12	1 39 44	1 44 16

लन्दन, वारसा, कैम्ब्रिज, ग्रिनविच, न्यूकेस्टल

(52) अक्षांश। पलभा 15/21/33 स्वोदयपलः— 126, 176, 271, 373, 422, 432

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 4/12	1 40 48	1 45 00	1 49 12	1 53 24	1 57 36	2 1 48	2 6 00	2 11 52	2 17 44	2 23 36	2 29 28	2 35 20	2 41 12	2 47 4	2 52 56	2 58 48	3 4 40	3 10 32	3 16 24	3 22 16	3 28 8	3 34 00	3 39 52	3 45 44	3 51 36	3 57 28	4 3 20	4 9 12	4 15 4	4 20 56
1 वृष 5/52	4 26 48	4 32 40	4 38 32	4 44 24	4 50 16	4 56 8	5 0 00	5 11 2	5 20 4	5 29 6	5 38 8	5 47 10	5 56 12	6 5 14	6 14 16	6 23 18	6 32 20	6 41 22	6 50 24	6 59 26	7 8 20	7 17 30	7 26 32	7 65 34	7 44 36	7 53 38	7 2 40	8 11 42	8 20 44	8 19 46
2 मिथुन 9/2	8 38 48	8 47 50	8 56 52	8 25 54	9 14 56	9 23 58	9 33 00	9 45 26	9 57 52	10 10 18	10 12 44	10 35 10	10 47 36	11 00 2	11 12 28	11 24 54	11 37 20	11 49 46	12 2 12	12 14 30	12 27 04	12 39 30	12 51 56	13 4 12	13 16 48	13 29 14	13 41 40	13 54 06	17 6 32	17 18 58
3 कर्क 12/26	14 31 24	14 43 50	14 56 16	15 8 42	15 21 8	15 33 34	15 46 00	16 00 4	16 14 8	16 28 12	16 42 16	16 56 20	17 10 24	17 24 28	18 38 32	17 52 36	17 6 40	18 20 44	18 34 48	18 48 52	19 2 56	19 17 00	19 31 4	19 45 8	19 59 12	20 13 16	20 27 20	20 41 24	20 55 28	21 9 32
4 सिंह 14/4	21 23 36	21 37 40	21 51 44	22 50 48	22 19 52	22 33 56	22 47 00	23 2 24	23 16 48	23 31 12	23 45 36	24 00 00	24 14 24	24 28 48	24 43 12	24 57 36	25 12 00	25 26 24	25 40 48	25 55 12	26 9 36	26 24 00	26 38 24	26 52 48	27 7 12	27 21 36	27 36 00	27 50 24	28 4 48	28 19 12
5 कन्या 14/24	28 33 36	28 48 00	29 2 24	29 16 40	29 31 12	29 45 36	30 00 00	30 14 24	30 28 48	30 43 12	30 57 36	31 12 00	31 26 24	31 40 48	31 55 12	32 9 36	32 24 00	32 38 24	32 52 48	33 7 12	33 21 36	33 36 00	33 50 24	34 04 48	34 19 12	34 33 36	34 48 00	35 02 24	35 16 48	35 31 12
6 तुला 14/24	35 45 36	36 00 00	36 14 24	36 28 48	36 43 12	36 57 36	37 12 00	37 26 4	37 40 8	37 44 12	38 8 16	38 22 20	38 36 24	38 50 28	39 4 32	39 18 36	39 32 40	39 46 44	40 00 48	40 14 52	40 28 56	4 43 00	40 57 4	41 11 8	41 25 12	41 39 16	41 43 20	41 47 24	42 11 28	42 25 32
7 वृश्चिक 14/4	42 39 36	43 34 40	43 17 44	43 31 48	43 45 52	43 59 56	44 14 00	44 26 26	44 38 52	44 51 18	45 3 45	45 16 10	45 28 36	45 41 2	45 53 28	46 5 54	46 18 20	46 30 46	46 43 12	46 55 38	47 8 4	47 20 30	47 32 56	47 45 22	47 57 48	48 10 14	48 22 40	48 35 6	48 47 32	48 59 58
8 धनु 12/26	49 12 24	49 24 50	49 37 16	49 49 42	50 2 8	50 14 34	50 27 00	50 36 2	50 45 4	50 54 6	51 3 8	51 12 10	51 21 12	51 30 14	51 39 16	51 48 18	51 57 20	52 6 2	51 15 24	52 24 26	52 33 28	52 42 30	52 51 32	53 00 34	53 9 36	53 18 38	53 27 40	53 36 42	53 45 44	53 54 46
9 मकर 9/2	54 2 48	54 12 50	54 21 42	54 30 54	54 39 56	54 48 58	54 58 00	55 3 52	55 9 44	55 15 36	55 21 28	55 27 20	55 33 12	55 39 4	55 44 56	55 50 48	55 56 40	56 2 32	56 8 24	56 14 16	56 20 8	56 26 00	56 31 52	56 37 44	56 43 36	56 49 28	56 55 20	57 1 12	57 7 4	57 12 56
10 कुम्भ 5/52	57 18 48	57 24 40	57 30 32	57 36 24	57 42 16	57 48 8	57 54 00	57 58 12	58 2 24	58 6 36	58 10 48	58 15 00	59 19 12	59 23 24	58 27 36	58 31 48	59 36 00	58 40 12	58 44 24	58 48 36	58 52 48	58 57 00	59 1 12	59 5 24	59 9 36	59 13 48	59 17 00	59 22 12	59 26 24	59 30 36
11 मीन 4/12	59 34 48	59 39 00	59 43 12	59 47 24	59 51 36	59 55 48	00 00 00	00 4 12	0 8 24	0 12 36	0 16 48	0 21 00	0 25 12	0 29 24	0 33 36	0 37 48	0 42 00	0 46 12	0 50 24	0 54 36	0 58 48	1 3 00	1 7 12	1 11 24	1 15 36	1 19 48	1 24 00	1 28 12	1 32 24	1 36 36

लीवरपोल, मैनचेस्टर, डुबलिन, लीवरपोल, मास्को, लीडस

54 अक्षांश (पलभा 16/31) स्वोदयमान 114, 167, 267, 377, 431, 444.

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
0 मेष 3/48	1 31 12	1 35 00	1 38 48	1 42 36	1 46 24	1 50 12	1 54 00	1 59 34	2 5 8	2 10 42	2 16 16	2 21 50	2 27 24	2 32 58	2 38 32
1 वृष 5/34	4 7 36	4 13 10	4 18 44	4 24 18	4 29 52	4 35 26	4 41 00	4 49 54	4 58 48	5 7 42	5 16 36	5 25 30	5 34 24	5 43 18	5 52 12
2 मिथुन 8/54	8 14 36	8 22 30	8 32 24	8 41 18	8 50 12	8 59 6	9 8 00	9 20 34	9 33 8	9 45 42	9 58 16	10 10 50	10 23 24	10 35 58	10 48 32
3 कर्क 12/34	14 9 36	14 22 10	14 34 44	14 47 18	14 59 52	15 12 16	15 25 00	15 39 22	15 53 44	16 8 6	16 22 28	16 36 50	16 51 12	17 5 34	17 19 56
4 सिंह 14/22	21 10 48	21 24 10	21 38 32	21 53 54	22 7 16	22 21 38	22 36 00	22 50 48	23 5 36	23 20 24	23 35 18	23 50 00	24 4 48	24 19 36	24 34 24
5 कन्या 14/48	28 31 12	28 46 00	29 00 48	29 15 36	29 30 24	29 45 12	30 00 00	30 14 48	30 29 36	30 44 24	30 59 12	31 14 00	31 28 48	31 43 36	31 58 24
6 तुला 14/48	35 55 12	36 10 00	36 24 48	36 39 36	36 54 24	37 9 12	37 24 00	37 38 22	37 52 44	38 7 6	38 21 28	38 35 50	38 50 12	39 4 34	39 18 56
7 वृश्चिक 14/22	43 8 48	43 23 10	43 37 32	43 51 54	44 6 13	44 20 38	44 35 00	44 47 34	45 00 8	45 12 42	45 25 16	45 37 50	45 50 24	46 2 58	46 15 32
8 धनु 12/34	49 36 36	49 48 10	50 1 44	50 14 18	50 26 52	50 39 26	50 52 00	51 00 54	51 9 48	51 18 42	51 27 36	51 36 30	51 45 24	51 54 18	52 3 12
9 मकर 8/54	54 25 36	54 34 30	54 43 24	54 52 18	55 1 12	55 10 6	55 19 00	55 24 34	55 30 8	55 35 42	55 41 16	55 46 50	55 52 24	55 57 58	56 3 32
10 कुम्भ 5/34	57 32 36	57 38 10	57 43 44	57 49 18	57 54 52	58 00 26	58 6 00	58 9 48	58 13 36	58 17 24	58 21 12	58 25 00	58 28 48	58 32 36	58 36 24
11 मीन 3/48	59 37 12	59 41 00	59 44 48	59 48 36	59 52 24	59 56 12	0 0 0	0 3 48	0 7 36	0 11 24	0 15 12	0 19 00	0 22 48	0 26 36	0 30 24

	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
0 मेष 3/48	2 44 6	2 49 40	3 55 14	3 00 48	3 6 22	3 11 56	3. 17 20	3 23 4	3 28 38	3 34 12	3 39 46	3 45 20	3 50 54	3 56 48	4 2 2
1 वृष 5/34	6 1 6	6 10 00	6 18 54	6 27 48	6 36 42	6 45 36	6 54 30	7 3 24	7 12 18	7 21 12	7 30 6	7 39 00	7 47 54	7 56 48	8 5 42
2 मिथुन 8/54	11 1 6	11 13 40	11 26 14	11 38 48	11 51 22	12 3 56	12 16 30	12 29 4	12 41 38	12 54 12	13 6 46	13 19 20	13 31 54	13 44 28	13 57 2
3 कर्क 12/34	17 34 18	17 48 40	18 3 2	18 17 24	18 31 46	18 46 8	19 00 30	19 14 52	19 29 14	19 43 36	19 57 58	20 12 20	20 26 42	20 42 4	20 55 26
4 सिंह 14/22	24 49 12	24 4 00	25 18 48	25 33 36	25 48 24	26 3 12	26 18 00	26 32 48	26 47 36	27 2 24	27 17 12	27 32 00	27 46 48	28 1 36	28 16 24
5 कन्या 14/48	32 13 12	32 28 00	32 42 48	32 57 36	33 12 24	33 27 12	33 42 00	33 56 48	34 11 36	34 26 24	34 41 12	34 56 00	35 10 48	35 25 36	35 40 24
6 तुला 14/48	39 33 18	39 47 40	40 2 2	40 16 24	40 30 46	40 45 8	40 59 30	41 13 52	41 28 14	41 42 36	41 56 58	42 11 20	42 25 42	42 40 4	42 54 26
7 वृश्चिक 14/22	46 28 6	46 40 40	46 53 14	47 5 48	47 18 22	47 30 56	47 43 30	47 56 4	48 8 38	48 21 12	48 33 46	48 46 20	48 58 54	49 11 28	49 24 2
8 धनु 12/34	52 12 6	52 21 00	52 29 54	52 38 48	52 47 42	52 56 36	53 5 30	53 14 24	53 23 18	53 32 12	53 41 06	53 50 00	53 58 54	54 7 48	54 16 42
9 मकर 8/54	56 9 6	56 14 40	56 20 14	56 25 48	56 31 22	56 36 56	56 42 30	56 48 4	56 53 38	56 59 12	57 4 46	57 10 20	57 15 54	57 21 28	57 27 2
10 कुम्भ 5/34	58 40 12	58 44 00	58 47 48	58 51 36	58 55 24	58 59 12	59 3 00	59 6 48	59 10 36	59 14 24	59 18 12	59 22 00	59 25 48	59 29 36	59 33 24
11 मीन 3/48	0 34 12	0 38 00	0 41 48	0 45 36	0 49 24	0 53 12	0 57 0	1 00 48	1 4 36	1 8 24	1 12 12	1 16 00	1 19 48	1 23 36	1 27 24

दशम लग्न सारणी (शून्य अंश अक्षांश) सर्वत्रोपयोगी

विशेष:- दशम लग्न निकालने के लिए अभीष्ट अक्षांश से संबंधित लग्न सारणी से सूर्य के राशि अंश का फल लेकर इष्ट काल जोड़ना चाहिये। जुड़े हुये फल में 15 घटी घटाकर शेष फल को दशम लग्न सारणी में बायीं ओर राशि एवं उपर अंश देखकर उसके तुल्य दशम लग्न होगा। सूक्ष्म फल हेतु अनुपात द्वारा कला विकला का आनयन करना चाहिए। शून्य अंश अक्षांश की सारणी ही दशम सारणी होती है।

अंश-	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
मेष 0	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6	7	7	7	7	7	7	8	8
	33	42	52	1	10	19	29	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8	17	27	37	47	57	7	17
वृष 2	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	11	11	11	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	13
	27	37	47	57	7	17	27	37	48	59	9	20	31	42	52	3	14	25	35	46	57	8	19	29	40	51	2	12	23	34
मिथुन 2	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	16	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	18
	45	55	6	17	28	38	49	0	11	22	32	43	54	5	15	26	37	48	58	9	20	31	42	52	3	14	25	35	46	57
कर्क 3	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22	22	23	23	23	23	23	23	24
	8	18	29	40	51	1	12	23	33	43	53	3	13	23	33	43	53	3	13	23	33	43	53	2	12	22	32	42	52	2
सिंह 4	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	27	28	28	28	28	28	28
	12	22	32	42	52	2	12	22	31	41	50	59	8	18	27	36	45	55	4	13	24	32	41	50	0	9	18	27	37	46
कन्या 5	28	29	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	32	32	33	33	33
	55	4	14	23	32	41	51	0	9	19	28	37	46	56	5	14	23	32	41	51	1	10	19	28	38	47	56	5	15	24
तुला 6	33	33	33	34	34	34	34	34	34	34	35	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	37	38	38
	33	42	52	1	10	19	29	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8	17	27	37	47	57	7	17
वृश्चिक 7	38	38	38	38	39	39	39	39	39	39	40	40	40	40	40	41	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43
	27	37	47	57	7	16	27	37	48	59	9	20	28	42	52	3	14	25	35	46	56	8	19	29	40	51	2	12	23	34
धनु 8	43	43	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	45	46	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48
	45	55	6	17	27	38	49	0	11	22	32	43	54	5	15	26	37	48	58	9	18	31	42	52	3	14	25	35	46	57
मकर 9	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	54
	8	18	29	40	51	1	12	23	33	43	53	3	14	23	33	43	53	3	13	23	33	43	53	2	12	22	32	42	52	2
कुंभ 10	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55	55	55	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58
	12	22	32	42	52	2	12	22	31	41	50	59	8	18	27	36	45	55	4	13	22	32	41	50	0	9	18	27	37	46
मीन 11	58	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	3	3	3
	55	4	14	23	32	41	51	0	9	19	28	37	46	56	5	14	23	32	41	51	0	10	19	28	38	47	56	5	15	24

प्रमुख नगरों के अक्षांश, रेखांश, मध्यमान्तर एवं साम्पातिक संस्कार

इन सारणियों में भारत के प्रमुख नगरों के प्रथम कोष्ठक में नगर व प्रान्त का नाम, दूसरे में अक्षांश, तीसरे में रेखांश, चौथे में मध्यमान्तर, पाँचवें में स्थानीय संस्कार के सेकेण्ड लिखे गये हैं। भारतवर्ष का स्तम्भ 82 अंश 30 कला है, अतः प्रत्येक नगर के रेखांशों को 82 अंश 30 कला से अन्तरित कर शेष अंश व कला को 4 से गुणा करने पर जो मिनट व सेकेण्ड प्राप्त हुए हैं उन्हें 4थे कोष्ठक में लिखा गया है। जहाँ ऋण (-) का चिह्न दिया गया है उस नगर के रेखांश 82 अंश 30 कला से कम है तथा जिन नगरों के रेखांश 82 अंश 30 कला से अधिक है वहाँ मध्यमान्तर में +(धन) का चिह्न दिया है। अगरतला का रेखांश 91 अंश 17 कला में 82 अंश 30 कला घटाने पर 8 अंश 47 का शेष को 4 से गुणा करने पर 32 मिनट 188 से अर्थात् 35 मिनट 8 सेकेण्ड मध्यमान्तर धनात्मक हुआ। अलीगढ़ का रेखांश 78 अंश 4 कला है इसे 82 अंश 30 कला में घटाने पर 4 अंश 26 कला शेष को 4 से गुणा करने पर 16 मिनट 102 सेकेण्ड अर्थात् 17 मिनट 44 सेकेण्ड मध्यमान्तर ऋणात्मक हुआ; क्योंकि अलीगढ़ का रेखांश 82 अंश 30 कला से कम है। 5वाँ कोष्ठक का संस्कार साम्पातिक काल द्वारा लग्नानयन में किया जाता है।

स्थान		अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
		°	'	°	'	मि.	से.	मि.	से.
Adilabad	... A.P.	19	37	78	30	-16	00	+0	03
Adoni	.. A.P.	15	38	77	19	-20	44	+0	03
Agartala	. Tripura	23	49	91	17	+35	08	-0	06
Agra	... U.P.	27	11	78	02	-17	52	+0	03
Ahmedabad	... Gujarat	23	02	72	36	-39	36	+0	07
Ahmednagar	... Maharastra	19	05	74	48	-30	48	+0	05
Aijal	... Mizoram	23	44	92	45	+41	00	-0	07
Ajanta	... Maharastra	20	33	75	48	-26	48	+0	04
Akola	... Maharastra	20	42	77	02	-21	52	+0	04
Ajmer	... Rajasthan	26	27	74	38	-31	28	+0	05
Aligarh	... U.P.	27	54	78	04	-17	44	+0	03
Alipurduar	... W.B.	26	28	89	32	+28	08	-0	05
Allahabad	... U.P.	25	28	81	52	-2	32	+0	00
Alleppey	... Kerala	9	30	76	23	-24	28	+0	04
Almora	... U.P.	29	36	79	40	-11	20	+0	02
Alwar	... Rajasthan	27	34	76	38	-23	28	+0	04
Amaravati	... Maha.	20	56	77	45	-19	00	+0	03
Ambala	... Haryana	30	23	76	46	-22	56	+0	04
Ambikapur	... M.P.	23	07	83	11	+2	44	-0	00
Amingaon	... Assam	26	12	91	42	+36	48	-0	06
Amreli	... Gujarat	21	36	71	15	-45	00	+0	07
Amritsar	... Punjab	31	38	74	53	-30	28	+0	05
Anamalai	... Tamil N.	10	38	76	50	-22	40	+0	04
Anand	... Gujarat	22	32	73	00	-38	00	+0	06
Anantapur	... A.P.	14	41	77	37	-19	32	+0	03
Angul	... Orissa	20	48	85	01	+10	04	-0	02
Anuradhapur	... Sri Lanka	8	21	80	23	-8	28	+0	01
Arcot	... Tamil N.	12	56	79	24	-12	24	+0	02
Arrah	... Bihar	25	33	84	40	+8	40	-0	01
Arvi	... Maharastra	20	59	78	14	-17	04	+0	03
Asansol	... W.B.	23	42	86	58	+17	52	-0	03
Aurangabad	... Maharastra	19	52	75	18	-28	48	+0	05
Ayodhya	... U.P.	26	48	82	14	-1	04	+0	00

स्थान		अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
		°	'	°	'	मि.	सै.	मि.	सै.
Azamgarh ...	U.P.	26	03	83	13	+2	52	-0	00
Baidyanath Dham (Deoghar)	Bihar	24	29	86	43	+16	52	-0	03
Badrinath ...	U.P.	30	44	79	32	-11	52	+0	02
Balasore ...	Orissa	21	30	86	55	+17	40	-0	03
Ballia ...	U.P.	25	44	84	11	+6	44	-0	01
Balurghat ...	W.B.	25	14	88	47	+25	08	-0	04
Banda ...	U.P.	25	20	80	22	-8	32	+0	01
Bangalore ...	Karnataka	12	58	77	36	-19	36	+0	02
Bankura ...	W.B.	23	14	87	04	+18	16	-0	03
Bapatla ...	A.P.	15	54	80	30	-8	00	+0	01
Barasat ...	W.B.	22	43	88	29	+23	56	-0	04
Bara Banki ...	U.P.	26	56	81	13	-5	08	+0	01
Barauni ...	Bihar	25	29	85	59	+13	56	-0	02
Bareilly ...	U.P.	28	21	79	23	-12	28	-0	02
Baripada ...	Orissa	21	56	86	44	+16	56	-0	03
Baroda ...	Gujarat	22	18	73	13	-37	08	+0	06
Barpeta ...	Assam	26	20	91	02	+34	08	-0	06
Barrackpur ...	W.B.	22	46	88	24	+23	36	-0	04
Batanagar ...	W.B.	22	31	88	15	+23	00	-0	04
Belgaum ...	Karnataka	15	52	74	32	-31	52	+0	05
Bellary ...	Karnataka	15	10	76	56	-22	16	+0	04
Berhampur ...	Orissa	19	18	84	51	+9	24	-0	02
Bhadrak ...	Orissa	21	08	86	33	+16	12	-0	03
Bhadravati ...	Karnataka	13	52	75	40	-27	20	+0	04
Bhagalpur ...	Bihar	25	15	86	58	+17	52	-0	03
Bharatpur ...	Rajasthan	27	13	77	29	-20	04	+0	03
Bhatinda ...	Panjab	30	12	74	56	-30	16	+0	05
Bhatpara ...	W.B.	22	56	88	26	+23	44	-0	04
Bhavnagar ...	Gujarat	21	46	72	11	-41	16	+0	07
Bhilainagar ...	M.P.	21	11	81	20	-4	40	+0	01
Bhopal ...	M.P.	23	16	77	25	-20	20	+0	03
Bhubaneswar ...	Orissa	20	15	85	50	+13	20	-0	02
Bhuj ...	Gujarat	23	16	69	48	-50	48	+0	08
Bhusawal ...	Maharastra	21	02	75	47	-26	52	+0	04
Bijapur ...	Karnataka	16	51	75	44	-27	04	+0	04
Bijnor ...	U.P.	29	23	78	11	-17	16	+0	03
Bikaner ...	Rajasthan	28	01	73	19	-36	44	+0	06
Bilasipara ...	Assam	26	13	90	13	+30	52	-0	05
Bilaspur ...	M.P.	22	05	82	13	-1	08	+0	00
Bilaspur ...	H.P.	31	20	76	45	-23	00	+0	04
Bilimore ...	Gujarat	20	46	72	58	-38	08	+0	06
Biratnagar ...	Nepal	26	35	87	20	+19	20	-0	03
Bishnupur ...	W.B.	23	05	87	18	+19	12	-0	03
Bolpur ...	W.B.	23	40	87	42	+20	48	-0	03
Bolangir ...	Orissa	20	40	83	30	+ 4	00	-0	01
Bombay ...	Maharastra	18	58	72	50	-38	40	+0	06
Brindaban ...	U.P.	27	33	77	44	-19	04	+0	03
Broach ...	Gujarat	21	41	73	01	-37	56	+0	06
Bulandshahr ...	U.P.	28	24	77	54	-18	24	+0	03
Bulsar ...	Gujarat	20	36	72	59	-38	04	+0	06
Burdwan ...	W.B.	23	15	87	54	+21	36	-0	04
Burnpur ...	W.B.	23	39	86	56	+17	44	-0	03
Buxar ...	Bihar	25	34	84	01	+6	04	-0	01
Calcutta ...	W.B.	22	35	88 5h 53m 30s	23	+23	30	-0	04

स्थान		अक्षांश उ.	रेखांश पूर्वी	मध्यमान्तर	साम्पातिक संस्कार
		° '	° '	मि. सै.	मि. सै.
Calicut (Kozhikode)	Kerala	11 15	75 49	–26 44	+0 04
Cannanore ...	Kerala	11 52	75 25	–28 20	+0 05
Cape Comorin ...	Tamil N.	8 04	77 34	–19 44	+0 03
Chaibasa ...	Bihar	22 33	85 51	+13 24	–0 02
Chandausi –	U.P.	28 27	78 49	–14 44	+0 02
Chandannagar ...	W.B.	22 52	88 22	+23 28	–0 04
Chandigarh ...	Punjab	30 44	76 53	–22 28	+0 03
Chapra ...	Bihar	25 47	84 43	+8 52	–0 01
Chhindwara ...	M.P.	22 03	78 59	–14 04	+0 02
Chidambaram ...	Tamil N.	11 24	79 44	–11 04	+0 02
Chingleput ...	Tamil N.	12 42	80 01	–9 56	+0 02
Chinsura ...	W.B.	22 54	88 21	+23 24	–0 04
Chirala ...	A.P.	15 50	80 22	–8 32	+0 01
Chittaranjan ...	W.B.	23 50	86 50	+17 20	–0 03
Chittoor ...	A.P.	13 14	79 04	–13 44	+0 02
Chunar ...	U.P.	25 08	82 56	+1 44	–0 00
Churu ...	Rajasthan	28 18	74 58	–30 08	+0 05
Cochin ...	Kerala	9 58	76 15	–25 00	+0 04
Coimbatore ...	Tamil N.	11 00	76 56	–22 16	+0 04
Colombo ...	Sri Lanka	6 54	79 52	–10 32	+0 02
Contai ...	W.B.	21 50	87 48	+21 12	–0 03
Cooch Bihar ...	W.B.	26 19	89 28	+27 52	–0 05
Coonoor ...	Tamil N.	11 21	76 49	–22 44	+0 04
Cuddalore ...	Tamil N.	11 43	79 49	–10 44	+0 02
Cuddapah ...	A.P.	14 28	78 50	–14 40	+0 02
Cuttack ...	Orissa	20 29	85 52	+13 28	–0 02
Daltanganj ...	Bihar	24 02	84 04	+6 16	–0 01
Daman ...	Gujarat	20 25	72 53	–38 28	+0 06
Damoh ...	M.P.	23 50	79 29	–12 04	+0 02
Danapur ...	Bihar	25 38	85 05	+10 20	–0 03
Darbhanga ...	Bihar	26 10	85 54	+13 36	–0 02
Darjeeling ...	W.B.	27 03	88 16	+23 04	–0 04
Davangere ...	Karnataka	14 31	75 58	–26 08	+0 04
Dehra Dun ...	U.P.	30 19	78 03	–17 48	+0 03
Dehri ...	Bihar	24 53	84 14	+6 56	–0 01
Delhi ...	—	28 39	77 13	–21 08	+0 03
Dewas ...	M.P.	22 58	76 06	–25 36	+0 04
Dhanbad ...	Bihar	23 48	86 27	+15 48	–0 03
Dhanuskodi ...	Tamil N.	9 12	79 23	–12 28	+0 02
Dharampuri ...	Tamil N.	12 08	78 13	–17 08	+0 03
Dharwar ...	Karnataka	15 28	75 01	–29 56	+0 05
Dhenkanal ...	Orissa	20 40	85 38	+12 32	–0 02
Dholpur ...	Rajasthan	26 42	77 56	–18 16	+0 03
Dhubri ...	Assam	26 02	89 59	+29 56	–0 05
Dhulia ...	Maha.	20 58	74 47	–30 52	+0 05
Diamond Harbour	W.B.	22 12	88 13	+22 52	–0 04
Dibrugarh ...	Assam	27 29	94 55	+49 40	–0 08
Digboi ...	Assam	27 33	95 40	+52 40	–0 09
Digha ...	W.B.	21 40	87 40	+20 40	–0 03
Diu ...	Gujarat	21 42	71 01	–45 56	+0 08
Dimapur ...	Nagaland	25 51	93 48	+45 12	–0 07
Durg ...	M.P.	21 11	81 21	–4 36	+0 01
Durgapur ...	W.B.	23 30	87 20	+19 20	–0 03
Dwarka ..	Gujarat	22 14	68 58	–54 08	+0 09
Ellora ..	Maharastra	20 02	75 13	–29 08	+0 05

स्थान			अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
			°	'	°	'	मि.	सै.	मि.	सै.
Eluru	...	Andhra	16	43	81	09	–5	24	+0	01
Ernakulam	...	Kerala	9	59	76	18	–24	48	+0	04
Erode	...	Tamil N.	11	20	77	46	–18	56	+0	03
Etawah	...	U.P.	26	47	79	02	–13	52	+0	02
Faizabad	...	U.P.	26	48	82	08	–1	28	+0	00
Farakka	...	W.B.	24	48	87	56	+21	44	–0	04
Faridabad	...	Haryana	28	25	77	22	–20	32	+0	03
Faridkote	...	Punjab	30	40	74	57	–30	12	+0	05
Fatehgarh	...	U.P.	27	23	79	35	–11	40	+0	02
Fatehpur	...	U.P.	25	55	80	47	–6	52	+0	01
Ferozabad	...	U.P.	27	09	78	24	–16	24	+0	03
Ferozepur	...	Punjab	30	55	74	40	–31	20	+0	05
Galle	...	Sri Lanka	6	01	80	15	–9	00	+0	01
Gandhinagar	...	Gujarat	23	15	72	45	–39	00	+0	06
Gangtok	...	Sikkim	27	20	88	36	+24	24	–0	04
Guwahati	...	Assam	26	10	91	45	+37	00	–0	06
Gaya	...	Bihar	24	48	85	01	+10	04	–0	02
Gaud	...	W.B.	24	54	88	07	+22	28	–0	04
Ghatal	...	W.B.	22	40	87	44	+20	56	–0	03
Ghatsila	...	Bihar	22	35	86	28	+15	52	–0	03
Ghaziabad	...	U.P.	28	40	77	28	–20	08	+0	03
Ghazipur	...	U.P.	25	36	83	36	+4	24	–0	01
Gilgit	...	Kashmir	35	55	74	20	–32	40	+0	05
Giridih	...	Bihar	24	10	86	19	+15	16	–0	03
Goalpara	...	Assam	26	10	90	36	+32	24	–0	05
Gonda	...	U.P.	27	09	81	57	–2	12	+0	00
Gopalpur	...	Orissa	19	16	84	57	+9	48	–0	02
Gorakhpur	...	U.P.	26	45	83	22	+3	28	–0	01
Gudivada	...	Andhra	16	25	81	00	–6	00	+0	01
Gudur	...	Andhra	14	09	79	54	–10	24	+0	02
Guntur	...	Andhra	16	19	80	26	–8	16	+0	01
Gurdaspur	...	Punjab	32	03	75	27	–28	12	+0	05
Gurgaon	...	Haryana	28	37	77	04	–21	44	+0	04
Gwalior	...	M.P.	26	14	78	10	–17	20	+0	03
Habra	...	W.B.	22	50	88	38	+24	32	–0	04
Haldia	...	W.B.	22	02	88	05	+22	20	–0	04
Hanamkonda	...	Andhra	18	03	79	32	–11	52	+0	02
Hapur	...	U.P.	28	43	77	55	–18	20	+0	03
Hardoi	...	U.P.	27	20	80	10	–9	20	+0	02
Haridwar	...	U.P.	29	56	78	08	–17	28	+0	03
Hassan	...	Karna	18	10	79	46	–10	56	+0	02
Hathras	...	U.P.	27	36	78	06	–17	36	+0	03
Hazaribagh	...	Bihar	23	59	85	22	+11	28	–0	02
Hindupur	...	Andhra	13	49	77	32	–19	52	+0	03
Hirakud	...	Orissa	21	30	84	00	+6	00	–0	01
Hissar	...	Haryana	29	10	75	44	–27	04	+0	04
Hoshiarpur	...	Punjab	31	32	75	57	–26	12	+0	04
Hospet	...	Karna	15	16	76	26	–24	24	+0	04
Howrah	...	W.B.	22	36	88	19	+23	16	–0	04
Hubli	...	Karna.	15	20	75	12	–29	12	+0	05
Hyderabad	...	Andhra	17	26	78	27	–16	12	+0	03
Imphal	...	Manipur	24	48	93	57	+45	48	–0	07
Indore	...	M.P.	22	43	75	51	–26	36	+0	04
Itarsi	...	M.P.	22	36	77	43	–18	48	+0	03

स्थान			अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
							मि.	सै.	मि.	सै.
Jabalpur	...	M.P.	23	09	79	57	–10	12	+0	02
Jaffna	...	Sri Lanka	9	40	80	00	–10	00	+0	02
Jagadalpur	...	M.P.	19	05	82	04	–1	44	+0	00
Jaipur	...	Rajasthan	26	55	75	49	–26	44	+0	04
Jaisalmir	...	Rajasthan	26	55	70	57	–46	12	+0	08
Jalgaon	...	Maha.	21	03	75	40	–27	20	+0	04
Jalpaiguri	...	W.B.	26	32	88	44	+24	56	–0	04
Jamalpur	...	Bihar	25	19	86	32	+16	08	[illegible]	03
Jammu	...	Kashmir	32	43	74	52	–30	32	+0	05
Jamnagar	...	Gujarat	22	27	70	07	–49	32	+0	08
Jamshedpur	...	Bihar	22	48	86	11	+14	44	–0	02
Jangipur	...	W.B.	24	28	88	05	+22	20	–0	04
Jaunpur	...	U.P.	25	46	82	[illegible]	+0	48	–0	00
Jhansi	...	M.P.	25	27	[illegible]	[illegible]	–15	48	+0	[illegible]
Jharia	...	Bihar	23	00	80	[illegible]	–7	48	+0	[illegible]
Jodhpur	...	Rajasthan	26	18	73	02	–37	52	+0	06
Jorhat	...	Assam	26	46	94	13	+46	52	–0	08
Jullundur	...	Punjab	31	20	75	34	–27	44	+0	05
Junagadh	...	Gujarat	21	33	70	27	–48	12	+0	08
Kailasahar	...	Tripura	24	22	92	00	+38	00	–0	06
Kakinada	...	A.P.	16	57	82	13	–1	08	+0	00
Kalahasti	...	A.P.	13	45	79	44	–11	04	+0	02
Kalimpong	...	W.B.	26	05	88	26	+23	44	–0	04
Kalyan	...	Maharastra	19	14	73	10	–37	20	+0	06
Kalyani	...	W.B.	23	00	88	28	+23	52	[illegible]	04
Kanauj	...	U.P.	27	02	79	55	–10	20	+0	02
Kanchipuram	...	Tamil N.	12	50	79	42	–11	12	+0	02
Kandi	...	Sri Lanka	7	18	80	38	–7	28	+0	01
Kandla	...	Gujarat	21	21	71	17	–44	52	+0	07
Kanpur	...	U.P.	26	29	80	21	–8	36	[illegible]	01
Karad	...	Maharastra	17	15	74	12	–33	12	+0	05
Karikal	...	Pondicherry	10	56	79	51	–10	36	+0	02
Karwar	...	Karnataka	14	48	74	11	–33	16	+0	05
Katihar	...	Bihar	25	34	87	34	+20	16	–0	[illegible]
Kathmandu	...	Nepal	27	42	85	12	+10	48	–0	02
Katni	...	M.P.	23	47	80	27	–8	12	+0	01
Katras	...	Bihar	23	49	86	17	+15	08	–0	02
Khammam	...	A.P.	17	14	80	06	–9	36	[illegible]	02
Khandwa	...	M.P.	21	50	76	20	–24	40	[illegible]	04
Kharagpur	...	W.B.	22	20	87	20	+19	20	[illegible]	03
Khurda	...	Orissa	20	11	85	38	+12	32	–0	02
Kirkee	...	Maharastra	18	33	73	54	–34	24	+0	06
Kishanganj	...	Bihar	26	10	87	02	+18	08	–0	03
Kodaikanal	...	Tamil N.	10	14	77	28	–20	08	+0	03
Kohima	...	Nagaland	25	41	94	07	+46	28	–0	08
Kolar	...	Karnataka	13	09	78	11	–17	16	+0	03
Kolhapur	...	Maharastra	16	42	74	14	–33	04	+0	05
Kollegal	...	Karnataka	12	09	77	09	–21	24	+0	04
Koraput	...	Orissa	18	50	82	40	+0	40	[illegible]	00
Kota	...	Rajasthan	25	10	75	52	–26	32	+0	04
Kottayam	...	Kerala	9	36	76	32	–23	52	+0	04
Krishnagar	...	W.B.	23	23	88	30	+24	00	–0	04
Kumbakonam	...	Tamil N.	10	58	79	25	–12	20	+0	02
Kurnool	...	A.P.	15	50	78	03	–17	48	+0	03
Lucknow	...	U.P.	26	51	80	56	–6	16	+0	01

स्थान			अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
			°	'	°	'	मि.	से.	मि.	से.
Ludhiana	...	Punjab	30	55	75	52	–26	32	+0	04
Lumding	...	Assam	25	46	93	10	+42	40	–0	07
Machilipatnam	...	Andhra	16	11	81	07	–5	32	+0	01
Madhupur	...	Bihar	24	18	86	37	+16	28	–0	03
Madras	...	Tamil N.	13	04	80	15	–9	00	+0	01
Madurai	...	Tamil N.	9	58	78	10	–17	20	+0	03
Mahabalipuram	...	Tamil N.	12	37	80	14	–9	04	+0	01
Mahbubnagar	...	Andhra	16	42	77	58	–18	08	+0	03
Mahe	...	Kerala	11	43	75	33	–27	48	+0	05
Maihar	...	M.P.	24	16	80	49	–6	44	+0	01
Mainpuri	...	U.P.	27	14	79	03	–13	48	+0	02
Malda	...	W.B.	25	05	88	09	+22	36	–0	04
Mangalore	...	Karnataka	12	52	74	50	–30	40	+0	05
Marwar	...	Rajasthan	25	43	73	45	–35	00	+0	06
Mathura	...	U.P.	27	28	77	42	–19	12	+0	02
Meerut	...	U.P.	29	01	77	45	–19	00	+0	03
Mercara	...	Karnataka	12	26	75	47	–26	52	+0	04
Mettur	...	Tamil N.	11	47	77	48	–18	48	+0	03
Mhow	...	M.P.	22	34	75	47	–26	52	+0	04
Midnapore	...	W.B.	22	26	87	19	+19	16	–0	03
Miraj	...	Maha.	16	49	74	43	–31	08	+0	05
Mirpur	...	Kashmir	33	12	73	49	–34	44	+0	06
Mirzapur	...	U.P.	25	09	82	33	+0	12	–0	00
Monghyr	...	Bihar	25	22	86	27	+15	48	–0	03
Moradabad	...	U.P.	28	51	78	47	–14	52	+0	02
Morvi	...	Gujarat	22	49	70	49	–46	44	+0	08
Motihari	...	Bihar	26	38	84	54	+9	36	–0	02
Mughal Sarai	...	U.P.	25	17	83	08	+2	32	–0	00
Murshidabad	...	W.B.	24	12	88	18	+23	12	–0	04
Mussoorie	...	U.P.	30	27	78	06	–17	36	+0	03
Muzaffarnagar	...	U.P.	29	28	77	44	–19	04	+0	03
Muzaffarpur	...	Bihar	26	07	85	22	+11	28	–0	02
Mysore	...	Karnataka	12	18	76	39	–23	24	+0	04
Nabadwip	...	W.B.	23	24	88	24	+23	36	–0	04
Nabha	...	Punjab	30	25	76	09	–25	24	+0	04
Nagercoil	...	Tamil N.	8	11	77	29	–20	04	+0	03
Nagpur	...	Maha.	21	09	79	05	–13	40	+0	02
Nahan	...	H.P.	30	33	77	21	–20	36	+0	03
Naihati	...	W.B.	22	57	88	28	+23	52	–0	04
Nainital	...	U.P.	29	22	79	27	–12	12	+0	02
Nanded	...	Maha.	19	09	77	27	–20	12	+0	03
Nangal	...	Punjab	31	23	76	23	–24	28	+0	04
Nasik	...	Maha.	20	02	73	50	–34	40	+0	06
Nawabganj	...	U.P.	26	56	82	12	–1	12	+0	00
Neemuch	...	M.P.	24	27	74	52	–30	32	+0	05
Nellore	...	Andhra	14	27	80	00	–10	00	+0	02
Nizamabad	...	Andhra	18	40	78	06	–17	36	+0	03
Nowgong	...	Assam	26	21	92	42	+40	48	–0	07
Ongole	...	Andhra	15	30	80	06	–9	36	+0	02
Ootacamund	...	Tamil N.	11	24	76	44	–23	04	+0	04
Osmanabad	...	Maha.	18	12	76	03	–25	48	+0	04
Palghat	...	Kerala	10	46	76	40	–23	20	+0	04
Panaji	...	Goa	15	29	73	49	–34	44	+0	06
Panipat	...	Haryana	29	23	77	01	–21	56	+0	04

स्थान		अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
		°	'	°	'	मि.	सै.	मि.	सै.
Pasighat ...	Arunach.	28	05	95	20	+51	20	−0	09
Pathankot ...	Punjab	32	17	75	40	−27	20	+0	04
Patiala ...	Punjab	30	19	76	24	−24	24	+0	04
Patna ...	Bihar	25	36	85	08	+10	32	−0	02
Pilibhit ...	U.P.	28	38	79	51	−10	36	+0	02
Pollachi ...	Tamil N.	10	39	77	03	−21	48	+0	04
Pondicherry ...		11	56	79	50	−10	40	+0	02
Poona ...	Maha.	18	31	73	53	−34	28	+0	06
Porbander ...	Gujarat	21	38	69	37	−51	32	+0	08
Port Blair ...	Andaman	11	40	92	46	+41	04	−0	07
Pudukkottai ...	Tamil N.	10	23	78	52	−14	32	+0	02
Puri ...	Orissa	19	48	85	50	+13	20	−0	02
Punakha ...	Bhutan	27	36	89	50	+29	20	−0	05
Purnea ...	Bihar	25	47	87	31	+20	04	−0	13
Purulia ...	W.B.	23	20	86	23	+15	32	−0	03
Quilon ...	Kerala	8	54	76	38	−23	28	+0	04
Rae Bareli ...	U.P.	26	14	81	13	−5	08	+0	01
Raichur ...	Karnataka	16	12	77	21	−20	36	+0	03
Raiganj ...	W.B.	25	36	88	08	+22	32	−0	04
Raigarh ...	M.P.	21	54	83	26	+3	44	−0	01
Raipur ...	M.P.	21	15	81	37	−3	32	+0	01
Rajahmudry ...	Andhra	17	00	81	46	−2	56	+0	00
Rajkot ...	Gujarat	22	18	70	48	−46	48	+0	08
Rajmahal ...	Bihar	25	03	87	53	+21	32	−0	04
Rameswaram ...	Tamil N.	9	18	79	18	−12	8	+0	02
Ramanathapuram	Tamil N.	9	22	78	51	−14	36	+0	02
Rampur ...	H.P.	31	26	77	38	−19	28	+0	03
Rampur ...	U.P.	28	46	79	02	−13	52	+0	02
Ranaghat ...	W.B.	23	11	88	37	+24	28	−0	04
Ranchi ...	Bihar	23	22	85	21	+11	24	−0	02
Rangiya ...	Assam	26	30	91	35	+36	20	−0	06
Raniganj ...	W.B.	23	35	87	07	+18	28	−0	03
Ranikhet ...	U.P.	29	38	79	28	−12	08	+0	02
Ratangarh ...	Rajasthan	28	05	74	39	−31	24	+0	05
Ratlam ...	M.P.	23	31	75	07	−29	32	+0	05
Ratnagiri ...	Maha.	17	08	73	19	−36	44	−0	06
Raxaul ...	Bihar	26	58	84	51	+9	24	−0	02
Rewa ...	M.P.	24	33	81	17	−4	52	+0	01
Rohtak ...	Haryana	28	54	76	34	−23	44	+0	04
Roorkee ...	U.P.	29	52	77	53	−18	28	+0	03
Rourkela ...	Orissa	22	25	84	52	+9	28	−0	02
Sadiya ...	Arunachal	27	48	94	38	+48	32	−0	08
Sagar ...	M.P.	23	50	78	50	−14	40	+0	02
Sagar ...	Karnataka	16	37	76	51	−22	36	+0	04
Saharnpur ...	U.P.	29	58	77	32	−19	52	+0	03
Salem ...	Tamil N.	11	40	78	10	−17	20	+0	03
Samastipur ...	Bihar	25	55	85	50	+13	20	−0	02
Sambalpur ...	Orissa	21	27	83	58	+5	52	−0	01
Sangli ...	Maha.	16	52	74	36	−31	36	+0	05
Santiniketan (Bolpur) ...	W.B.	23	39	87	43	+20	52	−0	03
Santipur ...	W.B.	23	15	88	29	+23	56	−0	04
Sasaram ...	Bihar	24	57	84	03	+6	12	−0	01
Satara ...	Maha.	17	42	74	00	−34	00	+0	06
Satna ...	M.P.	24	34	80	55	−6	20	+0	01
Secunderabad ...	Andhra	17	27	78	33	−15	48	+0	03

स्थान			अक्षांश उ.		रेखांश पूर्वी		मध्यमान्तर		साम्पातिक संस्कार	
			°	'	°	'	मि.	सै.	मि.	सै.
Seoni	...	M.P.	22	06	79	35	-11	40	+0	02
Serampur	...	W.B.	22	45	88	23	+23	32	-0	04
Shahabad	...	U.P.	27	30	80	05	-9	40	+0	02
Shahdol	...	M.P.	23	00	81	30	-4	00	+0	00
Shamli	...	U.P.	29	27	77	19	-20	44	+0	03
Shikohabad	...	U.P.	27	07	78	35	-15	40	+0	03
Shillong	...	Meghal.	25	35	91	53	+37	32	-0	05
Shimoga	...	Karnataka	13	56	75	38	-27	28	+0	06
Shivpuri	...	M.P.	25	40	77	44	-19	04	+0	03
Sholapur	...	Maha.	17	39	75	55	-26	20	+0	04
Sibsagar	...	Assam	27	00	94	37	+48	28	-0	08
Silchar	...	Assam	24	50	92	47	+41	08	-0	07
Siliguri	...	W.B.	26	44	88	26	+23	44	-0	04
Simla	...	H.P.	31	06	77	10	-21	20	+0	03
Sindri	...	Bihar	23	39	86	31	+16	04	-0	03
Sitamari	...	Bihar	26	35	85	32	+12	08	-0	02
Srikakulam	...	Andhra	18	18	83	56	+5	44	-0	01
Srinagar	...	Kashmir	34	06	74	48	-30	48	+0	05
Srirangam	...	Tamil N.	10	52	78	44	-15	04	+0	02
Sultanpur	...	U.P.	26	16	82	07	-1	32	+0	00
Sundargarh	...	Orissa	22	06	84	00	+6	00	-0	01
Surat	...	Gujarat	21	10	72	51	-38	36	+0	06
Surendranagar	...	Gujarat	22	43	71	33	-43	48	+0	07
Suri	...	W.B.	23	54	87	34	+20	16	-0	03
Tamluk	...	W.B.	22	18	87	54	+21	36	-0	04
Tangla	...	Assam	26	40	91	54	+37	36	-0	06
Tarakeswar	...	W.B.	22	54	88	02	+22	08	-0	04
Tenali	...	Andhra	16	14	80	38	-7	28	+0	01
Tezpur	...	Assam	26	37	92	47	+41	08	-0	07
Thanjavur	...	Tamil N.	10	47	79	08	-13	28	+0	02
Thimphu	...	Bhutan	27	32	89	53	+29	32	-0	05
Tinsukia	...	Assam	27	28	95	20	+51	20	-0	08
Tiruchirapalli	...	Tamil N.	10	50	78	42	-15	12	+0	02
Tirunelveli	...	Tamil N.	8	44	77	41	-19	16	+0	03
Tirupati	...	Andhra	13	40	79	20	-12	40	+0	02
Trichur	...	Kerala	10	30	76	15	-25	00	+0	04
Trincomalee	...	Sri Lanka	8	34	81	15	-5	00	+0	01
Trivandrum	...	Kerala	8	31	77	00	-22	00	+0	04
Tuticorin	...	Tamil N.	8	49	78	09	-17	24	+0	03
Udaipur	...	Rajasthan	24	35	73	44	-35	04	+0	06
Udupi	...	Karnataka	13	20	74	45	-31	00	+0	05
Ujjain	...	M.P.	23	11	75	46	-26	56	+0	04
Varanasi	...	U.P.	25	19	83	01	+2	04	-0	00
Vellore	...	Tamil N.	12	55	79	11	-13	16	+0	02
Veraval	...	Gujarat	20	53	70	26	-48	16	+0	08
Vidisha	...	M.P.	23	32	77	51	-18	36	+0	03
Vijayawada	...	Andhra	16	32	80	36	-7	36	+0	01
Visakhapatnam	...	Andhra	17	43	83	19	+3	16	-0	01
Vizianagram	...	Andhra	18	07	83	26	+3	44	-0	01
Waltair	...	Andhra	17	47	83	12	+2	48	-0	00
Warangal	...	Andhra	17	58	79	40	-11	20	+0	02
Wardha	...	Maha.	20	44	78	37	-15	32	+0	03
Yeotmal	...	Maha.	20	25	78	08	-17	28	+0	03

पलभा से चरखण्ड बनाकर स्वोदय मान ज्ञात करना

"मेषादिगे सायन भाग सूर्ये दिनार्द्धजाभा पलभा भवेत्सा" इस सिद्धांत के अनुसार सायन मेष राशि में जिस दिन सूर्य का प्रवेश हो उस दिन समतल भूमि में लम्बरूप में गड़े हुये किसी धातु व लकडी के गोलाकार स्तम्भ की छाया धूप घडी के 12 बजे दिन में जितनी लम्बी पृथ्वीपर दिखाई दे उस को माप लेना चाहिये। यहाँ स्तम्भ 12 फुट लम्बा भूमिस्थ करने पर छाया का मापदण्ड 1 फुट बराबर 1 अंगुल कल्पना करना चाहिये तथा 1 इन्च बराबर 5 प्रत्यंगुल समझना चाहिये। सायन मेष राशि में सूर्य का प्रवेश 21 मार्च को प्रत्येक ईस्वीसन् (ख्रिष्टाब्द) में होता है अतः प्रत्येक वर्ष में 21 मार्च को पूर्वोक्त स्तम्भ की छाया दिन के स्थानीय 12 बजे (धूपघड़ी) के समय मापनी चाहिये। यह प्रक्रिय समस्त भूमण्डल में उक्त तारीख को की जा सकती है।

हरिद्वार में पलभा का ज्ञान:- 21 मार्च को स्तम्भ की छाया 12 बजे नापने पर 6 फुट 11 इन्च प्राप्त हुई अतः 6 फुट बराबर 6 अंगुल तथा 11 इन्च बराबर 55 प्रत्यंगुल होने से हरिद्वार की पलभा 6 अं. 55 प्रत्यंगुल होने से हरिद्वार की पलभा 6 अं. 55 प्र.प्राप्त हुई।

किसी भी नगर की पलभा गणित के आधार से ज्ञात करने हेतु अभीष्ट नगर के अक्षांश की स्पर्शज्या को 12 से गुणा करने पर अंगुलात्मक मान में पलभा ज्ञात होती है। इस सिद्धांत के अनुसार हरिद्वार का अक्षांश 29 अंश 58 कला बराबर 29.96667 अंश है। इस की स्पर्शज्या बराबर 0.576575 को 12 से गुणा करने पर 6.9189 अंगुल बराबर 6 अंगुल 55 प्रत्यंगुल हरिद्वार की पलभा गणितागत प्राप्त हुई। 21 मार्च को शंकु (स्तंभ) की छाया का माप भी 6 अं. 55 प्रत्यंगुल प्राप्त हुआ अतः दृग्गणितैक्य समन्वय बराबर ठीक मिला। इस प्रकार प्रत्येक नगर की पलभा का मान शंकुयन्त्र (स्तंभ) द्वारा तथा गणितागत प्रकार द्वारा प्राप्त हो जाता है।

पलभा मान को 3 जगह स्थापित कर क्रमशः 10,8,10 से गुणाकर अन्तिममान जो 10 से गुणित किया गया है उस में 3 का भाग देकर 3 चरखण्ड प्राप्त कर मेषादि 12 राशियों के लंकोदय मान में, मेष वृष और मिथुन में चरखण्ड क्रमशः घटाकर कर्क, सिंह, कन्या में चरखण्ड मान उलट कर जोड़ने पर अभीष्ट नगर के प्रत्येक मेषादि 6 राशियों के मान पलात्मक प्राप्त होगा। इस के धट्यात्मक मान को घण्टात्मक मान में परिवर्तित करने पर मेष से कन्या तक का मापदण्ड घन्टे व मिनट में प्राप्त हो जायेगा। तुला से मीन राशि तक का मान कन्या के मान से उलट कर गिनने पर प्राप्त हो जायेगा। इस प्रकार मीन व मेष का मान बराबर होगा तथा वृष-कुम्भ, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-वृश्चिक और कन्या-तुला का मान बराबर होगा।

हरिद्वार की पलभा 6 अं. 55 व्यं. को 3 जगह स्थापित कर क्रमशः 10,8,10 से गुणने पर (6।55) गुणित 10 बराबर 60।550 बराबर 69।90 दूसरी जगह (6।55) गुणित 8 बराबर 55।20 तीसरी जगह 69।90 अंक प्राप्त हुये इस तीसरी जगह के अंकों में 3 भाग देने पर 23।3 प्राप्त हुये। अर्थात् प्रथम चरखण्ड 69 पल द्वितीय चरखण्ड 55 पल व तृतीय चरखण्ड 23 पल प्राप्त हुआ। लंकोदय मेषादि से कन्या तक क्रमशः 279,299,322 मेष बृष और मिथुन राशि के 322,299,279 क्रमशः कर्क, सिंह और कन्या को स्थापित कर मेष बृष, मिथुन इन 3 राशियों में क्रमशः 69,55,23 घटाने पर तथा कर्क सिंह कन्या इन 3 राशियों में क्रमशः 23,55,69 जोड़ने पर हरिद्वार के मेष से कन्या तक के स्वोदय मान ज्ञात होंगे। 279-69 बराबर 210 पल मेष। 299-55=244 पल वृष।322-23 बराबर 299 पल मिथुन। 322+23 बराबर 345 पल कर्क। 299+55 बराबर 354 सिंह। 279+69 बराबर 348 पल कन्या राशि का मान हरिद्वार में हुआ। इस प्रकार मीन मेष का मान 210 पल बराबर है वृष कुम्भ का मान 244 पल। मिथुन मकर का 299। कर्क धनु का 345। सिंह वृश्चिक का 354 तथा कन्या तुला का 348 पल मान। हरिद्वार में मेष से लेकर मीन राशि तक का पलात्मक प्राप्त हुआ इसको धनात्मक में परिणत कर पुनः धनात्मक परिवर्तित करने पर प्रत्येक राशि का मान घन्टे व मिनट में प्राप्त होगा। इस प्रकार प्रत्येक नगर के मेषादि 12 राशियों पलात्मक मान ज्ञात किया जाता है। इस स्वोदयमान से अपने अपने अक्षांश पर आधारित लग्न सारणियाँ तैयार की जाती है। मेषादि राशियों के सूर्य निरयन संक्रमण काल के प्रारंभ में प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय काल पर सूर्य के राशि व अंश तथा लग्न के राशि व अंश बराबर होते हैं। अभिप्राय यह है कि जिस तारीख को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा तक सूर्योदय के समय में सूर्य का राशि ०० व अंश ०० शून्य होंगे तथा उस समय लग्न भी ०० अंश ०० कला होगी। इसी प्रकार वृष राशि में सूर्य जिस तारीख में प्रवेश करेगा उस दिन सूर्योदय के समय सूर्य के राशि 1 अंश ०० होंगे तथा लग्न भी 1 अंश ०० कला होगी। नीचे मेषादि राशियों के प्रवेश की तारीख देकर उस दिन प्रातः सूर्योदय काल हरिद्वार में I S T समय भारतीय स्टै. समय का दिया गया है।

निरयण संक्रमण	सूर्योदय	तारीख	सूर्य के रा.अंश	लग्न के रा.अंश
मेष संक्रमण	5.56	14 अप्रेल	oo oo	oo oo
वृष संक्रमण	5.30	14 मई	o1 oo	o1 oo
मिथुन सं.	5.20	15 जून	o2 oo	o2 oo
कर्क सं.	5.32	16 जुलाई	o3 oo	o3 oo
सिंह सं.	5.50	17 अगस्त	o4 oo	o4 oo

प्रत्येक मास में मेषादि 12 राशियों का प्रारम्भ काल जानने के लिये मेष लग्न का प्रारंभ हरिद्वार में 14 अप्रेल को प्रात: 5 बजकर 56 मि. पर होगा। इसमें प्रतिदिन 4 मिनट कम करते रहने पर तथा 20 वें दिन 3 मि.प्रतिमास में घटाते हुये 365 दिन तक इस क्रम से 4 मि. कम करने पर प्रत्येक दिन का मेष लग्न का प्रारंभ काल ज्ञात होगा। इस ही प्रकार 14 मई को प्रात: 5 ब.30 मि. वृषलग्न का प्रारंभ, 15 जून को 5 ब.20 मि. पर मिथुन लग्न का प्रारंभ 5 घं.32 मि.पर कर्क का 5 ब.50 मि. पर सिंह लग्न का प्रारंभ होगा। प्रारंभ दिन की तारीख में प्रतिदिन 4 मिनट घटाते हुये तथा 20 वे दिन केवल 3 मि. घटाते हुये 365 दिन तक इस क्रम से गणना करने पर प्रत्येक मेषादि राशियों का प्रारंभ काल ज्ञात होता चला जायेगा। इस प्रकार प्रत्येक नगर के उक्त तारीख के सूर्योदय काल में 12 मास तक यह प्रक्रिया करने पर अभीष्ट नगर के मेषादि 12 राशियों का I S T (भारतीय स्टैण्डर्ड समय) में लग्नारम्भ काल ज्ञात हो जाता है।

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- शरीर को भगवान का मन्दिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- इंन्द्रिय समय, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे। अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाज-निष्ठ बने रहेंगे।
- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा, नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

(क्रमश: पृष्ठ 392 पर)

अध्याय-4

देश-विदेश के ग्रह-स्पष्ट, भाव-स्पष्ट, षड्वर्ग, दशा साधन एवं संक्षिप्त रूप में दशाफल निरूपण सारिणी

ग्रहस्पष्ट साधन करने की विधि

जिन दृक् सिद्ध निरयण पञ्चाङ्गो में सूर्यादि ग्रह प्रतिदिन के स्पष्ट किये गये हों उनके आधार पर ग्रह स्पष्ट करना अनिवार्य है। आजकल कम्प्यूटर यन्त्र द्वारा जन्मपत्रिकाएँ बनती हैं उनमें निर्मलचन्द्र लाहिरी कृत Indian Ephemeris पञ्चाङ्ग से ग्रह स्पष्ट किये जाते हैं। इन पञ्चाङ्गों की प्रतियाँ पुस्तक विक्रेताओं की दुकानों पर प्राप्त हो जाती है। दश दश पञ्चाङ्गों का एक ही जगह संकलन की प्रतियाँ हैं जो प्राचीन वर्षो की 1900ई० से 1990 ई० तक की सुलभता से प्राप्त हो जाती हैं। 1900 ई० से 1941 तक की सायंकाल 5.30 बजे की साप्ताहिक ग्रह स्पष्ट की प्रति का संकलन एक ही जगह किया हुआ है। इसके आगे 1941 ई० से 1990 तक की दश दश वर्ष की प्रात: 5.30 बजे के समय की प्रतियाँ सुलभता से पुस्तक विक्रेताओं के पास उपलब्ध हो जाती हैं। उन पञ्चाङ्गों के आधार पर ही अधिकतर कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रिकाओं की गणित मिल जाती है। यहाँ उसके आधार पर ही गणित का प्रदर्शन किया गया है। शतवर्षीय वेंकटेश पञ्चाङ्ग से भी अधिककर गणितज्ञ गणित करते हैं किन्तु शतवर्षीय पञ्चाङ्ग के तिथ्यादि मान प्रात: 6 बजकर 27 मि० स्टैण्डर्ड समय के दिये गये हैं अत: अभीष्ट नगर के लिये इसमें संस्कार देकर ही भयात भभोग बनाकर दशा का साधन करना चाहिये अन्यथा गणित अशुद्ध हो जाती है। भारतवर्ष में कुछ पञ्चाङ्ग दृक् सिद्ध निरयण पद्धति से बनते हैं उनसे भी गणित की जा सकती है।

ग्रह स्पष्ट साधन के लिये 2 उपकरण आवश्यक होते हैं। प्रथम उपकरण ग्रह की दैनिक गति, द्वितीय चालन के घन्टे व मिनट या चालन के घटीपल। 10,10 वर्ष की उपर्युक्त प्रतियों में प्रात: 5.30 बजे का प्रतिदिन का चन्द्र स्पष्ट तथा अन्य ग्रह दो-दो दिन के स्पष्ट किये हैं। दिनद्वयान्तर दैनिक गति होती है। अत: चन्द्र के अतिरिक्त ग्रहों में अग्रिम दिन के ग्रह और वर्तमान दिन के ग्रह स्पष्ट का अन्तर करने पर ही ग्रह की 2 दिन की गति प्राप्त होती है अत: उसमें 2 का भाग देकर 1 दिन की ग्रह गति उपलब्ध करना अनिवार्य है। जन्मकालीन ग्रह स्पष्ट करने हेतु स्टैण्डर्ड जन्म समय में से 5 घन्टे 30 मिनट घटाने पर घन्टात्मक चालन प्राप्त हो जाता है। इसलिये जन्मकालिक इस घटी व पल (जन्मेष्ट) की यहाँ आवश्यकता नहीं पड़ती।

6 अगस्त 2000 ई० को प्रात: दस बजे उत्पन्न जातक के चालन के घन्टे मिनट, 10 घन्टे में 5घन्टे 30मिनट घटाने पर 4 घन्टे 30मिनट प्राप्त होते हैं। अत: चालन 4 घन्टे 30मिनट है।

प्रथम चन्द्र स्पष्ट की प्रक्रिया प्रदर्शित की जाती है।

7 अगस्त के चन्द्र स्पष्ट राश्यादि 6।20।25।21 और 6 अगस्त का चन्द्र स्पष्ट 6।7।41।54 है दोनों का अन्तर करने पर 12 अं 43 क. 27 विकला चन्द्रमा की 1 दिन की गति मालूम हुई।

लागरिथम् (लघुरिक्थ) सारणी द्वारा 4 घन्टे 30 मिनट का फल .7270 तथा 12 अंश 43 क. 27 वि. का फल .2756 दोनों का योग करने पर (.7270) + (.2756) फल (2अं. 23क.) का योग करने पर 6।10।4।54 प्रात: 10 बजे का चन्द्रस्पष्ट का मान प्राप्त हुआ। भारतवर्ष में प्रात: 10 बजे किसी भी नगर व ग्राम में उत्पन्न जातक का जन्मकालिक चन्द्रस्पष्ट का मान यह ही होगा। चालन के घन्टे मिनट और चन्द्रगति का मान सर्वत्र भारत में एक ही होने के कारण उपर्युक्त चन्द्रस्पष्ट ही प्राप्त होगा। कैलक्यूलेटर के आधार पर गणित करने पर विकला तक का मान

प्राप्त हो जाता है, लघुरिक्थ से कला तक का ही मान प्राप्त होता है। कैलक्यूटर में 4 घन्टे 30 मि० के 270 मि० और 12 अंश 43 कला की (12X60) = 720। 720 + 43 = 763 कला 27 विकला का दशमलव में .45 मान होता है। अत: चन्द्रगति 763.45 और चालन 270 मि० हुआ। अनुपात द्वारा यदि 24 घन्टे अर्थात् 1440 मिनट में 763.45 कला प्राप्त होती हैं तो 270 मिनट में (270X763.45) ÷ 1440 कला 143^0.1469।.1469 को 60 से गुणा करने पर 8.81 विकला अर्थात् 9 विकला प्राप्त हुई। अत: चालन फल 2 अंश 23 कला 9 विकला का 6 अगस्त के चन्द्रस्पष्ट 6।7।41।54 में योग करने पर 6।10।5।3 जन्मकालिक प्रात: 10 बजे का चन्द्रस्पष्ट का मान, भारत में सर्वत्र एक-समान होने से, अहमदाबाद, लखनऊ, बंबई, कलकत्ता, मद्रास आदि में प्रात: 10 बजे स्टैण्डर्ड समय में उत्पन्न जातकों का चन्द्रस्पष्ट का मान उपर्युक्त ही होगा। चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य सूर्यादि ग्रहों का भी प्रात: 10 बजे सर्वत्र एक-सा ही भारतवर्ष में होगा। सूर्यादि अन्य ग्रहों की प्रात: 10 बजे 6 अगस्त 2000 ई0 की गणित साधन की प्रक्रिया प्रदर्शित की जाती है।

(यहाँ राहु के अतिरिक्त सभी ग्रहमार्गी हैं)

राहु में 6 राशि जोड़ने पर केतु का स्पष्ट मान ज्ञात होता है।

4घं.30मि.						
चालन =270 मि.	सूर्य गति 57।29 =57.484	मं० गति 38'।43" 38.717	बु० गति 1^0।44'।8" 104'.134	गु० गति 9'।4" 9.067	शु० गति 1^0।13'।47" 73.8	श० गति 3'।45" 3.75
5.30 बजे के ग्रह प्रात: (5।30)	3।19^0।58' ।40"	3।9^0।20' ।7"	3।3^0।58' ।47'	1।12^0।52'।10"	4।5^0।14'।18"	1।5^0।53' ।33"
गतिफल	+ 10'।46"	+ 7'।16"	+ 19'।31"	1'।42"	13'।50"	+ 42"
योग स्पष्ट ग्रह	3।20।9।26	3।9।27।23	3।4।18।18	1।12।53।52	4।5।28।8	1।5।54।15
लघुरित्थ फल चालन 4 घं. 30 मि.	0^0।11'	0।7'	0।19'	0।2'	0।14'	3'।11" मध्यम गति
लघुरित्थ ग्रहगतिफल	.7270 + 1.3988	.7270 + 1.5650	.7270 + 1.1413	.7270 + 2.2041	.7270 + 1.2895	राहु 3।00।39।31" -35"
चालन और ग्रह गतिफल योग	2.1258	2.2920	1.8683	2.9311	2.0165	3।0।38।56 स्प. राहु

उपर्युक्त तालिका में सूर्यादि ग्रहस्पष्ट की गणित कैलक्यूलेटर और लघुरिक्थ प्रणाली से प्रदर्शित की गई है। भारतवर्ष में यत्र-तत्र-सर्वत्र उत्पन्न व्यक्तियों के 6 अगस्त 2000 ई0 प्रात: 10 बजे जन्म समय के स्पष्ट ग्रह उपर्युक्त ग्रहस्पष्ट तालिका के अनुसार ही होंगे।

चन्द्रस्पष्ट द्वारा विंशोत्तरी दशा का आनयन -

रा अ क विं

उपर्युक्त चन्द्रस्पष्ट 6। 10 । 5 । 3 चन्द्रस्पष्ट द्वारा दशानयन की सारणी इसमें संलग्न है उसकी प्रक्रिया निम्नोक्त है।

चन्द्रमा तुला राशि के 10 अंश और 5 कला पर है, चन्द्रस्पष्ट से दशा का ज्ञान करवाने की सारणी में तुला राशि तीसरे कालम में है और सारणी के पार्श्व भाग में 20,20 कला के अन्तर के अनुसार गणना है, अतः तीसरे कालम और 10 अंश का योग करने पर राहु की महादशा के 13 वर्ष 6 मास प्राप्त होंगें। शेष 5 कला का फल इसकी सहायक सारणी में राहु के कालम में 1 मास 11 दिन लिखें हैं। इनको 13 वर्ष 6 मास में घटाने पर 13 वर्ष 4 मास 19 दिन विंशोत्तरी में राहु की भोग्य दशा के प्राप्त होंगे। इस प्रकार चन्द्रस्पष्ट से ही दशा का मान प्राप्त किया जाता है। अन्य दूसरे प्रकार से भी दशा मान निकाला जा सकता है। संलग्न सारणी में प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का मान लिखकर 12 राशियों का मान लिखा है। यहाँ 6।10।5।3 चन्द्रस्पष्ट है। सारणी में 6।10।0 स्वाती नक्षत्र के प्रथम चरण के कालम है। अतः स्वाती नक्षत्र का प्रथम चरण समाप्त होकर 5 कला द्वितीय चरण की निकल गई कृत्तिका नक्षत्र से गणना करने पर स्वाती नक्षत्र की संख्या 13 आती है। इसमें 9 अंक 1 आवृत्ति के घटाने पर 4 अंक शेष रहते हैं। अतः सू० च० मं० रा० गु० श० बु० के० शु० (आचंभोराजीशबुकेशु) इस क्रम से राहु की दशा का प्रथम चरण समाप्त हो गया। राहु की दशा विंशोत्तरी क्रम में 18 वर्ष की होती है और प्रत्येक नक्षत्र के 4 चरण होते हैं अतः राहु की दशा के प्रथम चरण का मान 4 वर्ष 6 मास होता है। शेष 5 कला का सहायक सारणी जिसका उपयोग ऊपर प्रथम प्रकार में किया गया है, उससे 1 मास 11 दिन प्राप्त कर 4 वर्ष 6 मास में जोड़ने पर 4 वर्ष 7 मास 11 दिन राहु की महादशा व्यतीत हो गई। इसको 18 वर्ष जो राहु की दशा का मान है। उसमें घटाने पर 13।4।19 वर्षादि भोग्य दशा का मान है।

भाव स्पष्ट साधन का प्रकार- चतुर्थ भाव में लग्न स्पष्ट का मान घटाकर शेष में 6 का भाग देने से ध्रुवाङ्क ज्ञात हो जाता है, इसको लग्नस्पष्ट में जोड़ने पर प्रथम भाव की सन्धि ज्ञात होगी। इस प्रकार इस ध्रुवाङ्क को बार-बार जोड़ने पर चतुर्थ भाव तक भावस्पष्ट हो जायेंगे। तदनन्तर ध्रुवाङ्क को 30 अंश में घटाने पर जो शेष बचे उसको बार-बार जोड़ते रहने पर 6वें भाव की सन्धि तक के भाव स्पष्ट हो जाने पर आगे के भावों को स्पष्ट करने के लिये 6, 6 राशि जोड़ने पर 12 भाव की सन्धि तक के भाव स्पष्ट हो जाते हैं।

6 अगस्त 2000ई0 को प्रातः 10 बजे न्यूयॉर्क में लग्न स्पष्ट का मान (रा. 5, अं. 19, क. 14, वि. 4) है। 40 अं० 43 कला उत्तर अक्षांश (न्यूयॉर्क) में प्राप्त हुआ। इसका विवरण पृष्ठ भागों में दिया जा चुका है। दशम लग्नानयन के लिये भी लग्न के उपकरण का प्रयोग सर्वत्र किया जाता है। दशम लग्न की साम्पातिक मान से प्राप्त दशम लग्न में उपकरण 7घं. 5मि. 54 से. S.D.T.

घं	मि.	का फल	रा.	अं.	क.
7	4		3	21	44

7घ. 8मि. - 2।22।40
7घ. 4 - 2।21।44
4मि.=240से. 0।0।56 का अन्तर

114 से. (1मि.54से. का फल +26' ।36"

7।5।54 का फल 2।22।10।36 (0 ' ")

अयनांश संस्कार - 52

दशम लग्न = 2।21।18।36

अनुपात द्वारा 114x56÷240 =26'.6= 26'।36"

\+ 6

चतुर्थभाव = 8।21।18।36 चतुर्थभाव

उपर्युक्त प्रक्रिया के अनुसार चतुर्थ में लग्न को घटाने पर

रा अं क वि
8 ।21 ।18 ।36
– 5 ।19 ।14 ।4 शेष में 6 का भाग देने पर

3 । 2 ।4 । 32 शेष में 6 का भाग देने पर ध्रुवाङ्क 15° ।21' ।45" ।20 प्राप्त हुआ

इस ध्रुवाङ्क को लग्न में बार-बार जोड़ने पर चतुर्थ भावतक भाव स्पष्ट होंगे

रा अं क वि
5 ।19 ।14 ।0 प्रथम भाव

+ 15 ।20 ।45 ।20

6 ।4 ।34 ।49 ।20 संधि

6 ।19 ।55 ।34 ।40 द्वितीय भाव

7 ।5 ।16 ।20 ।00 संधि

7 ।20 ।37 ।5 ।20 तृतीय भाव

8 ।5 ।57 ।50 ।40 संधि

8 ।21 ।18 ।36 ।00 चतुर्थ भाव

सप्तम भाव से केवल 6 राशि जोड़ देवें, अंशादि यथावत् रखने से 12 भाव स्पष्ट हो जाते हैं

30° ।00' ।00" ।00

– 15 ।20 ।45 ।20

14 ।39 ।14 ।40 शेष

चतुर्थभाव से इस शेष को 7वें भाव तक जोड़ने पर

8 ।21 ।18 ।36 चतुर्थ भाव
9 ।5 ।57 ।50 संधि
9 ।20 ।37 ।5 पञ्चम भाव
10 ।5 ।16 ।20 संधि
10 ।19 ।55 ।34 षष्ठ भाव
11 ।4 ।34 ।49 सन्धि
11 ।19 ।14 ।4 सप्तम भाव
3X30 = 90
\+ 2 ।4 ।32

योग 92 ।4 ।32÷6=15° ।20' ।45" ।20 प्र.वि. यह ध्रुवाङ्क है इस का ही चतुर्थभाव तक योग किया है।

न्यूयॉर्क के द्वादश भाव स्पष्ट

द्वादश भाव स्पष्ट

लग्न 1	सं०	2	सं०	3	सं०	4	सं०	5	सं०	6	सं०
5	6	6	7	7	8	8	9	9	10	10	11
19	4	19	5	20	5	21	5	20	5	19	4
14	34	55	16	37	57	18	57	37	16	55	34
4	49	34	20	5	50	36	50	5	20	34	49
7	सं०	8	सं०	9	सं०	10	सं०	11	सं०	12	सं०
11	00	00	1	1	2	2	3	3	4	4	5
19	4	19	5	20	5	21	5	20	5	19	4
14	34	55	16	37	57	18	57	37	16	55	34
4	49	34	20	5	50	36	50	5	20	34	49

पृष्ठभाग के विवरण में कोलकाता की लग्न सारणी में जिस साम्पातिक काल (उपकरण) से लग्नानयन किया है उससे ही दशम लग्न का साधन -

लग्नस्पष्ट 5 ।25 ।22 ।24 कोलकाता का उपकरण - 7घं०23मि०40से०। दशम लग्न की साम्पातिक मान से निर्मित सारणी में (7घं० 20मि०) का फल

रा. अं. क. वि.
2 25 28 100

220से०=3मि०40से० का फल + 51 ।20

7घं० 23 मि० का फल 2 ।26 ।19 ।20

2 ।26 ।24
-2 ।25 ।28
0 ।0 ।56=240 से. का अन्तर

$\frac{56 \times 220}{240}$ =51.333334
=51 कला 20वि.

$\frac{\text{(चतुर्थ - लग्न)}}{6}$ = ध्रुवाङ्क 15 ।00 ।49 ।20

= + 15 ।00 ।49 ।20

लग्न	5 ।25 ।22 ।24
सं०	6 ।10 ।23 ।13 ।20
द्वितीय	6 ।25 ।24 ।21
सं०	7 ।10 ।24 ।52
तृतीय	7 ।25 ।25 ।41
सं०	8 ।10 ।26 ।30
चतुर्थ	8 ।25 ।27 ।20

2 ।25 ।27 ।20 दशमलग्न
+6
8 ।25 ।27 ।20 चतुर्थभाव
-5 ।25 ।22 ।24 लग्न
3 ।00 ।4 ।56 शेष 90 अं. 4 क. 56 वि. में 6 का भाग देने पर लब्धि 15 ।00 ।49 ।20

= 30° ।00' ।00" ।00'''
- 15 ।00 ।49 ।20
14° ।59' ।10" ।40'''

चतुर्थ से आगे 14 ।59 ।10 ।40 सप्तम भाव तक जोड़ने पर

8 ।25 ।27 ।20	चतुर्थ
9 ।10 ।26 ।30	सं०

9 ।25 ।25 ।41 पञ्चम
10 ।10 ।24 ।52 सं०
10 ।25 ।24 । 2 षष्ठ
11 ।10 ।23 ।13 सं०
11 ।25 ।22 ।24 सप्तम भाव इसके आगे केवल 6 राशि प्रत्येक जगह जोड़ने पर 12 भाव

अयनांश सं० 2000 ई० - 52
2 ।25 ।27 ।20 दशम लग्न स्पष्ट
+ 6
8 ।25 ।27 ।20 चतुर्थ भाव
- 5 ।25 ।22 ।24 लग्न
3 ।00 ।4 ।56

6 अगस्त 2000 ई. को कोलकाता के द्वादश भाव स्पष्ट

लग्न 1	सं०	2	सं०	3	सं०	4	सं०	5	सं०	6	सं०
5	6	6	7	7	8	8	9	9	10	10	11
25	10	25	10	25	10	25	10	25	10	25	10
22	23	24	24	25	26	27	26	25	24	24	23
24	13	2	52	41	30	20	30	41	52	21	13
7	0	8	0	9	0	10	0	11	0	12	0
11	00	00	1	1	2	2	3	3	4	4	5
25	10	25	10	25	10	25	10	25	10	25	10
22	23	24	24	25	26	27	26	25	24	24	23
24	13	2	52	41	30	20	30	41	52	2	13

वैदेशिक जन्मपत्रिका के निर्माण में सूर्योदय निकालने में तथा लग्नानयन में उस देश की घड़ियो के स्टैण्डर्ड समय का ही उपयोग होता है, लेकिन ग्रहस्पष्ट के साधन में उस देश के स्टैण्डर्ड समय को भारतीय स्टैण्डर्ड समय में परिवर्तित करके ही ग्रहस्पष्ट करने चाहिये। जिस देश का स्तम्भ पश्चिम रेखांश पर हो, तो जितने घन्टे का स्तम्भ हो उन घन्टों को 5 घन्टे 30 मिनट में जोड़ने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय बन जाता है। जिन वैदशिक नगरों का स्तम्भ पूर्व में हो उनको कभी घटाने पर कभी जोड़ने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय ज्ञात होता है जैसे सिडनी (आस्ट्रेलिया में है) में पूर्व में 10 घन्टे का स्तम्भ है तब 10 घन्टे में 5 घन्टे 30 मिनट घटाने पर 4 घन्टे 30 मि० शेष रहे। सिडनी में उत्पन्न जातक के जन्म समय में 10 बजे प्रात: में से 4 घं० 30 मि० घटाने पर प्रात: 5 बजकर 30 मि० भारतीय स्टैण्डर्ड समय हुआ। अत: सिडनी में प्रात: 10 बजे उत्पन्न जातक के ग्रहस्पष्ट 5ब० 30मि० भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार बनाने चाहिये।

मॉरीशस का भी स्तम्भ पूर्व में 4 घन्टे है। अत: 5घं० 30मि० में 4 घन्टे घटाने पर 1 घं० 30 मि० शेष रहा। इसको मॉरीशस में उत्पन्न व्यक्ति के प्रात: जन्म समय 10 बजे में जोड़ने पर 11 बजकर 30 मिनट भारतीय स्टैण्डर्ड प्राप्त हुआ। अत: 11 बजकर 30 के समय के ग्रहस्पष्ट करने चाहिये। तात्पर्य यह है जिन देशों पश्चिम स्तम्भ जितने घन्टों का हो उनको सर्वदा 5घं० 30मि० जोड़ने से भारतीय स्टैण्डर्ड समय बनता है। लेकिन पूर्व रेखांश में जिन देशों का स्तम्भ 5घं० 30मि० से कम हो, तो उतना जन्म समय में जोड़ने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय बनता है। अत: ग्रहस्पष्ट भारतीय स्टैण्डर्ड समय के ही करने चाहिए। वैदेशिक स्टैण्डर्ड समय पर नहीं बनाना चाहिये। वैदेशिक जन्म के स्टैण्डर्ड समय पर तो केवल सूर्योदय व लग्नानयन ही करें। किन्हीं देशों में अप्रैल मास के प्रथम रविवार से अक्टूबर मास के अन्तिम रविवार तक वहाँ की घड़ियों का समय 1 घन्टे बढ़ा दिया जाता है। अत: इस बीच में उत्पन्न व्यक्ति के स्टैण्डर्ड समय में 1 घन्टा कम करके गणित प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिये।

षड्वर्ग साधन

षड्वर्ग साधन की सारणी संलग्न है उसके आधार पर षड्वर्ग साधन करने में सुगमता रहती है।

होरा - ग्रह विषम राशि में हो, तो प्रथम होरा रवि की और द्वितीय होरा चन्द्र की एवं ग्रह सम राशि में हो, तो प्रथम होरा चन्द्र की और द्वितीय होरा सूर्य की होती है। होरा 15, 15 अंश की होती है।

द्रेष्काण - द्रेष्काण 10,10,10 अंशों की प्रत्येक राशि की होती है। ग्रह यदि 10 अंश के भीतर हो अर्थात् दस अंश तक हो, तो जिस राशि में ग्रह हो उसमें ही उसका द्रेष्काण होता है। जो ग्रह 11 अंश से 20 अंश तक हो, तो वह जिस राशि में है उससे 5वीं राशि में उसका द्रेष्काण होगा, जो ग्रह 21 अंश से 30 अंश तक हो उसका द्रेष्काण ग्रह स्थित राशि से नवम में होगा।

नवमांश - नवमांश का प्रत्येक खण्ड 3 अंश 20 कला का होता है।

	मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन
3 I20	1	10	7	4
6 I40	2	11	8	5
10 I00	3	12	9	6
13 I20	4	1	10	7
16 I40	5	2	11	8
20 I00	6	3	12	9
23 I20	7	4	1	10
26 I40	8	5	2	11
30 I00	9	6	3	12

उपर्युक्त तालिका से नवमांश की गणना सुगमता से हो जाती है। किसी ग्रह की मे0सि0ध0 में 11 अंश पर स्थिति हो, तो उसका नवमांश कर्क राशि में, वृष, कन्या, मकर में 11 अंश पर हो, तो उसका नवमांश मेष राशि में, मिथुन, तुला, कुम्भ में 11 अंश पर ग्रह हो, तो उसका नवमांश मकर राशि में, कर्क, वृश्चिक, मीन के 11 अंश पर ग्रह हो, तो उसका नवमांश तुला राशि का होगा। तालिका में स्पष्ट दर्शित है।

द्वादशांश - द्वादशांश में 12 खण्ड होते हैं, प्रत्येक खण्ड का मान ढाई-ढाई अंश होता है तथा गणना ग्रह जिस राशि में हो उस राशि से ही होती है, मेष राशि के 11 अंश पर ग्रह हो, तो 5वें खण्ड की सिंह राशि का उस ग्रह का द्वादशांश होगा। वृष राशि के 17 अंश पर ग्रह हो, तो वृष से 7वां खण्ड वृश्चिक राशि का उस ग्रह का द्वादशांश होगा। मिथुन राशि के 26 अंश पर ग्रह हो, तो मिथुन से 11 वाँ खण्ड मेष राशि का है, उस ग्रह का द्वादशांश मेष राशि में होगा। इस प्रकार द्वादशांश कुण्डली में सुगमता से ग्रह स्थापित हो जाते हैं।

सप्तमांश चक्र - सप्तमांश में 7 खण्ड होते हैं, प्रत्येक खण्ड 4 अंश 17 कला 8 विकला का होता है। विषम राशि में ग्रह हो, तो ग्रह जिस राशि में हो उससे गणना करना। यदि ग्रह सम राशि में हो, तो उससे 7वीं राशि से गणना करनी चाहिये।

1	4।17।8	ग्रह स्थित राशि से विषम राशि	सम राशि में ग्रह स्थित से 7वीं राशि से गणना करें।
2	8।34।16	1	2
3	12।51।24	3	4
4	17।8।32	5	6
5	21।25।40	7	8
6	25।42।48	9	10
7	29।59।56	11	12

यदि ग्रह 2 राशि 18 अंश पर हो, तो विषम राशि होने के कारण मिथुन से गणना करने पर तुला राशि पर सप्तमांश चक्र में ग्रह होगा।

4 राशि 18 अंश पर सिंह राशि से गणना करने पर धनु राशि पर सप्तमांश चक्र में, 6 राशि 18 अंश पर तुला राशि से 5वीं राशि कुम्भ राशि में सप्तमांश चक्र में, वृष राशि के 18 अंश पर ग्रह हो, तो वृष से सप्तम राशि वृश्चिक से गणना करने पर 5वीं राशि मीन में, कर्क राशि के 18 अंश पर ग्रह हो, तो कर्क से 7वीं राशि मकर से गणना करने पर 5वीं राशि वृष राशि में, वृश्चिक राशि के 18 अंश पर ग्रह हो, तो वृश्चिक से 7वीं राशि वृष से गणना करने पर 5वीं राशि कन्या में सप्तमांश कुण्डली में ग्रह स्थित होगा।

इस प्रकार सभी राशियों की गणना करनी चाहिये।

त्रिंशांश चक्र

	विषम राशि में खण्ड	विषम राशि में अंश	सम राशि में खण्ड		सम राशि में अंश	
अंश	5	5	मं० 1	5	5	शु० 2
	5	10	श० 11	7	12	बु० 6
	8	18	गु० 9	8	20	गु० 12
	7	25	बु० 3	5	25	श० 10
	5	30	शु० 4	5	30	मं० 8

मेष के 11 अंश पर ग्रह हो, तो विषम राशि में 12 तीसरे खण्ड में होने से गुरु की विषम राशि धनु में। इसी प्रकार मिथुन के 11 अंश पर, सिंह के 11 अंश पर, तुला के 11 अंश पर, धनु के 11 अंश पर, कुम्भ के 11 अंश पर ग्रह हो, तो वह धनु राशि पर त्रिंशांश चक्र में स्थित होगा। सम राशियों में (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) इन राशियों में यदि किसी भी राशि पर 11 अंश पर ग्रह होगा वह सप्तमांश चक्र में बुध की सम राशि कन्या में सप्तमांश चक्र में स्थित होगा। इस सभी अंशों पर उपर्युक्त चक्र से जानना चाहिये।

षड्वर्गसारिणी द्वारा षड्वर्गसाधन प्रक्रिया

6 अगस्त 2000 ई. के प्रात: 10 बजे के जन्म समय के ग्रह स्पष्ट व लग्नस्पष्ट द्वारा षड्वर्ग साधन सारिणी के आधार पर—

स्पष्टग्रहा:

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के	लग्न
3	6	3	3	1	4	1	3	9	5
20	10	9	4	12	5	5	00	00	25
9	5	27	18	53	28	54	38	38	22
26	3	23	18	52	8	15	56	56	24
57	763	39	104	9	73	3	3	3	
29	27	43	8	4	47	45	11	11	

होरा चक्रम्
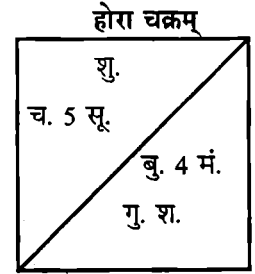
द्रेष्काणचक्रम्
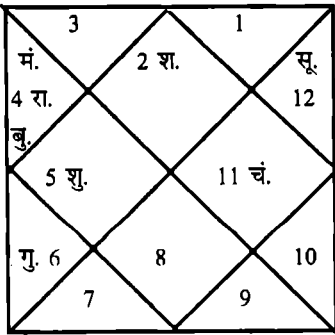
सप्तमांशचक्रम्
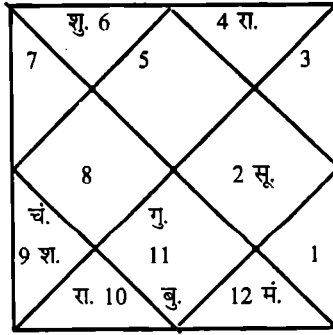
नवमांशचक्रम्
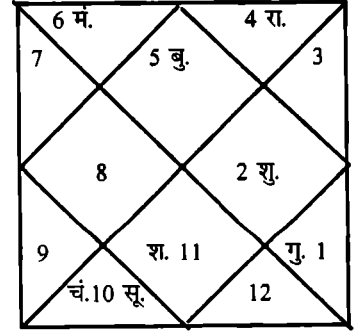
द्वादशांशचक्रम्
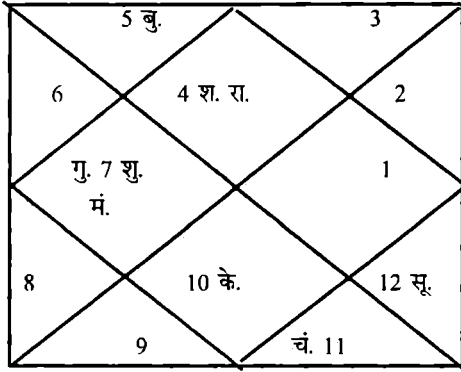
त्रिंशांशचक्रम्
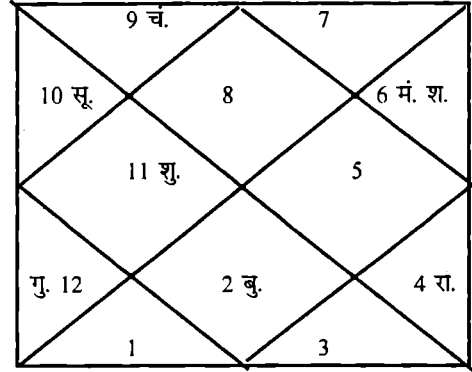
सर्वप्रथम 5रा।25अं।22क।24वि लग्न के आधार पर षड्वर्ग चक्रों का निर्णय करने के लिये षड्वर्ग सारिणी में कन्या के कोष्ठक 25 अंश 22 कला को सारणी के ऊर्ध्व भाग में जो अंश कलादि कोष्ठकों में लिखे हैं 25 अंश 42 कला के कोष्ठक को कन्या लग्न के कोष्ठक में देखने पर 5, 2, 5, 5, 4, 8 अंक क्रम से होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश द्वादशांश और त्रिंशांश के आगे लिखे हैं अत: उपर्युक्त चक्रों में क्रमशः लिखकर उन्हें भरा गया है।

लग्न के अंक भरने के बाद **सूर्य** कर्क राशि के 21वें अंश में होने के कारण कर्क राशि के कोष्ठक में 21 अंश 25 कला के कोष्ठक को देखने पर 5, 12, 2, 10, 12, 10 अंकों पर क्रमशः होरा, द्रे. स. न. द्वा. त्रिं. चक्र में स्थापित किया गया। **चन्द्र** तुलाराशि के 11 अंश पर होने से तुला के कोष्ठक में 12 अंश के कोष्ठक को देखने पर 5, 11, 9, 10, 11, 9 अंकों पर चन्द्रमा को क्रमशः हो. द्रे. स. न. द्वा. त्रिं. चक्र में लिखा गया। **मंगल** कर्क राशि के 10 अंश पर है अत: कर्क में 10वें अंश के कोष्ठक को मिलाने पर 4, 4, 12, 6, 7, 6 अंकों पर क्रमशः होरा, द्रे. स. न. द्वा. त्रिं. चक्र में मंगल लिखा गया। **बुध** कर्क के 5वें अंश पर होने से कर्क के कोष्ठक में 4, 4, 11, 5, 52 अंकों पर कर्क के कोष्ठक में 5 अंश के कोष्ठक में बुध की स्थिति क्रमशः हो. द्रे. स. न. द्वा. त्रि. चक्र में लिखी गई।

इस प्रकार ही गुरु, शुक्र व शनि की षड्वर्ग कुण्डलियों में स्थापना की गई है।

अपने साथियों के स्वभाव का पूरा ज्ञान प्राप्त करो। यदि वे तुमसे बड़े हैं तो तुम उनसे कुछ न कुछ पूछो और वे जो कहें उसे ध्यानपूर्वक सुनो। यदि छोटे हैं तो तुम उनको कुछ लाभ पहुँचाओ।

–पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

षड्वर्ग चक्र																										
अंश	2	3	4	5	6	7	8	10	12	12	12	13	15	16	17	17	18	20	21	22	23	25	25	26	27	30
कला	30	30	17	0	40	30	34	0	0	30	51	20	0	40	8	30	0	0	25	30	20	0	42	40	30	0
विकला	0	0	8	0	0	0	17	0	0	0	25	0	0	0	34	0	0	0	42	0	0	0	51	0	0	0
मेष हो.	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
द्रे.	1	1	1	1	1	1	1	1	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	9	9	9	9	9	9	9	9
स.	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	3	4	4	4	4	5	5	5	5	6	6	6	6	7	7	7
न.	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	4	4	5	5	6	6	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9
द्वा.	1	2	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	6	7	7	7	8	8	9	9	10	10	11	11	11	12
त्रिं	1	1	1	1	11	11	11	11	9	9	9	9	9	9	9	9	9	3	3	3	3	3	7	7	7	7
वृष हो.	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रे.	2	2	2	2	2	2	2	2	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	10	10	10	10	10	10	10	10
स.	8	8	8	9	9	9	9	10	10	10	10	11	11	11	11	12	12	12	12	1	1	1	1	2	2	2
न.	10	10	11	11	11	12	12	12	1	1	1	1	2	2	3	3	3	3	4	4	4	5	5	5	6	6
द्वा.	2	3	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9	10	10	11	11	12	12	12	1
त्रिं	2	2	2	2	6	6	6	6	6	12	12	12	12	12	12	12	12	12	10	10	10	10	8	8	8	8
मि. हो.	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
द्रे.	3	3	3	3	3	3	3	3	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	11	11	11	11	11	11	11	11
स.	3	3	3	4	4	4	4	5	5	5	5	6	6	6	6	7	7	7	7	8	8	8	8	9	9	9
न.	7	7	8	8	8	9	9	9	10	10	10	10	11	11	12	12	12	12	1	1	1	2	2	2	3	3
द्वा.	3	4	4	4	5	5	6	6	7	7	8	8	8	9	9	9	10	10	11	11	12	12	1	1	1	2
त्रिं	1	1	1	1	11	11	11	11	9	9	9	9	9	9	9	9	9	3	3	3	3	3	7	7	7	7
क. हो.	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रे.	4	4	4	4	4	4	4	4	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	12	12	12	12	12	12	12	12
स.	10	10	10	11	11	11	11	12	12	12	12	1	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	3	4	4	4
न.	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	7	7	8	8	9	9	9	9	10	10	10	11	11	11	12	12
द्वा.	4	5	5	5	6	6	7	7	8	8	9	9	9	10	10	10	11	11	12	12	1	1	2	2	2	3
त्रिं	2	2	2	2	6	6	6	6	6	12	12	12	12	12	12	12	12	12	10	10	10	10	8	8	8	8
सिं. हो.	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
द्रे.	5	5	5	5	5	5	5	5	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	1	1	1	1	1	1	1	1
स.	5	5	5	6	6	6	6	7	7	7	7	8	8	8	8	9	9	9	9	10	10	10	10	11	11	11
न.	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	4	4	5	5	6	6	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9
द्वा.	5	6	6	6	7	7	8	8	9	9	10	10	10	11	11	11	12	12	1	1	2	2	3	3	3	4
त्रिं	1	1	1	1	11	11	11	11	9	9	9	9	9	9	9	9	9	3	3	3	3	3	7	7	7	7
कं. हो.	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रे.	6	6	6	6	6	6	6	6	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	2	2	2	2	2	2	2	2
स.	12	12	12	1	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	3	4	4	4	4	5	5	5	5	6	6	6
न.	10	10	11	11	11	12	12	12	1	1	1	1	2	2	3	3	3	3	4	4	4	5	5	5	6	6
द्वा.	6	7	7	7	8	8	9	9	10	10	11	11	11	12	12	12	1	1	2	2	3	3	4	4	4	5
त्रिं	2	2	2	2	6	6	6	6	6	12	12	12	12	12	12	12	12	12	10	10	10	10	8	8	8	8

षड्वर्ग चक्र

अंश	2	3	4	5	6	7	8	10	12	12	12	13	15	16	17	17	18	20	21	22	23	25	25	26	27	30
कला	30	20	17	0	40	30	34	0	0	30	51	20	0	40	8	30	0	0	25	30	20	0	42	40	30	0
त्रिकला	0	0	8	0	0	0	17	0	0	0	25	0	0	0	34	0	0	0	42	0	0	0	51	0	0	0
तुला. हो.	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
द्रे.	7	7	7	7	7	7	7	7	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	3	3	3	3	3	3	3	3
स.	7	7	7	8	8	8	8	9.	9	9	9	10	10	10	10	11	11	11	11	12	12	12	12	1	1	1
न.	7	7	8	8	8	9	9	9	10	10	10	10	11	11	12	12	12	12	1	1	1	2	2	2	3	3
द्वा.	7	8	8	8	9	9	10	10	11	11	12	12	12	1	1	1	2	2	3	3	4	4	5	5	5	6
त्रिं	1	1	1	1	11	11	11	11	9	9	9	9	9	9	9	9	9	3	3	3	3	3	7	7	7	7
बृ. हो.	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रे.	8	8	8	8	8	8	8	8	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	4	4	4	4	4	4	4	4
स.	2	2	2	3	3	3	3	4	4	4	4	5	5	5	5	6	6	6	6	7	7	7	7	8	8	8
न.	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	7	7	8	8	9	9	9	9	10	10	10	11	11	11	12	12
द्वा.	8	9	9	9	10	10	11	11	12	12	1	1	1	2	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	6	7
त्रिं	2	2	2	2	6	6	6	6	6	12	12	12	12	12	12	12	12	12	10	10	10	10	8	8	8	8
ध हो.	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
द्रे.	9	9	9	9	9	9	9	9	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	5	5	5	5	5	5	5	5
स.	9	9	9	10	10	10	10	11	11	11	11	12	12	12	12	1	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3
न.	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	4	4	5	5	6	6	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9
द्वा.	9	10	10	10	11	11	12	12	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7	7	8
त्रिं	1	1	1	1	11	11	11	11	9	9	9	9	9	9	9	9	9	3	3	3	3	3	7	7	7	7
म. हो.	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रे.	10	10	10	10	10	10	10	10	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	6	6	6	6	6	6	6	6
स.	4	4	4	5	5	5	5	6	6	6	6	7	7	7	7	8	8	8	8	9	9	9	9	10	10	10
न.	10	10	11	11	11	12	12	12	1	1	1	1	2	2	3	3	3	3	4	4	4	5	5	5	6	6
द्वा.	10	11	11	11	12	12	1	1	2	2	3	3	3	4	4	4	5	5	6	6	7	7	8	8	8	9
त्रिं	2	2	2	2	6	6	6	6	6	12	12	12	12	12	12	12	12	12	10	10	10	10	8	8	8	8
कुं. हो.	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
द्रे.	11	11	11	11	11	11	11	11	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	7	7	7	7	7	7	7	7
स.	11	11	11	12	12	12	12	1	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	3	4	4	4	4	5	5	5
न.	7	7	8	8	8	9	9	9	10	10	10	10	11	11	12	12	12	12	1	1	1	2	2	2	3	3
द्वा.	11	12	12	12	1	1	2	2	3	3	4	4	4	5	5	5	6	6	7	7	8	8	9	9	9	10
त्रिं	1	1	1	1	11	11	11	11	9	9	9	9	9	9	9	9	9	3	3	3	3	3	7	7	7	7
मी. हो.	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रे.	12	12	12	12	12	12	12	12	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	8	8	8	8	8	8	8	8
स.	6	6	6	7	7	7	7	8	8	8	8	9	9	9	9	10	10	10	10	11	11	11	11	12	12	12
न.	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	7	7	8	8	9	9	9	9	10	10	10	11	11	11	12	12
द्वा.	12	1	1	1	2	2	3	3	4	4	5	5	5	6	6	6	7	7	8	8	9	9	10	10	10	11
त्रिं	2	2	2	2	6	6	6	6	6	12	12	12	12	12	12	12	12	12	10	10	10	10	8	8	8	8

अश्विनी आदि नक्षत्रों के चरणान्त में स्पष्ट चन्द्र

	नक्षत्र	1 चरण			2 चरण			3 चरण			4 चरण		
		रा०	अं०	क०	रा०	अं०	क०	रा०	अं०	क०	रा०	अं०	क०
1	अश्विनी	0	3	20	0	6	40	0	10	0	0	13	20
2	भरणी	0	16	40	0	20	0	0	23	20	0	26	40
3	कृत्तिका	1	0	0	1	3	20	1	6	40	1	10	0
4	रोहिणी	1	13	20	1	16	40	1	20	0	1	23	20
5	मृगशिरा	1	26	40	2	0	0	2	3	20	2	6	40
6	आर्द्रा	2	10	0	2	13	20	2	16	40	2	20	0
7	पुनर्वसु	2	23	20	2	26	40	3	0	0	3	3	20
8	पुण्य	3	6	40	3	10	0	3	13	20	3	16	40
9	आश्लेषा	3	20	0	3	23	20	3	26	40	4	0	0
10	मघा	4	3	20	4	9	40	4	10	0	4	13	20
11	पू० फा०	4	16	40	4	20	0	4	23	20	4	26	40
12	उ० फा०	5	0	0	5	3	20	5	6	40	5	10	0
13	हस्त	5	13	20	5	16	40	5	20	0	5	23	20
14	चित्रा	5	26	40	6	0	0	6	3	20	6	6	40
15	स्वाति	6	10	0	6	13	20	6	16	40	6	20	0
16	विशाखा	6	23	20	6	26	40	7	0	0	7	3	20
17	अनुराधा	7	9	40	7	10	0	7	13	20	7	26	40
18	ज्येष्ठा	7	20	0	7	23	20	7	26	40	8	0	0
19	मूल	8	3	20	8	9	40	8	10	0	8	13	20
20	पू० षा०	8	16	40	8	20	0	8	23	20	8	26	40
21	उ० षा०	9	0	0	9	3	20	9	9	40	9	10	0
22	श्रवण	9	13	20	9	16	40	9	20	0	9	23	20
23	धनिष्ठा	9	26	40	10	0	0	10	3	20	10	9	40
24	शतभिषा	10	10	0	10	13	20	10	16	40	10	20	0
25	पू० भा०	10	23	20	10	26	40	11	0	0	11	3	20
26	उ० भा०	11	9	40	11	10	0	11	13	20	11	16	40
27	रेवती	11	20	0	11	23	20	11	26	40	12	0	0

विंशोत्तरी दशा

कृत्तिका नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर जो संख्या हो उसकी संख्या 1 हो तो सूर्य, 2 हो तो चन्द्र, 3 हो तो मंगल, 4 हो तो राहु, 5 में गुरु, 6 में शनि, 7 में बुध, 8 में केतु और 9 संख्या हो तो शुक्र की दशा में जन्म समझना चाहिए। यदि संख्या 9 से अधिक हो तो 9 का भाग देकर शेष संख्या तक कृत्तिका से गणना करें। सूर्य की दशा 6 वर्ष, चन्द्र की 10, मंगल की 7, राहु की 18, गुरु की 16, शनि की 19, बुध की 17, केतु की 7, और शुक्र की 20 वर्ष की दशा होती है।

अन्तर्दशा के ज्ञान की प्रक्रिया

दशा जिस ग्रह की हो उसमें जिस ग्रह की अन्तर्दशा ज्ञात करनी हो दोनों दशा व अर्न्तदशा ग्रह के वर्षों को परस्पर गुणा करने पर गुणनफल में जो प्रथम अंक हो उसको 3 से गुणा करने पर जो अंक प्राप्त हो उसे दिन की संख्या समझें, शेष अंकों से मास की संख्या समझें जैसे सूर्य की दशा में मंगल की अन्तर्दशा जाननी है तो सूर्य के 6 वर्ष को मंगल के 7 वर्ष से गुणा करने पर 42 अंक हुए इसमें प्रथमांक 2 को 3 से गुणा करने पर 6 दिन हुए शेष 4 अंक मास के रहे इस प्रकार 4 मास 6 दिन सूर्य की दशा में मंगल की अन्तर्दशा रहेगी। गुरु की दशा में राहु की अर्न्तदशा का ज्ञान करना हो तो गुरु की दशा के वर्ष 16 और राहु के 18 इन दोनों का गुणनफल 288 (दो सौ अठासी) हुआ। इसमें प्रथमांक 8 को 3 से गुणा करने पर 24 दिन तथा शेष 28 अंक मास के अंक हुए इस प्रकार गुरु की दशा में राहु का अन्तर्काल 2 वर्ष 4 मास 24 दिन प्राप्त हुआ, इस प्रकार से किसी की दशा में किसी ग्रह की अन्तर्दशा ज्ञात हो सकती है।

भयात-भभोग के माध्यम से चन्द्र स्पष्ट करने की विधि

गत नक्षत्र के घटी पलों को 60 में से घटा कर दो स्थानों पर रखें। एक स्थान पर इष्टकाल जोड़ने से भयात बनेगा। दूसरे स्थान पर वर्तमान नक्षत्र के घंट्यादि जोड़ देने से भभोग बनेगा। भयात भभोग की घटियों को 60 से गुणा कर पलों को जोड़ दें। पलात्मक भयात और पलात्मक भभोग स्पष्ट हो जायेगा।

पलात्मक भयात को 60 से गुणा करके उसमें पलात्मक भभोग का भाग दें। जो शेष बचे उसे पुनः 60 से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग दें। तीसरी बार पुनः शेषांश में 60 का गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग दें। जो उपलब्धि होगी वह वर्तमान नक्षत्र के भुक्त घटी पलादि कही जायेगी।

तत्पश्चात् अश्विनी से गत नक्षत्र तक गिनती कर लें, जो संख्या हो उसे 60 से गुणा कर भुक्त घटी आदि में जोड़ें। इस योग फल को 2 से गुणा कर गुणनफल में 9 से भाग देने पर जो लब्धि होगी वह अंश कला विकला होगी। यदि अंशों की संख्या 30 से अधिक है तो उसमें 30 का भाग दें। जो लब्धि आयेगी वह राशि होगी। इस प्रकार चन्द्र स्पष्ट की राशि अंश कला विकला प्राप्त हो सकेगी। चन्द्र स्पष्ट हो जाने पर विंशोत्तरी दशा का भोग्य वर्ष सरलता से निकल आता है।

विंशोत्तरीदशा-कलासारिणी

कला	केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चन्द्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
1	0	3	0	9	0	3	0	5	0	3	0	8	0	7	0	9	0	8	1
2	0	6	0	18	0	5	0	9	0	6	0	16	0	14	0	17	0	15	2
3	0	9	0	27	0	8	0	14	0	9	0	24	0	22	0	26	0	23	3
4	0	13	1	6	0	11	0	18	0	13	1	2	0	29	1	4	1	1	4
5	0	16	1	15	0	14	0	23	0	16	1	11	1	6	1	13	1	8	5
6	0	19	1	24	0	16	0	27	0	19	1	19	1	13	1	21	1	16	6
7	0	22	2	3	0	19	1	2	0	22	1	27	1	20	2	0	1	24	7
8	0	25	2	12	0	22	1	6	0	25	2	5	1	28	2	8	2	1	8
9	0	28	2	21	0	24	1	11	0	28	2	13	2	5	2	17	2	9	9
10	1	1	3	0	0	27	1	15	1	1	2	21	2	12	2	26	2	17	10
15	1	17	4	15	1	11	2	8	1	17	4	2	3	18	4	8	3	25	15
20	2	3	6	0	1	24	3	0	2	3	5	12	4	24	5	21	5	3	20

दशा साधन विधि-

सर्व प्रथम स्पष्ट चन्द्र बनाकर उसकी राशि के कोष्टक में अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना चाहिए। यहाँ 20-20 कलाओं के अन्तर पर दशा का भोग्यमान वर्ष, मास एवं दिन में दिया गया है। फिर २० कलाओं से जितनी कलाएँ अधिक या कम हों उनके अनुसार कला सारणी से उस ग्रह के कोष्ठक से मासादि फल जानकर पूर्वानीत फल में घटाना या जोड़ना चाहिए। इस प्रकार चन्द्रस्पष्ट के राशि अंश एवं कलाओं के आधार पर विंशोत्तरी दशा का भोग्यमान सुगमता से जाना जा सकता है।

विंशोत्तरीदशान्तर्दशा-चक्र

दशा-धीश नक्षत्र	सूर्य कृ. उ.फा. उ. षा. ग्रह वर्ष मास दिन	चन्द्र रोहि. ह. श्रवण. ग्रह वर्ष मास दिन	मंगल मृ. चि. ध. ग्रह वर्ष मास दिन	राहु आर्द्रा स्वा. श. ग्रह वर्ष मास दिन	गुरु पुन. वि. पू. भा. ग्रह वर्ष मास दिन	शनि पुष्य अनु. उ. भा. ग्रह वर्ष मास दिन	बुध आश्लेषा ज्ये, रेवती ग्रह वर्ष मास दिन	केतु मघा मू. आश्वि. ग्रह वर्ष मास दिन	शुक्र पू. फा. पू.षा. भ ग्रह वर्ष मास दिन
	सू 0 3 18	चं. 0 10 0	मं. 0 4 27	रा. 2 8 12	वृ 2 1 18	श. 3 0 3	बु. 2 4 27	के. 0 4 27	शु. 3 4 0
	चं. 0 6 0	मं. 0 7 0	रा. 1 0 18	वृ. 2 4 24	श. 2 6 12	बु. 2 8 9	के. 0 11 27	शु. 1 2 0	सू. 1 0 0
	मं. 0 4 6	रा. 1 6 0	वृ. 0 11 6	श. 2 10 6	बु. 2 3 6	के. 1 1 9	शु. 2 10 0	सू. 0 4 6	चं. 1 8 0
	रा 0 10 24	वृ. 1 4 0	श. 1 1 9	बु. 2 6 18	के. 0 11 6	शु. 3 2 0	सू. 0 10 6	चं. 0 7 0	म. 1 2 0
	वृ. 0 9 18	श. 1 7 0	बु. 0 11 27	के. 1 0 18	शु. 2 8 0	सू. 0 11 12	चं. 1 5 0	मं. 0 4 27	रा. 3 0 0
	श. 0 11 12	बु. 1 5 0	के. 0 4 27	शु. 3 0 0	सू. 0 9 18	चं. 1 7 0	मं. 0 11 27	रा. 1 0 18	वृ. 2 8 0
	बु 0 10 6	के. 0 7 0	शु. 1 2 0	सू. 0 10 24	चं. 1 4 0	मं. 1 1 9	रा. 2 6 18	वृ. 0 11 6	श. 3 2 0
	के. 0 6	शु. 1 8 0	सू. 0 4 6	चं. 1 6 0	मं. 0 11 6	रा. 2 10 6	वृ. 2 3 6	श. 1 1 9	बु. 2 10 0
	शु. 1 0 0	सू. 0 6 0	चं. 0 7 0	मं. 1 0 18	रा. 2 4 24	वृ. 2 6 12	श. 2 8 9	बु. 0 11 27	के. 1 2 0

चन्द्र स्पष्ट द्वारा विंशोत्तरी दशा-सारिणी

राशि	मे. सिं ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	कर्की. वृ. मी	राशि	मे. सिं ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं	कर्क वृ. मी.	राशि	मे. सिं ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	कर्क. वृ. मी.
	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा		भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा		भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा
स्प. चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	स्प. चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि	स्प. चन्द्र	व. मा. दि	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि
अं. कला	के.	सू.	भौ.	गु.	अं. कला	के.	चं.	रा.	श.	अं. क.	शु.	चं.	गु.	बु.
0 00	7 0 0	4 6 0	3 6 0	4 0 0	10 20	1 6 27	9 9 0	13 0 18	9 0 9	20 20	9 6 0	2 3 0	15 7 6	12 3 27
0 20	6 9 27	4 4 6	3 3 27	3 7 6	10 40	1 4 24	9 6 0	12 7 6	8 6 18	20 40	9 0 0	2 0 0	15 2 12	11 10 24
0 40	6 7 24	4 2 12	3 1 24	3 2 12	11 00	1 2 21	9 3 0	12 1 24	8 0 27	21 00	8 6 0	1 9 0	14 9 18	11 5 21
1 00	6 5 21	4 0 18	2 11 21	2 9 18	11 20	1 0 18	9 0 0	11 8 12	7 7 6	21 20	8 0 0	1 6 0	14 4 24	11 0 18
1 20	6 3 18	3 10 24	2 9 18	2 4 24	11 40	0 10 15	8 9 0	11 3 0	7 1 15	21 40	7 6 0	1 3 0	14 0 0	10 7 15
1 40	6 1 15	3 9 0	2 7 15	2 0 0	12 00	0 8 12	8 6 0	10 9 18	6 7 24	22 00	7 0 0	1 0 0	13 7 6	10 2 12
2 00	5 11 12	3 7 6	2 5 12	1 7 6	12 20	0 6 9	8 3 0	10 4 6	6 2 3	22 20	6 6 0	0 9 0	13 2 12	9 9 9
2 20	5 9 9	3 5 12	2 3 9	1 2 12	12 40	0 4 6	8 0 0	9 10 24	5 8 12	22 40	6 0 0	0 6 0	12 9 18	9 4 6
2 40	5 7 6	3 3 18	2 1 6	0 9 18	13 00	0 2 3	7 9 0	9 5 12	5 2 21	23 00	5 6 0	0 3 0	12 4 24	8 11 3
3 00	5 5 3	3 1 24	1 11 3	0 4 24	13 20	श. 20 0 0	7 6 0	9 0 0	4 9 0	23 20	5 0 0	भौ. 7 0 0	12 0 0	8 6 0
3 20	5 3 0	3 0 0	1 9 0	गु. 19 0 00	13 40	19 6 0	7 3 0	8 6 18	4 3 9	23 40	4 6 0	6 9 27	11 7 6	8 0 27
3 40	5 0 27	2 10 6	1 6 27	18 6 9	14 00	19 0 0	7 0 0	8 1 6	3 9 18	24 00	4 0 0	6 7 24	11 2 12	7 7 24
4 00	4 10 24	2 8 12	1 4 24	18 0 18	14 20	18 6 0	6 9 0	7 7 24	3 3 27	24 20	3 6 0	6 5 21	10 9 18	7 2 21
4 20	4 8 21	2 6 18	1 2 21	17 6 27	14 40	18 0 0	6 6 0	7 2 12	2 10 6	24 40	3 0 0	6 3 18	10 4 24	6 9 18
4 40	4 6 18	2 4 24	1 0 18	17 1 6	15 00	17 6 0	6 3 0	6 9 0	2 4 15	25 00	2 6 0	6 1 15	10 0 0	6 4 15
5 00	4 4 15	2 3 0	0 10 15	16 7 15	15 20	17 0 0	6 0 0	6 3 18	1 10 24	25 20	2 0 0	5 11 12	9 7 6	5 11 12
5 20	4 2 12	2 1 6	0 8 12	16 1 24	15 40	16 6 0	5 9 0	5 10 6	1 5 3	25 40	1 6 0	5 9 9	9 2 12	5 6 9
5 40	4 0 9	1 11 12	0 6 9	15 8 3	16 00	16 0 0	5 6 0	5 4 24	0 11 12	26 00	1 0 0	5 7 6	8 9 18	5 1 6
6 00	3 10 6	1 9 18	0 4 6	15 2 12	16 20	15 6 0	5 3 0	4 11 12	0 5 21	26 20	0 6 0	5 5 3	8 4 24	4 8 3
6 20	3 8 3	1 7 24	0 2 3	14 8 21	16 40	15 0 0	5 0 0	4 6 0	शु. 17 0 0	26 40	सू. 6 0 0	5 3 0	8 0 0	4 3 0
6 40	3 6 0	1 6 0	रा. 18 0 0	14 3 0	17 00	14 6 0	4 9 0	4 0 18	16 6 27	27 00	5 10 6	5 0 27	7 7 6	3 9 27
7 00	3 3 27	1 4 6	17 6 18	13 9 9	17 20	14 0 0	4 6 0	3 7 6	16 1 24	27 20	5 8 12	4 10 24	7 2 12	3 4 24
7 20	3 1 24	1 2 12	17 1 6	13 3 18	17 40	13 6 0	4 3 0	3 1 24	15 8 21	27 40	5 6 18	4 8 21	6 9 18	2 11 21
7 40	2 11 21	1 0 18	16 7 24	12 9 27	18 00	13 0 0	4 0 0	2 8 12	15 3 18	28 00	5 4 24	4 6 18	6 4 24	2 6 18
8 00	2 9 18	0 10 24	16 2 12	12 4 6	18 20	12 6 0	3 9 0	2 3 0	14 10 15	28 20	5 3 0	4 4 15	6 0 0	2 1 15
8 20	2 7 15	0 9 0	15 9 0	11 10 15	18 40	12 0 0	3 6 0	1 9 18	14 5 12	28 40	5 1 6	4 2 12	5 7 6	1 8 12
8 40	2 5 12	0 7 6	15 3 18	11 4 24	19 00	11 6 0	3 3 0	1 4 6	14 0 9	29 00	4 11 12	4 0 9	5 2 12	1 3 9
9 00	2 3 9	0 5 12	14 10 6	10 11 3	19 20	11 0 0	3 0 0	0 10 24	13 7 6	29 20	5 9 18	3 10 6	4 9 18	0 10 6
9 20	2 1 6	0 3 18	14 4 24	10 5 12	19 40	10 6 0	2 9 0	0 5 12	13 2 3	29 40	4 7 24	3 8 3	4 4 24	0 5 3
9 40	1 11 3	0 1 24	13 11 12	9 11 21	20 00	10 0 0	2 6 0	गु. 16 0 0	12 9 0	30 00	4 6 0	3 6 0	4 0 0	0 0 0
10 00	1 9 0	चं. 10 0 0	13 6 0	9 6 0										

प्रत्यन्तरदशा ज्ञात करने की सुगम रीति

गुरु की दशा में राहु के अन्तर-काल में सभी ग्रहों के प्रत्यन्तर-काल ज्ञात करने हैं। इसमें सर्व प्रथम ध्रुवांक ज्ञात करना है। गुरु के वर्षों को राहु के वर्ष से गुणाकर 40 का भाग देने पर 16 को 18 से गुणा करने पर 288 अंक हुए इसमें 40 का भाग देने पर 7 लब्धि दिन की संख्या हुई। शेष 8 को 60 से गुणा कर 40 का भाग देने पर 480 में 40 का भाग देने पर 12 लब्धि घटी के रूप में प्राप्त हुई। इस प्रकार 7 दिन 12 घटी ध्रुवांक प्राप्त हुआ। इस ध्रुवांक को शुक्र के 20 वर्ष से गुणा करने पर 140 दिन तथा 12 घटी को 20 से गुणा करने पर 240 घटी अर्थात् 4 दिन मिले इन्हें 140 में जोड़ने पर 144 दिन अर्थात् 4 मास 24 दिन गुरु की दशा में राहु के अन्तरकाल में शुक्र का प्रत्यन्तरकाल प्राप्त हुआ। इस शुक्र के मान को 2 से भाग देने पर 2 मास 12 दिन चन्द्र की प्रत्यन्तरदशा ज्ञात हुई। इस चन्द्र के मान में 2 का भाग देने पर 1 मास 6 दिन में ध्रुवांक के 7 दिन 12 घटी जोड़ने पर 1 मास 13 दिन 12 घटी सूर्य की प्रत्यन्तरदशा प्राप्त हुई। सूर्य और चन्द्र की प्रत्यन्तरदशा का योग 3 मास 25 दिन 12 घटी, गुरु की प्रत्यन्तरदशा इसमें ध्रुवांक के 7 दिन 12 घटी जोड़ने पर 4 मास 2 दिन 24 घटी, बुध की प्रत्यन्तरदशा इसमें ध्रुवांक जोड़ने पर 4 मास 16 दिन 48 घटी, शनि की प्रत्यन्तरदशा के मासादि प्राप्त हुए। सूर्य के प्रत्यन्तरकाल में ध्रुवांक जोड़ने पर 1 मास 20 दिन 24 घटी मंगल व केतु की प्रत्यन्तरदशा का मान प्राप्त हुआ। ध्रुवांक को प्रत्येक ग्रह के वर्ष से अलग-अलग गुणा करने पर उपर्युक्त मान प्राप्त हो जाते हैं। जैसे ध्रुवांक 7 दिन 12 घटी को 16 से गुणा करने पर 112 दिन 192 घटी अर्थात् 115 दिन 12 घटी 3 मास 25 दिन 12 घटी गुरु की दशा में राहु के अन्तरकाल में गुरु का प्रत्यन्तरदशाकाल प्राप्त हुआ, जो उपर्युक्त गुरु के प्रत्यन्तरकाल के बराबर है। इस प्रकार ध्रुवांक को प्रत्येक ग्रह के वर्ष से गुणा करने पर प्रत्येक ग्रह का प्रत्यन्तरकाल ज्ञात हो जायेगा, लेकिन इसमें बार-बार गुणा करने में अधिक समय लगता है। अत: उपर्युक्त सुगम प्रक्रिया अपनानी चाहिए।

गुरु में राहु में सभी ग्रहों की प्रत्यन्तरदशा का मान- गुरु 3 मास 15 दिन 12 घटी, **शनि** 4 मास 24 दिन, सूर्य 1 मा. 13 दिन 12 घ. चन्द्र 2 मा. 12 दिन, मंगल 1 मा. 20 दिन 24 घ., राहु 4 मा. 9 दिन 36 घ., उपर्युक्त गणना के आधार पर है। ग्रन्थ के साथ सभी ग्रहों में प्रत्यन्तरदशा की सारणी संलग्न है उसे देखकर प्रत्यन्तरदशा लगाने में अधिक सुगमता है; परन्तु सारणी के अंक कैसे उत्पन्न हुए इसका विवरण पूर्वोक्त प्रक्रिया में है।

अथ विंशोत्तरीसूर्यमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	5	24
च.	0	0	9	0
मं.	0	0	6	18
रा.	0	0	16	12
बृ.	0	0	14	24
श.	0	0	17	6
बु.	0	0	15	18
के.	0	0	6	18
शु.	0	0	18	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	0	15	0
मं.	0	0	10	30
रा.	0	0	27	0
बृ.	0	0	24	0
श.	0	0	28	30
बु.	0	0	25	30
के.	0	0	10	30
शु.	0	1	0	0
र.	0	0	9	0

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0
र.	0	0	6	18
चं.	0	0	10	30

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	18	36
बृ.	0	1	13	12
श.	0	1	21	18
बु.	0	1	15	54
के.	0	0	18	54
शु.	0	1	24	0
र.	0	0	16	12
च.	0	0	27	0
मं.	0	0	18	54

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	8	24
श.	0	1	15	36
बु.	0	1	10	48
के.	0	0	16	48
शु.	0	1	18	0
र.	0	0	14	24
च.	0	0	24	0
मं.	0	0	16	48
रा.	0	1	13	12

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	1	24	9
बु.	0	1	18	27
के.	0	0	19	57
शु.	0	1	27	0
र.	0	0	17	6
चं.	0	0	28	30
मं.	0	0	19	57
रा.	0	1	21	18
बृ.	0	1	15	36

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	1	13	21
के.	0	0	17	51
शु.	0	1	21	0
र.	0	0	15	18
च.	0	0	25	30
मं.	0	0	17	51
रा.	0	1	15	54
बृ.	0	1	10	48
श.	0	1	18	27

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0
र.	0	0	6	18
च.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	0	0
र.	0	0	18	0
चं.	0	1	0	0
मं.	0	0	21	0
रा.	0	1	24	0
बृ.	0	1	18	0
श.	0	1	27	0
बु.	0	1	21	0
के.	0	0	21	0

अथ विंशोत्तरीचन्द्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.	अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.	अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	0	25	0	मं.	0	0	12	15	रा.	0	2	21	0
मं.	0	0	17	30	रा.	0	1	1	30	बृ.	0	2	12	0
रा.	0	1	15	0	बृ.	0	0	28	0	श.	0	2	25	30
बृ.	0	1	10	0	श.	0	1	3	15	बु.	0	2	16	30
श.	0	1	17	30	बु.	0	0	29	45	के.	0	1	1	30
बु.	0	1	12	30	के.	0	0	12	15	शु.	0	3	0	0
के.	0	0	17	30	शु.	0	1	5	0	र.	0	0	27	0
शु.	0	1	20	0	र.	0	0	10	30	च.	0	1	15	0
र.	0	0	15	0	चं.	0	0	17	30	मं.	0	1	1	30

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.	अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	2	4	0	श.	0	3	0	15	बु.	0	2	12	15
श.	0	2	16	0	बु.	0	2	20	45	के.	0	0	29	45
बु.	0	2	8	0	के.	0	1	3	15	शु.	0	2	25	0
के.	0	0	28	0	शु.	0	3	5	0	र.	0	0	25	30
शु.	0	2	20	0	र.	0	0	28	30	च.	0	1	12	30
र.	0	0	24	0	चं.	0	1	17	30	मं.	0	0	29	45
च.	0	1	10	0	मं.	0	1	3	15	रा.	0	2	16	30
मं.	0	0	28	0	रा.	0	2	25	30	बृ.	0	2	8	0
रा.	0	2	12	0	बृ.	0	2	16	0	श.	0	2	20	45

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.	अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	12	15	शु.	0	3	10	0	र.	0	0	9	0
शु.	0	1	5	0	र.	0	1	0	0	च.	0	0	15	0
र.	0	0	10	30	चं.	0	1	20	0	मं.	0	0	10	30
च.	0	0	17	30	मं.	0	1	5	0	रा.	0	0	27	0
मं.	0	0	12	15	रा.	0	3	0	0	बृ.	0	0	24	0
रा.	0	1	1	30	बृ.	0	2	20	0	श.	0	0	28	30
बृ.	0	0	28	0	श.	0	3	5	0	बु.	0	0	25	30
श.	0	1	3	15	बु.	0	2	25	0	के.	0	0	10	30
बु.	0	0	29	45	के.	0	1	5	0	शु.	0	1	0	0

अथ विंशोत्तरीभौममहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	8	35
रा.	0	0	22	3
बृ.	0	0	19	36
श.	0	0	23	16
बु.	0	0	20	50
के.	0	0	8	34
शु.	0	0	24	30
र.	0	0	7	21
चं.	0	0	12	15

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
च.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
च.	0	0	28	0
मं.	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	2	3	10	30
बु.	1	26	31	30
के.	0	23	16	30
शु.	2	6	30	0
र.	0	19	57	0
चं.	1	3	15	0
मं.	0	23	16	30
रा.	1	29	51	0
बृ.	1	23	12	0

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	1	20	34	30
के.	0	20	49	30
शु.	1	29	30	0
र.	0	17	51	0
च.	0	29	45	0
मं.	0	20	49	30
रा.	1	23	33	0
बृ.	1	17	36	0
श.	1	26	31	30

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	8	34	30
शु.	0	24	30	0
र.	0	7	21	0
च.	0	12	15	0
मं.	0	8	34	30
रा.	0	22	3	0
बृ.	0	19	36	0
श.	0	23	16	30
बु.	0	20	49	30

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	6	18
च.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	0	17	30
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30

अथ विंशोत्तरीराहुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	25	48
बृ.	0	4	9	36
श.	0	5	3	54
बु.	0	4	17	42
के.	0	1	26	42
शु.	0	5	12	0
र.	0	1	18	36
च.	0	2	21	0
मं.	0	1	26	42

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	25	12
श.	0	4	16	48
बु.	0	4	2	24
के.	0	1	20	24
शु.	0	4	24	0
र.	0	1	13	12
च.	0	2	12	0
मं.	0	1	20	24
रा.	0	4	9	36

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	5	12	27
बु.	0	4	25	21
के.	0	1	29	51
शु.	0	5	21	0
र.	0	1	21	18
चं.	0	2	25	30
मं.	0	1	29	51
रा.	0	5	3	54
बृ.	0	4	16	48

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	4	10	3
के.	0	1	23	33
शु.	0	5	3	0
र.	0	1	15	54
च.	0	2	16	30
मं.	0	1	23	33
रा.	0	4	17	42
बृ.	0	4	2	24
श.	0	4	25	21

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
च.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	0	0
र.	0	1	24	0
चं.	0	3	0	0
मं.	0	2	3	0
रा.	0	5	12	0
बृ.	0	4	24	0
श.	0	5	21	0
बु.	0	5	3	0
के.	0	2	3	0

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	16	12
च.	0	0	27	0
मं.	0	0	18	54
रा.	0	1	18	36
बृ.	0	1	13	12
श.	0	1	21	18
बु.	0	1	15	54
के.	0	0	18	54
शु.	0	1	24	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	1	15	0
मं.	0	1	1	30
रा.	0	2	21	0
बृ.	0	2	12	0
श.	0	2	25	30
बु.	0	2	16	30
के.	0	1	1	30
शु.	0	3	0	0
र.	0	0	27	0

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	22	3
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
चं.	0	1	1	30

अथ विंशोत्तरीगुरुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	12	24	श.	0	4	24	24	बु.	0	3	25	36
श.	0	4	1	36	बु.	0	4	9	12	के.	0	1	17	36
बु.	0	3	18	48	के.	0	1	23	12	शु.	0	4	16	0
के.	0	1	14	48	शु.	0	5	2	0	र.	0	1	10	48
शु.	0	4	8	0	र.	0	1	15	36	च.	0	2	8	0
र.	0	1	8	24	चं.	0	2	16	0	मं.	0	1	17	36
च.	0	2	4	0	मं.	0	1	23	12	रा.	0	4	2	24
मं.	0	1	14	48	रा.	0	4	16	48	बृ.	0	3	18	48
रा.	0	3	25	12	बृ.	0	4	1	36	श.	0	4	9	12

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	19	36	शु.	0	5	10	0	र.	0	0	14	24
शु.	0	1	26	0	र.	0	1	18	0	च.	0	0	24	0
र.	0	0	16	48	चं.	0	2	20	0	मं.	0	0	16	48
च.	0	0	28	0	मं.	0	1	26	0	रा.	0	1	13	12
मं.	0	0	19	36	रा.	0	4	24	0	बृ.	0	1	8	14
रा.	0	1	20	24	बृ.	0	4	8	0	श.	0	1	15	36
बृ.	0	1	14	48	श.	0	5	2	0	बु.	0	1	10	48
श.	0	1	23	12	बु.	0	4	16	0	के.	0	0	16	48
बु.	0	1	17	36	के.	0	1	26	0	शु.	0	1	18	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	1	10	0	मं.	0	0	19	36	रा.	0	4	9	36
मं.	0	0	28	0	रा.	0	1	20	24	बृ.	0	3	25	12
रा.	0	2	12	0	बृ.	0	1	14	48	श.	0	4	16	48
बृ.	0	2	4	0	श.	0	1	23	12	बु.	0	4	2	24
श.	0	2	16	0	बु.	0	1	17	36	के.	0	1	20	24
बु.	0	2	8	0	के.	0	0	19	36	शु.	0	4	24	0
के.	0	0	28	0	शु.	0	1	26	0	र.	0	1	13	12
शु.	0	2	20	0	र.	0	0	16	48	च.	0	2	12	0
र.	0	0	24	0	चं.	0	0	28	0	मं.	0	1	20	24

अथ विंशोत्तरीशनिमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	5	21	28	30
बु.	0	5	3	25	30
के.	0	2	3	10	30
शु.	0	6	0	30	0
र.	0	1	14	9	0
चं.	0	3	0	15	0
मं.	0	2	3	10	30
रा.	0	5	12	27	0
बृ.	0	4	24	24	0

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	4	17	16	30
के.	0	1	26	31	30
शु.	0	5	11	30	0
र.	0	1	18	27	0
च.	0	2	20	45	0
मं.	0	1	26	31	30
रा.	0	4	25	31	0
बृ.	0	4	9	12	0
श.	0	5	3	25	30

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
च.	0	1	3	15	0
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0
श.	0	2	3	10	30
बु.	0	1	26	31	30

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	10	0
र.	0	1	27	0
चं.	0	3	5	0
मं.	0	2	6	30
रा.	0	5	21	0
बृ.	0	5	2	0
श.	0	6	0	30
बु.	0	5	11	30
के.	0	2	6	30

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	17	6
च.	0	0	28	30
मं.	0	0	19	57
रा.	0	1	21	18
बृ.	0	1	15	36
श.	0	1	24	9
बु.	0	1	18	27
के.	0	0	19	57
शु.	0	1	27	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	1	17	30
मं.	0	1	3	15
रा.	0	2	25	30
बृ.	0	2	16	0
श.	0	3	0	15
बु.	0	2	20	45
के.	0	1	3	15
शु.	0	3	5	0
र.	0	0	28	30

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0
श.	0	2	3	10	0
बु.	0	1	26	31	30
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	5	3	54
बृ.	0	4	16	48
श.	0	5	12	27
बु.	0	4	25	21
के.	0	1	29	51
शु.	0	5	21	0
र.	0	1	21	18
च.	0	2	25	30
मं.	0	1	29	51

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	4	1	36
श.	0	4	24	24
बु.	0	4	9	12
के.	0	1	23	12
शु.	0	5	2	0
र.	0	1	15	36
च.	0	2	16	0
मं.	0	1	23	12
रा.	0	4	16	48

अथ विंशोत्तरीबुधमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	4	2	49	30
के.	0	1	20	34	30
शु.	0	4	24	30	0
र.	0	1	13	21	0
च.	0	2	12	15	0
मं.	0	1	20	34	30
रा.	0	4	10	3	0
बृ.	0	3	25	36	0
श.	0	4	17	16	30

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
च.	0	0	29	45	0
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30
बु.	0	1	20	34	30

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	5	20	0
र.	0	1	21	0
चं.	0	2	25	0
मं.	0	1	29	30
रा.	0	5	3	0
बृ.	0	4	16	0
श.	0	5	11	30
बु.	0	4	24	30
के.	0	1	29	30

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	15	18
च.	0	0	25	30
मं.	0	0	17	51
रा.	0	1	15	54
बृ.	0	1	10	48
श.	0	1	18	27
बु.	0	1	13	21
के.	0	0	17	51
शु.	0	1	21	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	1	12	30
मं.	0	0	29	45
रा.	0	2	16	30
बृ.	0	2	8	0
श.	0	2	20	45
बु.	0	2	12	15
के.	0	0	29	45
शु.	0	2	25	0
र.	0	0	25	30

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30
बु.	0	1	20	34	30
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	17	42
बृ.	0	4	2	24
श.	0	4	25	21
बु.	0	4	10	3
के.	0	1	23	33
शु.	0	5	3	0
र.	0	1	15	54
च.	0	2	16	30
मं.	0	1	23	33

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	18	48
श.	0	4	9	12
बु.	0	3	25	36
के.	0	1	17	36
शु.	0	4	16	0
र.	0	1	10	48
च.	0	2	8	0
मं.	0	1	17	36
रा.	0	4	2	24

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	5	3	25	30
बु.	0	4	17	16	30
के.	0	1	26	31	30
शु.	0	5	11	30	0
र.	0	1	18	27	0
चं.	0	2	20	45	0
मं.	0	1	26	31	30
रा.	0	4	25	21	0
बृ.	0	4	9	12	0

अथ विंशोत्तरीकेतुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	8	34	30
शु.	0	0	24	30	0
र.	0	0	7	21	0
च.	0	0	12	15	0
मं.	0	0	8	34	30
रा.	0	0	22	3	0
बृ.	0	0	19	36	0
श.	0	0	23	16	30
बु.	0	0	20	49	30

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30

अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	6	18
च.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0

अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
च.	0	0	17	30
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	8	34	30
रा.	0	0	22	3	0
बृ.	0	0	19	36	0
श.	0	0	23	16	30
बु.	0	0	20	49	30
के.	0	0	8	34	30
शु.	0	0	24	30	0
र.	0	0	7	21	0
चं.	0	0	12	15	0

अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
च.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3

अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
च.	0	0	28	0
मं.	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	2	3	10	30
बु.	0	1	26	31	30
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0

अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	1	20	34	30
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
च.	0	0	29	45	0
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30

अथ विंशोत्तरीशुक्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	20	0	र.	0	0	18	0	च.	0	1	20	0
र.	0	2	0	0	च.	0	1	0	0	मं.	0	1	5	0
चं.	0	3	10	0	मं.	0	0	21	0	रा.	0	3	0	0
मं.	0	2	10	0	रा.	0	1	24	0	बृ.	0	2	20	0
रा.	0	6	0	0	बृ.	0	1	18	0	श.	0	3	5	0
बृ.	0	5	10	0	श.	0	1	27	0	बु.	0	2	25	0
श.	0	6	10	0	बु.	0	1	21	0	के.	0	1	5	0
बु.	0	5	20	0	के.	0	0	21	0	शु.	0	3	10	0
के.	0	2	10	0	शु.	0	2	0	0	र.	0	1	0	0

अथ भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	24	30	रा.	0	5	12	0	बृ.	0	4	8	0
रा.	0	2	3	0	बृ.	0	4	24	0	श.	0	5	2	0
बृ.	0	1	26	0	श.	0	5	21	0	बु.	0	4	16	0
श.	0	2	6	30	बु.	0	5	3	0	के.	0	1	26	0
बु.	0	1	29	30	के.	0	2	3	0	शु.	0	5	10	0
के.	0	0	24	30	शु.	0	6	0	0	र.	0	1	18	0
शु.	0	2	10	0	र.	0	1	24	0	च.	0	2	20	0
र.	0	0	21	0	च.	0	3	0	0	मं.	0	1	26	0
चं.	0	1	5	0	मं.	0	2	3	0	रा.	0	4	24	0

अथ शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि					अथ केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	6	0	30	बु.	0	4	24	30	के.	0	0	24	30
बु.	0	5	11	30	के.	0	1	29	30	शु.	0	2	10	0
के.	0	2	6	30	शु.	0	5	20	0	र.	0	0	21	0
शु.	0	6	10	0	र.	0	1	21	0	च.	0	1	5	0
र.	0	1	27	0	च.	0	2	25	0	मं.	0	0	24	30
चं.	0	3	5	0	मं.	0	1	29	30	रा.	0	2	3	0
मं.	0	2	6	30	रा.	0	5	3	0	बृ.	0	1	26	0
रा.	0	5	21	0	बृ.	0	4	16	0	श.	0	2	6	30
बृ.	0	5	2	0	श.	0	5	11	30	बु.	0	1	29	30

योगिनी दशा साधन

जन्म नक्षत्र की संख्या में 3 जोड़कर 8 का भाग देने पर शेष 1,2,3,4,5,6,7,8 में क्रमश: मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका उल्का सिद्धा संकटा 1 वर्ष 2 वर्ष 3 वर्ष 4 वर्ष 5 वर्ष 6 वर्ष 7 वर्ष 8 वर्ष की दशा होती है यहाँ भाजक संख्या 8 है अत: शून्य शेष को 8 शेष मानना चाहिए। भोग्य दशा निकालने को विंशोत्तरी के भोग्य वर्ष मास दिन में ही अनुपात करने से योगिनी की भोग्य दशा प्राप्त हो जाती है।

कल्पना कीजिये कि शुक्र की विंशोत्तरी दशा में भोग्य वर्षादि को योगिनी दशा के वर्षों के गुणाकर 20 का भाग देने पर वर्ष मास व दिन अभीष्ट योगिनी दशा के प्राप्त हो जायेंगे। शुक्र की विंशोत्तरी दशा में भोग्य वर्ष 5 हैं और योगिनी दशा भद्रिका की भोग्य दशा प्राप्त करनी है तो भद्रिका के वर्षमान 5 से 5 भोग्य वर्ष को गुणा करने पर 25 अंक मिले इसमें 20 का भाग देने पर लब्धि 1 वर्ष और शेष 5 रहे इन्हें 12 से गुणा कर 20 का भाग देने पर (5x12) भागीत 20 3 मास शेष 00 बचा अत: भद्रिका के भोग्य वर्षादि 1 वर्ष 3 मास होंगे।

विंशोत्तरी दशा की गणना कृतिका नक्षत्र से की जाती है। पीछे उदाहरण में स्वाति का द्वितीय चरण था। कृत्तिका से स्वाती तक गणना करने पर 13 संख्या प्राप्त होने से 1 आवृत्ति में 9 संख्या पूरी हो जाती है अत: 9 घटाने पर 4 शेष रहने से राहु की दशा में जन्म है यह सिद्ध होता है। इस प्रकार सूर्य 6 चन्द्र 10 मंगल 7 राहु 18 गुरु 16 शनि 19 बुध 17 केतु 7 शुक्र 20 वर्ष की दशा होगी। यहाँ 4 अंक शेष था अत: राहु की दशा का जन्म हुआ। संलग्न सारणी से यह स्पष्ट हो जाता है।

जातक का जन्म नक्षत्र मृगशीर्ष है। यह पंचम है। इसमें 3 मिलाया तब 8 हुआ। इसमें 8 का भाग देने से यही शेष माना जायेगा। अत: जन्म संकटा में हुआ। इसका भुक्त भोग्य भी विंशोत्तरी दशा की तरह लाना चाहिए और लिखने आदि का क्रम विंशोत्तरी की तरह रहेगा। योगिनी की पूरी वर्ष संख्या 36 ही है। अत: इस दशा की पुनरावृत्ति करनी चाहिए। जिससे जीवन पर्यन्त की दशा का विचार हो सके।

योगिनीदशान्तर्दशाऽन्तर्ज्ञानार्थ चक्र

मङ्गला 1 चं.	पिङ्गला 2 सू.	धान्या 3 गु.	भ्रामरी 4 मं.	भद्रिका 5 बु.	उल्का 6 श.	सिद्धा 7 शु.	संकटा 8 के.
आर्द्रा. चित्रा श्रवण	पुनर्वसु. स्वाती धनिष्ठा	पुष्य विशाखा शतभिषा	अश्विनी, आश्लेषा अनुराधा, पूर्वाभाद्रपदा	भरणी, मघा, ज्येष्ठा उत्तराभाद्रपदा	कृतिका, पूर्वा फाल्गुनी मूल, रेवती	रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा	मृगशीर्ष, हस्त उत्तराषाढ़ा
मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.
मं. 0 10	पिं. 1 10	धा. 3 0	भ्रा. 5 10	भ. 8 10	उ. 12 0	सि. 16 10	सं. 21 10
पिं. 0 20	धा. 2 0	भ्रा. 4 0	भ. 6 20	भ. 10 0	उ. 14 0	सि. 18 20	मं. 2 20
धा. 1 0	भ्रा. 2 20	म,5 0	उ. 8 0	सि. 11 20	सं. 16 0	मं. 2 10	पि. 5 10
भ्रा. 1 10	भ.3 10	उ.6 0	सि. 9 10	सं. 13 10	मं.2 0	पिं.4 20	धा. 8 0
म. 1 20	उ. 4 0	सि. 7 0	सं. 10 20	मं.1 20	पि. 4 0	धा. 7 0	भ्रा. 10 20
उ. 2 0	सि. 4 20	सं. 8 0	मं.1 10	पिं. 3 10	धा. 6 0	भ्रा. 9 10	भ. 13 10
सि. 2 10	सं.5 10	मं. 1 0	पिं. 2 20	धा. 5 0	भ्रा. 8 0	भ. 11 20	उ. 16 0
सं. 2 20	मं.0 20	पि. 0 20	धा. 4 0	भ्रा. 6 20	भ. 10 0	उ. 14 0	सि. 18 20

पक्ष-विपक्ष और निर्दलीय के आधार पर ग्रहों एवं राशियों के फलाफल

संलग्न तालिका लघुपाराशरी ग्रन्थ की प्रक्रिया पर निर्मित की गई है। लघुपाराशरी में विंशोत्तरी दशा के आधार पर फल का विवेचन किया है। "दशाविंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता" यह वाक्य लघुपाराशरी का है तथा "सर्वे त्रिकोणनेतारः ग्राहाः शुभफलप्रदाः, पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः"। यह श्लोक भी उसी ग्रन्थ का मूल स्वरूप है। इसका भाव यह है कि सभी ग्रह अर्थात् शुभ और अशुभ ग्रह दोनों ही यदि त्रिकोण के स्वामी हो तो शुभफल करते हैं तथा तृतीय, षष्ठ और एकादश भाव के स्वामी चाहे शुभ ग्रह हों अथवा अशुभ ग्रह हों वे सब अशुभ फलकारक होते हैं। यदि जातक मेष लग्न में उत्पन्न हुआ है तो त्रिकोण में 1, 5, 9 अंक होते हैं यदि वृषलग्न का जन्म है तो 2,6,10 अंक त्रिकोण के हैं एवं आगे भी मिथुन लग्न से मीन लग्न तक के त्रिकोण के अंक तालिका में लिखे हैं। इन त्रिकोण के अंकों के जो-जो ग्रह स्वामी हैं वे सब विंशोत्तरी दशाक्रमानुसार दशा अन्तरदशा एवं प्रत्यन्तरदशा काल में शुभफल ही करेंगे। मेष लग्न में उत्पन्न जातक को 1,5,9 अंकों के स्वामी क्रमशः मंगल सूर्य और गुरु हैं। ये तीनों ग्रहों की दशा अन्तरदशा एवं प्रत्यन्तरदशा जब कभी आयेंगी तब उस काल में अवश्य शुभ फल होगा। वृष लग्न में 2,6,10 अंकों के स्वामी क्रमशः शुक्र, बुध व शनि हैं विंशोत्तरी दशानुसार जिस समय इन तीनों ग्रहों की दशा अन्तरदशा आयेंगी वह समय सर्वदा शुभफल कारक ही रहेगा एवं आगे मिथुन लग्न से मीन लग्न तक इसी प्रकार समझना चाहिए।

इन त्रिकोणांशों की दशा तालिका में पक्षधर के रूप में प्रदर्शित की है जिसका जिह्न (√) यह अंकित है। यह तालिका के प्रथम कोष्ठक का परिचय है एवं द्वितीय कोष्ठक में मेष लग्नोत्पन्न जातक के 3,6,11 अंक हैं इनके स्वामी क्रमशः बुध, बुध व शनि हैं जब बुध व शनि की दशा अन्तरदशादि विंशोत्तरी दशानुसार प्राप्त होंगी तब अशुभ फल की प्राप्ति होगी। इस प्रकार द्वितीय कोष्ठक के अंकों के स्वामी (मिथुनादि मीन पर्यन्त) की दशा अन्तरदशा अशुभफल कारक रहेगी। तृतीय कोष्ठक निर्दलीय अंकों का है। इनके स्वामी जो ग्रह हैं उनका सम्बन्ध प्रथम कोष्ठक के अंकों के स्वामियों से हो तो शुभ फलकारक होते हैं। यदि द्वितीय कोष्ठक के अंकों स्वामियों से सम्बन्ध हो जाय तो अत्यन्त अशुभ फल करते हैं। तालिका में इस विषय के ही संकेत दिये गये हैं। अष्टमेश की दशा अन्तरदशा सर्वदा अशुभ होती है। अतः अष्टमेश के अंक भी द्वितीय कोष्ठक में दिये गये हैं। इस तालिका के आधार पर प्रत्येक विषय के विद्वान् शुभाशुभफल कथन में समर्थ होंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। गोचर में इन ग्रहों का बलवान् होना अनिवार्य है।

अं.	राशि लग्न	पक्ष √ शुभफल			विपक्ष X अशुभ फल				निर्दलीय ⊗				
		मं.	सू.	गु.	बु.	बु.	मं.	श.					
1	मेष	1	5	9	3	6	8	11	2	4	7	10	12
2	वृष	2	6	10	4	7	9	12	3	5	8	11	1
3	मिथुन	3	7	11	5	8	10	1	4	6	9	12	2
4	कर्क	4	8	12	6	9	11	2	5	7	10	1	3
5	सिंह	5	9	1	7	10	12	3	6	8	11	2	4
6	कन्या	6	10	2	8	11	1	4	7	9	12	3	5
7	तुला	7	11	3	9	12	2	5	8	10	1	4	6
8	वृश्चिक	8	12	4	10	1	3	6	9	11	2	5	7
9	धनु	9	1	5	11	2	4	7	10	12	3	6	8
10	मकर	10	2	6	12	3	5	8	11	1	4	7	9
11	कुम्भ	11	3	7	1	4	6	9	12	2	5	8	10
12	मीन	12	4	8	2	5	7	10	1	3	6	9	11

मं.	शु.	बु.	गु.	श.	च.	सू.
1, 8	2, 7	3, 6	9, 12	10, 11	4	5

√ + ⊗ = अति शुभ

X + ⊗ = अति अशुभ

√ + X = अल्प शुभ

+ = सम्बन्ध, 1 एकत्र, 2 अन्योन्य राशिगत, 3 दृष्टि

तालिका के लिखे गये अंको के स्वामियों की दशा, अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों में तीनों में दो के एकमत हो जाने पर तदनुसार फल होता है

गोचर में दशाधीश, अन्तर्दशाधीश और प्रत्यन्तर्दशाधीश बली, निर्बली व षडाष्टक स्थिति का अवश्य ध्यान रहे। गोचर का विशेष महत्त्व होता है। प्रत्येक अपने स्थान से सप्तम स्थान को पूर्णदृष्टि से देखता है। शनि 7,3,10। गुरु 7,9,5। मंगल 7,4,8 विशेष दृष्टि से देखते हैं राहु 9,5,7।

अध्याय-5

द्वादश भावों से विचारणीय विषय

लग्नादि भावों से किन-किन बातों का विचार होता है?

लग्न - शरीर सम्बन्धी सब विचार होता है। शारीरिक पुष्टता, दुर्बलता, शरीर का रूप, रंग, शरीर का छोटा बड़ा होना, स्वभाव (शान्ति प्रिय, क्रोधी), अहंकार, अज्ञान, निन्दा, आयु प्रमाण, सुख-दुःख, आत्मा, आरोग्यता, बालयौवनादि अवस्था, स्थान प्रवास, सम्पत्ति आदि का विचार प्रथम भाव से किया जाता है।

द्वितीय भाव - धन-धान्य का विचार, वस्तुओं का क्रय-विक्रय, सुवर्ण, चाँदी धातु आदि मोती, मूँगा, माणिक आदि रत्न विचार, स्वोपार्जित व पितृ सम्बन्धी धन का विचार, भोजन, पात्र, वस्त्र, मुख, जीभ, चेहरा, दाहिनी आँख, वाणी, विद्या, शिक्षा, परिवार, कुटुम्ब, मित्र, शत्रु, मामा, मौसी, नौकर-चाकर और मृत्यु का विचार होता है। शरीर के अंगों में मुख, गला, कंठ, गर्दन और नेत्र का विचार होता है।

तृतीय भाव - छोटे भाई-बहिन, नौकर, चाचा, ताऊ, सगे-संबन्धी, पराक्रम, साहस, दुष्ट बुद्धि, आजीविका, व्यापार-उद्यम, मार्ग चलना, लघुवाहन से यात्रा का विचार, भुजा, हाथ, कण्ठ, दक्षिण कर्ण, स्वर, वस्त्र आदि का विचार सहज भाव से किया जाता है।

चतुर्थ भाव - इष्ट मित्र, जाति, वंश, माता के सुख-दुःख, स्वभाव व मृत्यु का विचार, ससुर, स्थायी सम्पत्ति, भवन, वाहन, चतुष्पद, तालाब, कूप, निधि (भूमिगत द्रव्य), कृषि, बाग-बगीचा, औषधि, रसायन-शास्त्र, प्रजा-जनता, भोज्य पदार्थ, हृदय, कपट, विद्या, स्वयं का सुख-दुःख, हस्त-कौशल, वस्त्र-सुगन्ध, पुस्तकादि का उद्यम, भागीदारी, कन्धा, छाती, पेट, सीना आदि का विचार चतुर्थ भाव से किया जाता है।

पञ्चम भाव - सन्तान, गर्भ-स्थिति, उदर, विद्या, बुद्धि, यान्त्रिक-ज्ञान, स्मरण-शक्ति, नीति, प्रबन्ध, सलाह (मन्त्रणा), गोपनीयता, स्वभाव, चातुर्य, पठन, वाणी, देवभक्ति, मन्त्र-यन्त्र की सिद्धि, लाटरी-सट्टे का विचार, हृदय और पीठ आदि का विचार पञ्चम भाव से किया जाता है।

षष्ठम रिपु भाव - शत्रु, रोग, अरिष्ट, निराशा, सुख-दुःख, विघ्न, द्वेष, मानसिक चिन्ता, व्यसन, व्रण, विस्फोटक, चोट, भूमि, चोर-भय, सेवक, चौपाया, षट्रस भोजन, ऋण, सौतेली माँ, नाभी, उदर, अँतड़ी, अशुभ कर्म आदि का विचार षष्ठ भाव से किया जाता है।

सप्तम भाव - स्त्री, स्त्री का पति, विवाह, स्त्री के गुण-अवगुण का विचार, काम-क्रीड़ा, शृंगार, व्यभिचार, स्त्री-सौभाग्य, पितामह, भतीजा, वाद-विवाद, अदालती झगड़े, यात्रा, व्यापार, चोरी की वस्तु, नष्ट धन की प्राप्ति, संगीत, पुष्पगन्ध, दूध, दही, गौ, नदी, गुदा, गुह्येन्द्रिय, क्षार, मूत्र आदि का विचार सप्तम भाव से किया जाता है।

अष्टम भाव - आयु, व्याधि, मृत्यु-रोग, मनोव्यथा, मृत्यु-स्थान, पूर्वजन्म व अग्रिम जन्म का विचार, संकट, पितृ-ऋण, पूर्वसञ्चित द्रव्य, दहेज, आकस्मिक लाभ, शत्रु-भय, दुर्ग, गुप्तमार्ग, नौका, नदी का पार करना, बन्धन, दण्ड, अपमान, जय-पराजय, दुःख, व्यसन, पद-हानि, अपघात, बड़ी बहन का पुत्र, जननेन्द्रिय, गुदा रोग आदि का विचार मृत्यु स्थान से होता है।

नवम भाव - प्रारब्ध, भाग्य, ऐश्वर्य, धर्म में श्रद्धा, मठ, मन्दिर, वापी, कूप, तीर्थयात्रा, वैभव, पुण्यकार्य, पुराण, देवभक्ति, दान, दया, तप, तत्त्वज्ञान, चित्त शुद्धि, गुरु-भक्ति, दीक्षा, योग-साधन, सहानुभूति, नीति, नम्रता, संतों का आदर, प्रवास (लम्बी यात्रा), नेतृत्व, स्वप्न, कानून, न्याय, परिवार, वामपद और जंघा आदि का विचार धर्म भाव से किया जाता है।

दशम भाव - उद्यम उपजीविका, कर्म, धंधा, नौकरी, व्यापार, राज्य-सम्बन्धी कार्य, पदाधिकार, प्रशासन, राजनैतिक-शक्ति, मान, कीर्ति, उन्नति, दास-दासी, यज्ञ, शुभकर्म, आगम, प्रव्रज्या, वैद्य, शिल्प-चातुर्य, पितृपक्ष का विचार, पैतृक ऋण, विदेश गमन, वृष्टि ज्ञान, आकाशीय-वृत्तान्त, रहने का स्थान, पीठ और जानु का विचार दशम भाव से होता है।

एकादश लाभ भाव - द्रव्य प्राप्ति का प्रकार, सभी प्रकार के लाभ, वाहन, सुवर्ण, वस्त्र, आभूषण आदि का लाभ, सेना, बायाँ कान, आशा, इच्छापूर्त्ति, कन्या सन्तान, पुत्र नाश, ज्येष्ठ भाई-बहिन, मित्र, परिवार, दोनों जाँघ, बायाँ हाथ, दाहिना पैर, पिंडली और टखना आदि का विचार एकादश भाव से होता है।

द्वादश भाव - सब प्रकार के खर्च-सम्बन्धी कार्य, शुभाशुभ खर्च, हानि, अंग-भंग, दरिद्रता, पाखण्ड, हठ-सम्बन्धी कार्य, अधिकार क्षय, वाहन-भंग, निद्रा-भंग, दंड, राजदण्ड, बन्धन, कारागार, मोक्ष, स्वर्ग-नरक, त्याग, भोग, कृषि-कर्म, गुप्त-विद्या, परदेश-गमन, विदेश-व्यापार, पैतृक सम्पत्ति का झगड़ा, वामनेत्र, वामकर्ण, दोनों पैरों का विचार द्वादश भाव से किया जाता है।

प्रथम भाव फल विचार - जन्मकुण्डली में जन्म लग्न की प्रधानता होगी। जन्मलग्न से शरीर के सभी गुण धर्म स्वभाव का ज्ञान होता है।

जन्मलग्न में प्रत्येक ग्रह का प्रभाव - लग्न में सूर्य - ईमानदार, क्रोधी, नेत्र-रोगी, अल्प-केश, बाल्यावस्था में रुग्ण, कंठ या गुदा में तिलयुक्त, प्रवासी, शूरवीर, कुशाग्र बुद्धि, अस्थिर सम्पत्ति, धनी, यशस्वी आदि योगकारक सूर्य होता है।

लग्न में चन्द्र - कोमलाङ्गी, सुन्दर, चंचल स्वभाव, शीतरोग से ग्रसित, विद्याव्यसनी, उदर रोगी, मानसिक चिन्ताग्रस्त, व्यसनी, व्यभिचारी, धनी-मानी, मस्तक पीड़ा, गुणवान्।

लग्न में भौम - साहसी, क्रोधी, स्वार्थ-साधना में तत्पर, धोखेबाज, मस्तक पर चोट का निशान, उग्र, यात्रा प्रेमी, नेत्र रोगी, रक्त-विकृत्ति, अल्प सन्तति।

लग्न में बुध - सुन्दर शरीर, ठिंगना कद, दीर्घायु, आस्तिक, विनोदी, वैद्य, ज्यौतिष प्रेमी, सभा चतुर, कार्य पटु, गणितज्ञ, राजमान्य, मधुरभाषी, प्रतिष्ठित, सदाचारी, राज्य से सम्मानित।

लग्न में गुरु - ज्ञानी-ध्यानी, सुखी, चिरायु, भोगी, कर्त्तव्यपरायण, विद्वान्, कृतज्ञ, स्पष्टवक्ता, धनी, व्याकरण व ज्योतिष का प्रेमी, साहसी।

लग्न में शुक्र - सुन्दर कुटुम्ब प्रेमी, स्त्रियों में आसक्त, सौन्दर्य प्रेमी, प्रवासी, मधुरभाषी, गणितज्ञ, धर्मात्मा, दीर्घायु, विद्वान्, प्रतापी।

लग्न में शनि - चालाक, कुटिल स्वभाव, चर्म-रोगी, वात-रोगी, आलसी, स्वार्थी, भृत्य कार्यकर्त्ता, बाल्यावस्था में रोगी, एक जगह सम्बन्ध छूट कर दूसरी जगह विवाह सम्बन्ध।

लग्न में राहु - नीच कर्मरत, मनस्वी, अल्प सन्तति, साहसी, बात का धनी, मस्तक पीड़ा, वैद्य, डाक्टर, मेष, कर्क, सिंह राशिस्थ में धन लाभ, सेवक।

द्वितीय भावस्थ ग्रह फल - द्वितीय में सूर्य - व्यापार में उन्नति, जीवन का उत्तरार्द्ध विशेष सुखमय, युवावस्था में रोगी।

धनभाव में चन्द्र - लेखक, सफल पत्रकार, कुटुम्बी, सुखी-सम्पन्न, पुस्तक-विक्रेता, प्रकाशक, अत्यन्त गोपनीयता, स्वतन्त्र धन्धे से लाभ।

धनभाव में मंगल - अर्थ कष्ट, पैसा टिके नहीं, कर्ज लेकर धन्धा करने से लाभ, वाक्पटुता से कार्यसिद्धि, झगड़ालू।

द्वितीय में बुध – वक्ता बड़े-बड़े उद्योगकर्त्ता, धनी, सफल व्यापारी, सुनियोजित ढ़ंग से द्रव्य खर्च करना।

धनभाव में गुरु – धर्मोपदेशक, कवि, लेखक, सफल वैज्ञानिक, मित्र अधिक, ससुराल से द्रव्य प्राप्ति, अथवा शिक्षित पत्नी द्वारा द्रव्य लाभ। गुरु ग्रह से सम्बन्धित पदार्थों के धन्धे में विशेष लाभ।

धनभाव में शुक्र – विस्तृत कुटुम्ब, स्वादिष्ट भोजन प्रिय, दक्ष, स्त्री की कुण्डली में धन भाव में शुक्र सम्पतिवान् धनी पति की प्राप्ति करवाता है। राजनीतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त, स्वस्थ, बड़ा उद्योगपति।

धनभाव में शनि – स्वराशि से इतर राशि का शनि अर्थ कष्टप्रद, दु:खी अर्थ प्राप्ति हेतु अथकपरिश्रम, शत्रुक्षेत्री महा-अशुभ, कुटुम्ब सुखरहित स्वगृही व उच्चस्थ शनि, युवावस्था व वृद्धावस्था में खूब द्रव्य सञ्चय करवाता है।

धनभाव में राहु – कुटुम्ब से दु:खी, मित्रों का पूर्ण सहयोग, लेखन कार्य, व्यापार, ज्योतिष से द्रव्योपार्जन, रोगी, चिड़चिड़ा स्वभाव, दन्त रोगी।

धनभाव में केतु – पैतृक-सम्पत्ति का नाश, स्वोपार्जित द्रव्य से सुखी, कटु भाषी, धोखेबाज, उत्तरार्द्ध जीवन में धनी।

लग्नभाव से सम्बन्धित प्रमुख योग -

1. लग्नेश शुभग्रह होकर यदि धन भाव में स्थित हो, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में निश्चय ही अकस्मात् धन प्राप्त करता है एवं उस धन का सदुपयोग करता है।
2. लग्नेश दूसरे स्थान पर हो, द्वितीयेश एकादश स्थान अर्थात् लाभस्थ एवं लाभेश लग्नस्थ हो, तो भी जातक अकस्मात् धन प्राप्त करता है।
3. लग्नेश निर्बल होकर तथा अष्टमेश 4/5/9 के स्थान पर हो, तो जातक दिवाला अवश्य निकालता है।
4. पञ्चाधिपति लग्न में होने पर जातक अतुल संपत्ति का स्वामी होकर ऐश्वर्य भोगता है।
5. सप्तमेश, नवमेश, एकादशेश तीनों लग्न में हों, तो जमींदार योग घटित होता है।
6. लग्नाधिपति उच्च या स्वराशिस्थ होने पर जातक ज़ीवनभर सुख का भोग करता है।
7. लग्न में पापग्रह स्थित होने पर जातक लाख प्रयत्न करने पर भी दु:ख उठाता है।
8. लग्न में शनिश्चर, अष्टमस्थ, राहु छठे स्थान पर मंगल होने से जातक भारी कष्ट में जीवनयापन करता है।
9. लग्नेश द्वादश स्थान में हो, 10वें स्थान पर पापग्रह स्थित हो, फिर और किसी भी स्थान पर चन्द्रमा व सूर्य एक साथ बैठे हो, तो महादु:ख योग घटित होता है।
10. लग्न से 5वें स्थान का स्वामी; बुध, गुरु या शुक्र 5/7/9 या 10वें स्थान पर विराजमान हो, तो उत्तम विद्यायोग घटित होता है।
11. उच्च का बृहस्पति लग्न राशि में स्थित हो या एकादश भाव में हो, तो श्रेष्ठ विद्यायोग घटित होता है।
12. पंचमेश स्वगृही होकर 1/4/5वें भाव में विराजमान होने पर भी उत्तमोत्तम विद्या योग घटित होता है।
13. लग्नेश, पाँचवें स्थान पर हो तथा पंचम कारक गुरु बलवान् हो, तो संतान योग घटित होता है।
14. बलवान् बृहस्पति यदि लग्नेश द्वारा देखा जाता हो, तो उत्तम संतान योग प्रकट होता है।
15. लग्नेश व पंचमेश एक साथ होने पर भी उत्तम संतान कारक योग घटित होता है।
16. लग्नेश – नवमेश दोनों सप्तमस्थ होने पर भी अच्छा संतान योग घटित होता है।
17. लग्नेश व पंचमेश 1/4/9/10 अर्थात् केन्द्र में शुभ ग्रहों ? दुष्ट होने पर संतान योग घटित होता है।
18. तृतीयेश व चन्द्रमा 1/4/7/10वें स्थान पर एक साथ होने पर संतानहीन योग बनता है।
19. लग्नेश, बुध युक्त होकर लग्नातिरिक्त कहीं भी होने पर सन्तानहीन दोष पैदा करता है।

20. छठे घर का स्वामी सूर्य के साथ लग्न में होने पर मुँह से संबन्धित रोग उत्पन्न होते हैं।
21. मंगल व शनि लग्न में या लग्नेश को देखते हो, तो विभिन्न रोगों से जातक ग्रसित रहता है।
22. अष्टमाधिपति व लग्नेश कहीं भी साथ होने से रोगात्मक स्थिति उत्पन्न करते हैं।
23. द्वितीयेश व सप्तमेश का लग्न में होना उत्तम विवाह कारक योग बनता है।
24. लग्न से 7वें व 12वें भाव में पापग्रह होने पर विवाह प्रतिबन्धक योग घटित होता है।
25. लग्नेश व अष्टमेश लग्नस्थ होने पर जातक दीर्घायु होता है।
26. षष्ठ, अष्टम, के स्वामी लग्नस्थ होने पर भी जातक दीर्घायु होता है।
27. लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, तो जातक दीर्घायु होता है।
28. लग्नेश शनि हो और वह 1 ।4 ।5 ।8 स्थान में कहीं हो, तो जातक अल्पायु होता है।
29. लग्नेश, पंचम भाव में पंचमेश लग्न में होने पर अपार धन की प्राप्ति संभव होती है।
30. समस्त ग्रह लग्न तथा त्रिकोण भावस्थ होने से शृंगाटक योग होता है, जिसके फलस्वरूप जातक सेनाध्यक्ष बनता है।
31. केवल केन्द्र में ही समस्त ग्रह होने से केदार योग होता है, जिससे जातक राज्यपाल तक होता है।
32. लग्नेश बलवान् हो, भाग्येश अपने मूल त्रिकोण अथवा स्वराशिस्थ हो, तो जातक महापराक्रमी व लक्ष्मीयुक्त होता है।
33. शुक्र, बुध, गुरु केन्द्र में हों और मंगल लग्न में हो, तो जातक राज्यसेवा में उच्चातिउच्च पद प्राप्त करता है।
34. मेष लग्न हो, सुखेशलग्न में हो एवं मंगल भी लग्न में अर्थात् लग्नेश लग्न में हो, जातक हजारों-लाखों का विश्वास प्राप्त करता हुआ संसद में बैठता है।
35. मेष लग्न हो, उसे कोई पापग्रह नहीं देख रहा हो, ऐसा व्यक्ति उच्चस्तरीय शासनाधिकारी हुआ करता है।
36. मेष लग्न में पापग्रह हो और नवमस्थ बृहस्पति हो, तो केन्द्रीय मंत्री का पद ग्रहण करता है।
37. यदि जन्मलग्न शुभग्रह से युक्त हो, तो शुभयोग घटित होने से जातक अच्छा वक्ता बनता है। वाणी में मन्त्र मुग्ध करने की शक्ति होती है। जनभावना को अपने अनुकूल बनाने की उसमें अद्‌भुत क्षमता होती है। वह जातक सुन्दर, सदाचारी व सद्‌गुणी होता है।
38. लग्न सहित चारों केन्द्र स्थान खाली हो, तो जातक अरबपति के घर में जन्म लेकर भी दारिद्र्य में जीवनयापन करता है।
39. लग्न से केन्द्र में गुरु न हो तथा छठे या 9वें भाव में गुरु हो या चन्द्रमा से अदृष्ट हो, तो जातक भाग्यशाली नहीं होता है तथा जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखता है। आजीवन कर्ज में डूबा रहता है। सामान्यजन भी उससे घृणा करता है।
40. तुला या वृष लग्न हो, केन्द्र में शुक्र व गुरु होने पर गन्धर्व योग होता है। ऐसा जातक उच्चकोटि का गायक होता है तथा देश-विदेश की कई यात्राएँ करता है।

धनभाव से संबन्धित प्रमुख योग -

अकस्मात् धन प्राप्ति योग - यदि धनभाव का स्वामी शनि 4,8,12वें भाव हो तथा बुध सप्तम भाव में स्वगृही होकर बैठा हो, तो अकस्मात् धन प्राप्ति योग बनता है।

चाहे जातक कितना ही निर्धन हो, बुध महादशा में शनि की अन्तर्दशा में जातक को भारी धन लाभ होता है।

यदि धनभाव में कर्क का चन्द्रमा स्वगृही होकर पड़ा हो तथा अष्टमभाव में शनि स्वगृही होकर बैठा हो, तो परस्पर महादशा अन्तर्दशा में जातक दिवालिया बनता है।

अचल सम्पत्तिनाश योग - यदि धनेश बुध के घर का होकर उसके साथ दूसरे भाव में हो, मंगल चौथे भाव में हो, तो अचल सम्पत्ति नाश योग होता है। इस योगवाला जातक धीरे-धीरे जमीन-जायदाद, मकान यहाँ तक कि अपने कपड़े तक भी बेच देता है।

धनसंग्राहक योग - यदि धनभाव का स्वामी मंगल एकादश भाव में पड़कर दूसरे घर को देख रहा हो, तो जातक धन संग्रह करने वाला होता है तथा अपनी बुद्धि से धन को खूब बढ़ा देता है।

कोषवृद्धि योग - धनभाव का स्वामी सूर्य हो और लग्न में उच्च का गुरु हो, तो कोषवृद्धि योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति लखपति होता है।

लक्ष्मी योग - लग्नेश बलवान हो, नवम भाव का स्वामी स्वगृही हो, तो लक्ष्मीयोग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले के पास अटूट सम्पत्ति रहती है।

धनयोग - लग्न से पाँचवीं राशि शुक्र हो तथा शुक्र एवं शनि पाँचवें या ग्यारहवें भाव में हो, तो धन योग होता है। ऐसा जातक जीवन में खूब धन प्राप्त करता है।

श्रीयोग - लग्न से पाँचवीं राशि मिथुन या कन्या हो तथा एकादश भाव में चन्द्र मंगल हो, तो श्रीयोग होता है। ऐसा योग जातक को विशेष धनवान् बनाता है।

कमलायोग - लग्न से पाँचवीं राशि मकर या कुम्भ हो, बुध, मंगल 11वें भाव में हो, तो कमला योग होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में धन से खाली नहीं रहता।

वित्तयोग - लग्न से पाँचवीं राशि सिंह तथा उसमें सूर्य हो तथा चन्द्र-गुरु 11वें भाव में हो, तो वित्त योग होता है। ऐसा जातक लखपति होता है।

अखण्डधन योग - लग्न से पाँचवीं राशि धनु या मीन हो, एकादश भाव में चन्द्र-मंगल हो, तो अखण्ड धनयोग बनता है। ऐसा व्यक्ति लखपति होता है।

1. दूसरे भाव में रवि, शनि और मंगल हो, तो जातक दरिद्री होता है।
2. पाँचवें भाव में द्वितीयेश और नवमेश हो, तो जातक गोद जाता है और धनवान् बनता है।
3. लग्न में द्वितीयेश हो तथा नवमभाव में एकादशेश हो, तो भी जातक गोद जाकर अटूट सम्पत्ति का स्वामी होता है।
4. नवम भाव में द्वितीयेश उच्च का होकर बैठा हो, तो जातक को पैतृक धन प्राप्त होता है।
5. नवम भाव में द्वितीयेश और द्वादशेश दोनों बैठे हो, तो जातक को खूब धन प्राप्त होता है, पर वह अपने जीवन में ही उड़ा देता है।
6. लग्न पर द्वितीयेश की दृष्टि हो, तो जातक घुड़दौड़, लॉटरी से या अचानक धन प्राप्त करता है।
7. धनेश जिस राशि में बैठा हो, उस राशि की जो दिशा हो उसी दिशा से विशेष धन प्राप्ति होती है।
8. धनेश लाभ स्थान में हो और लाभेश धन स्थान में हो या दोनों केन्द्र में हो, तो जातक विख्यात धनवान् होता है।
9. धनेश 9,8,12 भाव में हो, तो जातक अपने हाथ से द्रव्य नाश करता है।
10. गुरु बारहवें हो तथा धनेश निर्बल हो, तो जातक दरिद्र जीवनयापन करता है।
11. लग्नेश, एकादशेश, द्वितीयेश और नवमेश अपने-अपने उच्चभाव में हो, तो जातक अरबपति होता है।
12. धनेश नीच राशि में हो एवं अस्त हो, तो जातक जीवन भर ऋण से दबा रहता है।

13. दूसरे घर का स्वामी बारहवें भाव के स्वामी के साथ 9,8,12 भाव में हो, तो जातक दर-दर का भिखारी होता है।
14. द्वितीयेश का विभिन्न भावों का फल - यदि द्वितीयेश लग्न में हो, तो जातक निस्सन्देह धनी होता है; परन्तु कृपण होता है। उसे अपने परिवार वालों से घृणा होती है। नौकरी करता है, तो उन्नति शनैः शनैः होती है। ऐसे जातक को पैतृक धन कम मिल पाता है; लेकिन स्मरणशक्ति अच्छी होती है। दूसरे लोगों द्वारा काम निकालने में चतुर होता है।
15. द्वितीयेश द्वितीय घर में हो, तो जातक को व्यापार से सफलता मिलती है। घमण्ड की मात्रा जरूरत से ज्यादा बढ़ जाती है। जिससे उसके सम्पर्क में आने वाले लोग उससे अप्रसन्न भी रहते हैं। वैवाहिक जीवन दु:खमय ही रहता है और अधिकांशत: उसका दूसरी बार विवाह होता है। सन्तान विलम्ब से प्राप्त होती है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक सफलता मिलती है।
16. धनपति यदि तृतीय भाव में हो जातक कठोर परिश्रमी होता है। संचित धन को योजनाबद्ध रूप से भोगने का भी उसमें गुण होता है। ऐसा जातक सत्य बोलने वाला, विविध गुणों को अपने आप रखने वाला और अच्छे स्वभाव का होता है। नम्रता के कारण मित्र अधिक होते हैं।

दशम भाव में - धनेश दशम भाव में हो, तो जातक गुणी चतुर और कलाप्रेमी होता है। अपने से बड़ों के मध्य सम्मान पाता है और लक्ष्मी को अपने बंधन में जकड़ कर रखता है। नौकरी शीघ्र मिलती है। जल्दी-जल्दी प्रमोशन होते हैं। पैतृक धन नहीं के बराबर मिलता है। स्वयं धनोपार्जित करता है। कृषि द्वारा सम्पन्न होता है।

एकादश भाव में - द्वितीयेश 11वें भाव में वह व्यक्ति जीवन में निस्सन्देह सफलता प्राप्त करता है। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती ऐसा जातक अपनी बुद्धि, योग्यता एवं गुणों के कारण लखपति बन जाता है। बाल्यकाल में रोगी रहता है।

द्वादश भाव में - यदि धनेश 12वें भाव में हो, तो जातक कृपण होता है। कठोर परिश्रमी होने पर भी उसके पास द्रव्य संचित नहीं होता। ऐसा जातक व्यापार में भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता; अपितु राजकीय सेवा स्वीकार कर लेता है। ऐसा जातक खर्च करने में ध्यान नहीं रखता, इसलिए द्रव्य के लिए परेशानी पाता है।

धनेश जिस राशि में बैठा हो, उस राशि की दिशा में विशेष अर्थ लाभ एवं भाग्योदय होगा। दूसरे भाव से नेत्र, मुख, वाक् शक्ति एवं मृत्यु का भी अध्ययन किया जाता है।

नेत्र विचार - शुक्र, चन्द्रमा और धनेश तीनों एकत्र हो, तो जातक निशान्ध होता है। उसे रात्रि में दिखाई नहीं देता। सूर्य से शुक्र और लग्नेश अस्त हों, तो जातक की दाहिनी आँख कमजोर हो। शुक्र पंचमेश और षष्ठेश के साथ लग्न में हो, तो जातक की आँखों का 21 वर्ष में ऑपरेशन हो।

यदि धनेश और मंगल दोनों लग्न में हों, तो जातक काना और बहरा होता है।

वाक् विचार - द्वितीयेश गुरु से युक्त अष्टम स्थान में हो, तो जातक गूँगा होता है।

द्वितीयेश बुध या गुरु अष्टम भाव में बैठा हो, तो जातक विद्या से हीन हो।

यदि गुरु बुध केन्द्र या त्रिकोण में या स्वगृही हो, तो जातक विद्वान् होता है।

बृहस्पति और द्वितीयेश दुर्बल हो, तो मनुष्य वात व्याधि वाला होता है।

द्वितीयेश शुभग्रह से युक्त त्रिकोण या केन्द्र में हो, तो जातक वाचाल होता है।

बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा शुक्र उच्च स्थान में हो, तो जातक गणित का प्रोफेसर होता है।

द्वितीयेश बुध शुभग्रहों से दृष्ट हो, तो जातक गणितज्ञ होता है।

मंगल दूसरे भाव में शुभग्रह के साथ हो एवं उसे बुध देखता हो, तो जातक गणना विभाग में कार्य करता है।

सूर्य या भौम द्वितीयेश होकर गुरु और शुक्र से दृष्ट हो, तो जातक तर्कशास्त्री बनता है।

गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा बुध और शुक्र उसे देखते हों, तो जातक वेदान्ती होता है।

चतुर्थ भाव - यदि धनेश चतुर्थ भाव में हो, तो जातक को माता से विशेष लाभ रहता है। पिता से भी सहयोग प्राप्त होता है। ऐसे जातक के पास अधिकतर जमींदारी होती है, भूमि सम्बन्धी कार्यों से धन संचय होता है। ऐसा व्यक्ति कृषि की ओर ध्यान दे, तो मालामाल हो सकता है। मकानों को बनाने का ठेका लेना, मकान खरीदकर बेचना या इस प्रकार के कार्यों में दलाली करना जातक के लिए लाभदायक होता है।

पंचम भाव - यदि धनेश पाँचवें स्थान पर हो, तो जातक के सुन्दर पुत्र होते हैं और उसके द्वारा यश प्राप्त करता है। अपने परिवार से घृणा करता है। ऐसा जातक पूरा कंजूस होता है। पत्नी व बच्चों पर भी धनराशि खर्च करने में हिचकिचाता है। दूसरे व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित करने में कतराते हैं। लॉटरी से वह लखपति बनता है। उसके जीवन में उन्नति अकस्मात् और अचानक होती है। नौकरी में भी जातक लाभ उठाता है। ऑफीसर प्रसन्न रहते हैं तथा प्रमोशन के कई अवसर हाथ में आते हैं।

षष्ठम भाव - द्वितीयेश षष्ठ भाव में हो, तो जातक शत्रु हन्ता होता है। शत्रुओं द्वारा धन संचय करता है। ऐसा जातक परिश्रमी होता है। पूर्वजों का उसे बिल्कुल धन प्राप्त नहीं होता। जातक धन स्वयं उपार्जित करता है। 28वें साल के बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। 36 वर्ष बाद पूर्णभाग्योदय होता है। जातक व्यापार में असफल रहते हैं।

सप्तम भाव - धनेश सप्तम भाव में हो, तो जातक श्वसुर गृह की ओर से सौभाग्यशाली होता है, उसे पढ़ी लिखी, गौरवर्ण और सुशील स्त्री प्राप्त होती है, नौकरी करके पति के धन को बढ़ावा देती है। धनेश शुभग्रह होकर सप्तम भाव में बैठा हो, तो विदेशों से धन प्राप्त होता है।

यदि धनेश तथा सप्तमेश दोनों एक साथ सप्तम भवन में बैठे हों, तो जातक विदेशों में व्यापार फैलाता है। धनाढ्य बनने के साथ-साथ ख्याति भी प्राप्त करता है।

अष्टम भाव - धनेश अष्टम भाव में हो, तो जातक दरिद्री होता है। अपनी आजीविका हेतु भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता। पति-पत्नी के बीच गलतफहमी बढ़ती ही जाती है।

धनेश अष्टमेश के साथ अष्टम भाव में बैठा हो, तो जातक भूखों मरता हुआ आत्महत्या कर लेता है।

नवम भाव में - द्वितीयेश नवम भाव में हो, तो जातक चतुर, बुद्धिमान नये-नये प्रपंच रचने वाला होता है। धन की दृष्टि अधिक उन्नत तो नहीं होती, फिर भी इसके जीवन में धनप्राप्ति के कई स्वर्णावसर आते रहते हैं। बीमारी में धनराशि अधिक व्यय होती है। भाषण कला में चतुर और बातचीत करने में प्रवीण होता है। ऐसे व्यक्ति दूसरों को फुसलाकर अपने पक्ष में कर लेते हैं। यदि धनेश नीच राशि का होकर पड़ा हो, तो जातक कठोर परिश्रमी, गरीब और नकल करने वाला होता है।

तृतीय भाव सम्बन्धित विशेष योग -

बल से हीन, मंगल तीसरे भाव में हो, तो जातक का भाई दीर्घायु होता है।

भावपति निर्बल, पापग्रह या अकारक हो, तो भाइयों का नाश होता है।

तृतीयेश और मंगल अष्टम स्थान में हो, तो जातक के सामने उसके सहोदर की मृत्यु होती है।

राहु या केतु से तीसरा भाव भरा हो, तो जातक के भाई का नाश होता है।

सूर्य पापग्रह से दृष्ट (3) तृतीय में हो, तो जातक के ज्येष्ठ भ्राता का विनाश होता है।

मंगल पापग्रह से दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हो, तो जातक का एक भी भ्राता जीवित नहीं रहता।

तृतीय भाव से यदि त्रिकोण या केन्द्र में पापग्रह हो, तो भाई का नाश समझना चाहिये।

चन्द्रमा 6,8,12 भाव में तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो, तो जातक की माता की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो जाती है।

चतुर्थेश और तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हो, तो जातक को भाइयों का पूर्ण सुख मिले।

तीसरे शनि बैठा हो, तो भाई का नाश करे; परन्तु राहु वृद्धि करने वाला होता है।

तृतीयभाव का स्वामी पापग्रह से युक्त सप्तम भाव में हो, तो जातक के लघु भ्राता नहीं होते।

लग्न से दूसरे और तीसरे भाव में कुल ग्रह होते हैं, उतने ही भाई होते हैं।

शुभग्रह तीसरे भाव में भ्रातृसुखकारक एवं पापग्रह दुःखकारक होते हैं।

लग्नेश और तृतीयेश यदि एकत्र हों, तो भाइयों में विशेष स्नेह रहता है, इसके विपरीत यदि लग्नेश में तथा तृतीयेश तृतीय भाव में हों, तो भाइयों में विरोध रहता है।

तृतीयेश शुक्र के साथ हो, तो कामी एवं भोगी हो।

तृतीयेश शनि से युक्त हो, तो मूर्ख होता है।

तृतीयेश राहु से युक्त हो, तो डरपोक होता है।

तीसरे भाव का स्वामी केतु के साथ हो, तो जातक हृदय रोग से पीड़ित हो।

लग्न में गुरु तृतीयेश से युक्त हो, तो जातक पशु का शिकारी होता है अथवा पशु की चोट खाता है।

मंगल तृतीयेश और सहज राशिस्थ तीनों ग्रह बलवान् हों, तो जातक स्थल सेनाध्यक्ष होता है।

कण्ठ विचार – तृतीयेश बुध से युक्त हो, तो जातक को गलरोग होता है।

तृतीयेश राहु स्थित राशिपति से युक्त हो, तो जातक के कंठ में सर्प डँसता है।

पापग्रह तीसरे हो, तो गलरोग होता है।

तृतीय भाव में मंगल, शनि बली हो, तो खुजली रोग होता है।

राहु से तृतीयेश और गुरु लग्न में हो, तो जातक को कंठ रोग होता है।

बुध के साथ 3 भाव का स्वामी हो, परस्पर दृष्ट हो, तो जातक गलरोग होता है।

तृतीय घर में शत्रुग्रह नीच का पापग्रह हो, तो भ्राता जहर पिलाकर मृत्यु करता है।

तृतीय भाव में प्रत्येक ग्रह का फल - तृतीय में सूर्य – साहसी, उग्र राजनीति से लाभ, भ्रातृ विरोध, स्त्री के सहयोग से लाभ, धनी, भोगी, शत्रुजित्।

तृतीय में चन्द्र – अल्पभाषी, यात्रा का शौकीन, शत्रुजित्, सुन्दर स्त्री की प्राप्ति, भ्रातृविरोधी चंचलचित्त, मस्तिष्क उलझनों से भरा रहे, असन्तुष्ट जीवन।

तृतीय में मंगल – भ्रातृहीन, भ्रमणशील जीवन से लाभ, परिवार से मतभेद, गृहकलह, साहसी, शत्रुनाशक, राजनीति में पटु, नीच का मंगल हो, तो कर्णरोगी, शत्रुक्षेत्री – निर्धन।

तृतीय में बुध – परोपकारी, मेधावी, अध्ययनशील, साहसी, बुद्धिबल से शत्रु विजय, निष्कपट, उदारचित्त, शत्रु द्वारा धनसञ्चय, व्यापारी, भ्रातृ व भगिनी सुख।

तृतीय में गुरु – स्वतन्त्र विचार, भ्राताओं से सुखी, धनी होते हुये कृपण, दार्शनिक, निर्बल, परिवार से मोह-ममता रहित, प्रतिष्ठित, रोगी।

तृतीय में शुक्र – भाग्यहीन, शत्रुजित्, संगीत, काव्यकला, चित्रकला में निपुण, स्वगृही व उच्चस्थ शुक्र, प्रसिद्ध लेखक, कवि, यौवनावस्था दुःखपूर्ण, आर्थिक चिन्ताग्रस्त, अनुज से लाभ।

तृतीय में शनि - छोटे भाई का नाश, साहसी, कर्मठ, ज्येष्ठ भ्राता से हानि, क्रूर, क्रोधी, संघर्षमय जीवन, आदर्शवादी नियमित जीवन, शत्रुजित्, प्रशासनिक, सच्चरित्र, राजनीतिक क्षेत्र से लाभ।

तृतीय में राहु - अत्यधिक पराक्रमी, वर्चस्वी, पुलिस व फौजी जीवन से विशेष लाभ, लघु भ्राताहीन, भ्रातृ असहयोग, बेपरवाह।

तृतीय में केतु - सुदृढ़, कार्यदक्ष, झगड़ालू, शत्रुजित्, भोगी, कामी, स्त्रियों से धन लाभ, मित्रों का बाहुल्य, भुजा में पीड़ा, पारिवारिक जीवन सुखद नहीं होता।

तृतीय में सूर्य बुध - विचारशील, चतुर, कवि, यशस्वी, अचल सम्पत्ति का योग, सन्तुष्ट परिवार।

तृतीय में सूर्य शुक्र - साहसी, ललितकला प्रेमी, कवि, लेखक, संगीत प्रिय, अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध, दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं, भ्रातृ सहयोग।

तृतीय में सूर्य राहु - प्रतापी, साहसी, कर्मठ, क्रूर, क्रोधी, कठिन परिश्रमी, पारिवारिक सुख की हानि।

तृतीय में मंगल गुरु - अत्यन्त शुभयोग, विद्या व ज्ञान के आधार पर प्रतिष्ठा प्राप्तकर्त्ता, शैक्षणिक जीवन, राजनीति में विशेष सफलता, स्मरणशक्ति तीव्र।

तृतीय में मंगल राहु - एकान्तप्रिय, राजनीतिज्ञ, कठोर चित्त, शत्रुजित्, लक्ष्यसाधन में प्रवीण, असन्तुष्ट पारिवारिक जीवन।

तृतीय में मंगल केतु - सहिष्णु, राजनीति में पटु, क्षमाशील, धैर्यवान्, ख्यातिप्राप्त।

चतुर्थ भाव में ग्रहों का फल -

1. **चतुर्थ में सूर्य विचार**— अनेक मनुष्यों के साथ विहार करने वाला, कोमलवाणी, गाने बजाने का प्रेमी, धन-कलत्र सम्पन्न, राजाओं का प्रिय, कोई सुख नहीं, बन्धु व भूमिरहित, पितरों की सम्पत्ति खर्च करे। पागल की तरह घूमे। पितृ वैरी, हृदयरोग, दुर्बल अंग, निष्ठुर, दुर्बुद्धि, बहुत स्त्री, अन्तःकरण सदा उद्विग्न।
2. **चतुर्थ में चन्द्र फल**— अनेक प्रकार के धन से पूर्ण, प्रियजनों का हितेच्छुक, स्त्रियों का प्रेमी, निरन्तर रोगी, मांस, मछली खाने वाला, हाथी-घोड़ा आदि वाहन युक्त, महलों में क्रीड़ा करने वाला। वाहनयुक्त, यशस्वी, पंडित, जलाशयों से उत्पन्न धन प्राप्त करें। खेती, स्त्री, पुत्रों से युक्त, देव, ब्राह्मण, भक्त, विद्यावान्, परस्त्रीगामी।
3. **चतुर्थ में मंगल फल** - जड़, बुद्धि, अतिदीन, श्रेष्ठ कुल से हीन, बन्धु निमित्त से दुःखी, अति दुःखी, सब देशों में भ्रमण करने वाला, नीच सेवा में तत्पर, पराये वश में रहने वाला, परस्त्री पर लब्ध चित्त, मित्र, माता, भूमि सुख, शरीर में अधिक रोग, निर्बल देह, सुखरहित, स्त्री से निर्लज्ज, शस्त्र, ताम्बे से युक्त, अन्तःकरण सदा उद्विग्न हो, दुःखी हो।
4. **चतुर्थ में बुध का फल** - धन से पूर्ण हो, भाइयों का नाशक हो। अपने घर या उच्च में हो, अनेक पत्नियों से पूर्ण, बुद्धि से युक्त, निर्लज्ज, क्षीण जंघा, दुर्बलांग, बालपन में रोगी, चाटुवाक्य, पुत्रहीन, गीत प्रिय, मिष्टभाषी (मृदुभाषी), श्रेष्ठ वाहन, बहुत नौकर, यश से युक्त, सत्यवादी, अनेक रस विलासी, घर में सुवर्ण।
5. **चतुर्थ में गुरु का फल** - सदा सम्मान पाने वाला, नाना प्रकार के धन और वाहन आदि से हर्षित, राजा की कृपा से अधिक सम्पत्ति प्राप्त। माता के साथ रहे, मित्र, दास, पुत्र, स्त्री, अन्नादि युक्त, सुखी। थोड़ा धन, जरी वाले वस्त्र, रथ, हाथी से युक्त, राजप्रिय, सम्पूर्ण सुख युक्त, गुरुभक्त, वाचाल, धनी, बालमित्र हो, दिव्यमाला, क्रीड़ा, अनेक वाहनयुक्त, घर बहुत रत्नों से युक्त।

6. **चतुर्थ में शुक्र का फल** - बहुस्त्री-पुत्र युक्त, अतिसुन्दर, राजमहल के समान घर में रमण करने वाला, वस्त्र तथा खाने-पीने के विलास से युक्त, अच्छे वाहन, विलासी, प्रियभाषी, धनाढ्य, अच्छा स्वभाव, देवता पूजक, सदा आनन्द को प्राप्त। दूसरों का मित्र, विचित्र कर्म करने वाला, ग्रामवासी, विलास-कर्त्ता, बहुत प्रकार से भोगी, राज्यपूज्य, दीर्घायु वाला, सदा पराक्रम वाला, विशेषकर मोती रहते हैं।
7. **चतुर्थ में शनि का फल** - बन्धुनाशक, स्वयं सदा रोगी हो, वक्री हो, तो स्त्री-पुत्र-भृत्यों से अनादर व ग्रामान्तर में दु:ख देने वाला होता है। दु:खी गृहविहीन, वाहन रहित, मातृरहित, आरम्भ जीवन में रोगी। पित्तवात से क्षीणबल, दुष्ट शीलवान्, आलसी, झगड़ालू, दुर्बल देह, दरिद्री, चिंतायुक्त, बेहोश, परितप्त, बलहीन, आचारहीन, कपटी, मातृक्लेश युक्त, टूटे हुए आसन और गृह वाला, विफल, दु:ख से संतप्त, स्थाननाश, उसके पास लोहा और शस्त्र होता है। अन्त:करण सदा उद्विग्न और दु:खी।
8. **चतुर्थ में राहु फल** - धन और बन्धु से रहित, गाँव के एक किनारे पर घर बना कर रहे, नीच से स्नेह, अति चुगलखोर, बड़ा पापी, एक कन्या हो, दुर्बल स्त्री, दु:ख उत्पन्नकर्त्ता, अल्पायु, कभी-कभी दु:खी। सुख, नाश, सज्जनता और मित्रों के सुखरहित, परदेश भ्रमण, बन्धु को पीड़क, वृष, कर्क, मेष में हो, तो बंधु को दु:ख देने वाला।
9. **चतुर्थ में केतु का फल** - कभी माता का सुख नहीं, बाल्यावस्था में माता मरे, मित्रवर्ग सुख से हीन, गृह-धनादि का नाश, सदा चिन्ता क्लेशयुक्त, अपनी भूमि खोये, वाहन, मातृ सुख नष्ट, विदेश में रहे तथा दूसरे के घर में रहे। दूसरों के दोष लगाने वाला, माता-पिता को कष्ट करता है।

पंचम भाव में ग्रहों का फल -

1. **पंचम में सूर्य फल**— बाल्यावस्था में दु:ख, धनहीन, युवावस्था में व्याधियुक्त, एक पुत्र हो, अन्य पुरुषों के घरों में रहने वाला, शूरवीर, चतुर, बुद्धिमान, विलासी, क्रूर कर्म करने वाला, दुष्ट मन वाला, जंगली देशों में भ्रमण, राजा का प्रिय, चंचल बुद्धि, परदेश में रहने वाला। शिव-पार्वती का भक्त, सत्कर्म व धन से हीन, भ्रमित चित्त, सन्तान न हो, तो सूर्य की दशा में नष्ट हो। सूर्य बली हो, तो पिता नष्ट, सूर्य चर राशि में पुत्रों को नहीं मारता, सूर्य अन्य राशि में पुत्रनाशक।
2. **पंचम में चन्द्र फल** - सुख भोगी, अनेक पुत्र, वश्य स्त्री सहित क्षीण चन्द्र होकर शत्रुक्षेत्री हो, स्त्री सुख, पुत्र-पौत्रों के सुख से रहित, अच्छे पुत्र, अतिशय बुद्धि, मृदुगति मंत्री हो, खेती के रसों से युक्त, विनयी, कन्या सन्तान हो, पुत्रहीना, चन्द्र बली माता नष्ट, क्षीण व पाप युक्त चंचल कन्या हो।
3. **पंचम में मंगल फल**- पुत्ररहित, पाप में मन, अति दु:खी, स्वक्षेत्री या उच्च का कृश तथा मलिन शरीर, एक पुत्र हो। चुगलखोर, थोड़ा बोलने वाला, वात-कफ रोगी, मुख्यत: पेट में रोग, कर्क और वात रोग से पीड़ित, स्त्री, मित्र, पुत्र सुख से हीन, कुत्सित पुत्र वाला, सदा रोगी, भाइयों से विरक्त हो।
4. **पंचम में बुध का फल** - सुख युक्त, धनी, बुद्धिमान, सन्तोषी, रूपवान, साहसी, पुत्रों के सौख्य युक्त, बहुत मित्र, मंत्र वाद में चतुर, श्रेष्ठशील, लीलायुक्त, खिले कमल का मुँह, सदा सुखी, बड़ा पवित्र, देवगुरु, ब्राह्म का भक्त। बुध बली माया नष्ट, अस्त या शत्रु, ग्रह दृष्ट, उत्पन्न किये हुए पुत्र का नाश हो। शिक्षक या हिसाब के काम में धुरन्धर, कन्यावान, मंगल बली - पुत्र नष्ट, शत्रु ग्रह की राशि में या शत्रु ग्रह दृष्ट या नीच या पाप युक्त, पुत्रशोक का दु:ख, पंचम बुध सुन्दर, बुद्धि।
5. **पंचम में गुरु का फल** - सबका सुहृदजनों में श्रेष्ठ, अनेक शास्त्र में बुद्धि, सुखी, सबका प्रिय, पुत्र द्वारा क्लेश, बुद्धिमान, राजा का सचिव, पंडित, पुत्र-पौत्र सहित, धनादि चिन्ता युक्त, गुरु बली नाना कष्ट, विचारवान्, कन्यावान्।

6. **पंचम में शुक्र का फल** - बहु पुत्र-पुत्रियों से युक्त, जामाता से पूजा पाने वाला, बड़ा धनवान्। गुणी, नगर के नेताओं में श्रेष्ठ, विलास, शीला स्त्री को प्रिय, अखण्ड धन का स्वामी, दूसरों का रक्षक, अतिचतुर, सम्पूर्ण काव्य कला सहित, वाहन अन्न से युक्त, राजा से गौर व प्राप्त कोमल बुद्धि, पुत्र सुख, शुक्र बली हो, तो पिता नष्ट, कन्यावान्, सुखी।
7. **पंचम में शनि फल** - पुत्र से हीन, धन से हीन, दुःख देने वाला, उच्च या मित्र गृही हो, तो लंगड़ा होकर एक पुत्र वाला हो, शठ और दुर्गति, कामदेव की हानि करने वाला, पुत्रों से भय, पुत्रहीन, क्रिया और यश से रहित, द्रव्यहीन, धर्मात्मा, कुटिल बुद्धि, शनि बली नष्ट पुत्र, शत्रुक्षेत्री - समस्त पुत्रों का नाश, उदय होकर स्व या उच्च का बड़ा तीक्ष्ण एक पुत्र हो।
8. **पंचम में राहु का फल** - पुत्र नाशक, महाक्रोधी, चन्द्रयुक्त, राहु किसी अन्य स्थान में हो, तो एक पुत्र हो। अति मलिन फटे कपड़े धारण करने वाला हो। नाक से बात करे, सन्तानरहित, कठोर हृदय, उदर पीड़ा, डरपोक, दयालु, दरिद्र, कुटिल बुद्धि, सिंह वा कर्क का संतान हो, अन्य राशि का पुत्रहीन।
9. **पंचम में केतु का फल** - सहोदर भाइयों में परस्पर लड़ाई, वायु के कोप के कारण कष्ट, भ्रमात्मक निर्णय, अल्पसंतति, सेवकों से युक्त, अनेक प्रकार के बल से पूर्ण, संतानहीन, पेट में रोग, पिशाच पीड़ा, खल प्रकृति, भाइयों से प्यार करने वाला, थोड़े पुत्र वाला, सदा बलयुक्त, शठ, भीरु, रोगी, विदेश के गमन पर तत्पर।

छठे भाव में ग्रहों का फल -

1. **छठे भाव में सूर्य का फल**— योगाभ्यासी, बुद्धिमान, स्वजनों का हितेच्छुक, स्वजाति को आनन्द देने वाला, दुर्बलांग, गृहस्थ पालन करने वाला, क्रीड़ा करने वाला, शत्रुजनों को जीतने वाला, शुभकर्मकर्त्ता, दृढ़ांग, धनी, नाना के घर से लाभ, सदा सौख्य युक्त, राज्य अभिमानी, घर में बहुत से बैल हो, उसके बकरी और गौधन होता है। काष्ठ और पत्थर के प्रहार से विदीर्ण देह, हनु, कान, वाणी, दाँत, नख, घाव वाले अंग से युक्त 23 वर्ष में धन देता है।
2. **छठे भाव में चन्द्र फल** - क्षीण चन्द्र - नाश होने वाला, भोगी को न भोगने वाला, अनेक व्याधि तथा दुःख ही। पूर्णचन्द्र या स्वगृही अनेक सुख। दुर्बल शरीर, कुरूप रोगी, सदा परेशान, मंदाग्नि रोगी, दयारहित, क्रूर, बड़ा आलसी, कठोर, दुष्ट चित्त, क्रोधवान, बहुत शत्रुवाला। क्षीण चन्द्र अल्पायु, पूर्णचन्द्र अतिभोगी, दीर्घायु। जलोदर रोग से संतप्त, रोग और जल से उत्पन्न विकार से युक्त, कफ से संतप्त छठा चन्द्र हजार दोष देता है। कुल देवता का प्रकोप।
3. **छठे भाव में मंगल का फल** - संग्राम में मृत्यु, नीच का, शत्रु दृष्ट हो विकल मूर्ति, निंदित, क्रूर कर्म करने वाला, उच्च का मित्र, धन से परिपूर्ण, सुखी, भोगी। प्रबल मन्दनयुक्त, माता के पक्ष में कुठार के समान, जठराग्नि अतिप्रबल, सतसंगी, सदा काम कला में बद्ध। जनस्वामी, शत्रुनाशक, प्रबल जठराग्नि, श्रीमान् यश बल युक्त, रोग करने वाला। 24 वर्ष में पुत्र देता है। पापदृष्ट शत्रु हो। शरीर में फोड़े होकर छेद पड़े, बड़ी व्याधि हो। लोगों से धिकारित रति विकार हो, परन्तु सबसे जय मिले।
4. **छठे भाव में बुध का फल** - वक्री या शत्रुक्षेत्री - शत्रु से भय, शुभगृही या शुभ दृष्ट, शुभप्रद शत्रुनाशक, सदा दुःखी, आलसी, दुष्ट स्वभाव, झगड़ा करने में प्रीति, रोगी, कठोर हृदय, शत्रु से संतप्त चित्त, ईर्ष्यालु, विद्या विनोदी, कलह प्रिय, परिवार से उपकारहीन, 37 वर्ष में मृत्यु देता है। मामा, कन्या सन्तान वाला, स्त्री व पुरुष के रोग, लोगों से कलह, सर्वकाल त्रास, बहुत घूमे।

5. **छठे भाव में गुरु का फल** - हाथी, घोड़ा युक्त, दुबला अंग, शत्रु को जीतने वाला, वक्री शत्रु से भय, बहुत आकर्षक, अनादर प्राप्त, शत्रुदमनकर्त्ता, मन्त्राभिचार में चतुर, आलसी, व्याधियुक्त, कटु वाक्य, सुखहीन, खोटी विद्या से तत्पर, यश का प्रेमी, प्रारब्ध में आलसी, 40 वर्ष में वैरियों को भय देता है। चन्द्र के समान हजार दोष देता है। स्त्रियों का प्राबल्य, अति आहार।
6. **छठे भाव में शुक्र का फल** - अस्त हो, तो दुष्ट कुल में जन्म लेकर भी बड़ा पण्डित हो, उच्च का - शत्रु को जीतने वाला, सुख पाने वाला, युवती, स्त्रियों से भ्रष्ट, दु:खी, रोगी, मूर्ख, दयाहीन, मित्ररहित, स्त्रियों का प्यारा नहीं, कामदेव से हीन, निर्बल, शत्रु का भय, भ्राता, भगिनी तथा मामाओं का सुख, मामा, कन्या, संतान वाला, पावों में रोग, 21 वर्ष में शस्त्र से मृत्यु।
7. **छठे भाव में शनि का फल** - नीच का व शत्रुक्षेत्री हो, कुल का क्षय करने वाला, उच्च मित्र गृही या स्वगृही, शत्रुओं को मारने वाला, धन कामनाओं की सिद्धि को प्राप्त, धर्म कार्यों में पूर्ण, भोजन जल्दी-जल्दी करने वाला, धनी शत्रुओं का दमनकर्त्ता, धृष्ट, मानी, दानी, दु:खी, शत्रुनाशी, राजप्रिय, जठराग्नि श्रेष्ठ, वैरियों के पक्ष में संतप्त, शूरवीर, विषय-चेष्टा, कवि, शत्रुओं का दाहक, पावों में रोग, सिर पर पत्थर गिरना,, बिजली गिरना।
8. **छठे भाव में राहु का फल** - शत्रु का नाश करे, धन पुत्र भोग प्राप्त, उच्च का अनेक अनर्थों का नाशक, परस्त्रीगमन अवश्य करे। शत्रुओं द्वारा सताया जाये या दुष्ट लोगों से दबाया जाये। गुदा में रोग, धनी और दीर्घजीवी। कमर में पीड़ा, म्लेच्छों से समागम, बड़ा बलवान्, म्लेच्छ राजा से धन प्राप्त, उच्च हृदय, शत्रुनाशक, शत्रु संहारक, कुलीन, बहुत-सी भैंसों का धन हो।
9. **छठे भाव में केतु का फल** - मामा द्वारा मानहानि, वैरियों का नाश, चौपायों के कारण सुखी, नीच प्रकृति, शरीर किसी विकार से युक्त, औदार्य, उत्तम गुण, प्रसिद्ध, प्रभुता प्राप्त, व्याधिनाश, बन्धु प्रिय उदार, गुण प्रसिद्ध, विद्वान, यशस्वी, शत्रु से जय, बहुत आहार, शूर, विजयी।

सप्तम भाव में ग्रहों का फल -

1. **सप्तम में सूर्य फल—** स्त्रियों के साथ विहार करने वाला, अन्य सुखों से हीन, बड़ा चंचल, पाप कर्म में प्रवृत्त, फूला शरीर, न अति लम्बा न अति छोटा, कपिल नेत्र, कुरूप, पीले रंग के केश, राजा का कोप, बिना स्त्री के भटकता- फिरे, अपमान सहे, चिंता, व्याकुल, कामी, स्त्री वंध्या हो, सूर्य की दृष्टि हो या वर्गोत्तम हो, तो उत्तम है, साँवलें रंग की, लाल नेत्र, चंचल चित्त, मनमाने भाषण करने वाली, लम्बे हाथ, राजस गुणयुक्त, ऐसी उत्तम स्त्री मिले। यदि पापग्रह का योग हो, तो अरिष्ट हो।
2. **सप्तम में चन्द्र का फल** - उत्तम स्त्रियों का स्वामी, सुवर्ण से सम्पन्न सुन्दर देह, स्त्री रोगिणी, देखने में अच्छी सुन्दर, बड़ा अभिमानी, कामातुर, धन और नम्रता रहित, निरोगी, धनवान्, सुन्दर, यशस्वी। कुष्ठ रोगी, वंचक, कृपण, पराई स्त्री से सम्बन्ध, ईर्ष्यावान्, भ्रमणशील, पूर्णचन्द्र - सुन्दर शरीर वाला, लोगों की संतति का द्वेष करें, वर्गोत्तम हो, तो मृदु शरीर प्रिय बोलने वाली स्त्री हो।
3. **सप्तम में मंगल का फल** - स्त्री के मरण का दु:ख हो, मकर का या स्वक्षेत्र- एक ही विवाहिता जीवित रहे। चपल बुद्धिवाली, लम्बी, दुष्ट चित्त वाली और कुरूपा पत्नी हो। अनुचित कार्यकर्त्ता, रोग से ग्रसित, रास्ते से भटकता हुआ, अपनी स्त्री को खोये। क्रोधी, नीच सेवी, वंचक और निष्ठुर, रुधिर से आरक्त, रजस्वला और वंध्या स्त्री का संग, सुन्दर स्तन वाली स्त्री, स्त्री के कारण विलाप करने वाला, युवती स्त्री हो, स्त्री की लाल कान्ति हो, पुरुष स्वभाव वाली स्त्री हो, मंगल की दृष्टि हो या वर्गोत्तम हो, साँवला शरीर, क्रूर नेत्र, दुष्ट वाक्य, अतिचंचल, मन में कपट, चोर, झूठी मार खाने वाली, पति को दु:ख देने

वाली, ज्वर, फोड़ा, रोग पीड़ित, खारा, तीखा, खट्टा खाने वाली, विशेष कामी स्त्री हो। इसमें पापयोग हो, तो देह रोग, प्रदर परमा वगैरह योग हो।

4. **सप्तम में बुध का फल** - चंचल, मध्यम दृष्टि, शुभक्षेत्र हो, तो उत्तम कुल की स्त्री मिले, सुन्दर वेष धारण करे, बड़प्पन प्राप्त, स्त्री धनवान् मिले। धनी, सत्यवक्ता, मुसाहिब, परोपकारी, बुद्धिमान, सुशील। उसको वेश्या, नीच जाति या बनिया स्त्री से संग होता है।
5. **सप्तम में गुरु का फल** - राजा सम सुखी, अमृत तुल्यवाणी, उत्तम बुद्धि, दिव्यभूमि, उदार, स्त्रीसुखयुक्त, शास्त्र में अभ्यास करने वाला, नम्रतासहित, धन से अत्यन्त सौख्य प्राप्त, राजा का मंत्री, काव्य करने वाला, काम में चित्त वाला, बड़ा बली, धनी, दाता, प्रगल्भ और चित्रकर्म करने वाला, उत्तम स्थान की स्त्री हो आपकी अपेक्षा अधिक गुण हो, अमृत जैसा मीठा वचन, पुत्रों को उत्पन्न करने वाली मनोहर स्त्री हो, पुरुष स्वभाव वाली स्त्री हो, सुवर्ण जैसा वर्ण हो।
6. **सप्तम में शुक्र का फल** - बहुत पुत्र तथा धन सम्पन्न, कुलीन स्त्री हो। बुरी स्त्री से सम्बन्ध रखे, स्त्री को खोये, धनी होवे। कलह प्रिय, स्त्री अभिलाषी, पिता से अधिक गुणी, स्थूल सुन्दर स्तन वाली हो। वेश्या का स्वामी, सुन्दर और व्यग्र। शुक्र बलवान् हो, तो सुवर्ण समान वर्ण वाली स्त्री मिले।
7. **सप्तम में शनि का फल** - स्त्री की मृत्यु हो, अनेक रोग, बड़ा अभिमानी, अंगहीन, मित्र के वश की कन्या के साथ मित्रता करने वाला। बुरी स्त्री से विवाह हो, गरीब हो, यहाँ वहाँ भटके और विह्वल। स्त्रीसहित रोगी, बहुत शत्रु, विवर्ण, मलिन, सूर्य समान फल, स्त्री के वश, बुरे आचरण, रजस्वला का संग, वृद्धा स्त्री या नपुंसक स्वभाव वाली स्त्री होवे।
8. **सप्तम में राहु का फल** - धन की हानि युक्त स्त्री हो, अनेक भोगों को देने वाली, पापग्रहों के साथ राहु हो, महापापनी, कुटिला, कुशीला भार्या मिले। अवीर्य स्वतंत्र, अल्पबुद्धि, प्रचंडरूप, क्रोधी, झगडालू भार्या, पागल की तरह घूमे, दूसरों को हानि पहुँचाये, क्रोधी, नीच जाति, रजस्वला के संग। अहंकारी, रोगवान्, व्यभिचारी में शिरोमणि। विष का प्रयोग करने वाली दुष्ट स्त्री हो।
9. **सप्तम में केतु का फल** - मार्ग चलने की अधिक चिन्ता या आना-जाना बन्द हो जाय, तो अपने धन का नाश हो या जल से भय हो। वृश्चिक का हो - सदा लाभ, स्त्री-पुत्रादि को पीड़ाकारक अधिक खर्च तथा व्यग्रता हो। अपमान से बुरी स्त्रियों की संगति करे, अंत्र रोगी, पापयुक्त धातु हानि। निकृष्ट स्त्री वाला, स्त्री भोगरहित, शीलरहित, निद्रालु, दीनवचन बोलने वाला, मूर्खों में अग्रगण्य।

अष्टम भाव में ग्रहों का फल-

1. **अष्टम में सूर्य का फल—** अति चंचल, त्यागी, निश्चय, बुद्धिमान, मनुष्यों की सेवा करने वाला, भाग्यहीन, शीलहीन, रति की अधिकता से मलिन वस्त्र पहनने वाला, नीचों की सेवा करने वाला, सदा परदेश में रहने वाला। कृतघ्न, हीन, मनुष्य, शत्रुओं से डराया हुआ। वृथा चलने वाला, संतान थोड़ी, नेत्र चंचल, खूब सुन्दर, कलह में चतुर। शत्रु क्षेत्री हो, तो बिजली या सर्प से मृत्यु, शुभराशि का हो, तो तीर्थादि में मृत्यु।
2. **अष्टम में चन्द्र का फल** - पाप ग्रही हो, तो अल्पायु में मरण। स्वक्षेत्री या सोम्य गृही गुरु या शुक्र के घर का पूर्णचन्द्र हो। श्वासादि रोगों से अतिदु:ख हो, रोगी अल्पायु, लड़ाई में उत्सुक, दान प्रमोद और विद्याशील। क्षीणचन्द्र, बाल्यावस्था में मृत्यु, त्रिदोष, ज्वर और मृत्यु। चपलबुद्धि का रोगी। जल में मृत्यु, पापग्रह की राशि का हो, तो श्वास, त्रिदोष, ज्वर, सूजन होकर मरे।
3. **अष्टम में मंगल का फल** - क्षीण या नीच का, जल में डूबकर मरे, धन मीन का सूर्य हो, तो नित्य भोगी, नीच, हाथपैर वाला, अनेक भोगों को भोगे। कुरूप शरीर, गरीब हो, जन निन्दित। हितवादी, गुप्तरोग, स्त्री

सुख नहीं, जौहरी, शरीर में घाव, बुद्धिहीन, रुधिर विकार, नेत्रों में विकलता, दुर्गमता को प्राप्त, रक्त विकार से पीड़ित, नीचकर्म में प्रवृत्ति, बुद्धि का अंधा। शस्त्रादि व लूतादि से व अग्नि से मृत्यु, कुष्ठ रोग से नाश, स्त्री को पीड़ा। शस्त्र से, अग्नि, कुष्ठ वर्ण, स्त्रियों से रोग होकर या शस्त्र चिकित्सा से मृत्यु, अल्पसंतान, विफल मन।

4. **अष्टम में बुध का फल** - भूत-प्रेतों की कृपा से सम्पूर्ण सम्पत्तियों को प्राप्त, बहुविरोध करने वाला, अभिमानी, यत्न से अन्य कर्म, सत्यवादी-विख्यात, गुणवान्। सत्यभाषी, सुन्दर मूर्ति, शत्रुहंता, अतिथिजनों का सत्कार करने वाला। पापयुक्त या शत्रुगृही कामदेव के वेग में अप्रतिष्ठा पाने वाला। जंघा और पेटू में शूलरोग से पीड़ा, सुखपूर्वक, तीर्थ में मृत्यु, पापग्रह युक्त हो, तो मृत्यु। प्रख्यात व गुणी, ज्वर ताप, शूल होकर, तीर्थ में मरता है।
5. **अष्टम में गुरु का फल** - उत्तम तीर्थ में जाने वाला, योगाभ्यास करने में निरत। गरीब, नीच, सदृश अपनी जीविका प्राप्त करे, पापयुक्त हो दीर्घजीवी। मुखरोगी, क्रोधी। द्यूत कर्म की वृत्ति, मलिन, अत्यन्त दीन, विवेकरहित, नम्रताहीन, आलसी, दुर्बल देह। सदा रोगी, शोक, संयुक्त, कुकर्मी, कुरूप। शुभराशि का या स्वगृही हो तो ज्ञान से तीर्थ में मरण, चन्द्रराशि में श्रम से मरण। उचित कर्म, रोग का ज्ञान नहीं होता; परन्तु सावधान होकर मरे।
6. **अष्टम में शुक्र का फल** - निर्बल, धर्म में तत्पर, राजा का सेवक, माँस का प्रेमी, विशाल नेत्र, चौथी अवस्था में मृत्यु, दीर्घजीवी, धनी, पृथ्वी का शासक। स्त्री, धन, सौख्य रहित, कटुवादी, संग्राम, प्रिय, अभिमानी। रोगी, युद्धप्रिय, वृथा चलने वाला, कार्यहीन, मनुष्यों में प्रिय। पिता की अनृणता और तीर्थ में मरण, पिता के कुल को पवित्र करता है। प्यास व्याकुल हो, तीर्थ में मरण।
7. **अष्टम में शनि** - दुःख भागी होकर देशान्तर में रहने वाला, चोरी के अपराध में नीच के हाथ से मृत्यु, नेत्ररोगी। अस्वस्थ, धनरहित, बवासीर का रोगी, दुष्ट प्रकृति, बुभुक्षित, मित्रों से तिरस्कारित। दरिद्र, मिथ्या विवाद करने वाला, वातरोगी, क्रोधियों का अग्रसर, विख्यात बल, धनवाला। विसूचिका आदि नाना प्रकार के रोग। विष खाकर, सर्प या अग्नि से जल कर मरे। क्रूर ग्रह युक्त हो, तो चोर से मरे। थोड़ी सन्तति, मन विकल, भूख लगकर परदेश में मरे। अपने कुल व मामा के कुल का नाश करे।
8. **अष्टम में राहु का फल** - सदा रोगी, पाप में निरत, दुष्ट, चोर, दुर्बल, कायर, धन से सम्पन्न, मायावी। अल्प जीवन, अशुद्ध कर्म करना, वात रोग से रोगी, अल्प सन्तान, अनिष्ट, नाश को प्राप्त, लिंग-गुदा में पीड़ा, प्रमेह रोग, अण्ड वृद्धिसहित, विकलता। सदा मुसाफिर, धर्महीन, क्रोधी, बुरे आचरण, दरिद्री। दीर्घसूत्री रोगी। चोरी की निन्दा में मरण, कष्ट यातना, नाना प्रकार की वेदना होकर मरे।
9. **अष्टम में केतु का फल** - बवासीर, भगन्दरादि रोग, हाथी घोड़ादि सवारी से गिरने का भय, धन की रुकावट, 1,2,3,9,8 राशि का हो - सदा धन लाभ। लघु जीवन, प्रियजनों से वियोग कलह से रत, शास्त्र में क्षति प्राप्त, सफल कार्यों में विरोध, गुदा में पीड़ा। 3,4,6 राशि का वाहन धन लाभ, 1,2,8 राशि का अत्यन्त लाभ, राहु समान फल। परद्रव्य, परस्त्री में रत, रोगी, दुराचारी, विशेष लोभी। यदि शुभग्रह देखता हो, तो धनी, दीर्घायु। नाना प्रकार की वेदना से मरे।

नवम भाव में ग्रहों का फल-

1. **नवम में सूर्य का फल**— सत्यवक्ता, सुन्दर केश, कुटुम्ब का हितैषी, देवगुरु का अनुरागी, पहली अवस्था में रोगी, युवावस्था में स्थिरता युक्त, धनवान्, दीर्घायु, दिव्यस्वरूप। पिता का द्वेषी, सन्तान और बंधुयुक्त, गौ, ब्राह्मण-भक्त, कुकर्मा, भाग्यरहित, विद्या और ज्ञानहीन, कुशल। पुत्र व धन का सुखी, भोगी, प्रसिद्ध

सुखी, दूसरे के धन से शोभित, ननिहाल से सुख नही, पिता, गुरु-द्वेषी, विधर्म के आश्रम में रहने वाला, भाग्य व पुण्य का विनाश, उच्च या स्वक्षेत्री, पुण्य व धर्म करे। तीर्थ और धर्म करता है। पुत्र, द्रव्य और सौख्य मिले, पापग्रह होते। इन सबका नाश। परमोच्च हो, तो राज पद देवे, तीर्थयात्रा में पुण्य करता है।

2. **नवम में चन्द्र का फल** - अनेक प्रकार से सुख, कामिनी स्त्रियों से प्रेम, क्षीण चन्द्र या नीच का हो, तो निर्मल धर्ममार्ग का विरोधी, गुणरहित, मूढ़ चित्त। उन्नतिशील, गुणी, संतानयुक्त, पापी, व्यापार में आरम्भ से ही सफलता पाये, तेजस्वी धनी, ईश्वर भक्त, स्त्री पुत्र, धन युक्त, पुराण कथा प्रेमी, सत्कर्मा, श्रेष्ठ तीर्थ करने वाला। चारु कांति वाला अपने धर्म में सदा निरत, सज्जनों में निपुण और पापी हो। यदि पूर्ण चन्द्र हो मध्य भाग धर्म और पितृपक्ष युक्त। मीन चन्द्र हो, तो सबका नाश करता है। 20 वर्ष में तीर्थ करता है। पूर्णचन्द्र हो सबका प्रिय, पुत्र, मित्र व द्रव्य से युक्त, क्षीण चन्द्र हो, तो कमी करता है।

3. **नवम में मंगल का फल** - अतिरोगी, नेत्र, हाथ और शरीर में पीला, बहुत मनुष्यों से परिपूर्ण, भाग्य से हीन, फटे जीर्ण वस्त्र पहिने विकल जनों जैसा भेष, शीलवान्, विद्यानुरागी। पुत्र व धन सुख यदि राजा का भी मित्र हो, तो भी दूसरे से द्वेषित, पिता रहित दूसरों को घातक। हिंसा में प्रवृत्ति, राजा से थोड़ा, गौर व प्राप्त, पुण्य धन नाशक। राजा का मान्य, परस्त्रीरत, भाग्यवान्, कुकर्मी, पौरुषहीन, नीचों से प्रेम, क्रूर, कष्टयुक्त।

4. **नवम में बुध का फल** - शुभगृही, धन, स्त्री, पुत्र से युक्त। पापयुक्त, कुमार्गी, धर्म का निन्दक, बड़ा उद्यमी। विद्या व धन प्राप्त, सत-आचरण, प्रवीण, अति-वाग्मी, खेलने में दक्ष, दाता, सत्ययुक्त, प्रसन्न चित्त, धर्म में तत्पर, प्रसिद्ध, सुकर्मी। कुआँ, बागादि बनाने वाला, सत्यवक्ता, निवृत्त, पिता का प्यारा। शास्त्री, शुभाचरण वाला, पापग्रह हो तो मंद भाग्य, बौद्ध मत का अनुयायी, शुभग्रह हो, तो भाग्यवान्, धर्मात्मा, 29 वर्ष में माता का मरण।

5. **नवम में गुरु का फल** - श्रेष्ठ राजा के समान धनी, पवित्र रहना, कृपण, सुख भोगी, अति धनी, स्त्रियों को प्रिय, प्रसिद्ध मंत्री, धन, पुत्रयुक्त, सत्कार्य में उत्सुक। बड़ा आदमी, भाग्यवान्, रूपवान्, बहुप्रिय, सुकीर्ति, ईश्वर भक्त, राजा का मन्त्री, श्रेष्ठकर्म, शास्त्रों के विचार में मन, व्रत करने वाला, ब्राह्मणों की सेवा करने में तत्पर। धर्म करने वाला, साधुओं का संग, चेष्टा रहित, तीर्थ सेवक, ब्रह्म का जानने वाला। तपस्वी, ज्ञानी, धर्म में तत्पर, राजा का मन्त्री, देवयज्ञकर्त्ता, परमार्थी, अधिक कीर्ति, कुल बढ़ाने वाला, माँ-बाप का सेवक, भाग्य बढ़े, अंत में साधु व तपस्वी हो।

6. **नवम में शुक्र का फल** - उत्तम तीर्थ में स्नान करने वाला, सुन्दर शरीर, सुख भोगी, देव-ब्राह्मण भक्त, पवित्र, स्वउपार्जित धन से आनन्द, स्त्रीयुक्त, मित्र, सन्तान युक्त, राजकथा से उन्नतिशील, अच्छा कार्य करने वाला। रूपवान्, प्रसन्नचित्त। अतिथि, गुरुदेव का पूजक, तीर्थयात्रा में धन खर्च, प्रतिदिन धन और वाहन से हर्ष, मुनि के समान भेष, क्रोधहीन, धर्मपूर्ण, ज्ञानी, सुखी, धनी, राजाओं से पूजित, नम्र, जनप्रिय, तपसी स्त्री पुत्र से युक्त। 15वें वर्ष लक्ष्मी को पाता है।

7. **नवम में शनि का फल** - धर्म में पाखण्ड, धर्म तथा अर्थ से हीन, पिता के साथ कपट, मद से युक्त, धनरहित, पापी स्त्री में आसक्ति, हीन वीर्य। भाग्यधन, सन्तान, पिता और धर्मरहित। पराई स्त्री में रत। अपने जमाने में बड़ा आदमी, मिष्ठभाषी, सुखी, दयालु, रण में विख्यात, बिना स्त्री वाला, कपट प्रधान, अच्छा कार्य करने वाला, मित्र देव को ठगने वाला, क्षीण भाग्य, शुभ धर्मयुक्त।

8. **नवम में राहु का फल** - चण्डाल के समान कर्म, चुगलखोर, जीर्ण कपड़े पहने, ज्ञानीजनों की प्रशंसा करने वाला, बड़ा दीन, शत्रु से सदा भयभीत, प्रतिकूल भाषण, अपने वंश का मुखिया। गाँव या शहर का मुखिया, अधर्म कार्य करे। धनी, सुखी, धार्मिकजनों का वैरी, यशस्वी, पथिक धर्म का अनुरागी, सत्य व शौच से हीन।

9. **नवम में केतु का फल** - क्लेश का नाश, पुत्रों का इच्छुक, म्लेच्छ से भाग्य वृद्धि, म्लेच्छों से पीड़ा भी हो, बाँहों में रोग, तप और दान से हास्य वृद्धि को प्राप्त। सुखी, संतति का इच्छुक, नीच जाति द्वारा भाग्य वृद्धि। सगे भाई-बहिन के न होने से कष्ट, बाँह में रोग, इन कुचेष्टाओं को सुधारने के निमत्त दान, नियम करने में उपहास को प्राप्त। पापकर्मी, अभागा, दरिद्री, राहु के सदृश फल। क्रोधी, वाचाल, अधर्मी, परनिन्दक, वीर, पिता का वैरी। विशेष दम्भी, आलस्य में लीन, अभिमानी।

दशम भाव में ग्रहों का फल -

1. **दशम में सूर्य का फल**— गुणयुक्त, सुखी, अभिमानी, कोमल चीजों में रुचि रखने वाला, नृत्य गीत में प्रेम, अत्यन्त पूज्य राजा होता है। इसके अतिरिक्त गाल में रोग भोगने वाला, पुत्र, वाहन, स्तुति, ज्ञान, धन, बल, कीर्ति प्राप्त, राजा हो। नीच राशि का सूर्य हो तो पिता से सुख न मिले। श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ वाहन, निश्चय धन युक्त, राजकृपा, पुत्र व सौख्ययुक्त, साधु का उपकारकर्त्ता, बन्धुहीन, कुकर्मी, शीलरहित, चंचलस्त्री वाला, तेजहीन और खजानारहित, सुखी व धनवान्, पिता का धन और शील प्राप्त, विद्या, यशयुक्त, राजा के समान, 19 वर्ष में प्रवासी बनाता है। शूरवीर, वाहन, बुद्धिबल, धन, पुत्र इनसे युक्त, असह्य, प्रगल्भ, कार्य का सिद्ध करने वाला, पिता से धन प्राप्त।

2. **दशम में चन्द्र फल** - धन सम्पन्न, पुत्र, स्त्री युक्त, शत्रुक्षेत्री या पापयुक्त, कास रोग, दुर्बलांग, धनी, माता तथा कर्म से हीन, सत्कर्म करे, सतगुणी, लोगों का प्रिय, पिता तथा कुटुम्ब का सेवक, धनी, विद्वान्, शांत प्रकृति, समस्त कार्य की कृतकार्यता पाये, धर्म, धन, बुद्धिबल इनसे युक्त 43 वर्ष में धन देता है।

3. **दशम में मंगल फल** - इन्द्रियों का दमनकर्त्ता, खजाने से रहित, अपने कुल की जय करने वाला, स्त्री, चित्तचोर, भूमि का काम करने वाला, बड़ा क्रोधी, ब्राह्मण-गुरुजनों का भक्त, मध्यम कद। धनी, गुणी, संसार में मान्य, साहसी, दयावान, सब पदार्थ घर में हो दानी। राजा के समान अत्यन्त आनन्द प्राप्त, श्रेष्ठ साहस करने वाला, परोपकारी सुन्दर, अच्छे बुरे प्रकार से लाभ करता है। 27 वर्ष में शस्त्र से भय। सेना बल से युक्त, प्रधान सेवक शूरवीर, बड़ा प्रतापी, पुत्रवान्, कर्म में उद्योगी, पराजित न होने वाला, शत्रु से द्रव्य प्राप्ति।

4. **दशम में बुध का फल** - समस्त विद्या ज्ञाता, यशस्वी, धनी, विनोदी। गुरुजनों के साथ हित करने वाला, अपने कमाये धन से वाहन खरीदे। थोड़ा बोले, ज्ञान में चतुर, श्रेष्ठ कार्य करने वाला, अनेक सम्पत्तियुक्त, राज्यमान्य, सुन्दर लीलाओं के सहित, वाणी के विलास में श्रेष्ठ। 19 वर्ष में धन देता है। वाक्य समूहों की रचनाओं से युक्त, बुद्धिमान, धीर, धर्म में चेष्टा, मालिक के गुण, अनेक आभरणों से युक्त, मित्र से धन प्राप्ति।

5. **दशम में गुरु का फल** - अश्व रत्नों से विभूषित घर, नीति गुणों में बुद्धिमान्, सज्जनों की संगति, दूसरे की भूमि और स्त्री से रहित, बड़ा धर्मात्मा। पालकी, जवहिरात, वाहन युक्त। पुण्य, यश, गुणयुक्त, नृपतुल्य, दयावान्, सत्य से युक्त, सिद्ध किये कर्म वाला, भ्राता से धन प्राप्ति।

6. **दशम में शुक्र का फल** - भाई बहरा, स्वयं भोगों को भोगने वाला, वन में भी राज्यफल पाने वाला, युद्ध में योग्य, पुष्ट, सुन्दर शरीर, अति-प्रसिद्ध, मित्रयुक्त, सुख, वृत्ति युक्त, स्वामी। कर्मवान्, निधि और रत्नों से युक्त, राजा की सेवा करने वाला। धर्मवान् और स्त्री से प्यारा। खेती आदि कर्म से, स्त्री से धन प्राप्त हो, 12 वर्ष में सौख्य देता है। वाद-विवाद में विजय प्राप्त करने वाला, अर्थ और प्रीतिवाला, कीर्तियुक्त, बुद्धिमान, धनी, विख्यात।
7. **दशम में शनि का फल** - बड़ा धनी, मृतकों का अनुरागी, परदेश में जाकर राजा के घर में वास, अभिमानी, शत्रु से भय नहीं पाता। राजा का मन्त्री नीतियुक्त, बुद्धिमान्, नम्र, श्रेष्ठ, ग्राम और नगर के भेद करने का अधिकारी, चतुर, धनयुक्त, कुकर्मी, धन वर्जित, दया, सत्य और गुणों से हीन, चञ्चल, सूर्यवत्, फल, सुखी, बलवान्, राजा या मन्त्री सुकृति, दण्डकर्ता, मानी, धनी, निज कुल में वीर, अबाध और दु:ख युक्त, पुर, ग्राम इनका स्वामी या दंडपति, पंडित, शूरवीर, धनयुक्त, मन्त्री, चाकर से धन प्राप्त, नीच या शत्रुक्षेत्री, सेवा से इकट्ठा किया धन वाला, क्रूर, कृपण, पक्षियों को मारने वाला, जंघा में रोग।
8. **दशम में राहु का फल** – काम में आतुर, परधन का इच्छुक, सब कामों में अग्रणी, हीनशक्ति, मलिन, वैराग्य युक्त, सुखरहित, खेलने में मन बड़ा चपल, दुष्ट। प्रसिद्ध, अल्पसन्तान, दूसरे के व्यापार में स्वत: दक्ष रहे, कोई सत्कार्य न करे। भयरहित हो, बलवान्, शत्रुनाशी, कलह प्रिय, चोरी में निपुण, बुद्धिमान और उद्धत हो। लोकप्रिय, दण्डनायक और पंडित, शूर, मंत्री और धनी।
9. **दशम में केतु का फल** – अच्छे कार्य में विघ्न, अपवित्र, बुरे कार्य, तेजस्वी, शूर, प्रसिद्ध। विद्वान्, शिल्पविद्, आत्मज्ञानी, जनानुरागी, विरोध वृद्धि, कलात्मक, वीरों में श्रेष्ठ, सदा घूमने वाला, गुदा में रोग, कफ, प्रकृति, म्लेच्छों के समान कर्म, परस्त्रीगामी।

लाभ भाव में ग्रहों का फल -

1. **लाभ में सूर्य का फल** - अत्यन्त धन का भोगी, राजगृह की सेवा करने वाला, भोगों को भोगने से हीन, गुण का ज्ञाता, दुर्बल अंग, धन सम्मान, कामिनी चित्तहारी, चंचल मूर्ति, जाति बन्धुओं को आनन्ददायक, उन्नति से ही धनी, दीर्घजीवी, दु:खरहित, राजा हो। धनवान्, सुन्दर स्त्री, गायन विद्या में चतुर, गाने में प्रीति, श्रेष्ठ कर्म में प्रवृत्ति, बड़ा यश, सदा धन से पूर्ण, राजा से नित्य धन लाभ करे। अनेक लाभयुक्त सात्विक, धर्मवान्, ज्ञानी, रूपवान्। सूर्य योग्यता प्रमाण से गोचर में या अपनी दशा में पदवी, अधिकार, उन्नति, हाथी, घोड़े, वस्त्ररत्न, मिष्टान्न, गाय, भैंस, रोग और वाहन देता है।
2. **लाभ में चन्द्र फल** – बहुत धन का भोगी, सुखयुक्त, पत्नी तथा भृत्ययुक्त, उच्च विचार का, दीर्घजीवी, धन-संतान, सेवकयुक्त, लाभयुक्त, प्रगल्भ, सुभग, सुमार्गगामी, लज्जायुक्त, प्रतापी और भाग्यवान्, सर्वत्र विख्यात, नित्य लाभयुक्त, उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के मोती रत्न, गाँव, खेत, बगीचा आदि का लाभ, राजा से या बेचने खरीदने से, समुद्र, तालाब आदि के सम्बन्ध से व्यापार से लाभ।
3. **लाभ में मंगल का फल** - देवताओं का हितेच्छुक, राजा से सम्मान, स्त्रीवाला, पीड़ित, क्रोधी, उच्च का सौभाग्ययुक्त, धनवान्, तेजयुक्त, पुण्यकर्मी, धन का लोभी, ताँबा, मूँगा, सुवर्ण और वस्त्रों को प्राप्त, सुन्दर वाहन, राजा की कृपा से श्रेष्ठ, कौतुक और मंगल को प्राप्त, चतुर वचन बोलने वाला, यन्त्र-कला-धातु, वस्त्र, सोना, चाँदी से लाभ, सत्यभाषी, दृढ़वृती, गीत गाने में प्रवीण, प्रियभाषी, शूरवीर, धनधान्य, मानयुक्त।

4. **लाभ में बुध का फल** - शास्त्र में बुद्धि, स्वकुल हितैषी, कृश, स्त्रियों का प्यारा, मनोहर, श्याम मूर्ति, शुभनेत्र, दीर्घायु, सत्ययुक्त, बहुत धनी, सुखी, नौकरों सहित। सूर्यवत् फल। अक्षर लिखना, छापाखाना, कपटी, बढ़ई आदि का काम, बनिया की दुकान, मंदाग्नि वाला, कूप, यज्ञादि का सिद्धि करने वाला।

5. **लाभ में गुरु का फल** - राजा के समान धनी, अपने कुल में दाग लगाने वाला, विवेकी, वाहनयुक्त, चंचल, गुणवान्, लाभवान्। प्रबल बुद्धि, विख्यात, राज-आश्रय, उत्तम लोगों की सङ्गति, नित्य मिष्टान्न, नाना प्रकार के वस्त्र, धान्य पदार्थ, खेती, गाँव, घर आदि प्राप्त। मंत्रवेत्ता, शास्त्रज्ञाता, अल्प विद्या, अल्प सन्तान।

6. **लाभ में शुक्र का फल** - गुणी, अग्निहोत्री, कामदेव के समान दिव्य, सुख का पात्र, हास्य में प्रीति, देखने में सुन्दर। दूसरों की औरतों के साथ रहने वाला, अनेक सुख, श्रेष्ठ गीत और हास्य में प्रीति, नित्य यात्रा की चिंता करने वाला, श्रेष्ठ कर्म और धर्म में चित्त, सुखी, परस्त्रीरत, श्रेष्ठ रत्नों से युक्त, स्वस्थ चित्त, शोकहीन, बहुत धन और सेवक।

7. **लाभ में शनि का फल** - धनवान्, विचारवान्, भोगी, शीत प्रकृति, सदा प्रसन्न, बड़ा सुशील, बालपन में दीर्घजीवी, अंत तक धनी, अच्छी आय, रोगहीन। काले घोड़े, इन्द्रनील, मणि, पूर्ण वस्त्र, बड़े हाथी का लाभ। चतुष्पद युक्त, चोरों से रिश्वत ले खोटे काम से, झूठ बोलने से, वकीली करने से, बहुत धन व पदार्थ मिले। स्थिर सम्पदा, पृथ्वी से लाभ, शूरवीर, कारीगरी से युक्त।

8. **लाभ में राहु का फल** - इन्द्रियजित्, श्याम रंग, देखने में सुन्दर, थोड़ा बोलने वाला, परदेश वासी, शास्त्रों का ज्ञाता, बड़ा चपल, बड़ा निर्लज्ज। उन्नतिशील, बहुत सन्तान, दीर्घायु, कर्म रोगी। सब प्रकार के धन का लाभ, अधिक सौख्य, राजाओं से अनेक मान वस्त्रोदक सुवर्ण, चतुष्पद युक्त, विजय, मनोरथ प्राप्त, ऋणी, बेकार, कलह-प्रिय, कर्णरहित, वाहनयुक्त, म्लेच्छ और पतितजनों से लाभ नहीं, स्थिर रहने वाला। यदि पुत्र हो, तो जातक के वृद्ध होने तक जीवित रहे।

9. **लाभ में केतु का फल** - श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ विद्या, दर्शनीय स्वरूप, श्रेष्ठ भोगों से युक्त, श्रेष्ठ तेज, सुन्दर वस्त्रों सहित, गुदा में रोग, दुष्ट सन्तान। भाग्यशाली, अधिक विद्याओं का जानने वाला, दर्शनीय सुन्दर शरीर, शाल, दुशाले आदि सुन्दर वस्त्रों से परिपूर्ण, बड़ा प्रतापी, स्वयं डर से व्याकुल, सन्तान भाग्यहीन, सब वस्तुओं का लाभ। धन संग्रह करे, सद्गुण प्राप्त करे। सुभोगी, अच्छे पदार्थ प्राप्त करे। प्रतापी, परप्रिय, अन्यजन से वंदित, सन्तुष्ट चित्त, समर्थ अल्पभोगी, शुभक्रिया तथा आचारवान्।

व्यय भाव में ग्रहों का फल -

1. **व्यय में सूर्य का फल** - मूर्ख, अतिकामी, परस्त्री, विलासी, पक्षियों को मारने वाला, दुष्ट चित्त, कुरूप, राजा से प्राप्त धन, कथा वाचकों का विरोधी, कंधे में रोग, अतिदुर्बल अंग। पिता का द्वेषी, नेत्ररोगी, पुत्र और धनरहित, वामनेत्र पीड़ा, बड़ा खर्चीला, रोगी, शरारती, परस्त्रीगामी, व्यसनी, राजा से उसका धन हरण।

2. **व्यय में चन्द्र का फल** - दुर्बलांग, निरन्तर कफ रोग, क्रोधी, धनरहित, स्वक्षेत्री या गुरु क्षेत्री - इन्द्रियों का दमनकर्त्ता, बड़े दाँत वाला, त्यागी, दुर्बलांग, सुखभोगी, नीच का संग। द्वेषी, दु:खी, अपमानित, अकर्मशील, श्रेष्ठशील और मित्ररहित, आँखों में विफलता, शत्रुवृद्धि, पापबुद्धि, बहुभक्षी, कुल में अधम, मद्य पीने वाला, विकारी, शूद्र और अङ्गहीन, कृष्णपक्ष का जन्म हो, तो कृपणता बढ़ती है। क्षीण चन्द्र उसका धन हरे, पूर्णचन्द्र हो, तो धनवृद्धि।

3. **व्यय में मंगल का फल** - परधन लेने का इच्छुक, चंचल नेत्र, चपल बुद्धि, विहार करने वाला, हास्य करने वाला, बड़ा प्रचण्ड, परस्त्रीगामी, गवाही देने वाला, कर्मों में परिपूर्ण, दोषयुक्त नेत्र, स्त्रीरहित, चुगलखोर, कटु वचन भाषी, जालिम, क्रोधी, सदा परेशान। मित्रों से वैर करने वाला, नेत्ररोगी, क्रोधी, धन का नाशक, बन्धनभागी, थोड़ा तेज वाला। वामकर्ण रोग, वामनेत्र में रोग, स्त्री की अधिक अंगता, कमर में घाव, क्षत्रिय वर्ग से धन का खर्च, खोटे कर्म आदि का भय।

4. **व्यय में बुध का फल** - विकल शरीर, दरिद्री, दूसरे के धन व स्त्री में बहुत मन, व्यसनों में अलग, सदा उपकारी, दु:खी, विद्यारहित, अपमानित, क्रूर, अकर्मी। अशुद्ध, गुणवान्, नुकसान वाली बातें करे, किसी की बातों को न सहे। दयाहीन, दु:खी, बेहूदा, घूमने वाला, दयाहीन, स्वजनरहित, अपने काम में चतुर, अपने पक्ष को जीतने वाला, निरन्तर धूर्त, मलिन, खर्च करने वाला, रोगी, भाई से युक्त, पाप में रत, पराधीन, पतित, राजा की पीड़ा से संतप्त, निद्रा से मुक्त, क्रूर।

5. **व्यय में गुरु का फल** - बाल्यावस्था में हृदयरोग, उचित दान करने में बहिर्मुख, कुल और धन से युक्त, पापस्थानी हो, तो बड़ा दंभी, पाखण्डी, दूसरे से घृणा करें, दुर्मुखी, सन्तानहीन, पापयुक्त, आलसी, नीच, दरिद्री, कम बोलने वाला, मूर्ख, निर्लज्ज, बुरे वचन बोलने वाला, आलसी, बुरे कर्मों में खर्च, रोगी, परिश्रमी, पराये कर्म को करने वाला, बंधु-वैरी, नीचों की सेवा, गुरु-वैर, दुर्जन। चार्वाक मत, चञ्चल, घूमने वाला, खल बुद्धि। अधिक खर्च करने वाला, सेवा करने में पण्डित, बड़ा क्रोधी, आलसी, लोक में विग्रह करने वाला।

6. **व्यय में शुक्र का फल** - प्रदर रोग से मुक्त, अप्रत्यक्ष कपट में तत्पर, चित्त, हीन बल, सदा मलिन, योगी, धनी और द्युतियुक्त। श्रेष्ठ कर्म के मार्ग को त्यागने वाला, कामदेव में चित्त, दया और सत्यरहित, व्यय से युक्त, मित्र और गुरु का विरोधी, भाइयों में झूठ बोलने वाला, गुणहीन। बन्धुनाशक, व्यभिचार, बुद्धि, दरिद्र। श्रद्धाहीन, दयाहीन, रोगी, स्थूलदेह।

7. **व्यय में शनि का फल** - पंचायत का प्रधान, रोगी, हीनांग, अति दु:खी, जाँघ में घाव, बड़ा क्रूर बुद्धि, दुर्बल अंग, पक्षियों को नित्य मारने वाला, निर्लज्ज, दरिद्र, सन्तानहीन, अंग में दोष, मूर्ख, शत्रुओं से पराजित, दयाहीन, धनहीन, खर्च से दु:खी, सदा आलसी, नीच संग, अंग-भंग से सौख्य रहित। कृतघ्न, द्रव्यहीन, भाइयों से वैर, कुवेष, चंचल। कृपण, बुरे आचरण, निर्धन, आलसी। नीच कर्म में मन, पापी, अंगहीन, भोग-विलास की लालसा, दुष्टों से प्रीति।

8. **व्यय में राहु का फल** - धर्म अर्थ से रहित, अनेक दु:खों को भोगने वाला, स्त्रीहीन, परदेशवासी, सुखहीन, बुरे नख, बुरे वेष में रहना। गुप्त पाप करने वाला, अधिक खर्च, पानी के रोग से पीड़ित, नेत्रों का रोगी, पैरों में घाव, प्रपंच करने वाला, प्रीतियुक्त, दुष्टजनों से प्रीति, मध्यम पुरुष की सेवा करता है। कलह प्रिय, बेकार, कर्जदार, गरीब, शीलरहित, सम्पत्तिवान्, विकलदेह, साधु, पूर्व स्थित धन का नाशक, नीच कर्म, अनर्थ में खर्च, पाप बुद्धि, कपटयुक्त, कुल का दोष देने वाला।

9. **व्यय में केतु का फल** - गुप्त रूप से पाप करे, बुरी बातों में धन खर्च, धन का नाशक, नीतिविरुद्ध, नेत्र रोगी, पेडू, लिंग, गुदा, चरण में पीड़ा, रोग से शरीर पीड़ित, मामा से किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं होती, राजा के समान भाग्यशाली, अच्छे कर्मों में व्यय करे, युद्ध में शत्रुओं का नाशक, पैर और नेत्रों में पीड़ा, राजा के तुल्य वैभव में खर्च करने वाला, शत्रु नाशक, मन से दु:खी, नाभि के नीचे और गुदा के रोग से पीड़ित, चञ्चल और शीलरहित।

अध्याय-6

सूर्यादि ग्रहों से विचारणीय विषय

सूर्य— पितृकारक, आत्मा, स्वभाव, आरोग्यता, राज्य, देवालय का सूचक है। नेत्र, यकृत, मेरुदण्ड, स्नायु, हड्डी को प्रभावित करता है। दाहिनी आँख, सिर से मुख तक के अंग को भी प्रभावित करता है।

रोग— पित्तोष्ण, ज्वर, देहताप, मृगी, हृदयरोग, नेत्रव्याधि, चर्मरोग, क्षय, अतिसार, विषैले पदार्थ की बीमारी तथा अग्नि, पित्त, पित्तज्वर व शस्त्र से मृत्यु प्रदान करता है। 1, 4, 5, 9 राशियों में विशेष बली, लग्न व दशम में विशेष महत्त्व 2, 4, 6, 8, 12 राशियों में बलवान् होकर भी निरर्थक है। धनाभाव में सूर्य कर्जा बढ़ाता है। कुटुम्ब सुख नहीं देता, व्यय भाव में, व्यापार में धन खर्च, चतुर्थ में चिन्ता, षष्ठ में शत्रुपीड़ा किन्तु शत्रु की पराजय, अष्टम भाव में धन का नाश व शरीर कष्ट देता है। सूर्य, शनि के साथ सम्बन्ध करने पर धन्धे का नाश व राज्य भय प्रदान करता है तथा झगड़ा व मुकद्दमा आदि से परेशान करता है। पितृ सुख कम मिलता है। अनेक प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न करता है। सूर्य से चतुर्थ में शनि अनेक आपत्तियाँ, सूर्य से दशम में राजभय तथा बार-बार धन्धे का परिवर्तन आदि योग बनाता है। सूर्य से शनि की साढ़े साती शत्रु राशि में भयंकर कष्टप्रद होती है। रवि व चन्द्र का केन्द्र-योग व त्रिकोण-योग राज्य सम्मान व कीर्ति प्रदान करता है। 3, 7, 11 राशियों में सूर्य व बुध की युति कुशाग्र बुद्धि व विद्या की प्राप्ति। सूर्य व शुक्र के योग से कला यान्त्रिक विद्या, सूर्य व गुरु की युति विद्वत्ता, सूर्य व मंगल की युति अग्नि सम्बन्धी कार्य, यदि सूर्य व मंगल दशम भाव में हों, तो दीर्घ उद्योगी, सूर्य से दशम स्थान में गुरु राज्य सम्बन्धी अधिकार प्रदान करता है। तुला राशि का सूर्य पैतृक सम्पत्ति की हानि करता है तथा सूर्य व शनि का योग पितृ सुख में बाधा एवं पिता व पुत्र के विचारों में भिन्नता रखता है। सूर्य और राहु का योग जिस भाव में होता है तब उस भाव से जो-जो विचारणीय विषय होते हैं उनमें अशुभ फलप्रद होता है। वैदिक यज्ञकर्त्ता, व्याघ्र, हरिण व चकवा, इनके पालन-पोषण से सूर्य सन्तुष्ट होता है।

चन्द्र— चन्द्र से मन का विचार होता है, चर राशि (1,4,7,10) में चन्द्रमा स्थित हो, तो मन में चंचलता अधिक होने से व्यक्ति भ्रमणशील, एक जगह स्थिर नहीं रहने वाला, बार-बार स्थान व धंधा बदलने वाला एवं भ्रमणशील धन्धे से लाभान्वित होता है। योग साधन प्रक्रिया में असफलता प्रदान करता है। अधिकार प्राप्त होने पर बुराई करे। 3,7,11 राशि में विद्याव्यसनी, सिंह राशि में अपने को बड़ा समझने लगता है, वृश्चिक राशि में बदला लेने की भावना पैदा करता है। जरा-सी बात में उद्विग्न हो जाता है, स्वभाव में चिड़चिड़ापन बना रहता है। 6,8,12 स्थान में बुरा प्रभाव देता है, क्षीणचन्द्र पापाक्रान्त चन्द्र 6वें भाव में सर्दी व जुकाम से पीड़ित रखता है। 8 या 12वें भाव में आर्थिक स्थिति बिगाड़ता है तथा मानसिक तनाव बनाये रखता है। केन्द्र व त्रिकोण में शुभफलकर्त्ता लग्न व सप्तम में प्रवासी व विलासी एवं अनेक स्त्रियों का उपभोग करने वाला होता है। 8वें भाव में जल में डूबने का या कफ सम्बन्धी बीमारी का कारण बन जाता है। सप्तम भाव में क्षीणचन्द्र पापाक्रान्त हो, तो अन्तर्जातीय विवाह की अधिक सम्भावना उत्पन्न करता है। अग्नि राशि व तीक्ष्ण नक्षत्र में 6,8,12वें भाव में अत्यन्त दु:खदायी होता है। चन्द्र व मंगल का योग लोगों की दृष्टि में धनी बनाता है। चन्द्र व बुध का योग 3,7,11 राशि में बुद्धिमान् व वक्ता बनाता है। चन्द्र व गुरु का योग अत्युत्तम होता है। 1,5,9,10,11 स्थान में यह योग संस्था की स्थापना, शिक्षा देना, अध्यात्म विद्याभ्यासी बनाता है तथा यश, मान व कीर्ति प्रदान करता है, सर्वदा यश, मान, प्रतिष्ठा बिगड़ने न पावे ऐसा चिन्तन बनाये रखता है। चन्द्र व शुक्र का योग अत्यन्त सुन्दर व विलासी जीवन प्रदान करता है, अनेक स्त्रियों का उपभोग करता है, यह योग सप्तम व लग्न में स्थित होने से अधिक प्रबल

होता है। चन्द्रमा व शनि का योग स्पष्ट वक्ता, छल-कपट करने वाले व्यक्तियों से दूर रखता है। व्यभिचार की प्रवृत्ति एवं अप्राकृतिक मैथुन क्रिया उत्पन्न करता है तथा सर्वदा उद्विग्न-सा रखता है। चन्द्र व सूर्य के योग से व्यक्ति चैन से नहीं रहने पाता। क्षीणचन्द्र (कृष्णपक्ष की 10 मी से शुक्लपक्ष की 5 मी तक) शुभफल कारक नहीं होता तथा सुयोग के फल में भी न्यूनता प्रदान करता है। चन्द्रमा छाती व गले में रोग उत्पन्न करता है, निद्रा के रोग, कफ रोग, अतिसार, पीठ का फोड़ा, मलेरिया, मन्दाग्नि, स्त्रियों से पीड़ा, कामला (पीलिया), मूत्र सम्बन्धी रोग, स्वप्नदोष, रक्तदोष जलोदर, पाण्डुरोग, सर्दी-जुकाम, अभिचार सम्बन्धी रोग आदि उत्पन्न करता है। विषूचिका, जलोदर, कफरोग, श्वास व त्रिदोष ज्वर से मृत्यु प्रदान करता है। चन्द्रमा से माता, कृषि मित्र चित्तवृत्ति, शारीरिक पुष्टता, राजानुग्रह व चतुर्थभाव सम्बन्धी विचार सम्पत्ति आदि का विचार होता है। कर्क व वृष राशि का शुभफलप्रद तथा वृश्चिक राशि का अशुभफलप्रद होता है। चन्द्र व राहु का योग चित्त को भ्रमित रखता है तथा यदा-कदा भूत-प्रेतादि बाधा भी करता है। चन्द्र उपचय स्थान (3,6,10,11) में शुभफलप्रद होता है। रजक, कृषक, जलजन्तु, खरगोश, हरिण, सारस, चकोर के पालन-पोषण से चन्द्र सन्तुष्ट होता है।

मंगल— मंगल अग्नितत्त्व है, पित्त प्रकृति मज्जा का स्वामी शुष्क ग्रह है। शक्ति, बल, भूसम्पत्ति, कृषि, धैर्य, छोटा भाई, पराक्रम, सेनापति, राजशत्रु का कारक है। द्वितीय भाव में निष्फल, दशम भाव में दिग्बली होता है। चन्द्र के साथ इसे चेष्टा बल मिलता है। जन्म समय में उपचय स्थान में बलवान् होकर स्थित हो, तो अनेक कार्य सिद्ध करता है। मंगल की जाति क्षत्रिय, तमोगुणी इसका कात्तिवीर्य देवता, पुरुषसंज्ञक लोगों को धोखा देने वाला क्रोधी क्रूर, विस्फोटक पदार्थों का स्वामी, तस्कर, युद्धस्थल, रसोईघर, मांस-विक्रेता का घर, अग्निस्थान, शस्त्रागार, गृहाधिपति, दक्षिण दिशा का स्वामी, 1,8,10,11,12 राशि में बली होता है। मंगल, हठी, साहसी, अपनी पराजय को स्वीकार नहीं करने वाला, युक्ति से दूसरों को लड़ाकर अपना कार्य सिद्ध करने वाला, खर्चीला, बेफिकर, सच्चा व्यवहार करने वाला, सत्यभाषणप्रिय, सुधारवादी, निष्कपटी और आचारभ्रष्ट है। सुनारी कार्य, औषधालय, रसायनशाला, सर्जरी, युद्धक्षेत्र, हत्या के स्थान आदि पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। मंगल - त्रिदोष, पित्तज्वर, नेत्ररोग, अग्नि, विष और शस्त्राघात से उत्पन्न रोग, नेत्ररोग, गुल्म, मृगी, मज्जादोष, चर्मरोग, शीतला (चेचक), प्रेत, गन्धर्व से भय के कारण रोग, तस्कर पीड़ा, फेफड़ा, गला ,जीभ, आँख, नाक, कान आदि के रोग, फोड़ा-फुंसी, गिल्टी, शैवगण व भैरव देवता के कुपित होने वाले रोग आदि रोग उत्पन्न करता है।

मृत्यु— अग्नि से क्षुद्र अभिचार होना, कुष्ठ शल्यचिकित्सा (ऑपरेशन) इनमें कोई भी रोग से मृत्यु होती है। मंगल और शनि की युति से भयंकर दुर्घटनाएँ होती है। धन भाव में मंगल व शनि की युति धन और कुटुम्बनाश, तृतीय में भाइयों की अकाल मृत्यु, चतुर्थ में माता, मित्र, भवन, वाहनादि की हानि, पञ्चम में गर्भपात, उदरपीड़ा, षष्ठ में शत्रुभय मात्र, सप्तम में स्त्रीनाश व परस्पर झगड़ा, अष्टम में धन नाश, नवम में पितृ-सुख में बाधा, अपकीर्त्ति, दशम में अनेक धन्धों में हानि, मानहानि, पितृसुख हानि, राजदण्ड, लाभ भाव में सन्तति हानि और व्यय भाव में निर्धनता, कर्ज बढ़े, राजदण्ड मिले। कर्क राशि का मंगल स्त्री के विषय में अप्रिय घटना करता है परन्तु दशम भाव में कर्क का मंगल सुखप्रद होता है। सिंह लग्न में कर्क का मंगल वक्री हो, तो फैक्ट्री व कारखाने का मालिक बनाता है। वैदेशिक धन्धे में भी लाभ देता है। यदि धनेश व लाभेश एवं लग्नेश भी चर राशि में हो, तो विदेश से विशेष लाभ होता है। मेष, सिंह और धनु राशि में अश्विनी मघा, मूल नक्षत्र में मंगल मनुष्य को कुलदीपक बनाता है। मिथुन का मंगल प्रबल वक्ता व स्वाभिमानी बनाता है। तुला राशि का मंगल अन्त:करण को स्फूर्त्ति प्रदान करता है। कुम्भ राशि में तत्त्ववेत्ता बनाता है। 3,7,11 राशि में मंगल जातक को अहंकारी बनाता है तथा अपने को गुरु से भी बढ़कर मानता है। 1,3,6 भाव में साहस, वीरता प्रदान कर झगड़ालू बनाता है।

विशेषकर सैनिक, सिपाहियों में यह योग मिलता है। कुण्डली में मंगलीक स्थानस्थ मंगल स्त्री का विनाश करता है परन्तु स्त्री के भी मंगली स्थान में मंगल स्थित हो, तो बचाव हो जाता है।

लाभ व पञ्चम घर में गर्भपात द्वितीय और द्वादश में धन नाश कर कर्जदार बनाता है। मेष, सिंह, धनु, मकर राशि का मंगल दशम भाव में अत्युत्तम फलकारक होता है। कुक्कुट, मेंढक, सूअर, चोर, गिद्ध, सियार को खिलाने-पिलाने से सन्तुष्ट होता है।

बुध— यह वाणी का स्वामी है। पृथ्वी तत्त्व, त्रिदोष धातुकारक, ज्योतिष, चिकित्साशास्त्र, गणितविद्या, शिल्प, लेखनकला, वकालत, वाणिज्यआदि में रुचि व ज्ञान रखने वाला हँसना-बोलना, भाषण में आनन्द देने वाला वाक्पटु, उत्साही, धूर्त धोखेबाज, वाहनसुख भोगी, नौकर-चाकरयुक्त, बेफिकर रहने वाला, बातूनी, दिल्लगीबाज, अध्यात्म विषय प्रेमी, इसके गुण धर्म हैं। बुध लग्न द्वितीय, पञ्चम, नवम व दशम में अधिक महत्त्वशाली होता है, द्वितीय भाव में विद्या सम्पन्न एवं वाचाल होता है। मिथुन राशि का बुध शक्तिशाली होता है, यह शास्त्रज्ञान, स्मरणशक्ति, ग्रन्थलेखन, वक्ता (भाषण देने के शक्ति) ये गुण प्रदान करता है। कुम्भ राशि में गूढ़ विषयक चिन्तन, तुला राशि में सभी प्रकार की विद्या में रुचि उत्पन्न करता है। कन्या राशि में बुध उच्च का होता है। उच्च राशि का बुध चतुर्थ भाव में अकस्मात भूमि व भवन की प्राप्ति प्रदान करता है। बुध सूर्य से अंशादि में आगे रहने पर अच्छा फल करता है, पीछे रहने पर उतना नहीं। बुध अस्त होने पर भी फलप्रद होता है। सूर्य व बुध की युति व्यापारी बनाता है। मंगल-बुध की युति असत्य बोलने की प्रवृत्ति बनाता है। बुध-गुरु की युति अध्यात्म-ज्ञान, विद्वत्ता, काव्य व ग्रन्थ रचना प्रदान करता है। बुध-शुक्र की युति ललित कला व यन्त्र रचना में सफलता देता है। बुध शनि की युति नपुंसकत्व व वीर्याल्पता करती है। चन्द्र-बुध की युति दिल्लगीबाज व मसखरा बनाती है, स्त्रियों में आसक्ति भी प्रदान करती है। बुध नपुंसक ग्रह होने के कारण अन्य सहयोगी ग्रह के गुण धर्म प्रगट करता है।

रोग— गले व नाक में होने वाले रोग, नेत्ररोग, वातज व्याधि, चर्मरोग, गुह्यरोग, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, प्रेतबाधा आदि रोग बुध प्रदान करता है।

मृत्यु— पाण्डुरोग, रक्ताल्पता, ज्वर, ताप, शूल, मस्तिष्क-विकृति रोग से तीर्थ स्थान में मृत्युकारक है। लग्न में राशि के मध्य भाग में स्थित बुध सदा यश व शक्ति प्रदान करता है। विष्णु की उपासना से लाभ हो। उत्तर दिशा से लाभ गरुड़, चातक, तोता, बिल्ली के पालन-पोषण से बुध सन्तुष्ट होता है।

गुरु— धर्म-कर्म, देव, ब्राह्मण, पुत्र, गृह, बन्धु, पौत्र, पितामह, मित्र, मन्त्री, कोष, विद्या, ज्योतिष, उदर, कान, श्रवणशक्ति, ज्ञान, अध्यापकत्व, परमार्थ, तीर्थ, सत्संग, योग, यश, आयु इनका कारक है। 6,8,12 भाव में निष्फल, 1,9,5,2,10,11 स्थान में शुभफलप्रद होता है। 3,7,12 राशि में विद्वान् 1,4,5,9,12 में सम्पत्तिप्रद मकर राशि में कर्त्तव्यनिष्ठ, सिंह, कुम्भ, बन्ध्या राशि में अस्त हो, तो सन्तान का अभाव, शनि व गुरु का योग सन्तान सुख में हानि, चन्द्र व गुरु का योग मान प्रतिष्ठावर्द्धक, मंगल ग्रह का योग सन्तान अल्पायु, 4,8,10,12 बहुप्रसव राशियों में कन्या सन्तान अधिक, पुरुष राशि में पुत्र सन्ततिप्रद, किसी भी ग्रह से केन्द्र नवम और पञ्चम में स्थित शुभफलकारक होता है। किसी ग्रह से त्रिकोणस्थ हो, तो विद्या कीर्ति परमार्थ की भावना उपदेशकत्व प्रदान करता है, केन्द्र में धन व अधिकारप्रद, नवम, पञ्चम में रवि, मंगल व शनि नहीं हो, तो सन्तानप्रद, लग्न, रवि व चन्द्र से एकादश हो, तो बहुत धन देता है।

रोग— गुल्म (आँतों का रोग), हारनिया, कर्णरोग, चक्कर आना, देवस्थान सम्बन्ध से पीड़ा, ब्राह्मण व देवता के कोप से रोग, यक्ष, किन्नरादि द्वारा रोग, गुरुजनों के अपराध से रोग देता है। सुखपूर्वक मृत्यु प्रदान करता है। कमर से जंघा तक रोग उत्पन्न करता है। पीपल, वृक्ष, कबूतर, हंस, अश्व के पालन-पोषण से प्रसन्न होता है। आकाशतत्त्व है, चर्बी व कफ की वृद्धि करता है।

शुक्र— यह स्त्री ग्रह है। जलतत्त्व, वीर्य, कलत्र, विवाह, कामदेव सम्बन्धी कार्य, काव्य, सुगन्धित द्रव्य, आभूषण, नेत्र, वाहन, शैयाविभव, राज्याधिकार और स्त्रीवर्ग का कारक है। यान्त्रिक विद्या, क्रीड़ा, सट्टा, शर्त लगाना, यन्त्र-तन्त्र, मारण मोहनादि क्रिया तथा रत्नपरीक्षण आदि का भी कारक है। लग्न में शुक्र विलासी, स्त्रियों का उपभोग करने वाला कामी, सुन्दर व लम्पट होता है। द्वितीय भाव में हो, तो स्त्री सुन्दर, पञ्चम में यन्त्र-तन्त्र विशेषज्ञ, संगीतप्रिय, अभिनयकर्त्ता, चित्रकलादि में निपुण, सट्टा व शर्त लगाने वाला, 11वें भाव में रत्नों का व्यापारी होता है। 6,8 भाव में निष्फल, 12वें भाव में जीवनोपयोगी सम्पूर्ण पदार्थ प्राप्त करने वाला, कर्क व वृश्चिक राशियों में अनेक स्त्रियों का उपभोग करने वाला, व्यभिचारी होता है। सिंह व धनु राशि में बलवान्, गौरवर्ण और तेजस्वी होता है। चन्द्र-शुक्र या मंगल-शुक्र का योग हो, तो अनेक स्त्रियों का भोगकर्ता, बुध-शुक्र का और गुरु-शुक्र का योग विद्वान् बनाता है। शनि शुक्र के योग से नीच वृत्ति उत्पन्न होती है। रवि शुक्र का योग हो और शुक्र रवि से आगे हो, तो राज्याधिकार प्राप्त करता है। बुध, शुक्र, गुरु वक्री हो, तो उन्नति तथा शनि-मंगल वक्री हो, तो हानि करते हैं।

रोग— कफज व्याधि, वातव्यादि, नेत्र पीड़ा, मूत्रकृच्छ रोग, गुप्तेन्द्रिय रोग, प्रमेह रोग, वेश्या समागम से रोग, योगिनी, मातृगण के कोप से रोग, मित्रता भंग होने से रोग आदि योगों से रुग्ण होता है। तृषा रोग, वीर्यजनित रोग से तीर्थस्थान में मृत्यु हो। जुलाहा (कपड़े बुनने वाला), वेश्या, मोर, महिष, तोता, गौ के पालन-पोषण से शुक्र सन्तुष्ट होता है।

शनि— सेवक (नौकर), वायु तत्त्व, म्लेच्छ भाषा, शूलरोग, आयु आपत्ति, मृत्यु, पश्चिम दिशा, आलस्य, चुगलखोरी, क्रोध, दीर्घ-जीवन, कृषिकर्म, मन्दबुद्धि, विश्वासघात, कलह, बन्धु विरोध, स्वार्थीपन, परदोष दर्शन, परद्रव्य हरण, लालच आदि का कारक है। चोरी, ठगी, मिथ्या भाषण, परपीड़ा, मायावी, वात प्रधान रोग, निर्धनत्व इनका भी कारक है। मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि में इसका विशेष महत्त्व है। बलवान् शनि अधिक धनदाता होता है। 1,4,5,8 राशि में साढ़ेसाती के समय विशेष कष्ट देता है। चन्द्र से साढ़ेसाती में पारिवारिक कष्ट तथा सूर्य की साढ़ेसाती में पिता पर, धन्धे पर, राजकीय कार्य में अशुभफलप्रद होता है। शनि सूर्य व मंगल का योग सदा घातक होता है। शनि जब रोहिणी नक्षत्र पर आता है तब समस्त विश्व में अशुभफलप्रद होता है। 1,5,9 स्थान में विलम्ब से सन्तान प्रदानकर्त्ता तथा व्यसनी होता है। सूर्य-शनि का योग पिता से विरोध उत्पन्न करना है शनि-बुध का योग सिविल इन्जीनियर बनाता है। शनि-गुरु का योग सन्तान बाधक, शनि-मंगल का योग वैज्ञानिक बनाता है, परन्तु दाम्पत्य जीवन उजाड़ देता है तथा भयंकर दुर्घटना का भी द्योतक है। शनि-चन्द्र का योग स्पष्ट भाषी बनाता है तथा अमानुषिक मैथुन क्रिया भी करवाता है। शनि-शुक्र का योग वीर्य सम्बन्धी रोग प्रदान कर सुखी जीवन बनाता है।

रोग— कफ और वात रोग पैरों में रोग, पिशाच व चोर से पीड़ा, लकड़ी व पत्थर से चोट लगने की पीड़ा, कुक्षि रोग, चित्त भ्रमित रोग उत्पन्न करता है। क्षुधा-तृषा की पीड़ा से विष, सर्प व अग्नि से जलकर वातरोग भयानक ज्वरादि रोग से विदेश में मृत्यु प्रदान करता है। तेली, नौकर, लुहार, नीच जाति, हाथी, कौवा, कोयल का पालन-पोषण करने से शनि सन्तुष्ट होता है।

राहु-केतु— चतुर कार्यसाधक, प्रचण्ड कल्पनाशक्ति, महत्वाकांक्षी, गूढ़ विद्याज्ञाता, स्पष्टवक्ता, निर्भीक, स्वार्थी, कट्टरपंथी, वाद-विवादकर्त्ता, उत्साही, सामाजिक कार्यकर्त्ता, असत्य वक्ता, नाना का सुख, गारुड़ीविद्या, भूत बाधा, अंग्रेजी शिक्षा, द्यूतक्रीड़ा, बाग-बगीचा निर्माता, बलात्कार, पितामह, देशाटन, विधवा सम्पर्क, विष व सर्पादि अस्त्र-शस्त्र।

केतु— तन्त्र-मन्त्र, गुप्तविद्या, विष, ज्वर, तत्त्वज्ञान, वैराग्य, तीर्थाटन, कलह, शिव की भक्ति, व्रण, चर्मरोग, शूल, क्षुधा, पीड़ा, माता-पिता, सास-ससुर, नाना-नानी, स्त्री आदि का कारक है। राहु क्रूर नक्षत्र में तृतीय भाव में भ्राता, चतुर्थ में माता, पञ्चम में सन्तान, सप्तम में स्त्री, दशम में पिता का मारक होता है। दाँत, होंठ से बाहर निकले हुए मोटे धनुषाकार होना राहु का लक्षण है। हिचकी आना इसका प्रधान रोग है।

रोग— हृदय रोग, कुष्ठ, विषजन्य रोग, पिशाच पीड़ा, नेत्र रोग, फाँसी, संक्रामक रोग, अपस्मार, क्षुधा, भूत-प्रेतादि, भयजन्य रोग, कारागार, बन्धनजन्य रोग, विषाक्त भोजन, विषैले जीव-जन्तु के काटने से चेचक, हिचकी रोग से मृत्यु राहु ग्रह करता है।

केतु अभिचार व अपघात से मृत्यु प्रदान करता है। शत्रुविरोध से पीड़ा, सन्धि रोग, दाद, खाज (खुजली), वातजव्याधि, भूतज्वरादि रोग से केतु पीड़ित करता है। राहु-केतु नैऋत्य दिशा के स्वामी हैं। बौद्ध भिक्षुक, गारुडी (सर्प पकड़ने वाला), गधा, मेंढ़ा, भेड़िया, ऊँट, सर्प, उल्लू आदि के पालन-पोषण से राहु-केतु सन्तुष्ट होते हैं। केतु, मछली के दान व रामनाम की गोलियाँ मछलियों को खिलाने से भी प्रसन्न होता है। राहु, काले कुत्ते को अपरान्ह में उड़द से बने पदार्थ, कंगन (इमरती), बड़े, पकोड़े आदि खिलाने तथा बहते जल में लकड़ी का कोयला शनिवार को अपरान्ह में बहाने से भी प्रसन्न होता है।

सूर्यादि ग्रहों से किस-किस विषय का विचार होता है -

सूर्य— पितृ सुख, राज्यकार्य, बड़े भाई का सुख, वैद्यक विद्या (चिकित्सा-शास्त्र), लघुयात्रा, राज्याधिकार, लोकमान्यता, प्रसिद्ध नेता, राष्ट्र के कर्णधार, जागीरदार, दीवान, वीरता, तत्त्वज्ञान, आत्मा, अपव्यय, औषधि, व्रण, नेत्रचिकित्सा, बड़प्पन, युद्ध में विजय, पर्वतीय प्रदेश भ्रमण, शिव-ईश्वर सम्बन्धी कार्य, हवन, यज्ञादि कर्म, पितृ-पक्ष, पूर्व-दिशा।

दान पदार्थ— रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, मूंगा, माणिक्य, गोधूम, गुड़, केसर, कमल, सुवर्ण, अश्व, सिंहासन, ताम्र, सवत्सागौ। दशमस्थ ग्रह सूर्य लग्न चन्द्र लग्न, जन्म लग्न से दशमेश के नवमांश के स्वामी से आजीविका विचार किया जाता है। इन तीनों लग्न में दशमेश व दशमेश के नवमांश के अधिपति में जो ग्रह बलवान् हो उसके दान पदार्थों का धन्धा करना लाभप्रद होता है।

चन्द्रमा— मातृ-सुख, यश-प्राप्ति, ज्योतिष-विद्या, जल-मार्ग से यात्रा, जल से उत्पन्न पदार्थ, सुगन्धित-वस्तु, वाहन-सुख, द्रव्य-सञ्चय, प्रजापक्ष, जनता, कृषि, धान्य, दया, हर्ष, हृदय की चेतनाशक्ति, ब्राह्मण, राज्यानुग्रह, आदि का विचार किया जाता है।

दान पदार्थ— श्वेत-वस्त्र, श्वेत-चन्दन, चावल, श्वेत-पुष्प, घृत, दही, कपूर, बैल, लवण, वंश पात्र, चाँदी, मोती, दूध, छत्र, चामर, पंखा आदि। यदि उपर्युक्त प्रकार से चन्द्रमा आजीविका (धन्धा) का स्वामी हो, तो इन दान पदार्थों के धन्धे में लाभ होता है।

मंगल— साहस, लघुभ्राता, अभिमान्, शत्रु, कीर्ति, युद्ध, नेतृत्व, धनुर्विद्या, युद्ध में काम आने वाले आयुध, शल्य-चिकित्सा, रक्तविकार, अग्नि, सेनापति, सेना-दुर्ग, भूमि, भवन, क्रोध, पित्तविकार, ऋण, स्वर्ण, कृषि, शिवभक्ति, नुक्ताचीनी, प्रलाप, परस्त्रीरत, व्रण, अधिकार प्राप्ति, दण्डनीति, विष, गन्धक, विस्फोटक पदार्थ, सामर्थ्य, विद्वेश, पाकशाला, अग्नि, चोर, मिथ्या-भाषण, पुत्र, गम्भीरता, कलंक आदि का विचार भौम से होता है।

दान पदार्थ— मसूर, गोधूम, केसर, कस्तूरी, शस्त्रास्त्र, रक्तवस्त्र, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, लाल बैल, गुड़, ताम्र, मूँगा, माणिक्य, रक्तदान।

यदि आजीविका-धन्धा-व्यापार का उपर्युक्त प्रकार से मंगल अधिपति हो, तो दान-पदार्थों के धन्धे में लाभप्रद होता है।

बुध— विद्या, बुद्धि, वक्तृत्व-शक्ति, स्वतन्त्र धन्धा, वाणी, लेखन-कला, वेदान्त विषय में रुचि, ज्योतिष-विद्या का ज्ञान, गणित-शास्त्र, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक, परराष्ट्रमन्त्री, व्यापारी, सर्राफा का धन्धा, वकील, तत्त्वज्ञान, विष्णुभक्ति, चाची, मामा, मामी, मौसी, बहिन की सन्तान, हास्य, चित्रलेखन आदि का बुध से विचार किया जाता है। क्रीड़ास्थल (खेल का मैदान) का भी कारक है।

दान पदार्थ— तोता-पिंजरा, ताम्बूल, पलाश, कांसा, सुवर्ण, सीप, गजदन्त, मूंग, पन्ना-रत्न, पुष्प, कपूर, फल, घृत आदि। आजीविका निर्धारण में बुध ग्रह हो, तो उपर्युक्त दान पदार्थों का भी धन्धा करने से लाभ होता है।

गुरु— सन्तति, सम्पत्ति, ज्ञान, अधिकार, वेदान्तज्ञान, लोकसंग्रह, ग्रन्थकर्त्ता, मल्लविद्या, परोपकार, धर्मगुरु, संस्कृत भाषा का ज्ञान, व्याकरण, न्याय, भूमिपति, धार्मिक कृत्य, उपदेशक, संस्थापक, वाहनसुख, सचिव, द्विज-देव-भक्ति, सदाचार, तप, सम्मान, कर्मयोग आदि का गुरु कारक है।

दान पदार्थ— पीत वस्त्र, पीत धान्य, पीत फल, पीत पुष्प, हल्दी, स्वर्ण, मधु, लवण, गज, छत्र, धार्मिकग्रन्थ, वाहन, केसर, मधु, केला आदि गुरु के दान पदार्थ है। यदि गुरु आजीविका का स्वामी हो, तो उपर्युक्त दान पदार्थों के धन्धे से भी लाभ होता है।

शुक्र— प्राचीन संस्कृति का अभिमान, स्त्री, संगीत कला, सुन्दरता प्रेमी, कला-कौशल, सुगन्धित द्रव्य, रतिक्रीड़ा प्रिय, स्वतन्त्र-धन्धा, राज्य कार्य, अलंकार, यान्त्रिक विद्या, व्यभिचार, कुटुम्ब, नेत्र, देश की सम्पत्ति, ऐश-आराम, शेयर बाजार, वाहन, शयनगृह, मन्त्रित्व, स्त्री संयोग, देवालय, व्याख्याता, विनोद, वेश्यारति, वशीकरण, गारुडी विद्या, इन्द्रजाल, यश, देवी की उपासना आदि का कारक शुक्र है।

दान पदार्थ— श्वेत पुष्प, चावल, सुगन्धित द्रव्य, रंग-बिरंगे वस्त्र, घृत, दही, स्वर्ण, चाँदी, हीरा, गौ, भूमि, शैय्या, श्वेत वस्त्र, स्वादिष्ट भोजन आदि। शुक्र आजीविका का पद ग्रह हो, तो इन दान पदार्थों के धन्धे में भी लाभ देता है।

शनि— आयुष्य, दुष्ट बुद्धि, घातकर्म, लोभ, मोह, रोग, राजदण्ड, कैद, उद्योग हानि, दासत्व, नीच विद्या, कृषि, श्रमिक वर्ग, खनिज, पराधीनता, विश्वासघात, प्रेस का स्वामी, नपुंसकता, मिथ्यावादी, अंग्रेजी शिक्षा, द्यूत, मद्यपान, मृत्युदण्ड, वातव्याधि, उदर, लीवर, बुढ़ापा, पराभव दुःख, पतित आचरण, नीचजन सम्पर्क, तन्द्रा, ऋण, कृषि, शूल रोग, ठगी, दरिद्रता, ऑपरेशन, लोह धातु की वस्तु, परपीड़ा आदि का शनि कारक है।

शनि के दान पदार्थ— महिष, लोहपात्र, कम्बल, नीलवस्त्र, गर्दभ, पादुका, दलिया, तिल, तेल, उड़द, कालावस्त्र, कुल्थी, जूता, कालीगौ, काले-नीले पुष्प, कस्तूरी, नीलम, काली छतरी आदि शनि के दान द्रव्य है। शनि आजीविका का स्वामी हो, तो उपर्युक्त दान पदार्थों के धन्धे में लाभ दिलाता है।

राहु— गारुडी विद्या, पितामह, आकस्मिक घटना, भूतबाधा, नाना अंग्रेजी-शिक्षा, श्मशान, तस्कर भेद, विधवा, वाल्मीक, चँवर, चर्म, ज्वर, अपस्मार, विशूचिका, देशाटन, बलात्कार, विष, सर्प, द्यूत, उड़द, सप्तधान्य, तिल, तेल, नीला-काला वस्त्र आदि का राहु कारक है।

दान पदार्थ— उड़द, सप्तधान्य, सर्पदान, कम्बल, अश्व, खड्ग, तिल, तेल, लोहपात्र, ताम्रपात्र, विषैले पदार्थ, काले पुष्प आदि राहु के दान पदार्थ हैं। राहु आजीविका का कारक हो, तो उपर्युक्त पदार्थों के धन्धे में लाभ होता है।

केतु— मन्त्र, तन्त्र, गुप्त विद्या, मन्त्र सिद्धि प्रयत्न, गंगा स्थान, आत्मज्ञान, विष, ज्वर, शंका, वैराग्य, तीर्थाटन, क्षोभ, शिवभक्ति, गुहा-प्रवेश, चिता, माता-पिता, नाना-नानी, सास-ससुर, व्रण, चर्मरोग, शूल, क्षुधा आदि का केतु कारक है।

दान पदार्थ— कम्बल, कस्तूरी, लहसनियारत्न, शस्त्र, उड़द, तिल, तेल, रक्त, स्वर्ण, लौह, सप्तधान्य, बिडाल (मार्जार), काले पुष्प आदि केतु के दान पदार्थ है।

लाभ भाव में ये ग्रह हों, इनकी दृष्टि हो या इनका षड्वर्ग हो, तो फल –

सूर्य - राजा से, चोरों से, मुकद्दमे में, डिगरी कराने से या चौपायों से धन लाभ होता है।

चन्द्र - जलाशय, स्त्री, वाहन से धन लाभ।

मंगल - उत्तमोत्तम आभूषण, सुवर्ण, अग्निकार्य, शस्त्रादि से धन लाभ।

बुध - लेखनकार्य, शिल्पकार्य, कविता, वणिक् समाज और अश्व व्यापार से धन लाभ।

गुरु - यज्ञकर्म, राजानुकम्पा, साधुजन व सुवर्ण से द्रव्य लाभ।

शुक्र - वेश्यावर्ग, विदेश, सुवर्ण, चाँदी, रत्नादि से बहुत लाभ।

शनि - नीलवर्ण की वस्तु, लौह, भैंस, हाथी, से धन लाभ।

व्ययभाव फल–

व्यय भाव में शुभग्रह हो, तो त्यागी, कृषक, धर्मात्मा होता है।

व्ययेश लाभ में हो, तो कृपण होता है।

व्यय में शनि, मंगल से युक्त हो, तो धन का नाश होता है।

अष्टमेश व्यय में रोग के कारण द्रव्य खर्च।

दशमेश व्यय में हो, तो सरकारी काम में या बड़प्पन में द्रव्य खर्च हो।

चन्द्र कुण्डली में द्वादश भावगत ग्रहों का फल -

सूर्य चन्द्र एक साथ - परदेश निवासी भोगी। चन्द्र से द्वितीय सूर्य - अनेक भृत्य रखे, बड़ा यशस्वी राज्यमान्य। चतुर्थ में सूर्य - मातृहन्ता, माता से विरोध रहे। पञ्चम में - प्रथम सन्तति नाश, कन्या का विनाश। तृतीय में - पवित्र राजा के तुल्य। षष्ठ में शत्रुजित्। सप्तम में - सुन्दर भार्या, सुशील आचरण, तपस्वी। अष्टम में - सदा दुःखी, अनेक रोगग्रस्त। नवम में - सत्यभाषी, बन्धु विरोधी। दशम में - द्वार पर धनी खड़े रहें। लाभ में - सर्वत्र प्रसिद्ध, बहुज्ञ। द्वादश में - काना।

चन्द्र से मंगल की युति प्रथमभाव में - लाल नेत्र रुधिर श्राव। चन्द्र से द्वितीय भाव में मंगल - भूस्वामी पुत्र खेती करे। तृतीय में मंगल - 4 भाई बड़ा सुशील। चतुर्थ में - सुख से रहित, दरिद्री, पत्नी मर जाती है। पञ्चम में - पुत्रहीन। षष्ठ में - सदा रोगी, अधर्म में फँस कर लोगों से शत्रुता। सप्तम में - दुष्ट स्वभाव की स्त्री। अष्टम में - हिंसक, पापी। नवम में - धनी, वृद्धावस्था में पुत्र हो। दशम में - वाहन सुख। एकादश में - राजदरबार में प्रसिद्ध, यशरूप से सम्पन्न। द्वादश में - माता को सदा कष्ट देने वाला।

चन्द्र स्थान से बुध फल -

चन्द्र बुध का योग - मतिभ्रष्ट, स्थानभ्रष्ट। चन्द्र से द्वितीय भाव में बुध - बन्धु तथा धन की प्राप्ति, शीतरोग से मरण। तृतीय में - सम्पत्तियुत राज्य तथा सत्संग का लाभ। चतुर्थ में - सुखी जीवन, मातृपक्ष से लाभ। पञ्चम में बुध - बुद्धिमान्, सुन्दर, कामी, कटुभाषी। षष्ठ में - कृपण, कायर। सप्तम में - धनाढ्य, दीर्घायु, कृपण, स्त्रियों के वशीभूत। अष्टम में - शीत प्रकृति, शत्रुजित्। नवम में - धर्म विरोधी, पुरुषों से विरोध रखे। दशम में - राजयोग, कुटुम्ब सुख। एकादश में - 11वें वर्ष में विवाह, सदा लाभान्वित। द्वादश में - कृपण, पुत्र सुखरहित, शत्रु से पराजित।

चन्द्र से द्वादश भावों में गुरु— चन्द्र गुरु की युति - धनी, पराक्रम, स्वस्थ। द्वितीय में गुरु - दीर्घायु, धर्मात्मा, प्रतापी, राजा से मान प्राप्त। तृतीय में - स्त्रियों का प्रिय, 17वें वर्ष में द्रव्य प्राप्ति। चतुर्थ में - सेवक, मातृपक्ष से कष्ट। पञ्चम में - उग्र स्वभाव, स्त्री व पुत्र सुख। षष्ठ में - अव्यवस्थित, विदेश भ्रमण, गृहसुख अभाव। चन्द्रमा से सप्तम में गुरु - दीर्घजीवी, नपुंसक, अनेक भवन, पाण्डु रोगी। अष्टम में - रोगी, सदा दु:खी, पितृपक्ष श्रेष्ठ। नवम में - धर्मात्मा, धनी, देवद्विज भक्त। दशम में - पुत्रहीन, तपस्वी, स्त्री का त्याग। एकादश में - पुत्र नृप तुल्य। द्वादश में चन्द्रमा से गुरु - कुटुम्ब विरोधी।

चन्द्रमा से द्वादश भावगत शुक्र -

चन्द्र शुक्र की युति - जल में डूबकर या हिंसा से मृत्यु सन्निपात रोग। चन्द्र से द्वितीय भाव में शुक्र - धनी, ज्ञानी। तृतीय में - म्लेच्छ द्वारा द्रव्य प्राप्ति, धर्मात्मा, बुद्धिमान्। चतुर्थ में - वृद्धावस्था में निर्धन, दुर्बलांग, कफ अधिक। पञ्चम में - यशहीन, कन्या संतति, धनी। षष्ठ में - शत्रु से पराजित, शुभकार्य में द्रव्य व्यय। सप्तम में - शंकालु, स्वल्प वीर्य। अष्टम में - दाता, भोक्ता, धनी, प्रसिद्ध, योद्धा। नवम में - बहन-भाई अधिक, मित्रयुक्त। दशम में - दीर्घायु, माता-पिता को सुख देने वाला। एकादश में - दीर्घायु, शत्रु व रोग रहित। द्वादश में - ज्ञानहीन, लम्पट, परस्त्रीगामी।

चन्द्रमा से द्वादश भावों में शनि का फल -

चन्द्र शनि का योग प्रथम भाव में - निर्धन, बन्धु नाश, अत्यन्त दु:खी। द्वितीय भाव में - बकरी का दूध पीकर जीने वाला, माता को कष्ट देने वाला। तृतीय भाव में - बहुत सन्तति होकर मर जाती है। चतुर्थ में - शत्रुजित्, पुरुषार्थी। पञ्चम में - श्यामवर्ण और श्रेष्ठ स्वभाव की पत्नी मिले। षष्ठ में - अल्पायु, अत्यन्त दु:खी। सप्तम में - धर्मात्मा, दानी, बहुत स्त्रियों का विवाह करने वाला। अष्टम में - पितृ कष्ट। नवम में - शनि की दशा में धन देता है। दशम में - धनी, कृपण। लाभ में - अधर्मी, अतिकष्ट पाने वाला। द्वादश में - धर्महीन, धनहीन।

चन्द्र से राहु का फल -

चन्द्र से प्रथम नवम और दशम स्थान में राहु - वृद्धावस्था में धनी।

चन्द्र से द्वितीय व एकादश में राहु - धन और परिवार होते हुए भी दु:खी।

चन्द्र से चतुर्थ व सप्तम में राहु - माता-पिता को अत्यन्त कष्ट देता है।

चन्द्र से पञ्चम में - जल से मृत्यु भय, बार-बार विपत्ति आना।

चन्द्र से षष्ठ और द्वादश में राहु - धन-धान्य से पूर्ण, राजा का मन्त्री होवे।

अध्याय-7

द्वादश भावों में भिन्न-भिन्न राशियों का फल

(१) लग्न में राशियों का फल -

1. लग्न में मेष - लाल शरीर, कफ प्रकृति, अधिक क्रोधी, कृतघ्न, मंद बुद्धि, स्थिरता युक्त, स्त्री तथा नौकरों से सदा पराजित।
2. लग्न में वृष - मानसिक रोग, स्वजनों से अपमानित, प्रिय पुरुषों से वियोग, कलह युक्त, सदा दुःखी, शस्त्र से घात, धन क्षय।
3. लग्न में मिथुन - गौरांग, स्त्री में आसक्त, राजा से पीड़ित, दूत का कर्म करे, प्रिय वाणी, बड़ा नम्र, गान विद्या में प्रवीण, सिर के बाल उत्तम।
4. लग्न में कर्क - गौर अंग, मित्राधिक्य, पुरुषों की इच्छा पूरी करने वाला, हंसमुख स्वभाव, नदी में तैरने का प्रेमी, बड़ा बुद्धिमान्, पवित्र, क्षमावान्, धर्म में रुचि, सेवा करने योग्य।
5. लग्न में सिंह - पांडुवर्ण, वायु और कफ से पीड़ा, मांस प्रिय, बड़ा तीक्ष्ण, शूरवीर, बड़ा ढीठ, निरंतर भ्रमण करने वाला।
6. लग्न में कन्या - वात-पित्त श्लेष्म युक्त, प्रिय स्त्री से पराजित, वासना से दूर भागने वाला, मायावी, शुभ कांता की भावना करने वाला, काम से पीड़ितांग।
7. लग्न में तुला - कफ युक्त, सत्य वक्ता, सदा स्त्रियों से स्नेह, राजा से मान, देव पूजन में तत्पर।
8. लग्न में वृश्चिक - क्रोधी, वृद्धता युक्त, राजा से पीड़ित, गुणों से युक्त, शास्त्रकला में अनुरागी, शत्रुगणों को मारने वाला।
9. लग्न में धनु - राजा से सम्बन्ध रखने वाला, कार्य करने में प्रवीण, देव ब्राह्मण अनुरागी, घोड़ों को रखने वाला, सुहृदजनों का काम करने वाला, घोड़े के समान जंघा।
10. लग्न में मकर - संतोषी, बड़ा डरपोक, पाप करने में निरत, कफ और वायु को पीड़ा, लंबा शरीर, शत्रुजनों से ठग विद्या करने वाला।
11. लग्न में कुंभ - धैर्ययुक्त, वात प्रकृति, अधिक जलसेवी, मित्र के उपकार के प्रति कृतज्ञ, मैथुन प्रिय, सज्जन अनुरागी, सब पुरुषों का प्रेमी।
    सत्याचार्य ने कुम्भ लग्न अच्छा नहीं कहा है। यवनाचार्य ने समस्त कुम्भ लग्न को नहीं, किन्तु लग्न में कुम्भ के द्वादशांश को अशुभ कहा है। विष्णुदत्त कहते हैं कि यवन मत से कुम्भ द्वादशांश बुरा है, तो वह सभी लग्नों में आयेगा तो क्या सभी बुरे हो जायेंगे ? इसीलिये उचित यही है कि कुम्भ लग्न ही जन्म में अशुभ है केवल कुम्भांशक बुरा नहीं है।
12. लग्न में मीन - जलक्रीड़ा प्रेमी, बड़ा विनीत, स्त्री सहवास को उत्सुक, बड़ा पंडित, छोटा शरीर, बड़ा प्रचण्ड, पित्ताधिक्य, बड़ा यशस्वी।

(२) धन भाव में राशिफल -

1. धन में मेष राशि - पुण्य से एकत्र धन, सुन्दर नीतिवान्, चतुष्पद पालन से धन, पंडित, एक अच्छा पुत्र हो।

2. धन में वृष - खेती से धन प्राप्त, चौपाये, अन्न मणियों से सदा धन प्राप्त या इनको पास रखने वाला।
3. धन में मिथुन - स्त्री के निमित्त से धन प्राप्त करे, सुवर्ण-चाँदी के आभूषण और बहुत वाहन युक्त, साधुजनों का प्रिय।
4. धन में कर्क - वृक्ष, जल से उत्पन्न किया धन, जल से भय, वन के कंदमूल आदि भोजी, न्याय से धन संग्रहकर्ता, पुत्रों से प्रीति।
5. धन में सिंह - वनवासी, धनवान्, तप करने वाला, मान पाने वाला, सब का उपकारी, अपने पराक्रम से धन एकत्र करने वाला।
6. धन में कन्या - राजा से धन प्राप्त, सुवर्ण मोती आदि तथा हाथी, घोड़े आदि से उत्पन्न किया धन होता है।
7. धन में तुला - पुण्य प्रताप से पाषाण से भी धन निकले, जमीन के व्यापार से, शारीरिक परिश्रम से तथा खेती द्वारा उत्पन्न धन को एवं अन्य उद्योग द्वारा धन को पाता है। खरीदने-बेचने से या न्याय से इकट्ठा किया धन होता है।
8. धन में वृश्चिक - स्वधर्म पालन, काम इच्छुक, सदा विचित्र बात कहने वाला, ब्राह्मण देव भक्त।
9. धन में धनु - स्थिर विधान से उत्पन्न किये धन को पाने वाला, उत्तम चतुष्पद पालन से धन, यशस्वी, रस से उत्पन्न वस्तुओं को खाने वाला, धर्म विधान का लोभी।
10. धन में मकर - अनेक प्रपंच से तथा अनेक उपायों से धन पाने वाला एवं राज सेवा से, खेती से, विदेश जाने से धन प्राप्त करने वाला।
11. धन में कुम्भ - फूल-फल से तथा जल से अधिक धन हो। किसी धनिक से प्राप्त धन को साधु सेवा और परोपकार में लगावे।
12. धन भाव में मीन - नियम उपवास करने से, विद्या के प्रभाव से, किसी जगह खजाने के मिल जाने से और माता-पिता के संचित धन के प्राप्त होने से बड़ा धनवान् हो।

(३) तृतीय भाव राशिफल -

1. तृतीय भाव में मेष - ब्राह्मणों का मित्र, परोपकारी, कथा श्रवण में पवित्र, विद्वान्, राजपूज्य।
2. तृतीय में वृष - राजा का मित्र, प्रतापी, अतिथि को धन देने वाला, यशस्वी, विद्वान्, कवि, विप्र अनुरागी, अच्छे धन वाला, भूमि पशु खजाने वाला।
3. तृतीय में मिथुन - श्रेष्ठ वाहन, स्त्रियों को प्रिय, सत्यवक्ता, उदार चित्त, कुलीन राजपूज्य।
4. तृतीय में कर्क - वैश्य के घर मित्र लाभ करे, कृषक, धर्म कथा अनुरागी, सुशील, अहंकारी।
5. तृतीय में सिंह - शूरवीर, दुष्ट मित्र, श्रेष्ठ धन का लोभी, प्राणियों को मारने की चेष्टा करने वाला, पाप चर्चा करने वाला, प्रचंड वाक्य भाषी, गर्वरहित।
6. तृतीय में कन्या - शास्त्र विद्या अनुरागी, सुशील, मित्रों से स्तुति प्राप्त, विप्र प्रिय, अतिक्रोधी, देव गुरुभक्त।
7. तृतीय में तुला - पापी मित्र, चंचल स्वभाव, चपलता की बातें करने वाला, अनेक मनुष्य युक्त, अल्प सन्तान।
8. तृतीय में वृश्चिक - इसकी मित्रता पापी से, दरिद्री से, कृतघ्न से, अकारण झगड़ा करने वालों से तथा विरुद्ध आचरण करने वालों से होती है।

9. तृतीय में धनु - राजा का मन्त्री, शूरवीर, राजा का सेवक, धर्मात्मा, प्रसन्न मूर्ति, जित चित्त, दयालु, युद्ध कोविद, मनुष्यों से धन प्राप्त करने वाला।
10. तृतीय में मकर - शांत प्रकृति, अनेक पुत्र, देव गुरु मित्र का प्रेमी, धनी पंडित विद्वान्।
11. तृतीय में कुम्भ - व्रती, कीर्तियुक्त, क्षमाशील, सत्यवक्ता, सुशील, गीत प्रिय, ग्राम का अधिकारी और खल होता है।
12. तृतीय में मीन - बड़ा धनी, अनेक पुत्र, पुण्य और धन सम्पन्न, अतिथि प्रिय, सबको आनन्ददाता।

(४) चतुर्थ भाव में राशिफल -

1. चतुर्थ में मेष - चतुष्पदों से, दोपाये स्त्रीजनों से, विचित्र भोगों से, अन्नपान आदि से अपने पुरुषार्थ से उपार्जित धन से सौख्य प्राप्त, नौकरों से सुख प्राप्त हो।
2. चतुर्थ में वृष - अनेक मान्य पुरुषों से, शूरवीरता से, राजसेवा से, प्रिय उपचारों से, अनेक नियम-व्रत करने से सुख पाने वाला।
3. चतुर्थ में मिथुन - स्त्रियों के लिये विविध सुखों को प्राप्त, जलक्रीड़ा तथा वन फूलफल आदि से तथा बहुत से पुष्प और वस्त्रों से सुख प्राप्त।
4. चतुर्थ में कर्क - रूपवान्, सुभग, सुशील, स्त्रियों को सम्मत, सर्वगुणसम्पन्न, विद्या में प्रवीण, मनुष्यों को प्रिय तथा जल से उत्पन्न, कूप, तालाब व बगीचा आदि से सुख।
5. चतुर्थ में सिंह - अतिक्रोध के कारण कभी सुख न पावे, कन्या संतान हो, दरिद्रता हो, शीलरहित।
6. चतुर्थ में कन्या - बहुत धन होने के कारण कुमित्र संगी, चुगलों के संग से, चोरी के निमित्त से और मोह उच्चाटन आदि से सुख नहीं पाता।
7. चतुर्थ में तुला - सौम्य-सरल स्वभाव, शुभ कर्म में दक्ष, विद्या विनीतवान्, सुख सम्पन्न, प्रसन्न चित्त, अनेक धन सम्पन्न।
8. चतुर्थ में वृश्चिक - विपत्तियुक्त, तीक्ष्ण शत्रु से भयभीत, बहुत सेवा करने वाला, पराक्रम के घमंड से रहित, बड़ा चतुर, बुद्धिमान् मनुष्यों से हीन।
9. चतुर्थ में धनु - संग्राम में सुखी, संग्राम कीर्तन से, विचित्र घोड़ों से, अपने उद्यम से सुख पावे या धन प्राप्त करे।
10. चतुर्थ में मकर - जल सेवन से, बावली, तालाब, बगीचा आदि से सम्बन्ध से सुख, प्रधान मित्रों के उपचारों से व पिता की सेवा से सुख का भागी हो।
11. चतुर्थ में कुम्भ - स्त्री के आश्रय से, मिष्ठान्न पान से, फल-शाक-पत्र से, चतुराई के वाक्यों से, उत्साह करने वाले उत्तम वाक्यों से अनेक प्रकार सुख पाने वाला।
12. चतुर्थ में मीन - जल के आसरे से, देवताओं के निमित्त से, सुन्दर वस्त्रों से, विचित्र (अनेक प्रकार के) सुंदर धनों से सुख पाने वाला, मन्द गमन करने वाला।

(५) पंचम भाव में राशिफल -

1. पंचम में मेष राशि - प्रिय मित्र के साथ, पुत्रों के साथ एक सम्पत्ति होने के कारण एवं देवपूजा के आश्रय से अनेक आनन्द मिले तब भी पापों में फँसने के कारण उसका मन व्याकुल रहे।
2. पंचम में वृष - स्त्री भाग्यवती, रूपवती, संतति रहित, तेजस्वी पतिव्रता मिले।

3. पंचम में मिथुन - पुत्र मन को सुख देने वाले, शीलयुक्त, गुणवान्, परस्पर प्रीतियुक्त विनय करने वाले महाबली ऐसे अनेक पुत्र हों।
4. पंचम में कर्क - बड़ी कीर्तियुक्त, महानुभाव, धनयुक्त, विनययुक्त, सर्वत्र प्रसिद्ध पिता को प्रसन्न करने वाले कई पुत्र हों।
5. पंचम में सिंह - क्रूर स्वभाव वाले, विशाल नेत्र वाले, मांस प्रेमी, कन्या उत्पन्न करने वाले, विदेश में रहने वाले, बड़े तीव्र स्वाभाव और भोजनप्रिय पुत्र हों।
6. पंचम में कन्या - पुत्र संतान से रहित, अपने पति को प्यारी, पुण्यवती, बड़ी ढीठ, शांत, पाप वाली, आभूषण की प्रेमी, अनेक कन्यायें हों।
7. पंचम में तुला - अति सुशील, मनोहर, रूपवान्, क्रियावान् और विशाल नेत्र वाले पुत्र हों।
8. पंचम में वृश्चिक - बड़े सुन्दर सुशील, अज्ञात दोष, स्वधर्म स्नेही, पुत्र हों स्वयं धर्म में तत्पर हो।
9. पंचम में धनु - अति विचित्र, घोड़ों से स्नेह रखने वाला, धनुर्विद्या का ज्ञाता, शत्रुनाशक, गुरु सेवी, राजमान्य पुत्र हो।
10. पंचम में मकर - पाप में बुद्धि वाले, कुरूप, नपुंसक, कुत्सित भाव युक्त, प्रमाद से रहित, अति निष्ठुर और प्रेम रहित पुत्र हों।
11. पंचम में कुंभ - स्थिरतायुक्त, गंभीर चेष्टा वाले, अतिसत्य वक्ता, सर्वत्र प्रसिद्ध, कष्टों के सहने वाले, बहुत प्रिय, यश से युक्त पुत्र हों।
12. पंचम में मीन - ऐसे पुत्र हों जो स्त्री संग करने से ललित, गोरे रंग वाले, रोगी, कुरूप, हास्ययुक्त स्त्री सहित (सब पुत्रों के विवाह हो जावें) ऐसे पुत्र हों।

(६) षष्ठ भाव में राशिफल -

1. षष्ठ भाव में मेष राशि - शत्रु से वैर करने वाले।
2. षष्ठ में वृष - कुटुम्बी स्त्रियों से (पुत्रवधू आदि से) भोग करने के कारण भातृजनों से शत्रुता।
3. षष्ठ में मिथुन - अपनी स्त्री से वैर करने वाला, पापी मनुष्यों से, बनिये से और नीचजनों से अनुराग रखने वाले मनुष्यों से वैर करने वाला।
4. षष्ठ में कर्क - पुत्र निमित्त से आतुरता के कारण ब्राह्मणों से, राजाओं से, महाजनों से, झगड़ा होने से भय प्राप्त होना और यह सब दूसरों के अनुरोध पर होता है।
5. षष्ठ में सिंह - पुत्रों से, भाई बंदों से वैर, वेश्याओं से भोग करने के कारण सारा धन नष्ट।
6. षष्ठ में कन्या - कोई वैरी न हो, परन्तु दुष्टा व्यभिचारिणी, नीच जाति की और निराश्रित रहने वाली अनाथ विधवा तथा वेश्या के संग रहने के कारण कंगाली आ जावे।
7. षष्ठ में तुला - रखे धन के कारण पूर्ण धनी होता हुआ भी धर्म कार्य में साधु मनुष्यों से व अपने बंधु वर्ग से एवं अपने घरवार से भी वैर होता है।
8. षष्ठ में वृश्चिक - सर्पों से व चुगुलखोरों से, बिच्छू-कनखजूर आदि से, हरिणों से, चोरों से तथा धनिकों से और विलासी पुरुषों से वैर।
9. षष्ठ में धनु - राग में फँसे हुए, धनुष बाण धारण करने वाले पुरुषों से और हाथी, घोड़ा आदि से और पुण्य करने वाले मनुष्य से एवं ठग से वैर हो जाता है।

10. षष्ठ में मकर - धन का सूद लेने के कारण वैर, साधुजनों के सहायक होने पर भी मित्रों के साथ वैर होता है। किसी समय उस मनुष्य को घर की प्राप्ति होती है।
11. षष्ठ में कुंभ - राजाओं से, जल जीवों से, वापी तालाब के निमित्त बड़े जागीरदारों से और भी बड़े-बड़े धनीमान्य वृद्धजनों से वैर होता है।
11. षष्ठ में मीन - सदा अपने पुत्र-पुत्रियों के साथ कलह होता है, स्त्री के निमित्त से वस्त्र आभूषण आदि के कारण अपने खुद के कारण से तथा परस्पर प्रिय पुरुषों से वैर होता है।

(७) सप्तम भाव में राशिफल -

1. सप्तम में मेष राशि - स्त्री अति दुष्ट, क्रूर स्वभाव वाली, पापिनी, बड़ी कठोर, नृशंस, धनप्रिया और अत्यन्त दुष्टा हो।
2. सप्तम में वृष - अतिस्वरूपा, नम्र भावी, सीने-पिरोने में चतुर, शांत प्रकृति वाली, पतिव्रता, सुन्दर गुणों से युक्त, लक्षण वंती, ब्राह्मण देव की भक्त स्त्री होवे।
3. सप्तम में मिथुन - स्त्रीयुक्त, सुन्दर बर्ताव वाला, रूपवान्, सद्गुणसम्पन्न, विनीत वेष वाला, गुणविहीन स्त्री से संयुक्त होता है।
4. सप्तम में कर्क - अतिमनोहरा, सौभाग्य युक्ता, गुणसम्पन्ना, सौम्यरूपा, कुलहीना प्रिय पत्नी मिले।
5. सप्तम में सिंह - तीव्र स्वभाव वाली, कर्कशा, अतिदुष्टा, शृंगारहीन, दूसरों के घर में रहने वाली, धन की इच्छा करने वाली, थोड़ा काम करने वाली, अति दुर्बलांग स्त्री मिले।
6. सप्तम में कन्या - सुन्दर स्वरूपवाली, पुत्रों से रहित, सौभाग्य, भोग्यधन, नीति से युक्त, प्रिय वचन भाषी, सत्यवादिनी, दृढ़ चित्त वाली पत्नी मिले।
7. सप्तम में तुला - गुणों के गर्व से युक्त अनेक प्रकार की स्त्रियों को प्राप्त, पुण्य जिसको प्यारा, धर्म तत्पर, इन्द्रियों को दमनकर्ता, पृथ्वी की तरह अति विनीत जिसके अनेक पुत्र हों।
8. सप्तम में वृश्चिक - सुन्दर स्त्री, कलाओं से अनभिज्ञ, अतिकृपण, सुशिक्षित, नम्रता से रहित, अनेक दुर्भाग्य सूचक दोषों से सम्पन्न ऐसी स्त्री मिले।
9. सप्तम में धनु - अतिदुष्टा, दुष्ट स्वभाववाली, निर्लज्ञा, पर के दोषों को याद करने वाली कलह प्रिया ईर्ष्या युक्त पत्नी मिले।
10. सप्तम में मकर - कपटी स्त्री, नीच, निर्लज्ज, अति लोभी, क्रूर, बहुत गुस्सेवाली, पापिनी, अधिक दुःख भोगने वाली स्त्री मिले।
11. सप्तम में कुंभ - स्त्री अति दुष्टा, कठोर स्वभाव वाली, देव ब्राह्मण पर प्रसन्न रहे, धर्म की ध्वजा सत्य और दया से युक्त स्त्री मिले।
12. सप्तम में मीन - अनेक विकारों से युक्त, दुष्ट स्वभाव वाली, किसी का विश्वास न करने वाली, विशेष कलाओं से अनभिज्ञ स्त्री मिले।

(८) अष्टम भाव में राशिफल -

1. अष्टम में मेष राशि - विदेशवासी, रोगी, अनेक आत्मा सम्बन्धी बातों को याद करने के कारण मूर्च्छित हो, बड़ा धनी, अत्यन्त दुःखों से युक्त।
2. अष्टम में वृष - कफ के विकार से घर में मृत्यु, अतिभोजन से, चौपाये से या रात्रि समय दुष्टजन सम्पर्क से मृत्यु।

3. अष्टम में मिथुन - शत्रुओं के संग से या लाभ के कारण या रस संभव वस्तुओं के खाने से या गुदा रोग से या प्रमेह से मृत्यु।
4. अष्टम में कर्क - जल में डूब कर या किसी भयंकर कीड़े के काटने से या पर पुरुष के द्वारा व्यभिचार के कारण परदेश में मृत्यु।
5. अष्टम में सिंह - किसी रेंगने वाले से या जंगल में रहने से या चोरों के कारण या किसी चतुष्पद के निमित्त से वन में मृत्यु।
6. अष्टम में कन्या - अति भोग विलास करने से या स्वचित्त की भावना से, स्त्री की हत्या करने से, विषम आसन से या पर स्त्रियों के निमित्त से अपने घर पर मृत्यु।
7. अष्टम में तुला - किसी मनुष्य के हाथ से, रात्रि के समय अधिक उपवास करने के कारण, कोप करने से या अति पराक्रम करने से मृत्यु हो।
8. अष्टम में वृश्चिक - कुष्ठ आदि रुधिर रोग से या पेट में कीड़ा होने से या विष खाने से अपने ही घर में मृत्यु।
9. अष्टम में धनु - अति ताप देने वाले गुह्य स्थान के दोष से या किसी चतुष्पद से या बाण से या जल से अपने ही घर में मृत्यु हो।
10. अष्टम में मकर - विद्या से युक्त, मान तथा गुणों से सम्पन्न, अति कामी शूरवीर, वक्ष:स्थल चौड़े, शास्त्रार्थ करने वाला, सब कलाओं में प्रवीण।
11. अष्टम में कुंभ - घर में अग्नि के लग जाने से, सारी सम्पत्ति नाश हो या अजीब घावों से या वायु जन्य विकारों से या अधिक शुभ से विदेश में मृत्यु।
12. अष्टम में मीन - अतिसार की बीमारी से बड़े कष्ट से या पित्त विकार से या जल के सम्बन्ध से या रक्त प्रकोप से या शस्त्र से मृत्यु हो।

(९) नवम भाव में राशिफल -

1. नवम में मेष - चौपायों के दान या पोषण, दया विवेक द्वारा पालन आदि क्रिया से धर्म करने वाला।
2. नवम में वृष - धर्मात्मा, विभिन्न प्रकार के दान से, अनेक गौदान से, आभूषण, वस्त्र और भोजन दान करने से सुशोभित होता है।
3. नवम में मिथुन - धर्ममूर्ति, सरल स्वभाव, अभ्यागतों, ब्राह्मणों का भोजन द्वारा सत्कार करने वाला।
4. नवम में कर्क - कठिन व्रत उपवास से, तीर्थ भ्रमण से या वन में तपस्या करने से सदैव धर्म करते रहता है।
5. नवम में सिंह - किसी अन्य धर्म का मानने वाला, कुकर्मों द्वारा अपने धर्म से हीन, अपने को ही तीर्थ स्वरूप मानने वाला, विनय से रहित।
6. नवम में कन्या - स्त्री धर्म का कट्टर पक्षपाती, कई जन्म से भक्ति रहित, पाखण्ड का आश्रय करके या किसी अन्य पक्ष का आश्रय करके धर्म करने वाला।
7. नवम में तुला - सदा प्रसिद्ध, धर्मात्मा, देव ब्राह्मणों की प्रसन्नता रूप और मनुष्यों के अनुराग से अनेक अद्भुत धर्म को करता है।
8. नवम में वृश्चिक - पाखण्ड धर्म में लीन, पुरुषों को पीड़ा देने वाला, भक्ति से रहित, पर पोषण आदि से हीन।

9. नवम में धनु - सदा धर्म करने वाला, देव ब्राह्मण भक्त, शास्त्रोक्त विख्यात धर्म (सनातन) के अनुसार संध्यादि कृत्यों के लिये अधिक जल का उपयोग होता हो ऐसे धर्म को करता है।
10. नवम में मकर - अधर्म करने वाला, प्रतापशाली, अनेक विडम्बना के कारण वैराग्य युक्त तथा अपने कुल का आश्रय करता है।
11. नवम में कुंभ - देव समूह निमित्त से होने वाले सुख को पावे, वृक्ष सम्बन्धी या बगीचा-बावड़ी आदि धर्म कर्म से प्रेम करने वाला।
12. नवम में मीन - अनेक धर्म करे, सत्पुरुषों की सेवा, बगीचा, तालाब आदि निर्माण कराने से या तीर्थाटन से अनेक प्रकार से आर्थिक सुख पावे।

(१०) दशम भाव में राशियों का फल -

1. दशम में मेष - अधर्म करने वाला, बड़ा दुष्ट, चुगलखोर, विनयरहित लोक में साधुजनों द्वारा निन्दित।
2. दशम में वृष - अधिक खर्च करने वाला, साधुजनों पर दया करने वाला, देव, ब्राह्मण, अतिथिजनों का यथोचित सत्कार करने वाला।
3. दशम में मिथुन - कर्म को प्रधान मानने वाला, गुरुजनों की आज्ञानुसार चलने वाला, कीर्तियुक्त जनों से प्रीत करने वाला, बड़ा प्रतापी, खेती से जीविका।
4. दशम में कर्क - प्याऊ, बगीचा, तालाब, बावड़ी आदि सम्बन्धी कर्मों को करता है, दयालु और निष्पाप।
5. दशम में सिंह - अति पापी, अपने बलानुसार प्राणी वध रूप विकृत कर्म करने में नित्य निंदा पावे।
6. दशम में कन्या - यज्ञ कर्म करने वाला, उसके घर में स्त्री ही मालिक हो, भक्ति के विरुद्ध, तुच्छ वीर्य वाला, राजा के दरबार में मंत्री रहकर भी निर्धनी हो।
7. दशम में तुला - वाणिज्य के कार्य को बहुतायत से करने वाला, धर्म-रूप-मतियुक्त, सज्जन-प्रिय, दूसरों की सम्पत्ति को प्राप्त करता है।
8. दशम में वृश्चिक - सबकी भलाई के लिये कर्म करने वाला, सब का सम्मान करने वाला, देव-गुरु-ब्राह्मणों के लिये खूब खर्च करने वाला परन्तु अति निर्दय और नीतिरहित।
9. दशम में धनु - लाभयुक्त सब काम करने वाला, जेल से छुड़ाने आदि परोपकार का काम करने वाला, राजा के समान भूमि और यश प्राप्त करता है।
10. दशम में मकर - बड़ा प्रतापी, कर्म को प्रधान मानने वाला, दयारहित, भाई-बंदों से युक्त, धर्मरहित, दुष्ट सम्मत कर्म को करता है।
11. दशम में कुंभ - कर्म को प्रधान मानने वाला, शत्रु तथा दूसरों को ठगने के लिये पाखंड धर्म से युक्त, इष्ट लोभ से विश्वास रहित, अपने मनुष्यों के विरुद्ध काम करता है।
12. दशम में मीन - सब कुल धार्मिक गुरुजनों से उपदिष्ट को करने वाला, कीर्तियुक्त, धैर्यशाली, आदर के साथ अनेक ब्राह्मणों की आराधना में तत्पर।

(११) लाभ भाव में राशियों का फल -

1. लाभ में मेष - चतुष्पदों के व्यापार या राज सेवा से या देशान्तर सेवन से पूरा लाभ हो।
2. लाभ में वृष - सज्जनों से या स्त्रियों से, खेती करने से या गाय आदि की सेवा से अतिलाभ।
3. लाभ में मिथुन - सदा लाभयुक्त, स्त्रियों को अतिप्रिय, अच्छी वस्तुएँ, धन एवं सुन्दर-सुन्दर आसन, खान-पान से अनेक प्रकार का लाभ हो। पंडितों से भी खूब प्रसिद्धि हो।

4. लाभ में कर्क - सेवा करने से या खेती से या शास्त्र की वृत्ति से, साधुजन सम्बन्ध से अतिलाभ हो।
5. लाभ में सिंह - निंदा से या अनेक पुरुषों के वध, बन्धन से या देशान्तर में नौकरी के आश्रय से या व्यायाम से भी धन का पर्याप्त लाभ हो।
6. लाभ में कन्या - शस्त्र से, वेद आदि से, विनय और अद्भुत ज्ञान से अनेक लाभ हो और सर्वत्र पूजित हो।
7. लाभ में तुला - विचित्र तरीके के व्यापार से पूर्ण धन लाभ हो। साधु सेवा से, विनय से, बड़े सुख को प्राप्त हो।
8. लाभ में वृश्चिक - छल करने से, पाप करने से, अच्छा बोलने से, दूसरों की चुगली करने आदि अनेक विकारों से अत्यन्त लाभ हो।
9. लाभ में धनु - राजाओं के आश्रय से, अनेक प्रकार के भोग-विलास करता है। संत पुरुषों की सेवा करने से या अपने ही पुरुषार्थ से और किसी साम्राज्य के मुख्य गुप्तचर के आराधन करने से पूर्ण धन लाभ हो।
10. लाभ में मकर - जहाज द्वारा या परदेश में जाकर नौकरी करने से और राज़सेवा से बहुत धन का लाभ हो परन्तु सब लाभ का व्यय हो जाता है।
11. लाभ में कुम्भ - कुकर्म करने से, दान करने से, धर्म करने से, पराक्रम से और विद्या के प्रभाव से खूब धन लाभ हो, संतों के समागम का भी पूर्ण लाभ हो।
12. लाभ में मीन - मित्रों के आश्रय से या राजमान से, विचित्र वाक्यों से और स्नेह से नित्य अनेक लाभ हो।

(१२) व्यय भाव में राशियों का फल -

1. व्यय में मेष - सुखपूर्वक भोजन वस्त्र में, चौपाये जींवों की अधिक संख्या बढ़ाने में और नाना प्रकार के पुरुषार्थ में अर्थात् धन वृद्धि के लिए कार्यालय आदि खोलने में बहुत खर्चा हो।
2. व्यय में वृष - किसी रियासत की प्राप्ति के उद्देश्य से, अपने पराक्रम के जताने से, अनेक धातु वादों से, कई पण्डितों के साथ विवाद होने से, मुकद्दमा आदि लग जाने से, विचित्र वस्त्र और स्त्रियों के निमित्त से बहुत खर्च होता है।
3. व्यय में मिथुन - स्त्री निमित्त व्यसन से, भूत-प्रेत देव आदि की बाधा हटाने के अनुष्ठान, पूजा आदि में, खोटे वैभव से, पापी मनुष्यों के संग करने से, हाथी आदि के खरीदने में फिजूल खर्ची हो।
4. व्यय में कर्क - ब्राह्मणों, देवताओं के निमित्त, यज्ञ के निमित्त, धर्म काम में जैसे पाठशाला, मन्दिर आदि बनवाने में, साधुजनों द्वारा प्रशंसित कार्य में बहुत खर्च हो।
5. व्यय में सिंह - संशय न करने वाला, अतिक्रोधी, अपने रूप की सजधज बनाने में, दुष्ट कर्म के निमित्त से, सदा राजा या चोर से, पुत्रोत्पत्ति के अवसर पर, संस्कार आदि सम्बन्ध में अति खर्च होता है, सज्जनों से निंद्य।
6. व्यय में कन्या - स्त्रियों के निमित्त से प्रसन्नतापूर्वक खर्च करने वाला, विवाह, यज्ञोपवीत आदि स्वकार्य या जातीय मांगलिक मुख्य कर्मों के निमित्त से या साधुसंग से खर्च करने वाला।
7. व्यय में तुला - देव ब्राह्मण का सेवक, श्रुति स्मृति के अनुकूल धर्म करने में खर्च करने वाला, अनेक यम-नियम-व्रतोपवास के निमित्त से, पुत्रों के कारण से, सेवा के कारण अधिक खर्च करे जिससे संसार में खूब नाम हो।

8. व्यय में वृश्चिक - दीन-दु:खियों को अन्न वस्त्रादि देने से, अनेक विडम्बनाओं से या दुष्ट मित्र की सेवा, कुबुद्धि निमित्त और चोर मनुष्य के अधिकार से बहुत खर्च होता है और लोक में वह निंदित समझा जाता है।
9. व्यय में धनु - पापीजनों के संग से या जाति के अधिकारी मनुष्यों से झगड़ा करने से मुकद्दमा में अधिक खर्चा हो या खेती में या सेवा करने में खर्च हो।
10. व्यय में मकर - पापी मनुष्यों के भोजन कराने के निमित्त से खर्च, अपने वर्ग के मनुष्य का पूजक, थोड़ी खेती करने वाला, अत्यन्त हीन, सर्वत्र निंदित।
11. व्यय में कुम्भ - देव, सिद्ध, मनुष्य, ब्राह्मण, तपस्वी, बंदीजनों के निमित्त खर्च होता है, साधुजनों के सेवन से तथा शास्त्र-प्रसिद्ध कर्मों से विख्यात होता है।
12. व्यय में मीन - जलयान से या कुसंग से और कुपूत पुत्रों के निमित्त से, खाने-पीने के निमित्त से, विवाद या यात्रा के निमित्त से धन खर्च हो।

मेषादि राशि फल विचार -

1. **मेष राशि-** प्रथम मास में कष्ट तथा अल्पायु भय। प्रथम वर्ष और 13 वर्ष में जल घात भय, 18 वर्ष में घात, 64 वर्ष में अंग रोग। 50 वर्ष में लोहे से घात यदि उस राशि में शुभग्रह की दृष्टि हो, तो 75 वर्ष 2 मास, 15 घड़ी 15 पल की आयु पाता है पश्चात् कार्तिक मास, 4 तिथि मंगलवार भरणी नक्षत्र में मृत्यु का योग है (मान सा0) पहिले सातवें व तेरवें वर्ष में ज्वर की पीड़ा, 16 वर्ष में विशूचिका रोग, तीसरे, बारहवें वर्ष में जल भय, 25 वर्ष में सन्तान हो, रतोंध रोग हो। 32 वर्ष में अस्त्र से घात। चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो 90 वर्ष आयु। कार्तिक मास कृष्ण पक्ष, बुधवार, नवमी तिथि रात्रि में शिर में रोग से मृत्यु हो। (जा० भ०)
2. **वृष राशि-** 6 वर्ष में अग्नि भय, 8 वर्ष में लोह भय, 33 वर्ष में सांड़ से भय, 46 वर्ष में सर्प भय, 52 वर्ष में देव-कोप से कष्ट, 63 वर्ष में घात इन सबसे बच जाय तो 85 वर्ष 6 मास 7 दिन आयु पाकर माघ शुक्ल 9 शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र, अर्द्धरात्रि के समय मृत्यु हो (मान सा0) पहिले वर्ष में पीड़ा, तीसरे वर्ष अग्नि भय, 7वें वर्ष विशूचिका रोग, 9वें वर्ष व्यथा, 10 वर्ष में रुधिर विकार, 12 वर्ष में वृक्ष से गिरकर मृत्यु भय, 16 वर्ष में सर्प से भय, 19 वर्ष में पीड़ा, 25 वर्ष में जल से भय, 30 वर्ष और 32 वर्ष में पीड़ा, चन्द्र लग्न को शुभग्रह देखता हो, तो 96 वर्ष की आयु हो, माघ मास, नवमी तिथि, शुक्ल पक्ष, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा0 भ0)
3. **मिथुन राशि-** 6 मास, 6 वर्ष में कष्ट, अंग रोग, 10 में नेत्र पीड़ा, 11, 18 में घात, 24, 53, 63 में अल्प मृत्यु। उस राशि पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो 85 वर्ष की आयु हो पौष मास अष्टमी, बुधवार, आर्द्रा नक्षत्र, प्रथम प्रहर में मृत्यु हो (मान सा0) पाँचवें में वृक्ष भय, 16 में शत्रु भय, 18 में मृत्यु तुल्य पीड़ा, 80 वर्ष की आयु हो। वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि बुधवार, के मध्याह्न समय हस्त नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा0भ0)
4. **कर्क राशि-** 11 दिन में कष्ट, 9 मास में कष्ट, 1 वर्ष में रोग, 7 में जल घात, 9 में अंग रोग, 12 में जल घात, 16 में अंग रोग, 20 वर्ष में लोह घात, 27 और 35 में अल्प मृत्यु, 45 में देव दोष, 55 और 61 में अल्प मृत्यु, राजकष्ट, असाध्य रोग, सर्प घात, जल घात, साँड़ से और व्याघ्र से भय इस राशि पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो 70 वर्ष 5 मास 6 दिन में फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष के चतुर्थ प्रहर में गोधूलि के समय

मृत्यु हो (मान0 सा0) पहिले में रोग हो, 30 में लिंग पीड़ा, 31 में सर्प से भय, 32 में बहुत पीड़ा, 85 या 96 वर्ष की आयु माघ मास, शुक्ल, 9 तिथि, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा0 भ0)

5. **सिंह राशि–** 8 मास या 1 वर्ष में कष्ट, 10 वर्ष, 15 वर्ष में अंग रोग, 25, 45 वर्ष में देव दोष, सन्निपात, 51, 61 वर्ष में घात। अल्प मृत्यु से बचे तो 65 वर्ष जीवे, श्रावण शुदी 10 रविवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एक प्रहर में मृत्यु हो (मान सा0) पहिले वर्ष में भूत बाधा, पाँचवें वर्ष में अग्नि भय, 7वें वर्ष में ज्वर, या विशूचिका रोग हो। 28 वर्ष में झगड़ा, 32 वर्ष में बड़ी पीड़ा, पेट के दाहिने तरफ वात रोग गुल्म रोग हो। जो चन्द्र को शुभग्रह देखता हो, तो 100 वर्ष की आयु हो फाल्गुन शुक्ल पक्ष में, पंचमी, मंगलवार को मध्याह्न समय जल के बीच मृत्यु हो। (जा0 भ0)

6. **कन्या राशि–** 3 मास 3 वर्ष में अंग रोग, 1 वर्ष, 13 वर्ष में नेत्ररोग और जल घात, 26 वर्ष में अंग रोग, देवकोप से पीड़ा, 33 वर्ष में लोह घात, 43 वर्ष में अंग रोग। चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो 84 वर्ष जीकर भाद्र शुक्ल, 9 रविवार, हस्त नक्षत्र में गोधूली के समय देह त्यागे (मान सा0)। तीसरे वर्ष अग्नि की पीड़ा, पाँचवें वर्ष नेत्ररोग, नवम वर्ष, 13 वर्ष में बाधा, 15 वर्ष में सर्प-भय, 21 वर्ष में वृक्ष से गिरे या भीत से गिरे। 30 वर्ष में जंगल में हथियार का घात, 80 वर्ष की आयु हो यदि चंद्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो चैत्र कृष्ण 13 रविवार को मृत्यु हो। (जा0 भ0)

7. **तुला राशि–** 4 मास में कष्ट, 16 मास में अंग रोग, 4 वर्ष में कष्ट, 16 वर्ष में जल घात, 21, 23 वर्ष में अंग रोग, 41 वर्ष में अंग वृद्धि, 51 वर्ष में देव दोष, 61 वर्ष में अल्प मृत्यु, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो 85 वर्ष जीवें, वैशाख शुक्ल 13 शुक्रवार चित्रा नक्षत्र मध्याह्न के समय मृत्यु हो (मान सा0)। 7 वर्ष में अग्नि भय, 8 वर्ष में ज्वर, 12 वर्ष में जल से भय, वृक्ष से या घोड़े से गिरने का भय। 20 वर्ष में सर्प का भय, 21 वर्ष में पीड़ा। चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो, तो 85 वर्ष की आयु। वैशाख कृष्ण पक्ष, आश्लेषा नक्षत्र में शुक्रवार को पहिले प्रहर में मृत्यु हो। (जा0 भ0)

8. **वृश्चिक राशि—** 2 मास में कष्ट, 7 वर्ष में अंग रोग, 8 वर्ष में जलघात, 13 वर्ष में वृक्ष घात, 32-35 वर्ष में अंग रोग, लोह घात, 45 वर्ष में अंग रोग। 63 वर्ष में अल्प मृत्यु, राशि को शुभग्रह देखे तो 75 वर्ष 2 माह 7 दिन जीता है, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष एकादशी मंगलवार प्रथम प्रहर में देह त्यागे (मान सा0)। 1 वर्ष में ज्वर की पीड़ा, तीसरे में अग्नि भय, 5 में ज्वर भय, 15 में ज्वर भय, 25 में बड़ी पीड़ा, चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो, तो 90 वर्ष की आयु हो, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, बुधवार, हस्त-नक्षत्र में आधी रात को देह त्यागे। (जा0 भ0)

9. **धनु राशि—** 5 मास, 3 वर्ष में कष्ट, 9 में अंग रोग, 11 में चक्षु पीड़ा, 16 में जलघात, 24-26 में अंग रोग, 47, 57, 67 में सर्प, जलघात, अल्प मृत्यु क्रमश: हो, चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो, तो 85 वर्ष जीकर आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार हस्त नक्षत्र में गोधूलिका के समय देह त्यागे। (मान सा0) पहिले वर्ष में बाधा, 13 में बड़ी पीड़ा, 68 या 75 वर्ष की आयु होती है। चन्द्रमा पर शुभ दृष्टि हो, तो 100 वर्ष जिये। आषाढ़ शुक्ल 5, शुक्रवार रात्रि में हस्त नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा0 भ0)

10. **मकर राशि—** 3 मास में कष्ट, 1 मास में देव दोष पीड़ा, 3 वर्ष में अंग रोग, 75 में देव दोष 10 में अंग रोग, अग्नि पीड़ा, 32 में लोह घात, 33 में कष्ट, 43, 51 में अल्प मृत्यु, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो 81 वर्ष जीकर शुक्लपक्ष की पंचमी श्रवण नक्षत्र में मृत्यु हो। (मान सा0) 5 वर्ष में पीड़ा और 7 में जल

भय, 10 में वृक्ष से गिरे, 12 वर्ष में शस्त्र से भय, 20 में ज्वर, 25 में अंगों में पीड़ा, 35 में बायें अंग में अग्नि भय, 90 वर्ष की आयु, श्रावण शुक्ल दशमी, मंगलवार, ज्येष्ठा नक्षत्र में मृत्यु हो।

11. **कुम्भ राशि–** सात दिन में कष्ट, 18, 32 वर्ष में अल्प मृत्यु भय, चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो, तो 61 वर्ष जीकर माघ मास शुक्ल 2 गुरुवार के दिन उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में मृत्यु हो। (मान सा0) पहिले वर्ष में पीड़ा, 5 में अग्नि भय या 12 में सर्प से या जल से भय। 28 में घाव चोरों से, 90 वर्ष की आयु पाकर भाद्र कृष्ण, चतुर्थी, शनिवार, भरणी नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा0 भ0)

12. **मीन राशि** - 18, 33 वर्ष में क्लेश। चन्द्र को शुभग्रह देखता हो, तो 61 वर्ष आयु पाकर माघ शुक्ल 12 गुरुवार पुनर्वसु नक्षत्र में प्रातःकाल देह त्यागे। (मान सा0) 5 वर्ष में जल से भय, 8 में ज्वर की पीड़ा, 22 में बड़ी पीड़ा, 24 में पूर्व की यात्रा, 90 वर्ष की आयु में आश्विन कृष्ण पक्ष की द्वितीया, गुरुवार, कृतिका नक्षत्र में सायंकाल में मृत्यु हो। (जा0 भ0)

जन्म लग्न फल -

1. **मेष** - तेज मिजाज, अभिमानी, धनवान्, शुभाचरण, पराक्रमी, क्रोधी, सर्वभक्षी, गोल आँख, अशक्त घुटने, जल से डरे, सदा अपने पैर पर खड़ा, अल्पाहारी, मिथ्यावादी, अंग में चोट, मित्रों से विरोध, अन्य से प्रेम, अल्पबुद्धि, शत्रुगणों से जीता हुआ, पित्त प्रकृति, विलक्षण बुद्धि, बंधुओं का द्वेषी, भ्रमणशील, अस्थिर धन, विवाद प्रिय, अगम्या गमन की ओर झुकाव।

   वनचर है, ह्रस्व, लाल वर्ण, लाल नेत्र, भोजन में उष्ण पदार्थ-प्रिय, शीघ्र प्रसन्न हो, स्त्री-प्रिय, दूसरे की नौकरी करे, बुरे नख, मस्तक पर बहुत फोड़े, हाथ में चिह्न, अति चंचल।

   यह पृष्ठोदय है रात्रि में बलवान्, दिन को निर्बल, क्रूर, पुरुष, चर, तेजस्वी, इसकी पूर्व दिशा है, स्वामी मंगल, दक्षिण दिशा की तरफ दुःख, यह लग्न दशम भाव में हो, तो केवल पूर्वार्द्ध में बहुत बलवान् होता है।

2. **वृष लग्न** - लोक तथा गुरुजन का भक्त, प्रिय, वक्ता, गुणवान्, पण्डित, धनी, लोभी, शूरवीर, सर्वप्रिय, कृषि कार्य में दत्त, युवतियों का प्रेमी, बालपने में दुःखी, आयु के मध्य एवं अन्त भाग में सुखी, क्लेश सहन करने वाला, क्षमावान् गौ युक्त, क्रोधी, कृतघ्न, मन्द बुद्धि, दूसरों से पराजय प्राप्त, शांत रूप, आहार बहुत, लोकप्रिय, बहुत मित्र, संग्राम प्रिय, शान्त बुद्धि, दयालु, स्त्री का चाकर, अच्छा स्वभाव, देव-पूजक, धर्म-कर्म करने वाला, भ्रमणशील, श्वेत शरीर, कफाधिक्य, चौड़ी जाँघ, बड़ा चेहरा, पीठ, मुख या पार्श्व में चिह्न या तिल।

   वनचर, जंगल में रहे, वर्ण शुभ्र, स्वभाव सौम्य, वृषभ लग्न, पृष्ठोदय, रात्रि-बली है। दक्षिण दिशा में बलिष्ठ, स्थिर स्त्री संज्ञक है।

3. **मिथुन लग्न** - अभिमानी, बन्धुजनों को प्रिय, त्यागी, भोगी, कामी, धनवान, आलसी, शत्रुनाशक, स्त्रियों से क्रीड़ा का प्रेमी, नृत्य वाद्य प्रेमी, सदा घर में रहने वाला, बहुत पुत्र मित्र वाला, श्रेष्ठीशील, राजा के समीप वास, धीरे काम करने वाला, स्त्री का अनुरागी, प्रसन्न चित्त, राजा से कष्ट पानेवाला, नम्र, प्रिय वचन भाषी, दयावन्त, गुणी, तत्त्वज्ञ, योगात्मा, शास्त्र जानने वाला, नौकरी करे, बुद्धिमान, जुआरी, नपुंसक की संगति, भोगी। काली आँखें, घुंघराले बाल, उठी नाक, यह गौर वर्ण राशि गाँव में रहने वाली, ह्रस्व, रात्रि-बली, शीर्षोदय, पुरुष, क्रूर, द्विस्वभाव, पश्चिम दिशा में बलवान्, मुँह उत्तर का है, लाल नेत्र।

4. **कर्क लग्न** - भोगी, धर्मात्मा, लोक प्रिय, मिष्टान्न पान, भाग्यशाली, स्त्री के अधिकार में, मित्रों से घिरा, बहुत घरवाला, धनवान्, बुद्धिमान्, अल्प संतान, नम्र, जल-विहार, उदार, साधु संग, उल्टी बुद्धि, भाइयों का प्यारा, बोलने में प्रगल्भ, क्षमाशील, कपट बुद्धि, पापी, पराया धन हरने वाला, उठे कूल्हे, ठिगना कद, वक्र दृष्टि, चलने में तेज, गौर वर्ण, मित्राधिक्य, यह लग्न पृष्ठोदय रात्रि बली, चर, स्त्री, सौम्य, उत्तर दिशा में बलवान, वायव्य दिशा में मुँह है।
5. **सिंह लग्न** - योगी, शत्रु हंता, छोटा पेट, अल्प संतान, उत्साही, रण में पराक्रमी, अभिमानी, शीघ्र क्रोध होने वाला, दृढ़ मन, माता-पिता का आज्ञाकारी, अल्प भोजी, मांस भक्षण में प्रीति, जंगल पहाड़ में जाना पसन्द, बोलने में प्रगल्भ, निश्चेष्ट, संतुष्ट, हिंसक, शत्रुओं को जीतने वाला, कामी, परदेश में जाने वाला, राजा को वश में करने वाला, देवकार्य में विघ्न करने वाला, दयालु, नौकर पर क्रोध, इच्छानुसार बेसमय खाने-पीने लगे, लाल नेत्र, बड़े गाल, चौड़ा चेहरा, पीत मिला श्वेत वर्ण, वात कफ से पीड़ित, तीक्ष्ण प्रकृति। यह लग्न शीर्षोदय, दिन बली, स्थिर, पुरुष, पूर्व में बली, मुख पूर्व को।
6. **कन्या लग्न** - अनेक शास्त्रविशारद, गुणी, परधन का भोगी, सत्यरत, प्रियभाषी, भोग का प्रेमी, अल्प सन्तान, शास्त्रज्ञाता, कामी, चतुर, प्रसन्नचित्त, स्त्री के वश, बुद्धिमान्, सात्विक, बन्धु प्रिय, सुखी, स्त्री विलास का रसिक, मायावी, श्रीमंत, लक्ष्मी को प्राप्त, बड़ी लज्जा वाला, बहुत कन्या संतति, थोड़े पुत्र, नृत्य वाद्य चित्र व कला में कुशल, लोगों से धन मिले, दूसरे गाँवों में गमन, सत्यभाषी, सुन्दर, कफपित्त युक्त प्रकृति, गम्भीर, शीतल दृष्टि, दीर्घ, शीर्षोदय राशि, दिवावली, द्विस्वभाव, स्त्री, मृदु, दक्षिण दिशा में बली, इसका मुँह उत्तर पड़े।
7. **तुला लग्न** - पंडित, सत्कर्मों से जीविका, विद्वान्, धनवान्, लोक पूजित, सब कला का ज्ञान, अल्प सन्तान, ब्राह्मण देवपूजक, भ्रमणशील, व्यापार में चतुर, शूर, निर्दय, सत्कर्म से जीविका चलाने वाला, अच्छी बुद्धि, कुल में प्रकाशवान्, सत्यभाषी, राजा का प्रिय, शान्त बुद्धि, विषादी, चंचल, डरपोक, विचारवान्, स्त्री वश्य, सभ्य, रोगी, कुटुम्ब का उपकारी, भाइयों का निंदक, दो नाम हों, ऊँचा कद, कफ की अधिकता, विरल दाँत, नाक ऊँची, दुबला, अंगहीन, यह राशि शीर्षोदय, दिवावली, चर, पुरुष, पश्चिम दिशा में बलिष्ठ, आग्नेय दिशा में मुँह।
8. **वृश्चिक लग्न** - शूरवीर, धनवान्, पंडित, कुल-पूज्य, पूज्य, बुद्धिमान्, आरम्भिक जीवन में रोगी, माता-पिता-गुरु से वियोग, क्रूर कर्मकर्ता, राजा से मान प्राप्त, सदा क्लेश को प्राप्त, बुद्धि ज्ञान-विज्ञान से युक्त, सुखी, क्रोधी, असत्य भाषी, शास्त्रकथा में निपुण, शत्रुजित्, पर धन हरे, पर स्त्री से प्रेम, दीर्घायु, सुजनों का बैरी, विवाद प्रिय, सन्तान से दु:खी, अपने कुल में मुख्य, गुप्त पापी, गोल कटि, घुटने चौड़े, विशाल नेत्र, चौड़ी छाती, हाथ पैर में पद्म रेखा, गोल जांघ, पिंगल वर्ण, मत्स्य, पक्षी या वज्र का शरीर में कहीं चिह्न हो। शीर्षोदय राशि, दिवाबली, स्थिर, सौम्य, स्त्री, उत्तर दिशा में बली, दक्षिण दिशा की ओर मुँह।
9. **धनु लग्न**— नीतिज्ञ, धर्मज्ञ, कुल में प्रधान, विद्वान्, मनुष्यों का पोषक, राजा का कृपापात्र, प्रगल्भ (बातूनी), त्यागी, शत्रु पीड़क, बली, चतुर, कलाओं का ज्ञाता, धनुर्वेद का ज्ञाता, द्विज देव भक्त, दयालु, तालाब आदि बनाने वाला, बुद्धिमान्, यशस्वी, वाहन युक्त, सत्यप्रतिज्ञ, गर्विष्ट, मधुर भाषी, बन्धुओं का द्वेषी बाप का धन बहुत हो। लम्बा चेहरा, गर्दन, कान, नाक, दाँत, ओंठ मोटे, बुरे नख, बहुत मोटा, कई दिन में कुबड़ा हो, राशि पृष्ठोदय, रात्रि बली, द्विस्वभाव, पुरुष, क्रूर, पूर्व में बली, ईशान की ओर मुख।

10. **मकर लग्न** - नीच कर्म, बहुत संतान, लोभी, आलसी, सर्वनाशी, उद्यमी भाग्यवान्, सदा अपने पैर पर खड़ा, सर्वधर्म के कार्य में प्रेम, कठोर, शठ, अपने का काम करने वाला, अच्छे आचरण, सन्तोषी, भयभीत दूसरों को ठगने वाला, पराया धन हरने वाला, परस्त्री से प्रेम, दीन वचन, काव्य जाने, विद्वान्, निर्दय, निर्लज्ज, ठंड से डरे, कृश, निम्न अंग दुर्बल (कमर के दुर्बल), वात कफ पीड़ित, बड़ा शरीर, उत्तम नेत्र, यह पृष्टोदय राशि है, रात्रि बली, सौम्य, स्त्री, चर, दक्षिण में बली, पश्चिम में मुँह।
11. **कुंभ लग्न** - परस्त्रीगामी, धीरे काम करने वाला, अनन्त सुख चाहने वाला, गुप्त रूप से पाप कर्म करे, पर कार्य में बाधक, चलने में सहनशील, अल्पधन, लोभी, पर धन का स्वतंत्रतापूर्वक उपभोगी, हानि-लाभ युक्त, गंध और पुष्प का प्रेमी, चंचल, मित्रों से प्रीति, क्रोधी, चलायमान चित्त, सुखी, जल सेवन में उत्साह, सुंदर हृदय, लोकप्रिय, कृतज्ञ, कृपण, धनी, भीतरी शठता, अटलचित्त, सुहृद्भाव पूर्ण, सुन्दर देह, वाताधिक्य, ऊँट सरीखी गर्दन, शरीर पर नसें, कड़े बाल, लम्बा शरीर, हाथ पैर मोटे, जंघा व पृष्ठ भाग लम्बा, मुँह बड़ा, कमर व बैठक बड़ी। यह शीर्षोदय, दिवाबली, क्रूर, पुरुष, स्थिर, पश्चिम में बली, पश्चिम की ओर मुख।
12. **मीन लग्न** - रत्न और सुवर्ण से परिपूर्ण, बहुत विचार कर काम करने वाला अधिक जल पिये, समुद्र या जल की उपज के व्यापार से धन प्राप्त, विद्वान् कृतज्ञ, शत्रु का दमनकर्ता, भाग्यवान्, अल्प-भोजन धूर्त, नम्र, धन-धान्य युक्त, बली, यज्ञ करने वाला, तालाब आदि बनवाने वाला, बहुत आदमियों का स्वामी, विलासी, अपनी स्त्री का प्रेमी, चतुर, जल से उत्पन्न पदार्थ प्रिय, गड़ा द्रव्य प्राप्त हो, अच्छे नेत्र, बहुत दुर्बल, पित्ताधिक्य, सुन्दर ऊँचा नाक, बड़ा सिर, कांतिवान्। यह उभयोदय दोनों ओर से मुख, रात्रि और दिन दोनों में बली, सौम्य, स्त्री, द्विस्वभाव, उत्तर दिशा में बली, ईशान की ओर मुँह।

चंद्र की राशि का फल -

1. **मेष राशि** - चंचल, नेक, सदा रोगी, पुष्ट जंघा, कृतघ्नी, राजा से पूज्य, दाता, जल से भय, कामिनियों को आनन्ददायक, प्रचंड कर्म, धनवान्, उग्र, परोपकारी, शीलवंत, गुणी, देव ब्राह्मण का पूजक, शूरवीर, कामी, सेवकों का प्यारा, दो स्त्रियों वाला, संग्राम में भय, चपल, परदेश जाने में तत्पर, जल्दी चलने वाला, गर्म भोजी, शाक भोजी, अल्पहारी, शीघ्र प्रसन्न, भ्रमणशील, भाइयों में श्रेष्ठ, वृद्धावस्था में शांत होता है।

   ताँबे के समान लाल नेत्र, दुर्बल जानु वाला, शिर में व्रण, कुनखी, हाथ में शक्ति का चिह्न हो।
2. **वृष राशि** - नम्र, अल्प तेज, सत्यवक्ता, धनवान्, कामी, स्त्रियों की आज्ञा में चलने वाला, दीर्घायु, परोपकारी, माता पिता गुरु का भक्त, राजा का प्रिय, सभा में चतुर, संतुष्ट, भोगी, दानी, पवित्र, चतुर, धैर्यवान्, बलवान्, क्रीड़ा करने वाला, तेजस्वी, अच्छे मित्र, अभिमानी, सहनशील, उसकी आज्ञा लोग मानें, कन्या संतान, बहुभोजी, यशस्वी, जवानी या बुढ़ापे में सुखी।

   दृढ़ जाँघ तथा पैर, अल्प केश, देखने में कुरूप, सजीली चाल चलने वाला, कूल्हे और मुख मोटे, पीठ, मुख या कुक्षि में चिह्न, गर्दन बड़ी, कफ प्रकृति।
3. **मिथुन राशि** - स्त्रियों में बड़ा चतुर, पक्की मित्रता, मिष्ठान्न भोजन, शीलवंत, कुटुम्ब का प्यारा, बालपने में सुखी, जवानी में मध्यम सुख, बुढ़ापे में दुःखी, दो स्त्रियाँ, गुरु का प्यारा, अल्प संतान, कामी, गायन, वादन, नृत्य प्रिय, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञाता, मिष्टभाषी, कीर्तिमान्, गुणवान्, धनवान्, चतुर, वक्ता, दृढ़

संकल्प, सर्वकाम में समर्थ, कामशास्त्र में निपुण, दूतकर्म, जुआरी, नपुंसक से प्रीत, हास्य प्रीत, दीर्घायु, बहुभोजी, चंचल, नेत्र, कंठ में रोग, गौर अंग, शरीर लम्बा, ताम्बे के रंग के समान नेत्र, सुन्दर शरीर।

4. **कर्क राशि** - परोपकारी, पुत्रवान्, गुणवान्, साधु, माता पिता का भक्त, अल्पायु, धनहीन, युवावस्था में सुखी, वृद्धावस्था में धर्म में रुचि, तीर्थयात्रा करे, सिर में रोग, बहुत बंधु, बहुत स्त्री, बहुत मित्र, प्यारी वाणी, शूरवीर, गुरु भक्त, धर्मात्मा, परदेशवासी, क्रोधांध, बलहीन, स्त्री के वश रहे, ज्योतिष शास्त्र में प्रेम, कभी धनवान्, कभी निर्धन, जलाशय उद्यान आदि का प्रिय, कामासक्त, भ्रमणशील, दुर्बल देह, कुटिल, शीघ्र चलने वाला, मोटी गर्दन।
5. **सिंह राशि** - धनधान्य युक्त, लक्ष्मीवान्, संग्राम प्रिय, विद्वान्, सब कला जाने, परदेश में भ्रमण का इच्छुक, क्रोधी, अल्प पुत्र, सब जगह, रहने वाला, शत्रुनाशक, सिर में रोग, कठोर, श्रेष्ठशील, कृपण, सत्यवादी, क्षमावान्, सदा मद्य मांस का प्रेमी, शीत से भय, सच्चे मित्र वाला, विनयी, शीघ्र क्रोधी, माता, पिता का भक्त, विख्यात, व्यसनी, लज्जावान्, स्त्रियों के साथ द्वेषी, मानसी पीड़ा, दाता, पराक्रमी, धीर बुद्धि, अभिमानी, सुखी, सुन्दर मुख, गंभीर दृष्टि, मोटी दाढ़ी, बड़ा मुख, पीले नेत्र, दंत रोगी, क्षुधा, तृषा सेयुक्त।
6. **कन्या राशि** - धनवान्, बहुत नौकर, परदेश जाने वाला, सदा आनन्द करने वाला, देव ब्राह्मण भक्त, बहुत पुत्र, अल्प कन्या संतान, विलासी, धर्मात्मा, दाता, चतुर, कवि, लोकप्रिय, नृत्य गान का व्यसनी, स्त्री निमित्त दुःखी, सज्जनों को आनन्ददायक, वेदमार्ग में परायण, आलसी, मधुरवाणी, सत्यवादी, पराये घर या धन से युक्त, विषयों में आतुर, अधिक विद्या, लिंग और कंठ में चिह्न।
7. **तुला राशि** - माननीय, भोगी, धर्मी, बहुत नौकर, चतुर, कुँआ तालाब आदि बनवाने वाला, कलाओं का ज्ञाता, राजाओं का प्यारा, मीठे अन्न और रसों में प्रीति, पिता का भक्त, स्त्रीयुक्त, अल्प संतान, थोड़े भाई, कृषि कर्म में चतुर, क्रय-विक्रय से धन पैदा करे, देव ब्राह्मण पूजक, स्त्री के वचन में चलने वाला, असमय क्रोध, दयालु, पराक्रमी, व्यापार में कुशल, स्वजन प्रिय, बुद्धिमान्, अति क्रोधी, धनवान्, अंगहीन, योगी बंधु, एक जन्म का नाम पीछे दूसरा देव संज्ञक नाम विख्यात हो, कुटुम्ब का हितकारी, दुःखयुक्त, कोमल वचन, ऊँचा शरीर, नाक पतली, शिथिल गान।
8. **वृश्चिक राशि** - शत्रु से संतप्त, कलह प्रिय, शत्रुता करने वाला, विश्वासघाती, द्रोह करने में चतुर, संतोषहीन, पराये कार्य में विघ्न करे, राज पूज्य, 2 स्त्री, 4 भाई, बालपन से ही परदेशवासी, क्रूर हृदय, शूरवीर, परस्त्रीगामी, स्वजनों में निष्ठुरता युक्त, साहस से लक्ष्मी पावे, माता में दुष्ट बुद्धि रखे, चोर, धूर्त, माता-पिता व गुरु से रहित, बाल्यावस्था में रोगी, गुप्त पापी, पिंगल नेत्र, परस्त्री रत, नेत्र, छाती बड़े, जाँघ व जानु गोल पाप शरीर, विषम स्वभाव, मछली वज्र या पक्षी का चिह्न हाथ पैर में। लोभी, रोगी, भ्रमणशील।
9. **धनु राशि** - चतुर, धर्मवान्, राज्यमान्य, श्रेष्ठ पुत्र, देव ब्राह्मण भक्त, लोकप्रिय प्रगल्भ, सभा में बोलने वाला, भाग्यवान्, दृढ़ मित्र, साहसी, नम्र, सहनशील, शांत स्वभाव, सात्विक प्रकृति, शिल्प विद्या का ज्ञाता, धन सम्पन्न, दिव्य स्त्री, चरित्रवान्, तेजस्वी, कुलनाशक, पितृ धन युक्त, दानी, कविता करने वाला, बोलने में चतुर, बंधु वैरी, सुंदर नख, मोटे दाँत, ओंठ और गर्दन, पैर के तलुए कोमल, गर्दन छोटी, कुबड़ा, हाथ पैर मोटे। यह प्रीति से वश में होने वाला, श्रेष्ठ कुल, रुचिर दृष्टि।
10. **मकर राशि** - धीर, चतुर, क्लेशयुक्त, राजा का प्यारा, पुत्रवंत, दयावान्, सत्यवान्, भाग्यवान्, आलसी, स्त्रियों के वशीभूत, कुल में सबसे हीन, बुराई करने वाला, गान विद्या का प्रेमी, माता का प्यारा, धन,

दानी, दयावान्, अच्छे नौकर, बहुत भाई, दंभी, मिथ्या धर्म करने वाला, आलसी, शीत न सहन कर सके, विद्वान्, लोभी, निर्लज्ञ, परस्त्रीगामी, बड़ा मस्तक, अगम्या या वृद्धा से गमन करने वाला, कमर के नीचे पतला, सुहावने नेत्र।

11. **कुम्भ राशि** - दानी, मिष्ठान्न भोजी, प्रिय वचन, क्षीण शरीर, अल्प संतान, 2 स्त्रियों वाला, कामी, धनहीन, आलसी, कृतज्ञ, सदा सुखी, धन भोगी, सामर्थ्यवान्, वाहनयुक्त, विद्या में उद्यमी, पाप कर्म में तत्पर, पण्डितों का बैरी, अधिक विद्या, शीलवंत, धर्म कार्य को जल्दी करे, बाँये हाथ में चिह्न, मंडूक के समान कुरव वाला, निर्भय, ऊँट के समान गर्दन, सर्वाङ्ग में प्रगट नसें, रूखे और बहुत रोम, ऊँचा शरीर, कुल्हे, जाँघ, पीठ, घुटना, मुख, कमर, पेट ये सब मोटे, पुष्प चन्दन और मित्रों के प्रिय, परस्त्री, पर धन और पाप कर्म में तत्पर।
12. **मीन राशि** - धनवान्, मानी, नम्र, भोगी, प्रसन्नचित्त, माता-पिता देव पूजक, गुरुभक्त, उदार, रूपवान्, गंध और पुष्पमाला का प्रेमी, शूरवीर, बोलने में चतुर, क्रोधी, कृपण, ज्ञानवान्, गुणवान्, शीघ्रगामी, गान विद्या में कुशल, शुभाचरण, भाई-बन्धु से स्नेह, जल, रत्न, मोती आदि के क्रय-विक्रय से उत्पन्न धन, पराये धन का भोग करने वाला, शत्रुजित्, अकस्मात् गड़ा हुआ या भूमिगत द्रव्य भोगने वाला, विद्वान्, बहुत स्त्रियों का स्वामी, सब अवयवों से परिपूर्ण, सुन्दर शरीर, ऊँची नाक, बड़ा सिर, सुहावने नेत्र, कांतिमान्।

अध्याय-8

भावेश का भिन्न-भिन्न भावों का फल

लग्नेश का फल भिन्न-भिन्न भावों में-

1. लग्न में दीर्घायु, अतिबली, बहुत भूमि का स्वामी, रोगहीन, पराक्रमी, मनस्वी, 2 पत्नी या अन्य रखैल स्त्री।
2. द्वितीय में लग्नेश बड़ा धनवान, दीर्घायु प्रदान करने वाला, अति बलशाली, भूमि लाभकर्ता, अनेकों स्त्रीवाला।
3. तृतीय में लग्नेश बन्धुजनों और उत्तम मित्रों से युक्त, धर्म नाश करने में तत्पर, दानी, शूरवीर, बलवान। सिंह के समान पराक्रमी, 2 स्त्रियों वाला, बुद्धिमान् व सुखी।
4. चतुर्थ में लग्नेश राजा का प्रेमी, बड़ी भारी जीविका करने वाला, पिता से लाभ, माता-पिता भक्त अल्पभोजी, बहुत स्त्रियों से युक्त, बहुत भाईवाला, गुण, रूपयुक्त।
5. पंचम में लग्नेश देव, पितृ पूजक, सुन्दर पुत्र, स्वत: दानशील, धनी, संग्राम में प्रसिद्ध, दीर्घायु, सम्मान्य, विख्यात, अच्छा शील, सत्कर्म, पुत्र सुख मध्यम, ज्येष्ठ संतान का नाश।
6. षष्ठ में लग्नेश रोगरहित, भूमि लाभ, बलवान, कृपण, धनाढ्य, शत्रुनाशक, सदाचारी, पापयुक्त, शुभग्रह से दृष्ट न हो, तो शत्रु से दु:खी रहता है।
7. सप्तम में लग्नेश तेजस्वी, शोक करने वाला, स्त्री शीलवती, प्रज्वलित तेज वाली और रूपवती। शुभग्रह हो, तो भ्रमण करने वाला, पापग्रह हो, तो स्त्रीनाश, विरागी राजा होता है।
8. अष्टम में लग्नेश कृपण, धन संग्रहकर्त्ता, दीर्घायु। लग्नेश पापग्रह हो, तो काना। शुभग्रह हो, तो सुन्दर रूपवाला। सिद्ध विद्या जानने वाला, रोगी, चोरी, क्रोधी, जुआरी, परस्त्रीगामी।
9. नवम में लग्नेश बहुत भाई-बन्धु, पुण्यकर्मा, सबका मित्र, सुशील, पण्डित, विख्यात, बड़ा तेजस्वी। भाग्यवान् लोगों का प्रिय, विष्णुभक्त, चतुर वक्ता, स्त्री, पुत्र और धनयुक्त।
10. दशम में लग्नेश राजा से लाभ, बड़ा पण्डित, सुशील, गुरु माता, पिता पूजक, पिता से सुख पाने वाला, राज्यमान, विख्यात अपने भुजबल से धनोपार्जन।
11. लाभ में लग्नेश सुखपूर्वक जीवन, पुत्र से युक्त, तेजयुक्त, बलवान, उदार गुणों से युक्त।
12. व्यय में लग्नेश- दुष्कर्म कर्त्ता, महापापी, नीच, सह गोत्रजनों के साथ मान करने वाला, विदेशवासी, कंगाल, मनुष्यों को मात देने वाला। चतुर वाणी, कर्णरहित। देह सुख से हीन, व्यर्थ खर्च, महाक्रोधी। लग्नेश बली हो, तो सौभाग्य सम्पन्न हो, शरीर बलिष्ठ हो। लग्नेश बली हो, शुभग्रह से युक्त या दुष्ट हो - स्वास्थ ठीक रहे, लग्नेश अच्छे स्थान में, अच्छी स्थिति में अच्छी दृष्टि युक्त या शुभ षड्वर्ग में हो, तो महत्त्व का होता है। मनुष्य के जीवन के सुख का विचार करने को लग्नेश का बल देखना चाहिये।

लग्नेश का विशेष फल-

1. लग्नेश बलहीन हो उसमें पापग्रह हो, तो शरीर से पीड़ित रहे।
2. लग्नेश या लग्न निर्बल या अस्त हो, तो उस भाव का सामान्य फल देगा।
3. लग्नेश शुभग्रह हो या लग्न में हो या लग्न को देखे तो विना क्लेश दीर्घायु हो और सुखी।
4. लग्नेश केन्द्र या कोण में हो या लाभ में हो, देह सुख कारक हो, रोगनाश रोगी न हो।

5. लग्नेश कोण या केन्द्र में हो, शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो, बलवान होकर शुभग्रह की राशि में हो, तो भूमंडल में उसका यश फैले।
6. लग्नेश केन्द्र कोण में प्रकाशित किरणों से युक्त हो अर्थात् अस्त न हो, उच्च स्वगृही केन्द्र छोड़कर अष्टमेश और कहीं हो, लग्न में शुभग्रह हो, तो दीर्घायु, धनी, माननीय, सतगुणी, राजा से प्रशंसित, भाग्यवान्, सुन्दर अंग, दृढ़ शरीर, निर्भय धार्मिक, सत्कुटुम्बी हो।
7. लग्नेश उच्च, मित्रगृही, स्वनवांश आदि में हो और शुभग्रह से युक्त या दृष्ट न हो देह सुख नहीं हो।
8. यदि ग्रह स्वस्थानी हो, तो अपने स्थान में रहे, ग्रह यदि चर राशि में हो, तो चलता रहे, यदि ग्रह स्थिर राशि में हो, एक स्थान में स्थिर रहे, ग्रह यदि द्विस्भाव में हो, मिश्रित फल हो।
9. यदि वह बलहीन हो - दु:खित, शक्तिहीन, रोगी, विपत्ति से खिन्न।
10. चन्द्रमा और शुक्र लग्नेश होकर चतुर्थ में विशेष करके रौप्य, धन, वाहन घर में सर्वदा रहे।
11. लग्नेश जन्म में प्रकाशित किरणों वाला हो, तो जातक प्रसिद्ध हो, यदि अच्छे स्थान में हो, तो सुखी हो, दु:स्थान में, पापगृही या नीच में हो, तो पतित या नीच हो।
12. लग्नेश पापयुक्त होकर दु:स्थान में हो - शरीर में सुख नहीं मिले क्लेश कारक हो।
13. लग्नेश 4-6-8-12 घर में हो, तो उपरोक्त फल।
14. लग्नेश दुष्ट स्थान के स्वामी से युक्त हो या दुष्ट स्थानेश लग्न में हो, तो रोगी। दुष्ट का तात्पर्य 6,8,12 घर से है।
15. लग्नेश जिस भाव में हो उसका स्वामी दुष्ट स्थान में हो, तो देह दुर्बल रहे, रोगी रहे।
16. लग्नेश पापग्रह हो या चन्द्रमा लग्न में हो या दोनों योग हो, तो अतिरोगी।
17. लग्नेश अस्त शत्रुगृही या नीच में हो - रोगकारक।
18. लग्नेश पापयुक्त शरीर सुख नष्ट।
19. लग्नेश पापयुक्त हो और लग्न में राहु हो तो ठग, चोरों का भय।
20. लग्नेश शनि से युक्त व दृष्ट हो, तो निश्चय ठग, चोर या राज-भय।
21. अष्टम में लग्नेश राहु या केतु युक्त हो, तो उपरोक्त फल।
22. लग्नेश जिस राशि के जिस अंश में हो उसका स्वामी यदि राहु, मंगल, केतु, शनि से युक्त हो, तो उपरोक्त फल।
23. लग्नेश मंगल लग्न में पापयुक्त या दृष्ट - पत्थर की चोट से या खड्ग आदि से व्रण।
24. लग्नेश निर्बल ग्रहयुक्त या निर्बल ग्रह के घर में हो, तो देह दुर्बल हो।
25. लग्नेश निर्बल होकर अष्टम में तथा लग्न में निर्बल राशि हो शरीर दुबला कष्ट युक्त रहे।
26. लग्नेश जलग्रह हो और बली हो शुभग्रह युक्त हो, तो स्थूल शरीर हो।
27. लग्नेश बलवान हो, सूर्य देवलोकांश में हो, भाग्येश उच्च राशि में हो, तो बहुत भाग्यवान, कीर्तिमान हो।
28. लग्न में मांदि (गुलिक) हो और लग्नेश नीच में हो, तो 56 वर्ष में पुत्र शोक हो।
29. लग्नेश पारिजात में सुखी, वर्गोत्तम निरोग, गोपूर में धन-धान्यपूर्ण, सिंहासन में राजा हो, लग्नेश पारावत में विद्वान्, लग्नेश देवलोक में श्रीमान, लग्नेश ऐरावत में विख्यात और राजमान्य।
30. लग्नेश से 12वें स्थान का स्वामी सूर्य से अस्त हो, तो उसी जगह रहे। छोटे ग्राम में निवास करे। यदि बलवान हो, तो शहर में निवास करे।

31. रमणीय भूमि में वास - लग्नेश से व्ययेश यदि लग्न से केन्द्र या कोण में हो अपने उच्च या मित्र ग्रह में हो उसके दोनों ओर शुभग्रह हो, तो रमणीय भूमि में वास हो।
उदाहरण - यहाँ लग्नेश चन्द्र लाभ में है लाभ का अष्टम में हैं। यहाँ दशमेश मंगल लग्न से त्रिकोण नवम में अपने मित्र गुरु के घर में है इसके दोनों और गुरु शुक्र शुभग्रह है।
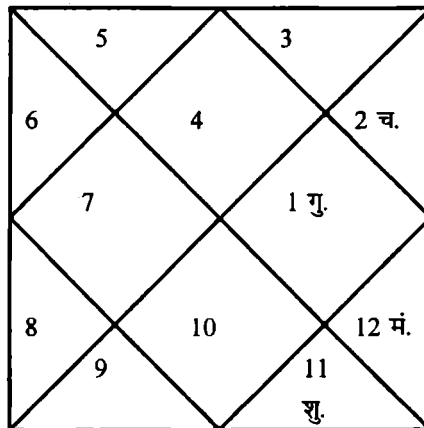
32. जन्म भूमि में वास, तीर्थादि दिव्यस्थान प्राप्त यदि उसके दूसरे या 9 स्थान पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो, तो जन्मभूमि में वास करे, दिव्यस्थान तीर्थादि प्राप्त हो।
33. लग्नेश स्थिर राशि में हो, लग्न स्थिर हो, तो स्थिर ग्रहयुक्त हो, तो अपने देश में ही भाग्योदय हो।
34. लग्नेश हीनबल, नीच, अस्तगत आदि हो, तो मूर्ख होता है।
35. 30 वर्ष बाद सुख - लग्नेश जिस नवांशक में है उसका स्वामी केन्द्र त्रिकोण या उच्च में हो वैसे ही लाभेश से युक्त हो, तो 30 वर्ष के बाद सुख मिले।
36. 20 वर्ष बाद सुख - लग्नेश जिस अंशक में है उसका स्वामी दूसरे भाव में हो या ऐसा ही लाभेश भी हो, तो 20 वर्ष बाद सुख मिले।
37. 16 वर्ष बाद सुख - लग्नेश शुभग्रह की राशि में हो उसे शुभग्रह देखे या गोपुरांश में हो, तो 16 वर्ष के पश्चात् सुखी हो।
38. जीवन भर सुखी - लग्नेश वर्गोत्तमांश में या उच्चांशक में व मित्र द्रेष्काण में शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो जीवनपर्यन्त सुखी रहे।
39. बाल्यावस्था में सुख - लग्नेश उत्तमांश में हो लग्न में पापग्रह धन स्थान में शुभग्रह तथा नवम स्थान में कोई शुभग्रह हो, तो बाल्यावस्था में सुख मिले अथवा नहीं मिले।
40. यशस्वी धनी - लग्नेश चर राशि में और शुभग्रहों से दृष्ट हो, तो यशस्वी, धनी, भोगी और सुखी हो।

भिन्न-भिन्न भावों में धनेश का फल

(1) लग्न में धनेश, बड़ा कृपण, व्यवसाय करने वाला, सत्कर्मी, धनवान्, धनी होने से प्रसिद्ध, अनेक भोगों को भोगने वाला, पुत्रवान, कुटुम्बियों का विरोध, कामी, निष्ठुर, परकार्य कर्त्ता।
(2) धन में धनेश व्यवसाय करने वाला, उत्तम लाभ, उत्तम वस्तुओं का भोगी, प्रासंगिक बातों को सत्य करने वाला, सत्यवादी, प्रसिद्ध, बड़ा उद्वेगी।

(3) तृतीय में धनेश - भाई-बंदों से भेदभाव रहित, यह शुभग्रह हो, तो राजा से वैमनस्य हो। चोर तथा चंचल धनवाला, विनय तथा न्याय से हीन। शुभग्रह से युक्त हो, तो पराक्रमी, बुद्धिमान्, गुणी, कामी, लोभी।

(4) चतुर्थ में धनेश - पिता द्वारा पूर्णलाभ वक्ता, प्राणियों पर दयाभाव, दीर्घायु। धनेश क्रूर ग्रह हो, तो मृत्यु देवे। यदि गुरु से युक्त या अपने उच्च में हो, तो राजा तुल्य।

(5) पंचम में धनेश - पुत्र प्रफुल्लित, कठिन से कठिन कार्य करने में प्रसिद्ध अतिकृपण, दु:ख का भोगी, सदा विलासी, धनी, पुत्र भी धनोपार्जन करने वाला।

(6) षष्ठ में धनेश - धन संग्रह करने में तत्पर, शत्रुओं को मारने वाला। धनेश शुभग्रह हो, तो भूमि का लाभ हो, पापग्रह हो, तो धनहीन करे। कृतघ्न, शुभग्रह से युक्त हो, तो शत्रु से धन लाभ पापयुक्त हो, तो शत्रु के द्वारा हानि तथा कमजोर जंघा वाला।

(7) सप्तम में धनेश - बड़े गौरवयुक्त किसी कार्य को करे। श्रेष्ठ गुणवती धनसंग्रह करने वाली, क्रीड़ा करने वाली स्त्री मिले। क्रूर ग्रह हो, तो स्त्री वंध्या हो। श्रेष्ठ स्त्री के साथ भोग-विलास, परस्त्रीगामी, पापयोग या दृष्टि हो, तो स्त्री व्याभिचारिणी हो।

(8) अष्टम में धनेश - मुर्दा की खोपड़ी लेकर भीख माँगने वाला, आत्मघात करने वाला, इच्छा प्राप्त वस्तुओं को भोगने वाला, विलासी, दूसरों के धन को चुराने वाला, हिंसक, भविष्य को मुख्य मानने वाला, बहुत भूमि और धन से युक्त हो। स्त्री सुख अल्प, बड़े भाई से सुख नहीं होता। सट्टा, लाटरी, वसीयतनामा आदि से अकल्पित लाभ।

(9) नवम में धनेश - यदि क्रूर ग्रह हो, तो दरिद्र, भिक्षुक प्रत्येक कार्य में उपहास प्राप्त। शुभग्रह हो, तो विख्यात दानी, पापग्रह हो, तो दरिद्र। भिक्षुक तथा ठग।

(10) दशम में धनेश - राजाओं का मान्य, राजा से लक्ष्मी धनेश शुभग्रह हो, तो माता-पिता का पालनकर्त्ता। बहुत स्त्री, धन से युक्त किन्तु पुत्र से हीन।

(11) लाभ में धनेश - ग्रहों का ज्ञाता, पक्षियों के व्यवहार का ज्ञाता, लक्ष्मी का स्वामी, लोकसमूह के पालन करने में सदा तत्पर विख्यात, सदा उद्योगीमानी, यशस्वी।

(12) व्यय में धनेश - क्रूर हो, तो महाकृपण, धनहीन, शुभ हो, तो कभी हानि, कभी लाभ। साहसी, दूसरों के आश्रित जीवन। उसकी ज्येष्ठ संतति नहीं जीती।

द्वितीयेश का विशेष फल -

1. गुणी धनी आदि - द्वितीयेश लग्न में हो और शुभग्रह दूसरे में हो, तो गुणी उन्नतिशील, कुटुम्बी हो, दूरदर्शी और सुमुख हो।
2. द्वितीयेश सूर्य से सम्बन्धित हो, तो- जनता को अधिक सहायता पहुँचाने वाला हो। ज्ञान और धन प्राप्त करे।

   शनि से हो, तो- उसकी विद्या अल्प हो वह क्षुद्र हो।
   गुरु से हो, तो - वैदिक धर्मशास्त्र में निपुण
   बुध से हो, तो - अर्थशास्त्र में चतुर
   शुक्र से हो, तो - श्रृंगार सम्बन्धी कार्य में चतुर
   चन्द्र से हो, तो - काल के सम्बन्ध कुछ ज्ञान हो।
   मंगल से हो, तो - क्रूर कला और पिशुनता (चुगलखोरी) में निपुण
   राहु से हो, तो - अस्पष्ट भाषी अर्थात् शुद्ध शब्द न बोले

केतु से हो, तो - असावधानी से चलने वाला, झूठ बोलने वाला।

नेत्ररोगी - धनेश 6, 8, 12 में हो, तो नेत्र रोगी।

सुलोचन - धनेश (नेथभावपति) बली और शुभ युक्त हो, तो सुलोचन हो।

तृतीयेश का प्रत्येक भाव में फल -

1. लग्न में तृतीयेश बैठा हो, तो प्रत्येक से झगड़ा करने वाला। वचन विवादी, लम्बट, स्वजनों का भेदकर्त्ता, बिना पढ़ा-लिखा भी बुद्धिमान होता है।
2. धन में तृतीयेश - शुभग्रह हो तो धनाढ्य। यदि पापग्रह हो तो भिक्षुक, निर्धन, बन्धु विरोधकर्त्ता, स्थूल देह, बलहीन, थोड़ा कार्य प्रारम्भ करने वाला, परस्त्रीगामी।
3. तृतीय में तृतीयेश - सतगुणी, अच्छे मित्र, श्रेष्ठ कुटुम्बी, देवगुरुजनों का सेवक, राजा से लाभ करने वाला, अधिक सम्भोगी।
4. चतुर्थ में तृतीयेश - पिता तथा भाई-बंदो के साथ सुख भोगने वाला, माता के साथ वैर करने वाला, पिता के धन का नाशक, दुष्ट स्त्री का पति।
5. पंचम में तृतीयेश - पुत्र, भाई-बंदो के पुत्र और सहोदर द्वारा पालन करने लायक, दीर्घायु, परोपकार में बुद्धि, अच्छे बांधवो वाला, दुष्ट स्त्री का पति।
6. षष्ठ में तृतीयेश - भाई-बंधुओं का विरोधी, नेत्र का रोगी, अकस्मात् भूमि लाभ, रोग व्याप्त।
7. सप्तम में तृतीयेश - सुशीला, सौभाग्यवती स्त्री हो, क्रूर ग्रह हो, तो देवर के घर में रहने वाली, बाल्यावस्था में दु:खी अन्त में सुखी।
8. अष्टम में तृतीयेश - भाई मरे, यदि पापग्रह हो, तो बाँह में पीड़ा से दु:खी, 8 वर्ष जीवित रहे। चोर, राजा के द्वारा मरण पाने वाला।
9. नवम में तृतीयेश - भाई-बन्धुओं से हीन, स्वयं विद्वान्, सहोदरों से प्रेम रखने वाला, पुण्यवान, सगे भाई से स्नेह करने वाला, पिता के सुख से हीन स्त्री द्वारा भाग्योदय, पुत्रादि से युक्त।
10. दशम में तृतीयेश - राजाओं का पूज्य, माता-पिता, भाईयों का भक्त, सब प्रकार से सुखी, पराक्रम से धन कमाये, दुष्ट स्त्रियों को पालने वाला।
11. लाभ में तृतीयेश - सत्पात्र, बान्धवों से युक्त, किसी राजा के द्वारा शोभा पाने वाला, भाई-बंदो का सेवक, भोग-विलास युक्त, व्यापार में धनी, साहसी, दूसरों की सेवा करने वाला।
12. व्यय में तृतीयेश - मित्रों से विरोध करने वाला, भाई-बंदो को संताप देने वाला, कुकार्य में खर्च करने वाला, उसका पिता क्रूर होता है तथा पत्नी द्वारा भाग्योदय होता है।

तृतीयेश का विशेष फल -

1. सहोदर सुख - तृतीयेश या मंगल तीसरे भाव को देखता हो या उसमें हो, तो सहोदरो का सुख मिलता है।
2. तृतीयेश और मंगल दोनों पापयुक्त या पापराशि में हो, तो सहोदरों का नाश।
3. तृतीयेश व मंगल व दोनों लग्न से त्रिक भाव में हो भ्रातृ नाश होता है।
4. तृतीयेश शुभग्रह युक्त केन्द्र में हो, तो भातृ सुख हो।
5. तृतीयेश और कारक दोनों विषम राशि में हों गुरु, सूर्य, मंगल की दृष्टि हो और तीसरे घर में विषम राशि हो, तो नवांश से जितना मालूम हो उतने भाई होंगे।

6. तृतीयेश जहाँ हो उसका स्वामी लग्न में राहुयुक्त हो, तो सर्प से भय यदि बुध के साथ हो, तो गर्दन का रोग हो।
7. तृतीयेश गुरु से युक्त लग्न में हो गाय या चौपाये से भय, यदि लग्न जलराशि हो, तो जल से भय।

चतुर्थेश का भिन्न-भिन्न भाव का फल -

1. लग्न में या सप्तम में चतुर्थेश - अनेक विद्या जानने वाला, पिता से उपार्जित धन का त्याग करने वाला, सभा में जड़वत, पिता-पुत्र में परस्पर स्नेह, पितृ पक्ष वालों से वैरकर्त्ता, सुन्दर, पिता के नाम से प्रसिद्ध, विद्या, गुण, भूमि, वाहनों से युक्त, माता से सुखी, पिता के नाम से विख्यात।
2. द्वितीय में चतुर्थेश— क्रूर ग्रह हो, तो पिता से विरोधकर्त्ता, शुभग्रह हो, तो पिता का पालक, विख्यात पिता उसकी लक्ष्मी को नहीं पावे। भोगी सर्वसम्पत्ति युक्त, अधिक परिवार, मंत्री, साहसी, मायावी।
3. तृतीय में चतुर्थेश - पिता के लिए कष्टप्रद, विख्यात, पिता वाला, पिता से वैर, पिता के बान्धवों का पालनकर्त्ता, संसार में विख्यात, निरोग, गुणी, उदार, पराक्रमी, स्वभुजोपार्जित धनवाला।
4. चतुर्थ में चतुर्थेश - पिता, राजा, स्वामी, इनका मान करने में तत्पर, पिता से लाभ, स्वधर्म में सावधान तथा सुखी। सर्वधनसम्पन्न, चतुर, सुशील, मानी-ज्ञानी, स्त्री का प्रिय और सुखी।
5. पंचम में चतुर्थेश - पिता के लाभ से भोग वाला, दीर्घायु, राजा से विख्यात, पुत्र से लाभदायक, सबका प्रिय, विष्णु भक्त, गुणी मानी, स्वउपार्जित धन।
6. षष्ठ में चतुर्थेश - पिता के धन का नाशक, पिता से वैरकर्त्ता, पापग्रह - माता के धन का नाशक, पिता के दुष्ट कामों का अनुगामी, शुभग्रह धन का संचयकर्त्ता, माता सुख से हीन, चोर, व्यभिचारी, स्वच्छन्द, दुष्ट हृदय।
7. सप्तम में चतुर्थेश - पापग्रह हो, तो सुख से श्वसुर को नहीं पालता, शुभग्रह हो, तो पालनकर्त्ता। बली हो, तो कुलपति हो, बहुत विद्या का ज्ञाता, पैतृक धन को त्यागने वाला, सभा में गूंगा के समान।
8. अष्टम में चतुर्थेश - क्रूर, रोगी, दरिद्र, बुरे कर्म, मृत्यु प्रिय, घर, स्त्री आदि के सुख से हीन, माता-पिता से भी अल्पसुख, नपुंसक समान।
9. नवम में चतुर्थेश - सत्संगी, समस्त विद्याओं में युक्त, पिता के धर्म का संग्रहकर्त्ता, सबका प्रिय देवों का भक्त, गुणी मानी, सर्वसुख युक्त।
10. दशम में चतुर्थेश - पापग्रह हो, तो पुत्र माता को त्याग दे और कन्या का प्यारा होता है, पापग्रह हो, तो उसको और उसकी माता को छोड़ दे। दूसरी कन्या से विवाह करे। शुभग्रह हो, तो अन्य विवाह न करे एवं दूसरी स्त्री के साथ रहने वाला हो।
11. लाभ में चतुर्थेश - धर्म करने वाला, सत्कर्मी, पिता का भक्त, दीर्घायु, रागरहित, परदेशगामी, धनाढ्य, गुप्तरोग वाला, उदार गुणी, दाता, परोपकारी।
12. व्यय में चतुर्थेश - मृत पिता वाला, परदेशवासी, पापग्रह हो, तो अन्य पिता से जातक का जन्म, गृहादि सुख से हीन, दुर्व्यसन वाला, मूर्ख, आलसी।

चतुर्थेश का विशेष फल -

1. जिस क्षेत्र की चिन्ता हो चतुर्थेश से विचारना।
2. चतुर्थेश शुभग्रह हो शुभदृष्ट हो और बंधु का कारक (गुरु) बली हो, तो उसके बन्धु उसका मान करें।
3. चतुर्थेश 2,11,5 या 9 में हो शुभ दृष्ट हो या शुभ नवमांश में हो, तो अपने बन्धुओं का सहायक होता है।

4. चतुर्थेश पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो, ग्यारहवें स्थान में हो, तो इच्छित वाहन समूह मिले।
5. मित्र और घर प्राप्त - चतुर्थेश लग्नेशयुक्त स्वस्थान में हो, तो अनायास घर की प्राप्ति हो अच्छे मनुष्य से मित्रता हो।
6. चतुर्थेश पापयुक्त हो, तो माता को क्लेश।
7. चतुर्थेश शुभयुक्त हो, तो माता को शुभ।
8. लाभेश चतुर्थ में चतुर्थेश लाभ में हो, तो 12 वर्ष में वाहन सुख मिले।
9. चतुर्थेश यदि दशमेश युक्त होकर अपने उच्चांश में हो, तो 42 वर्ष वाहन का लाभ।
10. चतुर्थ में चर राशि हो चतुर्थेश और मंगल 6, 12 भाव में हो तो वह गूंगा हो।
11. जन्म में चतुर्थेश और चन्द्र दु:स्थान में हो शुभग्रह का योग दृष्टि न हो या दो पापग्रहों के बीच में हो और पाप-दृष्टि भी हो, तो माता की मृत्यु हो।
12. चतुर्थेश दु:स्थान में हो या चतुर्थ में मंगल और शनि हो, तो उसका घर जल जाये।

चतुर्थ में बली चतुर्थेश का फल - चतुर्थेश सूर्य हो, तो उसका गृह अदृढ़ और विशेषकर जला हुआ होता है। चन्द्र हो, तो उसका गृह नवीन होता है। मंगल हो, तो घर टूटा हुआ या जला हुआ, बुध हो, तो उसका गृह चित्र-विचित्र प्रकार का, गुरु हो, तो उसका गृह अच्छा मजबूत, दृढ़, शुक्र हो, तो उसका घर मनोहर, शनि हो, तो उसका घर पुराना होता है।

चतुर्थेश का धनभाव में विशेष फल - चतुर्थेश चन्द्र धन में - दही, शक्कर आदि मीठे पदार्थ मिलें, चाँदी का पात्र पीने का हो, मांस, मछली आदि को खाने वाला हो। सूर्य धन में - खारा व उष्ण पदार्थ प्राप्त हो, ताम्बे का पात्र हो, बकरे का मांस भक्षी हो। मंगल धन में - खारा, तिलह, मसालेदार पदार्थ मिले, हरिण व पक्षी का मांस प्रिय हो, रांगा सा कलई वाला पात्र हो, न्याय करने की विधि लड़ाई करने की विद्या प्राप्त हो, लाल नेत्र, क्रूर व कठोर वचन बोलने वाला हो। बुध धन में हो, तो सात्विक अन्न प्राप्त हो, कांसे का पात्र प्रिय हो।

पंचमेश का भिन्न-भिन्न भावों में फल -

1. लग्न में पंचमेश - संसार में प्रसिद्ध, थोड़े पुत्र, शास्त्र जानने वाला, देववेत्ता सत्कर्म में निरत, पुत्र सुखयुक्त, विद्वान्, कदर्य, कुटिल हृदय, पराधनहारक।
2. धन में पंचमेश क्रूर ग्रह हो दरिद्र, शुभग्रह गाने बजाने आदि कला का ज्ञाता, नौकरी आदि के लिए अच्छी जगह होने पर भी कठिनता से भोजन चलाने वाला, बहुत पुत्र और धन से युक्त, परिवार का पोषक, मानी, स्त्री का प्रिय यशस्वी।
3. तृतीय में पंचमेश - मनोहर, मीठी बातें कहने वाला, सब वस्तुओं में प्रसिद्ध उसका पुत्र सारे कुटुम्ब का पालन पोषण करे, सहोदर का प्रिय, चुगलखोर, कंजूस, स्वार्थी।
4. चतुर्थ में पंचमेश - पिता के समान कर्म करने में उद्यत, पिता द्वारा अधिक समय तक पाला जाय, माता की सेवा करने वाला, सुखयुक्त बुद्धिमान, राजमंत्री या राजगुरु।
5. पंचम में पंचमेश - बुद्धिमान, मनुष्यों में माननीय, पुत्रों से युक्त एवं प्रसिद्ध। शुभग्रह युक्त हो, तो पुत्रवान्। पापयुक्त हो, तो संतानहीन, किन्तु गुणी और मित्र का उपकारी होता है।
6. षष्ठ में पंचमेश - क्रूर ग्रह हो, तो सदा शत्रुओं से आक्रान्त, मान से हीन, बंधनरहित, पुत्र से शत्रुता या पुत्रहीन या दत्तक पुत्रवाला।

7. सप्तम में पंचमेश - मनुष्य देवगुरुजनों का भक्त, पुत्रों से युक्त, स्त्री प्रियभाषिणी, मानी, सब धर्म को मानने वाला, पुत्रादि सुखयुक्त, परोपकारी।
8. अष्टम में पंचमेश हो, तो दुर्वाक्य कहने वाला, स्त्री से रहित, भाई तथा पुत्र असह्य बातें कहते हैं। थोड़े पुत्रवाला, कास (जुकाम) श्वास से युक्त, क्रोधी, सुखहीन।
9. नवम में पंचमेश - विद्या में सुबोध, बड़ा कवि, गान विद्या का जानने वाला, राजाओं से पूजित, रूपवान, नाटक, विद्या का प्रेमी, उसका पुत्र राजा या राजा के तुल्य हो, स्वयं ग्रन्थकार, विख्यात, कुल में श्रेष्ठ।
10. दशम में पंचमेश - राजा के समान कर्म करने व विचारने वाला, सत्कर्म में निरत, सबों में उत्तम, माता को आनन्द देने वाला राजा, अनेक सुख से युक्त, विख्यात कीर्ति।
11. लाभ में पंचमेश - शूरवीर, पुत्रवान्, गाने बजाने की कला का ज्ञाता, राजा के समान भोगी। विद्वान् लोकप्रिय, ग्रन्थकार, कार्य में समर्थ, बहुपुत्र, धनवान।
12. व्यय में पंचमेश - क्रूर ग्रह हो, तो पुत्र से हीन, पुत्रों के दु:ख से संतापित, परदेशवासी। शुभग्रह हो, तो सुन्दर पुत्र हो। पुत्र सुख से हीन, दत्तक या क्रीत पुत्रवाला।

पंचमेश का विशेष फल -

1. लग्नेश व पंचमेश पंचम भाव में हो या केन्द्र त्रिकोण में हो, तो पूर्णरूप से पुत्र सुख हो।
2. पंचमेश 6-8-12 भाव में हो, तो पुत्र का अभाव हो।
3. पंचमेश अस्त हो या पापयुक्त हो, तो पुत्र नहीं होता, होये तो मर जाता है।
4. पंचमेश 6 भाव में या मंगल से युक्त हो, तो उनकी प्रथम संतान नष्ट हो जाती है और स्त्री काकवन्ध्या होती है।
5. पंचमेश नीच में होकर 6-8-12 भाव में हो या पंचम भाव में केतु और बुध हो, तो उसकी स्त्री काकवन्ध्या हो जाती है।
6. पंचमेश 6-8-12 में हो या शत्रु राशि या नीच में होकर पंचम भाव में हो, तो यत्न से पुत्र होता है।
7. पंचमेश सुस्थित हो और उसे वैशेषिकांश प्राप्त हो, तो बुद्धिमान और निष्कपटी हो।

षष्ठेश का प्रत्येक भाव में फल -

1. लग्न में षष्ठेश - रोगरहित, बलवान, कुटुम्ब को कष्ट देने वाला, आत्मपक्षीयजनों से युक्त, शत्रुहंता, स्वच्छन्द रहने वाला, अपने सम्बन्धीयों का शत्रु, धनी मानी, साहसी, गुणी।
2. धन में षष्ठेश - बड़ा दुष्ट, प्रत्येक कार्य में चतुर, धन प्रतिष्ठा बढ़ाने में तत्पर, अच्छी जगह रहने वाला, सर्वज्ञ विख्यात, व्याधित शरीर वाला, संग्रहकर्त्ता, कुल में श्रेष्ठ, विदेशवासी, सुखी, वक्ता, अपना कर्त्तव्य करने वाला।
3. तृतीय में षष्ठेश - लोगों को कष्ट देने वाला, अपने कुटुम्बियों को मारने में चतुर, संग्राम में शत्रु से कष्ट। क्रोधी, बलहीन, भाई का शत्रु, क्रूर, नौकर वाला।
4. चतुर्थ में षष्ठेश -पुत्र-पिता में परस्पर वैमनस्य, पिता, रोगी, संकर जाति का पुत्र होकर बहुत कालीन पिता की लक्ष्मी को प्राप्त करता है। चुगलखोर, द्वेषी, चंचल, अधिक धनवान।
5. पंचम में षष्ठेश - क्रूर हो, तो पिता-पुत्र वैर, अपने पुत्र के कारण मरण पाने वाला। शुभ हो, तो निर्धन, पदवी पाकर दुष्ट स्वभाव, कपटी। धनादि स्थिर नहीं रहता, पुत्रादि से शत्रुता, स्वयं सुखी, स्वार्थी, दयालु।

6. षष्ठ में षष्ठेश – रोगरहित, बहुतों से वैर, सुखी, बड़ा कृपण, जन्म से सुखयुक्त। कुस्थानवासी, अपने स्थान में वास, सहोदर से विरोध, अन्यजनों के साथ शुभ, मित्र और वाहन की वृद्धि, नीचजनों की वृद्धि।
7. सप्तम में षष्ठेश – विरोध करने वाली, क्रोधी, संतापहारी स्त्री मिले, यदि क्रूर ग्रह हो। शुभ हो, तो स्त्री वंध्या या गर्भपात कराने में प्रवृत्त। स्त्री सुख से रहित, यशस्वी, गुणी, मानी, साहसी, धनी हो।
8. अष्टम में षष्ठेश – संग्रहणी रोगी, ग्रह के अनुसार षष्ठेश सूर्य सिंह से, चन्द्र तत्काल मृत्यु, मंगल सर्प से, बुध विषदोष से, गुरु बुद्धि की खराबी या पागलपन से, शुक्र नेत्र रोग से मृत्यु हो। बहुत रोगी, पंडितों का शत्रु, दूसरे के धन का लोभी, परस्त्रीगामी तथा अशुचि।
9. नवम में षष्ठेश – क्रूर, लंगड़ा, भाई-बंधु से विरोध करे, शास्त्र को नहीं माने, भिक्षुक पापग्रह हो, तो भ्रष्ट हो, काष्ठ शिलादि बेचने वाला, व्यापार में कहीं हानि कहीं वृद्धि।
10. दशम में षष्ठेश – क्रूर ग्रह माता से वैर करे, दुष्ट स्वभाव, धर्म और पुत्र के पालने में वृद्धि, माता के दोष से उसका वैर बना रहे। कुल में श्रेष्ठ, पिता का अभक्त, वक्ता और विदेश जाने में सुखी।
11. लाभ में षष्ठेश – क्रूर ग्रह शत्रु के द्वारा मृत्यु, सबका वैरी, चोरों के द्वारा हानि, घोड़ा, भैंसादि चतुष्पद के निमित्त से लाभ। शत्रु से धन पाने वाला गुणी साहसी, मानी, किन्तु पुत्र सुख से रहित।
12. व्यय में षष्ठेश – व्यापार में द्रव्य हानि, विदेशादि में जाने से धन की हानि, भाग्य से होता है ऐसा मानने वाला। लक्ष्मी के आनन्द से युक्त, व्यसन में खर्च करने वाला, विद्वानों का द्वेषी, जीव हिंसक।

षष्ठेश का विशेष फल -

1. षष्ठेश केन्द्र में पापयुक्त या दृष्ट हो, तो शत्रु से लगातार बड़ी पीड़ा हो जिसका वह सरलतापूर्वक परिहार न कर सके। यदि लग्नेश बली हो और यदि सूर्य नवम घर में हो, तो शत्रु का नाश हो।
2. षष्ठेश 9 या 12 स्थान में हो। व्ययेश 9 या 11 स्थान में हो या लग्न या अष्टम स्थान में हो, तो दीर्घायु।
3. षष्ठेश 6, 1 या 8 भाव में हो, तो शरीर में व्रण कारक हो। षष्ठभाव में जो राशि हो उस राशि के आश्रित अंग में विशेषकर व्रण होंगे। इसी प्रकार पितादि (10 स्थानादि) भावों के स्वामी षष्ठेश से युक्त हो 6, 8 भाव में हो, तो पितादि को भी व्रण हो।
4. व्रणस्थान – षष्ठेश से युक्त होकर उक्त स्थान में यदि चन्द्र हो, तो मुख में मंगल हो, तो कंठ में, बुध नाभि में, गुरु नाक, शुक्र नेत्र, शनि और राहु-केतु पेट में व्रण हो।
5. लग्नेश मंगल की राशि 1-8 में या बुध का राशि 3-6 में या किसी भाव में बुध से दृष्ट हो, तो मुख में व्रण हों।
6. षष्ठेश सूर्य के नवमांश में हो, तो हृदय में रोग हो।
7. षष्ठेश वृश्चिक या कर्क के नवांश में हो मंगल से दृष्ट हो, तो गुप्त रोग से अंग पीड़ा।
8. पवन और रुधिर विकार – षष्ठेश वृश्चिक या कर्क के नवांश में शनि से दृष्ट हो, तो पवन और रुधिर विकार से पीड़ा हो।

सप्तमेश का भिन्न-भिन्न भाव फल -

1. लग्न में सप्तमेश – परस्त्री से प्रीत न करे, अनेक भोग भोगे, रूपवान्, अपनी स्त्री में मन, दुष्ट, चतुर, अधीर, वातरोगी।
2. धन में सप्तमेश – दुष्ट भार्या, पुत्रों की इच्छा करने वाली, स्त्री के द्वारा अर्जित धन का भोग करने वाला, बहुत पत्नी वाला, दीर्घसूत्री।

3. सहज में सप्तमेश - स्वबलयुक्त, बन्धु स्नेही, बड़ा दु:खी, पापग्रह हो तो स्त्री देवर के साथ रहे, वह स्त्री रूपवती और मित्रों के घर रहने वाली होती है। पुत्र वत्सल तथा दु:खी। क्रूर ग्रह हो, तो स्त्री रूपवती होकर देवर के साथ भोग करती है।
4. सुख में सप्तमेश - चंचल स्वभाव, पितृ वैरी, उसके पिता को खोटे वाक्य कहे। उसकी भार्या का पालन-पोषण, पिता करता है अर्थात् मायके जाकर जीवन-निर्वाह करें। उसकी स्त्री वश में नहीं रहती स्वयं वह सत्यवादी, बुद्धिमान, धर्मात्मा और दन्तरोगी।
5. पंचम में सप्तमेश - सौभाग्ययुक्त, पुत्रवान, साहस प्रिय, दुष्ट बुद्धि, उसकी स्त्री को पुत्र पालन करता है। मानी, सब गुणों से युक्त, सदा हर्षित, सब धन से युक्त।
6. षष्ठ में सप्तमेश - स्त्री से वैर करने वाला, स्त्री रोगिणी। पापगृह स्त्री के साथ अधिक संभोग करने में क्षय रोग, शीघ्र मृत्यु।
7. सप्तम में सप्तमेश - दीर्घायु, सब के साथ प्रीति, अच्छा स्वभाव, तेजस्वी स्त्री सुख से युक्त, धीर, चतुर, बुद्धिमान, वातरोगी।
8. अष्टम में सप्तमेश - वेश्यागामी, विवाह से रहित, नित्य चिन्तायुक्त, स्त्रीमुख से हीन, स्त्री रोग युक्त, दुष्टा और वश में नहीं रहने वाली।
9. नवम में सप्तमेश - बड़ा तेजस्वी, शीलवान्, स्त्री सुशीला, तेजयुक्त। क्रूर ग्रह हो, तो नपुंसक या कुरूप। यदि लग्नेश देखें तो नीतिशास्त्र में प्रवीण लग्नेश से दृष्ट हो, तो तप से अधिक बल पाता है। अनेक स्त्री से संग, स्त्री में आसक्त, बहुत कार्य आरम्भ करने वाला।
10. दशम में सप्तमेश - राजा से दोषयुक्त, अतिकामी, कपटी, क्रूर ग्रह हो, तो अति दु:खी और शत्रु के आधीन। स्त्री वश में नहीं होती, स्वयं धर्मात्मा और धन शत्रु से युक्त।
11. लाभ में सप्तमेश - स्त्री पतिभक्ता, रूपवती, सुशक्ति, दुर्बलांग, वह स्त्री सन्तान उत्पन्न होने के समय मृत्यु प्राप्त करे। स्त्री के द्वारा धन लाभ पुत्र सुख अल्प, अधिक कन्या।
12. व्यय में सप्तमेश - कुटुम्ब के काम-काज में लगा रहे। स्त्री बड़ी नवीन चंचल, दुष्टों के साथ रहने वाली, पति को छोड़कर हर जगह रहने वाली वेश्या सदृश। उसकी स्त्री बहुत खर्च करने वाली होती है। वस्त्र व्यापार से लाभ।

सप्तमेश का विशेष फल - सप्तमेश बली हो और सप्तम घर का सम्बन्ध शुभ ग्रह से चाहे अशुभग्रह से युक्त या दृष्ट से हो, तो उसकी स्त्री सतगुणी होती है। पति के साथ आनन्दपूर्वक रहेगी। सन्तान होंगे और वह अच्छे गुणवाली होगी।

2. स्त्री रोगिणी - सप्तमेश 6-8-12 स्थान में हो अपने घर का न हो, तो स्त्री रोगिणी होती है। यदि सप्तमेश उच्च स्थान का हो, तो यह फल नहीं होगा।

अष्टमेश का भिन्न-भिन्न भावों का फल -

1. लग्न में अष्टमेश - प्रत्येक कार्य में विघ्न, बहुत काल तक रोगी, चोर निंदनीय कार्य, किसी राजा की आज्ञा से लक्ष्मी प्राप्त। प्रशंसा गुणगान से राजा के संग में लक्ष्मी प्राप्त।
2. धन में अष्टमेश - क्रूर ग्रह हो, तो थोड़े दिन तक जीने वाला, शत्रुओं से युक्त चोर, शुभग्रह हो अति शुभकारक होता है परन्तु किसी राजा द्वारा मृत्यु प्राप्त करे। भुजबल से हानि, थोड़ा धन वाला, उसका जो कुछ नष्ट होता है वह मिलता नहीं।

3. तृतीय में अष्टमेश –बन्धु विरोधी, सुहृदजनों का विरोधी, अंगहीन, दुर्वाक्य कहने वाला, बड़ा चंचल, सहोदर भाई से रहित, नौकर व बल से हीन।
4. चतुर्थ में अष्टमेश – पिता का वैरी, पिता से धन को हड़पने वाला, पिता रोगी। पिता से अन्यायपूर्वक पिता की लक्ष्मी को प्राप्त करता है। माता से हीन, घर जमीन से रहित, मित्र द्रोही।
5. पंचम में अष्टमेश – क्रूर ग्रह हो, तो पुत्ररहित। शुभग्रह हो, तो शुभ फल। जातक अधिक नहीं जीता, शांति आदि कराने से जीये, कपट कर्म में तत्पर मूर्ख, अल्पसन्तति वाला, धनी।
6. षष्ठ में अष्टमेश –राजा का विरोधी हो। यह गुरु हो, तो अंग में कष्ट पाये, शुक्र नेत्ररोगी, चन्द्र रोग युक्त। मंगल कोप युक्त, बुध डरपोक, शनि में कष्ट। चन्द्र या सौम्य ग्रह उसे देखे तो अनेक अरिष्ट हो। बाल्यावस्था में सर्प या जल का भय।
7. सप्तम में अष्टमेश – उदर में रोग, दुष्टों से स्नेह, बड़ा दुष्ट। पापग्रह हो, तो भार्या से द्वेष करने वाला। स्त्री के द्वेष से मृत्यु पाने वाला। गुदा में व्याधि, दुष्ट कुल की स्त्री से प्रिय हो, दो पत्नी हो। यदि पाप युक्त हो, तो व्यापार में हानि।
8. अष्टम में अष्टमेश –व्यापार करने वाला, रोगों से रहित, कपट विद्या जानने वाला। दीर्घायु, अष्टमेश निर्बल हो, तो मध्यायु, चोर, स्वयं निंदनीय और पर निंदक।
9. नवम में अष्टमेश –– दुष्ट संगरहित, जीव हिंसक, पापी, बन्धुरहित, स्नेहरहित, धर्म निंदक, नास्तिक, दु:शील स्त्री वाला, परधनहर्ता।
10. दशम में अष्टमेश – राजा के कर्म करने वाला, नीच कर्मकर्ता। क्रूर ग्रह हो, तो आलसी पुत्र तथा माता न जीये। राजकर्म करने वाला, नीच कर्म में युक्त आलसी क्रूर पिता के सुख से हीन। चुगलखोर कर्महीन होता है।
11. लाभ में अष्टमेश – बालपन में दु:खी पश्चात् सुखी दीर्घायु। पापग्रह हो, तो अल्पायु, धनहीन, शुभग्रह हो, तो दीर्घायु।
12. व्यय में अष्टमेश – क्रूर वाक्य कहने वाला, चोर, शठ, निर्दय, सर्वत्र स्वतन्त्र रहने वाला, अंगहीन, कुकार्य में खर्च करने वाला। पापग्रह हो, तो अल्पायु।

अष्टमेश का विशेष फल – अष्टमेश केन्द्र छोड़कर और किसी स्थान में हो और बलहीन भी हो जो लग्नेश के बल में कम हो, तो दीर्घायु, चिंतारहित, विघ्न और क्लेशरहित।

2. दीर्घायु – अष्टमेश या लग्नेश स्वगृही हो परन्तु मित्र के नवांश में या घर में हो, तो दीर्घायु होता है।
3. दीर्घायु अष्टमेश – लग्नेश, कर्मेश तथा शनि त्रिकोण लाभ में या केन्द्र में हो, तो दीर्घायु।
4. अल्पायु – अष्टमेश पापग्रहों के साथ हो या अष्टम में लग्नेश हो, तो अल्पायु हो। इसी प्रकार से दशमेश से भी आयु विचारना।

नवमेश का भिन्न-भिन्न भाव में फल -

1. लग्न में नवमेश – बड़ा शूर, कृपण, राजा के समान कर्म करने वाला, अल्पाहारी, विद्वान्। शूरवीर होकर देव-गुरुजनों का सत्कार करता है, भाग्यवान, राज्यमान्य, सुशील, सुन्दर विद्वान् लोकपूज्य।

2. धन में नवमेश - बल के कारण विख्यात, उत्तम स्वभाव, सबका प्रेमी, सुकृत करने वाला, मुख में झांई, चौपाये पशु से पीड़ा, शूद्रों के सम आचरण, विख्यात, अच्छे शील से युक्त, सत्यभाषी, पुण्यात्मा, अंगहीन।
3. तृतीय में नवमेश - रूपवती स्त्री तथा बांधवों से प्रेम करने वाला बंधुवर्ग और स्त्री का रक्षक। यदि जीता रहे तो सदा भाई-बन्धु सहित रहने वाला।
4. चतुर्थ में नवमेश - पिता का भक्त, सुकृत करने वाला, पितृकार्यों में बुद्धि रखने वाला, घर की सवारी से सुखी, सब सम्पत्ति से युक्त, माता का भक्त।
5. पंचम में नवमेश - सुकृत करने वाला, देवगुरु पूजक, शरीर से सुन्दर, अनेक धर्मनिष्ठ। पुत्र सुख से युक्त, गुरुभक्त, पंडित।
6. षष्ठ में नवमेश- शत्रु की प्रणति करने में परायण, धर्मकर्त्ता, अल्प कार्य करने वाला, दर्शनशास्त्र का निंदक, अल्पभाग्यवान्, मामादि के सुख से हीन, शत्रुता से दु:खी।
7. सप्तम में नवमेश - सत्य बोलने वाली, सुरूपा शीलयुक्त, लक्ष्मीयुक्त पुण्यवती स्त्री मिले। भाग्योदय, गुणी, यशस्वी और द्विजातियों में श्रेष्ठ।
8. अष्टम में नवमेश - बड़ा दुष्ट, जीवहंता, घर तथा भाइयों से विवर्जित पुण्यहीन यदि क्रूर ग्रह हो, तो नपुंसक, भाग्यहीन, बड़े भाई के सुख से हीन।
9. नवम में नवमेश - सुकृति, भाई-बन्धु से प्रीति, सबसे समता रखने वाला। अत्यन्त भाग्यवान् गुण, रूप और सहोदरी के सुख से युक्त।
10. दशम में नवमेश - राजाओं के कर्म करने वाला, शूरवीर, माता-पिता का पूजक, धर्म विख्यात।
11. लाभ में नवमेश- दीर्घायु, धर्मी, धनस्वामी, स्नेही, राजा से लाभ पाने वाला, पुण्य करने में विख्यात। नित्य लाभ करने वाला, गुरुजनों का भक्त, गुणी पुण्यात्मा।
12. व्यय में नवमेश - बड़ा मानी, देशान्तर में रहने वाला, कुरूप, विद्यावान, पापग्रह हो, तो अत्यन्त धूर्त। भाग्यहीन, शुभकार्य में अधिक खर्च, अतिथियों के आदर से निर्धन।

नवमेश का विशेष फल -

1. नवमेश या नवम घर में चर राशि हो और शनि से युक्त या दृष्ट हो 12वां घर का स्वामी बली हो, तो जातक को दूसरा दत्तक पुत्र बनाये।
2. नवमेश लग्न में हो, तो जातक कीर्तिमान हो।
3. नवमेश केन्द्र या कोण में शुभग्रहों से युक्त हो, तो यात्रा में सुख होवे।
4. भाग्येश तथा शुक्र पापग्रहों के साथ 9, 8, 12 स्थान में हो, तो भाग्यहीन होता है। परन्तु जब केन्द्र, कोण या लाभ में हो, तो भाग्यवान होता है।
5. नवमेश गुरु, सूर्य और शनि दोनों से दृष्ट हो, तो कोषपति संग्रहकर्त्ता, चतुर, विख्यात, गुणी तथा देशगुरु और श्रेणीनायक होता है।

दशमेश का प्रत्येक भाव में फल -

1. लग्न में दशमेश - माता का वैरी, पिता का भक्त, पिता की मृत्यु के बाद उसकी माता अवश्य पर पुरुष से प्रसंग करे। जातक विद्वान्, विख्यात, धनी, कवि, बाल्यावस्था में रोगी पीछे सुखी, दिन-दिन धन की वृद्धि।

2. धन में दशमेश - बड़ी आयु तक भी माता से पालन किया जाये, अल्पभोगी, शास्त्रानुकूल सत्कर्म करने वाला। माता से पाले हुए पुत्र वाला, लोभी, माता के लिए दुष्ट, थोड़ी त्रास वाला, अल्पकर्म वाला। धनी, गुणी, राजमान्य, अतिदानी, पिता आदि के सुख से युक्त।
3. सहज में दशमेश - माता व स्वजनों का विरोधी, सेवा में निरत किसी कर्म में समर्थ नहीं, मामा से पालन किया गया, भाई व नौकरी के सुख से युक्त, पराक्रमी, गुणी वक्ता, सत्यभाषी।
4. सुख में दशमेश - सब सुख भोगी, सदाचारी, माता-पिता का भक्त राजमानी, सब जनों को अमृत के समान प्रिय। राज-सम्बन्धी लाभ से विभूषित।
5. पंचम में दशमेश - शुभ कर्म करने वाला, विडम्वी, राजा से लाभ युक्त, गाने बजाने में निरत, मामा द्वारा पालित, सब विद्याओं का ज्ञाता, आनन्द से युक्त, धनी व पुत्रवान।
6. षष्ठ में दशमेश - शत्रु के भय से कायर, कलह करने वाला, कृपण, निर्दयी, रोगरहित। माता पर पुरुष से प्रीति युक्त। पिता के सुख से हीन, चतुर होने पर भी धनहीन और शत्रुओं से तंग।
7. सप्तम में दशमेश - स्त्री पुत्रवती, शुभरूपयुक्त, पतिव्रत धर्म, पालन में लालसा, पति को अतिप्यारी, अपनी सास के पालन में लालसा, स्त्री से सुखी, मनस्वी, गुणी, वक्ता, सत्यधर्म में आसक्त।
8. अष्टम में दशमेश - बड़ा क्रूर, शूरवीर, मिथ्याभाषी, बड़ा दुष्ट, मातृ संतापी, अल्पायु, कपटी, कर्महीन, पर निंदक।
9. नवम में दशमेश - शुभ स्वभाव, उत्तम बन्धु, सत्पात्र मित्र, सत्यवक्ता माता, शुभशील, श्रेष्ठ बन्धु, श्रेष्ठ मित्र, माता सुन्दर शीलवती, पुण्यात्मा, सत्यभाषी।
10. दशम में दशमेश - सदा माता को सुख देने वाला, नाना के कुल से आनन्द पाने वाला, सामयिक बात करने में चतुर सब कार्य में दक्ष, सुखी, पराक्रमी, सत्यवक्ता, गुरुभक्त।
11. लाभ में दशमेश - सत्कारपूर्वक धन पैदा करे, धनाढ्य, माता द्वारा रक्षित, माता भी स्वयं सुख प्राप्त करने वाली। दीर्घायु, माता का सुख।
12. व्यय में दशमेश - माता से रहित, स्वबल युक्त, शुभकर्ता, राज्यकर्म में निरन्तर चित्त रखने वाला, पापग्रह हो, तो देशान्तर में गमन करने वाला। राजा के द्वारा धन खर्च, शत्रु का भय, चतुर होने पर भी सदा चिंतित।

दशमेश का विशेष फल -

1. दीर्घजीवी भाग्यवान - यदि शुभग्रह दशम में हो और दशमेश पूर्ण बली होकर केन्द्र या कोण में हो और अपने स्वस्थान या उच्च में हो या लग्नेश दशम में हो, तो सबका मान करे, अति प्रसिद्ध हो, सदा सत्कर्म करने की ओर झुकाव रहे, भाग्य राजा सदृश हो वह दीर्घजीवी है।
2. धैर्य युक्त कार्य करने में - दशमेश सुस्थित हो, तो वह अपने प्रताप और बाहुबल से बहुत धैर्य युक्त कार्य को पूरा करने में समर्थ होगा।
3. दशमेश बलहीन हो, तो अच्छे कर्म नहीं होते।
4. शत्रु नीच या 6, 8, 12 घरों को छोड़कर कर्मेश शुभ फलदायक होता है।

लाभेश का भिन्न-भिन्न भावों में फल -

1. लग्न में लाभेश - अल्पायु बल से युक्त, शूरवीर दानी, जनप्रिय, सुन्दर अधिक तृष्णा के दोष से मृत्यु सात्विक, धनी, सुखी, समदृष्टि, कवि, वक्ता, सदा लाभ।

2. धन में लाभेश - उत्तमभोगी, अल्पभोगी, अल्पायु, शुभग्रह हो, तो धन से परिपूर्ण। सब धन से युक्त, सब कर्म में सिद्धि पानेवाला धर्मात्मा,सुखी।
3. सहज में लाभेश - भाई-बन्धु तथा स्त्री का पालनकर्ता, सत्पात्र बान्धव, बन्धुजनों का वत्सल, सुन्दर भाई, बंधुओं के शत्रु कुल का नाश करने वाला, सब कार्य में दक्ष, सहोदर से सुखी, कदाचित् शूल रोग से पीड़ित।
4. सुख में लाभेश - दीर्घायु, पिता में भक्ति, समयोचित कर्म करने में प्रवीण, स्वधर्म करने में रत और लाभ से युक्त। मातृकुल में धन पाने वाला, तीर्थ करने वाला, घर भूमि के सुख से युक्त।
5. पंचम में लाभेश - पिता पुत्र में परस्पर स्नेह, समान गुणवाले पुत्र, सुखी, विद्वान्, सुशील, धर्मात्मा होता है।
6. षष्ठ में लाभेश - राजयक्ष्मा आदि अधिक काल तक रहने वाला रोग, प्रबल वैरी जनों से युक्त, क्रूर हो, तो परदेश में चोर के हाथ से मृत्यु। देशान्तर जाने वाला, रोगी, क्रूर बुद्धि, विदेशवासी, शत्रुओं से पीड़ित।
7. सप्तम में लाभेश - तेजस्वी, शील सम्पत्ति युक्त, उत्तमाधिकारी, एक पत्नी वाला, स्त्री से कुछ धन लाभ, उदार, गुणी, कामी, स्त्री के वश में।
8. अष्टम में लाभेश - पापग्रह हो, तो अल्पायु, राजरोगी, रोग के कारण जीवित रहते हुए भी मृत समान। कार्य में हानि, दीर्घायु तथा स्त्री का मरण अपने समक्ष ही होता है।
9. नवम में लाभेश - बहुत ज्ञानी, शास्त्र में विशारद, धर्म में प्रसिद्ध देवगुरु भक्त, पापग्रह हो - बंधु तथा पुत्रहीन। भाग्यवान्, चतुर, सत्यवक्ता, राजमान्य, धनवाला।
10. दशम में लाभेश - मातृभक्त, सुकर्म कर्ता, पितृ द्वेषी, दीर्घायु, धनवान, माता का पालन करने में निरत। राज्यमान, गुणवान स्वधर्मरत, बुद्धिमान, सत्यवक्ता, जितेन्द्रिय।
11. लाभ में लाभेश - दीर्घायु, बहुपुत्र पौत्र, सत्कर्मी, रूपवान, सुशील, मनुष्यों में मुख्य, भारी भरकम शरीर वाला, सबको प्रिय, सब कार्य में लाभ, पंडित, सुखी।
12. व्यय में लाभेश - दैवेच्छा से प्राप्त हुई चीजों का भोग, स्थिर प्रकृति उत्पात में रत, बड़ा पापी, दाता, सदा सुखी, सुकार्य में खर्च, कामी, बहुत स्त्री वाला, म्लेच्छों से संगति करने वाला।

लाभेश का विशेष फल -

1. लाभेश कोई भी ग्रह हो, वह लाभ में या केन्द्र या मूल त्रिकोण में हो, तो अपनी दशा में योग्यता प्रमाण से लाभ देता है।
2. लाभेश युक्त जो ग्रह हो उसके स्वस्थान के भाव और लाभेशयुक्त भाव से लाभ, चीजों की प्राप्ति या इच्छापूर्ति उस सम्बन्धी-भाव के विषय में सम्बन्ध में कहना।
3. बहुत लाभ - लाभेश लाभ स्थान में हो या केन्द्र या त्रिकोण में हो या उच्च का अथवा सूर्य के नवांश में हो, तो बहुत लाभ होता है।
4. लाभेश सूर्य या चन्द्र हो, तो राजा की नौकरी से लाभ, मंगल हो, तो राजमंत्री या भाई या कृषक से लाभ, बुध हो, तो विद्या या पुत्र या कुटुम्बी व्यक्ति से लाभ, गुरु हो, तो धार्मिक संस्था से लाभ, शुक्र हो, तो स्त्री या रत्न या पशु द्वारा लाभ, शनि हो, तो कुवृत्ति या नीच व्यवहार से लाभ।

व्ययेश का प्रत्येक भाव में फल -

1. लग्न में व्ययेश - विदेश गमन, सुवचन भाषी, सुरूप, दु:संग के निमित्त से दोषयुक्त, आजन्म अविवाहित या नपुंसक, परदेशगामी, अच्छे वचन, सुन्दर रूपवान, फिजूलखर्ची, दुर्बल, कफ रोगी, धन और विद्या से हीन।
2. धन में व्ययेश - महाकृपण, क्रूरभाषी, लाभरहित। सौम्यगृह, राजभय या चोर या अग्निजन्य भय से मृत्यु सुकार्य में खर्च करने वाला, धर्मात्मा, प्रिय वक्ता, गुणी, सुखी।
3. सहज में व्ययेश - क्रूर ग्रह हो, तो भाई-बन्धु से रहित, शुभ हो, तो धनवान, थोड़े भाई वाला, बड़ा कृपण, सदा भाई-बन्धुओं से दूर रहने वाला, भ्राता सुखहीन, परद्वेषी, स्वार्थी।
4. चतुर्थ में व्ययेश - बड़ा कृपण, सत्कर्म करने वाला, लड़के से मृत्यु पाने वाला, महादु:खी, कृपण, रोगहीन, अच्छे कर्म करने वाला, निरन्तर महादु:खी, माता, घर, वाहनादि सुख से हीन।
5. पंचम में व्ययेश - पुत्र से रहित, शुभगृह हो, तो पुत्रों से युक्त। पिता का दु:ख भोगने वाला, अपने सामर्थ्य से रहित। विद्या से रहित तीर्थव्रत करने वाला।
6. षष्ठ में व्ययेश - क्रूर ग्रह, कृपण, नेत्र से काना, शुक्र हो, तो नेत्रविहीन (अन्धा), अपने परिजन का द्वेषी, क्रोधी, पापी, दु:खी, परस्त्रीगामी।
7. सप्तम में व्ययेश - क्रूर ग्रह दु:शील, दुष्ट कर्मकर्ता, कटुभाषी, स्वस्त्री से मृत्यु, शुभग्रह हो, तो वेश्या के निमित्त से मृत्यु। पापग्रह हो, तो स्त्रीहीन। स्त्री के लिए खर्च करने पर भी सुखी नहीं होता। बल, विद्या से हीन।
8. अष्टम में व्ययेश - अष्टकपाली, कार्य साधन से रहित, सबका द्रोही, शुभग्रह धन संचय करने में तत्पर, अधिक लाभ करने वाला प्रिय वक्ता, मध्यमायु, सब गुणों से युक्त।
9. नवम में व्ययेश - तीर्थों के दर्शन को घूमने वाला। क्रूर ग्रह - द्रव्य निरर्थक पापी मनुष्यों से खराब होता है। गुरु मित्रों से द्वेष करने वाला स्वार्थी।
10. दशम में व्ययेश -स्त्री से पराङ्मुख, पवित्र शरीर, स्वपुत्रों के लिये धन संग्रह करने में तत्पर, माता दुर्वाक्य कहने वाली, पवित्र शरीर वाला, पुत्र धन के लोभी, माता खोटे वचन बोलने वाली, राजद्वार से धन खर्च, पिता से स्वल्प सुख।
11. लाभ में व्ययेश -धन का पालन करने वाला, दीर्घायु, अपने स्थान में सबसे श्रेष्ठ, दानी, सर्वत्र विख्यात, सत्यभाषी, सुकुमार तथा स्थान में श्रेष्ठ, अल्प लाभ कदाचित् दूसरे का धन लाभ होता है।
12. व्यय में व्ययेश - ऐश्वर्य युक्त, ग्राम में रहने का इच्छुक, कृपण बुद्धि पशु का संग्रहकर्त्ता, अल्पायु, जीये तो अवश्य ही ग्रामाधीश हो। विभूतियों वाला, अधिक व्यय, शरीर सुख से हीन, क्रोधी मनुष्यों से द्वेष रखने वाला।

व्ययेश का विशेष विचार -

1. व्ययेश जिस भाव में हो या व्यय भाव में कोई ग्रह हो उसके स्वगृह का जो भाव है उस भाव के सम्बन्ध के पदार्थ या उनके विषय की हानि होती है।
2. व्ययेश या चन्द्रमा नवम, लाभ या पंचम भाव में हो या अपने उच्च का या स्वगृही या स्वनवांश या लाभ, नवम, पंचम के नवांश में हो, तो अच्छे महल, सुगन्ध, पलंग आदि का योग मिलता है।
3. यदि व्ययेश अपने शत्रु, नीच या अस्त के नवांश में, अष्टम स्थान में या शत्रु स्थान में हो, तो उसे स्त्री का सुख नहीं मिलता, अधिक व्यय होने से अधिक चिन्ता रहती है।
4. व्ययेश केन्द्र या कोण में हो, तो अपनी स्त्री से शोभित होता है।

अध्याय-9

ग्रहों की दृष्टि का फल

सूर्य पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

(1) भौम स्थानी (1, 8 राशि के) सूर्य पर दृष्टि

चन्द्र की दृष्टि— दान धर्म युक्त, बहुत नौकर वाले, कोमल, निर्मल देह अपना घर उसको बड़ा प्यारा।

मङ्गल की— क्रूर, संग्राम में धीर, आँखे पैर लाल वर्ण, पूर्ण बलवान

बुध की— सुख और पराक्रम तथा धन से हीन, दूतों का काम करने वाला परदेशवासी, सदा मलिन, शत्रुयुक्त।

गुरु की— राजा का मंत्री, दानी, दयावान, बहुत धनवाला, अपने कुटुम्ब में श्रेष्ठ।

शुक्र की— हीन वर्ण की स्त्री का प्रेमी, अत्यन्त दीन, धनहीन, दुष्टमित्रों वाला, त्वचा में विकार।

शनि की— उत्साह रहित, मलिन, अत्यन्त दीन, दु:ख सहित, बुद्धिहीन।

(2) शुक्र स्थानी (2, 7 राशि के) रवि पर दृष्टि

चन्द्र की दृष्टि-श्रेष्ठ स्त्रियों का प्रेमी, बहुत स्त्रियों वाला, जल सम्बन्धी पदार्थ के व्यापार से जीविका करने वाला।

मंगल की— संग्राम में धीरज, अत्यन्त तेज, श्रेष्ठ, साहस से धन प्राप्त करने वाला बलवान।

बुध की— संगीत विद्या और सत्काव्य की कलाओं का प्रेमी, लेखन कला में कुशल, प्रसन्न चित्त।

गुरु की— अपने वंश के समान राजा का प्रधानमंत्री, श्रेष्ठरत्न आभूषण तथा धन सहित, डरपोक।

शुक्र की— सुन्दर नेत्र, शोभायमान, देह व प्रधान होता है शत्रु-मित्र सहित, चिंता युक्त।

शनि की— दीन, धनहीन, आलसी, स्त्रियों के साथ भिन्न मनवाला, दुष्ट आजीविका करने वाला रोग युक्त।

(3) बुध स्थानी (3, 6 राशि के) सूर्य पर दृष्टि

चन्द्र की दृष्टि— मित्र और शत्रुओं से परिपीड़ित, परदेश जाने वाला, धनहीन, सदा उदास।

मंगल की— शत्रुओं से भयभीत, कलह आदि से युक्त अत्यन्त दीन, संग्राम में हारने वाला, अत्यन्त लज्जालु, आलसी।

बुध की— राजा की कृपा, पुत्रों से ऐश्वर्य उसके मित्र और शत्रु सदा सन्ताप को प्राप्त हों।

गुरु की— छिपे हुये मन्त्र वाला, अत्यन्त स्वतंत्र, स्त्री पुत्रादि के गर्व सहित।

शुक्र की— परदेशवासी, चपल विलासी, देह अग्नि या शस्त्र से अंकित हो राजा का दूत हो।

शनि की— धूर्त, बहुत नौकरों वाला, बुद्धिहीन, उद्विग्न चित्त

(4) कर्क की रवि पर दृष्टि

चन्द्र की— जल सम्बन्धी व्यापार करके बड़ा धनवान, राजा का राजमंत्री, बड़ा उग्र।

मंगल की— अपने बन्धुओं से चित्त को दूर करने वाला, सूजन रोग व भगन्दर से पीड़ित।

बुध की— विद्या यश तथा मान से विराजित, राजा की कृपा से मन की अभिलाषा को प्राप्त शत्रुरहित।

गुरु की—अपने कुल में श्रेष्ठ, निर्मल यश, राजा से बड़ा पद प्राप्त।

शुक्र की— स्त्री के आश्रय से वस्त्र और धन प्राप्त, पराये काम में हृदय से विवाद पैदा करता है।

शनि की— कफ और वात से दु:खी और पराये कार्य में विघ्न डालने वाला, चपल स्वभाव, क्लेशी।

(5) स्वस्थानी सूर्य पर दृष्टि-

चन्द्र की— धूर्त और गम्भीर, राजा से मान प्राप्त, धन की प्राप्ति से धनवान, प्रसिद्ध।

मंगल की— अनेक स्त्रियों से प्रीति करने वाला, अत्यन्त धूर्त, कफ प्रकृति, बड़ा शूर, वीर, उदासी।

बुध की— धूर्त राजा की आज्ञा में चलने वाला, पंडितों से प्रीति, लेख करने में तत्पर।

गुरु की— देव स्थान और तालाब बावड़ी बनाने वाला, स्वजनों से प्रीति।

शुक्र की— त्वचा के दोष वाला, क्रोधी, अपयश का भागी, उत्सव रहित स्वजनों का त्यागा हुआ, सत्य और दया रहित।

शनि की— शठ, काम को बिगाड़ने वाला, स्वजनों से सन्ताप को प्राप्त

(6) गुरु स्थानी (9,12) राशि के सूर्य पर दृष्टि

चन्द्र की दृष्टि— शोभायमान, देह, पुत्र सौख्य युक्त, वाणी के विलास में कुशल, कुलवान।

मंगल की— संग्राम में विशेष यश, वक्ता, स्वजनों के संग से रहित, स्थिर आजीविका करने वाला, प्रचंड।

बुध की— धातु क्रिया, काव्यकला और कथाओं का जानने वाला, श्रेष्ठ वाक्य, श्रेष्ठ मंत्रादि की विधि में चतुर, सत्पुरुषों की सम्मति सहित।

गुरु की— राजा का मन्त्री, अपने कुल में राजा, कला की विधि जानने वाला, धन-धान्य सहित विद्वान्।

शुक्र की— सुगन्ध वाला, सुगन्ध वस्त्र धारण करने वाला, सुन्दर स्त्री और आभूषणों का सौख्य भोगता है।

शनि की— पराये अन्न का भोगी नीच पुरुषों में प्रवृत्ति, चौपायों से प्राप्ति।

(7) शनि स्थानी (10, 11 राशि के) सूर्य पर दृष्टि-

चन्द्र की दृष्टि— स्त्री के संग से धन और सौख्य का नाश, माया में चतुर चंचल चित्त।

मंगल की— शत्रु से झगड़ा कर धन नाश करने वाला, व्याधि, वैर से सन्तापित, अत्यन्त व्याकुल देह बहुत चिंता।

बुध की— हिजड़ो जैसा स्वभाव, पराये चित्त को हरण करने वाला, साधुओं से रहित, शूरवीर।

गुरु की— श्रेष्ठ कर्म कर्ता, बुद्धिमान, बहुत पुरुषों का पालने वाला।

शुक्र की— शंख, मूंगा, निर्मलरत्न, धन, सुन्दर स्त्रियों से धन प्राप्ति।

शनि की— बड़े प्रताप से शत्रुओं को जीतने वाला, राजा की प्रीति से प्रसन्नता, प्रसन्न मूर्ति।

(8) सूर्य को शुभ ग्रह देखे-राजा की सेवा से धन प्राप्त।

सूर्य को शत्रु ग्रह देखे— झगड़ा; दु:ख, पेट और आँखों में रोग।

सूर्य को मित्र ग्रह देखे —जप तथा बांधवों से लाभ

सूर्य को पापग्रह देखें— रोगी हो।

(9) पंचम भाव में सूर्य हो और भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि हो, तो फल पाप दृष्टि हो— बुद्धि स्थिर हो, अल्प सन्तान हो।

पाप ग्रहों की दृष्टि हो, मृत सन्तान हो।

शनि की दृष्टि हो— लौह अग्नि से उत्पन्न पीड़ा और सन्तान से उत्पन्न पीड़ा हो।

मंगल की दृष्टि हो— गर्भ च्युत हो या पुत्र नाश हो।

बुध की दृष्टि— 2 पुत्र 5 कन्या हो।

राहु की दृष्टि हो— गर्भपात हो या कन्या का मरण हो या नि:सन्तान।

चन्द्र पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल–

1. मेष के चन्द्र पर दृष्टि–

सूर्य की— उग्र स्वभाव, नम्रजनों से नम्र, धैर्यवान् राजा से गौरव संग्राम में डरपोक, गरीब हो।

मंगल की— विष अग्नि पात व शस्त्र से भय कभी-कभी मूत्र कच्छू रोग हो। बड़े आश्रय रहित, दाँत व नेत्र पीड़ा, कुलानुमान राजा।

बुध की— प्रकाशमान, निर्मल यश, सब विद्याओं में प्रवीण, धन और गुण से युक्त, सज्जनों की सम्प्रति सहित, श्रेष्ठ सम्मति से प्रतिष्ठित, विद्वान् पंडित।

गुरु की– राजा का मन्त्री या सेना का स्वामी, कुलानुसार बहुत सम्प्रदायों से युक्त, राजा तुल्य।

शनि की— रोगी, मित्र की उन्नति से नष्ट, धनहीन, मिथ्याभाषी दुष्ट, पुत्र, चोर।

(2) वृष के चन्द्र पर दृष्टि –

सूर्य की— खेती के काम पर तत्पर, खेती की विधि जानने वाला, मंत्र व वाहन और धान्य से युक्त। दास या नौकर दूत

मंगल की— कामातुर स्त्रियों का चित्त हरणकर्त्ता, सत्पुरुषों का मित्र, सदा पवित्र, प्रसन्न मूर्ति निर्धन।

बुध की— चतुर विधियों को जानने वाला, कृपा सहित, हर्षयुत्त, जीवों का हितैषी, गुण युक्त, चोर, राजा।

गुरु की— स्त्री और पुत्रों के आनन्द सहित, श्रेष्ठ कीर्तिमान, धर्मक्रिया में तत्पर, माता-पिता की भक्ति में चित्त।

शुक्र की— आभूषण, वस्त्र, ग्रह, भोजन, सुगन्धित द्रव्यों वाला, चौपायों का सुख राजा।

शनि की— माता की मृत्यु, धनी, वृष के परार्द्ध में चन्द्र हो और शनि की दृष्टि, पिता का नाश।

(3) मिथुन के चन्द्र पर दृष्टि–

सूर्य की—खेती के काम पर तत्पर, खेती की विधि जानने वाला, मंत्री वाहन और धान्य से युत्त, दास या नौकर, दूत।

मंगल की— कामातुर, स्त्रियों का चित्तहरणकर्त्ता, सत्पुरुषों का मित्र सदा पवित्र, प्रसन्न मूर्ति, निर्धन।

बुध की— चतुर विधियों को जानने वाला, कृपा सहित, हर्षयुत्त, जीवों का हितैषी, गुणयुक्त, चोर, राजा।

गुरु की— स्त्री और पुत्रों के आनन्द सहित, श्रेष्ठ कीर्तिमान्, धर्म क्रिया में तत्पर माता-पिता की भक्ति में चित्त, राजमान्य।

शुक्र की— आभूषण,, वस्त्र, ग्रह, भोजन, सुगन्धित, द्रव्यों वाला, चौपायों का सुख राजा।

शनि की— माता की मृत्यु, धनी, वृष के परार्द्ध में चन्द्र हो और शनि की दृष्टि— पिता का नाश।

मिथुन की चन्द्र पर दृष्टि— सूर्य, चतुर, श्रेष्ठशील, धनहीन, निरन्तर क्लेश, सम्पूर्ण उत्सवों को प्राप्त।

मंगल की— उदार चित्त, चतुर शूरवीर, बुद्धिमान, सुज्ञ, धन वाहन आदि से युक्त, लोहे के औजारों का व्यापार, विकल।

बुध की— धैर्यवान, सदा आचारयुक्त, उदार, राजा से धन प्राप्त, राजा।

गुरु की— विद्या और विवेक युक्त धनवान, प्रसिद्ध, नम्रतायुक्त, निरन्तर पुण्यवान, विद्वान।

शुक्र की— वस्त्र, पुष्प, धन, अन्नक्षेष्ठ स्त्री के सहित, श्रेष्ठवाहन आभूषणों का सौख्य, भयरहित, धीर।

शनि की— धन, स्त्री, वाहन और पुत्रादि से हीन, निन्दक कपड़ा बुनने वाला।

(4) कर्क के चन्द्र पर दष्टि

सूर्य की— निष्प्रयोजन नीच जाति के मनुष्यों से क्लेश, राजा के आश्रय से किले पर अधिकार करने वाला, नेत्ररोगी।

मंगल की— चतुर, शूरवीर, माता के विरुद्ध, दुर्बल देह। युद्ध जीतने वाला योद्धा तथा पराक्रमी।

बुध की— स्त्रीधन पुत्र की उन्नति, नीति के सौख्य सहित, सेना का स्वामी या राजा का मंत्री। कविता करने वाला विद्वान।

गुरु की— राजा से अधिकार प्राप्त, गुणवान, नीति का जानने वाला, सुखी श्रेष्ठ, पराक्रम वाला, राजा, पंडित चतुर।

शुक्र की— श्रेष्ठ रत्न और सुवर्णयुक्त, रत्न आभूषण व श्रेष्ठ स्त्री का निरन्तर सुख, राजा।

शनि की— सत्य रहित, माता का विरोधी, सदा भ्रमण, पाप में तत्पर, धनहीन, शस्त्र का व्यापारी, लोहा आदि का व्यापारी।

(5) सिंह के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— गुणयुक्त, सदा राजा का प्यारा, अधिकार को प्राप्त, विलम्ब से सन्तान प्राप्ति राजा।

मंगल की— राजा या मंत्री, धन वाहन पुत्र स्त्री के सुख से युक्त, राजा।

बुध की— धन स्त्री तथा वाहन पुत्रादिको के सुख से युक्त, ज्योतिषी।

गुरु की— बहुश्रुत, साधुवृत्त, भूलने वाला, राजा का मंत्री, धनी।

शुक्र की— स्त्री प्रयुक्त, वैभव सहित, गुणवान गुणों को जानने वाला चतुर विधियों को जानने वाला राजा।

शनि की— स्त्री रहित, खेती में चतुर, राजा के किले का स्वामी, थोड़ा धन, पापी, नाई।

(6) कन्या के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— राजखजाने का मालिक, श्रेष्ठ वृत्ति वाला, स्त्री रहित, भक्ति में तत्पर, स्त्री के आश्रय से जीवन, राजा, सुखी।

मंगल की— हिंसा में तत्पर शूरवीर, क्रोध सहित, राजा का आश्रय करने वाला, संग्राम में जय प्राप्ति। स्त्री के आश्रय से जीवन, चतुर धनिक।

बुध की— ज्योतिष शास्त्र और काव्य तथा संगीत, विधाओं का ज्ञाता, चतुर, संग्राम में यश प्राप्ति, नम्रता सहित। राजा, विभु।

गुरु की— बहुत भाइयों वाला, राजा का प्यारा, श्रेष्ठ वृत्ति से सुन्दर यश वाला, सेनापति, प्रभु सदृश।

शुक्र की— वेश्या, विलास में चित्त, स्त्री का आश्रित, राजा से धन प्राप्त, सब बातों में निपुण, विद्वान।

शनि की— धनहीन, बुद्धिरहित, निरन्तर स्त्री के आश्रय से धन प्राप्त करने वाला, माता से हीन। स्त्री के आश्रित जीवन, राजा, शक्ति रहित।

(7) तुला के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— सदा भ्रमणकर्त्ता, सुख दुःख से हीन, श्रेष्ठ स्त्री और पुत्रों से रहित, मित्र और शत्रुओं से सन्ताप, जीवघाती, ठग, दुष्ट।

मंगल की— बुद्धि से दूसरे के धन में चित्त, मायासहित विषयों से सन्ताप, जीवघाती, ठग, शठ।

बुध की— कलाओं का ज्ञाता, धन धान्य सहित, बोलने की विद्या और वैभव सहित राजा।

गुरु की— वस्त्र और भूषण के कार्य में चतुर, इनके खरीदने बेचने में चतुर, सुनार।

शुक्र की— अनेक उद्यम से अर्थसिद्ध करने वाला, राजाओं का कृपापात्र प्रसन्न चित्त, पुष्ट देह। व्यापारी वैश्य।

शनि की— धनधान्य श्रेष्ठ वाहनों से युक्त, विषय भोग रहित, जीवघाती चुगलखोर। ठग।

(8) वृश्चिक के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— श्रेष्ठ वृत्ति रहित- धनवानों, मनुष्यों को असह्य, अत्यन्त उद्यम करने वाला, सेना में रहने वाला। धनहीन, द्ररिद्री।

मंगल की— युद्ध में विशेष कर यश को प्राप्त, गंभीरता और गौरव से राजा की कृपा से धन पैदा करने वाला। राजा का मन्त्री।

बुध की— बोलने में चतुर, युद्ध करने वाला, गीत और हत्या में तत्पर, निरन्तर झूठ कर्मों में चतुर, यमल का पिता या 2 पिता। माता।

गुरु की— संसार की इच्छा के समान चलने वाला, सुन्दर रूप, श्रेष्ठ कर्म धन भूषण युक्त।

शुक्र की— प्रसन्नचित्त, उदार, यश, छलछिद्र का ज्ञाता, धन वाहनों से युत्त मित्रों से धन कपट। धोबी। नीच कर्म।

शनि की— कोई अंग विकृत, अंगहीन, रोगी।

(9) धनु के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— बड़ा प्रतापी, उत्तम यश, सम्पदायुक्त श्रेष्ठ वाहन, संग्राम में यशस्वी, राजकृपा युक्त, पाखण्डधर्म वाला, द्ररिद्र।

मंगल की— सेना का स्वामी, बड़ा प्रताप वाला, लक्ष्मी का स्थान आभूषणों का लाभ। पराये कार्य में विमुख, दगाबाज।

बुध की— श्रेष्ठवाणी के विलास और बहुत नौकरों वाला, ज्योतिषी शिल्प विद्या जानने वाला। स्वकुल में श्रेष्ठ। स्वजन रक्षक।

गुरु की— बड़ा अधिकार प्राप्त, धनवान, श्रेष्ठ वृत्ति, सुन्दर शरीर, राजा।

शुक्र की— संतान, धन, धर्म प्राप्त, निरन्तर सौख्ययुक्त, कई पुरुषों को आश्रय देने वाला।

शनि की— बलयुक्त, सदा शास्त्र में आसक्त, श्रेष्ठ वक्ता, प्रचंड प्रतापी, दंभी, झूठा, शठ, शुभदृष्टि से विद्या ज्ञान तथा धन में बली। पाप से सभाशठ, वैश्याओं का प्रेमी।

(10) मकर के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— धनहीन, मलिन, भ्रमण का प्रेमी, बुद्धिहीन, दुर्दिन।

मंगल की— अत्यन्त प्रचण्ड, धन वाहन युक्त, चतुर, स्त्री और पुत्रों से युक्त, निरन्तर वैभव युक्त, राजा तुल्य।

बुध की— बुद्धिहीन, धन रहित, घर का त्यागने वाला, स्त्री पुत्रों से त्यक्त।

गुरु की— राज्य पुत्र, एवं सत्य सहित, गुणों को जानने वाला, स्त्री पुत्र, राजा।

शुक्र की— सुन्दर नेत्र, धन, वाहन युक्त, पुत्र, भूषण, वस्त्र का सुख, विद्वान पण्डित।

शनि की— बड़ा आलसी, धनहीन, सत्यरहित, मलिन, व्यसनों से युक्त, धनी।

(11) कुम्भ के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— खेती के बलसहित, जुआ खेलने वाला, राजा का आश्रित, धर्म में तत्पर, परस्त्री गामी।

मंगल की— मकान, धन तथा माता पिता के वियोग को प्राप्त, बड़े कठिन पदार्थों को पैदा करने वाला, बहुत बोलने वाला, मलिन चित्त, अत्यन्त धूर्त, परस्त्री रत।

बुध की— विषय और सौख्य सहित, भोजन विद्या जानने वाला, अत्यन्त पवित्र, प्यारी वाणी।

गुरु की— धरती, नगर, ग्रामादि सुख से युक्त, भोगो से युत्त, सत्पुरुषों में प्रवृत्ति करने वाला, श्रेष्ठ पुरुष राजातुल्य।

शुक्र की— मित्र, पुत्र, स्त्री तथा मकान के सौख्य से रहित, दीन गौरव हीन, पराई स्त्री में तत्पर।

शनि की— गधा, ऊँचे नवीन घोड़ों का लाभ करने वाला, खोटी स्त्री में तत्पर धर्म के विरुद्ध वृत्ति वाला। परस्त्रीगामी, यश धन युक्त।

(12) मीन के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— कामदेव सौख्य, अत्यन्त प्राप्त, सेना का स्वामी, बहुतधन की वृद्धि, श्रेष्ठ कर्मों की सिद्धि को प्राप्त।

मंगल की— शत्रुयुक्त, कुलटा स्त्री से मित्रता, सुख से हीन, पाप में तत्पर।

बुध की—श्रेष्ठ स्त्री पुरुषों के सुख को प्राप्त, मान और धन—राजा की कृपा से प्राप्त, मशखरा।

गुरु की— उदारचित्त, सुकुमार शरीर, श्री, स्त्री और पुत्रादि का सौख्य, राजा।

शुक्र की— श्रेष्ठ गति, श्रेष्ठविद्या में तत्पर, श्रेष्ठ वृत्ति वाला, स्त्री के साथ विलास करने में शक्ति, विद्वान्।

शनि की— कामातुर, स्त्री और पुत्र रहित, नीच स्त्रियों के साथ मित्रता चन्द्र पर पाप ग्रह की दृष्टि से धन हानि, सिर व नेत्र में रोग।

चन्द्र पर शत्रु ग्रह की दृष्टि पापकर्म, धननाश गमागम होता है।

चन्द्र पर शुक्र ग्रह की दृष्टि सुखी रोग रहित, बांधवों के द्वारा लाभ चन्द्र पर मित्र ग्रह दृष्टि लाभ जय क्षेत्र तथा देश का लाभ पापांशक में चन्द्र हो या पापग्रह की दृष्टि हो, तो शठ बुद्धि, परस्त्रीरमण शुभांशक में चन्द्र हो या शुक्र ग्रह की दृष्टि हो, तो यशस्वी।

राशि का जो फल कहा है वही नवांशक में भी विचारे, शुक्रग्रह की दृष्टि या योग से शुभ फल होता है।

उपरोक्त दृष्टि विचार में इन राशियों का चन्द्र हो और उपरोक्त ग्रहों की दृष्टि हो, तो क्या फल होता है परन्तु चन्द्र के स्थान पर लग्न पर भी इन ग्रहों की दृष्टि का उपरोक्त फल विचारना। संक्षिप्त में चन्द्र पर ग्रहों की दृष्टि या चन्द्र की इन ग्रहों पर दृष्टि होने का फल यहाँ दिया है।

चाहे चन्द्र द्रष्टा हो या दृश्य इस प्रकार फल होगा चन्द्र।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सूर्य	द्ररिद्री	नौकर	द्ररिद्री	हृदय रोग	राजा	स्त्रियों का आश्रय	धनिक	द्ररिद्री	दंभिक	द्ररिद्री	परस्त्री रत	पाप कर्मी
मंगल	अधि-कारी	द्ररिद्री	शास्त्र वेचे	झग-ड़ालू	राजा	''	''	राजा	''	राजा	''	''
शनि	चोर	धन-वान	कपटी	शत्रु	माली	''	''	अङ्ग-हीन	''	द्रव्य-वान	''	''
बुध	पंडित	चोर	राजा	काव्य कर्त्ता	जोगी	सेना-पति	राजा	यमल संतान	पोषण करता	राजा	राजा	भट
गुरु	काम-दार	साहू-कार	पंडित	पंडित	साहू-कार	सर्प-कर्म	सुनार	नम्रता	राजा	''	कुम्भ कार	राजा
शुक्र	गुमा-स्ता नौकर	राजा	निर्भय	राजा	राजा	जोशी	बनिया	धोवी	आश्रय दाता	पंडित	परस्त्री आधीन	पंडित

चन्द्र के नवांश पर ग्रहों की दृष्टि का फल

1. चन्द्र मंगल (1, 8 रा०) के नवांश में हो उस पर इन ग्रहों की दृष्टि का फलसूर्य की नगर रक्षक, मंगल की प्राणघाती, बुध की युद्ध कुशल गुरु की राजा या धनवान्, शुक्र की कलहकारी।

2. चन्द्र शुक्र (2 रा०) के नवांश में हो उस पर दृष्टि का फल सूर्य की मूर्ख, मंगल की परस्त्रीगामी, बुध की सुकवि, गुरु की अच्छा लेखन, सुकवि, शुक्र की, सब सुख प्राप्त, शनि की परस्त्री से संग।

3. चन्द्र बुध (3, 9 रा०) के नवांश में हो उस पर दृष्टि का फल सूर्य की नट या मल्ल, मंगल की चोर, बुध की श्रेष्ठ कवि, गुरु की मंत्री, शुक्र की संगीतज्ञ, शनि की मन्त्र कलादक्ष या शिल्पी।

4. चन्द्र स्वनवांश में हो उस पर ग्रह दृष्टि-सूर्य की दृष्टि देह दुर्बल मंगल की धन लोभी, कृपण, बुध की तपस्वी, गुरु की मुख्य प्रधान हो शुक्र की स्त्रियों का सेवक या स्त्रियों से पाला जावें, शनि की कर्तव्य परायण।

5. चन्द्र सिंह के नवांश में हो उस पर ग्रह दृष्टि-सूर्य की क्रोधी, मंगल की राजा का मित्र, बुध की निधियों (छिपे धन) का स्वामी, गुरु की बड़ा स्वामी, शुक्र की सन्तान रहित, शनि की क्रूर-कर्म कर्त्ता।

6. चन्द्र गुरु के नवांश (9, 12 रा०) में हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल सूर्य की- प्रसिद्ध, शूरता वाला, मंगल की चतुर योद्धा, बुध की हास्यज्ञ (मशखरा) गुरु की मन्त्री, शुक्र की काय रहित (नपुंसक) शनि की शील युक्त या धर्म मति।

7. चन्द्र यदि शनि के नवांश (10, 11 रा०) में हो उस पर दृष्टि का फलसूर्य की अल्पसन्तान, मङ्गल की अल्पधन, बुध की क्रोधी घमण्डी, गुरु की कर्मनिष्ठ, शुक्र की दुष्ट स्त्रियों का प्यारा, शनि की सहन, क्रोधी, कृपण।

चन्द्र दृष्टि पर विशेष विचार

1. द्वादशांश फल— कई राशियों के चन्द्र पर जो दृष्टि फल बताया है। वह द्वादशांश में भी विचारना।

2. प्रभाव दृष्टि नवांश दृष्टि फल शुभाशुभ दो प्रकार का है जैसे—

शुभ फल	वर्गोत्तम में अतिशुभ	स्वनवांश में मध्यम शुभ	अन्त्य नवांश में अल्पशुभ
अशुभ फल	अल्पफल	मध्यमफल	अति अशुभफल

अर्थात् उपरोक्त प्रकार से शुभ फल होता है परन्तु बुरे प्रभाव से इसका उल्टा होता है।

3. **बली नवांशेश का फल**— चन्द्र का नवांशेश बली हो, तो भिन्न-भिन्न राशियों के चन्द्र पर जो ग्रहों की दृष्टि का प्रभाव कहा है वह फल नहीं देगा। केवल वे ही फल होंगे जो किसी विशेष अंश पर विशेष ग्रहों की दृष्टि में कहे हैं।

अर्थात् जिस नवांश में चन्द्रमा हो उसका स्वामी बली हो, तो चन्द्र नवांशक दृष्टि फल प्रबल होगा। पूर्वोक्त राशि दृष्टि फल होगा, द्रेष्काणफल, द्वादशांश फलादि को दबाकर अंश दृष्टि फल ही देगा।

4. **परस्पर दृश्य द्रष्टा फल विचार**— यहाँ जो चन्द्र पर सूर्य की आदि ग्रहों, का फल कहा है वही फल सूर्यादि ग्रहों पर विशेष चन्द्र की दृष्टि का भी समझना अर्थात् चन्द्र पर जिस ग्रह की दृष्टि का फल बताया है उस ग्रह को दृश्य मानकर चन्द्र को द्रष्टा मानकर उसी प्रकार फल का विचार करना।

इसी प्रकार चन्द्र पर दृष्टि के अनुसार लग्न पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का विचार करना।

5. बलीग्रह की दृष्टि का फल प्रथम होगा— चन्द्र सूर्य जो अधिक बली हो वह बली ग्रह दूसरों के फल को दबाकर अपने फल देगा।

मंगल पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

1. स्वस्थानी (1, 8 रा०) के मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—चतुर श्रेष्ठ वक्ता, माता पिता का भक्त, धनवानों में श्रेष्ठ, अत्यन्त उदार।

चन्द्र की— परस्त्री से प्रेम, बड़ा शूरवीर, कृपारहित, चोरों को मारने वाला।

बुध की— वेश्या के अलङ्कार और वस्त्र बनाने में एक चित्त, बड़ा चतुर, पराया धन हरने वाला।

गुरु की— स्वनवांश में राजा, धनवान, क्रोधयुक्त, राजचिह्नों से युक्त, औरों से मित्रता करने वाला।

शुक्र की— बारम्बार भोजन की इच्छा, स्त्री के निमित्त सदा यात्रा की चिन्ता।

शनि की—मित्रों से परित्यक्त, माता के वियोग से सन्ताप, दुर्बलदेह, कुटुम्ब का विरोधी, अति ईर्ष्यायुक्त।

2. शुक्र स्थानी (2, 7 रा०) के मंगल पर दृष्टि

सूर्य की— स्त्री के मन की वृत्ति से रहित, बड़े-बड़े वन और पर्वत में रहने की इच्छा, शत्रु हीन, बड़ा क्रोधी।

चन्द्र की— माता के विरुद्ध, संग्राम में डरपोक, बहुत स्त्रियों का स्वामी।

बुध की— शास्त्र में प्रवृत्ति, बड़ाई का प्रिय, बहुत बोलने वाला-अल्पधन का आगमन, शोभायमान रहे।

गुरु की— भाइयों की प्रीत में तत्पर, अत्यन्त भाग्यवान्, गीत नृत्यादि में चतुर।

शुक्र की— प्रशंसा के योग्य, राजा का मन्त्री या सेनापति, बहुत सौख्य।

शनि की— प्रसिद्ध, नम्रतायुक्त, धनवान्, श्रेष्ठ मित्रों वाला, पवित्रबुद्धि, शास्त्र में यत्न करने वाला, नगर या ग्राम का स्वामी।

3. बुध स्थानी (3, 6 रा०) मंगल पर दृष्टि

सूर्य की— विद्या धन, ऐश्वर्य युक्त, बलयुक्त, वन पर्वत तथा किले में रहने वाला।

चन्द्र की— अपनी रक्षा के लिए राजा से नियुक्त किया हुआ, स्त्री में तत्पर मन युक्त, सन्तोषी।

बुध की— बहुत बोलने वाला, गणितशास्त्र में चतुर काव्य से जिसको प्यार हो, दूतो का कार्य करने में बड़ा उद्यमी।

गुरु की— परदेश में भ्रमण, व्यसनी, उच्च स्थान को प्राप्त।

शुक्र की— वस्त्र, अन्न, जल, के सुख से युक्त, स्त्री में आसक्त, निरन्तर समृद्धियों सहित।

शनि की— बड़ा शूरवीर, मलिन आलसी, किलाकोट वन पर्वत में विलास करें।

4. कर्क के मङ्गल पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—अपने प्यारों से प्रीत, शत्रुओं से बैर कर्त्ता, वन पर्वत कुंजों में रहने वाला।

चन्द्र की— पुष्ट स्वरूप, कठिन स्वभाव, माता से नम्र, कार्य में चतुर, तीव्र सुन्दर बुद्धि।

बुध की— पित्त रहित, थोड़ा, कुटुम्ब, पाप का प्रचारक, दुष्ट चित्त।

गुरु की— राजा का मन्त्री, गुण और गौरव युक्त, बड़े मान युक्त प्रसिद्ध।

शुक्र की— बुरे कर्मों में धननाश सदा बुरे कर्मों का विचार कर्त्ता।

शनि की— जलोत्पन्न धान्य से धन की प्राप्ति, श्रेष्ठ कान्ति, राजा से धन प्राप्त

(5) सिंह के मङ्गल पर दृष्टि।

सूर्य की दृष्टि— अपने प्यारों से प्रीत, शत्रुओं से वैर कर्त्ता, वन पर्वत कुंजों में रहने वाला।

चन्द्र की— पुष्ट स्वरूप, कठिन स्वभाव, माता में नम्र, कार्य में चतुर, तीव्र सुन्दर बुद्धि।

बुध की— श्रेष्ठ काव्य शिल्पादि कलाओं का ज्ञाता, लोभी, चंचलचित्त, अपने साधन में चतुर।

गुरु की— श्रेष्ठ बुद्धि, राजा का मित्र, सेना का स्वामी, बहुत मनुष्यों के मनोरथ पूर्ण करने वाला, विद्या में प्रवीण।

शुक्र की— अभिमान से ऊँचा, अत्यन्त सुन्दर, शोभायमान देह, अनेक स्त्रियों का भोगी, सम्पूर्ण समृद्धि सहित।

शनि की— पराये घर वास, अत्यन्त चिन्ता, बूढ़ों के समान रूप, धनहीन।

6. गुरु स्थानी (9, 12 रा० के) मंगल पर दृष्टि

सूर्य की— पंडितों की विधि का ज्ञाता, राजा को नहीं मानने वाला, लड़ाई प्रिय।

बुध की— चतुर, शिल्प विद्या में निपुण, श्रेष्ठशील, सब विद्याओं में चतुर, नम्रता।

गुरु की— स्त्री की अत्यन्त चिन्ता करने वाला, शत्रुओं से सदा लड़ाई करने वाला, स्थान भ्रष्ट।

शुक्र की— उदार चित्त, विषयों में आसक्त, अनेक प्रकार के गहने, भाग्यवान।

7. शनि स्थानी (10, 11 रा० के) मङ्गल पर दृष्टि

सूर्य की— स्त्री पुत्र धन से युक्त, तरुण स्वरूप, निरन्तर बड़ा शूरवीर।

चन्द्र की— श्रेष्ठ आभूषण युक्त, माता के सुख से हीन, स्थान भ्रष्ट, चंचल।

बुध की— प्रियवाणी, भ्रमण करने वाला, जुआ से युक्त, निर्भय।

गुरु की— बड़ी आयु, राज कृपायुक्त, भाईयों का प्यारा, कार्य में बहुत बोलने वाला।

शुक्र की— राजा से धन प्राप्त करने वाला, स्त्री के साथ वैर, बहुश्रुत, बड़ी बुद्धि वाला, कपटयुक्त, संग्राम प्रिय।

मङ्गल पर पाप ग्रह की दृष्टिक्षेत्र धन—धान्य आदि का नाश

मङ्गल पर शुक्र ग्रह की दृष्टि— विजय, देश और क्षेत्र का लाभ तथा मित्रों से शुभ।

मंङ्गल पर पाप ग्रहों की दृष्टि— बन्धन रोग, युद्ध तथा दूर देश में निवास।

मङ्गल पर मित्र ग्रह की दृष्टि— धन की वृद्धि हो।

बुध पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

(1) मंगल स्थानी (1, 8 रा. के) बुध पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि— भाइयों का प्यारा, सत्यवक्ता, विलासयुक्त, राजा, श्रेष्ठ गौरव युक्त।

चन्द्र की दृष्टि— श्रेष्ठ, गीत नृत्यादि में प्रीति, कामसहित, स्त्री में प्रीति, वाहन और नौकरयुक्त, चुगलखोर।

मंगल की दृष्टि— राजा का प्यारा, बहुत धन वाला, शूरवीर, चतुर, लड़ाई में उद्यत, क्षुधायुक्त।

गुरु की दृष्टि— सुखयुक्त, चतुर, श्रेष्ठ वाणी, स्त्री पुत्रादियुक्त, प्रसन्न चित्त।

शुक्र की दृष्टि— स्त्रियों के साथ विलासी, गुण और गौरवयुक्त, स्त्रियों को प्यारा, सुन्दर बुद्धि, नम्रता सहित।

शनि की दृष्टि— श्रेष्ठ साहस वाला, क्रूर, स्वभाव, कुल में कलहयुक्त, प्रीत और श्रेष्ठ वृत्ति से रहित।

2. शुक्र स्थानी (2, 7 रा०) बुध पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि - दरिद्र और दुःख तथा रोगों से सन्तापित देह वाला, पराया उपकार करने में निरन्तर तत्पर, शान्त स्वभाव, शुद्ध चित्त।

चन्द्र की— बहुत प्रपंची, धनधान्य युक्त, दृढ़-प्रतिज्ञ, राजा का मन्त्री, प्रख्यात।

मङ्गल की— राजा से अपमानित, रोग से सन्तापित, मित्र और विषयों से रहित।

गुरु की— उत्तम देश, ग्राम तथा नगरों का स्वामी, राजा, चतुर, गुणों का जानने वाला, गुणवान्, शीलवान्।

शुक्र की— अति सुन्दर वेष, वस्त्राभूषण युक्त, स्त्रियों को कामदेव और काम से बड़े हर्ष को प्राप्त, अत्यन्त चतुर, उदार, श्रेष्ठ भाग्य।

शनि की— स्त्री, पुत्र, मित्र और वाहन से दुःख, सन्तप्त चित्त, सुख और धन से हीन।

3. स्वक्षेत्री बुध पर दृष्टि का फल

सूर्य की— सत्ययुक्त, सुन्दर, लीला का विलास करने वाला, राज से मान और उन्नति को प्राप्त, चंचलता रहित।

चन्द्र की— बहुत बोलने वाला, मिष्ठभाषी, लड़ाई जिसे प्यारी हो, राजा के पास रहने वाला।

मंगल की— प्रसन्न देह, चुगलखोर, कलाओं का ज्ञाता, राजा के कृत्य में निरन्तर प्रवीण, मनुष्यों का प्यारा।

गुरु की— धनयुक्त, सामर्थ्य सहित, श्रेष्ठ राजा के मान से अधिकार को प्राप्त।

शुक्र की— राजा का दूत, वैरियों को जीतने वाला, दोनों की सन्धि कराने में चतुर, वेश्या में आसक्त, मन की अभिलाषा को प्राप्त।

शनि की— प्रारम्भ किये कार्य को सिद्ध करने वाला, नम्रता रहित, श्रेष्ठ वस्त्र और आभूषणादि समृद्धियों सहित।

(4) कर्क के बुध पर दृष्टि

सूर्य की— स्त्री के निमित्त से पूर्ण पीड़ा, धन का व्यय, अतिदुर्बल देह, बहुत उत्पातों सहित।

चन्द्र की— वस्त्रादिकों की शुद्धि और मणियों का संग्रह करने वाला, घर आदि स्थान बनाने में चतुर, फूलों की माला गूथने में चतुर।

मंगल की— थोड़ा शास्त्र का ज्ञाता, अर्थ में तत्पर, शूरवीर प्यारी बोली, झूठ बात करने में चतुर।

गुरु की— चतुर विद्या का जानने वाला, भाग्यवान श्रेष्ठवाणी।

शुक्र की— प्यारी वाणी, सुन्दर शरीर, श्रेष्ठ गीत, वाजों की विधि में चतुर।

शनि की— गुणहीन, अपने मित्र तथा भाई बन्धुरहित, झूठ बोले, दम्भ में तत्पर, कृतघ्न।

5. सिंह के बुध पर दृष्टि

सूर्य की— कृपा रहित, चंचलस्वभाव, ईर्षायु, हिंसा में तत्पर क्रूर, शूद्र।

चन्द्र की— कामदेव और पराक्रम रहित, वृत्तिहीन, भावों से अंकित बुद्धिहीन विचित्र, दुख सहित।

गुरु की— कोमल निर्मल रुचि, कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर नेत्र, सामर्थ्यवान उत्तम वाहन धनवान।

शुक्र की— श्रेष्ठ रूप, मिष्टवाणी, विलासी, राजा का आश्रित वाहन।

शनि की— देह में पसीने की दुर्गन्ध, बड़ी देह, कुरुप, उग्र, सुखहीन।

6. गुरु क्षेत्री बुध पर दृष्टि

सूर्य की— शूल पथरी प्रमेहरोग, मन की तरफ से रहित, शान्ति को प्राप्त।

चन्द्र की— लेखन कला में चतुर, श्रेष्ठ संगीत वाला, साधु और मित्रों की संगत, सुखी।

मंगल की— खानदानी चोर, वन में वास, उसका नाम राज्य में लिखा जाता है, धन अन्न से रहित।

गुरु की— ज्ञानवान्, अपने कुल में शिरोमणि, राजा के खजाने में गिनने वाला, बहुत जनों का स्वामी।

शुक्र की— राजा का मन्त्री, लेख के अधिकार को प्राप्त, चोरों में आसक्त, दुष्ट स्त्रीयुक्त, धनवान्।

शनि की— बहुत अन्न खाने वाला, मलिन, दुष्टवृत्ति, वन पर्वत में वास, काम के लायक नहीं।

7. शनि क्षेत्री बुध पर दृष्टि

रवि की— अपने प्रारब्ध से प्रताप सहित, श्रेष्ठ मल विद्या में कुशल, दुष्ट शक्ति, कुटुम्वी।

चन्द्र की— जल सम्बन्धी कार्य से आजीविका, धनवान, डरपोक, फूल और कन्द के उद्यम करने वाला।

मंगल की— लज्जा और आलस्ययुक्त, बड़े स्वभाव वाला सौम्यमूर्ति, सुखी, चपल वाणी, धनवान।

गुरु की— अन्न और वाहन तथा धनयुक्त, सुखी, ग्राम और नगर का स्वामी, बड़ा बुद्धिमान।

शुक्र की— बहुत सन्तान, कुरुप, चतुरतारहित, मूर्ख, नीचजनों का साथी, अतिकामी।

शनि की— सुख रहित, पाप में तत्पर, दीन धन रहित, हीन जनों का संग, बुध पर पापदृष्टि, बड़ा दुख, शूल रोग।

शत्रुदृष्टि— अतिसार रोग, दुर्बद्धि, विपरीत कर्म करने में उद्यत।

शुभदृष्टि— लेखक, विद्वान, चतुर।

मित्र दृष्टि— आभूषण, धन, रेशमी वस्त्र तथा रत्नों का लाभ।

मित्रदृष्टि— आभूषण, धनादि।

गुरु पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

1. भौम क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि— असत्य से डरने वाला, बहुत धर्म करने वाला, विख्यात श्रेष्ठ भाग्य युक्त नम्र।

चन्द्र की— प्रसिद्ध, नम्र, स्त्री का प्यारा, श्रेष्ठ पुरुषों की सलाह लेने वाला, धर्म में तत्पर, शान्त स्वभाव।

मंगल की— क्रूर, बड़ा धूर्त, दूसरे के अभिमान को नष्ट करने वाला, राजा के आश्रय से आजीविका, बहुत मनुष्यों का स्वामी।

बुध की— श्रेष्ठ वृत्ति और सत्य उत्तम वाणी से रहित, दूसरे का छिद्र देखने वाला, नम्र, मनुष्यों का स्वामी, धूर्त।

शुक्र की- गन्धमाला, शैया, भोजन भूषण, स्त्री वस्त्र, स्थान इन सब के सौख्य को पाता है।

शनि की— लोभी, क्रूर, हठी, मित्र और सन्तान के सुख रहित और सलाह करने में कठोर।

2. बुध क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की— युद्ध में जय प्राप्त, भावसहित, शरीर में रोग, बहुत वाहन और सेवक युक्त राजा का मन्त्री।

चन्द्र की— सत्ययुक्त, नम्रता युक्त, परोपकारी, श्रेष्ठ चित्त, श्रेष्ठ भाग्य वाला।

मंगल की— भाग्ययुक्त, पुत्र सौख्य को प्राप्त, मिष्टभाषी।

बुध की— श्रेष्ठ मन्त्र और विद्या में तत्पर, निरन्तर भाग्य सहित, राजा से धन प्राप्त, सुन्दर कलाओं का ज्ञाता।

शुक्र की— धन और भूषणसहित, श्रेष्ठ वृत्ति में चित्त, ऐश्वर्यवान।

शनि की— श्रेष्ठ पुत्र-श्रेष्ठ स्त्रियों के सुख युक्त, नगर और ग्राम में उत्सव युक्त, चतुर।

3. बुध क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य दृष्टि— श्रेष्ठ पुत्र स्त्री, नगरों में उपकार, सौख्य युक्त श्रेष्ठ प्रतिष्ठा को प्राप्त, शोभायमान।

चन्द्र की— अग्रणी, ग्राम और नगरों में उपकार करने वाला, बहुत गौरव से शोभायमान।

मंगल की— संग्राम में जय, घावयुक्त देह, धन पराक्रम युक्त।

बुध की— श्रेष्ठ और स्त्री पुत्र धन सौख्य युक्त, चतुर, ज्योतिषी, शिल्पशास्त्र का ज्ञाता, सुन्दर वाणी।

शुक्र की— धन स्त्री पुत्रों के सुख से युक्त, मकान वावली (जलाशय) और खेती के काम में चित्त, प्रसन्न पुरुष।

शनि की— राजा से श्रेष्ठ गौरव प्राप्त, नित्य उत्सव सहित, गुणों से पूर्ण।

4. कर्क के गुरु पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि— स्त्री पुत्र धन के उत्पन्न सौख्य को पहले नाश करता है।

चन्द्र की— राजा के खजाने का स्वामी, श्रेष्ठ कांति, धन के सुख से युक्त, श्रेष्ठ वृत्ति में चित्त।

मंगल की— बालक स्त्री तथा सुन्दर वस्त्र भूषणों से युक्त, गुणवान शूरवीर, व्रण रोग।

बुध की— मित्रों के आश्रय से सब सिद्धियाँ प्राप्त, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ प्रताप, राजा का मन्त्री।

शुक्र की— मित्रों के वैभव को भोगने वाला, स्त्रियों से अनेक सौख्य को प्राप्त।

शनि की— सम्मान और भूषण तथा गुणों से युक्त, श्रेष्ठ शील, सेना नगर या ग्राम का स्वामी, बहुत बोलने वाला।

5. सिंह के गुरु पर दृष्टि

सूर्य की— खर्च करने वाला, प्रसिद्ध, बड़ा धूर्त्त, राजा से धन लाभ, श्रेष्ठ कर्म में चित्त।

चन्द्र की— प्रसन्न मूर्ति, चित्त की शुद्धि से हीन, स्त्री के कारण से धनलाभ।

मंगल की— बड़े मान और गौरव युक्त, श्रेष्ठ कर्म के निर्माण करने में चतुर।

बुध की— मकानादि बनवाने में चतुर, गुणों में अग्रणी, राजा का मन्त्री, वाणी विलास में चतुर।

शुक्र की— राजा से बड़ा पद प्राप्त, स्त्रियों से प्रीति करने वाला, गुणों का जानने वाला।

शनि की— सुख से हीन, मलिन, श्रेष्ठ वाणी, दुर्बल देह, उत्सव रहित।

6. स्वक्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि— राजा के विरुद्ध, मित्रों में अत्यन्त वैर करने वाला, जिसके सदा वैरी रहे।

चन्द्र की— भाग्य और धन वृद्धि से अभिमान, स्त्री का प्यारा, सुख युक्त नम्रता रहित।

मंगल की— फोड़े से अंकित, युद्ध में चतुर, हिंसक, क्रूर स्वभाव।

बुध की—राजा के आश्रय से बड़ा अधिकार प्राप्त, स्त्री धन ऐश्वर्य सुख युक्त, पराये उपकार करने में एकचित्त।

शुक्र की— सुखयुक्त, धन युक्त, प्रसन्न, चतुर, सदा ऐश्वर्य युक्त।

शनि की— अधिकार से पतित, सुख और पुत्रों से रहित, युद्ध में पराजय।

7. शनि क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की— प्रसन्न, कांतिमान् श्रेष्ठ वाणी, ,पराया उपकार आदर से करने वाला, राजा के कुल में उत्पन्न।

चन्द्र की— कुल को धारण करने वाला, तीव्र बुद्धि, शीलवान्, धर्म क्रिया में उदार, अभिमानी, माता-पिता का भक्त।

मंगल की— राजा कृपा से धन की सिद्धि और सुख को प्राप्त करने वाला।

बुध की— शांत स्वरूप, निरन्तर स्त्री के वशीभूत, धर्म क्रिया में निरन्तर।

शुक्र की— विद्या विवेक, धन गुण युक्त, राजा से मन की अभिलाषा को प्राप्त।

शनि की— कामना को प्राप्त, श्रेष्ठ गुणों से युक्त, घर और अर्थ की प्राप्ति, धन धान्य युक्त, नम्रता सहित।

8. गुरु पर पाप दृष्टि— बुद्धि की पराजय तथा क्षेत्रादि से वियोग।

गुरु पर शत्रु दृष्टि— कुष्ठरोग, त्वचा में दोष, कलह तथा युद्ध।

गुरु पर मित्र दृष्टि— जय, धन का लाभ, स्त्री, क्षेत्रादि का संग्रह।

गुरु पर शुभ दृष्टि— धर्म के कार्यों में उद्यम करता है और सुखी रहता है।

9. नवम स्थान में गुरु हो, तो उस पर दृष्टि का विचार

सूर्य से दृष्ट— मन्त्री राजतुल्य होता है।

सूर्य चन्द्र से— बहुत आयु वाला और निन्दित पद से युक्त।

बली सूर्य चन्द्र दोनों से दृष्ट — विख्यात, राजतुल्य, पंडित बहुत स्त्रियों से युक्त और समृद्ध, साहसी, धनी।

सूर्य बुध दोनों से— सुन्दर ऐश्वर्य, मनोहर, धनी, स्त्री और भूषण से युक्त, काव्य कला ज्ञाता।

सूर्य शुक्र दोनों से— सामवेद का जानने वाला, उत्सव कर्त्ता और गौ महिषि, बकरी, गधा इनसे युक्त, साहसी।

सूर्य शनि दोनों से दृष्ट— कोषपति और संग्रह कर्त्ता, चतुर विख्यात और गुणी तथा देश गुरु और श्रेणी नायक होता है।

चन्द्र से दृष्ट— प्रिय कांता का भोगने वाला।

चन्द्र मंगल से दृष्ट— सेनाचार्य और सौख्य युक्त, सुन्दर ऐश्वर्य युक्त या मन्त्री।

चन्द्र बुध से दृष्ट— गृहशयन अन्नादि का भोगने वाला, तेजस्वी क्षमाशील और बुद्धिमान।

चन्द्र शुक्र से दृष्ट— कर्मयुक्त, शुभाचार, शूरवीर, सम्पन्न परिवार।

मंगल से दृष्ट— धनवान।

मंगल बुध से दृष्ट— तेजस्वी, सत्ययुक्त, सेवाकर्म में तत्पर, चतुर।

मंगल शनि से दृष्ट— नीच, विदेशगामी, चाकरी वाला, निन्दक।

बुध शुक्र से दृष्ट— कारीगरी का जानने वाला, सुन्दर भाग्य, विद्वान अच्छा भेष का धारण करने वाला, शीलवान, आज्ञा पालक, गौ वाहन धन से युक्त।

बुध शनि से दृष्ट— सुन्दर ऐश्वर्य, मनोहर, विद्वान, वक्ता, शूरवीर सुखी विनय सम्पन्न।

शुक्र शनि से दृष्ट— देशभक्त धनी।

शनि से दृष्ट— भैंसा तथा वृक्ष से युक्त धनवान होता है।

द्वादशेश से दृष्ट—विवादकर्त्ता और प्रिय बोलने वाला।

शुक्र पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

1. मंगल क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि का फल

सूर्य की— विशेष करके राजा की निरन्तर कृपा वाला, स्त्री के कपट से अत्यन्त दु:खी।

चन्द्र की— श्रेष्ठ प्रतिष्ठा वाला, चंचल चित्त वृत्ति, कामातुरता का विकार।

मंगल की—धनवान, सुख से रहित, विशेष दीन और मलिन।

बुध की— खोटा धन तथा सम्बन्धियों से रहित, अपनी बुद्धि और सामर्थ्य से रहित क्रूर, पराये धन को हरण करने वाला।

गुरु की— स्त्री पुत्रादिकों के सुख से रहित, श्रेष्ठ देह, शोभायमान, नम्रता युक्त, उदार चित्त।

शनि की— गुप्तधन, शांत स्वभाव, माननीय, श्रेष्ठ, अपने जनों की सम्पत्ति सहित।

2. स्वक्षेत्री शुक्र पर दृष्टि

सूर्य की— श्रेष्ठ स्त्रियों के धन वाहनों से निश्चय शुभ लाभ।

चन्द्र की— वेश्याओं में विलास, अपने कुल का पालक, निर्मल बुद्धि, सुशील श्रेष्ठ वाणी के विलास में चतुर।

मंगल की— ग्रह सौख्य रहित, लड़ाई में अपमान को प्राप्त।

बुध की— गुणवान, श्रेष्ठ भाग्य, कामनायुक्त, सौम्य स्वभाव, बलवान धैर्य सहित।

गुरु की— श्रेष्ठ वाहन और स्त्री, गुण श्रेष्ठ, मित्र, पुत्र धनादि सम्पूर्ण वस्तुओं से लाभ।

(3) बुध क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि–

सूर्य की—राजा के रनवास का डयोढीवान, नम्र गुण युक्त, शास्त्र जानने वाला।

चन्द्र की—श्रेष्ठ अन्न, वस्त्रादि सुख युक्त, नील कमल के समान श्याम, सुन्दर नेत्र सुन्दर बाल।

मंगल की—भाग्ययुक्त, कामकला में चतुर, स्त्री के निमित्त धन का व्यय करने वाला, कामी।

बुध की—चतुर वाहन और धन की वृद्धि वाला, सेना का स्वामी, परिवार सौख्य से युक्त, बुद्धिमान।

गुरु की—श्रेष्ठ बुद्धि, वृद्धिसहित, बहुत वैभव युक्त, प्रसन्न चित्त, निरन्तर नम्र।

शनि की—अपमान युक्त, चपल स्वभाव, दु:खी।

4 कर्क के शुक्र पर दृष्टि का फल-

सूर्य की—क्रोधी, हर्ष का नाश, वैरियों से पीड़ित।

चन्द्र की—पहिले कन्या पीछे पुत्र उत्पन्न हो। माता और विमाता का मान करने वाला।

मंगल की—कलाओं में चतुर, शत्रुनाशक, बुद्धि से सौख्य युक्त, स्त्री चिन्ता।

बुध की—विद्या में प्रवीण, गुणवान, स्त्री-पुत्रों से अत्यन्त संतापित।

गुरु की—अत्यन्त चतुर, उदार, सुन्दर, मूर्ति नम्रता, युक्त मति और वैभव युक्त। स्त्री पुत्रों के सौख्य युक्त प्यारी वाणी।

शनि की— श्रेष्ठ वृत्ति और सौख्य रहित, धनहीन, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, स्त्री से जीता गया, स्थान से पतित।

(5) सिंह की शुक्र पर दृष्टि का फल-

सूर्य की—स्पर्धा से चित्त वृत्ति को बढ़ाने वाला, स्त्री के आश्रय से धनलाभ या ऊँट, गधा, घोड़ों से धन लाभ।

चन्द्र की—माता दो होवें, स्त्री से विरोध करने वाला, ऐश्वर्य सहित।

मंगल की—राजा का प्यारा, अन्न धन युक्त, कामकला के व्यसनों से युक्त।

बुध की—धन सहित, संग्रह करने में चित्त की वृत्ति, लोभी, कामदेव की अधिकता से बुरे विचारों को प्राप्त।

गुरु की—राजा का मन्त्री, धन वाहन युक्त, बहुत स्त्री पुत्र सेवकों के सौख्य।

शनि की—राजा के समान सम्पूर्ण समृद्धियों का भागी। फौजदारी के मुकदमे का आफीसर (दण्डाधिकारी) ।

(6) गुरु क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि-

सूर्य की— क्रूर, चतुर, भाग्य और सौभाग्य का भागी बल सहित विशेष धनवान अनेक देशों की यात्रा।

चन्द्र की— श्रेष्ठ राजमान्य, प्रसिद्ध नम्र, बहुत भोग युत्त, धीर, बलवान।

मंगल की—शत्रुनाश में असमर्थ, धनवान, प्रसन्न, स्त्री कृत प्रेम से युक्त, श्रेष्ठ, पुण्यवान, श्रेष्ठ वाहनों से युक्त।

बुध की—श्रेष्ठ वाहन, धन वस्त्र आभूषण का लाभ श्रेष्ठ अन्नों के सुख सहित।

गुरु की—घोड़ा, सोना, वस्त्र, आभूषण, व हाथी व स्त्रियों के सुख से रहित।

शनि की—श्रेष्ठ भाग, उत्तम सौख्य और कर्मो का भागी, नित्य उत्सव सहित धनी।

(7) शनि क्षेत्रीय शुक्र पर दृष्टि-

सूर्य की—स्थिर स्वभाव, वैभव युक्त, मणि युक्त, धनसहित, बल से विराजमान।

चन्द्र की—यशस्वी, सुन्दर, शरीर, बड़ा बलवान, धन वाहन युत्त।

मंगल की—श्रम रोग से अत्यन्त तप्त स्वरूप, अनर्थ से धन नाश।

बुध की— पंडितों की विधि को जानने वाला धनी, संतुष्ट, चतुर, बलयुक्त, बड़ा प्रचण्ड, श्रेष्ठ वाणी का विलास करने वाला।

गुरु की— श्रेष्ठ गन्ध और माला, वस्त्र, सुन्दर बाजे सहित, संगीत विद्या का ज्ञाता।

शनि की— प्रसन्न देह, अनेक वस्तु लाभ करने वाला, धन वाहन स्त्री और पुत्रों के सौख्य से युक्त।

शुक्र पर पाप दृष्टि फल— पराजय, स्त्रीवियोग, धन नाश।

शुक्र पर शत्रु दृष्टि फल— मूत्रकृच्छ आदि बड़े रोग होते हैं।

शुक्र पर शुभ दृष्टि फल— स्त्री का लाभ, सुख, आभूषण तथा धन का लाभ।

शुक्र पर मित्र दृष्टि फल— पट्ट बन्ध तथा देश लाभ आदि हो।

शनि पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

1. मंगल क्षेत्री शनि पर दृष्टि

सूर्य की— भैंस, गाय, बकरी, भेड़ की समृद्धि वाला, खेती के काम से सदा तत्पर।

चन्द्र की— नीच संगति वाला, चपल, दुष्टशील, खल, दुःखी और धन रहित।

मंगल की— बहुत बोलने वाला, सम्पदा रहित, कार्य नाशक, धनहीन।

बुध की— चोरी करने वाला, कलह में तत्पर, स्त्री और उत्सव रहित।

गुरु की— सुखी धनयुक्त, राजा का मन्त्री, राजा के आश्रय से मुख्यतया प्राप्त।

शुक्र की— बहुत यात्रा करने वाला, कांति हीन, पापिनी स्त्री में आसक्ति से दुःखी।

२. शुक्र क्षेत्री शनि पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि— विद्या सम्पन्न, बड़ा वक्ता, पराया अन्न खाने वाला, धनहीन, शान्त।

चन्द्र की— राजा की कृपा से बड़े अधिकार को प्राप्त, स्त्री भूषण तथा वस्त्र सौख्य को प्राप्त बलवान।

मंगल की— युद्ध के काम में तत्पर, निरन्तर बहुत बोलने वाला, बड़ी कृपा वाला।

बुध की— स्त्री में तत्पर, नीच पुरुषों का संग, विनोद और हास्य में तत्पर, धनहीन, हिजड़ों से मित्रता।

गुरु की— पराये उपकार में चित्त, दूसरों के दुःख से दुःखी, दाता और उद्योगी।

शुक्र की— रत्नादि पदार्थों का लाभ, स्त्री के विलास में तत्पर, जलीयतत्त्व, राजा से गौरव प्राप्त।

3. बुध क्षेत्री शनि पर दृष्टि

सूर्य की— सुख रहित, नीचों में तत्पर, क्रोधी, अधर्मी, वैर करने वाला, धर्मवान।

चन्द्र की— प्रसन्नमूर्ति, राजा की कृपा से अधिकार को प्राप्त, ऊँचे कार्यो में प्रवृत्ति करने वाला, स्त्रियों के अधिकार को प्राप्त।

मंगल की— बड़ा बुद्धिमान, निरन्तर विधि को जाने वाला, प्रसिद्ध।

बुध की— धनयुक्त, सुन्दर बुद्धि, नम्रता सहित, गीत प्रिय, संग्राम के कार्य में चतुर, शिल्प ज्ञाता।

गुरु की— राजा का आश्रय करने वाला, सुन्दर, गुणों से युक्त सत्पुरुषों का प्यारा।

शुक्र की— स्त्री के आभूषण बनाने में चतुर, श्रेष्ठ कर्म और धर्म में निरन्तर तत्पर, स्त्रियों में आसक्त चित्त।

4. कर्क के शनि पर दृष्टि

सूर्य की— आनन्द, स्त्री और धन से हीन, अन्न-भोग से हीन, माता को क्लेश।

चन्द्र की— बन्धु जनों तथा माता को दु:ख देने वाला, धन की वृद्धि सहित।

मंगल की— बल से हीन, क्षीण देह, राजा के दिये धन से वैभव।

बुध की— वाग्विलास में कठिन, भ्रमण करने में बुद्धि, मनोवांछित फल प्राप्त, पाखण्ड करने में चतुर।

गुरु की— धरती, पुत्र, घर, स्त्री, धन, रत्न, वाहन, आभूषण से युक्त।

शुक्र की— उदार, गौरव युक्त, सुन्दर, यान युक्त, सौन्दर्य तथा निर्मल वाणी, विलासहीन।

5. सिंह के शनि पर दृष्टि

सूर्य की— धन, अन्न, वाहन से श्रेष्ठ और उत्तम चरित्र से हीन।

चन्द्र की— श्रेष्ठरत्न, आभूषण, वस्त्र, सुन्दर, यश, स्त्री, मित्र, पुत्रादिकों के सुख में पूर्ण प्रसन्न चित्त।

मंगल की— संग्राम कर्म में अत्यन्त निपुण, करुणाहीन, क्रूर स्वभाव।

बुध की— धन, स्त्री, पुत्र के सुख से हीन, दीनतायुक्त, नीच व्यसनों से युक्त।

गुरु की— श्रेष्ठ मित्रों, पुत्रादि युक्त, गुणों सहित, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ वृत्ति वाला, निरन्तर नम्रता सहित, पुर और ग्राम का स्वामी।

शुक्र की— धन, अन्न और वाहन से युक्त, स्त्री से संताप को प्राप्त।

6. गुरु क्षेत्री शनि पर दृष्टि का फल

सूर्य की— प्रसिद्धि, धन एवं गौरव को प्राप्त करने वाला, पराये पुत्र में प्रीति।

चन्द्र की— श्रेष्ठ वृत्ति, मातारहित, अन्य नामों से शोभित, धन पुत्र स्त्री के सुख भोगने वाला।

मंगल की— वातरोगी, मनुष्यों के विपरीत चलने वाला, परदेशवासी।

बुध की— श्रेष्ठ गुणों से युक्त, धनवान्, कामी, राजा से बड़े अधिकार को प्राप्त, सदाचार युक्त।

गुरु की— मन्त्री या सेनापति, सब कार्यों को करने वाला, बलवान, सुशील।

शुक्र की— परदेश वासी, बहुत कार्यों में आसक्त, दोमाता, निरन्तर पवित्र।

7. स्वक्षेत्री शनि पर दृष्टि का फल

सूर्य की— बुरे रूप वाली स्त्री का पति, पराया अन्न खाने वाला, परिश्रम रहित, रोगयुक्त, परदेश वासी।

चन्द्र की— धन और स्त्री युक्त, दु:ख से उत्पन्न हुआ, चपल स्वभाव माता के विरुद्ध रहे, कामातुर।

मंगल की— शूरवीर, क्रूर, अच्छे गुणों से युक्त, सर्वजनों में उत्कृष्ट, सदा प्रसन्न चित्त, प्रसिद्ध।

बुध की— श्रेष्ठ वाहन युक्त, उत्साह युक्त, बलवान, अनेक कार्यों में आसक्त।

गुरु की— गुण युक्त, राजा का मन्त्री, रोग रहित, सुन्दर शरीर।

शुक्र की— कामातुर, नियम रहित, भाग्य सहित, सुखवान, धनवान् भोग भोगने वाला, लक्ष्मी का स्वामी।

शनि पर पाप दृष्टि— बगल रोग बन्धन तथा क्षय हो।

शनि पर शत्रु दृष्टि— शत्रु बाधा, पराभव, तथा रोग।

शनि पर शुभ दृष्टि— रोग रहित

शनि पर मित्र दृष्टि— बांधवो से संगम होता है।

दृष्टि का अन्य विचार

राहु दृष्टि से पाप नाश— लग्न या लग्न से 3,9,11 इन स्थानों को राहु देखता हो, तो उसके पाप का नाश होता है।

चन्द्र की बुरी दृष्टि— लग्न पर चन्द्र की दृष्टि बुरी होती है। परन्तु कर्क लग्न से फल अच्छा होता है।

चन्द्र पर दृष्टि— दिन का जन्म हो चन्द्र दृष्ट भाग में हो उसे शनि ग्रह देखता हो, अशुभ फल।

दिन का जन्म हो, तो चन्द्र अदृश्य भाग में हो उसे गृह देखता हो, तो शुभ फल।

रात का जन्म हो तथा दृश्य चक्र में हो, तो शुभ फल।

भाव या ग्रह सब ग्रहों से दृष्ट— जो भाव या ग्रह समस्त ग्रहों से दृष्ट हो वह भाव ग्रह शुभ फल देने में समर्थ होता है।

सूर्य लग्न में हो या लग्न पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो, तो क्रोधी, शरीर में वात पित्त रोग से पीड़ा, पाषाण आदि प्रहार से कष्ट कंठ या गुदा में व्रण या तिल। बालपने में अनेकों पीड़ा, दुख पावे।

शुभ ग्रह लग्नेश होकर लग्न को देखे या लग्न में ही बिना क्लेश बड़ी आयु पावे और सुखी होता है।

लग्न पर ग्रह दृष्टि फल

लग्न पर सूर्य दृष्टि— राज सेवी, पितृधन से धनी।

लग्न पर चन्द्र दृष्टि— जल जलचरों के व्यवहार से या रोजगार से धनी।

लग्न पर मंगल दृष्टि—धर्मात्मा, स्थूल लिंग।

लग्न पर बुध दृष्टि— विद्वान, शिल्पज्ञ तथा यशस्वी।

लग्न पर गुरु दृष्टि— राजा का पूज्य और व्रत युक्त।

लग्न पर शुक्र दृष्टि— वेश्याओं से आसक्त, सुखी, धनी।

लग्न पर शनि दृष्टि— वृद्धा स्त्री वाला, खल, मलिन।

लग्न को कोई ग्रह न देखे तो लग्नस्थ ग्रह के वश से फल कहें।

लग्न पर दृष्टि फल

लग्न को लग्नेश देखे— राजा या राजा का प्रिय, धनी सुखी हो।

लग्न को शुभ ग्रह देखे— सब शुभ फल।

लग्न को पाप ग्रह देखे— अशुभ फल।

लग्न को दो आदि ग्रह देखे— सुखी।

होरादि कुण्डली में चन्द्र पर ग्रहों की दृष्टि का फल

चन्द्र जिस राशि के होरा में हो उसे होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ फल देगा।

जैसे चन्द्रमा यदि सूर्य होरा में हो और सूर्य होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ।

जैसे चन्द्रमा यदि चन्द्र होरा में हो और चन्द्र होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ।

लग्न पर दृष्टि— इस प्रकार लग्न में भी होरेश का फल विचारना।

यदि लग्न में चन्द्र होरा हो और चन्द्र उसे देखे तो शुभ। सूर्य का होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ, यदि चन्द्र अपने होरा में हो या दूसरे ग्रह सूर्य के होरा में होकर उसे देखे तो अशुभ फल होता है।

द्रेष्काण कुण्डली में भी ऐसा ही विचार

जिस द्रेष्काण में चन्द्र हो उसी द्रेष्काण राशि के स्वामी से चन्द्र देखा जाय तो शुभ फल होता है।

उसी प्रकार द्वादशांश त्रिशांश व नवांश आदि में विचारना।

द्वादशांश का फल— द्वादशांश फल के लिए पहले जो मेषादि राशि गत चन्द्र पर दृष्टि का फल कहा है वही फल इसमें भी विचारना।

नवांश में फल— इसी प्रकार चन्द्र पर जो सूर्यादि ग्रहों का फल कहा है वही फल नवांश राशि के अनुसार भी समझना।

वचन का पालन, समय की पाबंदी, नियमित दिनचर्या, शिष्टाचार, आहार-विहार की नियमितता, व्यवस्था आदि कितनी ही बातें ऐसी हैं जो सामान्य प्रतीत होते हुए भी जीवन की सुव्यवस्था के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पाश्चात्य देशों में इन छोटी बातों पर बहुत ध्यान दिया जाता है। फलस्वरूप भौतिक उन्नति के रूप में उसका लाभ भी उन्हें प्रत्यक्ष मिल रहा है। स्वास्थ्य समृद्धि और ज्ञान की दृष्टि से पाश्चात्य देशों ने जो उन्नति की है, उसमें इन छोटी बातों का बड़ा योग है। इन बातों के साथ-साथ यदि आध्यात्मिक सद्गुणों का समन्वय हो तो फिर सोना और सुगन्धि वाली कहावत ही चरितार्थ हो जाती है।

अध्याय-10

शरीर, माता-पिता, पत्नी, पुत्रादि विषयक विचार

लग्न में पापयुक्त चन्द्र शीतरोग उत्पन्न करता है। धन भाव में चन्द्र मंगल चर्मरोग व दरिद्रता प्रदान करते हैं। धन भाव में सूर्य बुध लोगों की सेवा करने में तत्परता देता है। द्वितीय भाव में गुरु शुभ वाक्पटुता, चन्द्र कुटुम्ब सौख्य, बुध धन समृद्धि, प्रदान करता है।

तृतीयेश का शुभ ग्रहों से सम्बन्ध, मंगल का शुभ ग्रहों से सम्बन्ध, तृतीयेश और मंगल का योग इन योगों में भ्रातृ सुख प्राप्त होता है। तृतीयेश अष्टम में यात्रा हो, तो मृत्यु अथवा आकस्मिक दुर्घटना प्रदान करता है। तृतीय में चन्द्र पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो, तो बड़े भाई का, शनि हो, तो छोटे भाई का, मंगल हो, तो बड़े भाई का नाशक होता है। तृतीयेश चन्द्रमा से युक्त हो, तृतीय में बुध हो या भ्रातृ कारक ग्रह शनि से युक्त हो, तो पहले 1 बहन और पीछे एक भाई तीसरा उत्पन्न हो कर मर जाये। चतुर्थ में सूर्य, शनि उद्विग्न व दुःखी रखते हैं। चतुर्थ में बुध हो, तो पंडित हो, बुध, शुक्र चतुर्थ में हो, तो सर्वदा सुखी रहे। चन्द्र से तीसरे घर में शुक्र हो अथवा शुक्र से तीसरे घर में चन्द्र हो अथवा चन्द्र पर शुक्र की दृष्टि हो, तो बहुत सुखी रहे और वाहन प्राप्ति हो।

मंगल चतुर्थ में हो या चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि हो अथवा चतुर्थेश मंगल के घर में हो, तो स्थावर सम्पत्ति मिले। चतुर्थेश लग्न में लग्नेश चतुर्थ में हो, तो स्थावर सम्पत्ति मिले चतुर्थेश धन भाव में हो, तो स्थावर सम्पत्ति मिले। चतुर्थ में सूर्य शनि, नवम में चन्द्र लाभ में मंगल हो, तो चतुष्पद् लाभ हो। पञ्चमेश सप्तम में हो, तो चोरों द्वारा धन हानि हो, पञ्चमेश दशम में हो, तो सन्तान को कीर्त्ति व मान मिले। पञ्चम में पापग्रह हो और गुरु से पञ्चम में शनि हो, तो प्रथम स्त्री से सन्तान प्राप्त नहीं हो, दूसरी व तीसरी से सन्तान प्राप्ति। पञ्चम में शनि हो तथा पापदृष्ट हो, तो उदर में पीड़ा रहे। षष्ठ में स्वक्षेत्री शुक्र होने से सिद्धि प्राप्त हो, षष्ठेश षष्ठ में हो, तो नौकर अच्छे मिलें। षष्ठेश के चतुर्थ में स्थित होने से पूर्वजों की सम्पत्ति की प्राप्ति नहीं हो। षष्ठ भाव का सम्बन्ध मंगल से होने पर ऑपरेशन या एक्सीडेन्ट हो। षष्ठेश धन भाव में होने से रोग द्वारा अथवा नौकरों द्वारा धन हानि हो। षष्ठ में शुभ ग्रह सदा रोगी रखते हैं। सप्तम भाव में सूर्य की युति वा दृष्टि भाग्यवान् पत्नी की प्राप्ति करवाता है। सप्तम भाव का शुक्र से सम्बन्ध हो, तो स्त्री द्वारा धन लाभ हो। सप्तम भाव को चन्द्र देखता हो व सप्तम में हो, तो 2, 3 अवसर चूकने के बाद विवाह हो। शनि के घर में शुक्र हो, सप्तम या सप्तमेश हो, शनि या सूर्य का सम्बन्ध हो, तो विलम्ब से विवाह हो अथवा एक जगह सम्बन्ध तय होकर नहीं हो दूसरी जगह हो ।

2, 7, 9 भाव के स्वामी और शुक्र शुभ या अशुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो दो बार विवाह हो।

दशम में सूर्य और मंगल चतुर्थ में हो, तब पर्वत से गिर कर मृत्यु।

शनि चौथे, चन्द्र सातवें और मंगल दसवें भाव में होने पर कूप में गिरकर मृत्यु।

द्विस्वभाव राशि में सूर्य, चन्द्र स्थित हों, तो जल में डूबकर मृत्यु।

पञ्चम या नवम भाव में पाप ग्रह की राशि में सूर्य से पिता की मृत्यु, भौम से—

भाई की, बुध से मामा की, गुरु से नानी की, शुक्र से नाना की मृत्यु हो, शनि से स्वयं को कष्ट हो।

नवम में चन्द्र उच्चराशिगत शुभग्रह से दृष्ट हो अथवा नवम में चन्द्र, बुध अथवा मंगल में दृष्ट हो, तो राजा के तुल्य हो।

नवम में सूर्य, चन्द्रयुति नेत्ररोग, धनी, सूर्य मंगल की युति दुःखी, राजप्रिय।

सूर्य बुध से सदा दु:खी, सूर्य गुरु से पिता का प्यारा, धनी, सूर्य शुक्र से रोगी, सूर्य शनि से रोगी, पिता को कुक्षिरोग होता है।

नवम भाव में चन्द्र मंगल से दानी, माता विरोधी, चन्द्र बुध से वक्ता, शास्त्रज्ञ।

चन्द्र गुरु से गंभीर बुद्धि, धनवान्, चन्द्र शुक्र से कुलटापति, चन्द्र शनि से कर्महीन मूर्ख,

मंगल बुध से शास्त्रज्ञ भोगी, मंगल गुरु से चतुर विद्वान्, धनी, बुध शुक्र से रतिप्रिय विद्वान्, गायक,

मंगल शुक्र से दो स्त्री, विदेशवासी, मंगल शनि से विधर्मी। बुध गुरु से विद्वान्, धनी,

बुध शनि से रोगी, धनी प्रियवक्ता, गुरु शुक्र से दीर्घायु, धनी गुरु शनि से रत्न व्यापारी।

शुक्र शनि से राज सम्मान सुखी होता है।

नवम भाव से ग्रह उच्च राशि में अथवा वर्गोत्तमी हो, तो निम्न फल होता है।

सूर्य— राजचिह्नों के क्रय-विक्रय से कृषि, नौकरी, दुष्टकर्म, लेखक, वैद्य, डाक्टर, रुपया बांटने का काम, भ्रमण करता हुआ क्रय-विक्रय से, झगड़े फिसाद से, प्रेत कार्य से लाभ होता है।

चन्द्र— शंख के क्रय-विक्रय से, अन्य स्त्री संसर्ग से, कृषि से, वस्त्र से, राजा की मित्रता से, विप्रविरोध से धन लाभ होता है।

मंगल— स्वर्ण सम्बन्धी, मित्र, बन्धु विवाह शत्रु कर्म से लाभ होता है।

शनि का फल मंगल जैसा ही होता है। बुध उच्च का अध्यापक के कार्य से लाभ,

नवम में बुध शत्रु गृही हो, तो मुकदमे द्वारा किसी से लाभ, बुध मित्र गृही हो, तो लेखन कार्य, शिल्प कार्य, धनी स्त्री से लाभ, अतिशत्रु राशि में होने से विद्याहीन, व्यापार में हानि, कुष्ट तथा पथरी रोगे ग्रसित। नवम में गुरु उच्च राशि व वर्गोत्तम, राशि में प्रतापी, धनी, किसी संस्था का प्रधान, मित्र गृही से अध्यापक, शुक्र उच्च का, सेनाध्यक्ष, मन्त्री, शिक्षा सम्बन्धी कार्य, यज्ञ कार्य से लाभ। शुक्र स्वगृही नवम में नौकरी से सेनाधिकारी कृषि और विद्या से, जलाशय से लाभ देता है।

सूर्य छठवें या आठवें में शुभयुक्त दृष्ट न हो, तो पिता को अरिष्ट हो।

माता पिता दोनों के अरिष्ट होने के योग

चतुर्थेश और नवमेश दुष्ट स्थान, (6,8,12) में हो। सूर्य पञ्चम में पिता को, चन्द्र पञ्चम में माता को, पञ्चम में सूर्य तुला राशि का पापयुत दृष्ट हो, तो पिता को अरिष्ट, नीच या क्षीण, चन्द्र पञ्चम में माता को अरिष्ट करता है। सूर्य और चन्द्र नवम चतुर्थ भाव में माता-पिता दोनों को अरिष्ट। जन्मलग्न या चन्द्र से नवम में शनि पापयुक्त दृष्ट हो, माता पिता को अरिष्ट। सूर्य और चन्द्र द्विस्वभाव राशि में केन्द्र में हो, तो माता पिता की दाहक्रिया कुछ दिन बाद में होती है। नवमेश स्थिर या द्विस्वभाव राशि में हो, तो मृत्यु के समय पुत्र उपस्थित रहे। नवमेश और चतुर्थेश लग्न के भोग्यांश से, सप्तम के भुक्तांश के मध्य हो, तो पुत्र के परोक्ष में माता पिता की मृत्यु हो पञ्चमेश सप्तम से लग्न के मध्य में हो तब भी पुत्र के परोक्ष में मृत्यु।

चतुर्थ भाव में पूर्ण चन्द्र या बलवान् शुक्र, सप्तम में या दशम में बुध हो, तो माता का सुख मिले। मातृ कष्ट योग— लग्न से चतुर्थ मंगल हो। सप्तम में सूर्य मंगल शनि हो, सप्तम में क्षीण चन्द्र राहु या केतु हो। क्षीणचन्द्र नीच नवमांश में लग्न से चतुर्थ में पापी हो। चतुर्थ में पापग्रह हो, चन्द्र पापयुक्त दृष्ट हो या चन्द्र से अष्टम में पापग्रह हो, तो माता को कष्ट हो। चतुर्थ में शनि, राहु का योग माता को वातजव्याधि से पीड़ा हो। चतुर्थ में शनि या सूर्य चन्द्र हो, तो माता रोगी रहे। चतुर्थ में चन्द्र सूर्य शनि हों, तो माता रोगी रहे।

चतुर्थ में बलवान् सूर्य या मंगल हो, तो पित्तज्वर, फोड़े फुंसी का रोग हो।

माता के दीर्घायु योग— चतुर्थ से केन्द्र में बली चन्द्र शुक्र हो।

चन्द्र बलवान् हो या शुभ ग्रहयुक्त हो, चतुर्थ से, केन्द्र से शुभग्रह हो।

चतुर्थेश के नवमांश का स्वामी केन्द्र में हो या बलवान् चन्द्र से केन्द्र में हो।

चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह, चतुर्थ भाव कारक शुभयुत दृष्ट, नवमेश बली हो, या चतुर्थेश बलवान् शुभ ग्रह हो, तो माता दीर्घायु होती है। माता की मृत्यु—

शनि पाप राशि में पापयुत दृष्ट हो। चन्द्रमा शुभ दृष्टि रहित 3 पाप ग्रहों से दृष्ट हो, लग्न में गुरु, द्वितीय में मंगल, तृतीय में शुक्र हो। सिंह का मंगल, कन्या का शुक्र, तुला का शनि, मिथुन का राहु, यह योग माता का मृत्युकारक है।

चतुर्थेश अस्त हो और चतुर्थ भाव को न देखता हो, तो पिता का देश त्याग कर अन्यत्र जाये।

4, 10, 12 भाव में पाप ग्रह हो, माता पिता को त्याग कर अन्यत्र चला जाये।

लग्नेश, नवमेश और लग्न चर राशि के नवांश और चर राशि में हो, तो पिता के साथ विदेश जाता है।

लग्न से 12वें स्थान में सूर्य हो तथा शनि हो तथा सप्तम में क्षीण चन्द्र हो, तुरन्त पिता से वियोग।

पिता यशस्वी— नवमेश दशम में दशमेश नवम में शुभ दृष्ट हो।

पञ्चमेश लग्नेश से युक्त पञ्चम या नवम हो या नवमेश के साथ लग्न में हो।

नवमेश केन्द्र में गुरु से युक्त हो। नवमेश नवम भाव से 2, 4 भाव में नीच राशि के मंगल के साथ हो, पिता निर्धन हो। पिता की राशि से दशम राशि में जन्म हो, तो पिता के समान गुण धर्म हो। चतुर्थ स्थान में सूर्य हो, तो पिता का धन प्राप्त करे। लग्न से दशम में सूर्य हो अथवा जातक और पिता का जन्म एक राशि में हो, तो पिता का धन प्राप्त करे।

पिता व्यभिचारी— नवम भाव में षष्ठेश और चतुर्थेश का योग हो।

चतुर्थ भाव में नवमेश चतुर्थेश का योग हो, दशम में दशमेश षष्ठेश का योग हो, लग्नेश पाप ग्रहयुक्त द्वितीय भाव में हो। पिता धूर्त— नवम भाव में चतुर्थेश षष्ठेश का योग हो।

चतुर्थ में नवमेश और चतुर्थेश एकत्र हो। यदि नवमेश अष्टम हो या चर राशि में हो, तो पिता दूर देश में मृत्यु को प्राप्त हो।

पिता की मृत्यु के योग-

लग्न से नवम या दशम में पाप दृष्ट सूर्य हो। सप्तम में पापयुत दृष्ट सूर्य हो। 5, 10 स्थान में पापदृष्ट सूर्य हो। व्यय में सूर्य शनि, सप्तम में क्षीण चन्द्र हो। अष्टम में सूर्य मंगल शनि हो।

11वें स्थान में शनि मंगल राहु हो। शनि मंगल के मध्य में सूर्य हो। 6, 8 भाव में पाप दृष्ट सूर्य अथवा नीच का सूर्य हो। सूर्य और नवमेश दुष्ट स्थान में हो। सूर्य और नवमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो। लग्न में गुरु धन भाव में शनि सूर्य मंगल बुध हो, तो विवाह के समय पिता की मृत्यु हो। दशम में मंगल शत्रु क्षेत्र में हो, तो पिता की मृत्यु हो। सूर्य अष्टम में हो अष्टमेश नवम में हो, तो 1 वर्ष के अन्दर पिता की मृत्यु हो।

लग्नेश अष्टम में अष्टमेश सूर्य के साथ हो, तो 3 या 12वें वर्ष में। नवमेश नीच राशि और नीच नवांश में हो और नवम में व्ययंश हो 3, या 16वें वर्ष में। चन्द्रमा से 9वें भाव में शनि और सूर्य के साथ राहु हो 7, या 19 वर्ष में। नवम में अष्टम भाव में राहु और नवम में सूर्य हो 16वें 18वें वर्ष में। अष्टम भाव से 7वें शनि, शनि से 7वें सूर्य 21, 26, 30 वर्ष में। शनि मंगल राहु 9वें या 11वें भाव में हो, तो इन की दशा, अन्तर्दशा में पिता की मृत्यु।

लग्न या चतुर्थ में राहु और शनि की राशि में गुरु हो, तो 23वें वर्ष में पिता की मृत्यु।

सूर्य से 1, 2, 7, 12 भाव में जो पापग्रह हो उसकी दशा अन्तर्दशा में पिता को कष्ट हो।

चन्द्रमा मीन राशि में पापदृष्ट, सूर्य से चन्द्रमा नवम स्थान में। इन दोनों में पिता की मृत्यु जल में हो।

चन्द्र अस्त होकर दुष्ट स्थान में हो या नीच राशि व नीच नवमांश हो, तो माता की मृत्यु शीघ्र हो।

मातृ कष्ट कारक योग— चतुर्थ में क्षीण चन्द्र पापयुक्त। लग्न में गुरु दूसरे शनि तीसरे राहू।

सप्तम में पापयुक्त दृष्ट चन्द्र। नवम व दशम स्थान में चन्द्र मंगल का योग। शनि मंगल के मध्य चन्द्र पाप ग्रहयुक्त चन्द्र पञ्चम में। लग्न में चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में हो। कन्या यदि माता के नक्षत्र में उत्पन्न हो, षष्ठ भाव में चन्द्र, अष्टम में शनि लाभ में मंगल। क्षीण चन्द्र से 5वें, 8वें पाप ग्रह हों।

चतुर्थ में सूर्य, पञ्चम में चन्द्र। लग्न से 3, 7 भाव में सूर्य, लग्न में मंगल। चन्द्र से सप्तम शनि, अष्टम में गुरु।

माता की मृत्यु— लग्नेश चतुर्थेश, नवमेश केन्द्र या कोण में हो, तो उन की दशा अन्तर्दशा में माता से पुत्र के संबंध श्रेष्ठ, यदि चतुर्थेश पापयुक्त, राहु सूर्य शनि एक हों। लग्नस्थ चन्द्र राहु व केतु से युक्त हो। चतुर्थ में मंगल शनि, राहु और चन्द्र से दृष्ट हो। षष्ठेश चतुर्थ में मंगल के साथ हो, तो माता से पुत्र के व्यवहार ठीक नहीं रहते।

सप्तम में सूर्य— वन्ध्या। क्षीण चन्द्र— व्यभिचारिणी। सप्तम में राहु— पति व्यभिचारी।

सप्तम में बुध— सुपुत्रा। सप्तम में पूर्ण चन्द्र— गुणवती पुत्रवती। बलीशुभ सप्तम में— सौभाग्यवती।

विवाह समय— शुभयुक्त सप्तमेश हो, तो सप्तमेश की दशा अन्तर्दशा में। लग्न से द्वितीयेश की राशि स्वामी की दशा में। सप्तमेश से युक्त तथा सप्तम राशि में पापग्रह की दशा अन्तर्दशा में।

लग्नेश जहाँ हो, उसके नवमांशेश के स्थान में गोचर में गुरु आये। चन्द्र और शुक्र में जो बली हो, उसकी दशा में, उसके त्रिकोण में गोचर में जब गुरु आये। जो ग्रह सप्तम भाव में हो या जो सप्तम को देखता हो या सप्तमेश इन में जो बली हो उसकी दशा अन्तर्दशा में। सप्तम भाव सप्तमेश व शुक्र से त्रिकोण में या सप्तम में गोचर में गुरु आता है उस समय। अष्टम भाव से सप्तम शुक्र हो और अष्टमेश मंगल से युक्त हो, तो 22, 27 वर्ष में। (नवम भाव से नवम में शुक्र हो, इन दोनों में से किसी में राहु हो, तो 31 या 33 वर्ष में।) नवम भाव से सप्तम में शुक्र हो, तो और शुक्र से सप्तम में सप्तमेश हो 27 या 30 वर्ष में विवाह हो। चन्द्र शुक्र का नवम पञ्चम योग जब हो, तब विवाह हो।

विवाह समय में शनि की साढ़ेसाती हो, तो 1, 4, 5, 8, 10 इन राशियों में शनि हो, तो उस समय विवाह होना कठिन है। 1, 4, 5, 8, 10 राशि जन्म के चन्द्र से चौथे या आठवें पड़ी हो, तो उस राशि पर शनि जाने पर विवाह समय हो, तो गड़बड़ी निश्चित हो।

विवाह दशा— शुक्र से सप्तमेश की जो दिशा हो। सप्तम में यदि ग्रह हो, उस भाव की राशि की जो दिशा हो या सप्तम पर दृष्टि डालने वाले ग्रह की दिशा में विवाह होता है।

शुक्र, चन्द्र व लग्न में जो बली हो, उससे सप्तमेश की दिशा में। शुक्र से सप्तम भावगत से त्रिकोण की राशि के स्वामी की दिशा। सप्तम ग्रह और सप्तमेश और शुक्र में जो बली, उसकी राशि दिशा ज्ञात करना। विवाह की उपरोक्त दिशा सूचक राशि स्थिर हो, तो समीप में चर हो, तो दूर में द्विस्वभाव हो, तो कुछ दूर में विवाह हो।

सप्तमेश त्रिकोण में पापग्रह के साथ हो और शुक्र या द्वितीयेश पापयुक्त हो, तो कुछ थोड़ी दूर में। 12, 2, 9 भाव में पापग्रह हों और सप्तम भी पापयुक्त दृष्ट हो, दूरी पर विवाह हो, शुभ ग्रह दृष्ट शुक्र सप्तम में हो, तो वृद्धावस्था में स्त्री धन, पुत्रादि का सुख प्राप्त हो। सप्तम में शुक्र का वर्ग हो, पापग्रह की दृष्टि हो, तो विवाह नहीं होता। 1, 7, 12 भाव में पापग्रह हों और क्षीण चन्द्र पापग्रह की राशि का पञ्चम हो, तो विवाह नहीं होता। लग्न या

चन्द्र से सप्तम भाव अपने स्वामी अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट न हो, तो विवाह नहीं होता, लग्नेश नीच व शत्रु राशिगत हो या शुक्र के नवमांश में हो, तो स्त्री की हानि।

सप्तम व शुक्र के साथ जितने ग्रह हों, उतनी स्त्री हों। सप्तमेश लग्न में हो, लग्नेश 9, 12 भाव में हो, तो दो बार विवाह हो। सप्तम में पापराशि पापग्रहयुत दृष्ट हो, सप्तमेश नीच में हो अथवा शुक्र नीच राशि व नीच नवमांश में पाप दृष्ट हो, तो दो बार विवाह हो। 2, 7 भाव के स्वामी अपने-अपने स्थान में हों, तो एक विवाह हो। दो स्त्री का योग— लग्न से सप्तम में दो पापग्रह हों। सप्तमेश से दृष्ट मंगल सप्तम में हो। सप्तम में बुध शनि का नवमांश हो सप्तमेश नीच राशि में या पापग्रह की राशि में पापयुक्त दृष्ट हो। सप्तमेश या द्वितीयेश निर्बल हो और सप्तम व द्वितीय भाव पापग्रह की राशि में पापग्रह से दृष्ट हो। द्वादश में मंगल 7, 8 भाव में पापग्रह तथा सप्तम भाव अपने स्वामी से दृष्ट न हो। अष्टम में शनि, सप्तम में मंगल हो। सप्तम में शनि बुध लाभ में दो पापग्रह हों। तीन स्त्री का योग— गुरु अपने ही नवमांश में हो। 2, 7 भाव में पापग्रह 2, 7 भाव के स्वामी पर पापग्रह की दृष्टि हो। 1, 2, 8 में पापग्रह हों, सप्तमेश नीच का या अस्त हो। षष्ठ में केतु द्वितीय सप्तम भाव पापयुक्त दृष्ट हो। सप्तम में मंगल शुक्र शनि हो। लग्नेश अष्टम में हो। द्वादशेश और द्वितीयेश के स्वामी तृतीय भाव में गुरु या नवमेश की दृष्टि हो, तो अनेक स्त्रियाँ हो।

विधवा योग— अष्टम में पापग्रह शुभग्रहों से अदृष्ट हो। लग्न से अष्टम में क्रूर ग्रह नीच, शत्रु, व पाप वर्ग में हो। स्त्री के लग्न से 2, 4, 7, 8, 12 भाव में मंगल हो। लग्न या चन्द्र से 7, 9 भाव में पापग्रह हों। मंगल के घर में राहु हो या 7, 8, 12 स्थान में राहु हो। सप्तमेश अष्टम में, अष्टमेश सप्तम में हो, पापयुक्त व दृष्ट हो, तो निश्चय विधवा हो। सप्तमेश या अष्टमेश 6, 12 घर में पाप दृष्ट युक्त हो। लग्न में राहु 8, 12 स्थान में मंगल पापग्रह युक्त हों। सप्तम घर में पाप राशि में शनि हो सप्तम में तीन पापग्रह हो। 6 या 8 घर में चन्द्र हो। सूर्य या मंगल उच्च व स्वराशि का लग्न या सप्तम में हो। पुरुष की कुण्डली में स्त्री, नाश के योग स्त्री के वैधव्य योग को नष्ट कर देते हैं। अष्टम स्थान पापग्रह रहित और द्वितीय स्थान शुभग्रह रहित हो, तो पति से स्त्री की मृत्यु।

अष्टम भाव में शुभ व अशुभ ग्रह स्त्री की कुण्डली में शुभफल प्रद नहीं होते।

भाग्यवती पति प्रिया— स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न नवम व चन्द्र राशि का स्वामी शुभग्रहयुक्त केन्द्र त्रिकोण में हों, जन्म लग्न में बुध या शुक्र हो। जन्म लग्न में चन्द्र बुध शुक्र स्थित हों। 1, 7, 8, 9 केवल शुभग्रह हो। कर्क व धनु लग्न का जन्म पति पुत्र का सुख देकर दरिद्र योग भी देता है। लग्न से सप्तम में मंगल का नवमांश हो, उस पर बुध और सूर्य की दृष्टि हो, तो योनि में रोग हो या सप्तम में मंगल का नवमांश हो, उस पर शनि का दृष्टि हो। पञ्चम में सूर्य 1 पुत्र, चन्द्र 2 कन्या, मंगल 3 पुत्र, बुध 4 कन्या, गुरु 5 पुत्र, शुक्र 7 कन्या, राहु 1 पुत्रप्रद होता है। नवम में 6 कन्या, क्रूरग्रह चतुर्थ में हो, तो बहुत पुत्र हों। 2, 5, 6, 8 राशियों में शुभग्रह में बहुत पुत्र। लग्न में शनि मंगल हों, पञ्चम में पापग्रह हो, तो सन्तान का अभाव। सप्तम में सूर्य या राहु से सन्तान का अभाव। अष्टम में गुरु या शुक्र सन्तान बाधक होता है। सप्तम में मंगल शनि से दृष्ट हो, तो सन्तान हानि। अष्टम भाव में बुध गुरु या शुक्र गर्भ नष्ट करता है। सप्तम में सूर्य सन्तान बाधक होता है। मिथुन कर्क कन्या राशि अष्टम में बुध चन्द्रयुक्त का वन्ध्या योग कारक है। राजलक्ष्मीयुक्त योग—

सप्तम में गुरु या शुक्र बलवान् हो 1, 2, 4, 5, 9, 10, 11 बलवान् दशमेश हो।

केन्द्र में शुभग्रह हो 3, 6, 9, 12 भाव में पापग्रह, सप्तम में चर राशि हो। लग्न में उच्च का बुध गुरु लाभ में हो। षड्वर्ग बली गुरु केन्द्र में चन्द्र से दृष्ट हो। कर्क लग्न में सप्तम में सूर्य गुरु से दृष्ट हो। लाभ में चन्द्र बुध शुक्र सप्तम में गुरु से दृष्ट हो। सप्तम स्थान में 3 शुभग्रह हों। षड्वर्ग में 3, 4, 5 संख्या शुभग्रहयुक्त हों।

सप्तमेश बुध के नवमांश में बुध से दृष्ट हो, तो वेश्यातुल्य स्त्री हो। सप्तम में मंगल चन्द्र शुक्र हो, तो पति की आज्ञा से परपुरुषगामिनी हो। बलवान् पञ्चमेश नवमेश षष्ठेश से युक्त वा दृष्ट हो, तो और शुभग्रह से भी दृष्ट हो, तो

परपुरुष से सन्तान प्राप्ति हो। पापग्रहयुक्त सप्तमेश द्वितीय भाव में मंगल से दृष्ट हो, तो परपुरुष से सन्तान हो। सप्तम में मंगल या शनि का वर्ग हो और मंगल शनि से दृष्ट हो, तो स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी हों। चन्द्र शनि मंगल एकत्र हों, तो पति-पत्नी दोनों व्यभिचारी हों। सप्तम में चन्द्र मंगल शनि का योग पति-पत्नी दोनों को व्यभिचारी बनाता है।

सप्तमेश बुध पापग्रहयुक्त नीच का या शत्रुराशि में 6, 8 भाव में पापग्रहों के बीच में हो, तो वह स्त्री पति को मारने वाली हो। छठे मंगल सप्तम राहु अष्टम शनि हो, तो स्त्री का नाश हो।

सप्तम में वृश्चिक का शुक्र या सप्तम में वृष का बुध या सप्तम में नीच का गुरु या सप्तम में मीन का शनि या मंगल हो, तो स्त्री का विनाश हो। द्वितीयेश और तृतीयेश बली हो, तो पहले पति की मृत्यु हो। सप्तम में चन्द्र राहु हो, तो जल में डूबकर मरे। शुक्र से चौथे आठवें पापग्रह हो, तो स्त्री जलकर मरे। वृष, तुला लग्न में कुम्भ का नवमांश हो, तो स्त्री अन्य स्त्री से मैथुन करे। सप्तमेश केन्द्र में शुभग्रहयुक्त हो, तो स्तन मोटे हों। मंगल की राशि के लग्न में चन्द्र और बुध हों, तो स्त्री तत्त्वज्ञानी हो। लग्न में स्वराशि का मंगल बुध के साथ हो भोग करने वाली स्त्री हो।

शुक्र शनि परस्पर एक दूसरे नवमांश में और दोनों की परस्पर दृष्टि हो, तो कामाग्नि से संतप्त हो।

व्यभिचारिणी योग— मंगल शुक्र के नवमांश में शुक्र मंगल के नवमांश में। 1, 8, 10, 11 राशि के लग्न में चन्द्र शुक्र पापग्रह से दृष्ट हो। लग्न में सूर्य मंगल राहु शुक्र हों। चतुर्थ भाव में पापग्रह हों।

लग्न और चन्द्र विषम राशि में हो पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो। जन्म लग्न या सप्तम में चन्द्र शुक्र मंगल हो।

सप्तम में चन्द्र शुक्र हो। चन्द्र, शनि मंगल के नवांश का सप्तम में हो। तुला लग्न में बुध का नवमांश हो।

शुक्र के नवमांश में शनि और शनि के नवमांश में शुक्र हो, तो स्त्री से स्त्री सम्भोग करे।

विषकन्या योग— आश्लेषा कृत्ति का शतभिषा नक्षत्र रवि शनि और मंगलवार 2, 7, 12 तिथि इन तीनों के योग में उत्पन्न हो, तो विषकन्या योग बनता है। यह योग अत्यन्त अशुभ होता है।

लग्न या चन्द्र से सप्तम में सप्तमेश या शुभग्रह से विषकन्या योग नष्ट हो जाता है। स्त्री की कुण्डली में लग्न या चन्द्र से सप्तम में सूर्य हो, तो पति उसका त्याग करे। सप्तम में सूर्य मंगल या शनि निर्बल हो शुभग्रह से दृष्ट हो, तो पति त्याग कर दे। पापयुक्त मंगल 1, 4, 9, 12 स्थान में पतित्यक्ता। लग्न विषम राशि की हो।

शुक्र बुध चन्द्र बलहीन हो, पुरुष ग्रह बलवान् हो, शनि निर्बल हो, तो अनेक पति हों। लग्न या चन्द्र से सप्तम में चरराशि से पति प्रवासी, लग्न या चन्द्र से सप्तम में पापदृष्ट मंगल हो, तो बालविधवा, सप्तम में पापग्रह।

पापग्रह से दृष्ट बालविधवा, सप्तम में 2, 3 पापग्रह शुक्र से दृष्ट हो, तो शीघ्र ही विधवा हो। सप्तम में शनि पापदृष्ट हो, तो वृद्धावस्था तक क्वारी रहे।

पतिव्रतास्त्री— बलवान् सूर्य सप्तमेश शुभयुक्त शुभ नवमांश में हो।

लग्नेश और शुक्र बलवान् हो और गुरु से युक्त दृष्ट हो। केन्द्रस्थ सप्तमेश शुभग्रहों से दृष्ट शुभ ग्रह की राशि या नवमांश में हो। सप्तम में गुरु हो। सप्तमेश सूर्य या शुक्र हो शुभग्रह से दृष्ट हो। सप्तमेश मंगल मित्रग्रही व उच्चराशिगत शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट।

शुक्र की राशि में बलवान् गुरु केन्द्रकोण में हो। सप्तमेश शनि बलवान् गुरु से दृष्ट हो। शनि या मंगल कर्क में सप्तम भावगत हो।

स्त्री पतिव्रता नहीं हो— दशमेश दशम में या चतुर्थ में हो। सप्तम या लग्न में चन्द्र शत्रुग्रही नीचस्थ या अस्तंगत हो। स्त्री सुन्दर व गुणवती— सप्तम भाव सप्तमेश व सप्तमभाव कारक ग्रह गुरु शुक्र से दृष्ट हो।

स्वग्रही या उच्च का मंगल शुभग्रह से दृष्ट सप्तम में हो। शुभग्रहयुक्त या दृष्ट पूर्ण चन्द्र सप्तम में हो।

सप्तम में शुक्र शुभ राशि का या शुभग्रह से दृष्ट हो। पुरुष के चन्द्र से सप्तम में स्थित या सप्तम को देखने वाले ग्रह की राशि में उत्पन्न स्त्री पतिप्रिया और सुन्दर होती है।

सप्तमभाव सप्तमेश सप्तम का कारक ग्रह पापयुक्त दृष्ट हो, तो स्त्री रूप व गुण रहित हो।

सप्तमेशयुक्त शनि सप्तम में हो स्त्री अच्छी हो। चन्द्रमा से दृष्ट गुरु नवम में हो, तो प्रियकान्ता हो। सप्तम भाव सूर्य से युक्त या दृष्ट हो, तो विदुषी पत्नी हो। सप्तम में बुध हो, तो स्त्री पढ़ी लिखी व चतुर हो। **निन्दनीय स्त्री योग**— सप्तम में शनि, लग्न से सप्तम में पापग्रह, सप्तम में मंगल, निर्बल ग्रह सप्तम में, सप्तमेश चन्द्र पापग्रहयुक्त या दृष्ट या पापग्रह के नवमांश में, सप्तमेश शनि पापयुक्त नीचराशि नीच नवमांश में शत्रुराशि में पापयुक्त दृष्ट हो, शुक्र, शनि के नवमांश में, शनि से युक्त, शनि की राशि में पापयुक्त हो, स्त्री रोग युक्त हो।

सप्तम में मंगल, क्रूरग्रह सप्तम में राहू शनि का योग सप्तम में, 5, 7, 9 भाव में सूर्य शुक्र की हो।

सप्तम में मंगल शुक्र के नवमांश में तथा सप्तमेश पञ्चम में, 6वें मंगल सातवें राहु आठवें शनि,

नपुंसकस्त्री— सप्तम में शनि राहु, सप्तमेश षष्ठ भाव में शुक्र के साथ हो।

बांझस्त्री— शनि मंगल जलराशि में षष्ठ भाव में, सप्तम में सूर्य शनि दशम में चन्द्र गुरु की दृष्टि रहित हो, सप्तम में शुक्र4, 8, 12 राशि में और शनि लग्न में, चतुर्थ या षष्ठ भाव में मंगल शनि का योग हो, तो स्त्री बांझ होती है। शनि षष्ठ भाव में और मंगल चतुर्थ भाव में हो, तो गर्भवती स्त्री की प्राप्ति हो। सप्तमेश या सूर्य पापग्रह की राशि या नवमांश हो, तो स्त्री शराब पीने वाली हो। सप्तमेश क्रूर नवमांश में हो, तो स्त्री शराबी हो। लग्न या सप्तम में सूर्य के नवमांश में चन्द्र हो, तो स्त्री कुलटा हो। तृतीय में शनि चन्द्र दृष्ट हो, तो स्त्री दुराचारिणी हो।

अनेक स्त्रीयोग— सप्तमेश उच्चराशि स्वराशि या मित्रराशि का या दशमेशयुक्त केन्द्र या त्रिकोण में हो। लाभेश सप्तमेश की युति हो या परस्पर दृष्टि हो और बली हों या दोनों त्रिकोण में हों। सप्तम भाव में चन्द्र शुक्र दोनों युक्त या सप्तम पर दोनों की दृष्टि हो।

सप्तम में चन्द्र या शुक्र की राशि पर चन्द्र की दृष्टि हो। गुरु कर्क राशि के नवमांश में हो।

शुभग्रह दृष्ट सप्तमेश शनि या शुक्र की राशि में हो। चन्द्र बुध या गुरु, सप्तम में हो।

बलवान् शुक्र सप्तम में हो। सप्तम में मंगल हो या सप्तम में सूर्य हो। चन्द्र गुरु की दृष्टि सप्तम में हो या इनका नवमांश सप्तम में हो। सप्तमेश से दृष्ट बलवान् सूर्य सप्तम में हो।

स्त्रीसुख विचार— सप्तमेश अपनी राशि व उच्चराशि में हो। शुभग्रह सप्तम में हो।

सूर्य सप्तम में हो। लाभ में चन्द्र गुरु हो। लग्न या चन्द्र से सप्तमभाव से सप्तमभाव शुभग्रह से दृष्ट हो।

स्त्री व पुरुष की जो राशि हो, उन राशियों के नवमांश के अधिपति में परस्पर मित्रता हो।

उपर्युक्त योगों में स्त्री सुख की प्राप्ति होती है। **स्त्री सुख में हानि के योग**—

व्यय या सप्तम में पापग्रह हों। सप्तमेशत्रिक (6, 7, 12 भाव) में हो पापराशि या पापग्रह दृष्ट या नीच राशि का हो। सप्तम में शनि सूर्य से युक्त दृष्ट हो। 2, 7 भाव में पापग्रह हों। शुक्र निर्बल हो—

सप्तमेश द्वादश में हो और चन्द्र सप्तम में हो। सप्तम भाव व सप्तमेश पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

लग्नेश सप्तमेश में षडाष्क हो।

सप्तम में व स्त्री शनि या मंगल हो। दाम्पत्य प्रेम योग— लग्नेश और सप्तमेश में मित्रता हो।

लग्नेश लग्न में सप्तमेश सप्तम में या दोनों लग्न में हों, स्त्री पुरुष की जन्म राशि एक हो।

स्त्री पुरुष में शत्रुता के योग— शनि से दृष्ट मंगल सप्तम भाव में। सप्तमस्थ राहु पापग्रह दृष्ट हो।

शुक्र षष्ठ भाव में सप्तमेश शत्रु के स्थान में। सप्तमेश व लग्नेश परस्पर शत्रु हों, तो ससुराल पक्ष से शत्रुता, यदि दोनों परस्पर मित्र हों, तो मित्रता रहती है। सप्तम में शुभग्रह की राशि शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो, तो ससुराल पक्ष से मित्रता रहे। सप्तमेश सप्तम में हो, तो स्त्री आज्ञाकारिणी हो। सप्तमेश लग्न में हो अथवा सप्तमभाव में बुध अकेला हो, तो पुरुष स्त्री के अधीन रहे। लग्न से सप्तम में चन्द्र हो, तो स्त्री के वशीभूत रहे। 7, 12, 5 भाव में पापग्रह हो, तो स्त्री के अधीन रहे। सप्तमस्थ गुरु हो, तो अपनी स्त्री से प्रेम रहे।

लग्न या चन्द्र से सप्तम स्थान शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो, या सप्तम स्थान में गुरु शुक्र स्थित हों अथवा इनकी दृष्टि हो, तो मनचाही स्त्री मिले। चन्द्र शनि का योग सप्तम में हो, तो विधवा स्त्री की प्राप्ति हो।

सप्तमेश लग्नेश में अधिक बलवान् हो या शुभग्रह के नवमांश में हो या सप्तमेश शुभग्रह के नवांश में हो या लग्नेश सप्तम भाव में शुभग्रह से दृष्ट हो, तो ऊँचे दर्जे की स्त्री मिले। यदि सप्तमेश से लग्नेश की स्थिति बलवान् हो, तो अशुभग्रह से दृष्ट, अशुभग्रह के नवांश में हो या नीच राशि व नीच नवमांश में या अस्तंगत सप्तमेश हो, तो अपने से निम्न श्रेणी की स्त्री की प्राप्ति हो। लग्नेश सप्तम भाव में पापराशिगत् हो अथवा सप्तमेश पापग्रहों से युत दृष्ट हो, तो नीच कुल की स्त्री की प्राप्ति हो।

सप्तमेश पापवर्ग में हो, तो नीचकुल की स्त्री मिले।

प्रथम पुत्र— स्वग्रही सूर्य पञ्चम में 1, 2, 3 में से किसी भाव में लग्नेश हो। लाभ में गुरु शुक्र हो, पञ्चम में पुरुष राशि पुरुषग्रह से दृष्ट हो। पञ्चमेश पुरुष राशि व पुरुष नवमांश में हो।

लग्नेश या पञ्चमेश पञ्चम में या केन्द्र त्रिकोण में हो। लग्नेश विषम राशि में हो।

लग्न से 5 या 7 भाव में सूर्य शनि का योग हो। **प्रथम कन्या बाद में पुत्र**— लग्नेश चतुर्थ में हो,

समराशि में या समसंख्यक भाव में लग्नेश हो, पञ्चमेश स्त्री ग्रह से युक्त दृष्ट हो।

स्त्री संज्ञक ग्रह बलवान् होकर 5, 7 भाव में हो। पञ्चम में चन्द्र शुक्र लाभ में पापग्रह हो, तो प्रथम कन्या उत्पन्न होती है। **कन्या सन्तान योग**— पञ्चम स्थान में चन्द्र हो।

पञ्चम में स्त्रीग्रह की राशि मंगल से दृष्ट हो। 2, 6, 10 राशि पञ्चम में हो।

पञ्चम में बुध शुक्र चन्द्र में से कोई ग्रह हो। लाभ में बुध शुक्र हो। लाभ में चन्द्र बुध हो।

पञ्चम में कर्क का चन्द्र अथवा स्वराशि का शुक्र हो।

पञ्चम में सिंह का चन्द्रमा हो, तो कन्या उत्पन्न होती है। **स्त्री की कुण्डली में सन्तान भाव का विचार**— स्त्री की कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के स्पष्ट राश्यादि को जोड़ने पर योग समराशि या समनवमांश में हो तो केवल एक सन्तान योग निश्चित है।

पञ्चमेश और लग्नेश का तथा सप्तमेश और लग्नेश का गोचर में जब योग हो, तब पुत्र लाभ का योग हो। पञ्चमेश, 6, 8, 12 भाव में या शुभराशि में हो, तो प्रयत्न करने पर सन्तान प्राप्ति हो। (गुरु से पञ्चम भाव की राशि के स्वामी या उसके नवमांश के स्वामी की राशि से त्रिकोण में जब गुरु गोचर में आये, तब सन्तान प्राप्ति हो।)

पञ्चममेश लाभेश और लग्नेश का गोचर में जब योग हो, तब पुत्र लाभ हो।

पञ्चमेश व लग्नेश स्पष्ट राश्यादि के योग तुल्य राशि में या उसके त्रिकोण में जब गुरु आये, तब सन्तान का योग बने। गुरु से, चन्द्र से, लग्न से पञ्चम या नवम राशि के स्वामी की दशा व अन्तर्दशा में सन्तान प्राप्ति हो। शुक्र व मंगल द्विस्वभाव राशि का हो, तो शीघ्र सन्तान की प्राप्ति हो। शुभग्रह लग्न में या लग्न को देखते हों, तो शीघ्र सन्तान की प्राप्ति हो। 1,4, 9 भाव के स्वामी त्रिक में स्थित हों और शुभग्रह से युक्त हों, तो विलम्ब से सन्तान की प्राप्ति। शुभग्रह चतुर्थ में हो या चतुर्थ भाव को शुभग्रह देखने हो, तो वृद्धावस्था में सन्तान प्राप्ति।

8, 2, 6, 5 राशि सन्तानहीन राशि हैं ये पञ्चम भाव में हों, तो विलम्ब से सन्तान प्राप्ति हो। पञ्चम व लाभ में राहू शनि या मंगल हो, तो विलम्ब से सन्तान हो। पञ्चम में धनुराशि का गुरु या पञ्चम में उच्चराशि का शनि या पञ्चम में मंगल शुभग्रह दृष्ट हो या पञ्चम में पापग्रह हो, तो बहुत चिन्ता के बाद कष्ट से पुत्र प्राप्ति हो। पञ्चमेश अस्त हो, या पापग्रह से युक्त हो या पाप ग्रह के मध्य हो और चन्द्रमा पापयुक्त केन्द्र में हो, तो अधिक चिन्ता के बाद सन्तान हो।

सन्तानभाव का विचार

सन्तानलाभ योग— पञ्चमस्थान, या पञ्चमेश व गुरु शुभग्रह से युत वा दृष्ट हो।

लग्नेश पञ्चम में, बली गुरु पञ्चमेश लग्नेश से दृष्ट हो, लग्नेश और पञ्चमेश शुभ ग्रहयुक्त केन्द्र में हों, तो द्वितीयेश बलवान् हो। बलीधनेश पञ्चम में या धनेशगुरु से दृष्ट हो, पञ्चम में बलवान् बुध हो। पञ्चम में राहु कर्क का हो या सिंह का हो। पञ्चम भाव पर पञ्चमेश की और शुभग्रह की दृष्टि हो। पञ्चमेश पञ्चम में या बलीग्रह पञ्चम में या पञ्चमेश से दृष्ट हो। लग्न या चन्द्र से गुरु या पञ्चमेश अच्छे स्थान में हो, पञ्चम भाव पर 6, 8, 12 भाव के स्वामी की दृष्टि न हो, पञ्चम में शुभ ग्रह हो। पञ्चमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो। पूर्ण बलीगुरु पञ्चम में लग्न से दृष्ट हो। पञ्चम भाव में चन्द्र विषम राशि या विषय नवमांश में हो और सूर्य से दृष्ट हो।

दूसरी स्त्री से सन्तान योग—कर्क में मंगल हो। कर्क राशि का सूर्य अकेला पञ्चम में हो। पञ्चम में शनि चन्द्र का वर्ग हो, सूर्य व शुक्र से दृष्ट हो। पञ्चम में शनि का षड्वर्ग हो, बुध से दृष्ट हो या पञ्चम में बुध का षड्वर्ग हो, शनि से दृष्ट हो, तो विधवा स्त्री से पुत्र हो।

तीसरी स्त्री से पुत्र-पञ्चम में कर्क का बुध हो, नवम में कर्क या सिंह राशि का बुध हो, पञ्चम भाव में पापग्रह हो अथवा गुरु से पञ्चम भाव में शनि हो। पञ्चम भाव में शुक्र का नवमांश हो और शुक्र की दृष्टि हो, तो बहुत सन्तान हों। पञ्चम भाव चन्द्र गुरु शुक्र से युक्त हो या चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो, तो सन्तान अधिक हों। कर्क राशि का शनि पञ्चम में हो, तो बहुत सन्तान हों। पञ्चम में शुभग्रह स्वक्षेत्री हो, तो सन्तान अधिक हों। चन्द्रमा 4, 8, 12 राशि में गुरु या शुक्र से दृष्ट हो, तो सन्तान अधिक हों। अल्पसन्ततियोग— पञ्चम में कर्क का चन्द्र या बुध हो। पञ्चम में कर्क का चन्द्र कन्या अधिक देता है। पञ्चम में मीन का गुरु अल्प सन्ततिप्रद। पञ्चम में सूर्य पापदृष्ट हो, तो अल्पसन्तति। पापी सप्तमेश पञ्चम में हो, तो अल्पसन्तति। षष्ठेश मीन राशि में मंगल से युक्त हो, तो अल्पसन्तान हो। एक पुत्र का योग— अपने स्वगृह से पञ्चम् में शनि। पञ्चम में तुला राशि शुभग्रह युक्त हो। अपने स्वगृह से 5वें सूर्य या मंगल हो।

पञ्चमेश का नवमांश पति अपने नवमांश में।

षष्ठ में चन्द्र शुक्र हो। पञ्चम में राहु शुक्र युत या दृष्ट हो।

पञ्चम में शनि पूर्ण चन्द्र से दृष्ट हो। तृतीय में शनि चन्द्र हो। दो कन्या का योग— पञ्चमेश चन्द्र बलीग्रहों से दृष्ट। पञ्चम में शुक्र पूर्ण चन्द्र से दृष्ट हो। पञ्चम में चन्द्र हो, तो दो कन्या हों।

सन्तान हीन— पञ्चम में पापग्रह की राशि पापग्रह से दृष्ट या युत हो, तो सन्तानहीन हो।

सप्तम में शुक्र दशम में चन्द्र चतुर्थ में पापग्रह हो। 4, 5 राशि को छोड़कर राहु पञ्चम में हो।

लग्न में पापग्रह, लग्नेश पञ्चम में, पञ्चममेश तीसरे में, चन्द्र चतुर्थ में हो। चन्द्र समराशिया समराशि के नवांश में पञ्चम भाव में हो। जन्म समय पञ्चमेश शत्रु गृही नीच या अस्त हो। या त्रिक में हो या पापयुक्त और निर्बल हो। 1, 2, 5 भाव के स्वामी त्रिक (6, 9, 12) में हों, पापाक्रान्त हो या शत्रु ग्रह से दृष्ट हो या पञ्चमेश गुरु से द्वादश होकर शत्रु क्षेत्री व नीच में हो।

चन्द्र मंगल शुक्र धनु राशि में हो। पञ्चम में शनि मंगल सूर्य में से कोई हो या इनमें से किसी की दृष्टि पञ्चम भाव पर हो और इन में से किसी की राशि हो या इनकी राशि में निर्बल मंगल हो। लाभ में शनि युक्त चन्द्र हो। गुरु जहाँ हो, उससे पञ्चमेश त्रिक में हो या 5, 1, 9 स्थान के स्वामी लग्न से त्रिक में हों। लग्न से पञ्चम में गुरु हो और गुरु से पञ्चम में क्रूर ग्रह हो। 2, 5 के स्वामी निर्बल हों और पञ्चम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो। पञ्चम में 4, 11 राशि का गुरु हो। पञ्चम में केतु हो और किसी ग्रह की दृष्टि नहीं हो, पञ्चम में सूर्य हो।

पञ्चम में राहु हो, पञ्चमेश दुष्ट स्थान में हो। 1, 7, 9, 12 भाव में पापग्रह शत्रु गृही हो।

गर्भपात के योग– पञ्चम पर राहु मंगल की दृष्टि हो, पञ्चम पर सूर्य मंगल की दृष्टि हो।

पञ्चम में सूर्य राहु या केतु से दृष्ट हो, पञ्चम में बुध शनि बली हो। 5, 7 भाव में पापग्रह और मंगल अष्टम हो। पञ्चम में शनि हो। 5, 11 भाव में मंगल शनि से दृष्ट हो, तो गर्भपात हो।

मृत प्रजायोग– पञ्चम में मंगल शुक्र नीच राशिगत या शत्रु के नवमांश में हो और पापदृष्ट हों, तो मृतवत्सा योग हो। पञ्चम में सूर्य दो पापग्रह से दृष्ट हो। पञ्चमेश जिस भाव में स्थित हो, उससे 5, 6, 12 भाव में पापग्रह हो, तो मृतवत्सा योग बनता है।

पुत्र आज्ञाकारी– लग्न पर पञ्चमेश की दृष्टि हो या पञ्चमेश लग्न में हो और लग्नेश पञ्चम में हो। लग्नेश पञ्चमेश की परस्पर दृष्टि हो या एक दूसरे के घर में या नवमांश में हो।

लग्नेश नवमेश और सूर्य बलवान् शुभग्रह से दृष्ट हो, तो पुत्र आज्ञाकारी हो।

कुपुत्रयोग– पञ्चम में शनि हो। पञ्चम में राहु मंगल हों। पञ्चम भाव में 3, 4 पापग्रह हों, तो पूत कपूत होता है।
सन्तान का सुखदायक योग– पञ्चम में बुध हो या शुक्र हो।

पञ्चम भाव गुरुयुत दृष्ट हो। उच्चराशिगत पञ्चमेश गुरु से दृष्ट होकर 1, 2, 3, 5, 9 भाव में हो।

पञ्चम स्थान, पञ्चमेश, और गुरु शुभग्रह से युत या दृष्ट हो। लग्नेश पञ्चम में गुरु बलवान् हो।

पञ्चम भाव से 2, 4, 7 राशि का शुक्र हो या चन्द्र हो या शुक्र की दृष्टि हो अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो, तो पुत्र सुख देता है।

स्त्री पुरुष का पृथक्-पृथक् नाम लिखकर दोनों जगह 7 जोड़कर 3 का भाग देने पर शेष बचे, तो पुरुष का दोष 2 शेष बचे, तो माता का, 00 शेष बचे माता-पिता दोनों के दोष से सन्तान का दुःख होता है।

पुत्र शोक या कष्ट के योग– पंचमस्थग्रह पंचमेश, पञ्चम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह और गुरु इनके स्पष्ट राश्यादि का भाग करने पर जो राशि प्राप्त हो, उस राशि के नवमांश पर जब शनि आये (गोचर में), तब पुत्र क्लेश या पुत्रमरण होता है। उक्त चारों की दशा अन्तर्दशा में सन्तान सुख होता है; परन्तु ये ग्रह त्रिकेश हों, या त्रिक (6, 8, 12) में हों, तब सन्तान कष्ट होता है। लग्न से या गुरु से पञ्चम में मंगल हो, तो गुरु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा पुत्र कष्टकारक होती है। पञ्चम में शुक्र, चन्द्रमा या शनि हो, तो पुत्र के पेट में वायु से पीड़ा हो। पञ्चम से अष्टम भाव में जो ग्रह हो, उसके अनुसार सन्तान को पीड़ा होती है। सूर्य से ज्वरपीड़ा, चन्द्र से जल और शीत से पीड़ा, मंगल से शास्त्र पीड़ा (ऑपरेशन), बुध से शीतलापीड़ा, गुरु से विष या सर्प से पीड़ा, शुक्र से पशु आदि के सींग से पीड़ा, शनि से भूत-प्रेत पीड़ा, राहु से वृक्ष द्वारा पीड़ा, केतु से विकारों से पीड़ा सन्तान को होती है।

अध्याय-11

निरोगता विचार

निरोगता

(1) लग्नेश या षष्ठेश गुरु युत्त होवे, तो निरोग हो।

(2) अष्टम में शुभग्रह की दृष्टि हो, तो स्वास्थ्य ठीक रहे।

(3) लग्न में सब शुभ ग्रह हों, तो निरोग हो।

(4) सूर्य पर गुरु या चन्द्र की शुभ दृष्टि हो।

(5) षष्ठ स्थान में गुरु का कोई सम्बन्ध हो, तो रोग से छुटकारा हो।

(6) 3, 6, 11 भाव में शनि, मङ्गल, राहु एक साथ या पृथक् रहें, तो रोग से छुटकारा

(7) लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में हो, तो देह सुखकारक हो।

(8) दुर्बल लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में हो, तो व्याधि रहित हो; परन्तु कुछ रोग भी रहे, पर लग्नेश दुर्बल रहने से क्रोधी हो।

(9) षष्ठेश या षष्ठस्थ (षष्ठ स्थान में), षष्ठदर्शी (षष्ठ को देखने वाला) कोई-कोई ग्रह शुभ ग्रहों और केन्द्र कोण या लाभ में कहीं भी बलयुक्त हो, तो छोटे-छोटे रोगों का नाश करता है।

(10) षष्ठेश से युक्त शुक्र गुरु युक्त हो तो विख्यात और स्वस्थ देह वाला हो; परन्तु शत्रु का भय बना रहे।

(11) सूर्य चतुर्थ स्थान में पाप दृष्ट हो, तो शरीर गरम रहे।

(12) लग्नेश व अष्टमेश इनका शुभ योग हो, तो आरोग्यता हो।

रोगी–

(1) द्वितीय स्थान में पापग्रह हो, तो रोगी हो।

(2) लग्नेश दुष्ट स्थान (त्रिक या मारक) के स्वामी से युक्त हो या दुष्ट स्थानेश लग्न में हो, तो शीघ्र रोगी हो।

(3) लग्नेश बलहीन हो, तो उपरोक्त फल। अष्टमेश 6, 8, 12 भाव में हो।

(4) सूर्य चन्द्र तीसरे भाव में या क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो वह रोग युक्त रहे।

(5) लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश निर्बल हो, तो नाना प्रकार से रोगी होकर चिन्ता युक्त रहे।

(6) छठे स्थान में सौम्य ग्रह हों, तो बड़ा रोग हो।

(7) शनि 5, 9 स्थान (भाव) में पाप दृष्ट, तो अनेक रोगों से पीड़ित रहे।

(8) क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट शनि 5, 9, 12 भाव में हो, तो रोगी रहे।

(9) नीच ग्रह शत्रुगृही क्रूरांश में, तो रोगी रहे।

(10) निर्बल लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो शरीर कुछ रोगी रहे।

(11) लग्न से छठे स्थान में क्रूर ग्रह युक्त चन्द्र हो, तो रोगी हो।

(12) क्रूर ग्रहों के योग या दृष्टि से पीड़ित चन्द्र लग्न में हो, तो रोगी हो।

(13) क्रूर ग्रह केन्द्र में हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो रोगी हो।

(14) केन्द्र में स्थित क्रूर ग्रह शुक्र गृही हो; परन्तु गुरु, शुक्र, मंगल इन ग्रहों की दृष्टि न हो, तो रोगी हो।

(15) अष्टम भाव में पाप ग्रह हो, तो बहुत रोग हो।

(16) लग्नेश व अष्टमेश का पाप योग हो, तो बहुत दु:ख।

(17) छठे भाव में मंगल से युक्त शनि हो, जिस पर सूर्य और राहु की दृष्टि हो लग्नेश निर्बल हो, तो दीर्घ रोगी हो।

(18) लग्न में शनि राहु हो, बुध से भी दृष्ट हो, तो निश्चय रोगी रहे।

(19) क्षीण चन्द्र बारहवें हो, पापग्रह से दृष्ट हो, तो दु:ख हो।

(20) आठवें में शनि भी बड़ा क्लेश देता है।

(21) सूर्य चन्द्रमा अन्योन्य राशि नवांशकों में हो, तो शरीर क्लेश रहे।

(22) छठे घर में शुक्र का कोई सम्बन्ध हो, तो आहार-विहार की असावधानी से रोग उत्पन्न।

(23) लग्नेश पाप युक्त, 6, 8, 12 में हो, तो क्लेश कारक है।

(24) लग्नेश अस्त, शत्रुगृही या नीच हो, तो रोग कारक हो।

(25) धनभाव में मंगल शनि हों, तो सब रोग उत्पन्न करें।

(26) 3 या 6 स्थान में शुक्र हो, तो रोग, शोक और भयदायक है। यदि वही शुक्र सूर्य के आगे हो तो शुभ है।

(27) लग्नेश षष्ठेश के साथ दुष्ट स्थान में हो या लग्न में हो।

(28) षष्ठ भाव और षष्ठेश दोनों पापयुक्त होवें और शनि राहु से युत हो, तो आजन्म रोगी रहे।

(29) रवि व शनि षष्ठ भाव में एकत्र हों या एक 6 ठे में, दूसरा 12 घर में या दोनों का केन्द्र योग हो, तो दुष्ट प्रकृति हो।

(30) सूर्य 1, 6, 8 स्थान में हानिकारक है।

(31) सूर्य शनि से पीड़ित होकर 5, 9, 6, 7, 8, 4 इन स्थानों में हो, तो दीर्घकाल तक रोग रहे।

(32) अष्टमेश अष्टम हो, तो उसकी दशा अन्तर्दशा में रोग हो।

(33) अष्टम भाव में पापग्रह हो, तो रोग हो, वह मृत्यु को प्राप्त हो।

(34) चतुर्थ में पापयुक्त मंगल या सूर्य नीच या शत्रु अंश में हो, तो बहुत रोगी रहते हुए यात्रा करता रहे।

(35) लग्नेश मंगल और बुध ये 4 या 12 भाव में हों तो कई प्रकार के रोग हों।

(36) छठे भाव में गुरु हो, तो दीर्घव्याधि हो।

(37) लग्नेश मंगल या बुध हो, किसी स्थान में हो उस पर शत्रु ग्रह की दृष्टि हो, तो रोग हो।

(38) 6, 8, या 12 वें स्थान में जो ग्रह या छठे भाव का स्वामी और वह ग्रह जो इनसे युक्त हो इनसे पृथक्-पृथक् विचारना जहाँ 2-3 या अधिक रोग होने के योग हों तब विशेष रोग कहना।

(39) लग्न या चन्द्र से 2, 4, 8, 12 घर में शनि राहु सूर्य मंगल ये पाप ग्रह क्रमानुसार हों।

(40) सप्तम में मङ्गल और शनि हो तो अपने-अपने धातुजन्य रोग उत्पन्न करते हैं।

इसी प्रकार लग्नेश षष्ठेश–भिन्न-भिन्न ग्रहों से युक्त होने का फल

(1) लग्नेश षष्ठेश–सूर्य युक्त–ज्वर का भय।

(2) लग्नेश षष्ठेश–चन्द्र युक्त–जल में डूबने का भय। हैजा, जलोदर, सर्दी जुकाम का रोग होवे।

(3) लग्नेश षष्ठेश–मंगल युक्त–युद्ध या स्फोटक समूह से भय। चेचक घाव फोड़ा फुन्सी।

(4) लग्नेश षष्ठेश–बुध युक्त–पित्त के प्रमाद से भय। अरुचि वमन वातजव्याधि।

(5) लग्नेश षष्ठेश–शनि युक्त–अधो वायु का रोग। अनपच पेट (उदर) साफ नहीं रहे।

(6) लग्नेश षष्ठेश–राहु या केतु युक्त–सर्प की पीड़ा या चोरादि भय। मस्तक पीड़ा हो।

लग्नेश षष्ठेश त्रिकोण में राहु केतु युक्त–विषजन्य रोग

द्वादश भाव के अनुसार शरीर की पीड़ा का स्थान

प्रथम भाव–मुख, दाँत, दाढ़, गला, जीभ, मस्तक।

द्वितीय भाव–दाहिना नेत्र।

तृतीय भाव–दाहिना कान, गदर्न, हाथ।

चतुर्थ भाव–पेट, कंधा।

पंचम भाव–कमर के ऊपर का भाग, जंघा।

षष्ठ भाव–गुप्त स्थान, दाहिना पाँव

सप्तम भाव–पेट का मध्य भाग, नाभि।

अष्टम भाव–गुप्त स्थान, बायाँ पाँव।

नवम भाव–कमर के ऊपर का भाग

दशम भाव–कमर के ऊपर का भाग

लाभ भाव–बायाँ कान, हाथ, गर्दन।

व्यय भाव–बाँई आँख, पैर का तलवा।

नक्षत्र अनुसार रोग की पीड़ा

इन नक्षत्रों में रोग हो तो कितने दिन तक उस रोग की पीड़ा रहेगी यहाँ

(1) अश्विनी में रोग हो–1–9 या 25 दिन पीड़ा।

(2) भरणी में रोग हो–11, 21या 1 मास या मृत्यु।

(3) कृत्तिका में रोग हो–9, 10 या 11 दिन।

(4) रोहिणी में रोग हो–3, 7, 9 या 10 दिन।

(5) मृग0 में रोग हो–3, 5 या 9 दिन।

(6) आर्द्रा में रोग हो–10 दिन या 1 मास या मृत्यु।

(7) पुनर्वसु में रोग हो–7 या 9 दिन या मृत्यु।

(8) पुष्य में रोग हो–7 दिन या मृत्यु।

(9) आश्लेषा में रोग हो–9, 20 या 30 दिन या मृत्यु

(10) मघा में रोग हो–20, 30 या 45 दिन या मृत्यु।

(11) पूर्वा फा0 में रोग हो–8, 15 या 30 दिन या 1 वर्ष या मृत्यु।

(12) उत्तरा फा0 में रोग हो–7, 15 या 26 दिन।

(13) हस्त में रोग–7, 8, 9 या 15 दिन या मृत्यु।

(14) चित्रा में रोग हो–8, 11 या 15 दिन।

(15) स्वाती में रोग हो–1, 2, 3, 4, 5 या 10 मास या मृत्यु।

(16) विशाखा में रोग हो–8, 15, 20 या 30 दिन।

(17) अनुराधा में रोग हो–10 या 28 दिन।

(18) ज्येष्ठा में रोग हो–15, 21 या 30 दिन में मृत्यु।

(19) मूल में रोग हो–9, 15 या 20 दिन।

(20) पू0 षा0 में रोग हो–15, 20 दिन या 2, 3, 6 मास या मृत्यु।

(21) उ0 षा0 में रोग हो–20 रात्रि, 1 या 111 मास।

(22) श्रवण में रोग हो–10, 11, 25 या 6 दिन।

(23) धनिष्ठा में रोग हो–13 रात्रि या 10 रात्रि, पक्ष या मास।

(24) शतभिषा में रोग हो–10 या 12 दिन।

(25) पूर्व भाद्र0 में रोग हो–10 रात्रि 2 या 3 मास या मृत्यु।

(26) उ0 भाद्र0 में रोग हो–7 या 10 दिन, 11 मास।

(27) रेवती में रोग हो–10 या 28 दिन।

ये नीचे बताये योग हों तो रोग बढ़ेगा।

वार	नक्षत्र	दिन	नक्षत्र	तिथि
रविवार	अनुराधा, भरणी	रविवार	मघा	12
सोमवार	आर्द्रा, उ0 षा0	सोम	विशाखा	13
मंगलवार	मघा शत0	मंगल	आर्द्रा	5
बुधवार	अश्विनी, विशाखा	बुध	उ0 षाढा	3
गुरुवार	मृगशिर, ज्येष्ठा	गुरु	शत0	6
शुक्रवार	आश्लेषा, श्रवण	शुक्र	अश्विनी	8
शनिवार	हस्त, पूर्व0 भाद्र0	शनिवार	पू0 षाढा	9

इस प्रकार वार, नक्षत्र और तिथि का योग या यहाँ बताये दिन को उक्त नक्षत्र पड़े ऐसे योग में रोग उत्पन्न हो तो अच्छे लक्षण नहीं हैं रोग अवश्य बढ़ेगा।

जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और अष्टम चन्द्र इन योगों में रोग उत्पन्न हो तो अपमृत्यु या मृत्यु हो।

जन्मकुण्डली में पापग्रह कब मृत्यु सूचित करते हैं और बीमारी कौन प्रकार की होगी इन बातों को समझ लेना चाहिए।

जन्म के पापग्रह आयु का या रोग का या शरीर विकार का बोध करते हैं। प्रत्येक वर्ष इस स्थिति में जान लेना चाहिए कि कौन बीमारी कब होगी और कब अच्छी होगी। इस बारे में पूर्व वर्णन हो चुका है।

ज्वर

(1) लग्नेश व षष्ठेश सूर्य युक्त हो तो ज्वर का भय।

(2) षष्ठ या अष्टम में सूर्य हो।

(3) अष्टम में चन्द्रमा राहु या केतु युक्त हो तो चौथिया ज्वर हो।

(4) अष्टमेश चन्द्र या राहु या केतु युक्त हो तो चौथिया ज्वर हो।

(5) यदि क्रूर षष्ठयंश में उपरोक्त ग्रह हों तो भी चौथिया ज्वर हो।

(6) जन्म में मङ्गल और अष्टम में सूर्य हो तो दाह या ज्वर हो।

(7) तुला राशि का सूर्य की दशा में या क्षीण चन्द्र की दशा में, या केन्द्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो। या शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो भयंकर ज्वर हो।

सन्निपात शीतदोष–द्वितीय भाव में चन्द्र हो तो शीत सम्बन्धी रोग और सन्निपात हो।

(2) दूसरे में राहु चन्द्र से युत हो तो निश्चय शीत दोष तथा सन्निपात हो। त्रिदोष 1 गुरू बुध शुक्र अष्टम में हो तो 21 वर्ष में त्रिदोष हो। बहुत पसीना-1 चन्द्रमा द्वितीय या अष्टम हो तो बहुत पसीना वाला हो।

दुर्गन्ध देह–दशम में मंगल बुध से युक्त हो तो दुर्गन्ध हो।

दाह–तनुभाव में मङ्गल और चतुर्थ में सूर्य हो तो दाह रोग हो।

पित्त विकार–1 और 6 के स्वामी बुध युक्त हो तो पित्त रोग हो

वात विकार–गुरु लग्न में हो शनि सप्तम में हो तो वात विकार

(2) 1 और 6 के स्वामी शनि युक्त हो।

(3) 7, 9 और 5 भाव में मंगल हो शनि लग्न में हो।

(4) क्षीण चन्द्र और शनि बारहवें बैठे हों तो वातरोग हो।

(5) शनि की महादशा में केतु का अन्तर हो तो वात पित्त रोग हो, नीच जाति से झगड़ा व परदेश गमन।

(6) 7, 9 या 1 भाव में मंगल, शनि व चन्द्र हों तो वातरोग हो।

(7) लग्नेश लग्न में, शनि षष्ठ हो तो 41 वर्ष में वात रोग हो।

(8) शनि पापयुक्त द्वितीयेश युक्त हो।

(9) लग्न में पापयुक्त चन्द्रमा पाप दृष्ट हो।

(10) कर्क के सूर्य पर शनि की दृष्टि हो।

(11) चतुर्थ में शनि हो तो वात पीड़ा।

(12) दशम में मंगल हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो वात रोग हो।

(13) यदि बुध षष्ठ में पाप ग्रहों से दृष्ट और क्रूर नवांश में हो तो कफ रोग हो।

क्षयरोग–बुध और मंगल षष्ठ में हो इन पर चन्द्र और शुक्र की दृष्टि हो और बुध नवांश में हों तो क्षय रोग हो। ग्रह की धातु के अनुसार या नवांशेष के अनुसार रोग होता है। गुरु की दृष्टि हो तो बुरा प्रभाव दूर हो जाता है।

(2) यदि गुरु षष्ठ या अष्टम भाव में हो।

(3) चन्द्रमा पापग्रहों के मध्य में हो और शनि सप्तम में हो क्षय और गुल्मरोग हो। श्वाँस, प्लीहा, गुल्मरोगादि।

(4) क्षीण चन्द्र किसी जलराशि में पापग्रहों के साथ हो तो क्षयरोग या जल से सम्बन्ध रखने वाले रोग हों।

(5) चन्द्र यदि सूर्य मण्डल में अमावस्या के सन्धि में हो शनि से युक्त हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तो क्षयरोग और बुरा बोलने वाला हो।

(6) षष्ठ भाव में राहु, केन्द्र में शनि, अष्टम में लग्नेश हो तो 26 वर्ष में क्षयरोग होवे।

(7) चन्द्रमा पापग्रहों के बीच में हो और सूर्य मकर का हो या शनि सप्तम में हो तो क्षय, श्वास, प्लीहा विद्रधि रोग हो।

हृदयरोग–

(1) वृष, कर्क का चन्द्रमा पाप व शत्रु युक्त होवे।

(2) चतुर्थ (हृदय स्थान) में षष्ठेश सूर्य बली हो क्रूर ग्रह से युक्त हो तो हृदयरोग हो

(3) शनि व गुरु षष्ठेश होकर लग्न से चतुर्थ में क्रूर ग्रह युक्त हो तो हृदय रोग हो।

(4) चतुर्थ में मंगल शनि व गुरु हो क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो हृदय रोग हो और हृदय में क्लेश कारी घाव हो।

(5) पंचम में पापग्रह हो और पंचमेश दो पाप ग्रहों के मध्य हो पापग्रह से दृष्ट हो तो हृदय रोग होगा।

(6) षष्ठेश सूर्य के नवांश में हो तो हृदय रोग होगा।

(7) चतुर्थेश व्यय भाव में व्यय भावेश युक्त हो नीच, शत्रु गृही, अस्तंगत होवे तो हृदय में रोग हो।

(8) राहु चतुर्थ में हो और लग्नेश पाप दृष्ट और बलहीन हो तो हृदय में शूल रोग हो।

(9) सूर्य, चन्द्रमा और मङ्गल शत्रु गृही हों तो शूल रोग हो।

शूल–सप्तम में सूर्य मंगल शनि हों तो भगंदर, बवासीर, वायु और शूल रोग हो।

(10) षष्ठ में चन्द्र, मङ्गल और सूर्य तीनों हों तो शूल रोग विसर्प रोग हो।

जलोदर -

(1) सूर्य चन्द्र लाभ भाव में हों, राहु लग्न में हो तो 21 वर्ष में जलोदर रोग हो।

(2) शनि कर्क का, चन्द्रमा मकर का

(3) गुल्म–शनि सप्तम भाव में हो तो गुल्म रोग हो।

(4) व्ययेश षष्ठ भाव में और षष्ठेश व्ययभाव में हो तो 29-30 वर्ष में गुल्म हो।

(5) शनि के गृह में क्षीण चन्द्र पापयुक्त 6 या 8 भाव में हो तो वायु कुपित होकर गुल्म रोग हो।

(6) छठे स्थान में शनि हो तो विशेषकर गुल्म रोग हो।

(7) राहु पंचम हो तो वात गुल्म या कृमि का रोग हो शनि से भी ऐसा ही कहना।

प्लीहा–

(1) शनि चन्द्र के साथ 6, 8 घर में हो प्लीहा आदि रोग हो।

(2) चन्द्रमा पंचम भाव में हो तो प्लीहा रोग हो।

(3) चन्द्र षष्ठेश होकर क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो प्लीहा (तापतिल्ली) रोग हो।

(4) सप्तमेश या लग्नेश होकर चन्द्र क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो।

(5) चन्द्रमा, शनि और मङ्गल के बीच हो, सूर्य मकर का हो तो उसे प्लीहा गुल्म, विद्रधि या श्वाँस रोग हो।

उदर रोग–चन्द्रमा या शुक्र 6 या 8 भाव में हो।

(2) सिंह लग्न में चन्द्र पापयुक्त या दृष्ट हो तो पेट का रोग हो।

(3) लग्न में षष्ठेश और लग्नेश वक्री ग्रह की राशि में हों इन पर शनि की दृष्टि हो।

(4) शुक्र शनि से 8 या 6 भाव में पापग्रह हो तथा अष्टमेश और षष्ठेश सप्तम भाव में हो तो पेट बढ़ने का रोग हो।

(5) छठे स्थान में शनि का कोई सम्बन्ध हो तो उदर विकार से कष्ट हो

(6) शुक्र सहित चन्द्र छठे घर में हो तो मंदाग्नि रोग से युक्त।

(7) 1, 2, 8, 12 भाव में क्रूर ग्रह हो तो 8, 12 वर्ष में दस्तबन्द होने से पीड़ा हो।

अतिसार–शुक्र सातवें घर में हो तो मूलातिसार रोग हो।

पांडुरोग–चन्द्रमा मंगल के साथ षष्ठ भाव में हो तो वायु विकार से पांडु रोग हो।

पीनस–व्यय भाव में पापग्रह हो चन्द्र 6 शनि 8 वें भाव में लग्नेश पापग्रह के नवांश में होए तो पीनस रोग हो।

(2) शनि, मंगल, सूर्य से अशुभ स्थान में एकत्र हों तो नासिका रोग हो अनेक व्याधि व शत्रु भय हो।

(3) नाभि में रोग–षष्ठेश तृतीय में हो तो नाभि में दृढ़ रोग से कष्ट हो। पूरे गाँव के लिए दुःखदायी

माता (चेचक)- मङ्गल लग्न में हो उसे शनि व सूर्य देखते हों तो शीतला हो।

श्वेत कुष्ठ–शुक्र शनि दोनों मंगल की राशि में हो चन्द्र व्यय में हो, मंगल तीसरे भाव में हो तो श्वेत कुष्ठ हो।

(2) षष्ठ में मीन या मेष के नवांश में स्थित चन्द्र पापग्रहों से दृष्ट हो तो श्वेत कुष्ठादि।

(3) चन्द्र लग्न में, सूर्य सप्तम और शनि मंगल दूसरे या बारहवें हो तो श्वेत कुष्ठ हो।

(4) लग्नेश अष्टम भाव में पापयुक्त या दृष्ट हो तो श्वेत कुष्ठ, मंदाग्नि-दाद-खुजली आदि।

(5) नीच में व चर राशि में शुक्र से चन्द्र का योग पापयुक्त हो तो पांडु कुष्ठ हो।

(6) रक्त कुष्ठ–सूर्य कहीं भी मंगल या शनि युक्त हो तो रक्त कुष्ठ **कृष्ण कुष्ठ** (देह में लाल या काले चिन्ने) हो।

(7) शनि के साथ चन्द्र षष्ठ भाव में हो तो 45 वर्ष में रक्त कुष्ठ।

(8) चन्द्र, बुध और लग्नेश मङ्गल के साथ हों तो कोढ़ हो।

(9) चन्द्र 5, 10, 4, 12 राशि के नवांश में हो और शनि और मङ्गल से युक्त या दृष्ट हो तो कोढ़ हो।

(10) सप्तम में बुध तथा शनि हो।

(11) चन्द्र के घर का बुध हो तो कुष्ठ या क्षयरोग हो।

(12) चतुर्थ में चन्द्र सहित राहु मंगल दोनों हो तो 25 वर्ष में कुष्ठ रोग हो।

(13) चन्द्रमा मङ्गल युक्त हो तो कुष्ठ, भगन्दर, बवासीर, खुजली आदि रोगों से पीड़ित हो।

(14) शनि या मङ्गल से युक्त चन्द्र 4, 12, 10 राशि के नवांश में हो शुभ योग दृष्टि न हो तो कुष्ठ हो।

(15) षष्ठ भाव में गुरु हो, गुरु की राशि में चन्द्र हो तो 19 या 22 वर्ष में कुष्ठ हो।

(16) दद्रु–सप्तम में सूर्य, बुध, चन्द्र हो शेष ग्रह चतुर्थ में हो तो दद्रु (रोग हो) दाद।

रक्त रोग

(1) चन्द्र बुध और लग्नेश सूर्य युक्त हो तो रक्त का रोग हो।

(2) छठे स्थान में मंगल या शनि हो। मंगल हो तो रक्त विकार शनि हो तो अन्यविकारों से रोग हो।

(3) चन्द्रमा 6 या 8 भाव में हो मङ्गल से दृष्ट हो लग्न से शनि हो तो रक्त रोग हो।

(4) षष्ठेश 8 या 4 राशि के नवांश में हो शनि से दृष्ट हो तो रुधिर और पवन विकार पीड़ित हो।

व्रण या चिह्न–

(1) पापग्रह अष्टम हो तो व्रण युक्त या चोट लगने के दाग या किसी प्रकार का चिह्न उसके गुह्य स्थान में हो तथा बाँई कमर घाव हो।

(2) शरीर में घाव–लग्नेश और अष्टमेश दोनों शनि, राहु या केतु से युक्त हो तो उनमें जो बलवान् हो उसकी दशा में शरीर में घाव होवे।

(3) चतुर्थ में मङ्गल हो तो व्रण पीड़ित या अग्नि से दग्ध हो।

(4) पंचम मंगल हो तो अग्नि व शस्त्र से पीड़ा हो संतान बराबर मरती रहे, मनुष्य दुःखी हो।

(5) 6 स्थान में मङ्गल या सूर्य हो तो शस्त्र से चोट व्रण या प्रमेह या अग्नि विष से उत्पन्न पीड़ा हो या हड्डी टूटने से पीड़ा हो।

(6) बुध के स्थान में सूर्य हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो शस्त्र की चोट से शरीर विदीर्ण हो।

(7) लग्नेश मङ्गल के साथ त्रिक में हो तो शस्त्र से घाव या व्रण या गठिया वात हो।

(8) लग्नेश बुध के घर में हो, बुध से युक्त या दृष्ट हो तो गुह्य स्थान में व्रण हो।

(9) व्यय में शुक्र युक्त राहु हो तो अति घाव हो।

(10) लग्न में मङ्गल हो सूर्य शनि से दृष्ट हो तो शस्त्र की चोट लगे

(11) कर्क लग्न में मङ्गल हो तो शस्त्र से चोट लगे।

(12) तीसरे भाव में शनि हो क्रूर दृष्ट हो तो बाहु में चिह्न या शस्त्राघात हो छोटे भाई को पित्त से उत्पन्न गंड माला हो।

(13) सूर्य मंगल दशम में हो तो पीठ की हड्डी के समीप या जांघ की जड़ में शस्त्र की चोट या अग्निदाह से व्रण या दाग हो।

(14) चतुर्थेश सूर्य या शनि से युक्त मंगल से दृष्ट हो, शुभ दृष्टि न हो तो पत्थर की चोट लगे।

(15) शुक्र की राशि का गुरु तीसरे भाव में हो, कोई पाप ग्रह वक्री हो तो 11 वर्ष में पत्थर का प्रहार हो।

(16) व्ययभाव में मङ्गल हो तो दाहिने और बायें भाग सम्बन्धी कमर में घाव हो, बायें नेत्र और बायें कर्ण में रोग हो। खोटे कर्म से व्रण हो।

(17) छठे स्थान में सूर्य हो, षष्ठेश पापयुक्त या दृष्ट हो तो नाभि स्थान में पित्त विकार से व्रण हो।

(18) चन्द्र लग्न में हो सूर्य मंगल दोनों सप्तम में हो तो फोड़ादि से कष्ट हो।

(19) गुरु अशुभ ग्रह की राशि में हो शुक्र शुभ ग्रह की राशि में हो तो 7 वर्ष में व्रण हो।

(20) षष्ठेश 6, 2 या 8 भाव में हो तो शरीर में व्रण हो।

(21) लग्नेश मंगल की राशि में हो, बुध से दृष्ट हो तो मुख में व्रण हो।

(22) षष्ठेश राहु या केतु युक्त लग्न में हो तो शरीर में व्रण हो।

व्रण–शनि मंगल के साथ 7, 9, 12 भाव में कहीं हो तो भी उपरोक्त फल हो।

(23) 6 या 8 घर में मंगल या केतु हो तो व्रण हो।

(24) 6, 8 में राहु और मङ्गल की दृष्टि हो तो पीठ का फोड़ा द्वार बन्द हो।

(25) षष्ठेश पापयुक्त लग्न या अष्टम में हो तो व्रण हो।

(26) षष्ठेश बुध से युक्त या दृष्ट हो तो गिरने या लोह प्रहार से अंग विदीर्ण हो, जीते हुए शत्रुवाला हो।

(27) षष्ठेश शनि युक्त हो तो पवन, पत्थर या चौपायों से चोट पहुँचे।

सिर के घाव–

(1) लग्न में लग्नेश और शनि हो, पापग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो सिर में चोट, गिरने से चट्टान, अग्नि या शस्त्र से हो।

मूत्ररोग–

(1) सप्तम में शनि व राहु हो तो मूत्र रोग हो। मूत्र कृच्छ–षष्ठ में जलराशि हो उसमें चन्द्र हो।

(2) षष्ठेश जलराशि में हो और उस पर बुध की दृष्टि हो।

(3) सप्तम में मङ्गल पापयुक्त या दृष्ट हो, तो मूत्र कृच्छ रोग हो, पुरुषत्व से हीन हो।

(4) षष्ठेश पापयुक्त नवम में हो या षष्ठेश व्ययेश युक्त कहीं हो पर शनि से दृष्ट हो तो मूत्रकृच्छ रोग हो।

प्रमेह–

(1) पंचम स्थान में सूर्य शनि शुक्र से युक्त हो या सूर्य लग्न में, मंगल सप्तम या दशम मंगल शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो प्रमेह रोग हो।

वीर्य विकार–लग्न में गुरु, सप्तम मङ्गल हो तो वीर्य विकार हो।

उपदंश–षष्ठ स्थान में शुक्र हो तो उपदंश रोग हो।

चन्द्र बुध और लग्नेश सूर्य युक्त राहु के साथ हो तो उपदंश हो।

इन्द्रिय रोग–अष्टम में कोई पाप ग्रह हो तो गुप्ताङ्ग में कई विकार हैं।

(2) षष्ठेश बुध युक्त लग्न में हो तो शिश्न में रोग।

(3) चन्द्र 4, 8 या 11 राशि के नवांश में शनि युक्त हो तो भोग इन्द्रिय में रोग।

(4) छठे भाव में मङ्गल लग्नेश युक्त हो तो घाव से शिश्न में रोग

(5) शुक्र 7 या 8 घर में हो तो गुप्ताङ्ग में रोग हो।

(6) षष्ठेश शनियुक्त अष्टम में हो तो किसी कठिन रोग से गुप्तेन्द्रिय में चीरफाड़ हो।

(7) षष्ठेश शनि युक्त लग्न में हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो शिश्न काटा जावे।

(8) यदि षष्ठेश मंगल सहित हो उस पर शुभ दृष्टि न हो तो किसी रोग से लिङ्ग छेदन हो अर्थात् काटा जावे, या लिङ्ग का रोग हो।

नपुसंक

(1) दशम में या अष्टम में शनि युक्त शुक्र हो शुभ दृष्टि रहित हो या शनि 6, 12 भाव में नीच का हो तो नपुसंक हो।

(2) विषम राशि में स्थित सूर्य, समराशि में स्थित चन्द्र हो परस्पर एक-दूसरे पर दृष्टि हो।

(3) विषम राशि में शनि, समराशि में बुध हो परस्पर दृष्टि हो।

(4) विषमराशि में मङ्गल, समराशि में सूर्य हो परस्पर दृष्टि हो।

(5) विषम राशि में लग्न व चन्द्र दोनों और समराशि में स्थित मङ्गल से दृष्ट हो।

(6) विषम राशि में स्थित चन्द्र व बुध ये दोनों विषम राशि स्थित मङ्गल से दृष्ट हो।

(7) लग्न, शुक्र व चन्द्र ये तीनों पुरुष ग्रहराशि व नवांश में हो तो नपुसंक हो।

(8) षष्ठेश और बुध राहु के साथ लग्नेश के सम्बन्धी हो तो नपुसंक हो।

(9) सप्तम में गुरु के साथ राहु हो तो नपुसंक हो।

गुप्तरोग–

(1) षष्ठेश वृश्चिक या कर्क के नवांश में ही मङ्गल से दृष्ट हो तो गुप्तअंग रोग से पीड़ित रहे।

(2) चन्द्र वृश्चिक या कर्क नवांश में पापयुक्त हो तो गुप्त रोग हो

(3) गुरु लग्न से व्यय स्थान में हो तो ऐसा रोग हो जिसे वैद्य भी न जान सके

प्रकट रोग

(1) अंड कोष वृद्धि–अष्टम में मङ्गल युक्त शुक्र हो तो वायु विकार से अंडकोष की वृद्धि हो।

(2) मंङ्गल की राशि में स्थित शुक्र व चन्द्र ये दोनों गुरु से दृष्ट हों तो वीर्य व रक्त इन दोनों के मिश्रित विकार से अतिशय अण्डकोष की वृद्धि हो।

(3) अष्टमेश का नवमांश स्वामी राहु के साथ हो तो अण्डवृद्धि हो।

(4) लग्न में राहु मंगल या शनि के साथ हो।

(5) मंङ्गल या राहु शनि के योग से अंड वृद्धि हो।

वृषणरोग–लग्न में मङ्गल हो तो नाभि से गुल्म तथा वृषण (फोते) में रोग हो।

गुदा रोग

(1) अष्टम भाव में पापग्रह व बारहवें स्थान में चन्द्र हो तो गुदा में रोग होकर अरिष्ट हो।

(2) लग्नेश 1, 8, 3, 6 इनमें से किसी राशि में हो शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो गुदा में रोग हो।

(3) पापयुक्त चन्द्र कर्क या कर्कांश में हो तो गुदा में रोग हो।

(4) अष्टमेश सप्तम में, षष्ठेश अष्टम में हो तो गुदा से रक्त बहने का रोग हो।

(5) लग्नेश मंगल, बुध चौथे या बारहवें भाव में एक साथ हो।

(6) इन ग्रहों की दृष्टि चौथे या बारहवें भाव पर हो तो गुदा में रोग हो।

(7) चन्द्रमा शुक्र 6 या 8 भाव में हो तो मन्दाग्नि और गुदा में रोग हो।

(8) सप्तम भाव शनि से युक्त या दृष्ट हो तो गुदा रोग गुल्म तथा प्रमेह रोग हो।

(9) पापयुक्त चन्द्र अष्टमेश की राशि में हो अष्टमेश पर राहु की दृष्टि हो तो बवासीर हो।

(10) कर्क राशि पर सूर्य हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो मूल व्याधि (बवासीर) रोग हो।

(11) वृश्चिक राशि का स्वामित्व गुह्य भाग पर है, इस राशि में मंगल या राहु हो तो मूल व्याधि हो।

(12) कर्क का चन्द्र 1, 2, 6, 8 स्थान में कहीं हो तो रक्त-पित्त या मूल व्याधि रोग हो। चन्द्र दशा में मंगल का अन्तर आने पर यह रोग होता है।

(13) लग्न में शनि, सप्तम में मङ्गल हो तो भी अर्श हो।

संग्रहणी योग–

(1) धनभाव में राहु या सूर्य हो तो संग्रहणी रोग हो।

(2) छठे भाव में शुक्र हो तो अतिसार रोग हो।

(3) 6 या 8 भाव में शनि और मङ्गल हो।

मृगी

(1) पापग्रह 6 या 8 या 12 भाव में हो गुरु परिधि वाला हो केन्द्र में न हो तो मृगी हो।

(2) लग्न में राहु और 6 भाव में चन्द्र हो तो मृगी हो।

(3) मंगल शनि युक्त हो और चन्द्र पर मंगल की दृष्टि हो तो मृगी हो।

(4) शनि मंगल और सूर्य अष्टम स्थान में आवे तो अपस्मार (मृगी) और नाना प्रकार की व्याधि उत्पन्न करते हैं।

(5) शुक्र लग्न में और चन्द्र छठे भाव में हो तो मृगी आदि रोग हो।

(6) अष्टम भाव में चन्द्रमा राहु युक्त वा बलहीन हो तो मृगी हो।

उन्माद

(1) मंगल युक्त चन्द्र छठे भाव में हो तो भ्राँति (चित्त भ्रम) श्वेत पांडु आदि रोग हो।

(2) लग्न में सूर्य, सप्तम में मंगल हो तो पागल हो।

(3) लग्न में शनि, सप्तम या त्रिकोण में मंगल हो।

(4) पंचम स्थान में पंचमेश पापग्रह हो या अस्तंगत या वक्री हो तो उसकी बुद्धि भ्रमकर पागलपन हो।

(5) लग्न में गुरु, सप्तम में, पंचम या नवम में मंगल हो तो उन्मादी या स्खलित वाणी वाला हो।

(6) सूर्य 3, 6, 12 घर में हो और यदि मंगल या चन्द्र 5 या 9 घर में हो तो वह पागल, मूर्ख या अस्थिर मन का हो।

(7) सूर्य और चन्द्र लग्न या 5 या 9 घर में कहीं हो गुरु 3 भाव में या किसी केन्द्र में हो और जन्म समय शनि सबसे बलवान् हो तो वह पागल हो।

(8) क्षीण चन्द्र और शनि बारह में हों तो पागल हो।

(9) चन्द्रमा पाप युक्त एवं राहु युक्त बारहवें में हो या सपाप चन्द्र 7, 9, या 12 घर में हो तो उन्मादी एवं कलह प्रिय हो।

(10) लग्न में गुरु सप्तम शनि हो तो बावला या पातकी हो।

(11) लग्न या त्रिकोण में सूर्य चन्द्रमा या शनि गुरु केन्द्र में हो तो उन्माद हो।

(12) जन्मसमय में शनि या मंगलवार हो बुध केन्द्र में या चन्द्र शुभांश रहित हो तो उन्माद बुद्धि भ्रम से युक्त रहे।

(13) शुक्र कर्क लग्न में हो उन्मादी।

(14) तृतीय या नवम में शनि हो।

सनकी

(1) शनि लग्न में, मंगल सप्तम और शनि नीच में हो तो सनकी होवे।

(2) शनि मंगल युक्त लग्न से 6 या 9 भाव में हो।

(2) बुध और चन्द्र केन्द्र में हों तो वह सनकी और दु:खी होगा।

पिशाच बाधा—चन्द्र लग्न में हो राहु से ग्रस्त हो (ग्रहण का समय हो) और 5, 9 भाव में पापग्रह शनि मङ्गल हो तो उस पर पिशाच लगा रहे।

(2) राहु केतु सप्तम में हो तो पिशाच रोग हो। षष्ठेश लग्न में और लग्नेश मंगल के साथ केन्द्र में हो।

(3) शनि सप्तम में हो, शुभग्रह लग्न में हों और चन्द्र कहीं हो, पापग्रह से दृष्ट हो तो भूतप्रेत पिशाच आदि देखने से रोग हो। षष्ठेश लग्न, सप्तम या दशम में हो तथा लग्न पर मंगल दृष्टि हो। शनि और राहू लग्न में पिशाच पीड़ा।

अभिचार–

(1) लग्न पर मंगल की दृष्टि हो, षष्ठेश 10 या 6 भाव में हो तो अभिचार (जादू होने से) रोग हो।

(2) चन्द्रमा 4, 5, 6, 8, 9 राशि का लग्न में मंगल से दृष्ट हो तो खल्वाट (गंजा) हो।

(3) लग्न में 2 या 9 राशि पापग्रह युत्त हो तो चँदला (गंजा) हो।

गर्दन रोग–

तीसरे घर में नीच का ग्रह हो, छठे में अस्त ग्रह हो इन दोनों पर पाप दृष्टि हो तो गर्दन में रोग का भय हो।

(2) तृतीयेश बुध के साथ हो तो गर्दन का रोग हो।

(3) तृतीयेश राहु या केतु युक्त होकर बुध के साथ हो।

(4) राहु व द्वितीयेश दोनों तृतीयेश से युत्त हो तो गला में कष्ट हो।

दांत रोग–

(1) द्वितीय भाव में राहु हो तो दाँत रोग।

(2) चन्द्रमा पापग्रह की राशि में हो, सूर्य मङ्गल की दृष्टि हो तो दाँतों को हरने वाला हो।

(3) 1, 2 या 9 लग्न में जन्म हो, उस पर पापग्रह की दृष्टि हो तो दाँत का विकार।

(4) सूर्य शनि द्वितीयभाव में हो तो श्रवण शक्ति व दाँतों का हरण हो।

(5) लग्न में सिंह का चन्द्र हो, पापग्रहों से दृष्ट हो तो दाँत शोध रोग या मस्तक रोग।

(6) लग्न से सप्तम में सूर्य, चन्द्र, मङ्गल या शनि हो उस पर शुभग्रह की दृष्टि न हो तो दन्तरोग होता है।

(7) कर्क, कुम्भ, वृश्चिकांश का चन्द्रमा राहु केतु युक्त चतुर्थ में और पाप युक्त हो तो दाँत और कंठ रोग हो।

वाणी दोष–

(1) चन्द्र शनि युक्त हो और मंङ्गल की दृष्टि हो तो कठोर वचन बोलने वाला।

(2) धनभाव में चन्द्र और शनि हो तो धीरे बोलने वाला।

(3) बुध यदि धनस्थान में निर्बल तथा पाप दृष्ट हो तो हकलाकर बोले।

(4) धनभाव में पापयुक्त शुक्र दूसरे में हो तो गूंगा हो। यदि तीसरे द्रेष्काण में हो तो हकलावे।

(5) शनि युक्त चन्द्र पापगृही हो और सूर्य मङ्गल से दृष्ट हो तो वाणी को हरने वाला है।

(6) शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा लग्न में मङ्गल युक्त हो तो गूंगा हो।

(7) बुध 9 या 12 राशि का शनि से पूर्ण दृष्टि हो तो गद्गद् वाणी वाला हो।

(8) द्वितीयेश गुरु से युक्त अष्टम में हो तो गूंगा हो यदि स्व-स्थानी या उच्च का हो तो दोष नहीं करता।

नेत्ररोग –

(1) दूसरे या बारहवें चन्द्र हो तो नेत्रों में दोष हो।

(2) नेत्रदोष–द्वितीयेश और नेत्रकारक पापयुक्त या दृष्ट हो तो दूषित दृष्टि हो।

(3) लग्न से द्वादश भाव में मीन का सूर्य हो तो दक्षिण नेत्र में पीड़ा यदि चन्द्र हो तो बायें नेत्र में पीड़ा।

(4) लग्न में सिंह का शनि व शुक्र हो या दोनों द्वादश भाव में हो तो नेत्र पीड़ा हो।

(5) सप्तम में क्षीण चन्द्र हो तो नेत्र विकार या दरिद्र हो।

(6) यदि मंगल बारहवें हो, तो बायाँ नेत्र दूषित हो। यदि शनि 12वें हो तो दाहिना नेत्र दूषित हो।

(7) नवम में चन्द्र और सूर्य हों तो नेत्र रोगी और धनी हो।

(8) पापग्रह युक्त चन्द्र लग्न में हो तो नेत्र की हानि।

(9) मेष लग्न में सूर्य हो, तो नेत्र में रोग हो। या नेत्र में **फुली या लाल** नेत्र वाला हो।

(10) कर्क लग्न में सूर्य हो तो नेत्र में फुली हो या छोटी आंखों वाला हो।

(11) लग्न व अष्टम स्थान में शुक्र हो क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो आंसू गिरने के कारण नेत्र में पीड़ा।

(12) व्यय या धनभाव चन्द्र और सूर्य मे युक्त या दृष्ट हो तो नेत्र रोग हो।

(13) धन व्यय भाव में शुक्र या मंगल हो वहाँ चन्द्र भी हो तो नेत्रदोष कारक हो।

(14) व्ययभाव में शुक्र हो तो नेत्रपीड़ा हो।

(15) शुक्र चन्द्रमा युक्त द्वितीयेश लग्न में हो तो रात्र्यंध हो।

रतोन्ध रोग

(1) सिंह लग्न में सूर्य हो तो रतोंध का रोग हो।

(2) चन्द्र सहित शुक्र 6, 8, 12 भाव में हो तो रात्रि में अंधा हो।

(3) शुक्र, चन्द्र और द्वितीयेश तीनों एकत्र हों तो निशांध हो।

(4) जन्म में सूर्य और बुध त्रिक स्थानों में हो तो रात्र्यन्ध हो।

(5) लग्नेश के साथ सूर्य हो, और द्वितीयेश दुष्ट स्थान में हो तो जन्मान्ध हो।

(6) सिंह लग्न में जन्म हो उसमें शनि हो, तो नेत्रहीन हो, यदि शुक्र हो, तो जन्मान्ध हो।

(7) सूर्य शुक्र से युक्त हो, तो जन्म से अन्धा हो।

(8) सूर्य मङ्गल शनि चन्द्र 2, 9, 8, 12 भाव में हो, तो अपने बली ग्रह के धातु दोष से अन्धा हो।

(9) सूर्य लग्न में चन्द्र भाव में शुभ दृष्टि रहित हो तो अन्धा।

(10) पापग्रह 4 या 5 घर में हो और चन्द्र 6, 8, 12 भाव में हो तो अंधापन हो कोई शुभ दृष्टि न हो और पाप दृष्टि हो तो निश्चय अंधापन।

(12) सूर्य मंगल व शनि ये 8, 6, 2 या 12 स्थान में क्रम से हो तो अंधा हो।

(13) सूर्य नवम पञ्चम स्थान में हो पापग्रह की दृष्टि हो।

(15) पापग्रह 6, 8 भाव में हो तो अंधा हो। छठे भाव में पापग्रह बाँई आँख और आठवें में हो तो दाहिनी आँख से अंधा हो।

(16) द्वितीयेश भाव में शुक्र युक्त चन्द्र हो तो अंधा हो।

(17) चन्द्रमा शुक्र सहित व्ययभाव में या सप्तम में हो तो वाम नेत्र से हीन हो।

बधिर

सप्तम में शनि मङ्गल लग्न में राहु, बुध हो तो दोनों कान से बहिरा हो, अतिसार पीड़ा हाथ पैर में पसीना आना या शीतरोग हो।

(2) शनि सूर्य व चन्द्र ये 3, 5, 9, 11 भाव में हों शुभ ग्रह युक्त दृष्ट न हो तो बहिरा हो या कर्ण रोगी हो।

(3) षष्ठेश शुक्र लग्न में हो चन्द्रमा एवं पापग्रह की उस पर दृष्टि हो तो दाहिना कान विरुप या बधिर हो।

भुजदंड रोग

(1) शनि सूर्य की राशि में और मंगल गुरु की राशि में हो तो शुभ ग्रह से युक्त न हो तो भुजदण्ड का छेदन हो।

(2) शनि, मंगल या सूर्य की राशि में पापयुक्त हो तो भुजदण्ड का खण्ड हो।

हस्तपीड़ा–लग्न से 6 या 8 घर में सूर्य चन्द्र शनि तीनों हो तो हाथ में पीड़ा हो।

लूला–छठे स्थान में सूर्य मङ्गल शनि हो।

राहु कर्क राशि पर चन्द्रमा सिंह राशि पर हो तो सिर कटे।

पेट फटे–कृष्ण पक्ष का चन्द्र राहु बुध से युक्त हो सूर्य से भी अस्त हो।

अँगुली जुड़ी–लग्न में पापयुत्त चन्द्र हो तो पैर की अगुलियाँ वामपद का कोई भाग जुड़ा हो या बाँये हाथ में ऐसा हो। द्वितीयेश शनि के साथ अथवा शनि से दृष्ट हो तो कुत्ता काटता है सप्तम में रा0 श0 और सूर्य का योग हो तो सर्पदंश हो।

विकल–

गुरु शनि के साथ क्षीण चन्द्र दशम में हो, सप्तम में मंगल हो, तो विकल हो।

(2) चन्द्रमा अपनी राशि का होकर लग्न में हो, उस पर शनि और मङ्गल की दृष्टि हो, तो कुबड़ा हो।

(3) देह में दुर्गन्ध–शुक्र शनि की राशि में हो, तो देह में दुर्गन्ध आवे।

(4) षष्ठेश मिथुन कन्या या मकर राशि में हो, तो देह में दुर्गन्ध।

(5) केन्द्र में बुध युक्त शुक्र, मिथुन या कन्या राशि में हों।

चोर ठग या राजभय

(1) लग्नेश शनि से युक्त या दृष्ट हो तो निश्चय ठग या चोर व राजा से भय हो।

(2) लग्न में बुध केतु हो, पापदृष्टि हो, तो चोर और प्रेत आत्माओं से भय हो।

(3) 2, 3, 11, 12 भाव में पापग्रह पापदृष्ट हों, तो जेल (कारागार) जाता है। चतुर्थ में सूर्य या दशम में शनि हो तो जेलयात्रा होवे।

पिशाच पीड़ा

(1) लग्न में शनि राहु हो, तो पिशाच पीड़ा हो।

(2) द्वितीय में शनि राहु हो, तो भूत पिशाच आदि कृत रोग हो।

(3) षष्ठ में राहु केतु पापदृष्ट होकर क्रूर नवांश में हो तो पिशाच पीड़ा।

(4) अष्टम में निर्बल चन्द्र, शनि सहित होवे तो पिशाच और जल से उत्पन्न पीड़ा हो।

(5) क्षीण चन्द्र मङ्गल राहु या शनि युक्त होकर 6, 8, 12 स्थान में हो, तो पिशाच पीड़ा या पागलपन से मृत्यु हो।

(6) क्षीण चन्द्र अष्टम में राहु युक्त हो और दूसरा भाव पाप युक्त हो तो पिशाच पीड़ा से मरे।

रोग विचार:- किसी भाव का स्वामी 6,8,12 स्थान में हो और उस भाव में 6,8,12 भाव के स्वामियों में से कोई ग्रह हो तो उस भाव संबंधी रोग अवश्य होता है। जैसे चतुर्थेश 6,8,12 में से किसी जगह हो और 6,8,12 भाव के स्वामी में से कोई चतुर्थ भाव में हो तो हृदय संबंधी रोग होता है। मेषादि १२ राशियाँ शरीर के किस भाग में रोग उत्पन्न करती हैं इसका ज्ञान इस प्रकार से करना चाहिए। मेष-सिर, वृष-मुख, मिथुन-कण्ठ, कर्क-हृदय,

सिंह-वक्षस्थल, मेरुदण्ड, कन्या-पेट का ऊपरी भाग, तुला-कमर, वृश्चिक-गुदा, जननेन्द्रिय, धनु-जननेन्द्रिय का पृष्ठ भाग, कूल्हा, जाँघ, मकर-पैर का ऊपरी भाग, कुम्भ-घुटना, मीन-पैर।

सूर्यादि ग्रहों से अंग पीड़ा- सूर्य-सिर, चन्द्र-मुख, मंगल-कान, बुध-पेट, गुरु-गुर्दा, शुक्र-नेत्र, शनि-पैर, राहु केतु-अस्थि।

गूँगा- 4,8,12 (जल राशि), राशि में प्रापग्रह हो और चन्द्र पापयुक्त दृष्ट हो, षष्ठेश बुध, 4,8,12 वें भाग में पापग्रह दृष्ट हो।

कर्ण रोग-पापग्रह तृतीय भाव में पापदृष्ट। शनि, मंगल और द्वितीयेश लग्न में। बुध छठवें स्थान में शनि से दृष्ट हो। दूसरे व छठवें भाव के स्वामी लग्न में। क्षीण चन्द्र लग्न में।

क्षय रोग- चन्द्र कर्क और सूर्य सिंह राशि में। शनि व मंगल से दृष्ट गुरु, कर्क वृश्चिक व मीन राशि में। दो पापग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा शनि के साथ। केतु षष्ठेश के साथ अथवा षष्ठेश को देखता हो। तृतीयेश राहु या केतु के साथ हो। पंचमेश द्वादशेश के साथ 6,8,12 वें भाव में हो।

कंठ रोग- लग्नेश और सूर्य 6,8,12 वें हो तो तापदण्ड रोग होगा। शत्रुगृही नीचस्थ ग्रह अस्त हों।

जननेन्द्रिय रोग-कर्क या वृश्चिक राशि में चन्द्र पापदृष्ट हो। (षष्ठेश अथवा सप्तमेश द्वादशेश के साथ होकर शनि से दृष्ट हो।) आठवें भाव में राहु पापग्रह से दृष्ट हो तो 32 वें वर्ष में अत्यधिक कष्ट हो। (शुक्र 6,8,12 वें भाव में हो।) सप्तम में शुक्र, शनि और मंगल से दृष्ट हो। स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव पर शनि और बुध की दृष्टि हो अथवा शनि की दृष्टि हो। सप्तमेश मंगल के नवमांश में हो। (शुक्र षष्ठेश के साथ हो अथवा नीचस्थ या अस्त हो।) (लग्नेश छठवें हो और षष्ठेश बुध के साथ हो या बुध से दृष्ट हो।)

अध्याय-12

आजीविका विचार

आजीविका (किस तरह के धन्धे से लाभ) विचार–

आजीविका का विचार 5 प्रकार से करना।

(1) लग्न से दशम में जो ग्रह हो या दशमेश जिसके नवांश में हो।

(2) चन्द्र से दशम में जो ग्रह हो या दशमेश जिसके नवमांश में हो।

(3) सूर्य से दशम में जो ग्रहों या दशमेश जिसके नवमांश में हो।

(4) दशमस्थान को देखने वाला ग्रह।

(5) दशमभाव में कारक ग्रह सूर्य, मंगल से अधिक ग्रहचर राशि में हो तो स्वतन्त्र धन्धा जिसमें युक्ति व बुद्धि की आवश्यकता हो। अधिक ग्रह स्थिर राशि में हो, तो सरकारी नौकरी, प्राचीनसंस्था, एजेन्ट, क्लर्क, शिक्षक, कम्पनी, आड़तिया या गुमास्ते का धंधा करता है। दशम में सूर्य, मंगल या पूर्ण चन्द्र हो, तो निरन्तर सफलता मिलती है; किन्तु पापग्रह से दृष्ट न हो। दशम में बुधव्यापारी, औषधि संग्रह से, दशम में गुरु–ब्राह्मणवृत्ति या देवता के मन्दिर से। दशम में शुक्र–वाहन चौपाया भैंस आदि चाँदी या रत्न से। दशम में शनि–जिम्मेदारी का कार्य नौकरी व प्रशासन से जीविका चले। दशम में पापग्रह पाप दृष्ट या नीचस्थ ग्रह हो, तो अपमानित होकर उतार–चढ़ाव से जीविका चले। दशम में उच्च स्वराशि मित्रराशि व मित्रनवांश मूल त्रिकोण पर वर्गोत्तमी ग्रह हो, तो वह अपनी दशा अन्तर्दशा में धन्धे में विशेष लाभ देता है। जैसे शनि की कर्मजीविका मजदूरी या भार ढोने की है, वह नीचस्थ दशम में हो, तो सिर में स्वयं भार ढोयेगा, उच्चस्थ हो तो रेल, जहाज, मोटर आदि किराये पर चलायेगा इसी प्रकार अन्य ग्रहों में भी नीच व उच्चस्थ का विचार करना चाहिए।

लग्न से या चन्द्र से दशमस्थ ग्रह द्वारा आजीविका–

लग्न से दशमस्थ चन्द्र–कलाकौशल से, उत्तम व्यापार से विभिन्न धन्धों से कार्यारम्भ कर सफलता प्राप्त करता है। दशमस्थ बली सूर्य–बहुत ऊँचा धन्धा करे, सरकारी नौकरी या स्वतन्त्र अन्धे से लाभान्वित हो। दशमस्थ मंगल–विस्फोटक पदार्थ, तस्करी सैनिक, साहसी कार्य हिंसक वृत्ति से जन्मस्थान से अतिरिक्त विदेश में उपर्युक्त धन्धे से लाभ प्राप्त करे। **दशमस्थ बुध**–बहुत व्यक्ति उसके अधीन काम करें शिल्पविद्या, काव्यकलावृत्ति, ग्रन्थ लेखन व प्रकाशन और औषधिसंग्रह से जीविका का निर्वाह करे।

दशमस्थ गुरु–अधिक धन संग्रह ब्राह्मण वृत्ति से, राज्याश्रय से, सत्यता से देवधर्म (मन्दिर के गुसांई) राजकीय देवस्थान विभाग से। दशमस्थ शुक्र–स्त्री वर्ग के माध्यम से, शास्त्रीकला से, विलास वृत्ति से, श्रृंगार की वस्तुओं से राज्याश्रय से। दशमस्थ शनि–पराश्रित जीवन से, नौकरी से, दीनहीन वृत्ति से द्रव्योपार्जन करता है। लग्न चन्द्र व सूर्य इनमें जो बलवान् हो, उसके दशमेश के नवांश के स्वामी यदि सूर्य के नवमांश में हो, तो उसके द्वारा आजीविका का निर्णय–

सूर्य के नवमांश में–ऊन या पशमीने का धन्धा, औषधि, जल, जहाज युद्ध, रत्नों के व्यापार से, द्यूत से, राज्याश्रय से, दूतकर्म से, ज्ञानोपदेश से, असत्य से, सम्बन्धित कार्य से धनवान् हो। **चन्द्र के नवमांश में**–कृषिकर्म, शंख, मोती, जलोत्पन्न पदार्थ से, खेलतमाशे से, उच्चस्तरीय स्त्रियों के आश्रय से, वस्त्र व्यापार से, मिट्टी से बनी वस्तुओं से, चौपाये जानवरों से, प्रदर्शनी से, सिनेमा से मन्त्र शक्ति से, धन लाभ हो। **मंगल के नवमांश में**–मिट्टी, ताँबा, सोना, मैनसिल, अग्नि सम्बन्धी कार्य विस्फोटक पदार्थ, अस्त्र-शस्त्र, खनिजपदार्थ, फौजी जीवन, व्यायाम, लूटपाट, चोरी, झगड़े-उपद्रव, औषधि, कलपुर्जे सम्बन्धी व्यापार, फौजदारी, अदालत के वकील, सरकस आदि धन्धों से द्रव्योपार्जन होवे।

बुध के नवमांश में–गणित शास्त्र, लेखनकार्य, काव्य व शिल्प शास्त्र, ज्योतिष, पौरोहित्य कर्म चित्रकारी के धन्धे से लाभ। उच्चस्थ बुध सच्चाई से नीचस्थ बुध धर्म का ढोंगकर आजीविका चलाता है।

गुरु के नवमांश में–पंडिताई, धार्मिकउपदेश, धार्मिक संस्था से सम्बन्धित कार्य यज्ञ, हाईकोर्ट व जिले का जज, पठन-पाठन, मन्त्र जपदेव पूजन, से धनलाभ।

शुक्र के नवमांश में–पन्नारत्न, हीरा, मणि चाँदी, चतुष्पदपशु, राजपत्नी, पुष्प, सुगन्धित द्रव्य, जल, दूध, दही, आभूषण, नेत्राञ्जन, संगीत के द्रव्य नृत्यगीत, औषधि और फल व्यापार से आजीविका चले। शनि के नवमांश में परिश्रम के कार्य, गमनागमन, शरीरताडन, भारवहन, लकड़ी से बनी वस्तु दूतकर्म अन्न के क्रय-विक्रय, वकालत, मुख्तायगीरी, लड़ाई-झगड़े, फल-फूल, पत्तों के धन्धे से जीविका निर्वाह होता है।

शुक्र के नवमांश में चन्द्र–स्त्रियों की नौकरी, नलकूप का काम, वेश्या की नौकरी, जहाज की नौकरी, वेश्या का व्यापार गाने-बजाने- नाचने का धन्धा, हीजड़ों का धन्धा आदि से जीविका चले। शनि के अंश में चन्द्र–कसाई का धन्धा, नीच वृत्ति, नौकरी से धनलाभ।

भिन्न-भिन्न ग्रहों के नवांश में उपजीविका देने वाले सूर्य ग्रह से धंधा या धन प्राप्ति का विचार–

यदि सूर्य उपजीविकेश हो तो पिता का धन देता है। यदि नीच का हो, तो लड़ाई-झगड़ा करके पिता का धन प्राप्त करता है।

दशम में सूर्य का नवांश हो–घास, लकड़ी, इमारती लकड़ी के व्यापार से धन प्राप्त होता है। **सूर्य चन्द के नवांश में**–शाक भाजी, तुलसी, फूल, केले के पत्ते, केला, फलदार बगीचे के व्यापार से पूर्ण चन्द्र से, इमानदारी से, क्षीण चन्द्र से, बेईमानी से व्यापार द्वारा धन कमाता है। **मंगल के नवांश में सूर्य**–फौज की नौकरी, सुनार, कंसेरा, सोना, चाँदी, ताँबा चिट्ठीपुरजा आदि के कार्य से धन सम्पादन करता है। **बुध के नवमीश में सूर्य**–बनिये का धंधा, वस्त्र का व्यापार, सुगन्धित पदार्थ व लेखन क्रिया से द्रव्य प्राप्त करता है। **गुरु के नवमांश में सूर्य**–नौकरी पंडित, अध्यापन मुनीम का धन्धा आदि से द्रव्य प्राप्त हो। **शुक्र के नवमांश में सूर्य**–रासायनिक पदार्थ की नौकरी का व्यापार, राजकीय सेवा, किसी स्त्री की नौकरी, जड़ी-बूटी, चिकित्सा से द्रव्य प्राप्ति। **शनि के नवमांश में सूर्य**–नीच की नौकरी, मजदूरी या मुर्दे गाडने का धन्धा आदि से लाभ (कुम्भ राशि के सूर्य का नवमांश शनि का हो तो पैतृक कार्य कड़वी, घास व भंगी का कार्य करके धन कमाता है)।

भिन्न-भिन्न ग्रहों में उपजीविकेश चन्द्र का विचार

सूर्य के नवमांश चन्द्र–बगीचे में नौकरी या इसका व्यापार, स्त्री की नौकरी, ग्रामीण नौकरी, स्त्री की नौकरी, मोती का व्यापार, तालाब, नहर आदि का पानी चलाना, पानी के नलकूप का कार्य, कुम्हार का धंधा, सोने का धंधा, गुड़, घी, तेल, शक्कर, अफीम व फलादि के धन्धे में लाभ। **दशम भावस्थ चन्द्र से**–व्यापारी, शराब आदि नशीले पदार्थ, मामा के वंश में जो धन्धा हो मातृपक्ष आदि से द्रव्यलाभ हो तथा भाग्यवान् होवे।

मंगल के नवांश में चन्द्र–पैतृक धन्धा, कारीगरी का काम, पत्थर का काम, बेलदार, रत्न परीक्षक, सोने चाँदी आदि कीमती वस्तुओं के व्यापार से लाभ। बुध के नवमांश में चन्द्रमा–वाणी द्वारा, स्टेशनरी का व्यापार। गुरु के अंश में चन्द्र–नामी वैद्य व डाक्टर पंडित या साहूकार, वकील, जहाज का आफीसर, रेल का ड्राईवर आदि होकर धन मिले लग्न, सूर्य व चन्द्र इनमें से जो बली हो, उससे दशम स्थान में जो ग्रह हो, उस ग्रह के नवमांश के स्वामी के अनुसार जीविका विचार–

यदि दशम भावस्थ ग्रह सूर्य के नवमांश में हो– फलदार वृक्ष से, मन्त्रजप, धोखेबाजी, असत्य बोले जाने वाले धन्धे, जूवा, ऊन, औषधी, राजकीय सेवा, ऊन, सुवर्ण, तृण, घास आदि से आजीविका चलती है। **दशम भावस्थ ग्रह चन्द्र के नवमांश में**–व्यापार, जलोत्पन्न पदार्थ (मूंगा, मोती, मछली) वस्त्र व्यापार, स्त्री की नौकरी से द्रव्यलाभ। मंगल के नवमांश में–धातु, युद्ध, भूमि भोजनालय, सुवर्ण आयुध कसरत (पहलवानी), जासूसी, चोरी से आजीविका हो। **बुध के नवमांश में**– कविता, शास्त्राध्ययन, लेखक (क्लर्क) ज्योतिष, पौरोहित्य, काव्यकला, पूजापाठ, जप से द्रव्य लाभ। **गुरु के नवमांश में**–भगवत्कृपा से, राज्याश्रय, ब्राह्मणवृत्ति से, धार्मिक उपदेश, रुपये के लेन-देन से धन्धा चले। **शुक्र के नवमांश में**–स्त्री, चतुष्पद, नृत्य, संगीतकला, चाँदी आभूषण, रत्न (हीरामोती) दूध, रेशमीवस्त्र, कविता से द्रव्योपार्जन हो। शनि के नवमांश में–परिश्रम के कार्य, नौकरी, दुष्कर्म, क्रुधान्य भारवहन, काष्ट सम्बन्धी कार्य, हिंसक कार्य से आजीविका चलती है।

विविध ग्रहों के नवमांश में मंगल का विचार

सूर्य के अंश में मंगल–सूर्य का मंगल के नवमांश जो फल है उसके सदृश।

चन्द्र के अंश में मंगल–मंगल के अंश में चन्द्र सदृश फल। (**मंगल के अंश में मंगल**–मिट्टी व खान का व्यापार, रसायन का व्यापार, इन्जिनों का व्यापार, चीरफाड़ा का धन्धा, लुहार, सुनार, कसेरा, शस्त्र, विस्फोटक पदार्थ, कोयले के खदान की नौकरी, फौज पुलिस व म्यूनिसिपलटी की नौकरी आदि से लाभ। बुध के अंश में मंगल–मन्त्री, शिरस्तेदार कचहरी का क्लर्क, तहसीलदार, मुंसिफ, जमारखर्च का धन्धा, खजानची गुमास्ता आदि के कार्य से द्रव्यलाभ। (**गुरु के अंश में मंगल**–कुस्ती, शस्त्रविद्या, तहसीलदार के धन्धे से लाभ। **शुक्र के अंश में मंगल**–शराब का धन्धा, सर्प पकड़ना, शिकार करना, चतुष्पाद का क्रय-विक्रय आदि से लाभ।

शनि के नवमांश मंगल–तिल तेल, कण्डे-गोबर का व्यापार, तस्करी, लूटपाट, धान्य का व्यापार आदि से धन लाभ हो।

मंगल दशम भाव में–खेती भवन निर्माण सोने के धन्धे में लाभ।

भिन्न-भिन्न ग्रहों के नवांश में उपजीविकेश बुध का विचार–

सूर्य के अंश में बुध–अर्जी लिखना, मास्टर, स्वतन्त्र धन्धा आदि से लाभ।

चन्द्र के अंश में बुध–बच्चों को पढ़ाना, कथा कहना, गाना बजाना, लेखनकार्य स्त्री की नौकरी आदि से लाभ। **मंगल के अंश में बुध**–छापाखाने का धन्धा, पुष्प का व्यापार, सुगन्धित द्रव्य के धन्धे से लाभ। **बुध के अंश में बुध**–उत्तम लेखक, गणितज्ञ, कवि, पंडिताई, भिक्षुकी के धन्धे से लाभ। गुरु के अंश में बुध–हैडमास्टर, तहसीलदार, मुंसिफ, खजाञ्ची के धन्धे से लाभ।

शुक्र के अंश में बुध–गाने बजाने के धन्धे से लाभ। **शनि के अंश में बुध**–नीच संगति लड़ाई-झगड़े के धन्धे से लाभ। **बुध दशम भाव में**–बाप का धन मिले मित्रों द्वारा सहयोग से विद्या से लाभ।

भिन्न-भिन्न नवांशों में उपजीविकेश गुरु का फल–

सूर्य के अंश में गुरु–याज्ञिक कर्म, भिक्षुकी, स्वरोदयज्ञान ढोंगी, साधु मन्त्रोपदेश में आजीविका चले। **चन्द्र के अंश में गुरु**–स्त्रियों की नौकरी, पौराणिक उपाध्याय के धन्धे से लाभ। **गुरु के अंश में गुरु**–बड़ा अधिकारी हो, मुंशिफ मजिस्ट्रेट हो।

मंगल के अंश में गुरु–कुश्ती, शस्त्रविद्या से लाभ। बुध के अंश में गुरु–चिकित्सक, अध्यापक, दान ग्रहण आदि के धन्धे से लाभ। शुक्र के अंश में गुरु–खगोलविद्या व सिद्धान्त का अच्छा ज्ञान नई पुस्तकों का लेखक। **शनि के अंश में गुरु**–वकालत, मिष्ठान्न विक्रेता, तीर्थाटनादि से धन लाभ। **गुरुदशम में**–सत्कर्मी हो, बहू के पास से धन मिले, राज्याश्रय से द्रव्य लाभ हो, सुन्दरस्त्री मिले रत्नादि की प्राप्ति होवे।

भिन्न-भिन्न ग्रहों के नवमांश में उपजीविकेश शुक्र का फल–

शुक्रस्वनवमांश में–रत्न, चतुष्पद, कपास, कपड़ा, स्त्रियों की नौकरी।

शुक्र जिस ग्रह के नवमांश में हो उस ग्रह का जो धन्धा बताया है, उसी धन्धे से धन मिले। **शुक्र दशम भाव में**–संगीत काव्य नृत्य गणित के धन्धे से लाभ हो। राजा तुल्य मान हो, रत्नादि की प्राप्ति हो। शनि जिस ग्रह के अंश में हो, उस ग्रह के धन्धे के अनुसार फल करता है। शनि स्व अंश में मजदूरी, नौकरी दौड़ना, तांगा, रिक्शा, गाड़ी, चलाना, पुलिस की नौकरी, बोझा ढोना, कसाईपन, चोरी डाका आदि से धन देता है।

शनि दशम भाव में–लोगों से झगड़ा करे। उच्च का शनि दूसरी जगह जाकर नौकरी करे। शूलरोग हो, भ्रष्ट व पापकर्म करे। राहु-केतु का फल शनि सदृश है। दशम भाव में जो राशि हो या दशमेश के नवांश के स्वामी का जिस देश से सम्बन्ध हो, वहाँ से धन प्राप्ति होती है। दशमस्थ राशि अपने स्वामी से युत दृष्ट हो अथवा दशमेश का नवमांश स्थिर राशि में हो, तो अपने देश में धन कमाये, दशमेश चर राशिचर नवांश में परदेश में सुख व धन मिले। यदि द्विस्वभाव राशि के व नवांश में हो, तो देश व परदेश दोनों जगह से धन मिले। लाभेश धनभाव में धनेश, लाभ भाव में हो, तो व्यापार करे। गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र एक-दूसरे से द्विर्दादश हो, तो स्वतन्त्र धन्धा करे। बुध, गुरु, शुक्र में से कोई केन्द्र में हो, तो

स्वतन्त्र धन्धा करे। चन्द्र से 3, 11 घर में गुरु, शुक्र हो तो स्वतन्त्र धन्धे से अथवा उच्चपदाधिकार से धन प्राप्त करे। दशम में सूर्य से सरकारी नौकरी या स्वतन्त्र धन्धा करे।

धनभाव में सूर्य, बुध हो तो नौकरी करे। सूर्य, बुध कर का योग केन्द्र में हो, तो व्यापार करे। मकर का गुरु 6, 8, 12 भाव में तथा चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में हो, तो नौकरी करे। द्वितीयेश पापग्रह पापराशि में पाप दृष्ट हो, तो कठिनाई से जीविका प्राप्त करे। षष्ठेश राहु से युक्त हो अथवा सूर्य के साथ 12वें स्थान में हों तो नीचकर्म करे और दूसरों के घर में रहे। लग्न से 6वें स्थान में सूर्य और चन्द्र शनि से दृष्ट हों, तो नीचकर्म द्वारा धन कमावे। लग्नेश चन्द्रमा से पञ्चमभाव में या दूसरे भाव में हो चन्द्रमा दशम में हो, पापग्रह चन्द्र से अष्टम हो, तो नीचकर्म से जीविका चले। छटे स्थान में राहु, शनि, मंगल एकत्र हों, तो राज्य से भय हो, एक जगह स्थिर हो सूर्य लग्न में अन्यत्र जाकर नीचकर्म से द्रव्य प्राप्त करे।

पितृभाव सम्बन्धी विचार–पिता का विचार दशम व नवम भाव से और पञ्चम भाव से होता। पिता का कारक सूर्य है।

पितृसुख–चतुर्थ में शुभ ग्रह, नवमेश शुभ ग्रह हो या नवम में शुभ ग्रह हो और सूर्य शुभ ग्रह युक्त हो। दशमेश सबल होकर अपनी उच्च राशि व उच्च नवांश में हो। पञ्चमेश व सूर्य शुभग्रह युक्त हो। पितृकष्ट–दशम व नवम भाव और सूर्य पाप युक्त हो। जातक व पिता का जन्मनक्षत्र एक हो।

शुक्र व्यय में, मंगल दशम में, सूर्य सप्तम में हो। राहु व्यय में, मंगल दशम में, सूर्य सप्तम में। मंगल दशम में, शत्रुराशि 3, 6 में हो। लग्न में शनि, छठे चन्द्र और 7वें बुध। सूर्य 3 पापग्रहों से दृष्ट हो, शुभ दृष्ट न हो। गुरु की राशि का शुक्र 6, 1, 4 भाव में हो, जातक का लग्न पिता के लग्न से 2, 8, 11 घर में पड़े, तो पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, लग्न से त्रिकोण में सूर्य नवमेश सप्तम में गुरु से युत दृष्ट हो, तो पुत्र आज्ञाकारी। सूर्य परमोच्च (मेष के 10 अंश) में हो, तो पिता का आज्ञाकारी।

पितृद्वेषी–पिता के लग्न से 6 या 8 घर में पुत्र का जन्म हो। लग्नेश षष्ठेश के नवम भाव में हो। पिता की जन्म राशि से जो व्ययेश है, उसकी राशि से 3 राशियों में से किसी राशि में जातक का जन्म हो।

कारक ग्रहों का विचार–जन्मकुण्डली में दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग से ग्रह स्पष्ट करने पर जिस ग्रह के सबसे अधिक अंश हो, वह आत्मकारक ग्रह कहलाता है। तदनन्तर उत्तरोत्तर कम अंश वाले ग्रह अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पितृ, पुत्र, ज्ञाति और दारा के कारक होते हैं, इसमें सूर्य से राहु तक 8 ग्रहों से विचार करना चाहिए! राहु वक्री ग्रह होने के कारण राहुस्पष्ट को 30 अंश में घटाने पर जो शेष अंश रहे, उनसे राहु का कारकत्व विचारना चाहिए। इस प्रकार सबसे अधिक अंशवाला ग्रह आत्मकारक होता है। नवमांश कुण्डली में आत्मकारक ग्रह जिस राशि में हो, उसको लग्नमानकर कुण्डली बनाकर जन्मकुण्डली में जो ग्रह जिस राशि में हो, उस राशि में स्थापित करने पर कारकांश कुण्डली का निर्माण कर उससे फल का विचार करना चाहिये। उपर्युक्त प्रकार से भ्रातृ कारक ग्रह से भाई का मातृ कारक ग्रह से माता (पुत्र कारक) ग्रह से पुत्र का इस प्रकार शेष ग्रह जिसके कारक हों, उसका विचार करना चाहिये।

आत्मकारक ग्रह के नवमांश में आदि राशियों पर विचार–

आत्मकारक ग्रह मेष राशि के नवमांश में हो–घर में चूहे, बिल्ली का उपद्रव

आत्मकारक ग्रह वृष के नवमांश में हो–चतुष्पद पशुओं का सुख। मिथुन में–दाद, खुजलि, कुष्ठादि रोग। कर्क में–जल में डूबने का भय, कुष्ठ रोग। सिंह में–हिंसक जन्तुओं से भय कन्या में–खुजली, स्थूलता और अग्निभय। तुला में–वस्त्रादि का निर्माता, व्यापारी, वृश्चिक में–माता के स्तनों में दूध की हानि, जलज जन्तुओं से सर्प से भय।

धनु में–उच्चस्थान से गिरना अथवा वाहन से गिरना। मकर में–कण्डूरोग व गंडमाला रोग। कुम्भ में–तालाब, कूप, जलाशय निर्माता। मीन में–धर्म में दृढ़ता, मोक्ष। आत्मकारक के नवमांश में शुभग्रह शुभग्रहों से दृष्ट हो पापदृष्ट न हो, तो नृपतुल्य जातक होता है, आत्मकारक के नवमांश से केन्द्र या त्रिकोण में शुभग्रह पर पापग्रह की दृष्टि नहीं हो, तो धनी व विद्वान् हो। आत्मकारक ग्रह चन्द्र, मंगल या शुक्र के षड्वर्ग में हो, तो परस्त्रीगामी होता है। कारकांश में ग्रहस्थिति का फल–

आत्मकारक नवमांश में सूर्य हो तो–राज्यकार्यकर्त्ता। पूर्णचन्द्र से–भोगी व विद्या से जीविका चलावे (कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पञ्चमी तक क्षीण चन्द्र होता) शेष तिथियों में पूर्ण चन्द्र होता है।

शुक्र की दृष्टि या युति आत्मकारक के नवमांश में हो तो–विशिष्ट योगी, विद्वान्।

मंगल से–अग्नि से जीविका चलाने वाला। बली बुध से–कला और शिल्प विद्या में निपुण, चित्रकार कपड़े का व्यापारी। गुरु से–ज्ञानी वेदज्ञ सत्कर्मकर्त्ता। शुक्र से–कामी, दीर्घजीवी राज्यकर्म करने वाला।

शनि से–चालू धन्धा करने वाला (जिस वस्तु की माँग अधिक हो, वह धन्धा)

राहु से–लोह निर्मित यन्त्रादि, विष सम्बन्ध, तस्करी के धन्धे से लाभ।

केतु से–तस्करी धन्धा, चतुष्पद का क्रय-विक्रय कर्त्ता।

आत्म कारकांश सूर्य और राहु से युक्त हो सर्पभय या मृत्यु शुभग्रह की दृष्टि से बचाव हो जाता है। कारकांश में शुभग्रह का षड्वर्ग हो तो विषवैध बनता है। पापग्रह का षड्वर्ग हो मंगल से दृष्ट कारकांश हो, तो गृहदाह करने वाला होता है। केतुयुक्त कारकांश पर पापग्रह की दृष्टि से कर्ण रोग या कान कटे।

कारकांश पर रवि और शुक्र की दृष्टि हो तो राजकीय सेवा करे।

शनि की दृष्टि नकली संन्यासी बनाती है।

कारकांश लग्न से द्वितीय भाव में मंगल और शुक्र हो तो परस्त्रीगामी।

गुरु से स्त्री में आसक्त, राहु से स्त्री के कारण धन नाश।

कारकांश लग्न के तृतीय भाव में पापग्रह से शूरवीर, प्रतापी। शुभग्रह हो तो कायर, डरपोक। कारकांश से चतुर्थ भाव में चन्द्र या शुक्र का योग या दृष्टि से पक्का मकान, कोई उच्च का ग्रह हो, तब भी पक्का मकान, शनि या राहु का योग व दृष्टि से भी पक्का मकान, मंगल केतु की दृष्टि या योग से ईट का मकान, गुरु केतु से लकड़ी का, रवि केतु से तृण मकान हो। कारकांश लग्न से चतुर्थ में बुध से दण्डी संन्यासी, राहु से लोहयन्त्र निर्माता, मंगल से माला बनाने का कार्यकर्त्ता होता है।

पञ्चम भाव में मंगल और राहु पर चन्द्र की दृष्टि से क्षयरोग, पञ्चम पर मंगल की दृष्टि पिड की आदि रोग, केतु की दृष्टि से संग्रहणी व जलोदर रोग, पञ्चम में से परमहंस, दण्डी केतु से घड़ी बनाने वाला, शुक्र से कवि, वक्ता बनता है। पञ्चम में चन्द्र गुरु का योग, चन्द्र बुध का योग, चन्द्र शुक्र का योग ग्रन्थकार बनाता है। राहु या केतु से गणितज्ञ। कारकांश लग्न से 6वें भाव में पापग्रह से कृषिकर्त्ता शुभग्रह से आलसी, सप्तम भाव में चन्द्र गुरु के योग से सुन्दर स्त्री, सूर्य गुरु की योगदृष्टि से विकलांगी, शनि गुरु के योग व दृष्टि से तपस्विनी या रोगी, राहु से विधवा स्त्री से सम्बन्ध होता है। मंगल की दृष्टि व योग से कुलक्षणा स्त्री बुध से संगीतज्ञ। कारकांश अष्टमभाव शुभ दृष्ट से दीर्घायु, पापदृष्ट युक्त से अल्पायु होता है।

कारकांश से नवमभाव में गुरु–कृषिकर्त्ता दशम में शुभग्रह योग व दृष्टि से–बलवान् धनी बुद्धिमान् पापग्रह योग व दृष्टि से–व्यापार में हानि, पितृसुख से वञ्चित। बुध शुक्र की युति व दृष्टि से व्यापार से खूब लाभ, बड़े-बड़े काम-धन्धे करने वाला। रवि, गुरु से दृष्ट हो–गौरक्षक सूर्य, चन्द्र और गुरु के योग से–नृपतुल्य। कारकांश से नवम भाव पर गुरु की योग व दृष्टि से स्वकीय स्त्री में आसक्त। सूर्य या गुरु से युत्त दृष्ट नवम भाव से–गुरुद्रोही। शुक्र या मंगल से युत दृष्ट हो–परस्त्रीरत। कारकांश लग्न से एकादश भाव शुभग्रह युत दृष्ट हो, तो सभी प्रकार से लाभ और भ्रातृसुख। पापग्रह युत दृष्ट से–अनीति से द्रव्योपार्जन, विख्यात कारकांश से व्यय भाव शुभ युत दृष्ट से–शुभकार्यों में द्रव्यखर्च। पापयोग व दृष्टि से–बुरेकाम में खर्च, अन्त में अधोगति। सूर्य केतु के योग से–शंकर की भक्ति। सूर्य चन्द्र योग से–गौरी में भक्ति। शुक्र चन्द्र योग से–लक्ष्मी भक्ति। बुध शनि योग से–विष्णु भक्ति। गुरु शनि योग से–शिव भक्ति। राहु से युत दृष्ट हो, तो तामसी देव व दुर्गा भक्ति। केतु से–गणेश का उपासक होता है।

पदलग्न विचार–

जन्मकुंडली में लग्नेश लग्न से जिस भाव में हो, उस भाव से उतने आगे पदलग्न होता है। जैसे लग्नेश, बुध, मिथुन लग्न में 5वें भाव में स्थित है, तो 5वें भाव से 5 अंक आगे अर्थात् नवमभाव में 11 अंक है, अत: पदलग्न कुम्भ होगा। इस पदलग्न को ही आरूढ़ लग्न कहते हैं। स्वस्थान व सप्तमराशि पर पदलग्न नहीं होता, यदि स्वस्थान पर पद होता हो, तो दशम भाव को पदलग्न समझना, जब लग्नेश सप्तमभाव में हो, तो सप्तम से सप्तम भाव लग्न हुआ ऐसी स्थिति में दशम भाव को पदलग्न समझना चाहिए। यदि लग्नेश चतुर्थ में हो, तो चतुर्थ से चतुर्थ सप्तम भाव हुआ ऐसी स्थिति में चतुर्थ को ही पदलग्न मान लेना। इस पद लग्न से भी फल का विचार होता है। पदलग्न को लग्न मानकर सभी ग्रह जन्म लग्न में जिस अंक पर हो उन अंकों पर ही ग्रह स्थापित करने पर पदलग्न बनता है, इस प्रकार पदलग्न बनाकर फल का विचार करें। पदलग्न से 11 वें भाव को शुभ ग्रह देखता हो, तो न्यायोपार्जित द्रव्य से पापग्रह दृष्ट से अनीति उपार्जित द्रव्य से आजीविका चलती है। 11वें भाव में शुभ ग्रह स्थित होने से सुमार्ग से पापग्रह स्थित होने से कुमार्ग से धन कमाता है।

लग्नपद से 12वें स्थान का फल–

पदलग्न से 12वें स्थान पर शुभ व अशुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा शुभाशुभ ग्रह स्थित हो, तो

खर्चा अधिक, शुभ ग्रह के योग से शुभ कार्य में पापग्रह के सम्बन्ध से अशुभ कार्य में खर्च हो 12वें स्थान में राहु केतु से राज्यपक्ष में खर्च, बुध शुभग्रह से दृष्ट हो, तो अपने जाति के लोगों में खर्च हो। 12वें स्थान पर चन्द्र की दृष्टि से राजाओं द्वारा खर्च। द्वादश स्थान में बुध स्थित हो, तो दामाद द्वारा कलह में खर्च। मंगल शनि से–भाई द्वारा द्रव्य खर्च।

लग्न पद से सप्तम भाव का फल–

पदलग्न से सप्तम में राहु या केतु हो, तो उदररोगी। पदलग्न से सप्तम में चन्द्र, शुक्र, गुरु में से कोई ग्रह हो तो श्रीमान् (धनी) हो। यदि शुभग्रह उच्च का हो अथवा पापग्रह उच्च का हो, तो धनी व ख्याति प्राप्त हो। लग्नपद से द्वितीय स्थान में केतु–थोड़ी अवस्था में ही वृद्धावस्था चन्द्र, गुरु, शुक्र में से कोई ग्रह हो तो धनवान! शुभग्रह हो, तो नृपतुल्य। शुक्र हो तो कवि और वक्ता, बुध हो तो–विद्वान्। गुरु हो–विद्वान्। पापग्रह हो तो तस्कर।

उपपद–जन्मलग्न समराशि का हो तो द्वितीय का पद उपपद होता है, इसकी विपरीत गणना होती है। यदि विषम राशि का जन्मलग्न हो तो 12वें भाव का जो पद होता है, उसको उपपद कहते हैं, इसकी क्रमगणना होती है। जैसे धनु विषम जन्मलग्न है, इसका स्वामी गुरु है तथा 12वें स्थान का स्वामी मंगल है तथा राशि वृश्चिक है और मंगल दशम भावस्थ है, जिसकी राशि कन्या है, जो वृश्चिक से 11वीं राशि क्रम गणना से होती है, इस कन्या राशि से 11वीं राशि कर्क है, जो उपपद लग्न है। समराशि कन्या है, इसके द्वितीय भाव की राशि तुला (7) है। इसका स्वामी शुक्र पञ्चम भाव (मकर) में स्थित है, उपक्रम गणना से मकर राशि तुला से दसवीं राशि है, इससे 10वीं राशि तुला है, जो उपपदलग्न है।

उपपद में पापग्रह की राशि या पापयुक्त दृष्ट उपपद हो, तो संन्यासी हो अथवा स्त्री का नाश हो। उपपद में शुभ राशि हो या शुभयुक्त दृष्ट हो, तो स्त्री पुत्रादि का पूर्ण सुख हो। उपपद में उच्चस्थ ग्रह हो–सुन्दर हो, बहुत पत्नी हों। उच्चराशि स्थित ग्रह की दृष्टि से भी बहुत पत्नी हो एवं नीचस्थ ग्रह युक्त दृष्ट उपपद में नीच कुल की स्त्री प्राप्त हो। उपपद और उसका स्वामी शनि राहु से युक्त या दृष्ट हो तो लोकापवाद से स्त्री का त्याग या नाश हो। उपपद और उसका स्वामी शुक्र, केतु से युत दृष्ट हो तो स्त्री को रक्त प्रदर हो। उपपद व उसका स्वामी बुध, केतु से युत दृष्ट हो रोग युक्त मोटी स्त्री प्राप्त हो।

उपपद और उसका स्वामी शनि, सूर्य, राहु से युत दृष्ट हो–अस्थि ज्वरवाली स्त्री प्राप्त हो। उपपद व उसका स्वामी गुरु, राहु से युत दृष्ट हो, तो दन्तरोगी स्त्री मिले। उपपद व उसका स्वामी शनि की राशि में शनि राहु से युत दृष्ट हो, तो लंगड़ी, वातरोग वाली स्त्री प्राप्त हो। उपपद से द्वितीय स्थान में शुभग्रह की राशि अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो स्त्री सुख हो। उपपद से द्वितीय स्थान में मिथुन राशि हो–बहुत पत्नी हों। उपपद से द्वितीय स्थान में गुरु शनि हो तो–कर्ण रोगी व नेत्ररोगी स्त्री मिले। अशुभ योगों में शुभग्रह की दृष्टि पड़ने पर अथवा शुभ ग्रह का योग होने पर अशुभ फल नहीं होता।

अध्याय-13

विशिष्ट राजयोग विचार

विशिष्ट राजयोग

ज्योतिष शास्त्र के विशेष प्रकार से बनने वाले योगों को विशिष्ट राजयोग कहते हैं। ये योग सामान्य योगों से हटकर होते हैं। इस अध्याय में इन योगों की चर्चा की जा रही जो विशिष्ट प्रकार के योग होते हैं।

कलश योग–यदि सभी शुभ ग्रह नवम तथा एकादश भाव में स्थित हों तो 'कलश' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक राष्ट्रपति, राज्यपाल अथवा कोई अन्य सर्वोच्च शासकीय पद प्राप्त करता है।

कमल योग–यदि सभी ग्रह प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशमभाव में हों तो 'कमल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मन्त्री पद अथवा उच्च पद को प्राप्त करता है। तथा बड़े-बड़े लोग उससे परामर्श लेने के लिए आया करते हैं। इसी को 'नगर' योग भी कहते हैं।

सिंहासन योग–यदि सभी ग्रह द्वितीय, तृतीय, षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव मे हों तो 'सिंहासन' नामक योग होता है इस योग वाला जातक राज्य सिंहासन को प्राप्त करता है।

एकावली योग–यदि लग्न से अथवा किसी भी भाव से आरम्भ करके सातों ग्रह क्रमशः सातों भावों में स्थित हो तो 'एकावली नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मुख्यमंत्री राज्यपाल आदि उच्च पदों को प्राप्त करता है।

चतुःसार योग–यदि सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला, तथा मकर राशियों में हों तो 'चतुसार' नामक दूसरा योग होता है। इस योगवाला जातक शासन में अत्यन्त उच्च पद को प्राप्त करने वाला, उपराष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, राज्यपाल आदि होता है। साथ ही बड़ा धनी होता है तथा उसके सभी अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

अमर योग–मेष अथवा सिंह लग्न हो तथा सूर्य केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो अथवा चन्द्रमा वृष या कर्क का होकर द्वादश अथवा अष्टम भाव में बैठा हो तथा इन पर (सूर्य अथवा चन्द्रमा पर) गुरु एवं शुक्र की शुभ दृष्टि पड़ रही हो 'अमर' योग होता है। इस योग वाला जातक शासन में उच्चपद को प्राप्त करने वाला तथा दीर्घायु होता है। साथ ही, उसके समस्त अनिष्ट भी दूर होते हैं।

चाप योग–यदि शुक्र तुला राशि में, मङ्गल मेष राशि में गुरु स्वराशि में स्थित हो तो 'चाप' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक राज्याधिकारी होता है।

महासागर योग–''केन्द्रे शुभे त्रिषडाये खले'' अर्थात् लग्न, चतुर्थ, सप्तम दशम भाव में बुध, गुरु, शुक्र तथा चन्द्रमा बैठे और राहु तृतीय भाव मे, मंगल षष्ठभाव में एवं शनि एकादश भाव के हों, तो 'महासागर' नामक योग होता है। इस योग वाला राज्यपाल, राजदूत, मन्त्री आदि होता है। ऐसा व्यक्ति देवता तथा ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धा रखता है, परन्तु उसका शरीर किसी न किसी राजरोग (राजयक्ष्मा आदि) से दुःखी बना रहता है।

राजयोग–कर्क में बृहस्पति, नवमभाव में शुक्र तथा सप्तम भाव में मङ्गल एवं शनि की स्थिति हो तो ऐसे 'राजयोग' में जन्म लेने वाला जातक उच्च शासनाधिकारी, ऐश्वर्यवान, धनी, प्रतापी एवं सुखी होता है।

चक्रयोग–यदि एक राशि के अन्तर से छः राशियों में समस्त ग्रहों की स्थिति हो तो चक्र नामक योग होता है, इस योग वाला जातक राज्यपाल, राष्ट्रपति अथवा मन्त्रीपद प्राप्त करता है। वह अत्यन्त रूपवान, श्रीमान्, राजनीतिज्ञ, प्रतापी, ऐश्वर्यशाली एवं यशस्वी होता है। बीस वर्ष की आयु के बाद इस योग वाले के प्रभुत्व में वृद्धि प्रारम्भ हो जाती है।

मालायोग–यदि बुध, गुरु तथा शुक्र चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में हों तथा शेष ग्रह इन स्थानों से भिन्न भावों में हो तो माला योग होता है। इस योग वाला जातक अन्न-वस्त्र-आभूषण-धन आदि से सम्पन्न अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला, संसद सदस्य अथवा उच्च शासनाधिकारी होता है, उसे पंचायत आदि के निर्वाचन में भी पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

हंस योग–सभी ग्रह मेष, कुम्भ, धनु, तुला, मकर तथा वृश्चिक राशि में स्थित हों तो 'हंस' नामक योग होता है, इस योग वाला जातक सब प्रकार के ऐश्वर्य एवं सुखों से परिपूर्ण शासन द्वारा सम्मानित तथा शासनाधिकारी होता है।

राजमन्त्रित्व योग–यदि पापग्रह से रहित बृहस्पति केन्द्र में हो तो 'राजमन्त्रित्व नामक योग होता है। इस योग वाला जातक दानी, मानी, गुणी, संगीतज्ञ, धनी, सुखी, नीतिज्ञ तथा मन्त्रीपद प्राप्त करने वाला होता है।

गजकेसरी योग–यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से गुरु केन्द्र में हो और वह केवल शुभग्रहों से दृष्ट अथवा युत हो। किसी नीच व शत्रुराशि में न हो, तो 'गजकेसरी' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक राज्यपाल, मुख्यमंत्री अथवा अन्य उच्च शासनाधिकारी बनता है। दरिद्र कुल में उत्पन्न होकर भी इस योग के कारण शासन में बहुत उच्चपद अवश्य प्राप्त करता है।

राजहंस योग–यदि सभी ग्रह विषमराशि में स्थित हों, तो 'राजहंस' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक सब प्रकार के सुख, राज्य तथा शासन में उच्च पद को प्राप्त करता है। इस योग वाले व्यक्ति मुख्यमंत्री, राजदूत, राज्यपाल आदि होते हैं।

श्रीनाथ योग–यदि सप्तमेश दशम भाव में उच्च का होकर बैठा हो तथा दशमेश नवमेश से युत हो तो 'श्रीनाथ' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक धन, सुख, यश, कीर्ति, गुण आदि से सम्पन्न होता है। शासन में विधायक, सांसद अथवा मन्त्री पद को प्राप्त करता है।

शंखयोग–लग्नेश बली हो पंचमेश एवं षष्ठेश परस्पर केन्द्र में बैठे हो अथवा भाग्येश बली हो तथा लग्नेश एवं दशमेश चरराशि में हो तो 'शंख' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक दयालु, धर्मात्मा, पुण्यात्मा, बुद्धिमान्, गुणवान् तथा दीर्घायु होता है। वह शासन में मन्त्री अथवा मुख्यमंत्री का पद भी प्राप्त कर सकता है।

अधियोग–यदि समस्त शुभ ग्रह चन्द्रमा से षष्ठ, सप्तम तथा अष्टम भाव में हो तो 'अधि' नायक होता है। इस योग वाला जातक बड़ा अध्ययनशील 'बुद्धिमान' तेजस्वी तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह मन्त्री, राज्यपाल, सेनाध्यक्ष आदि पदों को भी प्राप्त करता है।

छत्र योग–यदि लग्न, द्वितीय, सप्तम तथा द्वादश इन चारों भावों में ही सभी ग्रह स्थित हो तो दूसरे प्रकार का 'छत्र' योग होता है। यह योग पूर्व जन्म के अत्यन्त प्रबल पुण्यों के प्रताप से ही प्राप्त होता है। इस योग वाला जातक सर्वगुण सम्पन्न, महाधनी, यशस्वी, तथा अत्युच्च शासनाधिकारी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री होता आदि है।

शशक योग–यदि शनि अपने उच्च होकर केन्द्रस्थ हो तो 'शशक' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक छोटे परन्तु कुछ उन्नत दांतों वाला, छोटे मुख वाला, चंचल तथा छोटी आंखों वाला, कृश कमर वाला, सुन्दर जांघों वाला, मध्यम कद वाला, अद्‌भुत चाल चलने वाला, जनहीन स्थान में विहार करने वाला हाथ-पांवों में खट्वाशंख, शर, मृदङ्ग, माला, वीणा आदि चिह्नों को धारण करने वाला होता है। यह जातक अनेक प्रकार की सेनाओं को रखता हुआ 70 वर्ष की आयु तक उत्तम रीति से राज्य का उपभोग करता है।

विविध राजयोग–यदि 'मेष' लग्न हो और सिंहस्थ गुरु, कुम्भ में शनि, वृष में चन्द्रमा, वृश्चिक में मङ्गल तथा मिथुन में बुध की स्थित हो तो ऐसा जातक किसी **आयोग अध्यक्ष** का होता है। या शासन में उच्च पद पर आसीन होता है।

यदि 'मेष' लग्न हो और उसमें उच्चराशिस्थ ग्रहों द्वारा दृष्ट शुक्र बैठा हो तो ऐसा जातक शासन में शिक्षामन्त्री आदि का पद प्राप्त करता है।

यदि 'मेष' लग्न हो और उसमें मङ्गल तथा गुरु स्थित हों तो ऐसा जातक शासन में विदेश मंत्री अथवा गृहमन्त्री आदि का पद प्राप्त करता है।

यदि 'मेष' लग्न हो और उसमें मङ्गल स्थित हो तथा चतुर्थ भाव में कर्कस्थ गुरु उच्च का हो तो भी जातक को शासन में विदेशमन्त्री अथवा गृहमन्त्री आदि पद प्राप्त होते हैं।

यदि मेष लग्न हो और शनि, सूर्य तथा मङ्गल ये तीनों क्रूर ग्रह अपने उच्चस्थ अथवा मूल त्रिकोणस्थ हों, तथा शुक्र नवम भाव में हो तो जातक को शासन में रक्षामन्त्री आदि का पद प्राप्त होता है।

यदि 'मेष' लग्न हो और उसमें गुरु बैठा हो तथा चन्द्रमा चतुर्थ एवं शुक्र दशम भाव में हो तो जातक को उच्च शासनाधिकार प्राप्त होता है।

यदि 'कर्क' लग्न हो तथा मंगल मेष राशि का होकर दशम भाव में बैठा हो तो जातक शत्रुजयी, राजनीतिज्ञ, एवं शासनाधिकारी होता है।

यदि 'मकर' लग्न हो मीन में उच्च के ग्रह हों तो जातक राजपाल एवं उच्चाधिकारी होता है।

यदि 'मकर' लग्न हो शनि लग्न में बैठा हो तथा सिंह में सूर्य, तुला में शुक्र तथा कर्क में चन्द्रमा हो तो ऐसा जातक राष्ट्रपति आदि सर्वोच्च पद प्राप्त करता है।

यदि 'मकर' लग्न में मङ्गल बैठा हो तथा सप्तम भाव में पूर्ण चन्द्रमा हो तो ऐसा जातक विद्वान शासनाधिकारी होता है।

यदि 'मीन' लग्न हो, चन्द्रमा लग्न में हो तथा सूर्य सिंह में, मङ्गल मकर में, एवं शनि कुम्भ राशि में हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी होता है।

यदि उच्चस्थ गुरु केन्द्र में बैठा हो तथा दशम भाव में शुक्र बैठा हो, तो जातक अत्यन्त यशस्वी शासनाधिकारी होता है।

यदि गुरु धनुराशि में चन्द्रमा के साथ हो तथा मङ्गल मकर में हो अथवा उच्चस्थ बुधलग्न में हो तो जातक मन्त्री अथवा उच्चशासनाधिकारी होता है।

यदि मीन लग्न हो, लग्न में चन्द्रमा, चतुर्थ में बुध तथा दशम में किसी उच्चस्थ ग्रह के साथ गुरु बैठा हो तो जातक संसद सदस्य आदि होता है।

यदि उच्चस्थ गुरु केन्द्र में बैठा हो तथा शुक्र दशम भाव में हो तो ऐसा जातक अत्यन्त यशस्वी शासनाधिकारी होता है।

यदि गुरु धनुराशि में चन्द्रमा के साथ हो तथा मङ्गल मकर में हो अथवा उच्चस्थ बुध लग्न में हो तो जातक मन्त्री अथवा उच्च शासनाधिकारी होता है।

यदि गुरु तथा शुक्र उच्चस्थ होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो जातक राज्यपाल, मन्त्री, मुख्यमन्त्री आदि होता है।

यदि गुरु तथा शुक्र चतुर्थ भाव में हों तो ऐसा जातक धनी, पराक्रमी तथा शासनाधिकारी होता है।

यदि गुरु बुध द्वारा दृष्ट हो तो ऐसा जातक महाधनी, शासक होता है।

यदि गुरु और शनि के मध्य में सभी ग्रह बैठे हों तो ऐसा जातक हाथी-घोड़ों से युक्त पृथ्वीपति होता है।

यदि गुरु तृतीय भाव में तथा शुक्र अष्टम भाव में हों और इनके मध्य में सभी ग्रह बैठे हों तो जातक अत्यन्त पराक्रमी राजा होता है।

गुरु तृतीय भाव में तथा चन्द्रमा एकादश भाव में हो तो ऐसा जातक राजाओं में विख्यात प्रसिद्ध भूपति होता है।

यदि गुरु पञ्चम भाव में तथा चन्द्रमा दशम भाव में हो तो ऐसा जातक अत्यन्त बुद्धिमान्, तपस्वी तथा जितेन्द्रिय राजा होता है।

यदि कर्क राशि में गुरु के साथ चन्द्रमा बैठा हो तो ऐसा जातक कश्मीर देश का राजा होता है।

यदि गुरु तथा चन्द्रमा उच्चस्थ हो तो जातक शिक्षामन्त्री आदि पद पाता है।

यदि मेष में सूर्य, कर्क में गुरु तथा तुला राशि में शनि एवं चन्द्रमा की स्थिति हो तो जातक बहुत बड़ा राजा होता है।

यदि वृष राशि में चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो तो ऐसा जातक मगध देश का राजा होता है। यदि चन्द्रमा बलवान् हो तो किसी भी अन्य श्रेष्ठ स्थान का राजा होता है।

यदि जन्मराशि का स्वामी लग्न में हो तथा लग्नेश बली होकर केन्द्र में बैठा हो तो नीच कुल में उत्पन्न जातक भी राजा होता है।

यदि जन्म कुण्डली में उच्च का सूर्य मंगल के साथ बैठा हो तो ऐसा जातक शासन के भूमि प्रबन्ध आदि विभागों का उच्च अधिकारी होता है।

यदि लग्न में शनि तथा चन्द्रमा हो तथा अष्टम भाव में शुक्र हो तो ऐसा जातक वेश्याओं से प्रीति रखने वाला मानी राजा होता है।

यदि द्वितीय भाव में शुक्र दशम भाव में गुरु तथा षष्ठ भाव में राहु की स्थिति हो तो ऐसा जातक पराक्रमी राजा होता है।

यदि मेष का सूर्य चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो जातक राजा होता है।

यदि तुला, धनु अथवा मीन राशि का शनि लग्न में हो तो राजा।

यदि लग्न में सभी पापग्रह हो तथा कर्क के गुरु की दृष्टि लग्न पर पड़ रही हो तो ऐसा जातक अत्यन्त धनी, यशस्वी राजा अथवा राजा के तुल्य होता है।

यदि सभी ग्रह तृतीय, षष्ठ, दशम तथा एकादश भाव में स्थित हो तो ऐसा जातक राजा होता है।

यदि सभी ग्रह द्वितीय, षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव में स्थित हो तो ऐसा जातक राजा होता है।

यदि मंगल उच्चराशिस्थ होकर दशम भाव में बैठा हो तो जातक तेजस्वी होता है और भूमि व्यवस्था आदि किसी विभाग में उच्चपद प्राप्त करता है।

यदि चन्द्रमा तृतीय अथवा दशम भाव में स्थित हो तथा गुरु अपने उच्च में हो, तो जातक सब प्रकार की सम्पत्ति तथा शासनाधिकार प्राप्त करता है।

यदि नवम भाव में तीन अथवा चार ग्रह हों तो ऐसा जातक राजनीतिज्ञ क्षेत्र में पूर्ण सफलता एवं अधिकार प्राप्त करता है।

यदि सभी शुभ ग्रह पणफर स्थान में हों तो जातक शासन में रक्षामन्त्री आदि उच्चपद की प्राप्ति होती है।

यदि गुरु से शनि, सूर्य एवं चन्द्रमा क्रमशः द्वितीय, चतुर्थ एवं दशम भाव में स्थित हो तथा शेष सभी ग्रह तृतीय एवं एकादश भाव में हो तो जातक अवश्य ही शासनाधिकारी होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी उच्चस्थ हो तो जातक को राजनीति में प्रवीण बनाता है। यदि पूर्ण चन्द्रमा उच्चराशि का हो तो जातक उत्तम पद पर प्रतिष्ठित होता है। अन्य ग्रह बलहीन हो केवल चन्द्रमा ही शक्तिशाली हो तो भी जातक की शक्ति का विकास है और वह कुशल राजनीतिज्ञ होता है।

यदि उच्च का गुरु केन्द्र में तथा शुक्र नवम भाव में हो तो जातक को राजनैतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

यदि वृष राशिस्थ चन्द्रमा को बृहस्पति देखता है तो जातक अत्युच्च शासनाधिकारी होता है तथा राजनीति के क्षेत्र में बड़ा यश प्राप्त करता है।

यदि शुक्र सूर्य तथा चन्द्रमा ये तीनों एक स्थान में होकर गुरु से दृष्ट हो तो जातक सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है तथा अपने गाँव का प्रधान भी होता है।

यदि लग्नेश केन्द्र में हो और अपने मित्रग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्न में शुभ ग्रह हों तो जातक न्यायाधीश अथवा विधिमन्त्री आदि पद प्राप्त करता है।

यदि पूर्ण चन्द्र जलचर राशि के नवमांश में चतुर्थ भावस्थ हो स्वराशिस्थ शुभग्रह लग्न में हो तथा केन्द्र में पापग्रह न हो तो ऐसा जातक राजदूत अथवा गुप्तचर विभाग में किसी उच्चपद को प्राप्त करता है।

किसी ग्रह की उच्चराशि लग्न में हो, वह ग्रह यदि अपने नवांश अथवा मित्र अथवा उच्च के नवमांश में केन्द्रगत शुभग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा जातक शासनाधिकारी का पद प्राप्त करता है।

यदि केन्द्र में उच्चराशिस्थ पापग्रह बैठे हो तो ऐसा जातक धनहीन शासक होता है।

सुनफा योग–यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में सूर्य के अतिरिक्त कोई अन्यग्रह हो तो 'सुनफा' नामक योग होता है।

अनफा योग–यदि जन्म कुण्डली में 'चन्द्रमा' से बारहवें स्थान में 'सूर्य' के अतिरिक्त अन्य ग्रह स्थित दुरधरायोग हो यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से द्वितीय एवं द्वादश सीानों में सूर्य को छोड़कर ग्रह हों तो दुरधरायोग होता है। सुनधा अनफा एवं दुरधरा शुभकारक योग हैं इन योगों में उत्पन्न जातक राजकीय सुखों को प्राप्त करते हैं। तो 'अनफा' नामक योग होता है।

केमद्रुम योग–यदि 'चन्द्रमा' से दूसरे तथा बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' नामक योग होता है।

केमद्रुम योग वाला जातक स्त्री-पुत्र हीन, अपने कुटुम्बियों के सुख से रहित, कुत्सित आचार-विचार वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मलिन वस्त्रधारी, डरपोक, कुत्सित, नीच, निर्धन, दूतकर्म करने वाला, विदेश में रहने वाला, कुरुप, धर्मविरुद्ध आचरण करने वाला,. परन्तु दीर्घायु होता है। इस योग वाले जातक का जन्म चाहे राजा के घर में ही क्यों न हुआ हो तो भी उसमें उपर्युक्त कुलक्षण पाये जाते हैं।

केमद्रुम भंग योग–निम्नलिखित ग्रह स्थिति मे केमद्रुम भंग हो जाता है।

(1) यदि चन्द्रमा केन्द्र में हो अथवा किसी अन्य ग्रह से युक्त हो तो केमद्रुम योग का अशुभ फल नष्ट हो जाता है।

(2) यदि चन्द्रमा पर सभी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो केमद्रुम योग का अशुभ फल नष्ट हो जाता है। तथा जातक शत्रुजयी दीर्घायु सब सार्वभौम राजा के पद को प्राप्त करता है।

(3) यदि चन्द्रमा पूर्ण बली होकर शुभ ग्रह की राशि में बैठा हो अथवा उस पर बुध, बृहस्पति एवं शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो तो केमद्रुम योग वाला जातक सुखी होकर यश प्रसिद्धि एवं सम्मान प्राप्त करता है।

वाशियोग–यदि जन्मकुण्डली में 'सूर्य' से बारहवें स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह हो तो वाशि नामक योग होता है। वाशि योग का प्रभाव इस प्रकार कहा गया है–

(1) सूर्य से बारहवें स्थान में 'मङ्गल' हो तो जातक परोपकारी परन्तु अपनी माता का अहित करने वाला होता है।

(2) सूर्य से बारहवें स्थान में 'बुध' हो तो जातक कोमल स्वभाव वाला, विनम्र, परन्तु निर्लज्ज, दरिद्र तथा अन्य लोगों की आलोचना (निन्दा) का पात्र होता है।

(3) सूर्य से बारहवें स्थान में गुरु हो तो जातक धन संचय करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(4) सूर्य से बारहवें स्थान में 'शुक्र' हो तो जातक कामी, कायर पराधीन तथा थोड़ा काम करने वाला होता है।

(5) सूर्य से बारहवें स्थान में 'शनि' हो तो जातक दयालु, तन्द्रायुक्त स्वभाव वाला, पर स्त्रीगामी तथा वृद्ध के समान आकृति वाला होता है।

सामान्य फल–'वोशियोग' वाला जातक मन्द दृष्टि, नीचे देखकर चलने वाला, मिथ्या व्यवहार करने वाला तथा बहुत काम करने वाला होता है।

वेशियोग–यदि जन्मकुण्डली में सूर्य से दूसरे स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह हो तो 'वेशि' नामक योग होता है। वेशियोग का प्रभाव इस प्रकार कहा गया है।

(1) सूर्य से दूसरे स्थान में 'मङ्गल' हो तो जातक वाहन चलाने में कुशल तथा युद्ध क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाला होता है।

(2) सूर्य से दूसरे स्थान में 'बुध' हो तो जातक सुन्दर रूपवान प्रियवादी, परन्तु दूसरों का अहित करने वाला होता है।

(3) सूर्य से दूसरे स्थान में 'गुरु' हो तो जातक सत्यवादी बुद्धिमान् धैर्यवान् तथा संग्राम में वीरता प्रदर्शित करने वाला होता है।

(4) सूर्य से दूसरे स्थान में शुक्र हो तो जातक गुणवान, लोक विख्यात तथा श्रेष्ठ होता है।

(5) सूर्य से दूसरे स्थान में 'शनि' हो तो जातक वाणिज्य-व्यवसाय में कुशल, गुरुजनों का द्वेषी तथा पराये धन का अपहरण करने वाला होता है।

सामान्य फल–'वेशियोग' वाला जातक स्थूल शरीर, दयालु वाकपटु कुछ आलसी तथा तिरछी दृष्टि वाला होता है।

उभयचरी योग–यदि जन्म कुण्डली में सूर्य से दूसरे तथा बारहवें दोनों ही स्थानों में 'चन्द्रमा' के अतिरिक्त अन्य ग्रह स्थित हो तो 'उभयचरी' नामक योग होता है।

जब दोनों ओर के ग्रह नैसर्गिक पापी हों तो पाप उभयचरी तथा नैसर्गिक शुभ ग्रह हो तो शुभ उभयचरी योग होता है। यदि एक ग्रह पापी तथा एक ग्रह शुभ हो तो सामान्य उभयचरी योग समझना चाहिए।

सामान्य फल–उभयचरी योग में जन्म लेने वाला जातक समान शारीरिक अवयवों वाला, दुष्ट ग्रीवा वाला, सुन्दर मध्यम कद वाला, अत्यन्त बलवान स्वस्थ स्थिर स्वभाव वाला, सरल दृष्टि, गम्भीर क्षमाशील, सब प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त, अचल लक्ष्मी, सम्पन्न कष्ट सहिष्णु, समदर्शी, सतोगुणी

कार्य-कुशल, भोगी, अनेक सेवकों से युक्त, बन्धुजनों को आश्रय देने वाला, उत्साही तथा राजा के समान सुखी होता है।

विशेष 'पाप उभयचरी' में मनुष्य दरिद्री रोगी तथा पराधीन होता है। 'शुभ उभयचरी' में दयालु, सुखी, बलवान, सुशील, धनी तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है। सामान्य उभयचारी में मिश्रित फल समझना चाहिए।

वापी योग–यदि लग्न, द्वितीय तथा द्वादश भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में सभी ग्रह स्थिति हों तो वापी योग होता है। इस योग वाला जातक अपने कुल में प्रमुख धनी, गुणी, अत्यन्त प्रतापी धैर्यवान प्रियवादी, सुखी, चतुर तथा दीर्घायु होता है वह वापी तड़ाग आदि जलाशयों का निर्माण भी कराता है। इसे पुत्र पौत्रादि सुख प्राप्त होता है तथा मण्डलाधिकारी भी है।

यूप योग–यदि सूर्यादि सातों ग्रह लग्न, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ इन चारों भावों में स्थित हों तो यूप नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक उदार, यज्ञकर्त्ता विद्वान्, बलवान, आत्मज्ञानी स्त्री से सुखी, धनवान तथा मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। पारस्परिक विवादों का निपटारा करने की इसमें विशेष क्षमता होती है। पंचायत के कामों में यह सफल होता है।

शरयोग–यदि सूर्यादि सातों ग्रह चतुर्थ, पंचम, षष्ठ एवं सप्तम इन चार भावों में ही स्थित हों तो 'शर' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक बाणविद्या शस्त्रविद्या में कुशल दुराचारी, वन-विहारों में आनन्द प्राप्त करने वाला, महाहिंसक दुःख से तप्त तथा सुन्दर स्त्री पाकर भी सुखी न रहने वाला होता है। इस योग वाले व्यक्ति सैनिक, पुलिस अधिकारी, जेल-निरीक्षकादि भी होते हैं।

शक्तियोग–यदि सूर्यादि सातों ग्रह सप्तम, अष्टम, नवम तथा दशम इन चार भावों में ही स्थित हों तो 'शक्ति' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक युद्ध विद्या में कुशल, छोटे-बड़े सभी लोगों से प्रेम रखने वाला, घर का अल्प सुख भोगने वाला, विवादी, आलसी, दीर्घसूत्री निर्दयी दुःखी तथा सुखहीन होता है। इस योग वाले व्यक्ति छोटे स्तर की नौकरी करने वाले अथवा छोटे व्यापारी भी होते हैं।

दण्ड योग–यदि सूर्यादि सातों ग्रह दशम, एकादश, द्वादश तथा लग्न इन चार भावों में ही स्थित हों तो 'दण्ड' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक उद्वेगी, दुःखी, स्वजनों से शत्रुता रखने वाला, दीन, दरिद्र, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, विद्यादि से रहित तथा नीच एवं उन्मत्त लोगों की संगति में सुख का अनुभव करने वाला होता है। यह दण्ड योग राजयोगों में वर्णित 'दण्डयोग' से भिन्न है।

नौकायोग–यदि लग्न से आरम्भ करके लगातार सात भावों में सातों ग्रह हो तो नौका योग होता है। इस योग वाला जातक जल से उत्पन्न वस्तुओं के व्यवसाय के द्वारा धन-धान्य से युत्त चंचल स्वभाव वाला, कृपण तथा सुख-भोगहीन होता है। ऐसे व्यक्ति नौ सैनिक जलयान चालक अथवा समुद्र से मोती सीपादि निकालने का काम करने वाले होते हैं।

कूट योग–यदि चतुर्थ भाव से आरम्भ करके अगले सातों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'कूट' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शठ, क्रूर, धनहीन, नीचकर्म करने वाला धर्माधर्म का विचार न रखने वाला, वनवासी जीवन में रुचि रखने वाला तथा भीलादि वन्यजाति के लोगों से प्रेम करने वाला होता है। ये लोग भवन, पुलादि बनाने की कला में कुशल तथा जेल कर्मचारी भी होते हैं।

द्वितीय चाप योग–यदि दशम भाव से आरम्भ करके अगले सात भावों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो चाप योग होता है। इस योग वाला जातक धनुष विद्या में निपुण वन पर्वतों में भ्रमण करने वाला, गवोन्मत्त, अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाला, मिथ्यावादी, भाग्यहीन होता है। इसे बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में ही सुख प्राप्त होता है। इस योग वाले जातक वन-विभाग, पुलिस-विभाग, गुप्तचर विभाग अथवा जेल-विभाग के कर्मचारी होते हैं। इस योग वालों को तन्त्र मन्त्रादि की सिद्धि भी हो सकती है।

समुद्रयोग–यदि प्रथम भाव से आरम्भ करके एक-एक घर को छोड़कर छः भावों में अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम एवं द्वादश भावों में सब ग्रहों की स्थिति हो तो 'समुद्र' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक दयावान, कीर्तिमान्, धैर्यवान्, ऐश्वर्यवान्, दानी धनी, यशस्वी, पुत्रवान्, राज्यमान्य, भोगी तथा लोकप्रिय होता है। वह राजा के समान कीर्तिमान् होकर अपने कुल को धन्य करता है।

युग योग–यदि दो राशियों में ही सातों ग्रहों की स्थिति हो तो युग नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला निर्लज्ज, धनपुत्र हीन, अधर्मी, अनाचारी, अविवेकी, पाखण्डी, माता-पिता के सुख से रहित तथा अस्वस्थ शरीर वाला होता है।

शूल योग–यदि तीन राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'शूल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शूर, युद्ध में विजयी, हिंसक, निन्दित कर्म करने वाला, तीक्ष्ण स्वभाव वाला, आलसी, खल तथा निर्बल होता है। वह अन्य लोगों के मन में काँटे की भाँति चुभता है। ऐसा व्यक्ति राज्यकर्मचारी बनता है।

केदार पाशयोग–यदि पाँच राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'पाश' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रपंची, दीन आकृति वाला, दानी, व्यर्थ बोलने वाला, अनेक प्रकार के अनर्थों के बन्धन उसे सब और से जकड़े रहते हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्तचर पुलिस, सेना अथवा कारागृह विभाग का कर्मचारी भी हो सकता है। इस योग वाले जातक का परिवार बहुत बड़ा होता है। जिसके पालन-पोषण में ही उसकी सम्पूर्ण आयु बीत जाती है।

दामिनी योग–यदि छः राशियों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'दामिनि' अथवा 'दाम' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक धन-रत्न, पुत्रादि से परिपूर्ण, परोपकारी, अत्यन्त ऐश्वर्यशाली, विद्वान्, उदार, सुखी शीलवान् धैर्यवान्, यशस्वी तथा क्रोधी होता है। इस योग वाले व्यक्ति को राजनीति के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्रायः नहीं मिलती है।

वीणा योग–यदि सात राशियो में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योगं वाला जातक संगीतज्ञ, गीतिवाद्य से स्नेह करने वाला, शास्त्रज्ञ, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य संचालन करता है तथा नेतृत्व प्राप्त करता है। उसे स्वयं सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं।

रज्जुयोग–यदि सभी ग्रह चर राशियों में स्थित हों तो 'रज्जु' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक सुन्दर, भ्रमणशील, उत्साही, धनोपार्जन के लिए देश परदेश में घूमने वाला, क्रूर, दुष्ट स्वभाव वाला तथा स्थान-परिवर्तन से उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

मुसल योग—यदि सभी ग्रह स्थिर राशियों में हों तो 'मुसल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक ज्ञानी, धन-धान्य एवं पुत्रादि से युक्त धनी, सुप्रसिद्ध, राजमान्य, राजा का आश्रित राजा के समान तेजस्वी तथा सदैव हर्ष एवं उन्नति पाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति विधायक अथवा शासनाधिकारी भी हो सकता है।

नलयोग—यदि सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में स्थित हों तो 'नल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक रत्न तथा धन संग्रह करने वाला, अत्यन्त चतुर, पुण्यवान, देवताओं को प्रसन्न करने वाला, यशस्वी, राजा का प्रिय-पात्र तथा कम या अधिक अंग वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीतिक दाँवपेच में अत्यन्त कुशल होने के कारण निर्वाचन में सफलता भी प्राप्त करता है।

सर्पयोग—यदि सूर्य, शनि तथा मङ्गल चतुर्थ, सप्तम, एवं दशम भाव में हो तथा चन्द्र गुरु शुक्र एवं बुध इनसे भिन्न स्थानों में हो तो सर्प नामक योग होता है। इस योग वाला जातक कुटिल, निर्धन, दीन दु:खी, भिक्षुक, निन्दित, परान्नभोजी क्रूर बहुत सोने वाला, क्रोधी तथा परोपकार के लिए सर्प के समान भयंकर अर्थात् परोपकार के कामों में विघ्न डालने वाला होता है।

गदा योग—यदि समीपस्थ दो केन्द्रों प्रथम, चतुर्थ, चतुर्थ सप्तम, अथवा सप्तम दशम भावों में ही सभी ग्रह हो तो 'गदा' योग होता है। इस योग वाला जातक धर्मात्मा, धनी, शास्त्रज्ञ, संगीतज्ञ, यज्ञकर्त्ता, मन्त्र-तन्त्र में तत्पर, स्त्री भूषणादि से युत्त, परद्वेषी तथा भयानक होता है। इस योग वाले पुलिस एवं सेना में सर्विस करते हैं। इनका भाग्योदय 28 वर्ष की आयु में होता है।

शकट योग—यदि सभी ग्रह लग्न तथा सप्तम में स्थित हों तो शकट नामक योग होता है। इस योग वाला जातक कृश शरीरी, दीन, मित्रहीन, ऐश्वर्यहीन, स्वार्थी, मूर्ख तथा रोगी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से दु:खी रहता है और उसके छोड़ने के बाद ही प्रसन्नता प्राप्त कर पाता है। इस योग वाले व्यक्ति ड्राइवरी आदि के कामों में रुचि लेते हैं तथा अपना काम निकालने में बहुत कुशल होते हैं।

पक्षीयोग—यदि चतुर्थ तथा दशम भाव में सभी ग्रह स्थित हों तो पक्षी (विहग) नामक योग होता है। इस योग वाला जातक व्यर्थभ्रमण करने वाला, सुख-भोगहीन, सदैव परदेश में रहने वाला, बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें करने वाला, कलहप्रिय, डीठ तथा सामान्यत: धनी होता है। इस योग वाले जातक के अन्य ग्रह शुभ हों तो गुप्तचर विभाग का कर्मचारी अथवा राजदूत हो सकता है। यदि उक्त स्थानों में शुभ ग्रह हों तथा तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव में पापग्रह हो तो ऐसा योग वाला व्यक्ति मण्डलाधिकारी अथवा न्यायाधीश होता है।

शृंगाटक योग—यदि सभी ग्रह लग्न, पंचम तथा नवम भाव में हों तो शृंगाटक नामक योग होता है। इस योग वाला जातक साहसी शूरवीर योद्धा, कलहप्रिय, युद्धप्रिय, कर्मठ, राजकर्मचारी अत्यन्त बुद्धिमान सुखी नित्य उत्कर्ष वाला, तथा वीरता में सफलता पाने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी सुन्दर होती है। यदि द्विभार्या योग भी हो तो इस योग वाला जातक अपनी पहली पत्नी से प्रेम तथा दूसरी से द्वेष रखता है। इसका भाग्योदय 23 वर्ष की आयु में होता है।

हल योग—यदि सभी ग्रह द्वितीय, षष्ठ एवं दशम भाव में अथवा तृतीय सप्तम एंव एकादश भाव में अथवा चतुर्थ अष्टम तथा द्वादश भाव में हों तो 'हल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक साधु सज्जनों का प्रिय, मित्रवान, दु:खी, कृषिकर्म से आजीविका प्राप्त करने वाला, बहुभोजी, धन की

कमी के कारण कष्ट पाने वाला तथा भाई-बन्धुओं से युक्त होता है। ऐसा जातक कृषिशास्त्र की शिक्षा में अधिक सफल होता है।

वज्रयोग–यदि सभी शुभग्रह लग्न और सप्तम भाव में हो अथवा सभी पापग्रह चतुर्थ एवं दशम भाव में हों तो इन दोनों स्थितियों में 'वज्र' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शूरवीर, सुन्दर निःस्पृह खल प्रकृति तथा मन्द भाग्य वाला होता है। यह बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुख भोगता है। मध्यमावस्था में अल्पसुख प्राप्त होता है। भाग्योदय अन्तिमावस्था में होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः पुलिस अथवा सेना विभाग में नौकरी करते हैं।

यव योग–यदि सभी पापग्रह लग्न तथा सप्तम भाव में हों अथवा चतुर्थ एवं दशम भाव में हो तो इन दोनों स्थितियों में 'यव' नामक योग होता है इस योग वाला जातक विनयी, शान्त, उत्साही, यशस्वी, स्थिर बुद्धि, सुखी तथा दानी होता है। अपनी युवावस्था में अर्थात् 24 वर्ष की आयु से उसे धन-सम्पत्ति तथा उक्त शुभगुणों की विशेष प्राप्ति होती है! परन्तु बाल्यावस्था दुःख में बीतती है।

काहलयोग–यदि लग्नेश बली हो अथवा चतुर्थेश एवं बृहस्पति परस्पर केन्द्रगत हों अथवा चतुर्थेश एवं दशमेश उच्च अथवा स्वराशि में हों तो काहल नामक योग होता है। इस योग वाला जातक, बलवान साहसी, धूर्त तथा चतुर होता है। ऐसे योग वाला व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सफलतायें प्राप्त करता है। यदि नवम भाव तथा चतुर्थभाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र में स्थित हो और लग्नाधिपति बली हो तो भी काहल योग बनता है। इस योग में भी शासन सुख प्राप्त होता है।

भेरीयोग–यदि नवमेश बली हो तथा लग्न, द्वितीय, सप्तम एवं द्वादश भाव में सभी ग्रह हों अथवा भाग्येश बली हो तथा शुक्र गुरु एवं लग्नेश केन्द्र में हों तो इन दोनों प्रकारों से 'भेरी' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक गुणी, सुखी, यशस्वी, आचारवान तथा उन्नतिशील होता है। वह जीवन में निरन्तर उत्कर्ष प्राप्त करता रहता है।

कलानिधि योग–यदि बुध-शुक्र से युत अथवा दृष्ट गुरु द्वितीय अथवा पंचम भाव में हो अथवा बुध शुक्र के नवांश में हो तो कलानिधि नामक योग होता है। इस योग वाला जातक स्वस्थ, सुखी, गुणी, धनी, विद्वान तथा राजमान्य होता है।

श्रीयोग–यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान होकर केन्द्र अथवा चतुर्थभाव में चन्द्र मंगल विद्यमान हों तो 'श्री' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक बहुत धनी होता है।

कमलायोग–यदि लग्न से पंचम राशि मकर अथवा कुम्भ हो तथा बुध मङ्गल से एकादश भाव में हो तो 'कमला' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक आजीवन धन-सम्पन्न बना रहता है।

भास्कर योग–यदि सूर्य से बुध द्वितीय स्थान में हो तथा बुध से चन्द्रमा एकादश स्थान में और चन्द्रमा से गुरु त्रिकोण में हो तो भास्कर नामक योग होता है। इस योग वाला जातक शूरवीर, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता, सुन्दर संगीतप्रिय, धीर, गणितज्ञ, ज्ञानी-समर्थ-पराक्रमी तथा राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है।

वसुमत योग–यदि सभी नैसर्गिक शुभ ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्र लग्न अथवा चन्द्र लग्न से उपचय स्थानों में हो तो 'वसुमत' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक अनेक प्रकार की वस्तुओं तथा धन को प्राप्त करता है।

विविध योग–विभिन्न विषयों से सम्बन्धित कुछ योग–

(1) यदि नवमेश दशम भाव में तथा दशमेश नवम भाव में हो तो जातक का पिता धनवान तथा यशस्वी होता है।

(2) पापग्रह के साथ राहु ग्रस्त चन्द्रमा लग्न में हो तो तथा अष्टमभाव में मङ्गल हो तो जातक की माता का शस्त्र द्वारा मरण होता है।

(3) पंचमेश छठे, आठवे अथवा बारहवें हो तो जातक मन्दबुद्धि होता है।

(4) पंचमेश बुध तथा गुरु से युत्त होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो तो जातक मन्दबुद्धि होता है।

(5) गुरु अपने नवांश में अथवा शुभ षष्ठमांश में हो तो जातक भूत-भविष्य पर विचार करके, परिस्थितियों के अनुसार उचित कार्य करने में कुशल होता है।

(6) यदि लग्न में शुक्र और बुध तथा लग्न चतुर्थ, सप्तम और दशम इन भावों में गुरु हो तो ऐसा जातक कुलदीपक होता है।

(7) यदि लग्न में शुक्र, बुध अथवा केन्द्र में शुक्र अथवा दशम भाव में मंगल न हो तो ऐसे व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही होता है।

(8) यदि लग्न अथवा एकादश भाव में शनि षष्ठ भाव में चन्द्र तथा सप्तम भाव में मंगल हो तो जातक के माता-पिता की मृत्यु हो जाती है।

(9) यदि लग्न अथवा पंच में सूर्य, राहु एवं मंगल स्थित हों तो जातक अपने माता-पिता का नाश करता है तथा स्वयं भी सन्तानहीन होता है।

(10) यदि लग्न अथवा सप्तम भाव में पापग्रह हो तो जातक के माता-पिता को अत्यन्त कष्ट प्राप्त होता हैं तथा उसकी स्त्री भी जीवित नहीं रहती।

(11) यदि पंचमेश से नवमेश दृष्ट अथवा युत हो तथा दशमेश से त्रिकोण स्थान में सम्बन्ध हो तो जातक यश एवं पुरस्कार प्राप्त करता है।

(12) यदि द्वादश भावस्थ शनि की बुध पर पूर्ण दृष्टि है तो जातक संसार से विरक्तिपरक भावनाओं वाला होता है।

(13) यदि सूर्य-शनि की युति हो अथवा सप्तम, द्वितीय, अष्टम अथवा द्वादश में प्रतियोग हो तो अपकीर्ति, वैधानिक आपत्तियों फौजदारी मुकदमें आदि के अवसर उपस्थित होते हैं।

(14) यदि दशम भावस्थ कोई अशुभ ग्रह पापदृष्ट हो तो जातक के अपमान का अवसर उपस्थित होता है।

(15) यदि लग्नेश अशुभ ग्रह हों और यह लग्नस्थ या दशमस्थ हो तो जातक को अपमान एवं अपयश प्राप्त होता है।

(16) यदि द्वादश भाव में पापग्रह हो तो मरने के बाद जातक की शुभगति नहीं होती।

(17) यदि पंचम भाव में गुरु तथा दशम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक राजा, बुद्धिमान अथवा तपस्वी होता है।

(18) यदि दशमेश छठे आठवें, बारहवें भाव में पापग्रहों से दृष्ट बुध गुरु तथा शुक्र हो तो जातक को किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती।

(19) यदि दशमेश, छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में हो तो जातक का मन हर समय चंचल बना रहता है जिसके कारण कोई काम ठीक नहीं होता है।

(20) यदि जन्म लग्न पापग्रहों के मध्य में हो तो मनुष्य परदेश में निवास करता है तथा अकाल-मृत्यु की सम्भावना होती है।

(21) यदि सप्तमेश चन्द्रमा धनभाव में हो तो खोई हुई सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है अथवा विवाहोपरान्त आर्थिक परिस्थितियाँ सुदृढ़ होती हैं।

द्वितीय भाव में दो ग्रहों के योग का फल

सूर्य बुध—शिष्ट सभ्य कुलीन ईमानदार सत्यवक्ता, राज्य में उच्चपदाधिकार विद्वान, व्यापारी, नाम का धनी किन्तु अर्थ कष्ट नहीं पारिवारिक सुख। उदार, चर्मरोगी, क्रोधी, सदाचारी, क्षमाशील, दीर्घायु, मितव्ययी नेत्रदोषी, धूर्तकार्यपटु, प्रेतबाधा दूर करने चतुर, ज्योतिषी होता है।

चन्द मंगल—कुलीन सभ्य धनी, प्रसन्नमुख, मनोरथसिद्धि, स्वच्छताप्रिय, धनी, उच्चपदाधिकारी लब्ध प्रतिष्ठ होता है।

चन्द शुक्र—धनी शुभ कार्यों में द्रव्यखर्च सभ्य शिष्ट कुलीन युवावस्था में यदा-कदा आर्थिक कष्ट किंतु कोई काम अर्थ के अभाव में नहीं रूकता, उच्च विचार वाला होता है

बुध शुक्र—आस्तिक अध्यात्मवादी, मित्रों से लाभ, वृद्धावस्था सुखमय श्वसुर से द्रव्य प्राप्ति का अभाव। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं। रवि शनि मंगल की युति द्वितीय भाव में शुभ नहीं होती दरिद्रता कुटुम्ब क्लेश कभी-कभी उन्माद व पागलपन का द्योतक है।

सूर्य चन्द—उन्नतिशील, शत्रुओं से काम निकालने में चतुर।

लग्न में दो ग्रहों का योग

लग्न में सूर्य चन्द—नेत्र रोगी कुशदेह क्रोधी अस्थिर सम्पत्तिमुक्त सनकी चंचल मस्तक पीड़ा, श्वास का रोगी कुशाग्र बुद्धि, हठी, जल से भय करता है।

चन्द मंगल—साहसी, महत्त्वाकांक्षी या प्रेमी, शस्त्र से आघात, अकस्मात् पिता की मृत्यु। सनकी, हठी, वातरोगी बनता है।

गुरु शनि—भावुक हठी ईमानदार, ज्योतिषशास्त्रज्ञ, सदा कार्यरत अल्प सन्तति अपव्ययी, रोगी स्त्री होता है।

सूर्य शुक्र—सफल राजनीतिज्ञ, भाषामर्मज्ञ, साहित्य प्रेमी, ऐश्वर्यशाली प्रवासी, दीर्घायु, गणितज्ञ, राजसम्मानित, धर्मात्मा, विनम्र, वार्ता में कुशल होता है।

मंगल बुध— सम्पन्न दीर्घायु, ईमानदार, राजनीति में पटु, आदर्शवादी, शास्त्रज्ञ, सन्नतिसुख, सदाचारी गणितज्ञ, मधुरभाषी होता है।

विशिष्ट कुण्डलियाँ एक दृष्टि

नवमेश बली शुभराशि में हो या गुरु या शुक्रयुत्त या दृष्ट हो तथा ऐसा योग चर् स्थिर और द्विस्भाव में हो, तो, जप, ध्यान और समाधि लगाने वाला होता है।

गुरुभक्त-जिसका नवमेश का नवांशेश गुरु या शुक्र से युक्त या दृष्ट हो, तो वह अपने गुरु या शिक्षक का बड़ा भक्त होगा।

बुद्धिमान दीर्घायु—जिसका अकेला गुरु ही लग्न में हो और सब ग्रह अशुभ भी हो, तो दीर्घायु, बुद्धिमान् और नायक होता है।

यज्ञकर्त्ता—दशमेश शुभग्रह अथवा चन्द्रमा के साथ हो और दशम में राहु केतु न हों और यज्ञकर्त्ता होता है।

अर्धचन्द्र योग—पञ्च्म भाव से एकादश भाव तक यदि क्रमश: प्रत्येक भाव में ग्रह होता अर्धचन्द्र योग होता है इस योग में उत्पन्न जातक सुभग, सर्वजन प्रिय, दर्शनीय, श्रेष्ठ, सेनाधिकारी, मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

'ध्वज' योग—जिसके लग्न में सूर्यबुध शुक्र तथा सप्तम भाव में मंगल गुरु शनि हो तो ध्वज योग होता है। इस योग वाला जातक समाज नेता हो, तथा संसद-सदस्य अथवा विधायक आदि हो सकता है।

लक्ष्मी योग—नवमेश तथा शुक्र उच्चस्थ या स्वक्षेत्री होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो लक्ष्मी नामक योग होता है। इस योग वाला जातक सौन्दर्य कीर्ति धन विद्या तथा यश सम्पन्न स्वस्थ, तेजस्वी, धर्मात्मा, दानी, स्वजन पालक, सुशील से युक्त राजतुल्य एवं राजमान्य होता है।

सरस्वती योग—यदि शुक्र बुध तथा गुरु केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो 'सरस्वती नामक' योग होता है ऐसा जातक शास्त्रज्ञ, कवि, यशस्वी गद्य-पद्य का विद्वान स्त्री-पुत्रादि से युक्त तथा राजमान्य होता है।

शुभाशुभ-विचार

शुभाशुभ के फल का विचार भाव भावेश व भाव के कारक से किया जाता है एवं भावात् भाव से भी विचार करना चाहिए। लग्न का कारक सूर्य चन्द्र धन का गुरु लघुभ्राता का मंगल तजीय भाव, चतुर्थ का चन्द्र व शनि, पञ्चम का बुध गुरु, षष्ठ का शनि, सप्तम का शुक्र, अष्टम का शनि, नवम का बुध गुरु, दशम का सूर्य मंगल, एकादश का गुरु शुक्र, द्वादश का शनि होता है। पिता का सूर्य, माता का चन्द्र, भाई का मंगल, पुत्र का गुरु, रोग का शनि, स्त्री का शुक्र, आयु का शनि, हिंसा का मंगल, राज्य का सूर्य, भाई का गुरु, भोगों का शुक्र, कारक होता है। भाव, भावेश भाव के कारक एवं भावा से भाव अर्थात् चतुर्थ से चतुर्थ स्थान पञ्चम से पञ्चम एवं भावेश जिस स्थान में उससे संख्या में जो भाव जैसे भावेश नवमस्थ है तो नवम से नवम पञ्चम स्थान, भावेश दशम में तो दशम से दशम सप्तम भाव इस प्रकार भावात्भाव का भी विचार अनिवार्य है।

पापग्रह राहु शनि सूर्य तथा मंगल है। इनका भाव भावेश भाव कारक एवं भावात् भाव स्थान पर योग व दृष्टि होने से उस भाव का अशुभ फल होता है। शुक्र व गुरु शुभग्रह हैं इनका उपर्युक्त भाव भावेशादि से योग होना अथवा इस पर इनकी दृष्टि होना शुभ फलप्रद होता है। क्षीणचन्द्र कृष्ण पक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पञ्चमी तक होता है, वह भी अशुभत्व का द्योतक है। बुध का शुभग्रहों से शुभत्व एवं पापग्रहों से युति होना अथवा उनकी दृष्टि बुध पर होने से बुध भी अशुभ फलकारक होता है। इसके अतिरिक्त चन्द्र व बुध भी शुभत्व प्रदान करते हैं। यदि कोई ग्रह स्वक्षेत्रीय (जिस राशि का स्वामी हो उस राशि में स्थित हो) होकर उस भावका कारक भी हो तो वह ग्रह परिस्थितिवश अत्यन्त शुभफल कर्ता तथा अत्यन्त अशुभ फलकर्ता दोनों प्रकार के फल को देने वाला होता है।

ऐसी स्थिति में उस ग्रह पर शुभ ग्रहों की युति व दृष्टि विशेष शुभ फलप्रद एवं पापग्रहों की युति व दृष्टि विशेष अशुभ फलप्रद होती है। यदि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह अपनी राशि में केतु के साथ स्थित हो तो, उस भाव के फल में प्रबलता हो जाती है। जैसे शुक्र स्वराशि का द्वितीय भाव में केतु के साथ हो तो द्वितीय भाव से जिन-जिन बातों का विचार होता है उनमें प्रबलता हो जाती है। नीच राशि स्थित ग्रह यदि वक्री है, तो उच्च का फल करता है तथा उच्चराशि में स्थित ग्रह हो और यदि वह वक्री भी हो जाय तो नीच का फल करता है। इस प्रकार जन्म लग्न में कोई ग्रह उच्चस्थ हो और नवमांश कुण्डली में नीच राशि में हो तो वह ग्रह नीचत्व का फल प्रदान करता है तथा जन्मलग्नस्थ ग्रह नीचराशि का होकर नवमांश में उच्च राशि का है तो उच्च का फल करता है।

जो भाव अपने भावपति से युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस भाव से विचारणीय विषयों में शुभफल होता है। यह ज्यौतिष शास्त्र का नियम सर्वमान्य है अथवा भावपति उच्चस्थ अथवा केन्द्रस्थ हो तब भी उस भाव का शुभ फल होता है, किन्तु पापग्रह अपने भाव से सप्तम भाव में स्थित हो तो अपने भाव का नाश करता है जैसे कुम्भ राशि पञ्चम में है पञ्चमस्थ सूर्य पापग्रह एकादश भाव जो सिंह राशि का होने से उसकी स्वयं की राशि है उसको देख रहा है उपर्युक्त नियमानुसार एकादश भाव सम्बन्धी शुभफल प्रद होना चाहिये किन्तु अनुभव में देखा गया है कि उस भाव (एकादश) का फल अशुभ ही होता है। जैसे एकादश भाव से बड़े भाई का विचार होता है उसका विनाश करता है अर्थात् बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता। सूर्य और चन्द्र के अतिरिक्त सभी ग्रह दो-दो राशि के स्वामी होते हैं। यदि कोई ग्रह अपनी राशि को देखता हो और किसी शुभग्रहों से भी वह भाव देखा जा रहा हो तो उस ग्रह के दूसरी राशि को भी शुभत्व प्राप्त होता है। यदि कोई ग्रह किसी भाव का स्वामी होकर स्वराशि वा उच्च राशि या केन्द्र में हो, तो उस भाव को शुभ फलप्रद माना गया है किन्तु इस स्थिति में ग्रह अपने भाव में अष्टम में स्थित होने तथा पापग्रह होने से उस भाव को वृद्धिकर अन्त में अशुभ फल करता है। यदि कोई ग्रह किसी भाव में स्वराशि व उच्चराशि में स्थित होकर भी पापग्रहों से दृष्ट हो तो उस भाव का फल अशुभ ही होता है। किसी भी भाव व ग्रह के दूसरे और द्वादश भाव में शुभ ग्रह होना शुभत्व का तथा पापग्रह का स्थित होना अशुभत्व का प्रतीक होता है।

उच्चादि राशि में स्थित ग्रह यदि शत्रुग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तब वह ग्रह निर्बल होता है। क्षीणचन्द्र स्वराशिस्थ व उच्च राशिस्थ भी निर्बल हो जाता है। सूर्य के २ राशि पीछे और २ राशि आगे होने पर चन्द्र क्षीण हो जाता है। सप्तमेश बुध सप्तम भाव में स्थित होकर पापाक्रान्त हो जाय अर्थात् पापग्रह युत दृष्ट जो जाय तो पत्नी का वियोग अल्पकाल में ही कर देता है। इसका मुख्य कारण बुध का कुमारत्व है। बुध की कुमार अवस्था (बाल्यावस्था) मानी गई है। बाल्यावस्था जीवन के प्रथम भाग में ही होती है अत: अल्पकाल में फलप्रद होता है। इसी प्रकार बुध की महादशा का शुभ व अशुभ फल प्रारम्भ से ६वर्ष तक ही अधिक प्राप्त होता है।

पुरुष की कुण्डली में सप्तम का कारक, गुरु स्त्री की कुण्डली में सप्तम का कारक शुक्र होता है इन पर भी पापग्रहों की दृष्टि होना परमावश्यक है। अत: सप्तमेश बुध सप्तमस्थ पापयुत दृष्ट हो तथा पुरुष की कुण्डली में गुरु भी पाप दृष्ट एवं स्त्री की कुण्डली में शुक्र भी पाप दृष्ट होने से सम्बन्ध विच्छेद विवाह के थोड़े दिन बाद ही हो जाता है। यदि क्षीणचन्द्र व शनि सप्तमेश होकर सप्तम में स्थित हों और पापग्रहों से युत दृष्ट हो तथा सप्तम भाव के कारक गुरु व शुक्र भी पापयुक्त दृष्ट हों तो सम्बन्ध विच्छेद तो अवश्य होगा परन्तु बहुत विलम्ब से होगा।

भाग्येश बुध तुला व मकर लग्न में होता है। भाग्य स्थान से धार्मिक वृत्ति व पुण्य कार्यों का विचार होता है यदि बुध तुला व मकर जन्मलग्न में स्थित होकर लग्नेश व शुभग्रह शुक्र गुरु से युत दृष्ट हो जाय तो जातक

महात्मा गान्धी जैसी प्रवृत्ति का बन जाता है। कुम्भ लग्न में सू.च.बु. स्थित हों शनि उच्चस्थ भाग्य भाव में व गुरु पञ्चम भावस्थ हो जाने से उच्च कोटि के धार्मिक नेता का योग बन जाता है। शनि का चन्द्र, लग्न का सूर्य लग्न का तथा जन्म लग्न का स्वामी होकर भाग्य भाव में उच्चस्थ होना तथा पञ्चमस्थ गुरु की शनि व लग्नस्थ सू.च.बु. पर दृष्टि होने से यह योग बना। शुक्र विलासी ग्रह है अर्थात् भोग प्राप्त करने वाला ग्रह है। यह शुक्र भोग स्थान अर्थात् द्वादश भाव में स्थित हो जाय तो जातक को भोगों की प्राप्ति होती है। यदि शुक्र द्वादश में (व्यय भाव) में व्ययेश के साथ स्थित हो जाय तो भोगों की प्राप्ति में अत्यधिक योग बनाता है। इसी प्रकार षष्ठ भावस्थ शुक्र की व्यय भाव पर दृष्टि होने से भी भोगों की प्राप्ति होती है। शुक्र जिस भाव से अथवा जिस कारक ग्रह से अथवा भावेश से व्यय भाव में हो तो उस भाव की वृद्धि करता है।

कुम्भ व वृश्चिक लग्न में शुक्र हो तथा गुरु धन भाव में तो मनुष्य करोड़ों का मालिक होता है। सिंह तथा वृश्चिक जन्म लग्न हो, गुरु पञ्चम भावस्थ तथा शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो अधिक संख्या में पुत्रप्रद योग बन जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक भाव व भावेश तथा भाव कारकेश से व्यय स्थान में स्थित शुक्र उस भाव की वृद्धि करता है। सिंह लग्न व कन्या लग्न में उत्पन्न जातक की कुण्डली में शनि की दृष्टि सिंह लग्न अथवा कन्या लग्न पर पड़ रही हो और सूर्य व बुध पर भी शनि दृष्टि पड़ रही हो अर्थात् सिंह लग्न में सूर्य पर कन्या लग्न में बुध पर दृष्टि हो तो जातक को दीर्घ रोगी बनाता है शनि को रोग कारक ग्रह माना गया है। यदि सिंह लग्न व कन्या लग्न में षष्ठ भाव में राहु अथवा केतु स्थित हो और शनि की दृष्टि लग्न व लग्नेश पर पड़ती हो तो असाध्य रोग का योग बन जाता है।

राज्य भाव सम्बन्धी विचार के लिये लग्न, द्वितीय भाव, सप्तम भाव, दशमभाव तथा सूर्य यदि यह सब अथवा इन में से अधिकतर बली होने पर राज्य की प्राप्ति होती है। धनु लग्न में मं.बु., व्यय में सूर्य, नवम में गुरु, षष्ठ में चन्द्र, सप्तम में शनि, दशम में राहु, चतुर्थ में केतु, शुक्रलाभ में यह ग्रहस्थिति डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी की कुण्डली में है। इस में सूर्य से द्वादश में शुक्र का होना राजयोग में प्रबल सहायक है। कर्क लग्न में चन्द्र द्वितीय में, शनि तृतीय में, मंगल चतुर्थ में, बुध व शुक्र पञ्चम, सूर्य षष्ठ में, गुरु व केतु यह प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु जी की कुण्डली है। इसमें लग्न में ६ वें भाव तक प्रत्येक भाव में ग्रह स्थिति होने का भी विशिष्ट योग है तथा कालसर्प योग भी बन रहा है परन्तु राहु से सब ग्रह अग्रिम राशि में होने से तथा केतु से गुरु अधिक अंश होने से कालसर्प भंगयोग बना। कालसर्प योग राहु की राशि के पीछे की ६ राशियों में होने से विशेष अशुभ फलप्रद होता है, अग्रिम राशियों होने से वह प्रभावहीन होता है।

वैद्य व डाक्टर योग-लग्न, द्वितीय, दशम व लाभ भाव पर तथा इनके स्वामियों पर राहु शनि व सूर्य की दृष्टि हो अथवा इनके साथ योग हो। मिथुन लग्न में गुरु बलवान् होने से राज्याश्रित जीवन होता है। द्वादश भाव अथवा द्वादशेश राहु से युत दृष्ट तथा द्वादशेश निर्बल हो तो कारागार (जेल का योग बनता है।) कन्या लग्न में जन्म हो सप्तम में शनि, षष्ठ में गुरु, पत्नी रोग से पीड़ित स्त्री की कुण्डली में पति रोग से पीड़ित रहे। मिथुन लग्नोत्पन्न व्यक्ति हिंसात्मक वृत्ति के होते हैं। यदि मिथुन लग्न में मंगल स्थित हो तो हिंसात्मक वृत्ति प्रबल होती है। मिथुन लग्न में मंगल और चतुर्थ स्थान में चन्द्र सप्तमेश से दृष्ट हो तो प्रबल हिंसात्मक वृत्ति बनती है। वृष लग्न में मंगल पञ्चम भाव में हो तो मनुष्य की वृत्ति भोगात्मक होती है।

अनेक ग्रहों के एक राशि में होने का फल

ग्रह योग

(1) सूर्य चन्द्र-क्रूर कर्म में निपुण, घमण्डी, पत्थर के यन्त्र आदिकों के व्यापार में चतुर, निरन्तर कामी (शंभु०)। अनेक प्रकार के यन्त्र बनाने वाला, पत्थर के काम करने वाला (वृ०जा०) स्त्री के वश रहें, कपट कर्म कर्ता, बड़ा उद्धत, काम करने में बड़ा अदृढ़, पराक्रमी और अल्प मन वाला (मान०)। पत्थर और यन्त्रों को बेचने वाला, माया में चतुर, कामी, चाहना सहित, अभिमानी (जा०भ०)।

सूर्य मंगल— उत्तम धर्म कर्म तथा धन से हीन रहे, क्लेशों में तत्पर, निरन्तर क्रोध युक्त (शंभु))। पापी (वृ०जा०)। तेजस्वी, पाप में मन, मिथ्याभाषी, बड़ा मूर्ख, भाई बन्दों से प्रेम करने वाला, बड़ा बलवान (मान०)। बड़ा यश, बलवान्, मूर्ख, अतिशय उद्धत, झूठ बोलने वाला, साहसी, शूरवीर, (जा०भ०)।

सूर्य बुध— प्रिय वाणी, राजमन्त्री, सेवा से धन कमावे, शास्त्रों में तत्पर, कलाओं के समूह में चतुर (शंभु)। सब कार्यों में निपुण, बुद्धि यश सौख्य युक्त (वृ०जा०)। बड़ा विद्वान्, राजाओं से मान प्राप्त, देव ब्राह्मण सेवा में मन, प्रियभाषी, यशस्वी, स्थिर धन से युक्त (मान०) प्यारी बोली, मंत्री, बहु सेवा कर धन इकट्ठा करने वाला, कलाओं में कुशल, शास्त्रों में चतुर (जा०भ०)। सूर्य बुध एक साथ होने से बुधादित्य योग होता है वह धर्मात्मा, पण्डित, धनवान्, बहुपुत्रवान् और सेवकों सहित तथा जितेन्द्रिय होता है (जैमिनि०)।

सूर्य गुरु— पुरोहिताई में चतुर, राजा का मन्त्री, मित्रों से पाये धन से सम्पन्न, चतुराई से युक्त, उपकारी (शंभु०) क्रूर स्वभाव, निरन्तर पराये कर्म में तत्पर, (वृ०जा०), राजाओं से सत्कार प्राप्त, स्वधर्म में निष्ठा, मित्रवान्, धनवान्, विद्या पढ़ने पढ़ाने वाला, सर्वत्र विख्यात (मान०)। पुरोहिताई में निपुण राजा का मन्त्री, मित्रता का धन को प्राप्त, परोपकारक, चतुर (जा०भ०)।

सूर्य शुक्र— सद् बुद्धि, संगीत बाजे आयुध कर्म में निपुण, नेत्र शक्ति से हीन, मित्र समाज प्राप्त रहे (शंभु०) रंग, मल्लादि और आयुध (हथियार) से धन पावे (वृ०जा०), शस्त्र, से प्रहार करने वाला, जेल में बन्धन पाने वाला, नाट्यशाला की हास्य भरी बातों को जानने वाला, कमजोर नेत्र, परस्त्रियों से संगम में द्रव्य प्राप्ति, परस्त्रियों में फँसा (मान०), नट बनाकर या शस्त्र का प्रयोग करके द्रव्य कमाये (फल०) गाना-बजाना और शास्त्र विद्या में सुन्दर बुद्धि, नेत्रों के बल से रहित, स्त्रीयुक्त, मित्र समाज में पूर्ण (जा०भ०)।

सूर्य शनि—धर्म में प्रीति, पुण्यबुद्धि, गुणज्ञ, स्त्री पुत्रों से सुखी सम्पन्न, अत्यन्त धातु क्रियाओं से युक्त रहे (शंभु०) ताँबा आदि धातु के काम में निपुण, अनेक बर्तन भांड़े आदि का बनाने वाला व इनके काम से द्रव्य पावे (वृ०जा०), विद्वान हो तब भी क्रिया में निष्ठ रहने वाला, धातु का जानने वाला, वृद्ध पुरुषों की तरह बर्ताव करने वाला, स्त्री तथा पत्र से रहित (मान०) धातु क्रिया व व्यवहार में बुद्धि रखने वाला, गुण का जानने वाला, धर्म प्रिय पुत्र और स्त्री से सौख्य पाने वाला, सदा अत्यन्त समृद्धियों सहित (जा०भ०)।

(2) चन्द्र मंगल—पुण्य कर्म से जीविका, कुटिल स्वभाव, प्रतापवान्, अपने आचार से हीन, कलह में तत्पर, रोग से पीड़ित, माता का शत्रु (शंभु०), क्रूर कर्म, स्त्री व मद्य के घड़े बेचने वाला, अपनी माता को क्रूर (वृ०जा०), रक्त की पीड़ा से व्याकुल, मृतिका, धातु तथा चमड़े की कारीगरी जानने वाला, धनवान्, रण में शूर, (मान०), आचार रहित, चुगल, प्रतापी, व्यापार से आजीविका, कलह प्रिय, मातृवैरी, रोग से दुःखी (जा०भ०)।

चन्द्र बुध—सुन्दर रूप, उत्तम कर्म, धन से युक्त, स्त्री में परम आसक्त, अति बोलने वाला, उत्तम वाणी के विलास वाला, कृपा से गीला मन और छोटा शरीर (शंभु०), प्यारी वाणी, अर्थ जानने वाला, सौख्य युक्त, सबका प्यारा, कीर्तिवान् (वृ०जा०), स्त्री में अति आसक्त, रूप में सुन्दर, कविता करने में चतुर, धनवान् गुणवान्, सदा हँसमुख, बड़ा विद्वान्, अपने कुल में धर्मात्मा (मान०), श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ रूप, दयालु, नम्र, स्त्री का अधिक प्रेमी, बड़ा वक्ता (जा०भ०)।

चन्द्र गुरु— सर्वदा गूढ़ होवे गूढ़ बुद्धि, अति मित्रों वाला, परोपकारी, धर्म कर्म आदि से युक्त (शंभु०), शत्रु जीतने वाला, कुल में श्रेष्ठ, चपल, धनी (वृ०जा०), देव गुरु पूजक, बन्धुजनों का मान करने वाला, धनवान् दृढ़ प्रीत करने वाला, बड़ा सुशील, (मान०) नम्रता युक्त, मजबूत, छिपी सलाह करने वाला, अपने धर्म और कर्म में तत्पर, परोपकार में चित्त (जा०भ०)।

चन्द्र शुक्ल—उत्तम गन्ध पुष्प, उत्तम वस्तु में मन, वस्त्रादि व्यापार में चतुर, व्यसन वाला, विधि जानने वाला (शंभु), वस्त्र कर्म, तंतुवाय-सूत्र बिनना, रफूगिरी व वस्त्र रंगना, सीना और वस्त्र के व्यापार में चतुर (वृ०जा०), चीजों के क्रय विक्रय में चतुर, शूद्र वृत्ति वाला, कलहकारी, अल्प वस्त्र आदि से युक्त (मान०), वस्त्र आदि के क्रय विक्रय में चतुर व्यसन रहित, विधि का जानने वाला, सुगन्ध और उत्तम पुष्प उत्तम वस्त्रों में चित्त (जा०भ०)।

चन्द्र शनि— पर स्त्री में तत्पर, वैश्य वृत्ति से जीविका, सदाचार से हीन, पराया पुत्र और पुरुषार्थ से हीन (शंभु०), उसकी माता पुनर्भू (एक जगह व्याही हुई दूसरी जगह पुत्र उत्पन्न किया) हो (वृ०जा०), हाथी घोड़े का पालन करने वाला, अल्प पुत्र वाला, वृद्धा स्त्री के संग, वेश्या से धन प्राप्त करे, खोटा स्वभाव (मान०), अनेक स्त्रियों के सेवन की इच्छा, वैश्य वृत्ति, साधु शील से रहित, पर पुत्र और पुरुषार्थ हीन (जा०भ०)।

(3) मंगल बुध— मल्ल युद्ध में चतुर, बहुत पुत्रों की अभिलाषा,अनेक प्रकार की औषधि वाला, पुण्य स्वभाव, हीन कर्म, लोह कर्म विधि जानने वाला (शंभु०), अत्तार जड़ी वक्कल, फूल पत्ते गोंद तेल और बनावटी वस्तु का व्यापार करे, कुश्ती लड़ने वाला (वृ०जा०), निर्धन, विधवा पति, दुर्भाग्य स्त्री वाला, कण वृत्ति करने वाला, सोने या लोहे की जीविका करने वाला (मान०), मल्ल विद्या में चतुर बहुत स्त्रियों की लालसा, अनेक औषधियों का व्यापार, सोना और लोहे की विधि में वृद्धि वाला (जा०भ०)।

मंगल गुरु—मन्त्र विद्या, अस्त्र शस्त्र के बोध में अत्यन्त निपुण तथा विवेकी, सेनापति राज्य, नगर या ग्राम का स्वामी, ग्रह बल के अनुसार होवे (शंभु०), नगर का स्वामी, राजा या ब्राह्मण, धनवान् (वृ०जा०), बुद्धिमान्, शिल्प शास्त्र को जानने वाला सुनने मात्र से बात का स्मरण रखे, वाक्य चतुर, घोड़ों से प्यार करने वाला, सबों में प्रधान (मान०), मन्त्र और विद्या की कला में चतुर शीलवाला, सेना का स्वामी राजा या नगर व ग्राम का स्वामी (जा०भ०)।

मंगल शुक्र—प्रपञ्च, झूठ धूर्त में प्रीत, अनेक स्त्रियों के भोग में मन, घमण्डी, सबके साथ बैर (शंभु०), मल्ल गोपालक, चतुर, परस्त्रियों में आसक्त, जुआड़ी, ठग, (वृ०जा०) गुणों द्वारा पुरुषों में प्रधान, ज्योतिषी, जुआ खेलने, झूठ बोलने में निरत, बड़ा शठ, परस्त्रियों में आसक्त, सबों में मान्य (मान०) स्त्रियों के भोग विधान में चित्त, जुआ व झूठ में प्रीत, प्रपञ्च में तत्पर अभिमान रहित, सबसे बैर (जा०भ०)।

मंगल शनि—अस्त्र शस्त्र जानने वाला, युद्ध कर्म में तत्पर, सुखहीन, और लोक में अति निन्द्य होवे (शंभु०), दु:ख कारक, झूठ बोलने वाला, निंदित काम करने वाला, (वृ०जा०), प्रशस्त वाणी, इन्द्रजाल में

निपुण, अपना धर्म छोड़ कर अन्य धर्म को मानने वाला, कलह प्रिय, विश्वासघाती, विष तथा मदिरा के झगड़ों में रहने वाला (मान०), अस्त्र और शस्त्र का जानने वाला, युद्ध करने वाला, चोरी झूठ में प्रीत, सदा सौख्य रहित (जा०भ०)।

(4) बुध गुरु— संगीत जानने वाला, नीति का स्वामी, नम्र, अधिक सुखी, उत्तम गुण, धीर सुगंधित वस्तु प्रिय, उदार (शंभु०), मल्ल गीत प्रिय, नृत्य का ज्ञाता, (वृ०जा०), नाचने गाने में कुशल, धैर्यवान्, पंडित, सदा सुखी (मान०); गान विद्या का ज्ञाता, नम्र, सौख्य युक्त, अति श्रेष्ठ धैर्यवान, निरन्तर उदार, सुगंध का भोग भोगने वाला (जा०भ०)।

बुध शुक्र—उत्तम वाणी का विकास, गुणवान्, विवेकी, सदा प्रसन्न, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर वेश, बहुतों का स्वामी (शंभु), बोलने में चतुर, भूमि और गुणों का स्वामी (वृ०जा०), नीति शास्त्र का ज्ञाता, अनेक प्रकार की कला में कुशल, धनवान्, सुन्दर वाक्य, वेद ज्ञाता, हास्य की लालसा (मान०), कुल में प्रतापी, श्रेष्ठ वाणी, सदा हर्ष युक्त, श्रेष्ठ वेश, नम्रता युक्त बहुत नौकर, गुणवान् चतुर (जा०भ०)।

बुध शनि—कलह प्रिय, चंचल चित्त, कला के समूहों में चतुर, बहुतों का पालन करने वाला परम सुशील (शंभु०), दूसरे के ठगने में चतुर, गुरु आदि के वचन उल्लंघन करने वाला (वृ०जा०) दुर्बलांग, चलने के स्वभाव वाला, उपाय रहित सबसे कलह करने वाला, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, काम करने में चतुर (मान०), चंचल स्वभाव, कलह प्रिय, कला के समूहों में चतुर, श्रेष्ठ वेश, बहुत मनुष्यों का पालक (जा०भ०)।

(5) गुरु शुक्र—स्त्री, धन, मित्र पुत्रादि से सदा सुखी, विद्या में पंडित, श्रेष्ठों से अत्यन्त शास्त्रार्थ करे (शंभु०), अच्छी विद्या जानने वाला, धन और स्त्री युक्त, बहुत गुणों से युक्त (वृ०जा०), सुन्दर स्त्री, धनवान्, धर्म में आस्तिक, प्रमाण जानने वाला विद्या से आजीविका (मान०), विद्या से पंडित, सदा पण्डितों से विवाद करने वाला, पुत्र मित्र और धन के सौख्य से युक्त (जा०भ०)।

गुरु शनि—अधिक यश, ग्राम नगर का स्वामी, स्त्री के पक्ष में संदेही, मनोरथ सिद्ध, शूरमा, धनवान्, कला जानने वाला (शंभु०), नाई या कुम्हार, अन्नकार (रसोई बनाने वाला) हो (वृ०जा०), जीविका से युक्त, बड़ा शूरवीर, यशस्वी, नगर का स्वामी, नगर के जनों में या सेना के मनुष्यों में मुख्य (मान०), शूरवीर, धनवान्, ग्राम और नगर का स्वामी, यश वाला, कलाओं में कुशल, स्त्री के आश्रय से मनोरथ पूर्ण करने वाला (जा०भ०)।

(6) शुक्र शनि—उत्तम शील, लेखन विधि से उत्पन्न खेल से युक्त, पत्थर के कामों में चतुर, चंचल बुद्धि, लकड़ी चीरने वाला, (शंभु०), अल्प दृष्टि, स्त्री के आश्रय से धन बढ़े, पुस्तक आदि लिखने में और चित्र बनाने में चतुर (वृ०जा०), सदा मतवाला, पशुपालन करने वाला, बढ़ई के काम में चतुर, खारा या खट्टा पदार्थ का प्रेमी, कारीगरी जानने वाला (मान०), शिल्प शास्त्र और लेखन विधि में चतुर, कौतुकी, घोर युद्ध करने वाला, पत्थर के काम में चतुर।

(7) सूर्य चन्द्र का विशेष विचार

सूर्य पाप ग्रहों से युक्त—पिता का नाशक (ल०चं०)

चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त—माता का नाशक

सूर्य या चन्द्र शुभ ग्रह युक्त—शुभ फल

सूर्य या चन्द्र शुभाशुभ ग्रह युक्त—शुभाशुभ (मिश्रित) फल (फ०च०)

(४) **सप्तम भाव में २ ग्रह योग का फल**

सप्तम में सूर्य चन्द्र—पुत्र मित्रों से हीन और स्त्री से युक्त होता है।

सप्तम में सूर्य मंगल—स्त्री से हीन और स्थिर शरीर वाला होता है।

सप्तम में सूर्य गुरु—स्त्री से युक्त धनवान् तथा राजबैरी।

सप्तम में सूर्य शुक्र—निर्धन, बड़ा शरीर, स्त्री से युक्त, पर्वतचारी।

सप्तम में सूर्य शनि—चाकरी करने वाला, दरिद्र, नीच कर्म।

सप्तम में चन्द्र मंगल— मिथ्याभाषी, ईर्ष्यालु, प्रलापी।

सप्तम में चन्द्र बुध—राजा या राज्य से मान, अच्छा पण्डित।

सप्तम में चन्द्र गुरु—कन्याओं से युक्त, राजा या पण्डित, वणिजी से युक्त।

सप्तम में चन्द्र शुक्र— कन्याओं से युक्त, थोड़े पुत्र, थोड़ा धन, स्त्री से युक्त।

सप्तम में चन्द्र शनि— स्त्री से हीन, नगर का स्वामी, नगर में विचरने वाला।

सप्तम में चन्द्र बुध—पहिली स्त्री मृत्यु को प्राप्त, विवादी शूरवीर।

सप्तम में मंगल गुरु— पर्वत, वन, जल में विचरने वाला, स्त्री से हीन।

सप्तम में मंगल शुक्र—स्त्री के कारण अनर्थ, दुष्टाचार वाला।

सप्तम में मंगल शनि—स्त्री के वश रहे, निर्धन, अन्य स्त्री में रत।

सप्तम में बुध गुरु—अच्छा आचरण, उत्तम स्त्री तथा स्वजनों से युक्त।

सप्तम में बुध शुक्र—राजा का मन्त्री, कल्याण कर्म, स्त्री की चेष्टा करने वाला।

सप्तम में बुध शनि—स्त्री-पुत्र सुख से हीन, रोगी और धन युक्त।

सप्तम में गुरु शुक्र—भोगी, स्त्री रत्न से युक्त, कन्याओं से युक्त।

सप्तम में गुरु शनि— मूर्ख, मित्रों से बैर, नष्ट धन, पिता का धन वाला।

सप्तम में शुक्र शनि— धन स्त्री रत्न सौख्य इनसे युक्त, कीर्तिमान् (जा०सं०)

नवम में दो ग्रह योग

नवम में सूर्य चन्द्र—नेत्र रोगी, धनी, सुभाग्य युक्त, कलह प्रेमी।

नवम में सूर्य मंगल—दु:खी, कलह प्रिय, शूरवीर, प्रचण्ड, निपुण, राजप्रिय।

नवम में सूर्य बुध—विद्वान्, बहुतों से बैर, दु:खी, नाना रोग।

नवम में सूर्य गुरु—रोगी, भूषण वस्त्र गंध पुष्प प्रिय।

नवम में सूर्य शुक्र—नेत्र रोगी, कलह प्रिय, रोगी, भाग्यवान्, सुन्दर बुद्धि।

नवम में सूर्य शनि—शठ, धूर्त रोगी, युद्ध प्रिय, अनर्थ कर्त्ता, निर्धन, अल्पायु।

नवम में चन्द्र मंगल—सम्पन्न, घाव युक्त, माता का अप्रिय, विकल अन्त।

नवम में चन्द्र बुध—पुत्र हीन, विफल शरीर, बहुत बोलने वाला, उत्तम, शास्त्र का ज्ञाता पण्डित।

नवम में चन्द्र गुरु—सौभाग्य धन से युक्त, सुखी, गुणवान् उत्तम।

नवम में चन्द्र शुक्र— माता की सपत्नी हो, व्याधि युक्त, व्यभिचारिणी का पति।

नवम में चन्द्र शनि—अति दुष्ट कर्म करने वाला, माता के कुल से भ्रष्ट।

नवम में मंगल बुध—मन्त्रियों के शास्त्र में चतुर, सुन्दर भाग्य, भोगी, उद्विग्न चित्त।

नवम में मंगल गुरु—पूज्य, धनधान्य युक्त, व्याधि या घावयुक्त शरीर, क्लेश युक्त।

नवम में मंगल शुक्र—परदेशगामी, क्रूर, महाधीर, परदेशवासी, प्रधान, स्त्री से बैर।

नवम में मंगल शनि—सौख्य और धन नष्ट, पापी, दुराचारी, अन्य स्त्रीगामी स्वजनहीन।

नवम में बुध गुरु—शास्त्र जानने वाला, न्यायी, भोगी, संपदा युक्त, समर्थ।

नवम में बुध शुक्र—पण्डित, गीत प्रिय, विख्यात, अच्छी बोली, धीर विद्वान् समर्थ।

नवम में बुध शनि—धनी प्रिय जनों से युक्त, रोगी चतुर, विषम स्वभाव, बैर कर्ता, बहु मार्गी।

नवम में गुरु शुक्र—भाग्यवान्, सुन्दर ऐश्वर्य, राजा, बड़ी आयु, सुन्दर भाग्य सम्पन्न, अनेक सुख युक्त।

नवम में गुरु शनि—धन रत्न युक्त, पूज्य स्वजन हीन, व्याधि युक्त।

नवम में शुक्र शनि—यशवान्, पृथ्वी, पति, व्याधि युक्त, शीलवान्, बहुमित्र (जा०सं०)।

(१०) लग्न से दशम में २ ग्रह योग

दशम में सूर्य चन्द्र—सुन्दर शरीर, शत्रु पर जीत, दयाहीन, सेनापति, दु:शील युक्त, राजसी स्वभाव।

दशम में सूर्य मंगल—चाकरी कर्त्ता, निष्फल कार्य, प्रधान, राजा का सेवक, नित्य उद्विग्न चित्त।

दशम में सूर्य बुध—हाथी घोड़ा पृथ्वी का स्वामी, विख्यात। यदि नीच का हो तो ऐसा नहीं होगा।

दशम में सूर्य गुरु—नील कुल में भी जन्म लेकर जाता हो, कीर्ति, सौख्य, सम्मान और धन से युक्त।

दशम में सूर्य शुक्र—राजनीति शास्त्र में चतुर, मित्र धन वाहन युक्त, बहुत कार्यों का आरम्भ करने वाला।

दशम में सूर्य शनि—परदेशगामी, चाकरी करने वाला, जो कुछ धन राजा से प्राप्त करता है उसे किसी समय चोर चुरा ले जाता है।

दशम में चन्द्र मंगल—हाथी घोड़ा खजाना सम्पदा बुद्धि से युक्त, पराक्रमी।

दशम में चन्द्र बुध—विख्यात, मानयुक्त, धनी, राजा, मंत्री, अवस्था के अन्त भाग में दु:खी, बन्धु से हीन।

दशम में चन्द्र गुरु—विद्वान् दानकर्त्ता, मान धन कीर्ति से युक्त, समृद्ध लम्बी भुजा, सबके पूजने योग्य।

दशम में चन्द्र शुक्र— मंत्री, विख्यात क्षमायुक्त, धन विभव से युक्त।

दशम में चन्द्र शनि—विख्यात, जीते हुए शत्रु वाला, राजा, 2 स्त्री।

दशम में मंगल बुध—शूरवीर बुद्धिमान्, तेजस्वी राजा से सत्कार प्राप्त, क्रूर, सेनापति धीर।

दशम में मंगल गुरु—बहुत से परिवार और धन वाला, राजा, कीर्तिमान और कर्म समर्थ।

दशम में मंगल शुक्र—शास्त्र विद्या में निपुण, माला, वस्त्र, विद्या अर्थ बुद्धि से युक्त, राजमन्त्री, स्त्री के समान शरीर।

दशम में मंगल शनि—राजा से नहीं मिलने वाला, धन वाला, किसी अपराध में राजा से दण्डित, विभव से हीन।

दशम में बुध गुरु—राजा विनीत व मन्त्री, मान, आज्ञा, विख्याति इनसे युक्त, पुत्र के जारण मारण आदि रूप हिंसा कर्म से युक्त।

दशम में बुध शुक्र—नीति शास्त्र का ज्ञाता, सब कर्मों का साधन कर्ता, साधु, नीच जनों के अनुकूल रहने वाला, राजा और समर्थ।

दशम में बुध शनि—असाधु, मलिन, मूर्ख, चाकरी करने वाला, असत्यभाषी, परोपकारी।

दशम में गुरु शुक्र—राजा, मान आज्ञा और विभव से युक्त, बहुत चाकरों वाला, सुन्दर शील युक्त।

दशम में शुक्र शनि—उत्तम कर्म कर्त्ता, विख्यात, सर्व द्वन्द्वों से हीन, राजमन्त्री।

यदि 3 या अधिक ग्रह दशम में हों तो द्विग्रहों के योग की कल्पना द्वारा युक्ति से फल विचारना। जैसे सूर्य, चन्द्र, मंगल तीनों एकत्र हों तो (1) सूर्य चन्द्र का फल (2) फिर चन्द्र मंगल का फल (3) फिर सूर्य मंगल का फल पृथक्-पृथक् विचारना।

यदि वे द्विग्रह योग 2 या 3 स्थानों में हों तो प्रत्येक स्थान का फल पृथक्-पृथक् स्थान के अनुसार होगा।

चन्द्र से दशम में द्विग्रह योग

सूर्य मंगल—अलंकार वस्त्र आदि से युक्त, दिव्य वणिजी करने वाला, शूरवीर, तीक्ष्ण और अति हिंसक।

सूर्य बुध—वस्त्र वाहन भूषण का भोगने वाला, वणिजी कर्म करने वाला; जल से जीविका वाला।

सूर्य गुरु—वीर, शूर, विख्यात, राजा से सत्कार प्राप्त, कार्य सिद्धि वाला।

सूर्य शुक्र—स्त्री के आश्रय में रहने वाला, समृद्ध, सुन्दर ऐश्वर्य युक्त राज प्रिय।

सूर्य शनि—चाकरी कर्त्ता, कृष्ण, दीन, बध और बन्धन को प्राप्त, परदेश वासी, चोरों में मुख्य।

मंगल बुध—राजा का शत्रु, महाशूर, सुन्दर कलाओं में चतुर, दीर्घायु।

मंगल गुरु—दोनों बली हों तो, मित्र जनों से प्राप्त किये धन वाला, मित्र जनों के आश्रित रहने वाला, जीवन से युक्त।

मंगल शुक्र—वणियों की वृत्ति से परदेश में रहना, सुवर्ण, मोती मणि आदि से युक्त, स्त्रियों के आश्रित जीवन।

चन्द्र से दशम में

चन्द्र से मंगल शनि—साहसी कर्म युक्त, झूठ बोलने वाला।

चन्द्र से बुध गुरु—धर्मात्मा और स्वामी, विख्यात, राज पूज्य, धनी लेखन कर्म से युक्त, शास्त्र सूत्रों को जानने वाला।

चन्द्र से बुध शुक्र—मित्र, धन, स्त्री, सौख्य से युक्त, पण्डित, मंत्री या देश पति।

चन्द्र से बुध शनि— मिट्टी का बर्तन बनाने वाला, चित्रकारी, लेखन कर्म कर्त्ता; विद्याचार्य, विख्यात।

चन्द्र से गुरु शुक्र— राजा का सेवक, ब्राह्मणों का स्वामी, समर्थ शोकहीन विद्याचार्य।

चन्द्र से गुरु शनि— पराये संताप वाला, नीच, सिद्ध किये कार्य वाला, विख्यात कर्म करने वाला।

चन्द्र से शुक्र शनि—तेल बेचने वाला, सुवर्णकार, नाच नाना करने वाला, चित्रकारी या गन्ध से जीविका।

त्रिग्रह योग

(1) सूर्य चन्द्र मंगल—उत्तम यन्त्र, पत्थर के काम में प्रवीण, लज्जा एवं दया से रहित, शूरमा (शंभु०), मन्त्र विद्या, अश्व विद्या में कुशल, रुधिर की वेदना से पीड़ित, बड़ा शूरवीर, पुत्र रहित (मान०), शूरवीर मन्त्र और अश्व विद्या का ज्ञाता, लाज और कृपा से हीन, (जा०भ०), शत्रुओं को मारने वाला, धनी नीति (कानून) का ज्ञाता (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध—राजा का काम करने वाला, बड़ा तेजस्वी, बातचीत में और सम्पूर्ण शास्त्र तथा सम्पूर्ण कलाओं में चतुर (शंभु०) विद्या धन और रूप से युक्त, काव्य और कथा का प्रेमी, सभा का प्रिय, धनवान्, राजा का सेवक, प्रिय वाक्य कहने वाला (मान०), बड़ा यश, राजा का कार्य करने वाला, बात में और शास्त्र कला में चतुर (जा०भ०), राजाओं में पूज्य, धनवान् चण्ड, दुर्बल द्रव्य वाला, विद्यायुक्त (लग्न चन्द्रि०)।

सूर्य चन्द्र गुरु—पण्डित धूर्त, चंचल, प्रवीण, सेवा जानने वाला, परदेश जाने वाला (शंभु) धर्म में तत्पर, राजा का मंत्री, दृढ़ बुद्धि, भाई बन्धुओं का पालक, देव ब्राह्मण पूजक (मान०) सेवा की विधि जानने वाला परदेश जाने वाला, चतुर, प्रवीण चपल, अत्यन्त धूर्त (जा०भ०) गुणवान्, विद्वान्, राजा का प्रिय (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र शुक्र—उत्तम धर्म कर्म में अरुचि, पराया कार्य नाशक, व्यसनों में तत्पर (शंभु०)। सुन्दर शरीर, शत्रुहंता, राजा के समान सुन्दर, बड़ा तेजस्वी, दाँतों के विकार से युक्त (मान०)। पराया धन हरने वाला, व्यसनों में आसक्त, सत्कर्म में रुचि से रहित (जा०भ०)। परस्त्रीगामी, क्रूर, शत्रुओं से डरने वाला, धनिक (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र शनि—मूर्ख, अति निर्धन, पराये इशारे जानने वाला, धातु क्रिया में तत्पर, धूर्त, व्यर्थ कष्ट करने वाला (शंभु०)। धर्म में तत्पर, दरिद्र, हाथी घोड़ों का पालन कर्ता, सत्कर्म करने वाला शक्ति रहित (मान०)। पराये इङ्गित का जानने वाला, धनहीन, मंद बुद्धि, धातु क्रिया में निरन्तर तत्पर, वृथा श्रम करने वाला, (जा०भ०(। खल बुद्धि, मायावी देशप्रिय, (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध—लज्जा, पुत्र, धन, स्त्री जन और मित्र वर्ग से रहित, चित्त कठोर, विख्यात, साहसी, मंद कर्मों में प्रवीण (शंभु०)। सर्वत्र विख्यात, बड़ा साहसी, निष्ठुर, निर्लज्ज, धन और पुत्र युक्त (मान०)। प्रसिद्ध, यन्त्र शास्त्र की विधि में प्रवीण, साहसी, कठोर चित्त, लज्जा,धन स्त्री, पुत्र, मित्रों सहित (जा०भ०) सुखरहित, पुत्र, स्त्रीयुक्त (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु—व्याख्याता, धनवान्, राजाओं का मंत्री सेनापति, न्याय करने में समर्थ, उदार मन, सत्यवादी, विलासी (शंभु०)। भारी मूर्ख, सत्यवक्ता, राजा का मंत्री, मिष्टभाषी, बड़ा निपुण (मान०)। वक्ता, धनयुक्त, राजा का मंत्री, सेना का स्वामी, नीति विधान में चतुर, तेजस्वी, सत्यवक्ता, विलासी (जा०भ०)। लोगों का विशेष प्रिय, मंत्री या सेनापति (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल शुक्र—भाग्य युक्त, अति बुद्धिमान्, धनवान्, नम्र, अपने वश में, अधिक चतुर, बहुत बोलने वाला, उत्तम स्वभाव, उत्तम गुणयुक्त (शंभु०)। स्वरूपवान्, नेत्र रोगी, दुष्ट स्वभाव, वत्सल, चतुर और अति विषयी मन (मान०)। भाग्ययुक्त, अति बुद्धिमान् नम्र, कुलीन, शीलवान्, थोड़ा बोलने वाला चतुर (जा०भ०)। नेत्र रोगी, योगी, कुलीन, धनवान् (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल शनि—विवेक रहित पिता बंधु वर्ग तथा धन से हीन, कलह में तत्पर, बहुत रोग (शंभु०)। मूर्ख गौ धन से हीन, रोग से आर्त, स्वजनों से रहित, विकल, कलह से व्याकुल, धनहीन, कलह युक्त, त्यागी, पिता बन्धु वर्ग से वियोगी, विवेक रहित (जा०भ०)। बन्धुओं से रहित मूर्ख, धनी, रोगी (जा०पारि०)।

सूर्य बुध गुरु—नेत्र रोगी, शास्त्र कला में प्रवीण, सुशील, समस्त गृहधन में अधिक होवे (शंभु०)। नेत्र रोगी, बड़ा धनवान्, शस्त्र तथा शास्त्र कला का जानने वाला और लेखक (मान०)। चतुर, शास्त्रों की कला में प्रवीण; धन संग्रह करने वाला, महा बलवान्, श्रेष्ठ शक्ति, नेत्र रोग से पीड़ित (जा०भ०)। चतुर बुद्धि, विद्वान्, यशस्वी, धनवान् (जा०पारि०)।

सूर्य बुध शुक्र—स्त्री के निमित्त संतप्त, बहुत बोलने वाला, विदेश वासी, सज्जनों का द्वेषी, निंद्य बुद्धि (शंभु०)। माता पिता गुरुजनों से तिरस्कृत और इनसे शाप पाकर दिशाओं में घूमने वाला, स्त्री निमित्त से दुःखी चित्त (मान०)। साधुओं का बैरी, निंदक, अति संताप को प्राप्त, स्त्री के कारण से बहुत बोलने वाला, देशों का भ्रमण करने वाला (जा०भ०)। कोमल शरीर, विद्वान्, यशस्वी, सुखी (जा०पारि०)।

सूर्य बुध शनि—दीन आकृति, मनुष्यों से रहित, लोगों के साथ बहुत द्वेष करने वाला, अति दुष्ट, नीच संगति (शंभु०)। दुराचारी, शत्रुओं का संहारक, भाई बन्धुओं से त्यक्त, सबसे शत्रुता करे (मान०)। तिरस्कार को प्राप्त, अपने जनों से रहित, अनेक दोष करने वाला, हिजड़ों जैसी आकृति, हीन वृत्ति वाला (जा०भ०)। बन्धुहीन, धनहीन, बैरी, दुराचारी (जा०पारि०)।

सूर्य गुरु शुक्र—पराये कार्य में श्रद्धालु, वाचाल, चतुर, धनहीन, राजाश्रयी, अति क्रूर (शंभु०)। राजा का मंत्री, दरिद्र, खराब नेत्र, शूरवीर, बुद्धिमान्, परोपकारी (मान०)। थोड़ा बोलने वाला, धन रहित, राजाश्रयी, पराये कार्यों में शूरता करने वाला, पुत्र स्त्री से युक्त, बुद्धिमान्, नेत्र रोगी, धनवान् (जा०पारि०)।

सूर्य गुरु शनि—स्त्रियों में नित्य धन व्यय, बोलने में चतुर, स्त्री पुत्र आदि का सुख, राजा का प्रिय (शंभू०)। पुत्र मित्र कलत्र से युक्त, भय रहित, राजा से द्वेष अपनी इच्छा से मित्रता करने वाला (मान०)। राजा का प्यारा, मित्र, स्त्री पुत्रों के सहित, शोभायमान शरीर, अच्छी नीति में खर्च, निर्भय बोलने वाला (जा०भ०)। भय रहित, राज प्रिय, सात्विक (जा०पारि०)।

सूर्य शुक्र शनि—धन, काव्य कथा और अपने मनुष्यों से त्यक्त, दुष्ट चरित्रों में रुचि, अति भयवान् खुजला का रोग (शंभु०)। कारीगरी तथा मान से रहित, कुष्ठी, शत्रुओं के कारण सदा भय, दुष्टों के समान आचरण (मान०)। शत्रु के भय से युक्त, श्रेष्ठ कथा और काव्य रहित, खोटे कर्म में प्रीत, अति पीड़ित, धन और बन्धु वर्ग से हीन (जा०भ०)। दुष्ट चरित्र वाला गर्वी, अभिमानी (जा०पारि०)।

(2) चन्द्र मंगल बुध— अत्यन्त दीन, अपने मनुष्यों से अपमानित, अन्न, धन से हीन, दीन मनुष्यों के अनुकूल रहने वाला (शंभु०)। नीच के समान आचरण, बड़ा पापी, जीविका से हीन, लोक में बन्धुहीन (मान०)। दीन, धन धान्य रहित, अपने बन्धु वर्गों से दंभ नीच जनों का साथ (जा०भ०)। सदा भोजन में रत, दुष्कर्मी, दूसरों का दूषक (जा०भ०)।

चन्द्र मंगल गुरु—स्त्री युक्त, निर्मल देह, दूसरे के शुभ कार्यों को समझ लेने वाला, कोप युक्त, धाव से चिह्नित (शंभु०)। बड़ा कामी, वर्ण से युक्त, सबको प्रिय, स्त्री जनों के साथ रहने वाला, चन्द्र समान सुन्दर मुख (मान०)। वर्ण युक्त, क्रोधी पराया धन हरण करने वाला, स्त्री में तत्पर, शोभायमान शरीर(जा०भ०)। रोषयुक्त वचन, कामातुर, रूपवान् (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल शुक्र—दुष्ट स्वभाव की स्त्री, चंचल दुष्ट स्वभाव , पुत्र सुशील हो (शंभु०)। दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री तथा माता से युक्त, सर्वत्र भ्रमण करने वाला, शीत स डरने वाला (मान०)। दुष्ट शीला स्त्री का पति, अस्थिर, दुष्ट शीला माता की सन्तान, थोड़ा शील (जा०भ०)। शील हीन, पुत्र हीन, भ्रमणशील (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल शनि—बाल्यावस्था में माता की मृत्यु, सदा कलह से सन्तप्त, निंद्य (शंभु०)। बालपने में माता मरे, दुष्ट मनुष्यों को देखने मात्र से ही द्वेषी होने वाला विषमतायुक्त (मान०)। बालपने में माता की मृत्यु, सदा कलह युक्त, निंदित (जा०भ०)। चंचल बुद्धि, दुष्टात्मा, माता को मारने वाला (जा०पारि०)।

चन्द्र बुध गुरु—बुद्धिमान्, बड़ा तेजस्वी, बड़े ऐश्वर्य वाला उत्तम विद्या, अनेक मित्र, विख्यात कीर्ति (शंभु०)। बड़ा तेजस्वी, धनवान्, पुत्र मित्र से युक्त, प्रशस्त प्राणी, विख्यात, कीर्तिमान् (मान०)। प्रसिद्ध यश, बुद्धिमान्, बड़ा प्रतापी, विचित्र मित्र, भाग्यवान्, श्रेष्ठ कृति (अच्छा आचरण) (जा०भ०)। भारी धनी, राजा का प्रिय (जा०पारि०)।

चन्द्र बुध शुक्र—बड़ी स्पर्धा से युक्त, ईर्ष्या करने वाला उत्तम विद्या, नीच बुद्धि, अति धन लोभी (शंभु०)। विद्या से विभूषित, ईर्ष्यालु, धन का अत्यन्त लोभी, दुष्ट आचरण (मान०)। विद्या में प्रवीण, नीच वृत्ति, सबसे द्रोह या निन्दा करने वाला, धन का लोभी (जा०भ०)। विद्वान्, नीच कर्म वाला, सेवा करने योग्य (जा०पारि०)।

चन्द्र बुध शनि—ख्यात, नम्र, राजा के मनोनुकूल, नगर ग्राम का अधिकारी, कला विद्या जानने वाला, बुद्धिमान् (शंभु०)। बड़ा बुद्धिमान्, राजा पूज्य, बड़ा लम्बा, बड़ा दुष्ट, प्रशस्त वाणी, कलाओं के समूह में निर्मल बुद्धि, विख्यात, राजा का प्यारा (मान०)। नगर ग्राम का पति, नम्रतायक्त (जा०भ०)। दानी, राज पूजित, गुणवान् (जा०पारि०)।

चन्द्र गुरु शुक्र— अधिक ऐश्वर्य, शुभ गुण, कीर्तिमान्, उत्तम बुद्धि, वृद्धि युक्त (शंभु०)। पतिव्रता माता का पुत्र, बड़ा पण्डित, साधु, सब कलाओं का ज्ञाता, अतिसुन्दर (मान०)। भाग्यवान्, सुन्दर कीर्ति, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ वृत्ति (जा०भ०)। प्राज्ञ, सुपुत्री, कला में निपुण (जा०पारि०)।

चन्द्र गुरु शनि—उत्तम मंत्र शास्त्रों को जानने वाला, सुन्दर वेश, राज प्रिय, अत्यन्त चतुर, बड़ा तेजस्वी (शंभु०)। रोग से रहित, स्त्रीसंग करने वाला, शास्त्रार्थ जानने वाला, सर्वज्ञ, ग्राम नगर का पालन करने वाला (मान०)। चतुर, राजा का प्यारा श्रेष्ठ, मंत्र शास्त्र में अधिकारी, उत्तम वेश बड़ा प्रतापी (जा०भ०)। शास्त्री, वृद्धा स्त्री में रत, राजा के तुल्य (जा०पारि०)।

चन्द्र शुक्र शनि–उत्तम ग्रन्थ देखने में श्रद्धालु, उत्तम लेखनी में भी रुचि, पुण्य में तत्पर, वेद पाठियों में श्रेष्ठ और पुरोहित होवे (शंभु०)। लेखक का काम करने वाला, वेद ज्ञाता, पुरोहित के कुल में जन्म, कथा कहने वाला (मान०)। पुरोहित, वेद के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ, पुण्य कर्म में तत्पर, श्रेष्ठ पुस्तकों को देखने और लिखने वाला (जा०भ०)। वेद ज्ञाता, राज पुरोहित, अत्यन्त सुभग (जा०पारि०)।

(3) **मङ्गल बुध गुरु**– कुल में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ कविता, गीत कला का आदर करने वाला, पराये साधन में अत्यन्त मन रहे (शंभु०)। बड़ा सत्कवि, स्त्रियों का प्रिय, परोपकारी, बड़ा उत्साही, गान विद्या में कुशल (मान०)। कुल में धरती का पालन करने वाला राजा के समान, काव्य और गाने बजाने की कला में प्रवीण, पराये कार्य साधन में एक चित्त (जा०भ०)। गंधर्व विद्या, काव्य, नाटक का ज्ञाता (जा०पारि०)।

मङ्गल बुध शुक्र-वाचाल, अत्यन्त चपल, दुबला शरीर, सदा उत्साही, धनवान्, (शंभु०)। किसी अंग से हीन, बड़ा चंचल, हीन कुल में जन्म, सदा उत्साह युक्त, तृप्त और चुगलखोर (मान०)। धन सहित दुर्बल देह, बड़ा बोलने वाला, चंचल, धृष्ट, निरन्तर उत्साह में तत्पर (जा०भ०)। हीनांग, दुष्ट वंशोत्पन्न चंचल बुद्धि (जा०पारि०)।

मङ्गल बुध शनि-भय युक्त क्षीण शरीर, धन की इच्छा करने वाला, दूत परदेश वासी, कुनेत्र, सहनशील नहीं, बहुत बकने वाला (शंभु०)। परदेश में रहने वाला, नेत्र रोगी, दूत का काम करने वाला, मुख रोगी, हँसी करने वाला (मान०) बुरे नेत्र, दुर्बल देह, वन में वास करने वाला, दूत का काम करने वाला परदेशी, बहुत हास्य युक्त, किसी की न सहने वाला, अपराधी होता है (जा०भ०)। दूत, नेत्र रोगी सदा भ्रमणशील (जा०पारि०)।

मङ्गल गुरु शुक्र-स्त्री पुत्र आदिकों के सुख से युक्त, राज मान्य, सज्जन संगी (शंभु०)। सुन्दर स्त्रियों से युक्त, सदा सुखी, सबों को आनन्द देने वाला, राजा का प्रिय (मान०)। श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री के सुख सहित, राजा का माननीय, श्रेष्ठजनों के साथ रहने वाला (जा०भ०)। राजा का मित्र, सुपुत्री, सुखी (जा०पारि०)।

मङ्गल गुरु शनि-राजा से मान प्राप्त, दया रहित, दुर्बल शरीर, दुष्ट वृत्ति, मित्र सुख रहित (शंभु०)। कुष्ठी शरीर, राज पूज्य, नीचों के समान आचार, निर्धन, मित्रों से निन्दित (मान०)। राजा से प्राप्त मान और कृपा रहित, दुर्बल, खोटी वृत्ति, मित्रता रहित (जा०भ०)। दुबला शरीर, मानी, दुराचारी (जा०पारि०)।

मङ्गल शुक्र शनि-विदेशवासी, माँ असभ्य होवे, सुन्दर स्त्री के कारण मान हानि आदि से सुख नाश (शंभु०)। स्त्री दुष्ट स्वभाव की, परदेशवासी, सदा सुखी (मान०)। परदेशवासी, नीच कुल की माता, वैसे ही स्त्री, सुखों का नाश करता। (जा०भ०)। कुपुत्री सदा परदेश में रहने वाला (जा०पारि०)।

(4) **बुध गुरु शुक्र**-सत्यवादी, उसकी कीर्ति बहुधा गाई जावे, राजा की कृपा रहे, शत्रु से विजयी रहे, प्रसन्न मुख (शंभु०)। सुन्दर शरीर, राज पूज्य, शत्रुओं को जीतने वाला, बड़ा यशस्वी और सत्यवादी (मान०)। राजा की कृपा सहित, बहुत यश वाला, प्रसन्न चित्त, शत्रुओं को जीतने वाला, सत्य में तत्पर (जा०भ०)। शत्रुओं को जीतने वाला, कीर्ति, प्रताप से युक्त। (जा०पारि०)।

बुध गुरु शनि-स्थान ऐश्वर्य से उत्पन्न सुख से युक्त, उत्तम चरित्र, धारणा युक्त, बहुत बोलने वाला (शंभु०)। उत्तम आचार, अनेक भोग भोगने वाला, ऐश्वर्य से युक्त, बुद्धिमान्, सुख धैर्य से युक्त (मान०)। घर में धन और श्रेष्ठ वैभव युक्त, बहुत बोलने वाला, धृतिमान् श्रेष्ठा वृत्ति, (जा०भ०)। विशेष सुखी, श्रीमान् अपनी स्त्री का प्रिय (जा०भा०)।

बुध गुरु शनि-झूठ बोलने वाला, बहुत बकने वाला, धूर्त, सदाचार रहित, दूर गमन, में तत्पर, कला जानने वाला (शंभु०)। बड़ा मुखर (चुगलखोर), परस्त्री गामी, दुष्ट जनों का संग, कलाओं का जानने वाला, स्वदेश में रहने वाला (मान०)। साधु शील रहित, झूठ बोलने वाला, बहुत बोलने वाला, निश्चय धूर्त, बड़ी दूर की यात्रा करने वाला, कलाओं का जानने वाला (जा०भ०)। झूठ बोलने वाला, दुष्ट, परस्त्री गामी (जा०पारि०)।

5 **गुरु शुक्र शनि**- नीच कुल में उत्पन्न हो तो भी विशाल कीर्ति युक्त राजा हो, निर्मल वृत्ति वाला (शंभु०)। राजा हो, यशस्वी, नीच कुल में उत्पन्न होने पर भी शील स्वभाव से युक्त राजा होवे (मान०)। नीच वंश में भी हो तो भी श्रेष्ठ कीर्ति वाला पृथ्वी का स्वामी श्रेष्ठ वृत्ति वाला हो (जा०भ०)। स्वच्छ बुद्धि, विख्यात, सुख युक्त (जा०पारि०)।

(6) 3 पाप ग्रह एक घर में—सदा दु:खी, अनम्र व निन्दित।

3 शुभ ग्रह एक घर में—सुखी हो।

चन्द्रमा पाप युक्त हो—जातक अल्प सुखी।

सूर्य पाप युक्त हो—पिता अल्प सुखी।

नवम भाव में त्रिग्रह योग फल

नवम में सूर्य चन्द्र मंगल–घाव युक्त शरीर, रूखा, मरे हुए पिता वाला, भ्रातृ हीन, रुद्र का वैरी, हिंसक।

नवम में सूर्य चन्द्र बुध–नपुंसक सम आचरण, सब जनों का वैरी, पराक्रमी, सत्यभाषी।

नवम में सूर्य चन्द्र गुरु–उत्तम कुलीन, वाहन,धन और सौख्य युक्त।

नवम में सूर्य चन्द्र शुक्र–स्त्री के कलह से नष्ट धन सौख्यवाला, राजासामन्त, सुन्दर, यज्ञ कर्ता, प्रिय भाषी।

नवम में सूर्य चन्द्र शनि–अत्यन्त दुष्ट, खण्डित आकार, पराई ऋद्धि से युक्त, लोक बैरी।

नवम में सूर्य मंगल बुध-प्रियभाषी, भुज बल युक्त, ज्ञान वृद्धि, समय समय पर कार्य कर्ता, निष्ठुर, पिशाच बाधा से दु:ख।

नवम में सूर्य मंगल गुरु–सदा उद्योगी, देव मित्र गण पूजने में तत्पर, सम्पन्न स्त्रियों वाला, गुणी।

नवम में सूर्य मंगल शुक्र–कलह प्रिय, कुलीन, कन्या दूषक, कर्म में चंचल, सब का बैरी।

नवम में सूर्य मंगल शनि– बड़ा साहसी, अति क्षुद्र, लोक बैरी, प्रिय, मिथ्याभाषी, क्रूर, बालपने में पिता से वर्जित।

नवम में सूर्य बुध गुरु– भाग्यवान्, धनवान्, सुन्दर ऐश्वर्य, राजप्रिय, सुन्दर वेष, सम्पन्न, सुन्दर पुत्र युक्त।

नवम में सूर्य बुध शुक्र– प्रकाशित और शान्त, शत्रु पक्ष से क्षीण, राजा के समान, तथा सार वाक्य वाला।

नवम में सूर्य शुक्र-पापी, पर स्त्रीगामी, प्रवासी, अति चतुर, चाकरी वाला, कामी।

नवम में सूर्य गुरु शुक्र-अच्छा, पण्डित, मनोहर, बहुत देश वाला, अति धीर, सुन्दर बुद्धि, पण्डित।

नवम में सूर्य गुरु शनि–उत्तम पुरुष, राजा और गुणवान्, धनवान्।

नवम में सूर्य शुक्र शनि– कान्तिहीन, मलिन, राजा के दण्ड से युक्त। बुद्धिहीन, मूर्ख।

नवम में चन्द्र मंगल बुध–धन, सुवर्ण, रत्न, भाग्य से युक्त, पहिली अवस्था में, संताप युक्त, और सब का नाश करने वाला।

नवम में चन्द्र मंगल गुरु–जितेन्द्रिय, पण्डित, गुरु देव साधु सेवा में तत्पर, विद्या युक्त, भोगी, सुन्दर ऐश्वर्य युक्त।

नवम में चन्द्र मंगल शुक्र–घाव युक्त देह, रूप हीन, प्रभाक्षीण, स्त्रीप्रिय, स्त्री के वश में रहे, स्त्री द्वारा नाश को प्राप्त।

नवम में चन्द्र मंगल शनि–भ्रातृवंश नाशक, बालपन में माता से वर्जित और राजा।

नवम में चन्द्र बुध गुरु–कुल वंश वर्धक, आचार्य, विभव, मित्र इनसे युक्त, राजा बहु साधन युक्त।

नवम में चन्द्र बुध शुक्र–माता की सपत्नी को उत्पन्न करने वाला, आनन्द युक्त, मानयुक्त, बहुत पिता वाला, शुभ शील वाला।

नवम में चन्द्र बुध शनि– नपुंसक सम आचरण, अति विह्वल, मलिन, निन्दित बुद्धि, संग्राम से भागने वाला, दीन।

नवम में चन्द्र गुरु शुक्र–राजा तुल्य, राज कुल में हो तो राजा हो।

नवम में चन्द्र गुरु शनि–प्रिय भाषी, सदाचार युक्त, सुशील, विख्यात, समस्त शास्त्रों में प्रवीण।

नवम में चन्द्र शुक्र शनि–कृषि से वृत्ति, शत्रु के पोषण में अनुरागी, निष्पाप, शूरवीर, अतिथि, गुरुजन, स्वजन इनका भक्त।

नवम में मंगल बुध गुरु–सत्यभाषी, जनों का प्रिय, सुन्दर शील सम्पन्न, अतीव निपुण, भाग्यवान्।

नवम में मंगल बुध शुक्र–बड़ा उत्साह युक्त, बहुदेश का स्वामी, विख्यात राज सत्कार से सत्कृत और प्रचण्ड।

नवम में मंगल बुध शनि–पराया तर्क करने वाला, वचन गूढ़, मलिन और खंडाकार, पर कार्य नाशक।

नवम में बुध गुरु शुक्र–देव समान, सुन्दर शील सम्पन्न, विख्यात, राजा, विद्वान्, धर्मशील।

नवम में बुध गुरु शनि–पुष्ट, पुर में गण गण्य, चतुर, राजमन्त्री, प्रकाशित, धनी, आज्ञाकारी सेवकों से युक्त।

नवम में बुध शुक्र शनि–बुद्धिमान्, प्रकाशित, सुन्दर मनोहर वचन सुख युक्त।

नवम में गुरु शुक्र शनि–अन्न पान, विभव वाला, सुन्दर स्थान ऐश्वर्य युक्त, सुन्दर रूप।

चन्द्र से दशम में त्रिग्रह योग फल

सूर्य मंगल बुध–धन युक्त, राज जन पूज्य, सर्वजन पूज्य

सूर्य मंगल गुरु–सुन्दर ऐश्वर्य सम्पन्न शत्रु को जीते , समृद्धि युक्त।

सूर्य मंगल शुक्र–क्रूर, साहसी, पर धन हरने वाला।

सूर्य मंगल शनि–क्रूर कर्म, छिपे पाप, दुराचारी।

सूर्य बुध गुरु–विद्वान्, रूपवान्, ऐश्वर्यवान्, धर्मात्मा, प्रिय।

सूर्य बुध शुक्र–बड़ा यश, धर्मात्मा, क्रोधहीन, नहीं पराजित होने वाला, सौभाग्य, सामग्रियों से युक्त, समृद्धि उत्पन्न करते हैं।

सूर्य बुध शनि–क्रूर, चपल, शील हीन, शस्त्र अग्नि से विदीर्ण शरीर।

सूर्य गुरु शुक्र–सुन्दर ऐश्वर्य, विद्या से प्राप्त धन, धर्म में प्रीत, योग भागी।

सूर्य गुरु शनि–रोगी, अति चपल, समस्त जनों से हीन।

मंगल बुध गुरु–धर्मात्मा, बहुत कुटुम्ब, अनेक प्रकार का धन।

मंगल बुध शुक्र–अच्छी कारीगरी से युक्त, मालाकार, सुवर्णकार, सब लोक में हानि करने में युक्त।

मंगल बुध शनि–धर्म शील और निद्रा युक्त, सरल स्वभाव, सत्यभाषी।

मंगल गुरु शुक्र–धन युक्त, नीतिशास्त्र का ज्ञाता, देव ब्राह्मण का प्रेमी।

मंगल शुक्र शनि–मलिन, असत्य भाषी, वध, बन्धन, विवाद इनसे युक्त।

बुध गुरु शुक्र- इष्ट मित्रों से युक्त, धनी, अति सौभाग्य वाला, धर्मात्मा, सात्विक गुण युक्त, धीर।

बुध शुक्र शनि-धन धर्म से युक्त बुद्धि वाला, दयालु, सत्यभाषी।

गुरु शुक्र शनि- अनेक रोग, विज्ञानी, सुजन, परदेशवासी।

चतुर्ग्रह योग का फल

(1) **सूर्य चन्द्र मंगल बुध**-लिखने की जीविका करे, चोर, चुगलखोर, बड़ा मायावी, प्रशस्त वाणी, बड़ा कुशल, (मान०)। लेखक का काम करने वाला, मुखर वाणी और माया में निपुण, वैद्य (लग्न चन्द्रिका)। मायावी, प्रपंची, लेखक, रोगी, (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु- बड़ा निपुण, धनवान्, तेजस्वी, शोक रहित, नीतिज्ञ (मान०)। प्रसंग में निपुण, धनी, तेजस्वी, शोकरहित, नीतिज्ञ (ल०च)। धनवान् यशस्वी, बुद्धिमान्, राजा का प्रिय करने वाला, निरोग, निश्चित (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र-विद्या धन संग्रह कर्ता, सदा सुखी, पुत्र कलत्र युक्त, वाणी से वृत्ति करने वाला (उपदेशक आदि) (मान०)। विद्या और धन का संग्रह करने वाला, सुखी, पुत्रवान्, स्त्री युक्त, वाणी की ही वृत्ति वाला (ल०चं०) स्त्री पुत्र धन से युक्त, विद्वान्, अल्पभोजी, सुखी, कार्यों में निपुण, कृपालु (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल शनि- मूर्ख, धन से रहित, ठिंगना, विषम देह, भिक्षा वृत्ति (मान०)। मूर्ख दरिद्री, ह्रस्व, विषमदेह, भिक्षावृत्ति (ल०च०)। चंचल नेत्र, घूमने वाला, व्यापारिणी स्त्री का पति निर्धन (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु-कारीगरी जानने वाला, धनवान्, सुन्दर रंग, रूप वाला, सुन्दर नेत्र, रोग रहित (मान०)। कारीगरी करने वाला, धनी, सुन्दर वर्ण, प्लुत नेत्रों वाला, रोगहीन (ल०च०)। मित्र, पुत्र, स्त्री युक्त, धनवान्, गुणी, यशस्वी, बलवान्, उदार (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र-सुन्दर ठिंगना शरीर, राजाओं का माननीय, प्रशस्त वाक्य, विफल (मान०)। सौभाग्यवान्, ह्रस्व, राजाओं में पूज्य, वाणी में निपुण, विफल (ल०च०)। विफल वाचाल (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध शनि-भिक्षावृत्ति, मातापिता से वियुक्त, नेत्रों से विकल, निर्धन (मान०)। भिक्षुक, माता पिता से वियोगी, विकल नेत्र, दरिद्री (ल०च०)। निर्धन, कृतज्ञ (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र-राजपूज्य,तालाब आदि, जंगल तथा मृगों का स्वामी, बड़ा निपुण, सदा सुखी (मान०)। राजाओं में पूज्य, जल वन और मृगों का स्वामी, निपुण, सुखी (ल०च०)। जल में वन स्थल में, चलने वाला, राज पूज्य भोगी (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र गुरु शनि- माननीय, स्त्री का प्रेमी, बड़ा धनी, पुत्रवान्, क्षीणदेह समान और सुन्दर नेत्र (मान०)। पूज्य और स्त्री को प्यारा, बहुत द्रव्य और पुत्रों वाला, तीक्ष्ण और समनेत्र (ल०च०)। विशाल नेत्र, बहुत धन पुत्र से युक्त, वेश्या का पति (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र शुक्र शनि-दुबला, स्त्री के समान आचरण, डरपोक, अगुवा (मान०)। निर्मल, डरपोक, कन्याओं के द्वारा धनोपार्जन, खाने पीने में तत्पर (जा०पारि०)। अत्यन्त दुर्बल, स्त्री के समान आचर, डरपोक, आगे चलने वाला (द०च०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु-सूत्र करने वाला, पर स्त्री रत, शूरवीर, सदादु:खी, चक्र को धारण करने वाला (मान०) (ल०च०)। सबल, विपत्ति से युक्त, स्त्री सम्पत्ति वाला, नेत्र रोगी, भ्रमणशील (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शुक्र-पूज्य, धनवान्, सुन्दर, राजमान्य, नीतिमान् (मान०)। दूसरों की स्त्री में लीन, विषम छोटे बड़े या टेढ़े नेत्र, चोर बुद्धि, धनादि से रहित (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शनि-योद्धा, कवि, राजमन्त्री, बड़ा तीक्ष्ण, नीचों के समान आचार (मान०)। योधा, कवि मंत्री, सेनापति, तीक्ष्ण और नीचा आचार वाला (ल०च०)। सेनापति या राजा का मंत्री, नीच कर्म, भोगी (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र-पूज्य, राजाओं में पूज्य,धनवान्, प्रख्यात, नीतिज्ञ, सौभाग्यवान् (मान०) (ल०च०)। राजा के सदृश, विख्यात, विशेष पूज्य, धनी (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शनि-समूह का मुखिया, उन्माद युक्त, राजमान्य, भाग्यशाली, गणों में नायक, उन्माद युक्त, राज पूज्य सिद्ध अर्थ वाला (ल०च०)। निर्धन, भ्रांत, मित्र और परिवार वाला (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल शुक्र शनि-लोक का द्वेषी, नीच के समान आचार, मूर्खों जैसी आकृति संसार का बैरी, सर्प नेत्रों वाला, नीचाकारी, जड़ आकृति (मान०) (ल०च०)। हारने वाला, कुकर्मियों में प्रधान (जा०पारि०)।

सूर्य बुध गुरु शुक्र- बहुबुद्धि, धनी, सुखी, सिद्धार्थ और प्रसन्न रहने वाला, बहुत बुद्धि, धनी सुखी सिद्ध अर्थ वाला, प्रकृष्ट (मान०) (ल०च०)। धन और यश में मुख्य लोक में प्रधान (जा०पारि०)।

सूर्य बुध गुरु शनि-भाइयों से युक्त, झगड़ालू, हिजड़े के समान आचार, उद्यम रहित (मान०) भाइयों से युक्त; लड़ाई करने वाला, मानी; नपुंसकों के समान आचार उद्यमहीन (ल०च०)। झगड़ालू यानी दुराचारी (जा०पारि०)।

सूर्य बुध शुक्र शनि- मित्रों से युक्त, पवित्र, चुगलखोर, सुभग, बड़ा बुद्धिमान्, सदारोगी मित्र युक्त, पवित्र, सुख सौभाग्यवान्, बुद्धिमान्, राजा का प्यारा (मान०) (ल०चन्द्र०) सुन्दर मुख, सत्यकृत आचारवान् (जा०पारि०)।

सूर्य गुरु शुक्र शनि-बड़ा लोभी, सुखी, कवि, कारीगरों का स्वामी, राजा का प्रिय (मान०)। भोग और मान युक्त कवि, राजा का प्यारा (ल०च०)। कला में निपुण, नीचों का मालिक, साहसी (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु- शास्त्र में कुशल, राजा, महाबुद्धिमान्, राजा का मन्त्री, (मान०)। निपुण, राजा का मन्त्री, महाबुद्धिमान् (ल०चन्द्र०)। राजा का प्रिय करने वाला, मन्त्री, कवि और राजा (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र-स्त्री बन्ध्या, सब समय सोने वाला, कलह करने वाला, नीच समान आचरण, भाई बन्धुओं का द्वेषी (मान०)। बन्धकी का स्वामी, निद्रायुक्त, लड़ाई करने वाला, नीच और भाइयों का द्वेषी (ल०च०)। सुन्दरी स्त्री, सुन्दर पुत्र, बुद्धिमान् , विरूप, सुखी (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध शनि-बुरा, वीरों के कुल में जन्मा, पुत्र कलत्र, मित्र युक्त, दो माता पिता वाला (मान०)। वीर कुल में उत्पन्न, पुत्रवान्, मित्र और कलहवान् 2 माता पिता वाला (ल०च०)। दो माता पिता वाला, पराक्रमी, विशेष स्त्री पुत्र वाला (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र-साहसी अङ्ग से हीन, लूला आदि, धनी, पुत्रवान्, अभिमानी, विद्वान् (मान०)। साहसी, विकल, अङ्ग, धनी, पुत्रवान्, मानी, बुद्धिमान् (ल०च०)। पापकर्म में निपुण, निद्रालु, धनादि में आतुर (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल गुरु शनि–कान से बहरा, धनवान्, पागल, दृढ़ प्रतिज्ञ, शूरवीर, विद्वान् (मान०) बहरा, धनी, उन्माद युक्त, स्थिर वचन वीर और जानने वाला (ल०च०)।

चन्द्र मंगल शुक्र शनि–मलिन, स्त्री कुलटा, सदा घबड़ाहट युक्त, सर्प के समान नेत्र, बड़ा प्रगल्भ (ढीठ) (मान०)। शूद्री का पति, उद्वेगयुक्त, सर्पों के तुल्य नेत्र, प्रगल्भ (ल०च०)।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र– सुमन, धनवान्, मातापिता से रहित, बड़ा विद्वान्, शत्रु से रहित, सौभाग्यवान्, धनी, दो माता पिता वाला, बुद्धिमान्, शत्रु रहित (मान०) (ल०चन्द्रि०)।

चन्द्र बुध गुरु शनि– बन्धुजनों का प्रिय, बड़ा कवि, तेजस्वी, राजा का मन्त्री, यश धर्म युक्त (मान०) (ल०चन्द्रि०)। बड़ा धनी, बन्धु प्रिय, धार्मिक (जा०पारि०)।

चन्द्र बुध शुक्र शनि– राज पूज्य, नेत्र रोगी, शहर का स्वामी, अनेक स्त्री, धनवान् (मान०)।

चन्द्र बुध शुक्र शनि– परस्त्री गामी, बुद्धिमान्, दरिद्र भाई वाला, मोटी स्त्री, पुरुषों में श्रेष्ठ (मान०)। पर स्त्री से प्रेम, बुद्धिमान्, द्रव्यहीन भाइयों वाला, मोटी स्त्री० (ल०चन्द्रि०)।

मंगल बुध गुरु शुक्र–स्त्री से कलह करने वाला, धनवान्, सुशील, रोगरहित, लोक पूज्य (मान०) स्त्री कलह प्रिय, धनी, सुशील, निरोग, संसार में पूज्य (ल०च०) धनवान् और निन्दित (जा०पारि०)।

मंगल बुध गुरु शनि– शूरवीर, निर्धन, सत्य शौच वृत्तादि का विचार करने वाला, दीन और प्रशस्त वाणी (मान०)। शूर, द्रव्यहीन, सत्य और सुख युक्त, विद्वान्, वाद करने वाला, वाणी में निपुण (ल०च०)। रोगी, धनहीन (जा०पारि०)।

मंगल बुध शुक्र शनि–दूसरों से पाला हुआ, पहलवान्, युद्ध करने वाला, लोक में विख्यात, दृढ़ अङ्ग, कुत्ता पालने वाला (मान०)। मल्ल और पुष्टि में योद्धा, प्रसिद्ध पुष्ट अङ्ग, कुकुर्म में रुचि (ल०चन्द्रि०)।

मंगल गुरु शुक्र शनि–कामी, परस्त्री गामी, बड़ा अभिमानी, कपटी (मान०) साहस प्रिय, धनी, तेजवान्, स्त्री में चंचल और धूर्त (ल०च०)।

बुध गुरु शुक्र शनि– चतुर, काम में आसक्त, सत्यवक्ता, तीव्र बुद्धि (मान०)। कामातुर, विधेय भृत्य, बुद्धिमान्, तीव्र, शास्त्र में रत (ल०चन्द्रि०), खूब धनी, विद्वान्, शीलवान् (जा०पारि०)।

नवम भाव में चतुर्ग्रह योग का फल

सूर्य चन्द्र मंगल बुध–उत्तम पुरुष, विदेशगामी, सदा प्रसन्न।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु–धनवान्, विद्या में निपुण, सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त, राजा तुल्य।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र– माया करने में चतुर, स्वस्त्री में संतुष्ट, सुन्दर भाग्ययुक्त, सर्वजन प्रिय, विख्यात।

सूर्य चन्द्र मंगल शनि–चुगुल, मायावी, शुभशील युक्त, नीच कर्म कर्ता।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु–प्रधान, सब राजाओं से पूज्य, सदा प्रसन्न।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र– राजा, धर्मात्मा, सम्पन्न, प्रिय भाषी, शान्तचित्त।

सूर्य चन्द्र बुध शनि–नीच आचरण, दीन, पराया धन हरे, सदा आसक्त।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र– अच्छी बुद्धि, हर्षयुक्त, धर्मात्मा, सात्विक, गुण सम्पन्न, धीर

सूर्य चन्द्र गुरु शनि– धर्मात्मा, देवभक्त, विद्वान्, पराये डाह में कष्ट भोगने वाला।

सूर्य मंगल बुध गुरु–पितृदेव पूजक, वृद्धों के समान आचरण, गुणवान्।

सूर्य मंगल बुध शुक्र– निष्ठुर, सुन्दर ऐश्वर्य, साहसी, धूर्त, शत्रु का मर्दक।

सूर्य मंगल बुध शनि–पराई स्त्री में तत्पर, खजाना नष्ट, सदैव क्षीण।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र–लोक का वैरी, पिपासा से दु:खी, बालापन में कन्या को दूषित करने वाला।

सूर्य मंगल गुरु शनि–सुखहीन, सदा उद्योगी, अति प्रचण्ड, पराक्रमी, धैर्ययुक्त।

सूर्य मंगल शुक्र शनि–शत्रु का नाश से शोक दूर, क्षुद्र के समान आचरण।

सूर्य बुध गुरु शुक्र–उत्तम धन सुवर्ण ऐश्वर्य से युक्त।

सूर्य बुध गुरु शनि-मानयुक्त, धन सम्पन्न, पाप कर्म में तत्पर, परस्त्री गामी, वैर कर्ता, नीच कर्म कर्ता।

सूर्य बुध शुक्र शनि–मानयुक्त, सुन्दर ऐश्वर्य, धनवान्, सत्यभाषी, लोक विख्यात।

सूर्य बुध शुक्र शनि–सत्यभाषी, सुन्दर वचन, गुरु, देव अध्यापक इनका भक्त।

चन्द्र मंगल बुध गुरु– सामग्रियों से युक्त, बालपन में माता से हीन, धनवान्।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र–तपस्वी, विख्यात, सुन्दरभाषी, स्नेहयुक्त, परलोक परायण बड़ा पण्डित।

चन्द्र मंगल बुध शनि–पराङ्मुख, दीन, क्षुद्र, मायी, चतुर, परदारगामी।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र–राजवंस कर्ता, प्रधान, अति शूर, विद्याधन संयुक्त, लोक विख्यात, लोक मान्य।

चन्द्र मंगल गुरु शनि– कुल को ठगने वाला, लोकद्वेषी, दरिद्र शूर कुलोत्पन्न।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र– धर्म युक्त, कलाओं में चतुर।

चन्द्र बुध गुरु शनि– मायावी, प्रचण्ड, कुछ नीति वेत्ता, धनयुक्त।

चन्द्र गुरु शुक्र शनि–बुद्धिमान् पण्डित, धन सुवर्ण रत्न से युक्त, सुन्दर ऐश्वर्य।

मंगल बुध गुरु शुक्र–मायावी प्रचण्ड, संग्राम में पूज्य धीर।

मंगल बुध गुरु शनि–शत्रु पक्ष से क्षीण, संग्राम में प्रचण्ड, सुन्दर धीरज।

मंगल बुध शुक्र शनि–विदेशगामी, धनों से हीन, क्षुद्र दयाहीन, दुष्ट स्वभाव।

मंगल गुरु शुक्र शनि–सुन्दर मुख, धनी, विद्या, विनय युक्त, साहसी सुजन प्रिय।

बुध गुरु शुक्र शनि–परजनों से वाद विवाद कर्ता, पर स्त्री में प्रीत।

चन्द्र से दशम में ४ ग्रह योग

सूर्य मंगल बुध गुरु– प्रकाशवान् शरीर, क्रूर, दानी, सकल कार्य कर्ता।

सूर्य मंगल बुध शुक्र–मालाकार, लेखन और चित्र कार्य में युक्त और कार्यकर्ता।

सूर्य मंगल बुध शनि–नीच कर्म कर्ता, धर्म कार्य में युक्त।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र–खेती करने वाला, धर्मात्मा, बहुत धान्य धनों से युक्त, सदा उद्यम कर्ता।

सूर्य मंगल गुरु शनि– पर धन हर्ता, क्रूर कर्म में युक्त।

सूर्य मंगल शुक्र शनि– समर्थ आचार वाला, प्रकाशित होने वाला, चतुर।

सूर्य बुध गुरु शुक्र–निपुण, मधुरवाणी, मल्ल वृत्ति, कृषि कर्ता।

सूर्य बुध गुरु शनि–पर वचनों में आसक्त, चतुर क्रूर कर्म कर्ता।

सूर्य बुध शुक्र शनि–कृषि कर्म कर्ता, चतुर, सुन्दर भाषी, कठिन स्वभाव।

सूर्य गुरु शुक्र शनि–परदेशवासी, अनेक कर्म कर्ता।

मंगल बुध गुरु शुक्र–प्रगल्भ, संग्राम से शूर, पण्डित और चतुर।

मंगल बुध गुरु शनि– वैरियों का नाशक, कठिन स्वभाव, शूर वीर, संग्राम में सदा उद्यत।

मंगल बुध शुक्र शनि–अच्छा विद्वान्, सबसे अधिक शूरवीर, विशाल शरीर।

मंगल गुरु शुक्र शनि–धीर, धनी, बहुत से कुटुम्ब वाला।

पंचग्रह योग का फल

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु– बड़ा प्रपंची दुःखी, स्त्रियों का विरही (मान०), (ल०च०)। युद्ध में कुशल, चुगल और समर्थ (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शुक्र– सत्य और भाइयों से रहित, दूसरे का काम करने वाला, नपुंसक का मित्र (मान०), (ल०च०)। विद्यार्थी, श्रद्धावान्, अन्य कर्म, परायण, बन्धु रहित (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शनि– अल्पायु, विकल, दुःख भोगी, पुत्र रहित, बन्धन का भागी (मान०)। अल्यापु, स्त्री पुत्र हीन, बंधन का भागी (ल०च०)। अल्पायु, धन कमाने में तत्पर, बिना स्त्री पुत्र वाला (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र– जन्म से अन्धा, महादुःखी, माता पिता रहित, हाथी से प्रीत (मान०)। जाति में अन्धा, बहुत दुःखी, माता पिंता से हीन, गान में प्रसन्न (ल०च०)। आततायी, माता पिता बंधु जनों से त्यक्त, नेत्र हीन (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शनि–पर द्रव्य हारी, योद्धा, दूसरो को दुःख देने वाला, बड़ा खल समर्थ (मान०)। (ल०च०), पराये की आशा करने वाला, इच्छित स्त्री के विरह से संतप्त (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र शनि– प्रतिष्ठा आचार, धन से रहित, पर स्त्री में रत (मान०) (ल०च०)। मान धन प्रभाव से हीन, मलिन, पर स्त्री रत (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र–राजमंत्री, धनवान्, यन्त्र विद्या मोटर मशीन आदि का जानने वाला, दण्ड देने वाला, सर्वत्र विख्या, बड़ा यशस्वी (मान०)। मंत्री, धनी, प्रताप से दूसरे को दण्ड देने वाला (जा०पारि०), (ल०च०)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि– दूसरे का अन्न खाने वाला, उन्माद युक्त, अपने प्रिय पुरुषों के लिए व्याकुल, ठगिया, बड़ा उग्र बड़ा डरपोक, पर अन्न, भोगी, उन्माद युक्त, प्रिय तप्त, छली, उग्र (मान०) और भयानक (ल०च०)। परान्न भोगी, विशेष डरपोक, पाप करने वाला, उग्र वृत्ति (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि–धन, पुत्र से हीन, मरने में उत्साह, अधिक लाभ युक्त, पेट, शरीर लम्बा (मान०)। (ल०च०), धन हीन, दीर्घ आकृति, पुत्र रहित, रोगवान् (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि–इन्द्रजाल विद्या जानने वाला, प्रशस्त वाणी, चंचल चित्त, स्त्रियों को प्रिय, बड़ा चतुर, बुद्धिमान् (मान०)। इन्द्रजाल में रत, वाणी में निपुण, चलायमान चित्त, मनुष्यों का प्यारा, बुद्धिमान्, अपने शत्रुओं से डरने वाला (ल०च०)। स्त्री सहित वाचाल, इन्द्रजाल करने में चतुर, भय रहित, शत्रु युक्त (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र-प्रसन्न चित्त, बहुत घोड़ों का स्वामी; बड़ा कामी, शोक करने वाला, सेना का स्वामी, सुन्दर, राजा, का प्रिय (मान०) (ल०च)। शोक रहित, सेना और घोड़ों का स्वामी, अन्य स्त्री में चंचल (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शनि-भिक्षान्न भोगी, सदा रोगी, नित्य उद्वेग युक्त मन, अत्यन्त मलिन और जीर्ण (मान०) (ल०च०)। भिक्षा से भोजन, मलिन पुराना वस्त्र धारण करने वाला (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि- व्याधि और शत्रुओं से युक्त, अपने स्थान से भ्रष्ट, भूखा रहने वाला, विकल (मान०) (ल०च०)। श्रेष्ठ, अति दु:ख, भय और रोगों से युक्त, क्षुधार्त (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र शनि- बड़ा विद्वान्, विचार पूर्वक काम करने वाला, लोहा आदि धातु, यन्त्र (मशीन आदि) विद्या में और रसायन के काम में प्रसिद्ध (मान०)। विचार देह, धातु यन्त्र रसायन में निपुण और प्रसिद्ध (ल०च०)। जल यन्त्र धातु पारा आदि रसायन निर्माण में निपुण, इन्हीं को प्रसिद्ध कार्य मानने वाला (सारा०)।

सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि-मित्रों में प्रीति, शास्त्रों का ज्ञाता, धर्मवान्, गुरु को समान, और दयालु (मान०) (ल०च०)। ज्ञानी, देव गुरु का सम्मान कर्ता, धर्मशील शास्त्री (जा०पारि०)। बहुत शास्त्र जानने वाला, मित्र और गुरुजनों का प्रिय, धर्मात्मा और दयालु (सारा०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र- साधुता तथा कल्याण से हीन, धन तथा विद्या से सुखी, बहु पुत्र (मान०)। साधु, पापहीन, धन विद्या और सुख से युक्त, बहु मित्र, सुखी, धन धान्य में प्रबल, विद्वान् (जा०पारि०) (ल०च०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र-दुर्भग, मलिन, मूर्ख, दास, नपुंसक, दरिद्री (मान०) (ल०च०)। बहुत मित्र और बहुत शत्रु वाला, परोपकारी, टेढ़ा स्वभाव (सारावली)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि-यन्त्र क्रिया में, धातु विषय में तथा बल में प्रसिद्ध (जा०पारि०)। तिमिर रोगी, दरिद्र, परान्न भोजी, दीन, अपने बन्धुओं को लज्जित करने वाला (सारा०)।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि-भिक्षा मांगने वाला ब्राह्मण, अति मलिन, तिमिर रोगी (मान०)। पराया अन्न पकाने वाला, सदा दरिद्री, मलिन (ल०च०)। दूत, दरिद्र, मलिन वेश, मूर्ख, चोर (जा०पारि०)।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि-राजा के तुल्य या राजा का मंत्री, लोक पूज्य, गुणवान् (मान०)। सर्वत्र पूज्य, विकल नेत्र, राजा के तुल्य या मन्त्री (जा०पारि०)।

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि-आलसी, तमोगुणी, पागल, राजा का प्रिय, निद्रालु (मान०)। शोकहीन, तामस, द्रव्यहीन, उन्माद युक्त, राजा का प्यारा, निद्रालु (ल०च०)। पूज्य, रोगी कला में निपुण, बध और बन्धन से युक्त (जा०पारि०)।

षड्ग्रह योग

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र-विद्या धन धर्म से युक्त, भोगी, भाग्यवान्, सर्वत्र विख्यात (मान०)। विद्या धर्म और धन से युक्त, बहुत बोलने वाला, भाग्यवान्, लाभयुक्त (ल०च०)। तीर्थ करने वाला, वन और पहाड़ में रहने वाला, स्त्री पुत्र और धन से युक्त (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि–दूसरे का कार्य करने वाला, दान देने वाला, शुद्ध अन्तःकरण, चंचल आकृति, सर्वत्र विजय पर आनन्द करने वाला (मान०)। पराया कर्म करने वाला, दाता, शुद्ध आत्मा, चंचल आकृति, मनुष्यहीन स्थान में रहने वाला (ल०चन्द्रि०)। चोर, परस्त्रीरत, बांधवो से हर्षित, पुत्रहीन, मूर्ख विदेशी (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र– संशय करने वाला, बड़ा भाग्यशाली, बड़ामानी, विख्यात, युद्ध में शत्रु को मारने वाला, झगड़े में मन (मान०) (ल०च०)। नीच, दूसरे के काम में लीन, क्षय और पीनस रोग से दुःखी (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि–अपनी स्त्री से प्रेम, संसार में उत्साह, वहमी, क्रोधी, लोभी, सुन्दर (मान०)। द्रव्य प्रिय, लड़ाई में उत्साह युक्त, चुगल, क्रोधी, लोभी, सौभाग्यवान् (ल०चन्द्र०)। मंत्री, स्त्री धन, पुत्र, हर्ष से हीन और शान्त।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि–स्त्री से रहित, द्रव्य हीन, राजा का मंत्री क्षमायुक्त, सुन्दर (मान०) (ल०चन्द्रि०)। सिर में पीड़ा, उन्माद प्रकृति वाला, देव भूमि में वासी; विदेश में प्राप्त (जा०पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि– द्रव्यहीन स्त्री पुत्रों से हीन, तीर्थों को जाने वाला, जंगल में रहने वाला (मान०) (ल०चन्द्रि०)। संसारी शील, विद्वान् (जा०पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि– धनवान्, राजा का मन्त्री, बड़ा पवित्र, आलसी, बहुत स्त्री, राजा का प्रिय, प्रतापी (मान०)। धनी पुत्रवान्, पवित्र मैत्री, बहुत स्त्री वाला, राजा का प्रिय, प्रतापी (ल०चन्द्रि०)। तीर्थ करने वाला, व्रती (जा०पारि०)।

५ या ६ ग्रह से युक्त या दृष्ट कोई भाव–यदि ५ या ६ ग्रह एक घर में हों या इन ग्रहों की दृष्टि हो तो वह प्रायः दरिद्री या मूर्ख होता है (मान०)।

सप्त ग्रह योग

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि–सातों ग्रह एक साथ हों तो सूर्य के समान तेजयुक्त, राजाओं से आदर पाने वाला, महादेव का भक्त, दाता तथा बड़ा धनी होता है (मान०)।

* * *

उदाहरण कुण्डली

फलित पक्ष पर गंभीरता से विचार करने एवं राजयोगों को कुण्डलियों पर घटाकर फलित होने वाले पक्षों पर ध्यान देंगे, तो फल करने की विधा सीखने में सुविधा-सहायता मिलेगी। कुण्डलियों में भाई-बहिन, पति-पत्नी, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, राजनेता और साधकों आदि की कुण्डलियों पर विशेष अध्ययन किया जाना चाहिए। इनमें नाम लिखने के बजाय मात्र तिथि और समय ही दिया है, ताकि उनके व्यक्तिगत जीवन के पक्षों पर भी जन सामान्य अनभिज्ञ ही रहें।
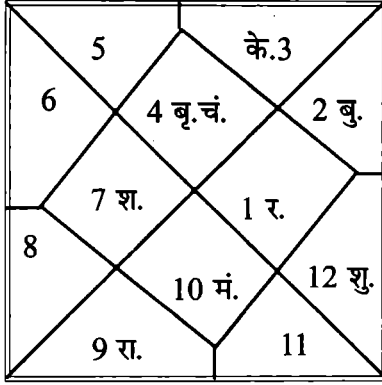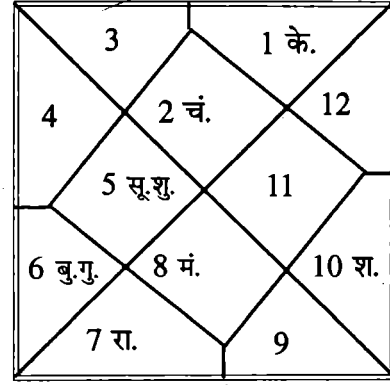
भगवान श्रीराम — भगवान श्रीकृष्ण
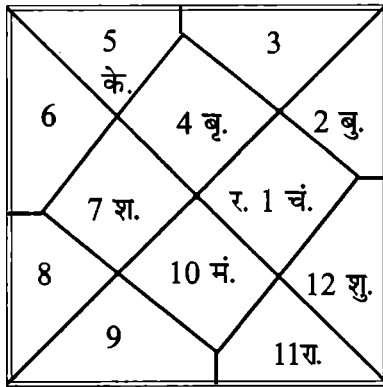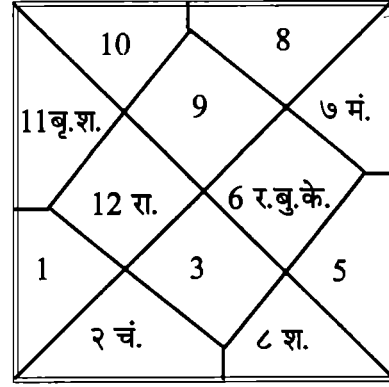
महाराजा हरिश्चन्द्र — ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
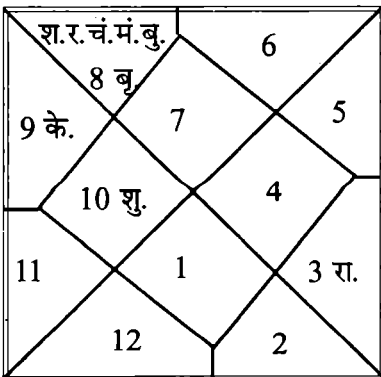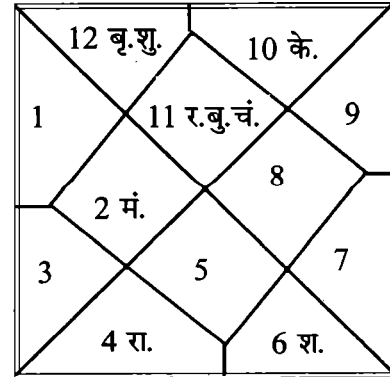
हैदर अली सुल्तान (मैसूर) — रामकृष्ण परमहंस
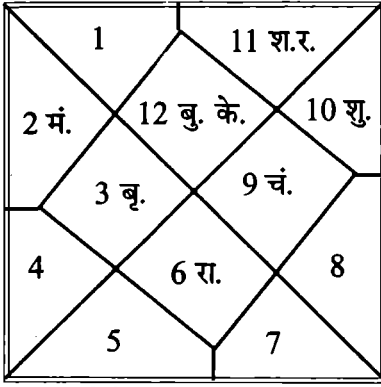
काशी के विद्वान पं. शिव कुमार
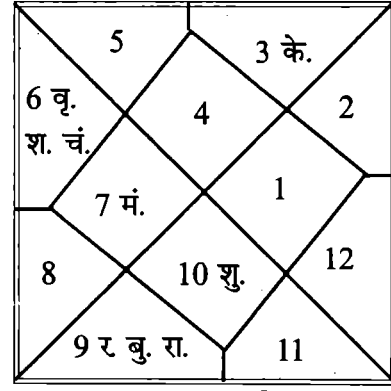
महामना मालवीय
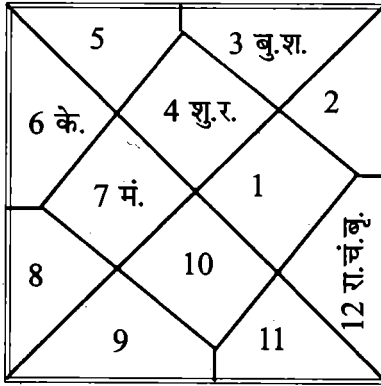
लोकमान्य तिलक
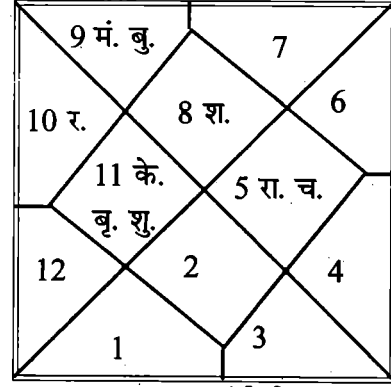
एक उदारमना मंत्री-बिहार
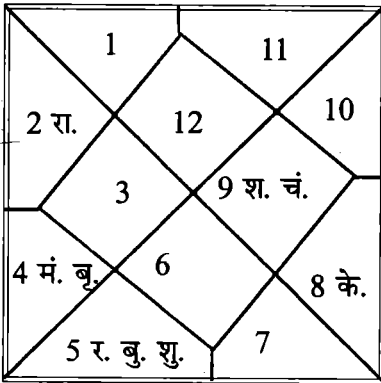
योगीराज अरविन्द
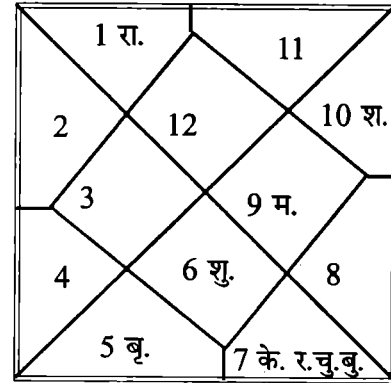
स्वामी रामतीर्थ

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे तो युग अवश्य बदलेगा।

– युग निर्माण योजना
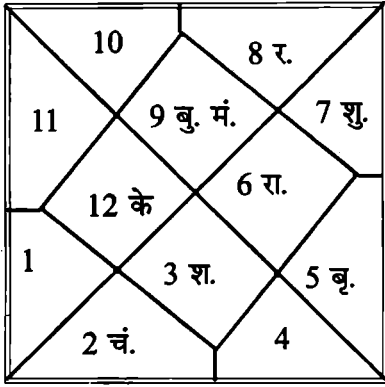
भारत के प्र. राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद
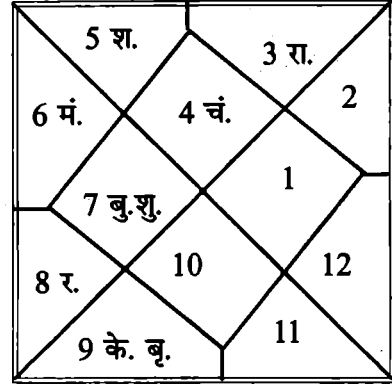
भारत के प्र. प्रधानमंत्री पं. नेहरू
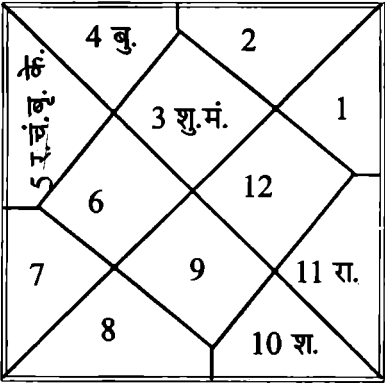
एक बालक-पिता की मृत्यु ७ दिन में
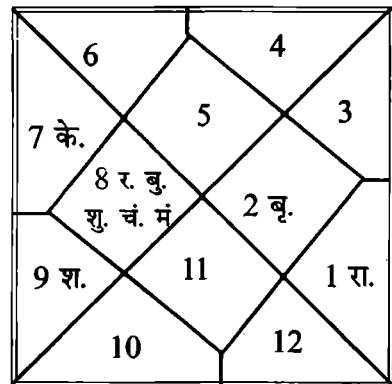
एक बालिका और उसका अंत
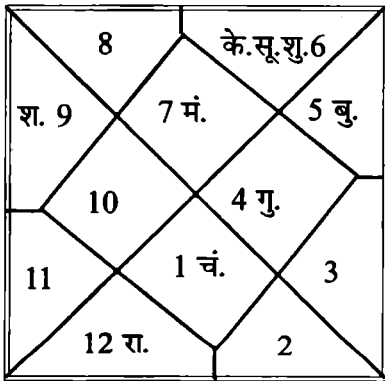
गायत्री परिवार की संस्थापिका
वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा
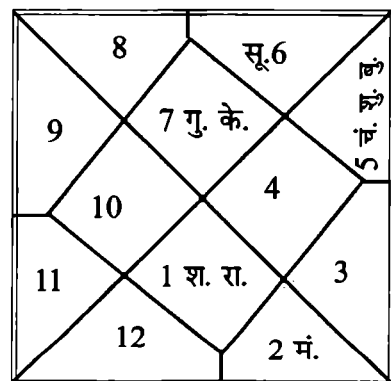
गायत्री परिवार के संस्थापक
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

हम ईश्वर को सर्वव्यापी और न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे। -युग निर्माण योजना
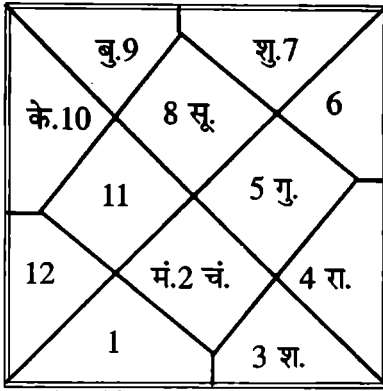
11।12।1943 समय 07.00 प्रशासनिक अधिकारी 19/ 8/ 1956 समय 13.05
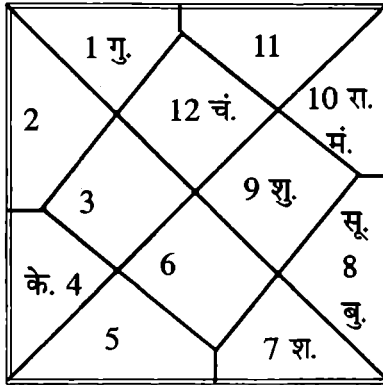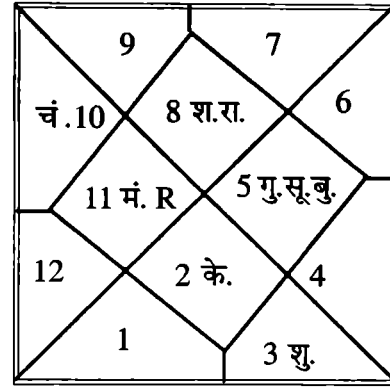
27.11.1952 समय 14.20 पत्नी - पति 8.11.1950 समय 13.33
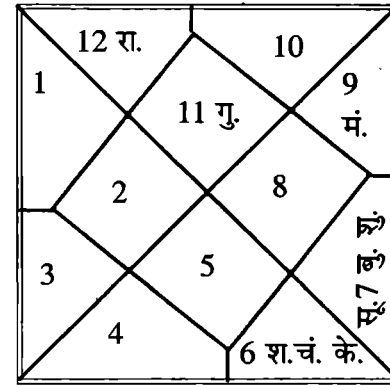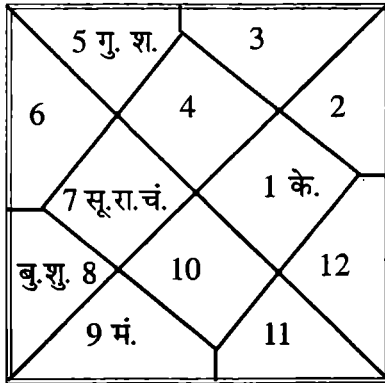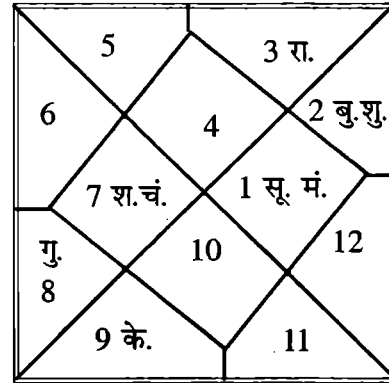
ज्योतिष पीयूष के लेखक 27.4.1983 समय 13.10

- दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।

-युग निर्माण योजना
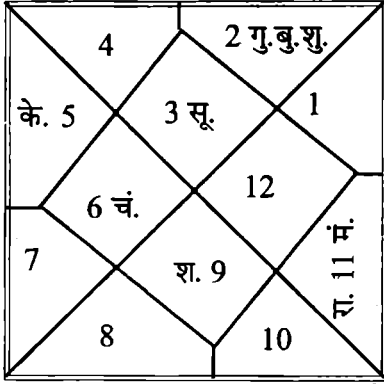
22.6.1988/ 6.14 AM. भाई - बहिन 30.08.1984 / 4.45 AM.
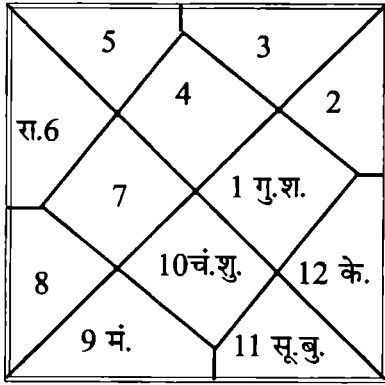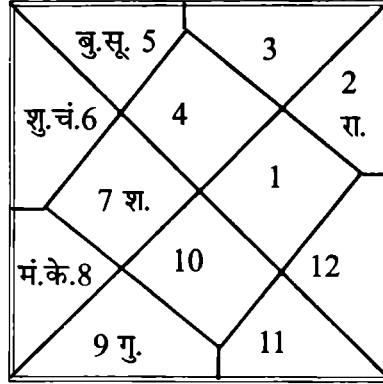
23.02.1941 समय 16.35 पति - पत्नी 20 .04. 45 समय 23.00
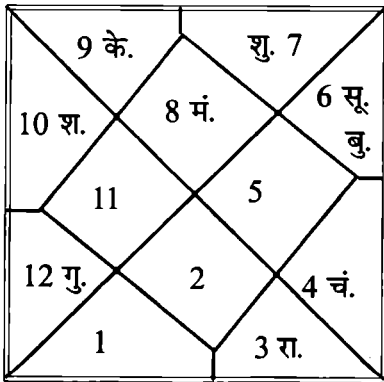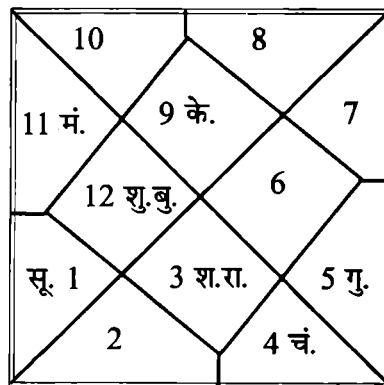
11.10 63 इष्ट- 04 । 28 संपरीक्षक- 12.11. 1948-समय 07.30
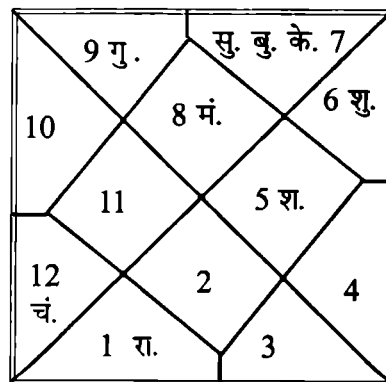
शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्म संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

- युग निर्माण योजना
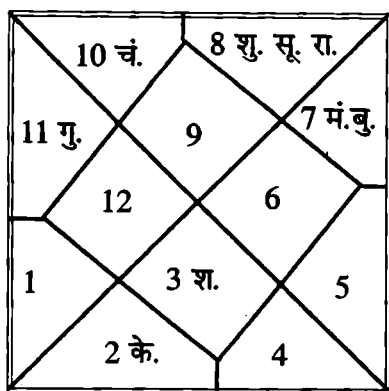
19.11.1974 समय 09.45 पत्नी-पति **09.04.1976 समय 23.31**
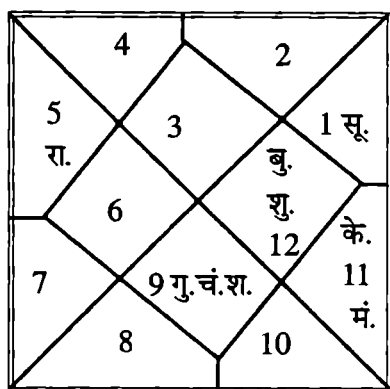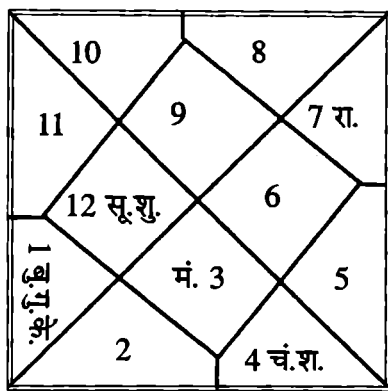
अधिवक्ता 16.4.1960 समय-11.16
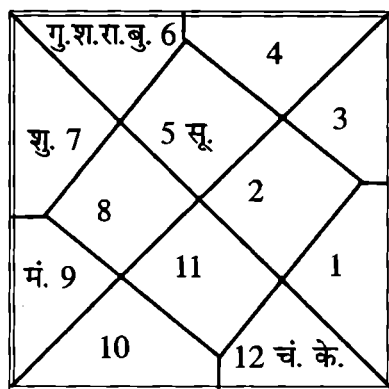
09.09.1922/ 04.35AM.
साधक-ध्यान में ही समाधि
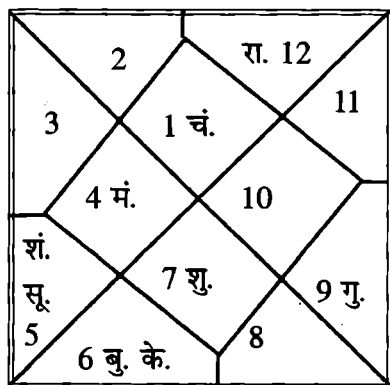
11.09.1949 समय 20.30 पति - पत्नी **11.12.1949 समय 05.20**
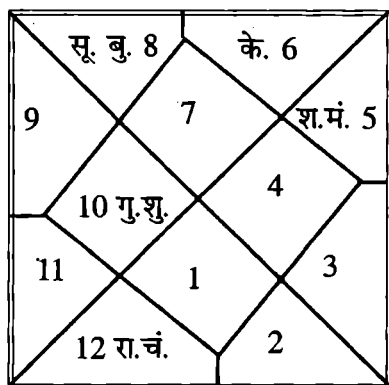
मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे। – युग निर्माण योजना
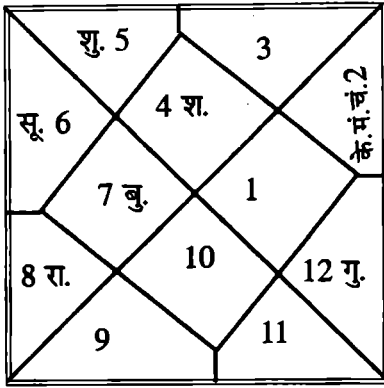
27.09.1975 समय 01.05 बालिका 06.03.1954 समय 14.15
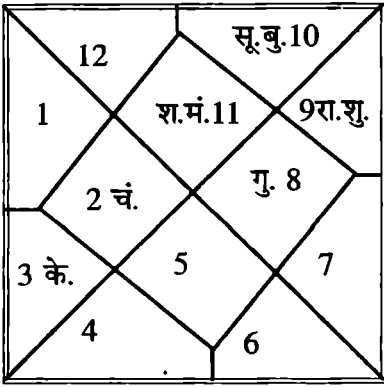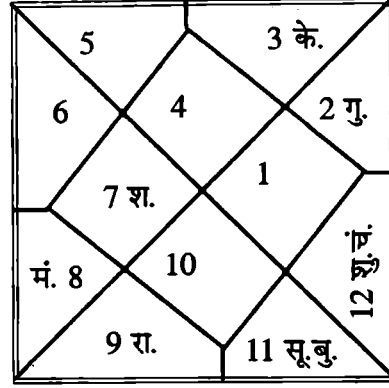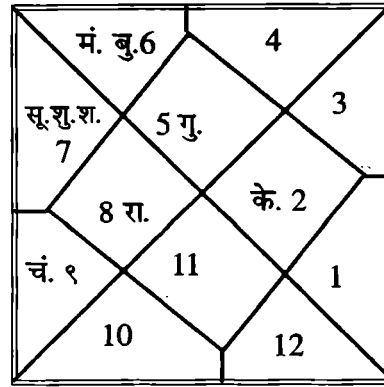
02.02.1936 समय 09.00 21.10.1955 समय 03.30
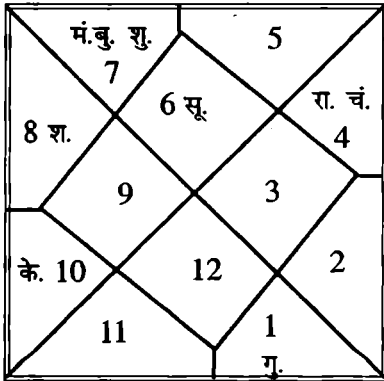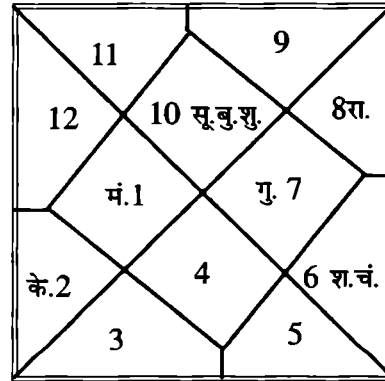
महात्मा गाँधी परिव्राजकाचार्य स्वामी विवेकानंद

- इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

- युग निर्माण योजना

अध्याय -14

मंगल विचार एवं अष्टकवर्गपद्धति

मांगलिक योग विचार

"लड़के या लड़कियों की जन्म कुण्डली में यदि 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में मंगल पड़ जाये, तो एक-दूसरे के जीवन में अनिष्टकारी परिणाम हुआ करते हैं"—ऐसा कई ज्योतिषियों का मत है। कई विद्वानों के मतानुसार कुछ मांगलिक परिहार नीचे दिये जा रहे हैं, उनमें कहा गया है कि निम्न तथ्यों से मांगलिक दोष समाप्त होता है, तो 'मंगली मंगलप्रदा' अर्थात् मंगली योग मंगल प्रदाता होता है।

1. वर-कन्या दोनों की कुण्डलियाँ मांगलिक हों, तो वह विवाह करने में कोई दोष नहीं।

२. **शुक्रेऽथवा सुर गुरौ च त्रिकोण केन्द्रे।**
जाताङ्गना भवति पूर्ण विभूति युक्ता॥
साध्वी सुपुत्र जननी सुखिनी गुणाढ्या।
सप्ताष्टके यदि भवेद् शुभग्रहोऽपि॥

यदि जातक की जन्मकुण्डली में सप्ताष्टक (1,4,7,8,12वें) घर में मंगल हो और केन्द्र त्रिकोण (1,4,7,9,10 वें) घर में गुरु या शुक्र हो, तो कन्या मंगली दोष युक्त नहीं होती, वरन् वह साध्वी, पूर्ण वैभव शालिनी, पुत्रवती, सुख-सौभाग्यशालिनी और गुणवती होती है।

कन्या रजस्वला होने पर कुण्डलीगत षडष्टक विचार नहीं करना चाहिए, वरन् प्रत्यक्ष गुण, स्वभाव के आधार पर वर-कन्या मेलापक करना चाहिए। अपरिपक्व अवस्था के बालकों के गुणों का निर्णय कुण्डली के आधार पर तथा परिपक्वबुद्धि के वर-कन्या के गुण प्रत्यक्ष देखकर निर्णय करने का विधान सनातन पद्धति का निर्विवाद अंग है। जो अभिभावक धन, प्रतिष्ठा आदि के लोभ में, स्वार्थवश, वर-कन्या के स्वाभाविक गुणों की उपेक्षा करके सम्बन्ध स्थापित करते हैं, उन्हें दाम्पत्य हनन का भीषण पातक लगता है। जो विवाह वर-कन्या के गुणों की समानता के स्थान पर उनके रूप, धन आदि के आधार पर किये जाते हैं, वे अशुभ परिणाम उत्पन्न करने वाले होते हैं। वर-कन्या गुणों की दृष्टि से अनुरूप हों और कन्या की आयु अथवा शिक्षा वर से अधिक हो, तो इसे शुभ योग ही कहा जाता है।

मंगली दोष विचार—ज्योतिष शास्त्र मेलापक द्वारा दम्पति के आगामी जीवन के सुख-दु:ख, सम्पत्ति, विपत्ति, आय-व्यय तथा आने वाली घटनाओं का मनोवैज्ञानिक एवं तात्त्विक विवेचन करता है। अत: वर-कन्या के शुभ-अशुभ ग्रह योगों की सामञ्जस्यता एवं मित्रता होगी, तो आगामी जीवन सुखमय तथा आनन्दमय होगा। यदि ग्रहों में परस्पर शत्रुता एवं एक की कुंडली में सौम्यग्रह तथा एक की कुंडली में अरिष्टकारक ग्रह बैठे हों, तो संघर्षमय जीवन के साथ-साथ एक-दूसरे को घातक सिद्ध हो सकते हैं। अत: कुंडली मिलान के समय अरिष्ट योगों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। यदि वर या कन्या किसी एक की जन्मकुंडली या चन्द्रकुंडली से लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या व्यय स्थान में मंगल स्थित हो, तो इस प्रकार की कुण्डली मंगली कही जाती है। यदि वर की कुण्डली में उपरोक्त स्थानों में मंगल हो, तो कन्या को तथा यदि कन्या की कुण्डली में हो, तो वर के लिए नेष्ट होता है।

"लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।

कन्याभर्तृविनाशाय भर्ताकन्याविनाशदः॥" --(मुहूर्त्त-संग्रह-दर्पण)

मंगली दोष परिहार–उपरोक्त कथनानुसार यदि वर-कन्या में से किसी एक की कुंडली में मंगलीयोगकारक ग्रह स्थित हों तो परस्पर अरिष्टकारक होते हैं, "किन्तु लोहा लोहे को काटता है" इस तथ्य के अनुसार यदि वर-कन्या दोनों की कुंडली में समान मंगली योगकारक ग्रह स्थित हो तो दोनों का मंगली दोष कट जाता है, यह ध्यान रहे कि वर के मंगली योग का कन्या से प्रबल होना आवश्यक है।

इसी प्रकार यदि एक की कुंडली में मंगल योगकारक स्थानों, 1, 4, 7, 8, 12 में हों तथा, दूसरे की कुंडली में इन्हीं स्थानों में मंगल अरिष्टयोगकारक शनि, राहु, केतु, आदि पापग्रह स्थित हों तो एक-दूसरे के दोष को नष्ट कर देते हैं–

"शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।" --(फलित नवरत्न संग्रह)

"यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा।

अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥"

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, मकर राशि का सप्तम में, कर्क राशि का अष्टम में तथा धनु राशि का व्ययस्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं होता–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।

द्यूने मृगे कर्कि चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥

अन्य आचार्य के मत में वृष राशि के मंगल को सप्तम भाव तथा कुम्भ राशि के भौम को अष्टम भाव में होने पर भौम दोष नहीं होता–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।

वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते॥

बली गुरु शुक्र के लग्न या सप्तम भाव में होने पर तथा मंगल के वक्री, नीचस्थ, शत्रुगृही तथा अस्तंगत होने पर भी मंगल का दोष समाप्त हो जाता है।

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे।

वक्रनीचारिगृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥

द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तथा केन्द्र स्थित राहु मंगल की युति हो, तो मंगली का दोष नहीं होता।

न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवः।

न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे॥

केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा 3, 6, 11 वें भाव में अशुभ ग्रह सप्तमेश स्वगृही हो तो भौम का दोष नहीं होता–

"केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदनपस्तथा॥"

राशि की मित्रता, गण की ऐक्यता तथा गुणों की बहुलता मंगली के दोष को नष्ट कर देती है–

"राशिमैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते॥"

उपरोक्त मंगली दोष परिहार से स्पष्ट है कि रामाचार्य ने बालवैधव्य का विचार करके सावित्री या पीपल के वृक्ष का व्रत कराकर विष्णु की प्रतिमा (शालिग्राम) पीपल वृक्ष या कुम्भ से विवाह के अनन्तर चिरंजीवी वर के साथ विवाह कराने का जो विधान किया है, उसका भी यही तात्पर्य है–

"जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं,
सावित्र्या उत पैप्पलंहि सुतया दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं
दद्यातां चिरंजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।"

विवाहादि कार्यों में सूर्य, गुरु व चन्द्र का अष्टक वर्ग विचार–विवाहादि शुभ कार्यों में यदि नाम राशि का जन्म राशि से गोचरीय ग्रह शुद्धि प्राप्त न हो तो अष्टकवर्गशुद्धि का विचार करना चाहिए, क्योंकि अष्टकवर्ग द्वारा शुद्ध गुरु, चन्द्र व सूर्य गोचर के अशुद्ध होने पर भी ग्राह्य माने जाते हैं। कहा भी है–

"अष्टकवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु।
व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यौ गोचरेण कदाचन॥"

क्योंकि...

"अष्टकवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु
सूक्ष्माष्टवर्गसंशुद्धिः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे"

अष्टक वर्ग निकालने, फल करने की विधि

ज्योतिष शास्त्र का अपना विस्तृत क्षेत्र है। जीवन के प्रत्येक पहलुओं के अध्ययन के लिए इस शास्त्र के विद्वानों में कई विधियाँ प्रचलित हैं। होराशास्त्र जिसे फलित ज्योतिष कहते हैं। उसे जानने के लिए जन्म कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, षोड़श वर्ग कुण्डली एवं अष्टक वर्ग का उपयोग किया जाता है। ये सभी एक दूसरे की पूरक हैं। इन्हें एक दूसरे से स्वतंत्र मानना निरर्थक है। पाराशर जी ने स्पष्ट कहा है कि यदि जन्म कुण्डली व षोड़श वर्ग कुण्डली के अध्ययन में अन्तर मालूम हो, तो अष्टक वर्ग को प्रधानता दी जाए। केवल जन्म कुण्डली के आधार पर निष्कर्ष निकालना बिल्कुल उचित नहीं है। किसी भी जातक की कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के लिए अष्टक वर्ग का अध्ययन आवश्यक है। स्मरणीय है कि सभी ग्रह आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं, वे एकांकी नहीं हैं अतः किसी भी जातक की कुण्डली पर ग्रहों के सम्मिलित प्रभावों का विचार करना उचित है।

अष्टक वर्ग में प्रत्येक गृह की शुभाशुभता तथा तदनुरूप फल स्पष्ट किया जाता है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार ग्रह सात हैं जिन्हें सू.च.मं.बु.बृ.शु. और शनि कहते हैं। इसके अतिरिक्त अष्टक वर्ग में लग्न को भी सम्मिलित किया जाता है। सात ग्रह और लग्न को मिलाकर अष्टक वर्ग बनता है। अष्टक वर्ग में बिन्दु अथवा रेखा इन दो प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक गृह का अलग-अलग अष्टक वर्ग बनाया जाात है। इसे सूर्याष्टक, चन्द्राष्टक, मंगलाष्टक, बुधाष्टक, गुरु अष्टक वर्ग, शुक्राष्टक, शनि अष्टक वर्ग एवं लग्नाष्टक वर्ग कहा जाता है। प्रत्येक ग्रह की वर्ग रेखाएँ निर्धारित हैं। उदाहरण के लिए सूर्य की 48,चं की 49, मं. की 39, बुध की 54, बृ. की 56, शुक्र की 52, शनि की 39 एवं लग्न की 48 रेखाएँ होती है। इन सभी का योग 386 होता है। अलग-अलग ग्रहों का अष्टक वर्ग बना लेने के पश्चात् सर्वाष्टक वर्ग बनाया जाता है। सर्वाष्टक में 337 रेखाएँ की गणना होती है। लग्नाष्टक वर्ग की 49 रेखाओं को इसमें सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस प्रकार कुल 386 रेखाओं में से 49 रेखाओं को निकाल देने पर 337 की संख्या रहती है। इस प्रकार सर्वाष्टक वर्ग का निर्माण होता है।

सर्व प्रथम प्रत्येक ग्रह का पृथक्-पृथक् अष्टक वर्ग बनाया जाता है।

सभी ग्रहों व लग्न की रेखा संख्या पूर्व निर्धारित है, जिसे एक तालिका के द्वारा दर्शाया गया है। इसके आधार पर जातक की जन्म कुण्डली के सभी ग्रहों का अष्टक वर्ग बनता है। इसे भलीभाँति समझाने के लिए एक उदाहरण कुण्डली का उपयोग किया गया है। जन्म कुण्डली में प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से आगे कुछ विशेष स्थानों पर ही शुभ रेखा देता है। अतः अष्टक वर्ग बनाते समय ध्यान रखना चाहिए कि ग्रह जिस स्थान पर बैठा है, उसी स्थान से गणना करें। अन्यथा समस्त प्रक्रिया दोषपूर्ण हो जायेगी।

सूर्याष्टक वर्ग रेखा-49							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
1	3	1	3	5	6	1	3
2	6	2	5	6	7	2	4
4	10	4	6	9	12	4	6
7	11	7	9	11		7	10
8		8	10			8	11
9		9	11			9	12
10		10	12			10	
11		11				11	

सत्य की खोज करने वाले को हर्ष, शोक, मोह, अनुराग और प्रभुत्व की भावना को अपने पास नहीं आने देना चाहिए।

–माता भगवती देवी शर्मा

चन्द्राष्टक वर्ग रेखा-49							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
3	1	2	1	1	3	3	3
6	3	3	3	4	4	5	6
7	6	5	4	7	5	6	10
8	7	6	5	8	7	11	11
10	10	9	7	10	9		
11	11	10	9	11	10		
		11	10	12	11		
			11				

मंगलाष्टक वर्ग रेखा-39							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
3	3	1	3	6	6	1	1
5	6	2	5	10	8	4	3
6	11	4	6	11	11	7	6
10		7	11	12	12	8	10
11		8				9	11
		10				10	
		11				11	

बुधाष्टक वर्ग रेखा-54							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
5	2	1	1	6	1	1	1
6	4	2	3	8	2	2	2
9	6	4	5	11	3	4	4
11	8	7	6	12	4	7	6
12	10	8	9		5	8	8
	11	9	10		8	9	10
		10	11		9	10	11
		11	12		10	11	

निर्धन वह नहीं जिसके पास उपयोग के साधन कम है, वरन् वह है जिसकी तृष्णा अधिक है।

–माता भगवती देवी शर्मा

गुरु का अष्टक वर्ग रेखा-56							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
1	2	1	1	1	2	3	1
2	5	2	2	2	5	5	2
3	7	4	4	3	6	6	4
4	9	7	5	4	9	12	5
7	11	8	6	7	10		6
8		10	9	8	11		7
9		11	10	10			9
10			11	11			10
11							11

शुक्र का अष्टक वर्ग रेखा-52							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	श.	शु.	ल.
8	1	3	3	5	1	3	1
11	2	5	5	8	2	4	2
12	3	6	6	9	3	5	3
	4	9	9	10	4	8	4
	5	11	11	11	5	9	5
	8	12			8	10	8
	9				9	11	9
	11				10		11
	12				11		

शनि अष्टक वर्ग रेखा-							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
1	3	3	6	5	6	3	1
2	6	5	8	6	11	5	3
4	11	6	9	11	12	6	4
7		10	10	12		11	6
8		11	11				10
10		12	12				11
11							

लग्नाष्टक वर्ग रेखा-49							
सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
3	3	1	1	1	1	1	3
4	6	3	2	2	2	3	6
6	10	6	4	4	3	4	10
10	11	10	6	5	4	6	11
11		11	8	6	5	10	
12			10	7	8	11	
			11	9	9		
				10	11		
				11			

उदाहरण कुण्डली

उपरोक्त कुण्डली के आधार पर अब अलग-अलग सभी ग्रहों का अष्टक वर्ग बनाया गया है। पाठकों की असुविधा को ध्यान में रखते हुए राशि एवं ग्रहों का क्रम एक समान रखना अच्छा होता है। इससे गड़बड़ी की आशंका नहीं रहती है। चूकि अलग-अलग कुण्डली में ग्रह अलग-अलग राशि में होते हैं, अत: अष्टक वर्ग निकालते समय राशि के साथ ग्रहों व लग्न को भी इंगित किया गया है। ऐसा करने से असुविधा नहीं होती है। राशि के नाम के स्थान पर उनकी संख्या को लिखा गया है।

सभी पुरुषार्थों में आध्यात्मिक पुरुषार्थ का मूल्य और महत्व अधिक है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि सामान्य धन संपत्ति की अपेक्षा आध्यात्मिक शक्ति संपदा की महत्ता अधिक है। धन, बुद्धि, बल आदि के आधार पर अनेकों व्यक्ति उन्नतिशील, सुखी एवं सम्मानित बनते हैं, पर उन सबसे अनेकों गुना महत्व वे लोग प्राप्त करते हैं, जिन्होंने आध्यात्मिक बल का संग्रह किया है।

–माता भगवती देवी शर्मा

सूर्याष्टक वर्ग-४८

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं. बृ.		सू.	बु. शु.		च	श.			
सू.	।	।	।		।	।		।			।	।
च.	।				।	।				।		
मं.	।		।	।		।			।	।	।	।
बु.		।	।	।	।			।		।	।	
बृ.	।						।	।			।	
शु.					।						।	।
श.			।	।	।	।	।		।	।		।
ल.	।	।			।	।		।				।
जोड़	5	3	4	3	6	5	2	4	2	4	5	5

चन्द्राष्टक वर्ग-४९

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं. बृ.		सू.	बु. शु.		च	श			
सू.		।	।				।			।	।	।
च.	।	।			।	।		।		।		
मं.	।			।	।		।	।			।	।
बु.		।	।	।		।		।	।	।		।
बृ.	।	।	।			।			।	।		।
शु.		।	।	।				।	।	।		।
श.	।	।					।				।	
ल.	।				।			।				।
जोड़	5	6	4	3	3	3	3	5	3	5	3	6

यह न समझो कि एकान्त में किया गया अपराध किसी ने देखा नहीं। ईश्वर की दृष्टि सर्वव्यापी है, उससे कोई नहीं बच सकता।

–माता भगवती देवी शर्मा

मंगल अष्टक वर्ग-३९

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं. बृ.		सू.	बु. शु.		च.	श.			
सू.		।	।				।		।	।		
च.	।					।				।		
मं.	।		।	।		।			।	।		।
बु.				।				।		।	।	
बृ.	।	।						।				।
शु.	।			।	।						।	
श.			।	।	।	।	।		।			।
ल.	।		।		।			।				।
जोड़	5	2	4	4	3	3	2	3	3	4	2	4

बुध का अष्टक वर्ग-५४

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल.मं.बृ.		सू.	बु. शु.		च.	श.			
सू.	।		।	।					।	।		
च.	।		।		।	।			।		।	
मं.	।		।	।		।			।	।	।	।
बु.		।	।	।	।	।		।		।	।	
बृ.	।	।						।		।		
शु.	।	।		।		।	।	।	।	।		
श.			।	।	।	।	।		।	।		।
ल.	।		।	।		।		।		।		।
जोड़	6	3	6	6	3	6	2	4	5	7	3	3

एकाकी मत रहो, अन्यथा अशक्त रहोगे।

मिल-जुल कर रहने वाले तृणे से हाथी बाँधने वाला रस्सी बनता है।

–माता भगवती देवी शर्मा

बृहस्पति का अष्टक वर्ग-५६

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं. बृ.		सू.	बु. शु.		च.	श.			
सू.	।	।	।		।	।	।	।			।	।
च.		।		।		।			।			।
मं.	।		।	।		।			।	।		।
बु.		।	।	।		।	।		।	।	।	
बृ.	।		।	।	।	।			।	।		।
शु.		।	।	।			।			।	।	
श.	।	।						।			।	
ल.	।		।	।		।	।	।	।		।	।
जोड़	5	5	6	6	2	6	4	3	5	4	5	5

शुक्र अष्टक वर्ग-५२

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं. बृ.		सू.	बु. शु.		च.	श.			
सू.			।	।								।
च.			।	।		।	।	।	।	।	।	।
मं.	।	।			।		।	।			।	
बु.		।		।				।		।	।	
बृ.	।						।			।	।	।
शु.	।	।	।	।		।	।	।	।	।		
श.	।			।	।	।	।				।	।
ल.	।		।	।	।	।	।			।	।	
जोड़	5	3	4	6	3	4	6	4	2	5	6	4

शनि अष्टक वर्ग-३९

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं. बृ.		सू.	बु. शु.		च.	श.			
सू.		।	।		।	।		।			।	।
च.	।					।				।		
मं.	।	।			।		।	।				।
बु.	।	।	।	।	।						।	
बृ.	।	।					।	।				
शु.				।	।						।	
श.	।	।					।				।	
ल.	।		।		।	।		।				।
जोड़	6	5	3	2	5	3	3	4	0	1	4	3

लग्न अष्टक वर्ग-४९

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह			ल. मं बृ.		सू.	बु. शु.		च.	श.			
सू.		।	।	।			।	।		।		
च.	।				।			।				।
मं.	।		।		।			।				।
बु.	।		।	।		।	।		।		।	
बृ.	।		।	।		।	।	।	।		।	।
शु.	।	।		।		।	।	।	।	।		
श.		।				।	।		।		।	।
ल.	।				।			।				।
जोड़	6	3	4	4	3	4	5	6	4	2	3	5

अष्टक वर्ग के निर्माण में खड़ी रेखा देना चाहिए। कुछ लोग शून्य भी देते हैं। शून्य की अपेक्षा खड़ी रेखा देने से इसके अध्ययन में सहूलियत होती है। जिस किसी भी वर्ग में एक भी रेखा नहीं है, वहाँ शून्य देना बेहतर है। इससे स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि वह ग्रह कब अधिक कष्टदायी है। उदाहरण कुण्डली के शनि के अष्टक वर्ग में धनु राशि सप्तम भाव में एक भी रेखा नहीं है, यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है।

उदाहरण कुण्डली के आधार पर सू.च.मं.बु.बृ.शु.श. व ल. का अलग-अलग अष्टक वर्ग बनाया गया है। इसके आधार पर अलग-अलग ग्रहों की महादशा में जातक को क्या फल मिलेगा स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। अष्टक वर्ग के किसी भी खाने में 3 या उससे कम रेखा है, तो वह कष्टकर काल होता है। इसी प्रकार 4 या उससे अधिक रेखाएँ शुभकारक होती हैं।

पृथक्-पृथक् अष्टक वर्ग बनाने के पश्चात् सर्वाष्टक वर्ग बनाया गया है।

सर्वाष्टक वर्ग-337

सर्वाष्टक वर्ग के अनुसार जिस भाव में 25 या उससे अधिक रेखाएँ होती हैं, वह भाव शुभकारी है। इसी प्रकार 25 से कम रेखा वाला भाव कष्टकर होगा। उदाहरण कुण्डली के अनुसार कर्मभाव दसवाँ स्थान में 30 रेखाएँ हैं जबकि लाभ भाव में 37 रेखाएँ हैं। यह दर्शाता है कि कर्म से अधिक आय की प्राप्ति होगी। इसी प्रकार व्यय भाव में 27 रेखाएँ है, जो आय भाव से काफी कम हैं, इससे पता चलता है कि आय से व्यय कम होगा। लग्न में 28 रेखाएँ हैं, जो बताता है कि अत्यधिक कर्म से स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव होगा; परन्तु व्यय भाव से लग्न में अधिक रेखा का होना दर्शाता है कि स्वास्थ्य दबाव में नहीं रहेगा। छठे और अष्ठम भाव में अधिक रेखा का होना अच्छा माना जाता है।

आयु के किस भाग में सुख अधिक प्राप्त होगा इसके लिए बारह राशियों को तीन भागों में विभाजित करें। लग्न से चतुर्थ भाव को प्रथम भाग, पंचम से अष्टम तक जीवन का मध्य भाग तथा नवम से द्वादश भाव को तीसरा भाग कहते हैं। सर्वाष्टक वर्ग के अलग-अलग इन तीनों भागों की रेखाओं की संख्या को जोड़ ले। जिसमें अधिक संख्या हो वह सबसे अच्छा जीवन का काल खण्ड होगा।

इसी प्रकार जिस काल खण्ड में रेखाओं की संख्या सबसे कम होगी, वह कष्टदायी अवधि होगी। यदि लग्न में सर्वाधिक बिन्दु हो, तो वह जातक दीर्घायु होता है। इसी प्रकार कम बिन्दु का होना आयु के ह्रस का संकेत देता है। इस सम्बन्ध में भारत देश की कुण्डली के अष्टवर्ग में 42 बिन्दु है, जो विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा सर्वाधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत का अस्तित्व सदैव बना रहेगा। लग्न से आत्मबल का ज्ञान होता है। लग्न स्थान में ग्रहों की अधिक संख्या व लग्न को देखने वाला ग्रह सभी शुभ माने जाते हैं। इसी प्रकार छठे भाव के स्वामी का लग्न से संबन्ध व दृष्टि हो जाए, तो राजयोग बन जाता है।

विश्व की अनेकों समस्याएं उनके सामने हैं। व्यक्तिगत रूप से उन्होंने अपने लिए स्वर्ग-मुक्ति या ऋद्धि-सिद्ध की कभी आकांक्षा नहीं की। धर्म प्रेमी विशुद्ध ब्राह्मण का आदर्श जीवन बनाना और निभाना, इतनी मात्र उनकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा है। बाकी तो वे जो कुछ भी करते और सोचते हैं उसमें लोकहित एवं धर्म सेवा की भावनाएं ही प्रधान रूप में रहती हैं। तप साधना के समय भी उनके सामने ऐसे ही प्रश्न हैं। भारत की प्राचीन अध्यात्म विद्याएं एक-एक करके लुप्त हो गईं या होती जा रही हैं। इनकी खोज करना आवश्यक है। अभी वेदमंत्रों के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक कार्यों को प्रकाश में लाना शेष है। यह कार्य सूक्ष्म योग दृष्टि प्राप्त होने पर ही संभव है। वह दृष्टि तप साधना के बिना और किसी प्रकार उपलब्ध नहीं हो सकती।

-माता भगवती देवी शर्मा

अध्याय-15

मूल विचार

यह त्रिआयामी, त्रिगुणात्मक सृष्टि है। नक्षत्र 27 हैं। इन्हें तीन समान वर्गों में बाँटे तो (1) 1 से 9, (2) 10 से 18 तथा (3) 19 से 27 यह वर्ग बनते हैं। इन तीनों वर्गों की सन्धि वाले नक्षत्रों को मूल संज्ञक नक्षत्र माना गया है। वे हैं 27वाँ रेवती एवं प्रथम अश्विनी 9वाँ आश्लेषा एवं 10वाँ मघा तथा 18वाँ ज्येष्ठा एवं 19वाँ मूल। यह तीन ही नक्षत्र युग्म ऐसे हैं, जहाँ दो संलग्न नक्षत्र अलग-अलग राशियों में हैं; किन्तु किसी का कोई चरण दूसरी राशि में नहीं जाता। इसलिए इन्हें नक्षत्र चक्र के 'मूल' अर्थात् प्रधान नक्षत्र माना गया है।

ऐसे महत्त्वपूर्ण नक्षत्रों को अशुभ मानने की परम्परा न जाने कहाँ से चल पड़ी? वस्तुत: तथ्य यह है कि नक्षत्रों का सम्बन्ध मानवी प्रवृत्तियों से है। नक्षत्र चक्र के तीन मूल बिन्दुओं पर स्थित नक्षत्रों में मानव की 'मूल' वृत्तियों को तीव्रता से उछालने की विशेष क्षमता है। मूल वृत्तियों में शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं। अस्तु, विचारकों ने सोचा कि हीनवृत्तियाँ विकास पाकर परेशानी का कारण भी बन सकती हैं। उन्हें निरस्त करने वाले कुछ उपचार पहले से ही किए जाएँ तो अच्छा है। इसलिए हीन, पाशविक संस्कारों को निरस्त करने वाले, श्रेष्ठ संस्कारों को उभारने में सहयोग कर सकने वाले कुछ जप-यज्ञादि उपचार किए जायें तो अच्छा है।

जिन घरों में गायत्री उपासना, यज्ञ, बलिवैश्व आदि सुसंस्कार जनक क्रम सहज ही होते रहते हैं, वहाँ मूल शान्ति के निमित्त अलग से कुछ करना आवश्यक नहीं। जिन परिजनों में ऐसे कुछ नियमित क्रम नहीं हैं, उनमें मूल शान्ति के नाम पर कुछ उपचारों की लकीर पीटने मात्र से जातक की वृत्तियों पर कुछ उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता नहीं है। इसीलिए शास्त्र मत है कि जिन परिवारों में ऋषि प्रणीत चर्चाएँ नियमित रूप से होती हों, उनमें मूलशान्ति की आवश्यकता नहीं पड़ती। मानवोचित गुणों के विकास के लिए जिन परिवारों में योजनाबद्ध प्रयास होते हों, वहाँ मूल युक्त जातक विशेष सौभाग्य के कारण बनते हैं।

नोट—मूल की शान्ति के लिए सुविधानुसार जन्म के 11 वें या 27वें दिन रुद्रार्चन, शिवाभिषेक व महामृत्युंजय की विधि सहित जप व गायत्री महामंत्र का जप, हवन कराने से अभुक्त मूल शान्ति होती है। गायत्री महामंत्र के 27,000 मंत्र जप व महामृत्युंजय मंत्र के 1100 मंत्र जप करना अनिवार्य है।

गण्ड मूल के नक्षत्र व उनका फल

चरण	अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
प्रथम	पिता-भय	शान्ति से सुख	माता को हानि	बड़े भाई को नेष्ट	पितृ कष्ट	राज्य सम्मान
द्वितीय	सुखैश्वर्य	धन की कमी	पिता को भय	छोटे भाई को नेष्ट	मातृ कष्ट	मंत्रित्व प्राप्ति
तृतीय	मंत्रित्व प्राप्ति	मातृकष्ट	सुख	माता को नेष्ट	धन की चिंता	धन सुख की प्राप्ति
चतुर्थ	राज सम्मान	पितृ कष्ट	धन-विद्या	पिता को नेष्ट	शान्ति से सुख	अनेक कष्ट

मूलवास–मनुष्य की योनि पाठशाला के छात्र जैसी है। चराचर जगत पाठ्यपुस्तक है। नाना योनियाँ इस पाठ्यपुस्तक के नाना अध्याय अथवा पाठ्यक्रम है, जिन्हें जीवरूपी छात्र यथा योनि पढ़ता, परीक्षा (इम्तहान) के लिये मानव योनि में प्रवेश पाता है। मानव योनि पूरक परीक्षा के क्षण हैं। जिस प्रकार परीक्षा स्थल पर परीक्षक ही प्रश्नपत्र तथा उत्तर पुस्तिका छात्र को प्रदान करता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी परीक्षक भी परिस्थितियों का प्रश्नपत्र तथा जीवन रूपी उत्तरपुस्तिका स्वयं जीवरूपी छात्र को प्रदान करता है। मनुष्य की योनि परीक्षा के क्षण हैं। परीक्षा का समय जन्म से मृत्युपर्यन्त है। जिस प्रकार परीक्षाफल तीन प्रकार का होता है, यथा उत्तीर्ण (पास) होना, अनुत्तीर्ण होना अथवा कुछ थोड़ी कमी के कारण उसे थोड़े समय उपरान्त पुनः परीक्षा में फिर से परीक्षा में आना। इस जीवन परीक्षा में भी जीवरूपी छात्र को इन्हीं अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ेगा। उत्तीर्ण होने पर अनन्त की राह है। उसे अगली कक्षा में प्रवेश मिलेगा, यदि उत्तीर्ण नहीं हो पाया और फेल हो गया तो उसे पुनः सारा पाठ्यक्रम दुहराने के लिये यथा योनियों से गुजरना होगा। इसके उपरान्त ही पुनः परीक्षा के लिये मानव योनि में प्रवेश मिलेगा। अल्प त्रुटियों की अवस्था में उसे लगभग कतिपय योनियों के उपरान्त ही पुनःपरीक्षा हेतु मनुष्य की योनि प्रदान की जायेगी।

इसीलिये जब भी घर में शिशु का जन्म होता है, घर में सूतक (छूत) का वास होता है। मन्दिर, पूजा आदि बन्द कर दिये जाते हैं। बरहा मनाया जाता है इसका पृष्ठ रहस्य यही है कि जन्मने वाला शिशु हमारा ही पूर्वज है अल्प त्रुटियों से रह गया था, फिर अपने घर लौट आया। बरहा पूजन में प्रायश्चित पूजन भी करते है उसी में मूल शान्ति विधि भी पूरी कर लेते हैं। यद्यपि मूल का वास-माघ, आषाढ़, आश्विन, और भाद्रपद माह - आकाश में, कार्तिक, चैत, श्रावण और पौष माह - पृथ्वी में, फाल्गुन, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष और वैशाख माह - पाताल में होता है। "**भूतले वर्तमाने तु ज्ञेयो दोषोऽन्यथा न हि।**" अर्थात् जब पृथ्वी में मूल का वास हो तभी मूलपूजन का क्रम करना चाहिये अन्यथा सामान्य यज्ञादि से भी बारह (बरहा) पूजन का क्रम पूरा कर लेना चाहिये।

अध्याय -16

वास्तुशास्त्र का संक्षिप्त विवरण

मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में तीन वस्तुओं की अधिक चर्चा होती है, रोटी, कपड़ा और मकान। जीवित रहने के लिये भोजन, तन ढकने को कपड़ा एवं आश्रय हेतु भवन होना परमावश्यक है। वास्तु शब्द, पुर, दुर्ग, आवास, भवन एवं निवेश्य भूमिका वाचक है। वास्तु शास्त्र का क्षेत्र—गृह, भवन, नगर, दुर्ग, ग्राम, देवालय, कूप, तालाब, वापी, मूर्त्ति-निर्माण, मण्डप यज्ञ-शाला सभागृह, रथादि वाहन, पर्यंक, मञ्चादि का निर्माण प्रतिष्ठा करना एवं जीर्णोद्धार आदि वास्तुशास्त्र का क्षेत्र है।

वास्तुशास्त्र का ज्योतिष से निकट का सम्बन्ध है। इसका भूगोल एवं भूगर्भविज्ञान तथा गणित से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

यहाँ केवल भवन प्रासाद एवं देवालय की निर्माण-पद्धति का ही संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। ज्योतिष में आकाशीय ग्रह-पिण्डों व नक्षत्रों की गति-विधि का ज्ञान गणित के आधार पर किया जाता है। उस गणित के आँकड़ों का प्रत्यक्ष में परीक्षण-हेतु ज्योतिष-वेधशालाओं में यन्त्रों का निर्माण किया जाता है। यज्ञ-यागादि कार्य में यज्ञमण्डप, ग्रह सम्बन्धी यज्ञकुण्ड का निर्माण व प्रमुख देवताओं के यज्ञस्तम्भ की स्थापना कर यज्ञ का आरम्भ किया जाता है। भवन निर्माण में किस दिशा में पूजाग्रह, कोषागार, स्नानगृह, शौचालय, रसोईघर, शयन-स्वागत,-अध्ययन,-भोजन-कक्षादि का निर्माण करना श्रेयस्कर है, इस को प्राथमिकता दी गई है। अत: ज्योतिष वेधशाला, यज्ञयागादि कर्म एवं भवन निर्माण में सर्व प्रथम दिक्शोधन करना परमावश्यक हो जाता है। इस प्रक्रिया को आधुनिक समय में हल्के-फुल्के घटिया किस्म के चुम्बकीय यन्त्रों द्वारा प्राय: सर्वत्र पूर्ण किया जाता है अर्थात् निम्न स्तरीय कम्पास यन्त्र द्वारा जो दिशा ज्ञान किया जाता है वह प्राय: अशुद्ध ही होता है, इसका मूल कारण प्रबल शक्ति प्रदायक बिजली के तार व भूमिगत ऐसे पदार्थ जो चुम्बक की स्थिरता में विघ्न उत्पन्न करते हैं, इस कारण वास्तविक दक्षिणोत्तर दिशा के निर्णय में त्रुटि हो जाने से उपर्युक्त तीनों कर्म, दिग्मूढ़ हो जाने से कल्याण-प्रद नहीं होते। एतदर्थ भगवान् सूर्य देव के आधार पर वास्तविक दिग्शोधन की प्रक्रिया प्रस्तुत की जाती है।

भगवान् सूर्यदेव यत्र-तत्र, सर्वत्र स्पष्ट मध्याह्न काल में याम्योत्तर रेखा पर आते हैं। स्पष्ट मध्याह्न काल सूर्य घटिका (धूपघड़ी) के ठीक 12 बजे होता है। धूपघड़ी सर्वत्र उपलब्ध नहीं होती। अत:, धूपघड़ी के दिन के 12 बजे का ज्ञान स्पष्टान्तर द्वारा किया जाता है। स्पष्टान्तर का ज्ञान मध्यमान्तर व वेलान्तर के आधार पर किया जाता है। भौगोलिक स्थिति अक्षांश व रेखांश द्वारा जानी जाती है। रेखांश की पूर्व और पश्चिम में ग्रीन्विच (लन्दन इंग्लैण्ड) से गणना कर प्रत्येक राष्ट्र का स्तम्भ निश्चय किया गया है, जिसके आधार उस देश की यान्त्रिक घड़ियाँ, जो सर्वत्र सभी के पास उपलब्ध हैं, उस देश के स्टैण्डर्ड समय की सूचना देती है। जैसे भारतवर्ष का स्तम्भ 82 अंश 30 कला अर्थात् 5 घन्टे 30 मि. पूर्व में स्थापित किया है। पाकिस्तान का 75 अंश पूर्व अर्थात् 5 घण्टे पूर्व में बांग्लादेश का 90 अंश पूर्व अर्थात् 6 घन्टे पूर्व में स्तम्भ स्थापित किया है, इस प्रकार विश्व में सर्वत्र अपने-अपने राष्ट्र के स्तम्भ निश्चित कर यान्त्रिक घड़ियों द्वारा समय ज्ञात करने की प्रथा प्रचलित है।

मध्यमान्तर का ज्ञान अपने-अपने राष्ट्र में इन स्तम्भों के आधार पर किया जाता है। भारतवर्ष में मध्यमान्तर का ज्ञान 82 अंश 30 कला के स्तम्भ जो मिर्जापुर (उ. प्र.) के अत्यन्त निकट है, उस स्थान से किया जाता है। अभीष्ट नगर के अक्षांश व रेखांश भौगोलिक एटलसों से सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं एवं ज्योतिष के ग्रन्थों व पञ्चाङ्गों में भी उपलब्ध हो जाते हैं। उदाहरणार्थ हरिद्वार (उत्तराञ्चल) नगर का मध्यमान्तर ज्ञात करने हेतु हरिद्वार के रेखांश 75 अंश 8 कला को 82 अंश 30 कला में घटाकर शेष अंश व कला को 4 से गुणा करने पर हरिद्वार के मध्यमान्तर का मान मिनट व सेकण्डों में उपलब्ध हो जाता है। (82 l30)-(78 l8) = (4 l22)/ (4 l22) x4 = 16 मि0 88 से0 = 17 मि0 28 से0 हरिद्वार का मध्यमान्तर प्राप्त हुआ। चूँकि हरिद्वार का रेखांश 82 अंश 30 कला से कम है। अत: उपर्युक्त मध्यमान्तर ऋणात्मक प्राप्त हुआ। भारत में जिन नगरों का रेखांश (82 l30) से अधिक होगा वहाँ मध्यमान्तर धनात्मक होगा, जैसे कोलकाता (कलकत्ता) का रेखांश (88 l23) कला है, दोन्नों के अन्तर 5 अंश 53 कला को 4 से गुणा करने पर 20 मि0 212 से0 अर्थात् 23 मि0 32 से0 से कोलकाता (कलकत्ता) का मध्यमान्तर धनात्मक हुआ। जिन राष्ट्रों का पश्चिम रेखांश है, उनके मध्यमान्तर (मि0 से0) का चिह्न भारत के विपरीत होगा, यदि भारत में धन है, तो वहाँ ऋण यदि भारत में ऋण है, तो वहाँ धनात्मक मध्यमान्तर होगा। अपने-अपने राष्ट्र में अपने-अपने स्तम्भ से मध्यमान्तर का निर्णय किया जाता है। अस्तु, मध्यमान्तर के मिनटादि बोधक चक्र भी ज्योतिष ग्रन्थों व पञ्चाङ्गों में उपलब्ध हो जाते हैं। वहाँ से प्राप्त कर लेने चाहिये। उपर्युक्त प्रक्रिया से ही मध्यमान्तर निकाल कर लिखे गये हैं।

+मध्यमान्तर+ वेलान्तर+ स्पष्टान्तर का मान होता है। वेलान्तर के मिनटादि प्रतिदिन के सर्वत्र विश्व में एक ही मान के होते हैं। वेलान्तर सारणियाँ यत्र-तत्र पञ्चाङ्गों से प्राप्त कर बीजगणित की रीति से धनर्णयोरन्तर योग के आधार पर, मध्यमान्तर और वेलान्तर संस्कार करके स्पष्टान्तर की उपलब्धि की जा सकती है। संक्षिप्त में स्पष्टान्तर ज्ञान करने हेतु सारणियों से मध्यमान्तर लेकर वेलान्तर सारणी के मिनटादि का संस्कार कर देने पर स्पष्टान्तर ज्ञात हो जाता है। संस्कार शब्द का अभिप्राय यह है कि मध्यमान्तर और वेलान्तर के चिह्न भिन्न हों, तो दोनों का अन्तर कर शेष में अधिक संख्या वाले का चिह्न स्पष्टान्तर में देना चाहिये, जैसे मध्यमान्तर ऋण 20 मिनट और वेलान्तर धन 15 मिनट है, तो शेष ऋण 5 मिनट दोनों का चिह्न ऋणात्मक हो, तो दोनों का योग करने पर स्पष्टान्तर ऋणात्मक होगा।

अत: +मध्यमान्तर+वेलान्तर+स्पष्टान्तर सिद्ध हुआ।

दिनाङ्क 20 जून को हरिद्वार में स्पष्टान्तर ज्ञात करना है, तो मध्यमान्तर सारणी से ऋणात्मक 17 मि0 28 से0 मध्यमान्तर लिखकर वेलान्तर सारणी से 20 जून का वेलान्तर धनात्मक 1 मि0 22 से0 प्राप्त कर दोनों का चिह्न भिन्न होने के कारण दोनों का अन्तर करने पर 16 मि0 6 से0 स्पष्टान्तर ऋणात्मक प्राप्त हुआ। चूँकि ऋणात्मक राशि अधिक है। अत: स्पष्टान्तर का चिह्न ऋणात्मक हुआ। यदि किसी जगह राशि धनात्मक अधिक हो, तो स्पष्टान्तर धनात्मक होगा। प्रत्येक सन् में 20 जून को हरिद्वार में ऋणात्मक 16 मि0 6 से0 स्पष्टान्तर होगा। भारत में सर्वत्र स्पष्टान्तर जानने की यह ही प्रक्रिया है। प्रत्येक नगर का मध्यमान्तर स्थिर है और प्रत्येक दिन का वेलान्तर स्थिर है। अत: सारणियों के आधार पर सुगमता से स्पष्टान्तर का ज्ञान किया जा सकता है।

स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार स्टैण्डर्ड समय सूचक यान्त्रिक घड़ियों में कर देने पर धूपघड़ी के 12 बजे का समय ज्ञात होता है, यह सिद्धान्त अकाट्य है। अपनी घड़ी रेडियो से मिलाकर स्टैण्डर्ड समय का सही ज्ञान कर 20 जून को स्पष्ट मध्याह्न काल में लौह निर्मित लट्टे को समतल भूमि में लम्बरूप में स्थिर करने पर आपकी घड़ी के 12 बजकर 16 मि0 6 से0 पर उस लट्टे की छाया के ठीक मध्य में रेखाङ्कित कर देने पर आपको वास्तविक दक्षिणोत्तर दिशा का ज्ञान हो जायेगा, उस रेखा पर लम्बरूपात्मक पूर्वापर रेखा करने पर पूर्व व पश्चिम बिन्दु का सही ज्ञान हो जायेगा। इस प्रकार सर्वप्रथम दिग्शोधन भूमि पर करने के पश्चात् इंजीनियर द्वारा निर्मित भवन के नक्शे को भूमि पर बने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चिह्नों से मिलाकर रखने पर भवन के चारों दिशाओं का ठीक-ठीक ज्ञान करने के अनन्तर भवन में किस दिशा में कौन सा भवन बनाया जाय यह निर्णय कर भवन-निर्माण से भवन-सुख-समृद्धि कारक बन सकेगा, अन्यथा दिशा विहीन गृह तो क्लेशकर ही होगा। उपर्युक्त दिशा-शोधन का प्रकार भारत में किसी भी नगर में किया जा सकता है, केवल मध्यमान्तर उस नगर का लेना चाहिये शेष प्रक्रिया उपर्युक्त ही है।

विदेशों में जिन राष्ट्रों का पूर्व रेखांश है, उनकी प्रक्रिया भारत वर्ष की तरह ही है, केवल मध्यमान्तर ज्ञान करने के लिये उस राष्ट्र के स्तम्भ का प्रयोग करना चाहिये। जिन राष्ट्रों का पश्चिम रेखांश है, वहाँ अपने राष्ट्र के स्तम्भ से भारत की तरह मध्यमान्तर निकालकर मध्यमान्तर का चिह्न बदल देना चाहिये जैसे भारत में मध्यमान्तर जिस दिन धनात्मक है, उस दिन पश्चिम रेखांश स्थित नगर का मध्यमान्तर ऋणात्मक होगा, केवल इतना भेद है, शेष प्रक्रिया भारत की तरह ही है। अत: विदेशों में सुगमता से दिशा-ज्ञान किया जा सकता है।

आवासीय भवन निर्माण के लिये वर्गाकार या आयताकार भूखण्ड का चयन करना चाहिये। ये क्रमश: सर्वोत्तम व उत्तम होते हैं। भूखण्ड में उत्तर व पूर्व दिशाए नीची और दक्षिण व पश्चिम दिशाएँ उन्नत होनी चाहिये।

टी.वी. एण्टीना दक्षिण-पश्चिम कोण (नैऋत्य) में लगाना चाहिये। समस्त विश्व की रचना प्रकृति ने भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन 5 तत्त्वों के आधार पर ही रचना की है। अत: भवन निर्माण में भी इन तत्त्वों का समावेश यथा- स्थान करना श्रेयस्कर होता है। सर्व प्रथम भूखण्ड का परीक्षण, शोधन एवं दिग्शोधन परमावश्यक है।

शुभाशुभ भूमि-लक्षण-चक्र

भूमि प्रकार	भूमि का रंग	स्वाद	गन्ध	फल
ब्राह्मणी	सफेद	मधुर	सुगन्ध युक्त	सुखदा
क्षत्रिया	लाल	कषैली	रक्तगन्ध	राज्यप्रदा
वैश्या	हरा पीला	खट्टी	शहद जैसी गन्ध	धनप्रद
शूद्रा	काला	कड़वी	मदिरा जैसी गन्ध	त्याज्या

इस चक्र के आधार पर भूमिका

चयन कर शल्य क्रिया द्वारा भूमिगत अशुभ पदार्थों को भवन निर्माण के क्षेत्र से बाहर निकाल कर भूमि-परीक्षण हेतु भूमि के मध्य वर्गाकार 18 इंच/1 हाथ गड्ढा खोदकर पुनः उसको खोदी हुई मिट्टी से भरना चाहिये भरने पर मिट्टी शेष बच जाय, तो शुभ अन्यथा अशुभ मानना चाहिये।

वर्गाकार गढ्डे को जल से सायंकाल में प्रपूरित कर प्रातः काल में देखे यदि गड्ढा भरा-पूरा मिले, तो अत्यन्त शुभ अन्यथा जितना जल भूमि सोख ले उस अनुपात से शुभाशुभ का विचार कर ले। यदि गड्ढा ज्यादा खाली दृष्टिगोचर हो, तो वह भूमि त्याज्य है। शिलान्यास का मुहूर्त्त दैवज्ञ से पूछकर निश्चित करें तथा किस दिशा में खनन करें इसका विचार इस चक्र के अनुसार राहु का मुख व पृष्ठ भाग निश्चय करके करे।

कोण	ईशान (उ.पू.)	वायव्य (प. उ.)	नैर्ऋत्य (द. पू.)	आग्नेय (द. पू.)
गृहारम्भ	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चिक, धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क
देवालयारम्भ	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
जलाश-यारम्भ	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चिक, धनु
खनन दिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य

खनन पृष्ठ भाग में होता है। शिलान्यास मुहूर्त्त के समय सूर्य, सिंह, कन्या, तुला का हो, तो खनन आग्नेय कोण में राहुमुख ईशान में होता है, वृश्चिक धनु मकर के सूर्य में खनन ईशान कोण में राहुमुख वायव्य कोण में होता है।

कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में खनन वायव्य कोण में राहुमुख नैर्ऋत्य कोण में होता है।

वृष, मिथुन, कर्क के सूर्य में खनन नैर्ऋत्य कोण में राहुमुख आग्नेय कोण में होता है।

इसी प्रकार देवालय जलाशय के मुहूर्त्त में चक्र के अनुसार राहुमुख का ज्ञान व खनन कोण का ज्ञान कर लेवें। भवन निर्माण के समय जल का स्रोत उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में होना चाहिये शुद्ध जल का स्रोत ईशान में तथा अशुद्ध जल का स्रोत (प्रवाह) उत्तर-पश्चिम (वायव्य) कोण में होना चाहिये। जल-प्रवाह, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा में कदापि नहीं होना चाहिये। पानी की टंकी छत पर वायव्य व उत्तर दिशा के मध्य या वायव्य व पश्चिम दिशा के मध्य रखनी चाहिये। नैर्ऋत्य, आग्नेय, वायव्य व दक्षिण दिशा में कदापि न रखें। कुआँ, ट्यूबवेल व हेण्ड पम्प सदैव ईशान कोण में खुदवाना चाहिये। भूमिगत पानी की टंकी ईशान कोण में सर्वोत्तम है तथा उत्तर, पश्चिम व पूर्व में भी रखी जा सकती है। नैर्ऋत्य, आग्नेय, वायव्य व दक्षिण में भूमिगत टंकी का निर्माण नितान्त वर्जित है।

शौचालय—नैर्ऋत्य व दक्षिण के मध्य या नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा के मध्य शौचालय का निर्माण करना चाहिये। शौच करते समय मुख दक्षिण या पश्चिम की ओर होना चाहिये। सेप्टिक टैंक वायव्य कोण में सर्वोत्तम है।

स्नान घर—नैर्ऋत्य व दक्षिण दिशा के मध्य अथवा नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा के मध्य स्नान गृह का निर्माण करना चाहिये।

अग्नि:—अग्नि सम्बन्धी सभी कार्य आग्नेय कोण में करने चाहिये। अत: रसोईघर, अग्निस्थान, गीजर, विद्युतमीटर मोटर आदि आग्नेय कोण में ही स्थापित करने चाहिये। इसका विकल्प वायव्य कोण है। विद्युत व्यवस्था आग्नेय कोण में करनी चाहिये।

पूजास्थल ईशान कोण में रखना चाहिये। भवन का दक्षिण पश्चिम भाग ऊँचा रखें। बिजली के मेन स्विच जैनरेटर, विद्युतकक्ष आदि अग्नि से सम्बन्धित सम्पूर्ण कार्य कलाप आग्नेय कोण में ही करने चाहिये। जीने का प्रवेश द्वार दक्षिण या पश्चिम में रखें।

भण्डार-गृह उत्तर तथा उत्तर ईशान कोण के मध्य में बनाना चाहिये अथवा पूर्व व आग्नेय कोण के मध्य या दक्षिण व आग्नेय कोण के मध्य बनावें। रसोईघर में गैस व चूल्हा आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये।

भोजनकक्ष पूर्व या पश्चिम दिशा में बना सकते हैं।

वायु:—वायु के भरपूर लाभ के लिये पूर्व एवं उत्तर दिशा को सर्वाधिक खुला रखना चाहिये, वायु के सभी साधन भवन में उत्तर-पूर्व दिशा में स्थापित करना लाभप्रद होता है। दरवाजे, खिड़कियाँ, रोशनदान, कूलर, ए.सी, बरामदा, बालकनी, लान, बगीचा आदि का उत्तर पूर्व दिशा में निर्माण करना चाहिये। जिन दिशाओं से घर में शुद्ध वायु आती है, उनके विपरीत दिशा में एक्जहास्ट फैन या रोशनदान लगाने चाहिये।

ताजी हवा का पंखा उत्तर और पूर्व दिशा में लगाना चाहिये।

आकाश:—भवन के मध्य भाग में आँगन रखना चाहिये।

आँगन की लम्बाई, चौड़ाई जोड़कर 9 से भाग देने पर 1,6,00 बचे तो अशुभ 2,5,7,8 बचे तो शुभ होता है।

आँगन मध्य में ऊँचा और चारों ओर नीचा रखना शुभ है। मध्य में नीचा चारों ओर ऊँचा आँगन अशुभ होता है।

द्वार व खिड़कियाँ— भवन के उत्तर व पूर्व दिशा में दरवाजे व खिड़कियां बनानी चाहिये, दरवाजे व खिड़कियाँ सम संख्या में 2,4,6,8 में शुभ (10, 20, 30) जिस अंक के अन्त में 00 हो, उस संख्या में तथा विषम संख्या में (1,3,5,7,9 आदि) अशुभ होती हैं। ऊँ, मंगलकलश, मछली का जोड़ा, हाथ का पंजा, अर्द्धचन्द्र, क्रॉस (+) के चिह्न दरवाजे पर बनाना शुभ होता है। दक्षिण व पश्चिम दिशा में द्वार व खिड़कियाँ नहीं हों, तो शुभ होता है। यदि परमावश्यक हो, तो कम से कम बनाने चाहिये।

सीढ़ियाँ—सीढ़ियाँ भवन के दक्षिण व पश्चिम भाग में बनानी चाहिये, सीढ़ियाँ विषम संख्या में बनानी चाहिये। सीढ़ियों का घुमाव सदैव पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर, उत्तर से पूर्व की तरफ होना चाहिये। सीढ़ियों की संख्या में 3 का भाग देने पर 2 शेष रहना शुभ है, सीढ़ियाँ बायें से दायें घूमनी चाहिये। पुराने मकान में यदि सीढ़ियाँ उत्तर पूर्व में बनी हो, तो दक्षिण दिशा में एक कमरा अवश्य बनावें।

मुख्य द्वार—भवन में प्रवेश के लिये द्वार उत्तर या पूर्व में ही होना चाहिये। दो पल्लों का द्वार ही शुभ होता है। द्वार स्वत: खुलने व बन्द होने वाले नहीं होने चाहिये, खोलने व बन्द करते समय आवाज नहीं होनी चाहिये। द्वार की संख्या सम 2,4,6,8 आदि होनी चाहिये।

वर्ण के अनुसार ब्राह्मण के लिये पश्चिम में, क्षत्रिय के लिये उत्तर में, वैश्य के लिये पूर्व में और शूद्र के लिये दक्षिण में द्वार शुभ होता है। गृहस्वामी की राशि कर्क, वृश्चिक और मीन हो, तो पूर्व में वृष, तुला और कुम्भ, पश्चिम में, मेष, सिंह, धनु राशि हो, तो उत्तर में तथा मिथुन, कन्या, मकर राशि हो, तो दक्षिण में द्वार होना चाहिये।

खिड़कियाँ द्वार के सामने बनानी चाहिये। बाहरी द्वार व भीतरी द्वार एक सीध में होने से शुभ, बाहरी द्वार भीतरी द्वार से बायीं ओर अशुभ होता है।

उत्तर दिशा शुभ है। इस ओर मुँह करके पूजा पाठ करनी चाहिये। नैर्ऋत्य कोण बच्चों के लिये स्वास्थ्य व सुखप्रद है। पश्चिम दिशा सामाजिक प्रतिष्ठा के दृष्टिकोण से शुभ है। वायव्य कोण वायु सम्बन्धी कार्यों के लिये शुभ तथा शत्रु तथा मुकद्दमे आदि से मुक्ति दिलाने में सहायक है।

पूजास्थल:— ईशान कोण, ईशान व उत्तर के मध्य, ईशान व पूर्व के मध्य में पूजा स्थल रखना चाहिये। ब्रह्मा विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य तथा कार्तिकेय की मूर्त्ति का मुख पूर्व या पश्चिम में, गणेश, कुबेर, दुर्गा, भैरव एवं षोडश मातृकाओं की मूर्त्तियों के मुख दक्षिण में तथा हनुमान जी का मुख नैर्ऋत्य कोण में होना चाहिये।

द्रव्य:—तिजोरी, गल्ला, नगदी आदि सदैव उत्तर में रखनी चाहिये। चैक-बुक पासबुक भी उत्तर दिशा में रखें। तिजोरी में श्रीयन्त्र व कुबेर यन्त्र स्थापित करना चाहिये।

अध्ययन कक्ष:—ईशान कोण में पूजा-गृह के साथ पूर्व दिशा में होना चाहिये, वायव्य व पश्चिम के मध्य भी बना सकते हैं। स्वागत कक्ष वायव्य, ईशान व पूर्व के मध्य, तथा फर्नीचर दक्षिण और पश्चिम दिशा की तरफ रखना चाहिये।

पशुशाला वायव्य कोण में बनानी चाहिये। गैरेज दक्षिण-पूर्व या उत्तर पश्चिम होना चाहिये। भूमिगत तहखाना उत्तर पूर्व में।

बहुमंजिलीय:— बहुमंजिलीय मकान में उत्तर पूर्व का ढलान नीचा और दक्षिण पश्चिम भाग उन्नत होना चाहिये। ऊपर की मंजिलों की ऊँचाई प्रथम तल से कम रखनी चाहिये।

दुकान में पूजा स्थल ईशान में, आलमारी-फर्नीचर दुकान के दक्षिण-पश्चिम भाग में तथा दुकान मालिक को पूर्व व उत्तराभिमुख होकर बैठना चाहिये। बिजली का मीटर आग्नेय कोण में। पीने का पानी उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम में रखना चाहिये।

होटलों में पाकशाला आग्नेय में, ठहरने का स्थान उत्तर में तथा भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनाना चाहिये। होटल की बालकनी उत्तर या पूर्व में, स्टोर दक्षिण-पश्चिम में, शौचालय व स्नान गृह पश्चिम दिशा में, मुख्य द्वार उत्तर-पूर्व में, स्वागत कक्ष उत्तर-पूर्व में, धन-पात्र उत्तर में, तथा प्रबन्धक का कमरा वायव्य कोण में बनायें।

सिनेमाहाल में प्रबन्धक का कमरा उत्तर दिशा में, तथा उसे पूर्वाभिमुख होकर बैठना चाहिये। टिकट-खिड़की उत्तर या उत्तर-पूर्व में, कैश-बॉक्स उत्तर दिशा में अपने दायें हाथ में, पानी की व्यवस्था ईशान कोण में तथा पार्किंग व साइकिल वाहन आदि का स्टैण्ड उत्तर पूर्व क्षेत्र में रखें। भूखण्ड आयताकार व वर्गाकार रखें। उत्तर-पूर्व कोण बढ़ा हुआ हो, प्रोजेक्टर उत्तर दिशा में, कैण्टीन दक्षिण-पूर्व में शौचालय व मूत्रालय पश्चिम व दक्षिण क्षेत्र में रखना चाहिये।

औद्योगिक प्रतिष्ठान में उत्तर-पूर्व भाग दक्षिण-पश्चिम भाग से नीचा रखें। कच्चा माल दक्षिण-पश्चिम दिशा में, तैयार माल उत्तर-पूर्व में, प्रशासकीय कार्यालय उत्तर-पूर्व में, सिक्योरिटी ऑफिस उत्तर दिशा में, पार्किंग उत्तर-पश्चिम में अग्नि सम्बन्धी कार्य आग्नेय में दक्षिण या पूर्व में, पानी का प्रबन्ध ईशान कोण में, स्टोर दक्षिण-पश्चिम में जल का हैड टैंक वायव्य कोण में भारी मशीनरी दक्षिण-पश्चिम दिशा में, कर्मचारियों की कॉलोनी उत्तर-पश्चिम में और कर्मचारियों के मकान उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पूर्व में रहने चाहिये। निर्माण कार्य सर्व प्रथम पश्चिम या दक्षिण दिशा से प्रारम्भ करें।

राशि से नगर या मोहल्ले का चयनः-व्यक्ति की नाम राशि से नगर या मोहल्ले (निज मकान का नाम) की नाम राशि 2,5,9,10,11 वीं हो तो शुभ 1,7,3,6,4,8,12 वीं राशि हो तो रोगकारक तथा शत्रुबाधाकारक होती है। यह नाम राशि मेष हो तो 3,4,5,9,12 राशि वाले व्यक्ति को शुभ है। वृष हो तो 1,4,5,6,10 राशि वाले को शुभ। मिथुन हो तो 2,5,6,7,11,12 राशि वाले को शुभ। कर्क राशि को 3,6,7,8 राशि वाले शुभ। सिंह राशि 1,4,7,8,9 राशि वाले को शुभ। कन्या राशि 2,5,8,9,10 राशि वाले को शुभ। तुला राशि 3,6,9,10,11 राशि वाले को शुभ। वृश्चिक राशि 4,7,10,11,12 राशि वाले व्यक्ति को शुभ। धनु राशि 1,5,8,11,12 राशि के व्यक्ति को शुभ। मकर- 1,2,6,9,10,12 राशि के व्यक्ति को शुभ। कुम्भ राशि-1,2,3,7,10 राशि के व्यक्ति को शुभ तथा मीन राशि का नगर व मोहल्ला (निज मकान का नाम) 2,3,4,8,11 राशि के व्यक्ति को शुभफल कारक है। नाम राशि से ही विचार करना चाहिए। जन्म राशि से मकान निर्माण का चयन न करें। सीढ़ियाँ बाएँ से दायें घूमती हुई बनाएँ। पूर्वाभिमुख व उत्तराभिमुख शयन करें। उत्तर और पूर्व में मुख्य द्वार का निर्माण शुभ होता है। उत्तर व पूर्व दिशा में खुला स्थान रखें।
काकिणी द्वारा शुभाशुभ विचारः- व्यक्ति की वर्ग संख्या को दुगुना करके उसमें नगर की वर्ग संख्या जोड़ें, 8 का भाग दें तथा नगर की वर्ग संख्या को 2 से गुणाकर व्यक्ति के वर्ग की संख्या जोड़ें, 8 का भाग दें। नगर की शेषांक से व्यक्ति के शेषांक की संख्या अधिक हो तो नगर शुभप्रद होता है।
नगर या मोहल्ले की दिशा का विचारः- मेष राशि वाले व्यक्ति को उत्तर दिशा अशुभ होती है। मिथुन, वृष राशि वाले को नगर या मोहल्ले के मध्य भाग, कर्क राशि वाले व्यक्ति को नैऋत्य कोण, सिंह राशि को मध्य भाग, कन्या राशि के व्यक्ति को दक्षिण, तुला के व्यक्ति को वायव्य, वृश्चिक को पूर्व, धनु को पश्चिम, मकर को मध्य, कुम्भ को ईशान, मीन को अग्निकोण त्याज्य हैं। शेष राशियाँ त्याज्य राशि को छोड़कर शुभ रहती हैं। जिस भूमि पर आम, पपीता, अमरुद, आँवला, अनार व पलाश के वृक्ष हों या सहज ही उगते हों वह भूमि सर्वदा शुभ होती है। खट्टे व कड़ुवे फलों वाले वृक्ष-शमी, नीम, मदार, बेर आदि के वृक्ष अशुभ माने जाते हैं।

नैऋत्य व वायव्य कोण में उन्नत भूमि गजपृष्ठा कहलाती है। मध्य भाग में ऊँची और चारों ओर से नीची भूमि कूर्मपृष्ठा होती है। यह दोनों प्रकार की भूमि भवन निर्मण के लिए शुभ मानी जाती हैं। यदि इस आकृति की भूमि न हो तो जगह को भवन निर्माण से पहले उक्त आकार में बनाया जाना शुभप्रद होता है। ईशान कोण की तरफ जल स्रोत उत्तम माना जाता है। भवन का दक्षिण भाग सदैव ऊँचा रखना चाहिए। ईशान और उत्तर का भाग नीचा रखना शुभप्रद होता है। भूमि के केन्द्र (मध्य भाग) को ब्रह्म कहते हैं। इस भाग पर कोई निर्माण न कर खुला रखें। खुले स्थान पर तुलसी का वृक्ष लगाना श्रेष्ठ माना जाता है। **गृह निर्माण के लिए स्मरणीय बातेंः**-फर्नीचर के निर्माण में शाल, अशोक, चन्दन, शीशम, महुआ आदि की लकड़ी का उपयोग उत्तम होता है। पीपल, पाकर, गूलर, बरगद, खैर, कैथ व बहेड़ा आदि की लकड़ी का उपयोग विज्ञजन अशुभ मानते हैं। पीपल का वृक्ष पश्चिम में, बरगद पूर्व में, गूलर दक्षिण में खैर, कैथ उत्तर दिशा में लगाना श्रेष्ठ माना जाता है। अन्य वृक्ष किसी भी दिशा में लगाये जा सकते हैं। कटीले व दुग्धयुक्त पेड़ भवन के पास नहीं लगाना चाहिए। शयन कक्ष में टूटे बर्तन न रखें। रात्रि में बुरे स्वप्न आते हों तो ताम्र पात्र में जलभर कर सिरहाने रखें। शत्रु बाधा के लिए लोहे का टुकड़ा पलंग के नीचे रखें। असाध्य रोग से मुक्ति के लिए चाँदी के पात्र में केसर डालकर जल रखें। तनाव व कुण्ठा से मुक्ति के लिए घृत का दीपक जलाएँ। मानसिक संतुलन हेतु घर में गायत्री महामंत्र का जप-ध्यान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

वास्तुशास्त्रीय गृह निर्माण तालिका
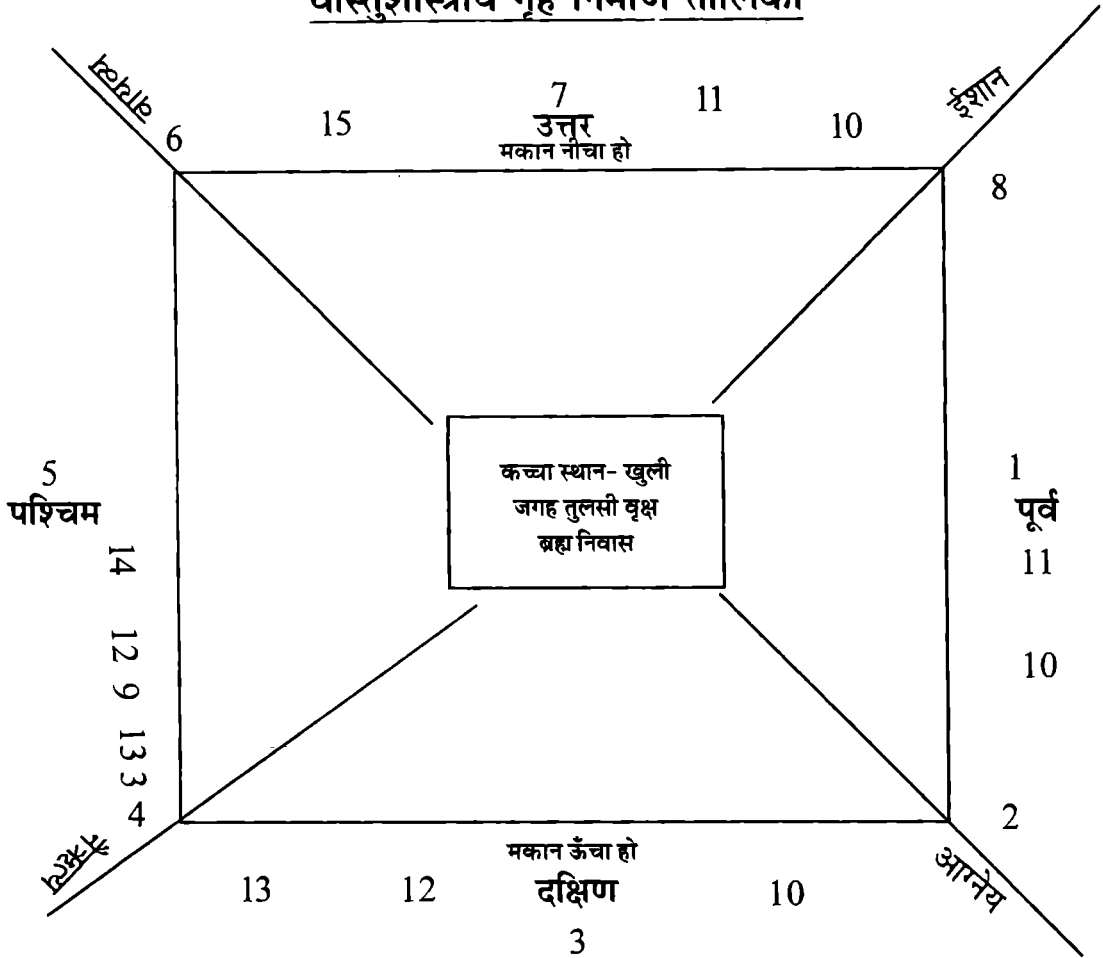
संकेतः- 1- भूमिगत भवन, भोजनालय, अध्ययन कक्ष, द्वार, खिड़की, रोशनदान, कूलर ए०सी० बरामदा, भूमिगत पानी की टंकी, नौकरों के मकान 2- अग्नि सम्बन्धी सभी कार्य रसोई घर, गीजर, विद्युत मीटर, मीटर बोर्ड, मेनस्वीच, मोटर आदि। 3- गैराज, फर्नीचर, भवन का भाग ऊँचा, सीढ़ियाँ। 4- शिशु गृह। 5- भोजनालय, गैराज, भूमिगत पानी की टंकी, भवन का भाग ऊँचा फर्नीचर, सीढ़ियाँ। 6- अशुद्ध जलस्त्रोत, सेफ्टिकटैंक, पशुशाला, स्वागतकक्ष। 7 -दरवाजे-खिड़की रोशनदान दूबलॉन कूलर, ए०सी० बरामदा, ताजी हवा का पंखा भवन, भूमिगत भवन, गैराज सेवकों के घर, कोषागार। 8 -कूप,हैंडपम्प, ट्यूबवेल, शुद्ध जल का स्त्रोत उत्तर से पूर्व की ओर पूजा स्थल कोषागार, भूमिगत पानी की टंकी। 9- शयनकक्ष, सिरहाना दक्षिण की तरफ। 10- भण्डार गृह। 11-एक्झास्टफैन दीवार पर। 12- शौचालय। 13- स्नानघर। 14- भोजनालय के दक्षिण पूर्व (ड्राइंग रूम)। 15- छत पर पानी की टंकी। सीढ़ियाँ विषम संख्या में होनी चाहिए। सीढ़ियों की संख्या में 3 का भाग देने पर 2 शेष रहने चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्त हो। दरवाजे के कपाट 2 पल्ले के होने चाहिए। 1 पल्ला ठीक नहीं। खिड़कियाँ सम संख्या में (2,4,6,8) होनी चाहिए; परन्तु 10,12,30,40 संख्या नहीं होनी चाहिए। जलप्रवाह- आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, व पश्चिम दिशा में कदापि नहीं रखने चाहिए।

अध्याय-17

असली लाल किताब के द्वादश भावगत ग्रहों के फल एवं उपचार

सूर्य का द्वादश भावगत फलः-

सूर्य का प्रथम भावगत फल

सूर्य शुभ— धर्मार्थ द्रव्य खर्च, धर्मशाला, कूप, प्याऊ आदि का निर्भाता, पितृभक्त किन्तु स्वयं की सन्तान पितृभक्त न ही हो। मद्यपान से घृणा, दीन दुखी का सेवक, क्रोधी, सर्वदा लाभ होता रहे, राज्याश्रित जीवन, आंखों देखी बात पर विश्वास करे, कान से सुनीपर नहीं।

सूर्य अशुभ— सूर्य शत्रुराशिस्थ, नीच पापाक्रान्त हो और शुक्र का सप्तम भाव से सम्बन्ध हो, तो बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु हो। सूर्य प्रथम भाव में तथा मंगल पञ्चम भाव में होने से एक के बाद एक पुत्र मृत्यु को प्राप्त होवे, अशुभफल कारक सूर्य प्रथम भाव में तथा सूर्य, मंगल और गुरु भी निर्बल व अशुभ फलप्रद हों, तो प्रतिष्ठारहित अभागा जीवन व्यतीत करे। सूर्य प्रथम और शनि अष्टम हो, तो द्विभार्या योग निश्चित है।

उपाय—पैतृक घर में हैण्ड-पम्प लगावे तथा दिवा स्त्री-समागम से बचे।

द्वितीय भावगत सूर्यफल

सूर्य शुभ— द्वितीय भाव में सूर्य और गुरु स्थित हो, शनि से अदृष्ट हों, तब ननिहाल, लडकी का ससुराल धनी होगा, किसी शत्रुका 11 दिन, 11 मास व 11 वर्ष में नाश होगा। जातक पारिवारिक व्यक्तियों का सेवक एवं अपने भुजबल पर द्रव्योपार्जन कर्त्ता। उपरोक्त फल यदि चन्द्र 6वें भाव में हो, तो विशेष होगा। सूर्य धनभाव में, राहु अष्टम भाव में तथा केतु अष्टम भाव में हो, तो जातक योग्य व सत्यवादी होगा, यदि राहु नवम भाव में हो, तो पेन्टर व चित्रकार होगा। सूर्य द्वितीय में व केतु नवम में हो, तो जातक टैक्नीशियन होगा। मंगल नवम में हो, तो शौकीन होगा। शनि दशम में हो, तो कुशाग्रबुद्धि व सम्मानित होगा। शनि एकादश में व सूर्य धनभाव में हो, तो दु:खी कभी धनी कभी दरिद्र होवें

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य द्वितीय भाव में हो, तो धन, स्त्री, सम्पत्ति के झगड़े होते है, स्त्री, माता, भाभी, बहिन, इनके सुख की हानि होगी। सूर्य धन भाव में, चन्द्र अष्टम भाव में हो, तो किसी भी प्रकार का दान लेना महाअशुभ फल कारक होगा। धन भाव में सूर्य, मंगल लग्न में तथा चन्द्र द्वादश भाव में हो, तो जातक को सर्वदा आर्थिक कष्ट व दुखी बनाये रखेगा।

उपाय— शनि की वस्तुओं का दान जप करना, नारियल, तेल, बादाम का धर्मस्थल में दान करे। स्वयं किसी से दान न लेवे।

तृतीय भावगत सूर्य का फल

सूर्य शुभ— अपने भुज बल से द्रव्योपार्जन कर सुखी, ज्योतिष विषय का ज्ञाता, गणितज्ञ, बौद्धिक कार्यों से लाभ, सदाचारी नहीं रहे, तो अस्वस्थ व भाग्यहीन होवे। यदि चन्द्र भी कुण्डली में शुभ तो आजीवन आर्थिक लाभ हो। विशेष कर चन्द्रमा की वस्तुओं का धन्धा करनेपर लाभ हो। चोरी की वस्तुओं का ग्रहण नहीं करे, सूर्य व बुध तृतीय भाव में हो, तो भाई- भतीजे से लाभ होगा

सूर्य अशुभ— तृतीय भाव में अशुभ सूर्य हो तथा कुण्डली में चन्द्र भी अशुभ फल-प्रद हो, तो चोरी से विशेष धन की हानि होवे। सूर्य तृतीय में और प्रथम भाव भी अशुभ फलप्रद हो, तो पडोसी बर्बाद होंगे। सूर्य तृतीय में बुध या पापग्रह भी अशुभ हो, तो मामा के लिये हानिप्रद होंगे।

उपाय- पापकर्म से बचें। चाल चलन ठीक रखें।

चतुर्थ भावगत सूर्य का फल

सूर्य शुभ— चतुर्थ भाव में शुभफल कारक सूर्य हो, तो वृद्धावस्था का जीवन आर्थिक दृष्टि से उत्तम रहे, सन्तान धनी हो, स्वयं श्रेष्ठ प्रशासक व दयालु होवे। कुण्डली में चन्द्र व गुरु जिस भाव में स्थित हों युति उस भाव-सम्बन्धी वस्तुओं से द्रव्य लाभ होवे। सूर्य चन्द्र की युति, चतुर्थ भाव में नए शोध के भरपूर लाभ हो। सूर्य मंगल की युति, विनम्र व धैर्यवान् बनाती है। सूर्य बुध की युति, चतुर्थ में श्रेष्ठ व्यापारी बनाती है तथा यात्रा से लाभ प्रदान करती है। सूर्य चन्द्र शुक्र की, युति भाग्यवान् माता- पिता से लाभ व श्रेष्ठ कर्मो के करने की प्रवृत्ति बढाती है सूर्य, चन्द्र, मंगल की चतुर्थ में युति, सोने व चांदी से लाभ दिलाती है।

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य जातक को लालची व अनेक प्रकार से कष्टभोगी बनाता है। तस्कर-वृत्ति भी बनाता है। सूर्य चतुर्थ में शनि सप्तम में नेत्र रोगी, सूर्य चतुर्थ में अन्य पापग्रह भी अशुभ फलप्रद हो, तो सन्तान का सुख प्राप्त ही होता है। सूर्य चतुर्थ में और मंगल दशम में भाग्यशाली और नेत्र रोगी होता है। सूर्य चतुर्थ में दशम भाव में चन्द्र, गुरु व बुध में से कोई ग्रह हो, तो अशुभ फल कारक होते हैं। सूर्य चतुर्थ में गुरु दशम में हो, तो सुवर्ण की चोरी हो जाय; शनि की वस्तुओं का व्यापार हानिप्रद हो, मातृपितृ सम्बन्धी कार्य शुभ हों तथा गुप्त शत्रुबाधा भी बनी रहे।

उपाय-पैतृक घर में अन्धों को भिक्षा दे तथा भोजन का दान अन्धों को देवे। लोहे व लकडी का काम कभी न करे। वस्त्र, सोना, चाँदी का धन्धा अवश्य करे।

पञ्चम भावस्थ सूर्यफल

सूर्य शुभ— भेड़ बकरी पालने से लाभ, रसोईघर पूर्व में बनाने से लाभ, वृद्धावस्था में सुखी, तथा सन्तान व परिवार की उन्नति हो। सूर्य पञ्चम में व शनि एकादश में हो, तो माता-पिता दीर्घायु होंगे तथा सर्वदा उन्नति होती रहे। सूर्य पञ्चम में गुरु नवम व द्वादश में शत्रुजित् बनाकर सन्तानसुख की हानि करता है।

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य पञ्चम में गुरु दशस में हो, तो स्त्री की मृत्यु होती रहे। अशुभफल कारक शनि तृतीय भाव में और अशुभ सूर्य पञ्चम में हो, तो पुत्रों का विनाश हो।

उपाय- लाल मुंह के बन्दरों का पालन पोषण करे। पक्षी, मुर्गा व बच्चों का पालन पोषण करे तथा घर में पूर्व दिशा में रसोईघर बनावे।

षष्ठ भाव में स्थित सूर्य का फल

सूर्य शुभ—षष्ठभाव में शुभ सूर्य से क्रोधी, राज्याश्रितजीवन निर्विघ्नता से आजीविका प्रद, प्रतिष्ठित व धनी होता है। सूर्य षष्ठ में व केतु प्रथम या सप्तमभाव में हो, तो राज्य से लाभ प्राप्त हो तथा पुत्र सुख होगा। 48 वर्ष के बाद का जीवन अधिक श्रेष्ठ रहेगा। द्वितीय में चन्द्र, मंगल या गुरु हो व षष्ठ में सूर्य हो, तो प्राचीन सिद्धान्तो पर चलने वाला होगा।

सूर्य अशुभ— ननिहाल व सन्तान पर दुष्प्रभाव अशुभ सूर्य 6वें हो, तो मन्ददृष्टि मामा पुत्र व स्वयं के स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव होवे। रात्रि को नींद कम आवे। सूर्य षष्ठ में व मंगल दशम में पुत्र का विनाश करे। षष्ठ में सूर्य व द्वादश में चन्द्र हो, तो पत्नी अथवा स्वयं काना हो। राहु अथवा शनि प्रथम भाव में हो, तो 42 से 50 तक की आयु

का समय अत्यन्त नेष्ट हो। उपाय:- पैतृक घर की पिछली दीवार में रोशनदान न रखे। धर्मस्थल पर दान दी गई वस्तु अपने पास रखे।

सप्तम भावगत सूर्यफल

सूर्य शुभ— शुभफलप्रद सूर्य सप्तम भाव में हो और गुरु, मंगल या चन्द्र 2रे भाव में हो, तो जातक सरकार में मन्त्री होगा। यदि बुध, गुरु या शुक्र 2रें, 3रे या 5वें भाव हो विदेश में आजीविका करता है तथा मृत्यु जन्मस्थान में होती है। उच्चस्थ बुध 5वें या 7वें भाव में मंगल से दृष्ट हो, तो लाभपक्ष श्रेष्ठ हो, तो प्रत्येक योग में शुभ सूर्य सप्तम में तो होगा ही। सप्तम में सूर्य क्षय रोग, अग्निकाण्ड, आत्महत्या भवनादि निर्माण में विघ्न उत्पन्न करता है तथा स्वभाव क्रोधी बनाता है। शनि, बुध या केतु 2रें भाव में हो, तो परायी परेशानियाँ बढे।

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य सप्तम में हो और 2रे शुक्र या पापग्रह हों, तो पत्नी माता-पिता के कष्ट से दु:खी रहे, ससुराल भी नष्ट हो। गुरु, शुक्र या पापग्रह 11वें भाव में सप्तम में सूर्य अशुभ हो, तो परिवार में अनेक व्यक्तियों की मृत्यु से जातक दु:खी रहे, घर में दमा, खाँसी क्षय रोग बना रहे कर्ज से लद जाय। केतु प्रथम भाव में या बुध 11वें भाव में हो, तो पौत्र व नाती के उत्पन्न होने के समय स्वास्थ्य खराब रहे। सप्तम अशुभ सूर्य से व्यक्ति नमक अधिक खाता है क्रोधी होता है अपयश मिलता है।

उपाय- नमक कम खायें, मीठा पदार्थ मुंह में डालकर अथवा पानी पीकर प्रत्येक कार्य का शुभारम्भ करे भोजन से पूर्व रोटी के टुकडे की आहुति अग्नि में देवें।

अष्टम भावस्थ सूर्यफल

सूर्य शुभ— शुभसूर्य अष्टम में:-शत्रु पराजित, 22वें वर्ष में राजकीय लाभ होवे। सूर्य अष्टम में जातक को तपस्वी सत्यवादी व नृप तुल्य बनाता है।

सूर्य अशुभ— अशुभसूर्य अष्टम में हो और गुरु भी अशुभ हो, तो भाग्यहीन होता है। अष्टम अशुभ सूर्य होने से जातक क्रोधी, अधीर स्त्रियों का प्रेमी और अनेक आपत्तियों से त्रस्त रहता है। उपाय:- काली गाय व बडे भाई की सेवा करें । दक्षिण द्वार जिस भवन का हो उस में नहीं रहे। मीठा खाकर या पानी पीकर कार्यारम्भ करे।

नवम भावगत सूर्यफल

सूर्य शुभ— शुभसूर्य 9वें बुध 7वें हो, तो भाग्योदय 34 वें वर्ष में होवे। नवमस्थ शुभ सूर्य परिवार सौख्य, कुटुम्ब पालन में अधिक व्यय, तथा माता-पिता का राज्याश्रित जीवन आदि योगकारक होता है। और दीर्घायु भाग्यवान सदाचारी परोपकारी भी बनाता है।

सूर्य अशुभ— सूर्य नवम में अशुभ हो, तो जातक दुष्ट व भाइयों से दुखी रहे। बुध से युक्त होने पर यह योग अधिक प्रबल होता है।

उपाय- चन्द्रमा की वस्तुओं का दान करे स्वयं कोई दान न लेवे, घर में पीतल के पुराने बरतन रखे। पाप से बचे।

दशम भावगत सूर्य का फल

शुभ सूर्य— दशमस्थ सूर्य राज्याधिकार प्रदान करता है, धनी, मानी, एवं स्वस्थ बनाता है, लेकिन सनकी मिजाज बनाता है।

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य पुरुष ग्रह से युत वा दृष्ट न हो और चन्द्रमा पञ्चमस्थ होवे तब अल्पायु, दु:खी व सन्तान का विनाश करता है। सूर्यदशम में चन्द्र 4 हो, तो राजकीय सुख उत्तम रहे। सूर्य दशम में नौकर चाकर व वाहन का सुख भी देता है। शुक्र चतुर्थ में तथा शनि अशुभ हो, तो बचपन में ही पिता की मृत्यु हो। यदि चन्द्रमा

2रें भाव में हो, तो 24वें वर्ष में माता को अरिष्ट होगा। सूर्य दशम में हो, षष्ठ या अष्टम भाव में पापग्रह हो, तो 34 वर्ष तक सारा परिवार दुखी रहे। सूर्य दशम में हो तथा चतुर्थ भाव में कोई ग्रह नहीं हो, तो राजकीय लाभ न हो।

उपाय- सफेद या शर्बती टोपी व पगडी से सदा सिर ढका रखे; काले नीले वस्त्रों का त्याग करे; कूप, हैण्डपम्प व प्याऊ लगावें: गंगाजल घर में रखे व नदी नाले के बहते पानी में 40 या 43 दिन तक तांबे का पैसा बहाएँ।

एकादश भाव में सूर्य का फल

सूर्य शुभ— शुभ सूर्य 11वें हो और मांसाहारी न हो, तो 3 पुत्र की प्राप्ति, दीर्घायु, घर का मुखिया, या राज्याधिकारी होवे।

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य 11वें भाव में पुरुष ग्रहों से युत वा दृष्ट न हो तथा 5वें चन्द्र हो, तो सन्तानहीन हो।

उपाय- रात्रि को 5 मूली या बादाम सिरहाने रखकर अगले दिन प्रातः काल मन्दिर में दे देने पर दीर्घायु हो और सन्तान प्राप्ति हो। मांस सर्वथा वर्ज्य है। शराब का सेवन न करे। झूंठी गवाही न दे। धोखाधडी न करे।

द्वादश भावगत सूर्यफल

सूर्य शुभ— शुभ सूर्य 12वें हो शुक्र, बुध की युति हो, तो आजीविका कभी बन्द न हो, व्यापार से लाभ मिले। सूर्य द्वादश में केतु 2रे भाव में हो, तो 24वें वर्ष से द्रव्योपार्जन करने लगे।

सूर्य अशुभ— अशुभ सूर्य द्वादश में— उदासीनता, मस्तिष्क में विकृति (विकृति), राज्यभय, अपयश मशीनरी के धन्धे में हानि, ससुराल की सहायता करने से हानि प्रदान करता है। सूर्य 12वें चन्द्र 6वें हो, तो जातक अथवा उसकी स्त्री कानी हो। सूर्य द्वादश में, पापग्रह लग्न में हो, तो नींद हराम हो तथा दुःखी रहे।

उपाय- राहु सम्बन्धी कार्य न करे, ससुराल का भी कोई कार्य न करे। आटा पीसने की चक्की घर पर रखे। अन्धकार युक्तघर में निवास न करे। धोखाधड़ी, गबन, झूठी गवाही, असत्य भाषण का त्याग करे।

चन्द्रमा के द्वादश भावगत फल का विचार

चन्द्रमा में प्रथम भाव का फल

चन्द्र शुभ— शुभ चन्द्र प्रथम भाव में होने से भाग्यशाली। राज्याश्रित जीवन, 24 सम्पत्ति आसानी से मिले, पराया धन भी मिले। 24 वर्ष से पूर्व 27 वर्ष के मध्य माता से अलगाव, विद्या का पूर्ण लाभ, पैतृक शुभ नहीं होगा। चन्द्रमा प्रथम भाव में, सूर्य, मंगल या गुरु 4 थे वा 10 वें भाव में हो, तो समुद्री यात्रा हो, चन्द्र प्रथम में गुरु चतुर्थ में शनि दशम में हो, तो धन व वाहन की वृद्धि हो; चन्द्र प्रथम में, शुक्र सप्तम में हो, तो सन्तान को कष्ट होगा तथा चन्द्रमा प्रथम में बुध सप्तम में हो, तो अल्प बुद्धि, धनी राज्य व समुद्री यात्रा से लाभ।

चन्द्र अशुभ— अशुभचन्द्र प्रथम भाव में और सूर्य, शनि की युति 6वें भाव में हो, तो जातक निर्धनी हो। चन्द्रमा अशुभ प्रथम भाव में मंगल व बुध अशुभ 8वें भाव में हो, तो सदा दुखी व विश्राम-रहित हो, 24 वर्ष के पूर्व पत्नी, गौ, नौकर घर में न लावे अन्यथा 25 वां वर्ष अत्यन्त कष्ट प्रद होगा।

उपाय- चाँदी के पात्र में जल व दूध पीने से सन्तान सुख बढे, कांच के बरतन का उपयोग न करे, दूध मुफ्त में पिलावे, बेचे नहीं। पलंग के चारों पाये में तांबे की कील गढवायें। वटवृक्ष का सिंचन करे। 24 वर्ष पूर्व विवाह न करे।

द्वितीय भावस्थ चन्द्र फल

चन्द्र शुभ— शुभचन्द्र 2रे भाव में हो, तो बहिन का अभाव, भाई का सुख मिले। यदि गुरु भी शुभ हो, तो माता-पिता का सुख मिले, धनी हो, शत्रुजित् हो, माता का सुख 48 वर्ष तक मिलेगा, नींव में चाँदी दबाने से

दीर्घायु प्राप्त हो, दादी की सेवा से लाभ हो। विद्या द्वारा भाग्यवृद्धि होगी, चन्द्र की वस्तुओं के व्यापार से धन लाभ हो। चन्द्रमा की वस्तुओं को घर में रखने से 24वें वर्ष से अपनी व ससुराल की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

चन्द्र अशुभ— अशुभ चन्द्र द्वितीय भाव में हो, तो घण्टा घर में न रखें वरना नि:संतान रहेंगे। अशुभ चन्द्र 2रे केतु 12 वें हो, तो विद्या, सन्तान में से एक का सुख मिलेगा। चन्द्र 2रे सूर्य प्रथम भाव में हो, तो शुभ फलप्रद हो। अशुभ चन्द्र 2रे तथा 9, 10, व 12वें भाव में पापग्रह हों, तो 9,18,36 वें वर्ष में माता की मृत्यु अथवा भयंकर कष्ट हो। 3रे 9वें भाव में गुरु हो, तो अनेक विघ्न बाधाएँ उपस्थित होकर व्यापार में वृद्धि हो।

उपाय- घर की नींव में चाँदी दवायें। हरे रंग का वस्त्र 43 दिन तक निरन्तर कन्याओं को दिलावें। परिवार की वृद्धा स्त्री की सेवा करें। चन्द्रमा की वस्तुएं घर पर रखें।

तृतीय भावस्थ चन्द्रफल

चन्द्र शुभ— शुभ चन्द्र तृतीय में हो, तो धनवान, साथ में बुध हो, तो साहसी, झूठे प्रेम से घृणा करे, शत्रुजित्। यदि बुध अशुभ हो, तो चन्द्र भी अशुभ फलकारक होगा। विद्या फलीभूत तब ही होगी जब कुण्डली रहेगी। तृतीय में चन्द्र हो, तो मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, व मातृ सुख से युक्त हो। चन्द्र तृतीय में और मंगल चतुर्थ में हो, तो साहसी, धनी, बुद्धिमान और संकीर्ण हृदय का होवे।

चन्द्र अशुभ— अशुभ चन्द्र तृतीय में और 8वें भाव में अशुभ ग्रह हो, तो धन-हानि, तथा तृतीय में चन्द्र अशुभ हो, तो बकरी का दूध व लकडी का धन विष तुल्य होगा

उपाय- कन्या के जन्म पर चन्द्रमा की वस्तुएँ, पुत्र के जन्म पर सूर्य की वस्तुएँ दान में देवे।

चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल

चन्द्र शुभ— शुभचन्द्र चतुर्थ में हो, तो विद्यापूर्ण होगी। शुक्लपक्ष का जन्म हो, तो वृद्धावस्था अच्छी व्यतीत हो। कृष्णपक्ष में बाल्यावस्था में सुखी द्रव्य की कमी नहीं रहे, मातृसुख पूर्ण मिले, चन्द्रमा चतुर्थ में, व गुरु षष्ठ में हो, तो पैतृक कार्य में सफलता मिले। चन्द्र चतुर्थ में शनि 9 या 11वें में हो, तो उत्तम कुटुम्ब का सुख मिले। चतुर्थ में अकेला चन्द्र हो अथवा अकेला शुक्र सप्तम में हो, तो जातक सन्तान उत्पन्न होने के बाद सुखी होगा। राज्य से व समुद्री यात्रा से द्रव्य लाभ होता रहेगा।

चन्द्र अशुभ— अशुभ चन्द्र चतुर्थ में गुरु 10 वें भाव में हो, तो भलाई करने पर भी दण्डमिले।

उपाय-शुभ कार्य के पूर्व पानी या दूध से भरा घट रखें। दूध का दान करें, बेचें नहीं पितृयज्ञ करें। दादा, पोता या दौहिता एक साथ मन्दिर में जावें।

पञ्चम भावगत चन्द्र फल

शुभ चन्द्र— शुभ चन्द्र पञ्चम भाव में होने से जातक न्यायप्रिय, धर्मात्मा, सुमार्ग से धन कमाने वाला, दीर्घायु, नृपतुल्य वैभव प्राप्तकर्ता, दया आदि गुणों से युक्त होगा। चन्द्रमा पञ्चम में हो, केतु शुभ हो, तो 5 पुत्र हों। विद्या फलीभूत नहीं होती, कृतघ्न लोगों का भला करेगा, चन्द्र पञ्चम में और नवम भाव रिक्त हो, तो चन्द्र संबंधी कार्य करते समय कार्यारम्भ से पूर्व मिष्ठान्न खाले।

अशुभ चन्द्र— अशुभ चन्द्र पञ्चम में होने से जातक लालची, स्वार्थी, कुत्सित वाणी से बहिन, बुआ पत्नी को कष्ट देता रहे। जब अशुभ चन्द्र पञ्चम में हो, तो 3,8,10,11 वे भाव में भी कुप्रभाव डालेगा।

उपाय-सोमवार को श्वेत वस्त्र में चावल मिश्री बाँधकर बहते पानी में बहावे। लालची स्वार्थी न बने । अशुभवाक्यों का त्याग करे।

षष्ठ भाव में स्थित चन्द्र का फल

चन्द्र शुभ—चन्द्र शुभ षष्ठ भाव में हो, तो अनेक विघ्न बाधाओं से विद्या की प्राप्ति होवे और वह फलीभूतहोवे। चन्द्र 6ठें गुरु द्वितीय भाव में हो, तो चन्द्र का फल अशुभ नहीं होगा। चन्द्र छठे भाव में 2,4,8,12 भाव में शुभ हो, तो मृत पुरुष में भी प्राण डालने की सामर्थ्य होवे। चन्द्र 6ठे सूर्य द्वादश में हो, तो जातक या उसकी पत्नी काणी हो।

अशुभ चन्द्र—षष्ठ भाव में अशुभ चन्द्र और बुध 2रे या 12वें भाव में हो, तो जातक आत्महत्या करने को तत्पर हो, बुधचन्द्र षष्ठ में मंगल 4 थे या 8 वे हो, तो जातक की माता बाल्यावस्था में ही मर जाय।

उपाय- पिता को अपने हाथ से दूध पिलावे। रात्रि में दूध कभी न पीये। धर्मार्थ कूप, नलकूप, प्याऊ लगावे। अस्पताल व श्मशान में जलकूप या नल लगावे। दूध का दान न करे।

सप्तम भाव में चन्द्र फल

शुभ चन्द्र— शुभ चन्द्र सप्तम में हो, तो विद्या धनदायक होगी, जातक यशस्वीव धनी, कवि या ज्योतिषी, उसे आध्यात्मिक विषय में उन्नति, चन्द्र की वस्तुओं की प्राप्ति, वह सहृदय, कुटुम्ब सुख से रहित, मृत्यु अपने ही घर में हो, शुभ चन्द्र सप्तम में हो, तो उपर्युक्त फल हो।

शुभचन्द्र सप्तम में शुभफलप्रद बुध हो, 8वां स्थान रिक्त हो, तो अन्तर्ज्ञान और आध्यात्मिक विशिष्ट हो। शुभ चन्द्र सप्तम में हो, तो बुध का फल अशुभ होगा। शुभचन्द्र 7वें और शुक्र शुभ हो, तो सांसारिक सुख मिले। व्यापार में उन्नति होवे।

अशुभ चन्द्र— अशुभ चन्द्र सप्तम में और शुक्र पापग्रह के साथ कहीं भी हो, तो सन्तान अल्पायु में मरे। अशुभ चन्द्र सप्तम में, बुध शुक्र शनि प्रथम भाव में हो, तो जातक का सास बहू से झगडा रहे। नशेबाज हो, जमीन जायदाद नष्ट करे ही दीर्घायु हो, विवाह से पूर्व चन्द्रमा की वस्तुएँ घर में अवश्य स्थापित करे। 6,12,24 वें वर्ष में भी स्थापित की जा सकती है।

उपाय- दूध व पानी कभी न बेचे।

ससुराल से चन्द्रमा की वस्तुएँ दहेज में अवश्य प्राप्त कर घर पर स्थापित करे।

अष्टम भावस्थ चन्द्रफल

शुभ चन्द्र— शुभचन्द्र अष्टम में हो, तो विद्या अधूरी रहे, तो मातृ सुख मिले यदि विद्यापूर्ण हो, तो माता को अरिष्ट रहे। शुभ चन्द्र अष्टम में तथा गुरु व शनि दूसरे हो, तो राहु मंगल एवं चन्द्र का दुष्प्रभाव नष्ट हो जायेगा। चन्द्र अष्टम में और बुध शुभ हो, तो माता दीर्घायु हो तथा माता-पिता वाद में मरे।

चन्द्र अशुभ— अशुभ चन्द्र अष्टम में हो, तो सन्तान अवश्य हो, पैतृक सम्पत्ति व कृषि का लाभ न हो। पैतृक सम्पत्ति के पास कुआँ हो, तो चन्द्र का अशुभ फल आजीवन रहे, चन्द्र अष्टम में दूसरे राहु या बुध हो, तो अपनी मूर्खता से शुक्र या चन्द्र की वस्तुएँ अशुभ प्रभाव दें। अशुभ चन्द्र अष्टम में तथा शुक्र या बुध या शनि अशुभ हो, तो स्वास्थ्य व सन्तान का फल अशुभ हो। अशुभ चन्द्र अष्टम में और तीसरे व 4 थे भाव में 3 पापग्रह हो, तो माता-पिता से सम्बन्ध अच्छे न रहे तथा सम्पत्ति व सन्तान का फल भी अशुभ हो।

उपाय-श्मशान के नल का पानी घर में ला कर रखे, पितरों का श्राद्ध करे। जूवा न खेले, नाक छिदवाए। घर में चन्द्रमा की वस्तुओं का संग्रह रखे।

नवम भावस्थ चन्द्रफल

चन्द्र शुभ– शुभ चन्द्र नवम भाव में हो, तो जातक धनी, प्रतिष्ठित, दीन दुःखी का सेवक,24वें वर्ष में भाग्योदय, सुखी, परहित दूसरे करने वाली विद्या का ज्ञाता, दाता, धर्मकर्म व यात्रा करने वाला परोपकारी होगा। शुभचन्द्र नवम में, मित्र ग्रह पञ्चम में हो भले ही चन्द्र के साथ पापग्रह भी हो तब भी सन्तान, और धर्म की वृद्धि हो। शुभचन्द्र नवम में तथा चतुर्थ में शुभग्रह हो, तो माता-पिता का सुख, भाग्यशाली दयालु व धर्मात्मा हो। शुभ चन्द्र नवम में गुरु से सम्बन्धित हो तथा तीसरे व पञ्चम में कोई ग्रह हो, तो निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी समुद्री या हवाई शक्ति से संपत्ति प्राप्त करें।

चन्द्र अशुभ– अशुभ चन्द्र नवम में और तृतीय में हो, तो माता को 24वें वर्ष में नेत्ररोग या अरिष्ट हो। चन्द्र नवम में, केतु और बुध 5वें स्थित हो, तो जातक की आर्थिक स्थिति 34 या 48 वर्ष के बाद सुधरे। संबंधियों से चन्द्र सम्बन्धी वस्तुओं का लाभ न हो।

उपाय- चन्द्रमा की वस्तुएं स्थापित करे चन्द्रमा के भिन्न ग्रहों की वस्तु स्थापित करे।

दशम भावस्थ चन्द्र फल

चन्द्र शुभ– शुभचन्द्र दशम में हो, तो माता से अनबन रहे व दूसरे भाव के स्वामी की वस्तुओं से सहायता मिले, यदि दूसरा भाव रिक्त हो, तो गुरु की वस्तुओं से सहायता मिले, दीर्घायु, चिकित्सक (वैद्य) ज्योतिषी होवे। दूसरा भाव शुभ हो, तो इन विद्याओं से लाभ हो, यदि 8वां भाव अशुभ हो, तो बार-बार अपमानित होवे। चन्द्र दशम में शुभ या अशुभ हो, चतुर्थ में पुरुषग्रह हो तथा दूसरा भाव रिक्त हो, तो 24वें वर्ष में सर्जन (जरीह) का कार्य करने पर धन की वृद्धि हो। चन्द्र दशम में, शनि चतुर्थ में व शुक्र प्रथम भाव में हो, तो माता-पिता का सुख दीर्घकाल तक मिले किन्तु प्रेमिका या स्त्री अच्छी नहीं मिले। चन्द्र दशम में सूर्य गुरु या मंगल चौथे भाव में हो, तो उजड़ा घर बस जाय सभी प्रकार से समय शुभ रहे।

चन्द्र अशुभ– अशुभ चन्द्र दशम में और सूर्य सप्तम में हो, तो जल में मृत्यु हो। चन्द्र दशम में तीसरा भाव अशुभ हो या तीसरे भाव में बुध शुक्र हो, तो तरल पदार्थों से हानि हो। चन्द्र दशम में पापग्रह चतुर्थ में और शुक्र सप्तम में हो, तो माता व सन्तान का कष्ट हो। चन्द्र दशम में तथा शनि प्रथम या चतुर्थ भाव में हो, तो कुमार्ग से द्रव्य संचय करे। माता-पिता का का सुख मिले, स्त्री के कारण धन का अपव्यय हो। चन्द्र दशम में, 7वें मंगल तथा सूर्य से आगे शनि हो, तो जातक विकलाङ्ग हो।

चन्द्र अशुभ दशम में तथा दूसरा भाव विरिक्त हो, तो छाती या फेफड़े का रोग हो।

उपाय-रात्रि में दूध कदापि न पीएं। दुधारु पशु घर पर न रखे। मकान न बनायें। गुरु ग्रह का उपाय करें। ससुराल से अधिक लगाव न रखे।

एकादश भाव में स्थित चन्द्रफल

चन्द्र शुभ– शुभ चन्द्र एकादश में हो, तो माता की मृत्यु के बाद सन्तान हो, पुत्र जन्म में बाधा, केतु का फल अशुभ हो तथा दादी पोते में अनबन रहे। चन्द्र एकादश में और गुरु शुभ हो, तो धनवान हो। चन्द्र 11वें तथा 4 थे सूर्य, बुध हो, तो लाभ पक्ष श्रेष्ठ हो। चन्द्र 11वें बुध 5वें हो, तो दीर्घायु हो।

चन्द्र अशुभ– अशुभ चन्द्र 11वे और तीसरा भाव अशुभ हो, तो निम्नलिखित पांचों वस्तुएं विष तुल्य होगी:-

1- बुधवार को बहिन का जन्म बुध सम्बन्धी व्यापार

2-शुक्रवार को अपना या सम्बन्धी का विवाह

3-शनिवार को भवन निर्माण और शनि संबंधी कार्य

4-प्रात: दान लेना व देना केतु की वस्तुओं का व्यापार

5-सायं गुरु का उपदेश सुनना गुरु की वस्तुओं का व्यापार चन्द्र 11वें केतु तीसरे हो, तो समुद्री यात्रा न करे। कूप-खनन न करे; यदि करता है, तो सम्पत्ति की हानि हो।

उपाय- भैरव मन्दिर में दूध का दान, प्रसव-काल में माता को दूर रखे, वीर्याल्पता हो, तो देशी दवा का प्रयोग करें।

द्वादश भावगत चन्द्रफल

चन्द्र शुभ—चन्द्र शुभ द्वादश में हो, तो जातक अनपढ परन्तु पुत्र शिक्षित होगा; चन्द्र द्वादश में सूर्य बुध 3रे हो, तो कुल दीपक होगा; द्वादश में चन्द्र, गुरु और सूर्य भी शुभ हो, तो धनवान हो तथा चन्द्र द्वादश में हो, तो मंगल केतु व बुध का 12 भाव में स्थित होना अनिष्ट कारक है।

चन्द्र अशुभ— अशुभ चन्द्र 12वें हो, तो पैतृक सम्पत्ति ही बरबादी का कारण बनें। अशुभ चन्द्र 12वें हो, वह वर्ष कुण्डली में प्रथम भाव में आता हो, तो जातक के साथ-साथ ससुराल को भी बरबाद करता है। वर्ष में द्वादश चन्द्र भी अशुभ फल-प्रद होता है। गुरु का उपाय करें। अशुभ चन्द्र द्वादश में सूर्य 6वें हो, तो जातक व पत्नी काने हो । द्वादश में चन्द्र 2,6,12 में बुध, शुक्र या पापग्रह हो, तो पिता को दी गई सब वस्तुएँ नष्ट हो जाय।

उपाय- वर्षा का जल घर में स्थापित करे (गुरु का उपाय करना लाभप्रद होगा कोई भी कार्य पानी पीकर ही आरम्भ करें।

मंगल का प्रथम भावगत फल

मंगल शुभ— शुभ मंगल प्रथम भाव में हो, तो भाई-बहिन का सुख होगा, दांत 31, या 32 होंगे 28वें वर्ष से धनी होगा, राज्य से लाभ होगा; स्वस्थ शरीर हो, शनि संबंधी (भतीजा,पोता ताऊ चाचा नानी आदि) से तथा लोहा लकडी मशीनरी के द्वारा लाभ हो, भाई व ससुराल पक्ष की सहायता करेगा, दीर्घायु हो, जातक के मुख से निकले वाक्य जो दुष्टवाक्य हो, वे अक्षरश: सत्य होते हैं, सत्यवक्ता हो। प्रथम में मंगल, 2रे, चन्द्र व 12वें सूर्य हो, तो जातक के 13, 14, 15 28वें वर्ष में माता-पिता को अरिष्ट होगा। प्रथम में मंगल 2रे सूर्य 9, 12वें मंगल से निर्धन हो साधु-संगति करने से भाइयों को कष्ट होता है। 3,4 व 9वाँ भाव रिक्त हो, तो 2 भाइयों का सुख हो।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल प्रथम भाव में हो, तो भाग्यहीन मुफत का माल रखने से दर-दर भटकता है; दादा, पिता को कष्टकारक; सगे संबंधी कृतघ्न होंगे; यदि जातक बुराई करेगा, तो भातृपक्ष व ससुराल पक्ष को हानि होगी।

उपाय- ससुराल का कुत्ता न पाले।

द्वितीय भावगत मंगल का फल

मंगल शुभ— शुभ मंगल 2रे हो, तो बडे भाई से अनबन रहे; कभी धनी, कभी निर्धन; ससुराल सम्पन्न होगी; उससे लाभ होगा; राहु सम्बन्धी कार्यो से लाभ होगा; दृढ निश्चयी व प्रशासक होगा; ससुराल में नलकूप हो और चन्द्र संबंधी वस्तु घर में हो, तो ससुराल पक्ष सम्पन्न रहे; द्वितीय में मंगल न होकर केन्द्र में रहे, तो भाग्यशास्त्री, प्रशासक बने।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल 2रे तथा सूर्य, शनि एकत्र हो, तो दूसरों के लिये आस्तीन का सांप हो, लड़ाई-झगडे में मृत्यु हो, 9 वर्ष तक रोगी रहे, 8,9 10, 12वें भाव पर गुरु, सूर्य, बुध या शनि का प्रभाव हो, तो सवोपार्जित द्रव्य होगा और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों से धन सुगमता से मिलता रहेगा।

उपाय- सगे संबंधियों का पालन पोषण करे। भाई को कष्ट न दे। माता व दादी का कभी अपमान न करे। सफेद वस्तुओं का दान करे। ससुराल में नलकूप लगवावें या प्याऊ खुलावें।

तृतीय भावगत भौमफल

मंगल शुभ— तृतीय में शुभमंगल हो, तो भाई-बहिन का सुख मिले, भोला स्वभाव हो तथा निकटस्थों की भलाई करे, शत्रुजित् व साहसी, ससुराल धनी, दहेज अच्छा मिले, अत्याचारी को सजा दे। तृतीय में मंगल, नवम में गुरु हो, तो ससुराल से अधिक धन मिले। शनि 9वें हो, तो स्वस्थ शरीर तथा घर में सम्पन्नता बढ़े । 11वें गुरु जातक को शुभ; परन्तु संबंधियों की मृत्यु करता है।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल 3रे भाव में 'खाओ, पीओ तथा मौज करो' की भावना बनाता है। सन्तान अशिक्षित होगी तथा रोगी होगी।

उपाय- हठी न बनें। अय्याशी से बचें। हाथी दाँत पास में या घर में रखें। चाँदी की अँगूठी बिना जोड़ की तर्जनी में धारण करें।

चतुर्थ भावगत भौमफल

मंगल शुभ— शुभ मंगल चतुर्थ में हो, तो भाभी नेक हो, भाई व उसकी सन्तान सदा सुखी रहेगी, शरारत करने वालों को सबक सिखायेगा, सच्चाई के साथ जीवन यापन करेगा।

मंगल अशुभ— निम्नोक्त ग्रह स्थिति में मंगल अशुभ व मांगलिक होगा। 1,8 वें भाव में मंगल के साथ सूर्य न हो 7,10,12 भाव में अकेला सूर्य हो, 5 या 9वें भाव में सूर्य के साथ केतु हो 6, 12वें भाव में सूर्य के साथ राहु हो, 10वें भाव में सूर्य के साथ शनि हो, 12वे भाव में सूर्य के साथ बुध हो, तो ऐसा जातक स्त्री, माता, सास, नानी, भाभी आदि की मृत्यु का कारण होगा। अशुभ मंगल चतुर्थ में धन व प्राण के लिये अशुभ होता है। मंगल 4थे व गुरु 8वें हो, तो दरिद्र हो। मंगल 4थे व बुध 12वें हो, तो मूर्ख दु:खी व कष्टमय जीवन होता है। 3रे या8वें भाव में चन्द्र, मंगल के अशुभत्व का नाश करता है। चतुर्थ मंगल भवन की प्राप्ति करवाता है तथा स्वभाव क्रोधी होता है। बुध केतु में से कोई 8वें भाव में हो, तो ताई, चाची घर को बरबाद करेगी, मंगल से चौथे—आठवें भाव में पापग्रह हो, तो घर को बरबाद करने में ताऊ या चाचा का हाथ होगा। मंगल 4थे शनि प्रथम भाव में हो, तो जातक चोर धोखेबाज तथा आर्थिक कष्ट भोगता है।

उपाय- वटवृक्ष की जड में मीठा दूध चढावें, घर, दुकान, फैक्ट्री की छत पर चीनी की खाली बोरियाँ रखें। चांदी का चौकोर टुकडा पास में रखें। चिड़ियों को मीठा खिलावें। सोना—चाँदी, ताँबे की बनी अंगूठी धारण करें।

पञ्चम भावस्थ भौमफल

मंगल शुभ— जन्मकुण्डली में शुक्र व चन्द्र कैसी भी स्थिति में हों सदा ही स्त्री, धन, गौ, अश्व, माता आदि से लाभ देते रहेंगे। शुभ मंगल पञ्चम में हो जातक शान्त स्वभाव का, न्यायप्रिय, परिवार में कोई व्यक्ति वैद्य या डाक्टर होगा अथवा यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, जादू—टोना करने वाला होगा। जातक विद्वान्, सुशील, सन्तान व स्त्री वाला होगा, जब दशम भाव रिक्त हो, तो भ्रातृ सुख मिले, 9वें कोई ग्रह हो, तो सन्तानोत्पत्तिके पश्चात् निरन्तर उन्नति होवें

मंगल अशुभ— पञ्चम में अशुभ मंगल, व्यर्थ भ्रमण, स्त्री व सन्तान सुख कम मिले, भाई की सन्तान की मृत्यु होगी, अग्नि भय बना रहे, प्रेमिका ही तबाही का कारण बनेगी, रात्रि को नींद भी गहरी नहीं आयेगी।

उपाय- रात में सिरहाने पानी रखकर सोयें। पितृ श्राद्ध अवश्य करें। दूध का दान करे। पर स्त्री गमन से बचें। वृद्धों की सेवा करें।

षष्ठ भावगत भौमफल

मंगल शुभ—6वें शुभ मंगल हो, तो जातक परिवार का पालन-पोषण करें, साहसी होवे, पराक्रमी, एकान्त प्रिय व साधु-संत की तरह रहे। लेखक, सदाचारी, संयमी जीवन, विद्वानों से मित्रता रखनेवाला, पोते— पड़पोते देखकर मरे। 7वें भाव में शनि बुध व केतु शुभ फलकारक रहें।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल 6वें भाव में हो, तो मांगलिक अवसर पर विघ्नबाधा हो, सन्तान के लिये प्रसन्नता की बजाय अश्रुपात करना पड़े । 6वें अशुभ मंगल मामा के परिवार, लडकी बहन, बुआ, माता दूध देने वाले पशु अर्थात् केतु-शुक्र-बुध-चन्द्र ग्रह से संबधित प्राणियों पर दु:ख के बादल मंडराने लगें। प्रथम सन्तति घातक है, सन्तान को सोना कभी न पहिनावें, नहीं तो आर्थिक हानि होगी। मंगल 6ठें बुध 12वें हो, तो मंगल 6ठें और बुध चौथे हो, तो जातक अल्पायु हो। भाई बहिन कम होंगे।

उपाय- शनि का उपाय करें। कन्या पूजन करें, कन्या को दूध, चावल, चांदी का दान करें। गणपति की उपासना करें। बुआ व बहिन को लाल कपडे देते रहें।

सप्तम भावगत भौम फल

मंगल शुभ— शुभ मंगल सप्तम भाव में हो, तो जातक, मिष्टान्न प्रिय, स्त्री- सुख-युत, उपमन्त्री-पदारूढ, धर्मात्मा, दीन दुखी का सहायक, न्यायप्रिय, साहस बढ़ाने वाला, राज्याश्रित व जमीन-जायदाद का मालिक होता है। वह इच्छित वस्तु एक बार प्राप्त कर लेता है, बार-बार नहीं। ऐसा तब होता है जब मंगल सप्तम में और प्रथम भाव में गुरु या शुक्र हो।

मंगल अशुभ— अशुभ भौम सप्तम में बुध के साथ हो, तो भाग्यहीन। यदि बहिन साथ में रहे तो अधिक अशुभ फल हो। अशुभ मंगल सप्तम में होने पर बहिन विधवा हो जाती है या उसका तलाक हो जाय।

उपाय- ठोस चांदी घर पर रखें, शनि व शुक्र की वस्तुओं का उचित ढंग से प्रयोग करें। तोता मैना नहीं पालें। सूखे फूल घर में न रखें। मद्यमास सेवन बन्द करे, बुआ—बहिन को लाल वस्त्र देते रहें।

अष्टम भावस्थ भौमफल

भौम शुभ— शुभ भौम अष्टम में हो, तो जातक पराक्रमी शत्रुजित् न्याय- प्रिय, परिश्रमी, वचन बद्ध होता है। दूसरा भाव रिक्त हो या उसमें चन्द्र या गुरु हो, तो यह योग शुभ फलकारक है। अष्टम में शनि-मंगल का योग आक्रमण रोकने की क्षमता प्रदान करता है। यदि मंगल के साथ अष्टम में बुध हो, तो दोनों शुभ फलप्रद होते हैं। अष्टम में मंगल, बुध 6ठे हो इ तो बाल्यावस्था में ही माता की मृत्यु हो।

भौम अशुभ— अष्टम में अशुभ मंगल हो, तो छोटे भाई का जन्म 4 या 8 वर्ष बाद हो। वैसे मंगल छोटा भाई नहीं चाहता। अष्टम मंगल ताऊ या मामा या दोनों के अशुभ होता है। बुध जितना शुभ होगा मंगल उतना ही अशुभ होगा। परन्तु बुध 6ठे या अष्टम में नहीं होना चाहिये।

उपाय- विधवा का आशीर्वाद लेवें। तवा गर्म होने पर उस पर पानी का छींटा मारकर बाद में रोटी बनाकर तवे पर डालें। गले में चाँदी धारण करें। तन्दूरी मीठी रोटी 40 या 45 दिन तक कुत्ते को खिलावें।

नवम भावस्थ भौमफल

मंगल शुभ— शुभ मंगल नवम भाव में हो, तो जातक न्यायप्रिय, भाभी उसके भाग्य की आधार हो, जितने पिता के भाई हो उतने ही जातक के भी भाई हो। भाई-भाई मिलकर रहें तो बहुत उन्नति हो, बंटवारा कर देने पर सुख समृद्धि समाप्त हो जाये। 28 वर्ष में राज्यपद प्राप्त करे वष्ठसे छैंन्म से ही नृपतुल्य जीवन व्यतीत करे, युद्ध सम्बन्धी वस्तुओं के व्यापार से धनी होवे। 13 वर्ष तक माता- पिता की उन्नति में सहयोग देवे। सूर्य कुण्डली में कहीं भी होवे शुभफल कारक रहे, जातक प्रशासक पद पर रहे।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल नवमस्थ हो और 3रे व 5वें भाव में पाप ग्रह हो, तो मंगल अतिअशुभ फल कारक रहे। नवम में अशुभ मंगल नास्तिक, भाग्यहीन व निन्दा करने योग्य बनाता है। बुध भी शुभ हो, तो अधिक अशुभ फल प्रद होता है।

उपाय- भाभी की सेवा करे, बडे भाई के साथ रहे, शुभकारक वस्तुएँ जमीन में दबायें। बुध की वस्तु कूएँ में डालें, शुभ की वस्तुओं का मन्दिर व धर्मस्थल में दान करें।

दशमस्थ भौमफल

मंगल शुभ— दशमस्थ शुभ मंगल परिवार को उन्नत बनाता है जातक स्वोपार्जित धन से धनी हो, पुत्रवान् साहसी, पराक्रमी, होगा। ये सब फल तभी होंगे जब 2रे भाव में राहु, केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र न हों, 3रे, 6ठे भाव में कोई ग्रह न हो चौथे भाव में शनि न हो। बुध-शनि शुभ हो, तो 24 से 28 वर्ष की आयुतक धन संग्रह अच्छा हो। गुरु कैसा भी हो 13 वर्ष से नवम भावस्थ मंगल का शुभफल घटित हो। मंगल 10वें, शनि 3रे हो, तो जातक धनी व पोते पड़पोते वाला एवं जमीन जायदाद का मालिक हो, नकद पैसा कम हो। 10वें मंगल चौथे चन्द्र हो, तो सरकार से लाभ मिले। 10वें मंगल, पञ्चम भाव रिक्त हो, तो सभी प्रकार का सुख मिले।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल 10वें और 6ठें भाव में हो, तो सन्तान पर कुप्रभाव पडता है, 45 वर्ष तक सन्तान नहीं हो, 15 वर्ष रोग में व्यतीत हों 22 वाँ वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद हो; सोना बिके तो समझो कि मंगल अशुभ फल कर रहा है। यदि दूध उबलकर जलेगा, तो सन्तान व परिवार को कष्ट होगा। दशमस्थ मंगल के साथ सूर्य हो, तो सन्तान व परिवार को कष्ट होगा। हानि हो। मंगल 10वें व शनि चौथे हो, तो जातक चोरी-डाके के कारण सजा पाये। दशमस्थ मंगल शत्रु ग्रह के साथ हो, तो जातक बरबाद हो जाय।

उपाय- बाप-दादा की जायदाद न बेचे। हिरन को पालना लाभकारी हो। काणे और सन्तानहीन की सेवा करे। दूध उबालते समय दूध उबलकर बाहर न गिरने दे।

एकादश भावगत भौम फल

मंगल शुभ—11वें शुभ मंगल जातक को अहिंसक, गुरु-भक्त, आध्यात्मिक विचार वाला, न्यायप्रिय, किंतु संबंधी व रिश्तेदार और सांसारिक 3 कुत्ते:- (बहन के घर भाई, ननिहाल में नाती, ससुराल में दामाद) रहे— ये तीनों लाभ देने वाले हों। जातक न्यायप्रिय व पशु-पालक, व्यापार करने वाला होता है। गुरु शुभ हो, तो मंगल भी शुभफल प्रद हो तथा 28वें वर्ष से 52 वर्ष की अवस्था तक निरन्तर धनागम होता है। मंगल के साथ 11वें गुरु हो, तो 2 भाई होंगे। 12वें गुरु हो, तो 1 भाई होता है। गुरु अशुभ हो, तो गुरु की वस्तुएं पानी में बहाने से गुरु उच्च राशि का फल देता है।

मंगल अशुभ—अशुभ मंगल 11वें हो और तीसरा भाव रिक्त हो, तो कर्ज से लद जाय, जमीन-जायदाद बिक जाय, पैसा नहीं रुके। अशुभ मंगल 11 वे भाव में होने से 45 वर्ष तक इस का दुष्प्रभाव रहता है। जातक रोगी, व सन्तान झगडालू होती है।

उपाय- पैतृक सम्पत्ति कदापि न बेचे। कुत्ता पालें या साला, दामाद और नाती का पालन पोषण करे। लहसुनिया धारण करें, केतु की वस्तुएं दान करें

द्वादश भावगत भौमफल

मंगल शुभ—12वें शुभ मंगल, बुध, केतु प्रथम या अष्टम भाव में हो, तो भी उनका अशुभ फल नहीं होता। जातक क्रोधी, स्वतन्त्रता प्रेमी, गुरुभक्त, शत्रुजित् तथा निर्धन परिवार को धनवान् बना देवे। मंगल द्वादश में गुरु 2रे भाव में हो, तो 29वें वर्ष में पुत्र हो, पुत्र जन्म के बाद सम्पन्नता बढ़े, घर में 24 घण्टे लंगर चलता रहे। यदि 11वें भाव का ग्रह आठवें भाव का शत्रु न हो, द्वादश भावस्थ मंगल हो, सूर्य 3रे, 11वें भाव में हो, तो रोग व शत्रु से रक्षा होती रहे।

मंगल अशुभ— अशुभ मंगल द्वादश में हो जो जातक के प्रति झूठी अफवाह फैलती रहे। प्रकृति नीच हो, स्त्री से नहीं बने, श्वास रोग, अपव्यय, सन्तान से दुःख, दृष्टि कमजोर, व्यापार में हानि, भाइयों से नहीं बने तथा अनेक प्रकार के कष्ट हों।

उपाय- मंगल की वस्तुएं पास में न रखे खाकी रंग की टोपी व पगडी सिर पर रखे। मीठा खाये और खिलाये। मीठा दूध या मीठी रोटी फकीर या कुत्ते को खिलावे। मन्दिर व धर्मस्थल में बताशे का दान करे। सिर पर चोटी रखे। मेहमानों को पानी की जगह दूध पिलावे।

प्रथम भावगत बुध फल

बुध शुभ— जातक विनोदप्रिय, राजा या राजा सदृश, स्वार्थी, घुमक्कड़ शरारती और स्वयं सुख की सांस लेगा। धन की चिन्ता नहीं होगी। लड़कियां भी राज करेगी। राज्य से लाभ होगा। सूर्य जिस भाव में स्थित होगा उससे सम्बन्धित संबधी अल्पकाल में ही धनी हो जायेंगे। यदि सूर्य व बुध की युति पहले भाव में हो तो स्त्री धनी, उत्तम कुल की व सुस्वभाव से युक्त होगी।

बुध अशुभ—यदि मंगल 12वें भाव में हो, तो पहले भाव का बुध कभी भी कुप्रभाव नहीं देगा। ससुराल और सन्तान की स्थिति अशुभ हो। ससुराल में शराब और मांस का प्रयोग होगा तथा सन्तान भी शराबी व कबाबी होगी। राहु व केतु अशुभ फल देंगे। पहले भाव में बुध अकेला हो और सातवाँ भाव रिक्त हो, तो राजा सदृश होगा और दूसरों को प्रभावित करने में माहिर होगा। दूसरों के लिए यह स्थिति लाभप्रद होगी। पहले भाव में अशुभ बुध और 7वें भाव में चन्द्र के रहने पर जीभ का स्वाद व नशेबाजी की आदत बर्बाद कर देगी।

उपाय- एक जगह टिक कर रहें। इधर उधर न भटकें। अंडा व मांस का सेवन न करें। नशे की लत से बचें। ऐसे कार्य न करें जिस से अपयश का भय हो। हरे रंग की वस्तुओं से बचें।

द्वितीय भावस्थ बुधफल

बुध शुभ— जातक, योगी, स्वार्थी, बुद्धिमान् ब्रह्मज्ञानी और अपने आप में मस्त होगा। राज्य परिवार को वृद्धिकारक, शत्रुहन्ता एवं विश्वास घातियों का शत्रु होगा। पिता का सुख न होने पर भी धनी होगा। अपने प्रयासों से उत्तम जीवनयापन करते हुए दीर्घायु तक माता का सुख पायेगा। ससुराल एवं कुटुम्ब को पालने व तारने वाला होगा। वाकपटुता से अनेक कार्य बनाने वाला, शत्रुओं पर विजय पाने वाला और शुक्र व मंगल की वस्तुओं का

शुभ लाभ पाने वाला होगा। बुध दूसरे हो और राहु आठवें हो, तो हाजिर जवाब, पर राहु नौवें हो, तो उत्तम भाषण देने वाला होगा। बुध दूसरे और मंगल आठवें भाव में हो, तो वाक् और कलम का धनी होगा। बुध 2रे भाव में और केतु नौवें भाव में हो, तो वाकपटुता में माहिर होगा। बुध 2रे भाव में और 1ले या 12वें भाव में गुरु हो, तो जातक मान-सम्मान वाला और माता दीर्घायु होगी। बुध 2रे और शनि 6ठेंभाव में हो, तो जातक अत्यधिक तेज होगा जो किसी के काबू में न आ सकेगा।

बुध अशुभ— आर्थिक रूप से तंग, घमण्डी, स्वस्थ और बुद्धि से तेज होगा। यह तभी होगा जब 2रे भाव में बुध अशुभ एवं सूर्य 8 वें भाव में हो।

बुध अशुभ हो और गुरु आठवें भाव में हो, तो दादा कष्ट में होगा और दूसरों की वस्तुओं व संबंधियों का भी शुभ फल न होगा। बुध 2रे अशुभ हो और चन्द्र व शनि 12 वें भाव में हों, तो 17 से 25 वें वर्ष तक पिता का धन व पैतृक सम्पत्ति व्यर्थ होती जाएगी।

सूर्य 8वें भाव में हो। बुध अशुभ हो और गुरु आठवें भाव में हो, तो दादा कष्ट में होगा और गुरु की वस्तुओं व सम्बन्धियों का भी शुभ फल न होगा। बुध 2रे अशुभ हो और चन्द्र व शनि 12वे भाव में हो, तो 17 से 35 वे वर्ष तक पिता का धन व पैतृक सम्पत्ति व्यर्थ होती जायेगी।

उपाय- साली का साथ न करें एवं उससे सम्बन्ध न रखें चन्द्र व गुरु की वस्तुएँ मन्दिर में देना या चन्द्र व गुरु का उपाय करना लाभप्रद रहेगा। भेड़ व तोता-तोती कभी न पालें।

तीसरे भाव में स्थित बुध

बुध शुभ—यदि बुध तीसरे शुभ हो और मंगल पहले भाव में हो, तो धन और क्षेत्रवृद्धि के साथ-साथ कुटुम्ब बढ़ता जायेगा। बुध की वस्तुएँ शुभ फल देगी। यदि शुभ बुध तीसरे भाव में और सूर्य 11वें भाव में स्थित हो, तो सूर्य व बुध निर्बल होंगे। केतु (मामा व सन्तानादि) का शुभफल और दमे का अच्छा वैद्य होगा। दीर्घायु होगा। तीसरे भाव में बुध शुभ हो और सोया हो अर्थात् 9वाँ व 11वाँ भाव रिक्त हो, तो बुध सर्व प्रकार से शुभ फलदायी होता है।

बुध अशुभ— बुध तीसरे भाव में अशुभ हो तथा घर का द्वार दक्षिण में हो, तो स्त्री धन व ससुराल की तबाही होगी। बुध तीसरे भाव में अशुभ हो और शुक्र 4थे भाव में हो, तो सन्तान विलम्ब से होगी। बुध तीसरे भाव में हो और शुक्र स्थापित किया हो, तो चन्द्र व कलम का फल शुभ होगा। बुध 6ठे व 7वे भाव में पाप ग्रह हो, तो पिता का धन और माता का घर नष्ट हो जाए।

उपाय- प्रतिदिन फिटकरी से दांत साफ करें। बुध से सम्बन्धित वस्तुएँ मूँगादि रोगकारक होगी। अत: इनका प्रयोग न करे, पक्षियों की सेवा करें, बकरी का दान करें व घर में लगा पत्थर दूध से प्रतिदिन धोएं।

चतुर्थ भावस्थ बुधफल

बुध शुभ— यदि चौथे भाव में अकेला बुध शुभ हो, तो सबके लिए पारस पत्थर की तरह होगा। बुध चौथे भाव में शुभ हो और चन्द्रमा दूसरे भाव में हो, तो सरकार में उच्च पद पर हो, धन की कमी न रहे तथा बुध और शुक्र दोनो का फल शुभ होगा। पूरे 32दाँत हों, तो कुटुम्ब का बेड़ा पार लगाने वाला होगा तथा मानसिक रूप से अशान्त होगा। यदि बुध चौथे भाव में शुभ हो, दूसरा भाव रिक्त हो और चन्द्र 6ठे या 3रे भाव में हो, तो माता-पिता का सुख दीर्घायु तक रहेगा। बुध चौथे भाव में शुभ हो और गुरु भी श्रेष्ठ हो, तो राज्य सरकार या सरकार से हर प्रकार से लाभ और उन्नति मिलेगी।

बुध अशुभ— बुध चौथे भाव में अशुभ हो, तो माता शीघ्र चल बसे, बुध की वस्तुएँ घर पर लाने से माता अल्पायु हो। यदि माता जीवित हो, तो आर्थिक रूप से स्थिति कमजोर तथा माता का स्वास्थ्य ठीक न हो। बुध चौथे भाव में अशुभ हो और चन्द्रमा छठे भाव में या अशुभ हो, तो जातक आत्महत्या करने में तत्पर रहता है। बुध अशुभ हो और 2,5,व12 वें भाव में शुक्र, राहु या शनि पाप ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, धन और पारिवारिक सुख नष्ट हो जाए।

उपाय- केशर का 43 दिन तिलक लगाए। बृहस्पति का उपाय करे। चांदी की जंजीर मन की शान्ति के लिए धारण करें।

बुध का 5 वें भाव का फल

बुध शुभ— ज़ातक प्रसन्न, मुख से निकला वाक्य— ब्रह्म वाक्य, उत्तम होगा। अचानक मुख से निकला वाक्य शुभ होगा। राजा की कीर्ति बढ़ाने वाला, धन और परिवार की वृद्धि हो। शुभ बुध पाँचवे हो और ग्यारहवाँ भाव रिक्त हो, तो पैतृक सम्पत्ति शुभ, परिवार और सन्तान की स्थिति शुभ होगी।

बुध अशुभ— बुध पाँचवें भाव में अशुभ होने पर पिता के लिए अशुभ होगा परन्तु सन्तान हेतु कभी अशुभ न होगा।

उपाय— गले में ताँबे का पैसा धारण करने से कोष में वृद्धि होगी। गौ पालन करने से सन्तान, स्त्री और अपना भाग्य उत्तम हो।

बुध का 6 वें भाव का फल

बुध शुभ— ऐसा जातक माता के गर्भ में आने के समय से ही अपना प्रभाव देने लगेगा। बुध सदैव आज्ञाकारी सेवक की तरह होगा। वाणी से निकले शब्द शुभ होंगे। समुद्री यात्राएँ शुभ होंगी। पाँचवें शुभ बुध होने पर व्यापार, बौद्धिक कार्यों से लाभ। परिश्रम से किए जाने वाले काम से कम लाभ, कृषि से लाभ तथा लेखन से लाभ होगा। बेईमानी न करे, ईमानदारी से लाभ। शनि 9वें या 11वें भाव में हो, तो स्त्री धनी होगी। गुरु, शुभ हो, तो अखबार, मैगजीन, लेखन, प्रिंटिंग प्रेस और ईमानदारी से लाभ होगा।

बुध अशुभ— बुध छठे भाव में अशुभ होने पर नमक-हराम, विश्वासघाती और अशुभप्रभाव देकर भाग जायेगा। वैद्य का कार्य करते समय लालची ना बने। बुध छठें भाव अशुभ हो और मंगल 4 थे या 8वें हो, तो माँ अल्पायु में मर जाए या कष्ट हो। बुध छठे अशुभ हो, गुरु चन्द्र 2रे हों या गुरु 11वें चन्द्र 12वे हो, तो बुढ़ापे में अशुभ फल मिले।

उपाय- बुध अशुभ हो तो दूध की बोतल वीराने में दबा दें और यदि चन्द्र सहायक हो, तो गंगाजल की बोतल उपजाऊ भूमि में दबाना अच्छा होगा। शुक्र अशुभ होने पर यह उपाय अवश्य करे। स्त्री के बाएँ हाथ में चाँदी का छल्ला धारण करना लाभप्रद होगा।

सप्तम भावस्थ बुध फल

बुध शुभ— बुध सातवें उसकी कलम तलवार को भी काट दे। बुढापा सदैव अच्छा बीतेगा। बुद्धि चाहे साथ न दे, पर धन सदैव सहायता देता रहेगा। दस्तकारी से लाभ, मुकद्दमों या झगडों से कभी उलझन नही होगी। बुध सातवे भाव में शुभ व पहले भाव में कोई ग्रह हो, तो जातक कुटुम्ब का बेड़ा पार लगाने वाला होगा। बुध सातवे भाव में शुभ व पहले भाव में चन्द्र हो, तो समुद्री यात्रा लाभदायी हो। बुध सातवें भाव में शुभ हो और शनि तीसरे भाव में हो, तो स्त्री का कुटुम्ब धनी हो जायेगा।

बुध अशुभ— बुध सातवें अशुभ होने पर बहन, बुआ, साली या लड़की सब दु:खी होगी। बुध सातवें अशुभ और पहला भाव ग्रहहीन हो, तो बाल्यकाल अशुभ, साहुकारी लाभदायक न हो, भाग्य अशुभ होने पर भी बुढ़ापा ठीक बीते। 34 वर्ष तक शुक्र का फल भी अशुभ होता है।

उपाय:- सट्टा कभी न खेले।

बिगड़ी हुई साली से संबंध कदापि न रखें।

मोती गले में धारण करने से समुद्री यात्राओं से लाभ एवं शनि का छल्ला मध्यमिका अँगुली में धारण करने से स्त्री का कटुम्ब धनी हो जाए। बिगड़ी हुई साली से संबंध कदापि न रखें।

अष्टम भावस्थ बुध फल

बुध शुभ—यदि आठवें शुभ बुध को पुरुष ग्रह का साथ मिले, तो कदापि अशुभ न होगी और पुरुष ग्रह सदृश शुभफल होगा। यदि मंगल 12वें भाव में हो, तो बुध का आठवे भाव में अशुभ फल न होगा। मंगल और बुध आठवें भाव में अलग अलग अशुभ देते हैं। परन्तु जब दोनों की युति आठवें भाव में होती है, तो दोनों का शुभ फल ही होता है।

बुध अशुभ— बुध आठवें भाव में अशुभ हो, तो सारा जीवन परिश्रम से बीते, रोग रहे, हानि हो 32वें से 34वे वर्ष में आय आधी रह जाए। बुध अकेला आठवें भाव में सदैव अशुभ रहेगा। बुध आठवें हो और पुरुष ग्रह छठे भाव में हो, तो माता अल्पायु हो या माता पुत्र कष्ट में रहें और मामा भी दु:खी रहे। यदि बुध आठवे और राहु भी अशुभ हो, तो जेल तक जाना पड़े या अस्पताल, वीराने या घर से बाहर रहना पड़े।

उपाय- मिट्टी के बर्तन में देशी खाँड़ या शहद से भरकर वीराने में दबा दें। छत पर वर्षा का पानी या दूध रखें या लड़की की नाक में चाँदी का छल्ला पहनाएँ। बुध अशुभ फल दे रहा हो, तो मंगल की वस्तुएँ श्मशान में दबाएं।

नवम भावस्थ बुध फल

बुध शुभ— जातक को चाहे स्वयं भूखा रहना पड़े पर कुटुम्ब का पालन अवश्य करेगा। नौवें बुध का रहस्य 11वे भाव में स्थित ग्रह से खुलता है। ग्यारहवाँ भाव रिक्त हो, तो बुध बेशर्म लड़की की तरह व्यवहार करे। चन्द्रमा 3,8,9 या 5वें भाव में हो, तो बुध के अशुभ प्रभाव से रक्षा अपने आप होती है।

बुध अशुभ— जातक कोढ़ी, मनहूस, अल्पायु कूप-मण्डूक, जलील और अपने जन्म रहस्य न बताने वाला होता है। बुध नौवें और पहला भाव रिक्त हो, तो शरीर कष्ट और रक्त विषैला हो जायेगा या उसमें विकार हो जायेगा। बुध नौवे भाव में हो और गुरु अकेला 8,6,10 या 11वे भाव में हो, तो अल्पायु सन्तान और स्त्री का फल अशुभ होगा। बुध नौवें हो और 11वें भाव में चन्द्र व केतु न हों, तो जातक धोखेबाज और बात करते-करते हानि पहुँचाकर एक दो तीन हो जाने में माहिर होगा। दिया वचन कभी नहीं पूरा करे।

उपाय-दरिया के पानी से धुला, पीला कपड़ा घर में दबाएँ या चाँदी दबाएं, नाक छिदवाएँ। तोता बकरी न पाले, हरे रंग का प्रयोग न करे तथा फकीर या साधु से कोई ताबीज न लें।

दशम भावस्थ बुध फल

बुध शुभ— बुध दसवें भाव में शुभ हो, तो जातक प्रसन्न, राज्यप्रिय, व्यवहारकुशल, जीवनयापन ठीक-ठाक, खुशामदी, आज्ञाकारी और शुभ ग्रहों से युत हो, तो धनी बन जाता है। वह नीतिवान, ठेकेदार व शास्त्रज्ञ होता है।

जातक शरारती, चतुर, स्वार्थी होने के कारण इसके जाल से कोई भी कठिनता से बच सकता है। बुध दसवें शुभ हो और 1,3,4,5 वें भाव में चन्द्र हो, तो शस्त्र का व्यापारी पुरुषों के लिए शुभ स्त्रियों व बच्चों के लिए अशुभ होता है। बुध दसवें शुभ व दूसरा भाव रिक्त हो, तो शर्मीला, समुद्री यात्रा से लाभ पाने वाला व बहुमुखी प्रतिभा का धनी होगा। बुध दसवें शुभ हो और दूसरा भाव भी शुभ हो, तो सूखा घड़ा भी मोतियों से भर देगा अर्थात् शुभ फल देगा।

बुध अशुभ— बुध दसवें अशुभ होने पर जातक शराबी व मांसाहारी होगा। जीभ का स्वाद अशुभता का द्योतक होगा। राहु, केतु व शनि अपनी आयु तक अशुभ होंगे। बुध दसवें अशुभ हो और शनि भी अशुभ हो, तो पिता की आयु में सन्देह हो। यदि बुध के साथ-साथ आठवाँ भाव भी अशुभ हो, तो हर प्रकार से दु:खी हो।

उपाय- शराब, मांस व अण्डे का सेवन न करें। जीभ के स्वाद के चक्कर में अपनी हानि न करें। शनि का उपाय करें।

एकादश भावगत बुध फल

बुध शुभ— बुध 11वें शुभ हो, तो जातक धनी, सर्वगुण-सम्पन्न, सन्तान शिक्षित और उनका उच्च कुल में विवाह हो। 34वें वर्ष के बाद हर प्रकार से शुभ होगा। बुध का शुभाशुभ फल गुरु की शुभाशुभता पर निर्भर करेगा। बुध 11वें भाव में शुभ हो और दूसरा भाव रिक्त हो, तो जातक शर्मीला और योग्य होगा।

बुध अशुभ— बुध अशुभ 11वें हो, तो मूर्खतावश धन-हानि, त्वचा-रोग होगा और समय व्यर्थ बर्बाद होगा।

उपाय- किसी फकीर या साधु से ताबीज लेकर न धारण करें। ताबीज न लेना ही उत्तम है। यदि लेंगे तो बर्बाद हो जायेंगे। गले में ताँबे का पैसा धारण करें।

द्वादश भावगत बुध फल

बुध शुभ— बुध बारहवें भाव में शुभ हो और गुरु या शनि 2रे या 12वें भाव में हो या गुरु या शनि तीसरे भाव में हो, तो परिवार और धन के लिए अमृत से भरा कुण्ड होगा। बुध बारहवें और गुरु 2रे या 12 वे हो, तो मान-सम्मान और प्रसिद्धि तो होगी परन्तु धन-सम्पत्ति की चोरी या हानि या व्यर्थ व्यय व हानि भी होगी। बुध व शनि 2रे या 12वें भाव में एक साथ हो, तो यह स्थिति विष से भरे हुए के लिए भी अमृत सदृश होगी जो मृत को भी जीवित कर देगी।

बुध अशुभ— बुध 12वें भाव में अशुभ हो, तो स्वार्थ के लिए कही हुई बात को झूठ कहे, झूठ बोलने में माहिर होता है। आलसी और झूठे आश्वासन देते रहना उसकी आदत होती है। राहु दूसरे भाव में और बुध 12वें भाव में हो, तो अशुभ, मृत्यु या दुर्घटना से कष्ट होता है। सूर्य 6ठें व बुध 12वें आजीविका के साथ-साथ राजकीय संबंध बिगड़े। चन्द्र 6ठें और बुध 12वें माता अभागी हो और आत्महत्या तक नौबत आ जाए। शनि छठें बुध 12वें भाव में हो, तो व्यापार और संबंधी सभी कुछ अशुभ हो। बुध 12वें और राहु 8वें या 12वें हो, तो जेल या पागल खाने जाने की नौबत आए। यह स्थिति बनने के लिए आवश्यक नहीं कि जातक अपराधी या रोगी हो। बुध 12वें और द्वितीय भाव रिक्त हो, तो जातक जल्दबाज और अल्पबुद्धि हो। बुध 12वें और राहु या केतु छठें भाव में हो, तो दु:खी जीवन अशुभता और बाधाओं से सदैव परेशान रहना पड़े।

उपाय— वाक् (जुबान) को काबू रखें। झूठे वायदे करने की अपेक्षा वायदा देकर पूरा करें।

मस्तक पर केसर का तिलक 43 दिन तक लगाएँ।

नाक छिदवाएँ। खाली घड़ा बहते पानी में बहाए।

पीला धागा हर समय गले में पहने रखें।

काला-सफेद कुत्ता पालें। गणेश जी की पूजा करें।

गुरु पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. विद्या हो या न हो धनी अवश्य बनायेगा। जातक अपने व्यवहार, धार्मिकता व दयालुता से निरन्तर उन्नति करे। भाग्य 51 वर्ष तक साथ दे। चन्द्रमा की वस्तुएँ व सम्बन्धी सहायक बने। केतु व शुक्र की वस्तुएँ भी शुभ हों। सूर्य की वस्तुओं या संबधियों से प्रभावित हो। शरीर स्वस्थ हो।
2. पहले गुरु शुभ हो और सातवें भाव में कोई भी ग्रह (शत्रु या मित्र) हो, जातक उच्च शिक्षा अवश्य प्राप्त करेगा। यदि बुध भी शुभ है, तो विभिन्न विद्याओं में प्रवीण होगा और राजा सदृश उत्तम प्रशासक होगा।
3. गुरु पहले भाव में शुभ हो एवं केतु भी शुभ हो, तो 4,8 या 11 वें वर्ष से माता-पिता की ओर से सुख मिले। 25वें वर्ष तक भाग्य का सितारा बुलन्द रहे।
4. गुरु पहले भाव में शुभ हो और चन्द्रमा भी शुभ हो, तो भला करने वाला, वर्ष दर वर्ष सुख बढ़े, उत्तम राजा या प्रशासक होते हुए भी जीवन सन्यासी सदृश व्यतीत हो।
5. गुरु पहले भाव में शुभ हो और ग्यारहवाँ भाव शुभ हो, तो स्वअर्जित धन से पीली वस्तुएँ अधिक क्रय हों।
6. गुरु पहले भाव व 1,2,4 में सूर्य, चन्द्र व मंगल हों, तो राजकोष से कमाया एक पैसा भी स्वर्ण सदृश वृद्धि देगा।
7. गुरु पहले भाव में व मंगल सातवें हो, तो जातक विस्तृत सम्पत्ति का स्वामी होगा।
8. गुरु पहले व सूर्य 7वें भाव में हो, तो जातक व उसके कुल की आयु इच्छानुसार होगी।

गुरु पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. गुरु पहले भाव में अशुभ हो और बुध अशुभ या 2,5,9,12वें भाव में गुरु के शत्रु ग्रह हो, तो जातक अनपढ होते हुए भी चमत्कारिक फकीर होगा। परिवार में कोई भी उच्च शिक्षा न प्राप्त कर सके।
2. अशुभ गुरु पहले भाव में एवं शनि पाँचवें हो, तो सन्तान व स्वास्थ्य ठीक न हो। अपने बनाये स्थानों में पाप बढ़ जाने से दु:ख मिले।
3. अशुभ गुरु पहले व शनि नौवें हो, तो जातक का स्वास्थ्य बिगड़ जाए। गुरु पहले व आठवें राहु हो, तो पिता की मृत्यु दमा या हार्ट अटैक से हो। 42वें वर्ष में नेत्र, मस्तिष्क या टांगों का रोग हो जाए।
4. गुरु पहले और सूर्य व बुध की युति 11वें या अशुभ भावों में हो, तो मुकदमें या गुप्त उलझनों के लिए धन हानि हो और सांसारिक कार्यों में अशुभ फल ही मिले।
5. कार्यों में अशुभ फल ही मिले।
6. गुरु पहले और शनि अशुभ भाव में सूर्य, चन्द्र या मंगल के साथ हो, तो अपनी सन्तान दु:खी हो या दु:ख का कारण बन जाए।

उपाय-

भूमि में मंगल की वस्तुएँ दबाएँ।

चन्द्रमा को स्थापित करे या उपाय करे।

राजकोष से प्राप्त धन में से कुछ भाग तिजोरी में रखना कोष वृद्धिकारक हो।

गुरु दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु दूसरे भाव में शुभ हो, तो धन दान से बढ़े। यदि रात्रि की सेवा करें, तो धन की वृद्धि और अधिक हो 27वें वर्ष में राजकोष या राज्य से लाभ हो। धर्म गुरु और पिता के धन को बढाने वाला होता है। गृहस्थी होते हुए भी ज्ञानी, गुरु या मसीहा होगा। धन जितनी तेजी से आता है, उतनी तेजी से खर्च भी हो जाता है। सर्वत्र यश व मान बढ़े। मिट्टी और स्त्रियों की वस्तुओं के कार्य लाभदायक होंगे। स्वर्ण संबंधी कार्य अर्थात् सर्राफ, जौहरी व सुनार बनना हानिकारक है। सूर्य निर्बल हो तो निर्धन परिवार में जन्म लेने के बाद भी 16 से 32 वर्ष की आयु तक धन अर्जित कर संग्रह करेगा।
2. गुरु दूसरे भाव में शनि से युत हो, तो विद्वान् होगा। विद्याहीन या विद्यावान होने पर भी भाग्य का सूर्य चमकता रहेगा।
3. गुरु दूसरे भाव में और शनि बारहवें भाव में हो, जातक सुखी, वीर और लोकप्रिय हो।
4. गुरु दूसरे भाव में और राहु शुभ हो, तो जातक राजा सदृश, प्रसिद्ध और दाता होता है। उसके पास सांसारिक सुख भरपूर हो, सर्वत्र सम्मानित और शुभ भले कार्य करने में तत्पर रहता है।

गुरु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु दूसरे भाव में और केतु छठें भाव में हो, तो जातक को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है।
2. गुरु दूसरे भाव में हो और आठवें भाव में चन्द्र व मंगल की युति हो, तो जातक कुटुम्ब को नष्ट करने वाला होता है। ऐसा जातक जहाँ भी जाए दुर्भाग्य का वास हो जाए पर स्वयं (जातक) को हानि न हो।
3. गुरु दूसरे, शनि 10वें और बुध 8वें हो, तो धन हानि, अस्वस्थ व जेल जाना पड़े।
4. गुरु दूसरे और बुध 7वें हो, तो जातक ईर्ष्यालु हो।

उपाय–

1. गुरु की वस्तुएँ पीले कपड़े में बांध कर मन्दिर में दे आएँ।
2. अतिथियों का अपमान न कर उनका स्वागत करें।
3. साँप को दूध पिलाएँ।
4. गुरु की वस्तुएँ स्थापित करें या गुरु का उपाय करें।

गुरु तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक धनी, वीर, विद्वान्, नौकरी के द्वारा राज कोष से धन दीर्घायु तक मिलता रहे। यह सब तब तक होगा जब तक दुर्गा पूजा या कन्याओं की सेवा करता रहे। यदि ऐसा नहीं करेगा, तो तीसरें या 7वें बुध का फल अशुभ होगा।
2. गुरु तीसरे और शनि नौवें भाव में हो, तो जातक दीर्घायु होता है।
3. गुरु तीसरे हो और शनि शुभ हो, तो जातक धनी होता है।
4. गुरु तीसरे व बुध सातवें होने पर जातक साहसी होता है।

5. गुरु तीसरे, मंगल दूसरे व शनि नौवें हो, तो जातक सुखी व दूसरों का भला करने वाला होता है।

गुरु तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु अशुभ तीसरे भाव में हो, तो जातक कायर व दुर्भाग्यशाली हो।
2. गुरु तीसरे व शनि चौथे भाव में हो, तो जातक का मित्र उसे लूटकर स्वयं धनी हो जाए।
3. गुरु तीसरे व चन्द्र 12वें भाव में हो, तो निज प्रशंसा सुनकर अपनी हानि या अहित करें।
4. गुरु तीसरे भाव में, शनि चौथे भाव में और बुध अशुभ हो, तो जातक दूसरों को लूटकर धनी बने, विश्वासघाती व नास्तिक हो। उसके सम्बन्धी (विशेष कर संतान और मामा 31वें वर्ष में अवश्य दु:खी हों) दु:खी रहें। वह झगडालू, शरारती, कायर हो तथा शरीर से दुर्गन्ध आए।

उपाय–

1. दुर्गा पूजा करें।
2. कन्याओं की पूजा सदैव शुभ रहे।

चौथे भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय

गुरु चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. यदि चौथे भाव में गुरु शुभ हो, तो धार्मिक दूसरों की सहायता करने वाला, दूरदर्शी, दीर्घायु, सम्मानित, हर धर्म मानने वाला, लड़ाई-झगड़ों से दूर, संतुष्ट, राजा-सदृश, धनी, लाखों में एक, भाग्यशाली, आध्यात्मिक शक्ति से युक्त, दयालु, चरित्रवान और सर्वप्रकार से सुखी हो।
2. गुरु चौथे भाव में हो, चन्द्र पहले और शनि दसवें, तो सभी प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त हो। गुरु चौथे और सूर्य या मंगल शुभ हो, तो पिता उच्च सरकारी अधिकारी हो या जातक के जन्म होने पर हो जाए परन्तु यह आवश्यक नहीं कि जातक भी भाग्यशाली हो।
3. गुरु चौथे में हो और केतु शुभ हो, तो अपनी या किसी की भी विद्या पर किया गया धन का व्यय ब्याज सहित वापस हो जाएगा। चरित्र ठीक रहेगा और दीर्घायु होगा।
4. गुरु चौथे भाव में हो और बुध शुभ या सूर्य दसवें भाव में हो, तो जातक विद्यावान, ब्रह्मज्ञानी, योग्य, प्रसिद्ध और राजकोष से धन लाभ हो।
5. गुरु चौथे और शनि 2,9 या 10वें भाव में हो, तो जातक प्रसिद्ध, सबका भला करने वाला, अच्छा और सर्व प्रकार का आराम पाने वाला होता है।
6. गुरु चौथे और शनि दूसरे हो, तो अत्यन्त चतुर हो।
7. गुरु चौथे और चन्द्र 10वें हो, तो सरकारी यात्राएँ लाभदायक हों।

गुरु चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु चौथे हो और केतु अशुभ हो, तो जातक राजा होकर भी भिखारी हो जाएगा या दु:ख आने पर भयभीत होकर वन में चला जाएगा।
2. गुरु चौथे हो और राहु अशुभ हो, तो जातक चन्द्रमा की वस्तुओं का फल अशुभ मिले।

3. गुरु चौथे और शुक्र, बुध, राहु या शनि 10वें भाव में हों, तो धनहानि हो।
4. गुरु चौथे और बुध 10वें भाव में हो, तो जातक निकम्मा, अपनी नैया स्वयं डुबाने वाला और माता के गर्भ में आते ही कुल का नाश कर दे। बड़ों की आज्ञा मानने से बेड़ा पार लगे। 11, 23, 34,48,55,71,75,85,97 एवं 119वें वर्ष में वर्षकुण्डली में बुध 10वें होने से इन वर्षों में बर्बादी करेगा। 34वें वर्ष के बाद हवाई किले बनाना अपना और अपने कुल की बर्बादी को बढ़ाना होगा।

उपाय–

1. बड़ों की आज्ञा सदैव मानें और उनका अपमान न करें।
2. माँस और शराब का सेवन न करें। प्रयास करें, पराई स्त्री से यौन संबंध न बनाएँ।

पाँचवे भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय

गुरु पाँचवे भाव में शुभ स्थिति में हो तो

1. गुरु पाँचवें शुभ होने पर जातक मान-सम्मान युक्त, ब्रह्मज्ञानी, क्रोधी और उसमें मनुष्यता के गुण विद्यमान हों।
2. गुरु पाँचवें और राहु शुभ हो, तो जातक सेना में उच्चाधिकारी होगा और अनेक लोग उसकी छत्रछाया में सुखी होंगे तथा उसकी सन्तान के लिए प्रार्थना करेंगे।
3. गुरु पाँचवें हो और सूर्य, चन्द्र, मंगल 7वें भाव में हो, तो धन, सन्तान और कुल में वृद्धि हो। यदि गुरुवार को सन्तान हो, तो सभी दु:ख दूर हो जाएंगे।

गुरु पाँचवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो

1. गुरु पाँचवें और केतु 11वें हो, तो यदि धर्म के नाम पर माँगकर या दान लेकर खाने पर नि:सन्तान होगा और कफन के बिना मरने का पहला संकेत होगा। सन्तान मरी हुई उत्पन्न होगी। केतु अशुभ होने पर भी सन्तान सुख नहीं होगा।

2.गुरु पाँचवे और राहु नौवें हो, तो गुरु मौन रहेगा। राहु अशुभ होने पर भीख माँगने वाला साधु, अशुभता और सर्वप्रकार से तंगी हो।

उपाय–

1. गणेश उपासना करें।
2. केतु का उपाय करें।
3. शराब, माँस व परस्त्री गमन से दूर रहने पर गुरु का शुभ फल प्राप्त हो।

छठे भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय

गुरु छठे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो

1. जातक साधु-स्वभाव का होता है। प्रत्येक वस्तु बिना माँगे मिले। दोहता व भाँजे के उत्पन्न होने पर भाग्य प्रभावित हो। बड़ों के नाम पर दान लेना भाग्यवृद्धि का संकेत होगा। पिता जब तक रहेगा दानी, धनी और सुखी

होगा। जातक काम करने में रुचि नहीं रखेगा क्योंकि उसकी उदरपूर्ति अपने आप होती रहेगी। वह साधु या फकीर भी हो सकता है।

2. गुरु छठें और केतु शुभ हो, तो जातक प्रसन्न और चरित्र उत्तम होने पर मामा और संबंधी भी प्रसन्न हों परन्तु मामा 40वें वर्ष तक अर्थहीन होंगे।

गुरु छठे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो

1. गुरु छठें हो और बुध अशुभ हो, तो 34वें वर्ष तक भाग्यहीन हो।

2. गुरु छठें हो और केतु अशुभ हो, तो कटोरा लेकर भीख माँगनी पड़े।

3. गुरु छठें और बुध बारहवें हो, तो पिता और धन दोनों नष्ट हो जाएँ। यह फल 16 वर्ष की अवधि में भी मिल सकता है।

उपाय–

1. बड़ों के नाम सदैव दान-पुण्य करते रहें।
2. केतु का उपाय करें।
3. कुत्ते को मीठी रोटियाँ डालें।
4. गणेश उपासना करें।
5. कन्याओं की पूजा करें।
6. पीपल के वृक्ष को पानी दें।

सातवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय–

गुरु सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक धर्म कार्य में संलग्न रहेगा। धर्म का झंडा हर समय हाथ में रहेगा। सातवें भाव का शुभफल चन्द्र की शुभाशुभ स्थिति पर निर्भर होगा। यात्रा से जीवन सुखी होगा और यात्रा में मृत्यु नहीं होगी। मृत्यु घर में ही होगी। अत: परदेश में धन और सम्पत्ति के लिए भाग-दौड़ करना व्यर्थ है। यदि परदेश में मृत्यु हो जाए, तो भी अन्तिम क्रिया पैतृक घर में ही होगा। विवाह के बाद भाग्यवृद्धि होगी। जातक सन्तान हीन व ऋणयुक्त नहीं मरेगा। सन्तान की उत्पत्ति के बाद 34 वर्ष तक समस्त दु:ख दूर हो जाएंगे।

2. गुरु सातवें हो और 1,2,5,9,12 वें गुरु के मित्र ग्रह हो तो, धर्म कार्यो में प्रसिद्ध हो।

3. गुरु सातवें हो और केतु शुभ हो, तो जातक तपस्वी, पूजापाठ करने वाला होगा। यह आवश्यक नहीं कि वह धनी भी हो।

4. गुरु सातवें और सूर्य पहले भाव में हो, तो जातक ज्योतिष व संसार के रहस्य का ज्ञाता, सुखी व आराम पसंद होगा। यह आवश्यक नहीं कि धनी भी हो।

गुरु सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो

1. गुरु सातवें हो और शनि नौवें हो, तो जातक डाकू या चोर होगा।

2. गुरु सातवें हो और बुध नौवें हो या इसके विपरीत बुध सातवें हो और गुरु नौवें हो, तो वैवाहिक गड़बड़ या पारिवारिक जीवन सुखमय न हो।

3. गुरु सातवें हो और शनि या बुध 2,6,12वें हो, तो जातक पुत्र के लिए तरसता रहे। 45वें पुत्र उत्पन्न हो जो उसे बर्बाद कर दे। दत्तक पुत्र भी दु:खी हो।

4. गुरु सातवें हो और शनि या बुध 4थे या 11वें हो, तो जातक तोतलाए, आयु और भाग्य से भी निर्बल हो।

5. गुरु सातवें हो व पहला भाव रिक्त हो, तो जातक दूजों को चाहे जितना धन बाँट दे, पर अपने पेट के लिए स्वयं परिश्रम करना पड़े।

उपाय–

1. शिव उपासना करें।
2. चन्द्र का उपाय करें।
3. रत्तियाँ जो सोना तोलने के काम आती है, पीले कपड़े में बांधकर या सोने के साथ रख देने से लाभ होगा।

आठवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय–

गुरु आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु आठवें भाव में हो और बुध नौवें भाव में हो, तो कुटुम्ब दीर्घायु होगा। विशेषकर अपनी और पिता की दीर्घायु होने पर ठेकेदार होगा।

2. गुरु आठवें हो और चन्द्र के साथ-साथ 2,5,9,12वाँ भाव शुभ हो, तो जातक में रहस्य खोलने का साहस हो, स्वर्ण भण्डार का स्वामी (धनी) और दीर्घायु होगा।

3. गुरु आठवें हो और दूसरा व चौथा भाव शुभ हो, तो भाग्य कंगाल या सिर धड़ से अलग हो जाने के बाद भी साथ देगा। स्वास्थय, धन और परिवार दु:खी न होगा।

गुरु आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु आठवें और मंगल चौथे हो, तो जातक दरिद्र और डरपोक होता है।

2. गुरु आठवें और नौवें भाव में बुध हो, तो जातक को जंगल में मंगल का अनुभव हो।

3. गुरु आठवें और शनि या मंगल चौथे व सातवें हो, तो सब कुछ नष्ट कर देगा। यहाँ तक कि सांसारिक हवा को रक्त युक्त आँधी में बदल देगा।

4. आठवें भाव में गुरु हो और सूर्य अशुभ हो, तो जातक भाग्यहीन होगा।

5. गुरु आठवें अशुभ एवं केतु भी अशुभ हो, तो जातक तंगदिल, निर्धन, रोगी और बेबात मुसीबत खड़ी कर ले।

6. गुरु आठवें अशुभ हो और राहु अशुभ हो, तो जातक जीवन को बोझ की तरह ढोकर एक प्रक्रिया मात्र पूर्ण करे।

7. गुरु आठवें हो और शनि बली हो, तो जातक स्वतन्त्र विचारों वाला, दृढ़निश्चयी, उन्नतशील, उत्साही और सबसे अलग हो।

उपाय–

1. समय खराब हो, तो गुरु व शुक्र की वस्तुएँ मन्दिर में देने से स्थिति में सुधार हो।
2. फकीर या साधु को दान देते रहें।
3. कहीं पर कोई मरने वाला हो, तो वहाँ से हट जाएँ नहीं तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे।

नौवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय

गुरु नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक भाग्यवान, वचन का पक्का, भाग्य धर्म और पैतृक सहायता से बढ़े। आयु के साथ-साथ योगी व ब्रह्मज्ञानी हो जाए। आयु अल्पतम 75 वर्ष की हो। जन्म के समय उसके बुजुर्ग विस्तृत धन-सम्पत्ति के स्वामी होंगे। चरित्रवान् और वैद्यकशास्त्र का ज्ञान रखना होगा। परिश्रम से धनी होगा। शराब न पीएगा और परहेज रखने वाला होगा। सर्राफ सुनार या जौहरी होगा और अपनी योग्यता के कारण लोकप्रिय होगा। तीर्थयात्रा करने वाला, ज्योतिषी और धर्मात्मा होगा। जीवन में धन की कमी नहीं होगी। सिद्ध पुरुष होगा।
2. गुरु नौवें व बुध चौथे या पाँचवें हो, तो राजा होकर भी योगी होगा।
3. गुरु नौवें और सूर्य शुभ हो, तो स्वस्थ, सफल और धार्मिक होगा।
4. गुरु नौवें और शनि पाँचवें हो, तो भाग्य वृद्धि के साथ-साथ धनी हो जाए परन्तु सन्तान की दृष्टि से अशुभ फल हो। 33 से 39 या 16 से 18वें वर्ष में यह फल मिलें।
5. गुरु नौवें हो और बुध चौथे हो, तो राजयोग घटित हो।
6. गुरु नौवें और शनि पाँचवें हो, तो सन्तान सुख अल्प हो और 36वें वर्ष से धन प्राप्त हो।

गुरु नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु नौवें अशुभ हो, तो जातक निर्धन, नास्तिक और धर्म विरोधी हो जाए।
2. गुरु नौवें अशुभ हो और पहला भाव रिक्त हो, तो अस्वस्थ और हृदय रोग हो।
3. गुरु नौवें हो और तीसरा व पाँचवा भाव रिक्त हो, तो निज भाग्यवृद्धि के लिए कठोर श्रम करना पड़े।
4. गुरु नौवें हो और बुध अशुभ हो, तो अल्पायु, दुर्भाग्यशाली और मंगल का कुप्रभाव हो।

उपाय–

1. प्रतिदिन देव दर्शन के लिए मन्दिर जाएँ।
2. शराब न पिएँ।
3. बुध की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएँ या विद्यालय या पाठशाला में दान दें।

दसवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय–

गुरु दसवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु दसवें भाव में शुभ हो, तो जातक अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होगा। उसकी चतुरता ही उसे साधन सम्पन्न बनाए।

2. गुरु दसवें और मंगल या शुक्र चौथे भाव में हो, तो मिट्टी भी सोना दे, अपना प्रेम छिपाकर न रखे। स्त्रियाँ चाहे कितनी हो पर अपनी बनाकर रखने पर अशुभ फल न मिले।

3. गुरु दसवें हो और शनि दूसरे भाव में हो, तो घर में पूर्णत: वृद्धि होगी।

4. गुरु दसवें हो और सूर्य तीसरे या पाँचवें हो और शनि नौवें हो, तो सोने चाँदी के कार्य से लाभ हो पर शनि के कार्य करते रहने पर हानि व अग्नि भय हो।

5. गुरु दसवें हो और सूर्य या चन्द्र दूसरे भाव में हो, तो राजकार्यों से लाभ हो।

6. गुरु दसवें हो और सूर्य पहले, चौथे या पाँचवें हो, तो बाप पर कुप्रभाव न होकर दादा पर होगा।

7. गुरु दसवें हो और बुध भी शुभ हो, तो पुत्र हो, तांबा, सोना हो जाए। जातक प्रसन्न व उत्तरदायित्व निभाने वाला होगा।

8. गुरु दसवें व सूर्य पाँचवें हो, तो विवाह एक से अधिक करे।

9. गुरु दसवें स्थित होकर शनि और सूर्य से दृष्ट हो, तो कई बार अग्नि काण्ड हो।

10. गुरु दसवें हो और चन्द्र चौथे भाव में हो, तो स्वर्ण, चाँदी, कपड़ा आदि के कार्य से लाभ हो। राज्य से भी लाभ हो। भिखारी को अपने हाथ से भिक्षा न दें।

11. गुरु दसवें और चन्द्रमा दसवें हो, तो शनि के कार्यों से लाभ हो।

गुरु दसवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. गुरु दसवें व बुध चौथे हो, तो जातक की स्थिति खराब हो।

2. गुरु दसवें व शनि चौथे, पहले या दसवें हो, तो जातक दुष्ट हो, अभाव व रोटी को तरसे।

3. गुरु दसवें और शनि 1,4, या 10वें हो, तो अच्छा कार्य या भला करने पर भी दण्ड या कष्ट पाए।

उपाय–

1. नाक साफ करके कोई कार्य शुरु करें।

2. सिर ढककर रखे। यदि पगड़ी बाँधते हैं, तो उस पर पीले केसर का तिलक लगाएँ।

3. ताँबे का सिक्का 40–43 दिन तक बहते पानी में बहाएँ। इससे पिता की स्थिति में भी सुधार होगा।

4. मस्तक पर 43 दिन तक पीले केसर का तिलक लगाएँ।

5. केतु या गुरु का उपाय करना स्थिति को सुधारे।

ग्यारहवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय–

गुरु ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक सर्वगुण सम्पन्न, दयालु, धार्मिक, परिवार में एक होकर कार्य करते रहने पर प्रसन्नता से जीवन निर्वाह हो। पिता धनी होते हुए भी मरते समय पुत्र के लिए कुछ न छोड़े। दिए वचन पूर्ण करने से स्थिति और अच्छी रहेगी। परिवार से अलग रहने पर स्थिति खराब हो जाए और वह निर्धन हो जाए। भाई के साथ रहने पर उन्नति और लाभ हो।

2. गुरु ग्यारहवें भाव में हो और बुध शुभ हो, तो जातक धनी और निज भाग्य का निर्माता स्वयं हो।

3. गुरु ग्यारहवें हो और शनि शुभ हो, तो पिता की सहायता के बिना भी प्रसन्नता से जीवन यापन करे और धनी हो।

4. गुरु ग्यारहवें और मंगल तीसरे हो, तो स्वयं व ससुराल के लिए धन संपत्ति के मामले में ठीक हो परंतु अपनों की मृत्यु से दु:खी हो।

5. गुरु ग्यारहवें भाव में शनि के साथ हो, तो दोनों (गुरु व शनि) का फल उत्तम हो।

गुरु ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. अधार्मिक, बहन व बुआ की दृष्टि से अशुभ फल, पिता की मृत्यु के बाद स्थिति अधिक खराब, चरित्रहीन या चाल चलन गन्दा होने पर और अशुभ फल मिले, परिवार बड़ा होने पर भी मरने पर कफन पराया ही मिले।

2. गुरु अशुभ 11वें हो और चन्द्रमा पहले भाव में हो, तो उसकी तबाही ईर्ष्या के कारण होगी, सब कुछ बिक जाएगा।

3. गुरु 11वें और बुध तीसरे हो, तो अच्छी आय होते हुए भी दु:खी हो।

4. गुरु 11वें अशुभ हो और बुध अशुभ हो, तो जातक राजा होने पर भी धर्म को बेच दे, स्वयं की स्थिति अच्छी हो पर किसी को लाभ न होने दे।

5. गुरु 11वें अशुभ हो और तीसरा भाव स्थित हो, तो जातक भाग्यवान, लम्बा, दयालु व धर्मात्मा हो।

उपाय–

1. कफन का दान करें। जब भी किसी की मृत्यु हो, प्रयास करें कि कफन दान में दें अर्थात् कफन दान में देने का अवसर न गवाएँ।

2. शनि का उपाय करें, या उसे स्थापित करें।

3. धार्मिक बनें।

4. शराब न पिएँ व माँस न खाएँ।

बारहवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय–

गुरु बारहवें भाव में शुभ हो, तो–

1. जातक बुरे का भी भला करने वाला, ज्ञानी और वैरागी होता है। भाग्योदय, योग, तप, पूजा-पाठ आदि से होगा। आशीष देने या भाला करने से लाभ हो। बुरा करने व शाप देने से हानि हो।

2. गुरु 12वें हो और शनि चौथे व नौवें भाव में हो, तो जातक शनि के कार्यों से लाभ व आराम पाए।

3. गुरु 12वें हो और केतु शुभ हो, तो सन्तान का सुख अत्यन्त धनी हो।

गुरु बारहवें भाव में अशुभ हो, तो–

1. खर्चीला, 10वें वर्ष में पिता को कष्ट; अधार्मिक और अशुभ फल हो।

2. गुरु 12वें अशुभ हो और बुध भी अशुभ हो, तो जातक दीर्घायु हो पर दूसरों के लिए मनहूस हो।

3. गुरु 12वें भाव में हो और 2,8,9,10वाँ भाव रिक्त हो, तो राजा होकर भी लाभ न कमाए, अन्ततः फकीर हो जाए।

4. गुरु 12वें भाव में हो और राहु 9 या 12वें हो, तो बुद्धिमान हो, विद्या काम न आए, किए कार्य लाभ न दें, विचार धर्म नष्ट न हो जाएँ, अपव्ययी व पिता को 42वें वर्ष तक कष्ट हो।

5. गुरु अशुभ हो, तो जातक स्वयं भाग्यवादी हो, पर सन्तान को कष्ट व बाधाएँ मिलें। चन्द्र के कार्य फलीभूत न हों।

उपाय–

1. प्रतिदिन माथे पर केसर का तिलक लगाएँ।
2. सिर पर चोटी रखें और सिर को ढककर रखने का प्रयास करें।
3. गले में माला कभी न धारण करें।
4. गुरु व साधु का अपमान न करें।
5. पीपल का पेड़ कभी न कटवाएँ।

पहले भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र पहले हो व शनि शुभ हो, तो स्त्री आजीविका शुरू करने से पूर्व आएगी अर्थात् विवाह, नौकरी से पूर्व हो जाए और स्त्री गृह स्वामिनी बनकर हर प्रकार से शासन करेगी।

2. शुक्र पहले व मंगल 6,7, या 12वें हो तो जातक शतायु हो और पुत्र व पौत्र का सुख देखे।

3. शुक्र का सूर्य से संबंध बने, तो सन्तान व आराम में थोड़ा सुख कम हो, धर्महीन, स्त्रियों के पीछे घूमने वाला बाहर से दीवाना व अन्तः से सूफी हो। स्त्री का स्वास्थय ठीक न रहे। भाग्यवान, अपना व बच्चों का स्वास्थ्य उत्तम हो। निज कार्यों के लिए दूजों से सलाह लेना ठीक है।

शुक्र पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. युवावस्था व दीवानापन अपनी और संबंधियों की बर्बादी का बहाना होगा। माता अल्पायु, माता पत्नी से दूर रहने पर सुखी पर एक साथ रहने पर दुःखी हो, सूर्य कभी अशुभ न हो।

2. अशुभ शुक्र 1 व 7वें और 10वाँ भाव रिक्त हो, तो 25वें वर्ष विवाह के समय न धन रहे और न स्त्री रहे।

3. शुक्र पहले भाव में अशुभ हो व बुध भी अशुभ हो, तो सन्तान सुख अल्प हो।

4. शुक्र पहले अशुभ हो व सूर्य भी अशुभ हो, तो गृहस्थ सुख न हो, तो न के बराबर।

5. शुक्र पहले भाव में अशुभ हो और बुध, सूर्य व शनि तीनों अशुभ हो, तो ऐसा भाग्य हो कि स्वयं तो बर्बाद हो ही, अपितु दूजों को भी बर्बाब्द करे और चहुँ ओर मौतें ही दिखें।

6. शुक्र पहले अशुभ हो, 1 व 7वें में शत्रु ग्रह चन्द्र, राहु, सूर्य व बुध अशुभ हो, तो दीवाना, दमा, तपेदिक, बुखार के समय स्त्री भोग या परस्त्री से संबंध करने पर रोग हो। गोमूत्र व जौ की खुराक सहायक होगी। चारा या सात अनाज (सतनाजा) का दान शुभ हो। पुरुष कन्यादान व स्त्री गोदान करें तो भी शुभ हो।

7. शुक्र पहले अशुभ हो, शनि भी अशुभ हो, तो साथी व संबंधियों से अच्छे संबंध न होंगे, स्वयं एय्याश, स्त्री सुन्दर व प्रेम व माया मोह से परिपूर्ण व आराम व विलासिता पसन्द करने वाली होगी।

8. 25वें वर्ष का विवाह, धन और स्त्री के लिए बुरा हो, सूर्य अशुभ हो, तो जिन्न-भूतादि तंग करें व आध्यात्मिक हानि हो। स्त्री से प्रेम व आँख-मिचौली अधिक होती है।

उपाय-

1. दूसरों की सलाह अवश्य लें।
2. गुड़ न खाएँ।
3. दही से स्नान करें।

दूसरे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय-

शुक्र दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. दूजों के साथ की गई बुराई अपने लिए हानिकारक होगी। आजीविका, धन, सम्पत्ति व सन्तान में 60 वर्ष तक वृद्धि हो। दीर्घायु व शत्रु दबे रहें। स्त्री उत्तम, पर सन्तान उत्पन्न करने के योग्य न हो। चाल चलन सुधारने पर शुभ फ़ल मिलेंगे और बाधाएँ दूर होंगी।

2. शुक्र दूसरे हो और शनि कुण्डली में कहीं भी हो, वह शुक्र के लिए 8वें भाव का शुभ फल देगा, अब चाहे शनि जहाँ हो वहाँ का फल अशुभ ही क्यों न हो। गृहस्थ सुख ठीक हो।

3. गुरु, केतु, शनि और बुध का शुभ फल होगा। घर राजा सदृश और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो। घर का अगला भाग तंग और पिछला भाग खुला हो अर्थात् गाय के मुख की तरह हो, भाई व लड़के का भाग्य और दूजों से संबंध गुरु की स्थिति पर निर्भर करेगा।

4. शुक्र दूसरे व गुरु छठे या बारहवें हो, तो भाईयों की उन्नति होगी व सांसारिक सहायता भी प्राप्त हो।

5. शुक्र दूसरे व गुरु भी दूसरे हो, तो प्रेम करने में प्रवीण और इसमें सफल भी होगा।

6. शुक्र दूसरे व शनि दो व नौवें हो, तो शुक्र का शुभफल दुगुना हो। पशु पालने व कच्ची मिट्टी के कार्यों से आजीविका के साधन व सन्तान में वृद्धि हो। आजीविका प्रारंभ करने के दिन से साठ वर्ष तक धन के लिए शुभ हो।

शुक्र दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. स्त्री की कुण्डली में दूसरे अशुभ शुक्र है तो वह लड़का न उत्पन्न कर सके। पुरुष की कुण्डली में दूसरे शुक्र हो, तो उसकी स्त्री बांझ होगी अर्थात् सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता नहीं होगी।

2. शुक्र दूसरे अशुभ हो और नौ व बारहवाँ भाव भी अशुभ हो, तो धन चाहे जितना हो स्त्री से दु:खी हो।

3. शुक्र दूसरे अशुभ हो और साथ में पापी ग्रह हो, तो दूजे का लड़का बिना गोद लिए अपना लड़का बन बैठें।

4. शुक्र दूसरे अशुभ और आठवाँ भाव रिक्त हो, तो स्त्री बांझ, धन घटे व स्त्री-पुरुष सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ, सलीके से रहने वाले व एय्याश होंगे।

5. दूसरे अशुभ शुक्र एवं आठ, नौ या दसवें गुरु हो, तो विवाह व संतान सुख में गड़बड़ हो। स्त्री धन अर्जित करने वाली हो, पर कन्या रत्न उत्पन्न करे और चाल-चलन खराब हो, तो पारिवारिक सुख न मिले।

6. अशुभ शुक्र दूसरे व पाँच, दो, नौ, बारहवें राहु केतु हों, तो बाजारू स्त्री या वेश्या बर्बादी का बहाना होगी और परस्त्री गमन में सर्वप्रकार से अशुभ ही हो।

उपाय–

1. मंगल की वस्तुएँ प्रयोग करें, सहायक होगी। ये वस्तुएँ दवा रूप में प्रयोग करें तभी सन्तान सुख संभव हो सकेगा।

2. दो किलो आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलाएँ।

3. दो सौ ग्राम गाय का पीला घी मन्दिर में दें।

तीसरे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. स्त्री आकर्षित हो जाए। अनेक स्त्रियों से सम्पर्क बने। परस्त्री के आकर्षण में फँसने के कारण अपनी स्त्री से दबकर रहे। परस्त्री और पुरुषों से सहायता मिले। अपनी स्त्री साहसी व क्रोधी हो।

2. शुक्र तीसरे शुभ और केतु भी शुभ हो, तो स्त्री का घर में मान हो और वह पतिव्रता हो। उसी के रहने पर घर पर कभी चोरी न हो।

3. शुक्र तीसरे व शनि नौवें हो, तो माता-पिता का सुख दीर्घायु तक हो।

4. शुक्र तीसरे व मंगल या मित्र ग्रह (बुध, शनि या केतु) दूसरे व सातवें हों, तो जीवनयापन आसानी से हो। 20वें वर्ष में तीर्थयात्रा हो, तो शुभ फल हो और माता-पिता का सुख दीर्घायु तक हो।

5. शुक्र तीसरे होने से स्वयं निर्मित भवन नहीं होंगे और यदि होंगे तो उजड़ जाएँगे। जातक को सभी पसंद करते हैं।

6. शुक्र तीसरे, आठवाँ भाव व चन्द्र भी शुभ हो, तो हाथ से दी हुई मिट्टी भी शुभ हो। गुरु व सूर्य का भी शुभ फल हो। भाव आठ के अशुभ ग्रह का भी शुभ फल दें।

शुक्र तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र तीसरे अशुभ व ग्यारहवें बुध हो, तो 34 वर्ष तक चाहे जितने साधन सम्पन्न व धनपति हों, सुख की नींद भाग्य में न होगी। धन दिन-प्रतिदिन घटता जाएगा।

2. शुक्र व मंगल का संबंध तीसरे भाव में हो, तो बिना परिश्रम के भोजन नहीं पा सकेगा।

3. शुक्र तीसरे अशुभ हो व नौवें भाव में गुरु हो, तो अपना व कुटुम्ब का स्वास्थय निर्बल हो, दु:खी व परेशानियों से ग्रस्त हो।

4. शुक्र तीसरे अशुभ हो और बुध व मंगल भी अशुभ हो, तो परिवार वालों विशेषकर लड़की, स्त्री आदि के द्वारा धन हानि हो।

उपाय–

1. स्त्री का सम्मान करें। कभी भी उसे अपमानित न करें।
2. परस्त्री गमन से बचें।

चौथे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. धनी द्विभार्या योग, स्त्री व सन्तान दोनों को कष्ट हो, दो पत्नियों के होते हुए भी कामाग्नि शान्त न हो। यदि पहली स्त्री से दो बार विवाह करे, तो दूसरी पत्नी न हो। संतान जल्दी हो पर स्त्री का गर्भाशय नष्ट हो जाए।

2. शुक्र चौथे हो और दो व सातवाँ भाव रिक्त हो तथा शुक्र किसी ग्रह का साथी न हो, तो एक साथ दो स्त्रियाँ जीवित हो, एक बड़ी आयु की एवं दूसरी आराम पसंद और हरफनमौला हो। सन्तान की कमी हो।

शुक्र चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र चौथे व गुरु पहले हो, तो बहू व सास का झगड़ा हो।
2. शुक्र चौथे व शनि अशुभ हो, तो सन्तान की कमी हो व प्रेम बर्बादी का कारण बने।
3. शुक्र चौथे के साथ शनि का संबंध हो, तो निर्धनता व आर्थिक तंगी होते हुए ईश्वर से सहायता मिले।
4. शुक्र व शनि का चौथे भाव में साथ हो, तो नशा बर्बादी का कारण बने। गुरु-केतु भी निकम्मे हों।
5. शुक्र चौथे, शनि-बुध एक साथ हो, तो स्त्री स्वेच्छाचारी हो।

उपाय–

1. चन्द्र का उपाय या गुरु की वस्तुएँ कुएँ में डालना, सन्तान के लिए सहायक होगा।
2. घर में कुआँ न खुदवाएँ।
3. गुरु का उपाय करें।
4. नशा न करें।

पाँचवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र पाँचवे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. बच्चों से परिपूर्ण घर-परिवार, विद्वान्, शत्रुनाशक, पुरुष ग्रह साथ हो, तो धन बढ़े, देश व परिवार को चाहने वाला, मित्र ग्रह बुध, शनि व केतु स्थापित हों, तो धर्मात्मा और कुल को तारने वाली स्त्री होगी।

2. सूर्य पहले मंगल, तीसरे व शुक्र पाँचवें हो, तो सर्वप्रकार से उन्नति हो।

शुक्र पाँचवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र अशुभ पाँचवें हो तथा चन्द्र का अशुभ प्रभाव भी पड़े तो चन्द्र शुक्र रूपी पतंग की डोर बन जाए। सन्तान पिता के काम न आए, प्रेम विवाह व दीवाना स्वभाव पतंग जैसा भाग्य बनाए।

2. पाँचवे अशुभ शुक्र की किसी ग्रह पर दृष्टि न पड़े, तो जातक दोहरी जिन्दगी जिए अर्थात् मुख में राम और बगल में छुरी जैसा व्यवहार हो। चोरी गई वस्तु न मिले यदि वह शुक्र से संबंधित हो।

3. शुक्र व शनि का पाँचवे संबंध बने, तो चाल-चलन खराब हो। चाल-चलन खराब होने पर भाग्य भी कमजोर हो। सन्तान पर कुप्रभाव नहीं होगा।

उपाय–

1. गाय और माता की सेवा करें। हृदय में अपवित्रता न रखें। ऐसा करने पर धन-सम्पत्ति की वृद्धि हो।

2. गुप्तांग दूध-दही से धोते रहने से अशुभ शुक्र से बचाव होगा। गुप्तांग का स्थान साफ रखना आवश्यक हो।

3. चन्द्र की वस्तुएँ, दूध व चाँदी सहायता करेगी।

छठे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र छठे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक की सांसारिक स्थिति उत्तम होगी। कार्य पूर्ण किए बिना न छोड़े।

2. शुक्र छठे व मंगल का साथ हो, तो उत्तम जीवन होगा परन्तु राहु-केतु की स्थिति भी ठीक होनी चाहिए।

3. शुक्र छठे हो व सूर्य या गुरु या दोनों छठे या दूसरे भाव में साथ हो, तो जातक धनी, भाई-बन्धु व गृहस्थी में उन्नति होगी, परन्तु सन्तान नालायक होगी।

4. शुक्र छठे व सातवें उसके शत्रु ग्रह स्थित हों , तो लड़ाई-झगड़ा रहे।

5. शुक्र छठे होने पर विवाह ऐसे घर में करे, जो एकलौता लड़का या लड़की न हो।

शुक्र छठे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र छठे, केतु साथ में व गुरु बारहवें हो, तो सभी ग्रहों का अशुभ फल मिले।

2. शुक्र छठे व राहु दूसरे भाव में हो, तो पहली स्त्री मर जाए व राहु की आयु तक शत्रुओं से कष्ट रहे।

3. शुक्र छठे व पाँचवें बुध अशुभ हो, तो स्त्री का मान होने पर धन बढ़े और अपमान होने पर धन गलत तरीकों से आए।

4. शुक्र छठे सूर्य के साथ हो और दूसरा भाव रिक्त हो, तो सन्तान सुख ठीक नहीं, पिता बचपन में चल बसे, स्त्री का फल 28वें वर्ष के बाद उत्तम हो।

5. शनि अशुभ हो और शुक्र छठे हो, तो धन दिन-प्रतिदिन घटता जाए।

6. शुक्र छठे और बुध आठवें हो, तो शुक्र का अशुभ फल मिले व लड़का न हो।

7. शुक्र छठे केतु के साथ हो, तो स्त्री, बांझ, मर्द नपुंसक, सन्तान सुख न हो। यदि सन्तान सुख हो, तो लड़कियाँ अधिक हों। बुद्धि कम हो, पर आजीविका में कमी न हो। परस्त्री बर्बादी का कारण बने। गुप्तांग में रोग हो।

8. शुक्र अशुभ हो, तो लड़का होने के बाद दूसरी सन्तान 12 वर्ष बाद हो।

उपाय–

1. चाँदी की ठोस गोली पास में रखें।

2. पत्नी नंगे पैर जमीन पर न चले। जुराब या चप्पल पहने रहे।

3. स्त्री बालों में सोने का हेयर क्लिप लगाकर रखे तो धनलाभ हो।

सातवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय

शुक्र सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. चन्द्र चौथे और शुक्र सातवें हो, तो कामुक नहीं होगा। शुक्र सातवें और चन्द्र पहले हो, तो सास बहू में माँ-बेटी जैसा प्यार हो।

2. शुक्र सातवें और बुध 2,4,6ठे हो, तो विवाह के दिन से 37 वर्ष तक शुक्र व बुध दोनों का उत्तम फल हो।

शुक्र सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. पहले चन्द्र और सातवें शुक्र अशुभ हो, तो भाग्य खराब और शुक्र का अशुभ फल मिले।

2. परस्त्री शमन का शौक, पैतृक सम्पत्ति नष्ट कर दे।

3. सातवें शुक्र गुरु के साथ हो, तो व्यापार और सांसारिक लेन-देन के साथ-साथ संतान के लिए भी अशुभ हो।

4. शुक्र सातवें अशुभ होने पर स्त्री पर अधिक खर्च हो, एय्याशी से धन-सम्पत्ति नष्ट हो, आयु 80-90 वर्ष, ससुराल वालों से व्यापारिक भागीदारी हानिकारक हो। 4,16,28,40,52,60,76,88 वर्ष में चोरी, धनहानि हो।

उपाय-

1. गन्दे नाले में 43 दिन तक नीला फूल डालें।

2. लाल गाय की सेवा करें।

3. काँसे के बर्तन का दान शुक्रवार को मन्दिर में दें।

4. माता-पिता का आशीर्वाद लें।

आठवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय-

शुक्र आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. स्त्री सख्त स्वभाव की होगी, जो कहे वो पत्थर की लकीर होगा। उसकी कही अच्छी-बुरी बात स्वीकार करनी होगी। शत्रु को झुकाने के लिए दान कभी न लें और मन्दिर में सिर झुकाएँ। पुरुष की कोई न सुने, तो वह बोलकर थककर निराश बैठ जाए। आठवें शुक्र का फल शुभ न होकर अशुभ ही होता है।

शुक्र आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. शुक्र आठवें और दूसरा भाव रिक्त हो, तो लडाई-झगड़े में सहायता दे परन्तु गृहस्थी में क्लेश हो। बुजुर्गों की छत्रछाया शंकित हो अर्थात् उन पर मौत का साया मंडराए। स्त्री का स्वास्थय ठीक न हो, तो ज्वार का दान करें या जमीन में दबाएँ। 25वें वर्ष से पूर्व विवाह न करें वरना स्त्री मर जाएगी।

2. किसी की जमानत न दें वरना भाग्य निर्बल हो जाएगा।

3. जातक कटुभाषी, ऋणी, रोगग्रस्त और स्त्री कर्कशा हो।

4. शुक्र आठवें अशुभ और मंगल अशुभ हो, तो जातक बुरे विचारों वाला, स्त्रियों के पीछे-पीछे भटकता हुआ फिरे और गुप्त रोग से ग्रस्त हो।

5. स्त्री कष्ट में हो, तो चन्द्र-केतु की वस्तुओं से सहायता लें।

उपाय–

1. ताँबे का सिक्का या नीला फूल गन्दे नाले में 43 दिन तक डालें।
2. किसी की सौगन्ध न लें या जमानत न करें।
3. मन्दिर में सिर झुकाएँ, शत्रु कमजोर होगा।
4. स्त्री रोगी हो, तो उसके भार तुल्य ज्वार मन्दिर में दान दें।

नौवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय

शुक्र नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. बड़े-बूढ़ों का धन बढ़े। सन्तान सुख अच्छा नहीं, धन कम, तीर्थ यात्रा शुभ, बुद्धिमान और भाग्यवान होगा। लखपति होते हुए भी परिश्रम करके रोटी खाने को मिले। परिश्रम के अनुरूप फल न मिले।

शुक्र नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र के साथ नौवें पापी या बुध ग्रह साथ में हो, तो 17 वर्ष की आयु से नशा और रोग तंग करें। दु:ख की काली बदली छायी रहे।

2. शुक्र नौवें, उसके शत्रु चौथे और सातवाँ भाव रिक्त हो, तो 4, 16, 28, 40, 52, 64, 76, 88, 100 वाँ वर्ष धन व अन्य प्रकार से व्यर्थ हो जाए।

3. शुक्र नौवें भाव में और चन्द्र सातवें अशुभ हो या चन्द्र किसी भी भाव में अशुभ हो, तो सन्तान और धन की दृष्टि से पारिवारिक सुख अल्प हो।

4. नौवें भाव में शुक्र हो व सातवाँ भाव रिक्त हो, तो रक्तविकार हो।

5. नौवें भाव में शुक्र गुरु के साथ हो या गुरु अशुभ हो, तो सन्तान सुख में बाधा आएँ और सांसारिक लेन-देन में अशुभ फल हो।

उपाय–

1. घर में चाँदी, शहद व घोड़ी स्थापित करें या चाँदी व शहद को नींव में दबाएँ।
2. आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नीम के वृक्ष तले चाँदी के चौकोर टुकड़े दबाएँ।
3. काली या लाल गाय की सेवा करें।

दसवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय

शुक्र दसवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. पर स्त्री से संबंध बने। जातक, लालची, स्त्री व धन को अपनी दृष्टि में रखें। स्त्री के स्वप्न देखे। जातक दस्तकार भी हो। शनि शुभ हो या नौवें या ग्यारहवें शत्रु ग्रह के साथ न हो, तो स्त्री का स्वास्थ्य उत्तम, स्त्री-पुरुष दोनों धार्मिक हो, बुध का शुभ फल मिले व दुर्घटना भी न हो और हो, तो चोट न लगे।

2. शुक्र दसवें हो और चौथा भाव रिक्त हो, तो स्त्री कामुक व पूर्ण सुख दे।

3. शुक्र दसवें व शनि पहले हो या साथ में हो, तो शनि का शुभ फल मिले। शुक्र दसवें व चन्द्र 2,4,7वें हो, तो वाहन सुख व अन्य सुख मिले। शुक्र दसवें और 1,4,5वें भाव में शत्रु या मित्र ग्रह स्थित हो, तो युवावस्था व वृद्धावस्था सुख से बीते।

शुक्र दसवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुक्र दसवें अशुभ हो, तो स्त्री कामुक हो, सन्तान सुख में बाधाएँ या सन्तान न हो। परस्त्री संपर्क से भाई व स्त्री दु:खी हो, सन्तान सुख न रहे। शनि अशुभ हो, तो अत्यन्त दु:ख मिले और स्त्री बुद्धिहीन व दु:खी हो।

2. शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, राहु के साथ अशुभ शुक्र दसवें हो, तो 12 वर्ष तक अशुभ समय बीते।

3. शनि पाँचवे और शुक्र दसवें अशुभ हो, तो स्त्री को नेत्र रोग हो।

उपाय–

1. शनि का उपाय करने से सहायता हो।

2. अति कामुकता से बचें। संयम रखें। गुप्तांग दही से साफ करे।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. सुन्दर, धनी, बचपन का मोह रहे, नपुंसक व गुप्त रोग से युक्त, रहस्यमयी, स्वभाव बदलता रहे बुध या चन्द्र स्थापित हो, तो निर्धन न होगा व 12 वर्ष तक बहुत धन आए।

2. राहु बारहवें व शुक्र दसवें हो, तो लड़कियों के साथ धन बहुत आए।

शुक्र ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. कार्य छिपाकर करें, देखने में भोला-भाला पर वास्तव में चतुर, क्षण-क्षण बदलने वाला स्वभाव, मृत्यु सिर कटने से हो, स्त्री घर का कोष संभाले, तो अशुभ फल हो।

2. शुक्र अशुभ हो व बुध का साथ हो या तीसरे बुध हो, तो लड़कियाँ घर का धन बर्बाद करेगी, धन कम न हो, पर कुटुम्ब में पुरुषों की संख्या घटे।

3. शुक्र ग्यारहवें और तीसरा भाव रिक्त हो, तो जातक नपुंसक, हस्त मैथुन या वीर्यपात करे, गुप्तरोग से ग्रसित हो। लड़कियाँ अधिक हों।

4. विवाह के पूर्व भाग्योदय न हो।

5. पाँचवा भाव रिक्त हो और ग्यारहवें अशुभ शुक्र हो, तो शुक्र की महादशा अशुभ हो। पुत्र 20 वर्ष बाद ही उत्पन्न हो।

6. शुक्र 11वें व बुध तीसरे हो, तो स्त्री पति के घर को बर्बाद कर दें।

उपाय–

1. बुध का उपाय करें।

2. शनि व चन्द्र की वस्तुएँ दवाई के साथ लेने पर गुप्त रोगों में लाभ हो।

3. तेल का दान करें।

4. स्त्री को घर का कोष न सौंपें।

5. रुई व दही मन्दिर में दान करें।

बारहवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय–

शुक्र बारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. स्त्री पतिव्रता, दु:खी, विवाह के समय से भाग्योदय, राज्य लाभ, सर्वप्रकार से सुखी, आड़े वक्त स्त्री सहायता करे, स्त्री का अल्पतम 37 वर्ष का सुख हो। रात को आराम व धन का सुख हो।

2. गुरु, शनि सातवें हो व शुक्र बारहवें हो, तो स्त्री दु:खी व परिवार व संतान का सुख मिले।

3. बुध 2 या 6ठे भाव में हो, तो शुक्र बारहवें हो, तो जातक रोगी, कवि व भण्डारों का स्वामी होगा। स्त्री व पुरुष दीर्घायु होंगे।

शुक्र बारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. 2 व 7 वाँ भाव रिक्त हो, तो शुक्र को बारहवें अशुभ फल मिले। स्त्री सभी बाधाएँ झेले, स्वास्थ्य ठीक न रहे, किसी से सहायता न मिले।

2. शुक्र बारहवें व बुध अशुभ हो तो, स्त्री पुरुष ना मिले।

3. शुक्र बारहवें और राहु 2,7,6,12वें भाव में हो, तो 20 वर्ष तक गृहस्थी का सुख न मिले।

उपाय–

1. स्त्री को मान-सम्मान व प्यार दें।

2. राहु की वस्तुओं का लाभ व संबंध न रखें।

3. स्त्री के द्वारा या उसके नाम पर गौ दान करें।

पहले भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय–

शनि पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक दयालु हो, तो धनी होगा। शनि-शुक्र लग्न में एक साथ हो, तो आजीविका और धन-सम्पत्ति पर प्रभाव डालता है। शनि संबंधी कार्य (शराब, लोहा, सीमेण्ट, प्लास्टिक, चमड़ा, लकड़ी आदि) और वस्तुओं का उत्तम फल होगा। दूसरों की सेवा में संलग्न रहे।

शनि पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शरीर पर बाल अधिक हो, तो निर्धनता रहे, जन्म पर बड़ा उत्सव करें, तो राज्य से कुर्की का आदेश हो। मंगल चौथे हो, तो पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाए। बुध अशुभ हो, तो शिक्षा अधूरी रहे।

2. शनि पहले व सूर्य सातवें हो, तो राज्य भय या राज्य से हानि हो।

3. शनि पहले व राहु-केतु अशुभ या सातवें कोई ग्रह हो, तो तीन गुना अशुभ फल मिले।

4. भवन का द्वार पश्चिम में हो, तो शनि का अशुभ फल मिले। 36,42,45, 48 वें वर्ष तक रोग, निर्धनता, फकीर आदि सभी फल साथ-साथ मिलें। 30 से 39, 42, 48 या 40वें वर्ष तक अशुभ फल मिलें।

5. शनि पहले हो व मंगल अशुभ हो, तो जातक चोर, धोखेबाज, बेईमान, झगड़ालू, नेत्रहीन, आय अल्प व सन्तान का दुःख हो।

उपाय-

1. मद्य व माँस का सेवन न करे।

2. वीरान जगह पर भूमि के नीचे सुरमा दबाएँ।

3. वटवृक्ष (बरगद) के वृक्ष की जड़ में दूध चढ़ाकर गीली मिट्टी का तिलक लगाएँगे, तो विद्या में बाधा व रोग के दुःख से मुक्ति मिलेगी।

4. धन के लिए बन्दर पालें या उसकी सेवा करें।

5. तवा, चिमटा व अंगीठी का दान करें।

दूसरे भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय-

शनि दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. शनि दूसरे शुभ हो एवं चन्द्रमा भी शुभ हो, तो दीर्घायु, सुखी व पिता बर्बाद रहे।

2. शनि दूसरे शुभ एवं चौथे गुरु हो, तो बुद्धिमान, चिन्तक एवं बाल की तह तक पहुँचने की सामर्थ्य हो।

3. शनि दूसरे व केतु आठवें हो, तो बच्चों जैसा स्वभाव होगा। यदि केतु नौ हो व शनि दूसरे हो, तो शीघ्र समझने वाला होता है।

4. शनि दूसरे व मंगल आठवें हो, तो जातक धनी, शनि दूसरे व बुध आठवें हो, तो जातक बुद्धिमान और शनि दूसरे व गुरु दसवें हो, तो जातक पादरी, धार्मिक, कम खीर्चाला और सोच-समझकर खर्च करे।

5. शनि दूसरे व बुध 12वें हो, तो 34वें वर्ष तक जातक के लड़की हो और विवाह के बाद ससुराल चली जाए तो वहाँ के लिए अमृत कुण्ड बन जाए।

शनि दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. शरीर पर अधिक बाल हो, तो निर्धन, सगाई के दिन से ससुराल में राख उड़े।

2. शनि दूसरे व राहु आठवें हो, तो ससुराल में पुरुषों की कमी हो। यदि शनि दूसरे व राहु 12वें हो, तो ससुराल में धन की कमी हो।

3. शनि दूसरे व गुरु 11वें हो, तो अपयश होगा और अपनी प्रशंसा आप करें।

4. शनि दूसरे व गुरु 12वें हो, तो प्रसिद्ध जुआरी, वहमी और आय-व्यय बराबर हो।

5. शनि दूसरे व राहु 8वें हो, तो वहमी, राहु 7वें हो, तो वियोग हो, मंगल 9वें हो, तो निर्जीव विचार हों, गुरु 8वें हो, तो आधारहीन विचार हों, सूर्य, बुध, गुरु 8वें हो, तो उदास व वियोग मन भाए और सूर्य 8वें हो, तो मध्यम स्वभाव व अपयश का भागी हो।

उपाय-

1. साँप को दूध पिलाएँ।
2. शिवलिंग पर जल चढ़ाएँ।
3. काली या रंगी भैंस न पालें।
4. मस्तक पर कभी भी तेल न लगाएँ। दूध या दही का तिलक लगाएँ।

तीसरे भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय-

शनि तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. दीर्घायु, शनि की वस्तुएँ व संबंधियों का उत्तम फल हो, भवन बनेगा व धनी भी होंगे। जातक नेत्ररोग विशेषज्ञ होगा। शनि के साथ मंगल भी शुभ हो, तो जातक को दूजों की सहायता मिलेगी, जबकि वह इनका कार्य बिगाड़ेगा और स्वयं आराम भी पाएगा। केतु 10वें हो, तो धन सम्पत्ति में वृद्धि होगी।

शनि तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. शनि तीसरे व चन्द्र 10वें हो, तो चोरी, डकैती डालने पर भी धनहीन व घर का कुंआ ही मौत का कारक बनेगा।

2. भवन का मुख्य द्वार दक्षिण या पूर्व में हो, तो उसमें रहना शुभ नही होगा। यदि भवन में पत्थर गड़े हो, तो 43 दिन में मौत पर मौत हो।

3. शनि तीसरे व केतु 10वें हो, तो सन्तान को कष्ट हो।

उपाय-

1. केतु का उपाय करने पर धन सम्पत्ति बढ़े।
2. नेत्रों की औषधि मुफ्त बाँटने से दृष्टि दोष दूर हो।
3. मांस या शराब का सेवन न करने पर आयु बढ़े।

शनि चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. शनि चौथे शुभ हों तथा चन्द्र 2 या 3रें हो, तो जीवन उत्तम एवं माता-पिता का सुख हो।

2. जातक माता-पिता, स्त्री व निकटस्थों से प्रेम करने वाला, शनि का शुभ फल मिले, शनि के कार्य व संबंधी सहायक होंगे। जातक चिकित्सक होगा या कुटुम्ब में चिकित्सा संबंधी कार्य व चिकित्सक होंगे।

शनि चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. सीने पर बाल नहीं हों, तो जातक विश्वसनीय न हो, भवन बनाने पर माता व मामा को कष्ट हो। शनि निज आयु तक अशुभ करे। परस्त्री से अनधिकृत संबंध बनाने पर शनि का अशुभ फल मिले।

2. शनि चौथे व गुरु तीसरे हो, तो धोखे व लूटपाट द्वारा सम्पत्ति बढ़ा ले।

उपाय-

1. साँप को दूध पिलाएँ। कौओं को रोटी डालें। भैंस को पालें या रोटी डालें। मजदूर की सेवा करें।

2. कुएँ में दूध गिराएं।

3. परस्त्री गमन से बचें। विधवा स्त्री से संबंध बनायेंगे, तो कंगाल हो जायेंगे।

4. शराब बहते पानी में बहाएं।

5. रोग में शनि की वस्तुओं का प्रयोग करें।

6. साँप को न मारें। शराब न पीएं। रात्रि में भवन की नींव न रखें।

7. रात्रि में दूध न पिएं।

शनि पाँचवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. स्वाभिमानी, राहु भी शुभ हो, तो घर बनेगा, केतु शुभ हो, तो खोजी प्रवृत्ति के कारण उन्नति व संतान सुख मिलेगा। जातक द्वारा बनाया या खरीदा भवन संतान को कष्ट देगा, परन्तु सन्तान द्वारा बनाया या खरीदा भवन कभी अशुभ फल न देगा।

2. शनि पाँचवें और 11वाँ भाव रिक्त हो, तो शनि धार्मिक देवता सदृश होगा।

3. संतान सुख के लिए गुरु व मंगल की वस्तुएँ पैतृक भवन में स्थापित करें।

4. गुरु नौवें और शनि पाँचवें हो, तो 5,17,41,28,53,65,77,89,101,103 वे वर्ष में भाग्य का शुभ फल मिलेगा पर सन्तान सुख कम ही होगा।

शनि पाँचवे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

शनि पाँचवे हो और वर्ष कुण्डली में जब भी सूर्य, चन्द्र या मंगल 5वें आयेंगे स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।

उपाय–

संतान के जन्म लेने पर मीठा न बाँटे या मीठा बांटे तो उसमें नमक लगा दें।

शनि छठें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. शनि छठें व शुक्र बारहवें हो, तो शुक्र का शुभ फल मिले व स्त्री सुखी हो।

2. शनि छठें व राहु भी 3रे या 6ठें हो, तो 42वें वर्ष तक शनि का प्रभाव अशुभ होगा और बाद में शुभ होगा।

3. शनि छठें व केतु 10वें या शुभ हो, तो लड़का उत्पन्न हो यात्रा लाभदायक, पिता से योग्य, धन वृद्धि व दीर्घायु होगा।

शनि छठें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शनि की वस्तुएँ (चमड़े व लोहे की वस्तुएँ) घर पर लानी अशुभता का संकेत होगी। शनि जन्मकुण्डली में छठें हो और जिस वर्ष में वर्षकुण्डली में भी छठे भाव में आए, उसमें राज्यभय, दु:ख व अशुभ फल मिलेंगे। शराब व मांस का सेवन हानिकारक होगा। 28 से पूर्व विवाह करने पर 34 से 36 वर्ष में माता व सन्तान नष्ट हो जायेगी और कष्ट बढ़ें।

उपाय–

1. सरसों के तेल का भरा बर्तन पानी के भीतर जमीन के नीचे दबा दें। तेल में मुख अवश्य देख लें।

2. साँप की सेवा से सन्तान सुख मिलेगा।

3. नारियल या बादाम बहते पानी में बहाएँ।

4. काला कुत्ता पालें या उसकी सेवा करें या उसे रोटी दें।

शनि सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. शनि सातवें व बुध 11वें हो, तो जातक गांव का स्वामी होगा।

2. शनि सातवें हो और वर्षकुण्डली में जब भी पहले भाव में आए, तो अच्छा लाभ देता है।

3. शुभ शनि भवन बनाने का अवसर न दें, क्योंकि निर्मित भवन बहुत मिलेगें। मंगल भी शुभ हो, तो मासिक आय लाखों में हो।

शनि सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शनि सातवें अशुभ और बुध पहले हो, तो जातक की मृत्यु सर कटने से हो।

2. शनि सातवें अशुभ और चौथे सूर्य हो, तो जातक नपुंसक हो।

3. शनि सातवें और बुध व शत्रु ग्रह 3,7,10वें हो, तो पिता को धन हानि हो।

4. शनि सातवें और गुरु व शुक्र अशुभ हो, तो जातक भाग्यहीन हो।

उपाय–

1. शनि सुप्त हो, तो बांसुरी में खाण्ड भरकर एकान्त स्थल में दबाएँ।

2. पहला भाव खाली हो, तो शहद भरा बर्तन एकान्त में दबाएँ।

3. शराब न पीएँ व मांस न खाएं।

4. पर स्त्री गमन से सन्तान को कष्ट होगा, परस्त्री गमन से बचें।

आठवें भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय

शुभ स्थिति में हो, तो –(आठवें भाव में)

आठवें अकेला बैठा शनि कदापि अशुभ फल नहीं करेगा, क्योंकि यह शनि का अपना घर है। जातक दीर्घायु, आत्म प्रशंसक, सबके भले में अपना भला देखने वाला होगा। बुध, राहु-केतु के अनुरूप ही शनि की स्थिति होगी।

अशुभ स्थिति में (आठवें भाव में)

1. शरीर पर बाल अधिक हो, तो आजीवन गुलामी करे, जातक डरपोक और राजभय से भयभीत हो। राहु नीच हो, तो दुर्घटना व भाई को शत्रु बना देता है। शत्रु ग्रह शनि के साथी हों, तो अशुभ फल हो। बुढ़ापे में नजर का धोका होगा। द्वार पर मृत्यु दस्तक देती रहेगी।

2. शनि आठवें अशुभ और 12वाँ भाव रिक्त हो, तो आर्थिक तंगी व दु:खी हो। वृद्धावस्था में दृष्टिदोष रहे।

उपाय–

1. मिट्टी पर बैठकर स्नान न करें। पांव का नंगा तलवा भूमि पर स्नान करते समय नहीं लगना चाहिए। पांव के तले लकड़ी या पत्थर होना चाहिए।

2. चाँदी धारण करें। चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।

3. शराब का सेवन न करें। मांस-मछली न खाएं।

शनि नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. भाई व मित्रों की सहायता से धनी बने। तीन मकान मरने से पूर्व अवश्य हों। ठेकेदार व यात्रा सम्बन्धी कार्य में निपुण हो, बड़ा कुटुम्ब और धनी होगा। माता-पिता का सुख दीर्घायु तक होगा। परोपकारी होने पर शनि का शुभ फल आजीवन मिलेगा।

2. शनि नौवें और बुध 6वे या 7वें हो, तो ससुराल धनवान होगी।

3. शनि नौवें और गुरु 12वें हो, तो जातक धनी होगा, पर धन की परवाह न करे।

4. शनि नौवें और शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र मंगल तीसरे हो, तो अशुभ फल न होगा। घर के अन्दर अन्धेरी कोठरी में प्रकाश कर दिया जाए या दीवार तोड़ दी जाए या दक्षिण में रोशनदान हो, तो तीन वर्ष में सब कुछ नष्ट हो जाए।

शनि नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. स्त्री या पत्नी गर्भ से हो, तो 36-39वें वर्ष में घर बनाने से पिता की मृत्यु हो जाएँ।

2. सन्तान विलम्ब से हो पर जीवित रहे। शनि नौवें और मंगल चौथे हो, तो जातक भाग्यहीन हो।

3. शनि नौवें और दूसरा भाव रिक्त हो, तो धन सम्पत्ति होते हुए भी जातक दु:खी हो।

उपाय–

1. गुरु का उपाय करें।

2. घर की छत पर लकड़ी, ईंधन और चौखट व्यर्थ में न रखें।

शनि दसवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. 39 से 48 वर्ष तक पिता का साथ होगा, प्रत्येक सातवें वर्ष शनि सम्मान, धनादि दे। शनि तथा गुरु का शुभ फल मिलेगा। शनि दसवें अकेला हो, तो प्रत्येक तीसरा वर्ष शुभ होगा। दूजों का आदर करने से अपना भी सम्मान हो। जातक महत्वाकांक्षी, राज्य से लाभ प्राप्त करे, मकान के लिए धन संग्रह करें। शनि 10वें, गुरू चौथे व चन्द्र पहले हो, तो शुभ फल हो।

2. वर्ष कुण्डली में बुध 7वें जिस वर्ष में आएँ ससुराल में धनवृद्धि हो।

3. शनि दसवें व उसके मित्र ग्रह पहले भाव में हो, तो दो गुना अच्छा फल मिले।

शनि दसवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. स्त्री को कष्ट, मकान बन जाने पर आर्थिक तंगी या धन हानि हो। प्रारम्भ में धर्मात्मा हो, तो अंत समय निकम्मा हो। समय खराब हो, तो दाढ़ी-मूँछ के बाल कम हो जाएँ। पराक्रम में कमी आए और निज धन से मकान न बने। शनि के शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल चौथे भाव में हो, तो शनि का अशुभ फल हो।

उपाय–

1. गुरु का उपाय करें।

2. दस नेत्रहीनों को भोजन कराएँ।

3. गणेश उपासना करें।

शनि ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

धोखेबाजी से धन कमाकर धनी बने, केतु शुभ हो, तो शनि का शुभ फल मिले। वर्ष कुण्डली में शनि पहले भाव में आए तो शुभ फल होगा। धोखेबाजी से कमाया धन कफन का कार्य करेगा। 48 वाँ वर्ष शुभाशुभ फल के लिए निर्णायक होगा। अपना घर न बने यदि बनने का अवसर आए तो 45 से 55 के मध्य बनाएँ। यदि घर पहले बनायेंगे, तो लम्बी बीमारी हो जाय।

शनि ग्यारहवें भाव में हो (अशुभ स्थिति में)

1. शिक्षा अधूरी रहे, क्रोधी, अल्पायु, परिवार को मझधार में छोड़ जाए, बुध तीसरे हो, तो शनि शुभ फल कभी न दे। राहु शुभ, तो ससुराल अच्छी, केतु शुभ हो, तो पुत्र भाग्यशाली होगा।

2. शनि 11वें हो और मुख्य द्वार दक्षिण हो, तो अशुभ फल प्राप्त हो। जातक हत्यारा व क्रोधी होगा।

उपाय–

1. 43 दिनों तक तेल या शराब प्रात: काल में सूर्योदय समय धरती पर गिरायें।

2. किसी भी कार्य से बाहर जाएं, तो पानी से भरा घड़ा सम्मुख रखें या दर्शन करके जाएं।

3. गुरु का उपाय करें।

शनि बारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक बहादुर हो और अच्छा जीवन निर्वाह करे। सिर के बाल उड़ जाएं, तो धनी और सुखी होगा। राहु, केतु व बुध का अशुभ फल न होगा। शनि शेष नाग बनकर रक्षक जैसा व्यवहार करेगा। सर्प हाथ में पकड़ ले तो वह काटे भी नहीं। व्यापार व परिवार उत्तम श्रेणी के हों। शनि बारहवें राहु के साथ हो, तो इच्छाधारी सर्प की भांति सहायक हो।

शनि बारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक झूठा, शरारती, स्त्रियों का रसिया होता है। चटोरा होना बर्बादी की निशानी होगी। नेत्र रोग हो जाने पर शनि अधिक अशुभ फल करें।

2. शनि बारहवें और सूर्य छठे भाव में हो, तो स्त्री पर स्त्री मरे। राज्य बाधा से मानसिक तनाव बढ़े।

उपाय–

1. किसी से धोखा न करें।

2. 12 बादाम काले कपड़े में बांधकर लोहे के पात्र में बंद करके आजीवन रख छोड़े। उसे कभी खोलकर न देखें।

राहु का फल एवं उपाय

राहु पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. खर्च अधिक होने पर भी शुभ, धनी, शासक, सूर्य स्थित भाव पर ग्रहण अर्थात् अंधेरा हो जिसका फल इस प्रकार हो-पहले सूर्य हो, तो राज्य भय जो आधारहीन हो; दूसरे हो, तो धर्मस्थल व ससुराल में अपमान हो। तीसरे हो, तो भाई बन्धु पर कष्ट आएं; चौथे हो, तो ननिहाल और स्वयं के कार्यों में बाधाएँ आएं। पाँचवें हो, तो राहु सूर्य एक दूसरे की सहायता करें। छठे हो, तो लड़के-लड़कियों के सम्बन्धियों से अपयश मिले; सातवें हो, तो पारिवारिक व अदालती कार्यों में बाधाएँ आएँ। आठवें हो, तो बेबात खर्चे हों, नौवें हो तो पूर्वजों के धर्मस्थलों को अपवित्र करेगा। दसवें हो तो सांसारिक जीवन सामान्य होगा। ग्यारहवें हो तो न्यायालय को अवमानना करेगा और बारहवें हो तो रात्रि में सोते समय कष्ट होगा।

2. राहु पहले व मंगल बारहवें हो, तो राहु न भला न बुरा प्रभाव देगा।

3. राहु पहले व सातवें शुक्र हो, तो स्वयं धनी होगा पर स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहेगा।

राहु पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. राहु पहले अशुभ हो, तो विवाहोपरान्त ससुराल से बिजली का सामान लेना अशुभ होगा। नीले, काले कपड़े भी न लें। अशुभ फल 42वें वर्ष तक हो, 11, 21, 42वें वर्ष में पिता के लिए कष्टकारी हो, स्थानान्तरण सदैव उन्नति के साथ होगा, बेबात बाधाएँ आएगी। आवारा घूमे और बड़बड़ाता रहे।

उपाय–

1. काले नीले वस्त्र न पहने।
2. गले में चाँदी धारण करें।
3. सूर्य सम्बन्धी वस्तुएँ दान करें।

राहु दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. यदि गुरु शुभ हो, तो धन, मान व शुभ फल मिले। राजा या राजा सदृश जीवन होगा। दीर्घायु व उत्तम जीवन हो। अशुभ स्थिति में भी राहु सहायता दे।

2. वर्ष कुण्डली में जब शनि पहले व गुरु शुभ हो, तो धन मिले व गृहस्थी आराम से कटे।

राहु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. मन्दिर में भी पाप करे। चोरी करे या कराए। 36 से 42 वर्ष तक अशुभ फल मिले। 10, 21, व 42वें वर्ष में धन हानि हो।

2. राहु दूसरे व शनि अशुभ हो, तो दुर्भाग्यशाली हो।

उपाय–

1. गुरु की वस्तुएँ पास रखें या धारण करें।
2. माता से मधुर सम्बन्ध रखें।

राहु तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. धन सम्पत्ति से युक्त, चौकन्ना रक्षक, निडर, बेधड़क होकर सहायता करने वाला मित्र होता है। स्वप्न सच्चे हो, भविष्य का पूर्वाभास हो, शत्रुपर हावी, ऋण न रहे, दीर्घायु, उन्नतिशील और सम्पत्ति छोड़ कर मरे।

2. मंगल साथ में हो, तो राजा सदृश शाही सवारी से युक्त हो।

3. राहु के शत्रु, ग्रह सूर्य, मंगल, शुक्र साथ में होने पर शुभ फल ही करें।

राहु तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. भाई व सम्बन्धी धन नष्ट करें, धन उधार में बँट जाएँ और वापिस न मिले। तोतला व नास्तिक हो।

2. राहु तीसरे अशुभ हो और साथ में सूर्य व बुध हो, तो22 वे या 32वें वर्ष में बहिन विधवा हो जाय।

3. राहु तीसरे मंगल के साथ हो और 12वें कोई भी ग्रह हो, तो 34 वर्ष तक बुध व केतु का अशुभ फल मिले।

उपाय–

1. चन्द्र का उपाय करें और हाथी दाँत की वस्तु घर पर न लाएं।

राहु चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक, धनवान, बुद्धिमान, योग्य, खर्च शुभ कार्यों में हो, शुभ फल होगा, जब तक अकेला या चन्द्र के साथ होगा तीर्थ यात्रा करना शुभ रहेगा।

2. राहु चौथे, चन्द्र पहले व बुध दसवें हो, तो राजकोष से धन कमाकर पैतृक घर भर दें।

3. राहु चौथे व शुक्र शुभ हो, तो विवाह के बाद ससुराल धनी हो जाए और जातक को भी उसमें धन मिले।

4. राहु चौथे हो और चन्द्र उच्च का हो, तो जातक धनवान हो तथा बुध जहाँ स्थित हो उससे संबंधित संबंधी या कार्य से लाभ हो और स्वयं भी उनकी सहायता करे।

राहु चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. चन्द्र अशुभ हो तथा राहु चौथे हो, तो आर्थिक तंगी हो।

2. 6, 16, 24वें वर्ष में ननिहाल में अशुभ फल हो।

3. मकान थोड़ा बनाकर छोड़ने या मरम्मत पूरी न कराने पर धन हानि हो। माता को कष्ट हो।

उपाय–

1. चाँदी धारण करें।

2. मकान पूरा बनाएँ। अधूरा कार्य न छोड़े।

राहु पाँचवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. धनवान, चतुर, स्वास्थ्य ठीक, राज्य लाभ, माता जीवित हो, तो सन्तान व धन से उत्तम हो। परिवार व धन से सुखी होगा।

2. चन्द्र राहु की युति पांचवें हो, तो सन्तान सम्बन्धी बाधाएँ हों।

राहु पाँचवे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. पहली संतान गर्भ में नष्ट, विद्या प्राप्ति में बाधाएँ, 24 या 42 वें वर्ष में मानसिक, अस्थिरता या मृत्यु, सन्तान उत्पन्न होने के 12 वर्ष तक स्त्री स्वास्थ्य खराब रहे। यदि राहु शुभ राशि में हो, तो जातक शरारती हो व शनि का अशुभ फल मिले। पुत्र चार होंगे पर मूर्ख होंगे।

2. गुरु पाँचवें राहु के साथ हो, तो पिता या सन्तान कष्ट में हो।

उपाय–

1. शराब, मांस पर परस्त्री गमन से दूर रहें।
2. अपनी स्त्री के साथ पुन: फेरे लेने पर राहु की अशुभता दूर हो जाए।
3. घर के प्रवेश द्वार की दहलीज के नीचे चाँदी का पत्तरा दबाएँ।

राहु छठें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

कपड़ों व व्यक्तिगत कार्यों हेतु धन खर्च होगा। बौद्धिक शक्ति बढ़े। उन्नति मिले पर स्थानान्तरण न हो। शनि का साथ होने पर शक्तिशाली व आत्म प्रशंसक हो। शनि दूसरे व राहु छठें हो, तो शत्रु पर विजय मिले। अकेला छठें हो, तो फाँसी से भी बच जाए और रक्षक व सहायक होगा।

राहु छठें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. ननिहाल में किसी की शीघ्र मृत्यु हो जाए, कुसंगति हो अर्थात्, बदमाशों से मित्रता हो।

2. राहु छठें व मंगल 12वें हो, तो बड़े भाई या बहिन के लड़ने पर घर पर चूल्हा तक न जले अर्थात् आर्थिक तंगी हो जाए।

3. राहु छठें, बुध ग्यारहवें और सूर्य दूसरे स्थान हो, तो अपयश, बेईमानी अशुभ कष्ट मिले। अधार्मिक हो जाए।

उपाय–

1. काला कुत्ता पालें। भाई बहिन का अहित न करें।

राहु सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. जातक धनी होगा, पर स्त्री व परिवार का सुख अल्प होगा। राज्य में उच्च स्थिति में होगा। धन के कारण हाथ न फैलाना पड़े। शत्रु हन्ता, बुध व शनि की भरपूर सहायता मिले।

2. बुध, शुक्र 2, 11वें हो तथा राहु सातवें हो, तो आर्थिक स्थिति अच्छी हो।

राहु सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

21 वर्ष पूर्व विवाह करने पर तलाक होगा या स्त्री मर जाए। कष्ट का मारा हो, जहाँ जाएँ वहाँ ही परेशानी आ जाए। यदि बिजली, पुलिस या जेल का कार्य हो, तो अल्पायु हो। स्वास्थ्य ठीक न रहे।

1. राहु सातवें हो तथा बुध, शनि, केतु 11वें भाव में हो, तो उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएँ हानि करें।

2. राहु सातवें व बुध, शुक्र या केतु 11वें हो, तो क्रमश: बहिन, बुआ या पत्नी जातक को बर्बाद कर दे।

उपाय–

1. चार नारियल बहते पानी में छोड़े। विवाह 21 वर्ष से पूर्व न करें। यदि करे तो चांदी के बर्तन में चांदी का टुकड़ा तथा गंगाजल डालकर पति–पत्नी अपने पास रखें।

राहु आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. शुभ मंगल बारहवें हो, तो राहु का शुभ फल मिलेगा। राहु आठवें अशुभ फल देगा।

2. राहु आठवें और मंगल शुभ पहले या आठवें या शनि शुभ आठवें हो, तो शुभ भाग्य जाग जाए और रिक्त कोष धन से भर जाए।

राहु आठवें अशुभस्थिति में हो, तो–

1. अचानक दुर्घटना, नास्तिक, माता को कष्ट, धन हानि, अपयश अपमान, किसी की सहायता न मिले, पेट दर्द, बवासीर, परिवार वालों से न निभे न पटे, कार्य बदलता रहे। जीवन में कई उतार–चढ़ाव देखने को मिलें।

2. मंगल–बुध अशुभ हों व राहु आठवें हो, तो 21वें विवाह, 22वें में विद्युत विभाग में नौकरी, बेईमानी हानि कारक हो।

उपाय–

1. 4 नारियल बहते पानी में बहाएँ।

2. बेईमानी कदापि न करें। जन्ममास से आठवाँ मास हानिकारक हो।

राहु नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो

1. पागलों का डाक्टर हो, धर्म कर्म से हीन, गुरु पाँचवें या 11वें हो, तो प्रभावहीन, परिश्रम से ही कुछ मिले। भाई बहिनों से बनाकर रखें। शनि का व्यवसाय शुभ फल दे। धार्मिक होने पर सन्तान ठीक रहे।

राहु नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो।

1. अधार्मिक होने पर सन्तान निकम्मी, अपयश या अपमानित हो, फकीर या साधु को लूटकर खा जाय, लड़का गर्भ में या उत्पन्न होते ही मर जाए, पिता, दादा व ससुराल बर्बाद व भाई तंग करे, रक्त के संबंधियों से मुकदमें बाजी करने पर नि:संतान रहे।

2. राहु नौवें व शनि पाँचवें हो, तो सन्तान सुख न हो और शनि अशुभ फल दें।

3. राहु नौवें व पहला भाव रिक्त हो, तो स्वास्थ्य ठीक न रहे। अपमान व बड़ों के द्वारा मानसिक परेशानी मिले।

उपाय–

1. सिर पर चोटी रखें। केसर का प्रतिदिन तिलक लगाएं।

2. गुरु का उपाय करें। सोना धारण करें।

राहु दसवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

पिता के लिए शुभ, जातक का अच्छा स्वभाव, सम्मानित, शनि की स्थिति के अनुरूप ही शुभाशुभ प्रभाव होगा। शनि शुभ होगा तो जातक वीर, धनी, दीर्घायु और व्यापारी होगा।

राहु दसवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. शनि अशुभ हो तो माता के लिए कष्टकारी और सोने को भी जंग लग जाए।
2. राहु दसवें और मंगल अशुभ हो, तो अशुभ फल हो। पैतृक सम्पत्ति बेच कर खा जाए। तंग दिली, दूसरों से शत्रुता कराए। नंगा सिर रखना धन हानि का संकेत है।
3. राहु दसवें और चंद्र अकेला चौथे हो, तो सर कट जाए, अन्धा हो जाए, धन सम्पत्ति पर बिजली गिर जाए।

उपाय–

1. जातक सिर ढक कर रखें। मंगल का उपाय करें।
2. नीले या काले रंग की पगड़ी या टोपी धारण करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु का फल एवं उपाय–

राहु ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

पिता के जीवित रहने तक धनवान् हो। बाद में गुरु की वस्तुएँ स्थापित करना शुभ व सहायक हो। जातक योगी हो और पिता के लिए कष्टकारी न हो। यदि शनि तीसरे या पाँचवें स्थित हो शक्ति और भाग्य में वृद्धि हो। माता-पिता से धन न मांगे। धोखा देना धन हानि का लक्षण बनेगा।

राहु ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. राहु के साथी पहले या 3रे हो, तो अत्यन्त अशुभ मिले। कुसंगति व धूर्त मित्रों का साथ रहे, नीच लोगों से धन प्राप्त करें।
2. राहु 11वें और मंगल भी अशुभ हो, तो जन्म से पूर्व सब कुछ हो पर जन्मते ही नष्ट हो जाए।
3. मंगल 3रे और राहु 11वें हो, तो भाई के गर्दन में कष्ट, ताऊ नि:सन्तान या लंगड़ा हो।
4. केतु पाँचवें और राहु 11वें हो, तो केतु का अशुभ फल मिले, कान, टांग रीढ़ की हड्डी, मूत्र या पैरों का रोग हो। केतु सम्बन्धी कार्यों में हानि हो।

उपाय–

1. कभी-कभी सत्पात्र को दान देते रहे।
2. गुरु का उपाय करे। स्वर्णधारण करें। केसर का तिलक लगाएं।

लोहा शरीर पर स्थापित करें।

बारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. राहु के साथ मंगल हो, तो सुखी व हर प्रकार से उत्तम हो। राहु बारहवें व शनि शुभ हो, तो योगी, ज्ञानी व बेफिक्र होता है।

2. राहु बारहवें शुभ होने पर ससुराल धनी, शत्रुओं से सदैव रक्षा और रात्रि में आराम मिले। नेक कार्य करे। इच्छानुकूल कार्य करें, तो ऋण न होगा।

3. राहु 12वें व शुक्र 10 या 11वें हो, तो आर्थिक तंगी न हो, कन्या उत्पन्न होने पर धन की वृद्धि हो।

राहु बारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

कुकर्मों में धन खर्च, व्यसन शील, सज्जनों से विरोध हो। बवासीर, आंतों व दिमागी परेशानी से पीडित हो। झगड़े हों, रातो को नींद न आएँ, पुत्री या बहिन पर अधिक धन खर्च हो। शत्रु ग्रहों के साथ राहु की युतिं तबाही लाए। अधिक परिश्रम के बाद भी गुजारा न चले। अपव्यय हो। आत्महत्या तक की सोचे। झूठे दोष लगें, अपयश हो और हठ से हानि हो। अधिक सोचने पर पागल हो जाए।

उपाय–

1. खाना जहाँ बनाएँ वहाँ बैठकर ही खाएँ।
2. कम सोचें। जिद्द या हठ न करें।
3. सोते समय तकिये के नीचे या सिरहाने मंगल की वस्तु सौंफ या मूँगा रखें।

केतु पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. यात्रा की चिन्ता हर समय रहे, स्थानान्तरण के लिए तैयार रहें, पर अन्त में यात्रा स्थगित हो जाए। जातक सुखी, परिश्रमी, धनी, सन्तान को लेकर चिन्तित रहे।

केतु पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

सिरदर्द हो, स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहे व बच्चों की चिन्ता रहे बुध-शुक्र का अशुभ फल हो जब 2रा 7वां भाव रिक्त हो। अस्थायी यात्राएँ करनी पड़ें। शनि भी अशुभ हो, तो पिता व गुरु को नष्ट कर दें व पड़ौसी भी परेशान रहे।

उपाय–

1. बंदर को गुड़ खिलाएँ। बुध का उपाय करें।
2. प्रतिदिन केसर का तिलक लगाएँ।
3. काला या सफेद कम्बल सतपात्र को दान दें।

केतु दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

यात्रा बहुत करनी पड़े। यात्रा उन्नति कारक होगी। शुक्र कैसी भी स्थिति में हो उत्तम फल देगा। धन संग्रह न हो पाए। यदि गुरु उच्च का हो, तो लाखों की धन-सम्पत्ति हो, तो 24 वर्ष के बाद समय हर प्रकार से अच्छा हो।

केतु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

दूसरे केतु 8वें चन्द्र, मंगल हो, तो अल्पायु 16 या 22वें वर्ष में कष्ट हो।

उपाय–

माथे पर केसर का तिलक लगाए।

केतु तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

1. संतान अच्छी होगी जबकि ससुराल और भाइयों का शुभाशुभ फल मिले। ईश्वर को स्मरण करने वाला, भला व्यक्ति और दूजों के काम आए।

2. केतु तीसरे व मंगल 12वें हो, तो 24 वर्ष से पहले पुत्र जन्म आयु व धन के लिए शुभ है, यदि श्वेत केशों से युक्त कोई पूर्वज सहायता करे।

केतु तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. बेबात हाँ करके दु:खी हो। भाईयों से दुखी, परदेश में व्यर्थ भटके, आयु और धन में कमी आए। भाई, परिचित व ससुराल से दु:खी हो। मुकद्दमों में धन नष्ट हो। पत्नी व सालियों से वियोग हो।

2. केतु तीसरे व चन्द्र या मंगल तीसरे या चौथे हो, तो जातक निर्धन होगा।

उपाय–

1. केसर का तिलक लगाएं।
2. गुरु की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएं।
3. आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शरीर पर स्वर्ण धारण करें।

केतु चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो। संतोष करने पर फूल शुभ हो। पिता व गुरु के लिए शुभ हो।

केतु चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

अस्वस्थ, मधुमेह का रोगी, माता व संतान को कष्ट हो। संतान विलम्ब से और कुल पुरोहित के आशीष से उत्पन्न हो।

उपाय–

1. सूर्य की वस्तुएँ कुल पुरोहित को दान में देकर आशीर्वाद लें।
2. गुरु की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएं।
3. कुत्ता पालें।
4. मन की शांति के लिए चांदी धारण करें।

केतु पाँचवे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

केतु पाँचवे गुरु, सूर्य या चन्द्र 4,6,12वें हो, तो पाँच लड़के और आर्थिक स्थिति अच्छी हो।

केतु पाँचवे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो

1. केतु 5वें और गुरु अशुभ हो, तो जातक सुन्दर, संतान के लिए अशुभ, दमे का रोगी, 45 वर्ष तक केतु का अशुभ प्रभाव मिले। लड़के चाहे जितने हो, पर जीवित न रहें। घर पर कुत्तों के रोने की आवाज आए।

2. केतु 5वें और गुरु 11वें हो, तो सन्तान मरी हुई उत्पन्न हो। 48 वर्ष से पूर्व माता की मृत्यु, गुरु अशुभ व केतु भी अशुभ हो, आजीविका 24 वर्ष के उपरान्त प्राप्त हो।

3. केतु 5 वें और चन्द्र या मंगल 3रे, 4थे हो, तो केतु का अशुभ फल मिले।

उपाय–

1. चन्द्र व मंगल की वस्तुएँ दूध, खाण्ड का दान करें।
2. गुरु का उपाय करें।

केतु छठें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. केतु की युति बुध के साथ छठें हो, तो बुध केतु का शुभ फल मिले।
2. गुरु शुभ हो, तो दीर्घायु, माता सुखी, परदेश में भी जीवन आराम से बीते।

केतु छठें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. मामा से कष्ट मिले, झगडालू व बीमार हो।
2. गुरु अशुभ हो, तो यात्रा व्यर्थ में हो और शत्रु बिन बुलाए आयें।
3. केतु छठें और चन्द्र 2रे हो, तो मामा व माता कष्ट में हो, बुढ़ापा ठीक न बीते।

उपाय–

1. कुत्ता पालें।
2. सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
3. गुरु का उपाय करें।

केतु सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

24 वर्ष की आयु में ही 40 वर्ष की धन सम्पत्ति कमा ले। जैसे जैसे संतान बढ़े, वैसे-वैसे धन बढ़े। बहादुर व बच्चों का मित्र हो। शत्रु भयभीत रहें।

केतु सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. अभिमानी, झूठा वायदा करे, गाली दे, बीमार रहे, 34 वर्ष की आयु तक शत्रु साथ लगे रहे।
2. केतु 7वें और लग्न में एक से अधिक ग्रह हो, तो सन्तान नष्ट हो जाए।
3. केतु के साथ बुध हो, तो 34 वें वर्ष के बाद शत्रु को नष्ट कर दे। स्त्री व लड़की की ओर से मन अशांत रहे।

उपाय–

1. गुरु का उपाय करें।
2. केसर का तिलक लगाएं।

केतु आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

मृत्यु का पूर्वाभास हो जाए। 34वें वर्ष में पुत्र होगा, इससे पूर्व जीवित न रहे। यदि बुध 9 से 12वें भाव में हो, तो 34 वर्ष के बाद संतान जीवित रहेगी। अपनी बहन या लड़की के विवाहोपरान्त लड़का हो।

केतु आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. केतु 8वें अशुभ हो, तो बुध, शुक्र भी अशुभ होते हैं। जातक का चाल-चलन ठीक नहीं रहता है। पत्नी बीमार रहती है। 26वें वर्ष में राहु, केतु, बुध, शनि भी अशुभ फल दें।

2. केतु आठवें और बुध किसी भी भाव में हो, तो 29 से 40 वर्ष तक पुत्र उत्पन्न होगा। बुध व शुक्र अशुभ होने पर सन्तान विलम्ब से होती है।

3. जातक स्त्री द्वेषी, बवासीर का रोगी व धोखेबाज होता है।

उपाय–

1. गणेश उपासना करें। कुत्ते को रोटी दें। केसर कर तिलक लगायें।

केतु नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो–

परिश्रम से धन कमायेगा। उन्नति होगी स्थानान्तरण नहीं। जातक बहादुर, विश्वसनीय और धनी होगा। भाग्यशाली, आज्ञाकारी होगा। केतु अपना प्रभाव सातवें भाव में स्थित ग्रहों की आयु निकल जाने के बाद देता है। जीवन का अधिकांश भाग परदेश में बीतता है। केतु का शुभाशुभ फल गुरु की शुभाशुभता पर निर्भर करता है। पुत्र कम से कम तीन होंगे। जातक की 48 वर्ष की आयु तक पिता की स्थिति अच्छी हो।

केतु नौवें व चन्द्र शुभ हो, तो माता के कुटुम्ब का बेड़ा पार लगायेगा।

केतु नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

स्वास्थ्य ठीक न रहे। पाँव का दर्द, जोड़ों का दर्द, मूत्र रोग, रीढ़ की हड्डी का रोग हो जाए।

केतु नौवें और शत्रु ग्रह चन्द्र, मंगल तीसरे हो, तो लड़के मरते जाएँ।

उपाय–

बहिन, बुआ या बेटी को दान दो।

दसवें भाव में स्थित केतु का फल (शुभ स्थिति में)

जातक भाग्यवान, चुपचाप अपने काम से काम रखनेवाला, अवसरवादी व पिता अल्पायु में चल बसे। केतु की शुभाशुभता शनि की शुभाशुभ स्थिति पर निर्भर करता है।

1. केतु दसवें और शनि छठे हो, तो प्रसिद्ध खिलाड़ी हो।

2. केतु दसवें हो, शनि उत्तम हो, तो 24 वर्ष की आयु में लड़के उत्पन्न हो, गुरु का शुभ फल हो और मिट्टी में भी स्वर्ण मिले।

केतु दसवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो–

1. केतु दसवें और शनि अशुभ हो, तो केतु की सजीव वस्तुओं पर 24 से 28 वर्ष तक अशुभ फल हो। गृहस्थ जीवन दु:खी हो।

2. केतु दसवें और शनि चौथे हो, तो तीन लड़के नष्ट होंगे पर धन कम न होगा।

उपाय–

1. चाल-चलन ठीक रखें। गुरु का उपाय करें।

2. चन्द्र का उपाय करें। पर स्त्रीगमन से बचना आवश्यक है।

केतु ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

1. केतु 11वें और शनि तीसरे हो, तो धन सम्पत्ति बहुत होगी।

2. पैतृक सम्पत्ति से अधिक सम्पत्ति स्वयं बनाएं। 11,23,36,48वें वर्ष में आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो। भविष्य की चिन्ता न करें।

3. केतु 11वें और बुध तीसरे हो, तो राजयोग हो।

4. जातक भीरु होता है। भूत की अपेक्षा भविष्य की चिन्ता अधिक करें।

केतु ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. पेट का रोगी हो। भविष्य की चिन्ता करने से परेशानी बढ़े। 5,11,23,36,48वां वर्ष माता के लिए कष्टकारी हो। सन्तान जीवित न रहे। लड़के जन्म तक माता न रहगी।

2. केतु 11वें और राहु 5वें हो, तो निर्धन होने पर भी सन्तान अच्छी हो। शुभ कार्य को जाते समय पीछे से आवाज अशुभ हो।

3. केतु 11वें और बुध 3रे हो, तो 11,23,36,48वें वर्ष में चन्द्र का अशुभ फल हो।

4. केतु 11वें और शनि अशुभ हो, तो मकान व सन्तान दोनों की उन्नति न होगी। स्त्री जातक में यह स्थिति होने पर केतु अशुभ फल न दें।

उपाय-

1. काला कुत्ता पालें।

2. बुध की धातु या नग कनिष्ठका अँगुली में धारण करें।

केतु बारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो-

उन्नति होगी पर स्थानान्तरण नहीं होगा। जातक धनवान, सम्मानित, उच्च पदस्थ और शुभ कार्यों में खर्च करने वाला होता है। 24वें वर्ष में जब पुत्र उत्पन्न हो, तो घर में धन-सम्पत्ति आनी प्रारम्भ हो। यदि छठे भाव में राहु के साथ बुध हो, तो शुभ फल केतु का मिले। यदि छठें अकेला राहु हो, तो धन बहुत आए। जीवन में विलासिता और दूसरे भौतिक सुख-साधन उपलब्ध हों।

केतु बारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो-

1. जातक ऐय्याश, चरित्रहीन और सन्तान के लिए निकम्मा हो।

2. केतु 12वें अशुभ हो और छठें राहु के साथ मंगल चन्द्र सूर्य या शुक्र हो, तो 28, 32, 42, 25वें वर्ष में क्रमश: सन्तान न हो।

3. केतु 12वें और चन्द्र दूसरे हो, तो एक ग्रह का फल अशुभ मिले।

उपाय-

1. गणेश उपासना करे।

2. सन्तान को कष्ट हो, तो राहु का उपाय करें।

3. चाल-चलन ठीक रखे।

4. संतान की चिन्ता करें।

लाल किताब- नवग्रह एक नजर में

नवग्रहों के विषय में अनेक तथ्य दिये गये हैं। इनमें ग्रहों के घर, देवता, रंग, कार्य, समय, रोग, शत्रु-मित्र एवं उनसे संबंधित वस्तुओं आदि का उल्लेख है। प्रस्तुत है, इन सभी ग्रहों के बारे में संक्षिप्त विवरण—

सूर्य

पक्का घर—1
श्रेष्ठ घर— 1, 5, 8, 9, 11, 12
मंदे घर— 6, 7, 10
रंग— पीला (तांबे जैसा), नांरगी, केसरिया, भूरा
शत्रु ग्रह— राहु, केतु, शनि, शुक्र
मित्र ग्रह— चंद्र, बृहस्पति, मंगल
सम ग्रह— बुध
कार्य— सरकारी हिसाब-किताब, क्षत्रिय
उच्च— 1 मेष राशि में
नीच— 7 तुला राशि में
समय— प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक
दिन— रविवार
बीमारी— ज्वर, नेत्र विकार, सिर दर्द
मसनूई ग्रह— बुध+शुक्र
देवता— विष्णु
पेशा-व्यवसाय— क्षत्रिय, राजपूत
विशेषता— बहादुर, शरीर का पालनकर्ता
गुण— आग, गुस्सा, बुद्धि, विद्या
शक्ति— गर्मी का खजाना
धातु— माणिक, तांबा, शिलाजीत
शरीर के अंग— संपूर्ण शरीर
चेहरे के अंग— दायां हिस्सा, बायीं आँख, हड्डियाँ
पोशाक— सेहरा, कलगी
तरबूज के साथ तुलना— वजन
पशु— बंदर, बंदरिया, पहाड़ी गाय, काली गाय
वृक्ष— तेजफल, लौंग, जायफल, इलायची का पौधा, जड़ी-बूटी, दूध वाले पेड़
अनाज— बाजरा, गुड़
निवास— संपूर्ण शरीर

चन्द्र

पक्का घर— 4
श्रेष्ठ घर— 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9
मंदे घर— 6, 8, 10, 11, 12
रंग— दूधिया सफेद
शत्रु ग्रह— राहु, केतु
मित्र ग्रह— सूर्य, बुध
मसनूई ग्रह— सूर्य+बुध
सम ग्रह— शुक्र, शनि, मंगल, बृहस्पति
कार्य— नौसेना, शिक्षा या कोषागार
उच्च— दूसरे घर में
नीच— नौवें घर में
समय— पूर्ण चांदनी रात, दोपहर
दिशा— पूर्व
दिन— सोमवार
बीमारी— कफ और पेट से संबंधित
देवता— शिवजी
पेशा-व्यवसाय— धीमर, कुम्हार, पूज्य जैन धर्मी, पानी से संबंधित कामकाज
विशेषता— दयालु, हमदर्द
गुण— माता, जायदाद, पानी, दिल की शांति, मौसी, दादी, नानी
शक्ति— सुख-शांति का स्वामी, माँ का दुलारा, पूर्वजों की सेवा
धातु— चांदी, मोती
चेहरे के अंग— बायीं आँख
शरीर के अंग— हृदय
पोशाक— धोती, परना
तरबूज के साथ तुलना— पानी
पशु— घोड़ा, घोड़ी
वृक्ष— सफेद पेड़
अनाज— चावल, दूध
निवास— जलाशय

मंगल (शुभ)

पक्का घर— 3

श्रेष्ठ घर— 1-3, 5-7, 9-12

मंदे घर— 4, 8

रंग— लाल, सिंदूरी

शत्रु ग्रह— केतु, बुध

मित्र ग्रह— बृहस्पति, चन्द्र, सूर्य

सम ग्रह— शुक्र, शनि

कार्य— पुलिस या सेना

उच्च— दसवें घर में

नीच— चौथे घर में

समय— पक्की दोपहर

दिन— मंगलवार

बीमारी— रक्त विकार

मसनूई ग्रह— सूर्य+बुध (मंगल शुभ)

देवता— हनुमानजी

पेशा-व्यवसाय— लड़ाकू, सिपाही, सैनिक

विशेषता— सोच-समझकर बात करने वाला

गुण— खाना-पीना, लड़ना

शक्ति— रक्तपात करना-कराना

धातु— लाल-चमकीला पत्थर

शरीर के अंग— जिगर

चेहरे के अंग— नीचे का होंठ

पोशाक— नंगा सिर, बिना पगड़ी-टोपी का सिर

तरबूज के साथ तुलना— गूदा

पशु— शेर, शेरनी, हिरन

वृक्ष— नीम

अनाज— मसूर की दाल, गुड़, लाल मिर्च, सिंदूर

निवास— युद्ध क्षेत्र, अग्नि

बुध

पक्का घर— 7

श्रेष्ठ घर— 1, 2, 4, 5, 6, 7

मंदे घर— 3, 8, 9, 12

रंग— हरा

शत्रु ग्रह— चन्द्र

मित्र ग्रह— सूर्य, शुक्र

सम ग्रह: शनि, बृहस्पति, केतु, मंगल

कार्य: खजाने, नौसेना (नेवी), शिक्षा क्षेत्र

उच्च: छठे घर में

नीच: बारहवें घर में

बीमारी: दंत रोग, नाड़ियों से संबंधित

समय: सायं 4 से 6 बजे तक

मसनूई ग्रह: बृहस्पति+ राहु

पेशा-व्यवसाय— दलाल, व्यापारी, लेखक, पत्रकार

देवता— माँ दुर्गा

विशेषता— खुशामदी

गुण— वाणी, दोस्ती, दिमाग, जुबान, नसीहत

शक्ति— लोगों में विश्वास जगाने वाली

धातु— हीरा, पन्ना, सोना

शरीर के अंग— नाक का सिरा, नसें

चेहरे के अंग: —जुबान, दांत

पोशाक— टोपी, नाड़ा, बेल्ट

तरबूज के साथ तुलना— स्वाद

पशु— चमगादड़, बकरा, बकरी, भेड़, हाथी

वृक्ष— बड़ के अलावा अन्य चौड़े पत्ते वाले पेड़, केले का पेड़

अनाज— साबुत मूंग, छिलके वाली मूंग की दाल

निवास— हरियाली जगह, हरे खेत

बृहस्पति

पक्का घर— 9

श्रेष्ठ घर— 2, 5, 8, 9, 12

मंदे घर— 6, 7, 10

रंग— पीला

शत्रु ग्रह— बुध, शुक्र

मित्र ग्रह— सूर्य, मंगल, चन्द्र

सम ग्रह— राहु, केतु, शनि

कार्य— शिक्षा संबंधी

उच्च— चौथे घर में

नीच— दसवें घर में

बीमारी— श्वास संबंधी

समय— सूर्योदय से 8 बजे तक

दिन— रविवार

मसनूई ग्रह— सूर्य+बुध

देवी-देवता— ब्रह्मा

पेशा-व्यवसाय— ब्राह्मण, पूजापाठ, सर्राफ-स्वर्ण संबंधी काम, मंदिर का पुजारी

विशेषता— आध्यात्मिक ज्ञाता, सरदारी

गुण— हवा, आत्मा, सांस, पिता, सुख, गुरु

शक्ति— शासक, सांस लेने तथा दिलाने वाली शक्ति का मालिक

धातु— सोना, पुखराज

शरीर के अंग— गर्दन

चेहरे के अंग— नाक, ललाट, कान या नाक का सिरा

पोशाक— पगड़ी

तरबूज के साथ तुलना— डंडी

पशु— बब्बर शेर-शेरनी, भूरा रीछ-चींटी

वृक्ष— पीपल

अनाज— चने की दाल, हल्दी, केसर, कस्तूरी

(निवास—मन्दिर, मस्जिद, चर्च गुरुद्वारा)

शुक्र

पक्का घर— 7

श्रेष्ठ घर— 2, 3, 4, 7, 12

मंदे घर— 1, 6, 9

रंग— सफेद

शत्रु ग्रह— सूर्य, चन्द्र, राहु

मित्र ग्रह— शनि, बुध, केतु

कार्य— शिक्षा संबंधी

उच्च— 12

नीच— 6

बीमारी— वीर्य संबंधी

समय— दोपहर

मसनूई ग्रह— राहु+केतु

कारोबार— खेतीबाड़ी, पशुपालन

देवता— लक्ष्मी

पेशा-व्यवसाय— कुम्हार, वैश्य, काश्तकार, सुगंधित द्रव्यों का व्यापार, स्त्रियों से संबंधित वस्तुओं का व्यापार

विशेषता— आशिकमिजाज

गुण— उत्साह, हौसला, भाई, खाना-पीना

शक्ति— लगन, दिल का प्यार, दिल की रानी, मोहब्बत, ऐशपंसद

धातु— हीरा, मोती, चांदी, अभ्रक

शरीर के अंग— गाल

चेहरे के अंग— बायां हिस्सा

पोशाक— कमीज

तरबूज के साथ तुलना— बीज

पशु— बैल, सफेद गाय

वृक्ष— कपास का पौधा

अनाज— आलू, ज्वार

निवास— नाट्य गृह, शृङ्गार गृह, शय्या घर

शनि

पक्का घर— 10

श्रेष्ठ घर— 1, 3, 7, 12

मंदे घर— 1, 4, 5, 6

रंग— काला-स्याह

शत्रु ग्रह— सूर्य, चन्द्र, मंगल

मित्र ग्रह— बुध, शुक्र, राहु

कार्य— डॉक्टरी, तेल व लोहे का व्यापार

उच्च— 7

नीच— 1

बीमारी— खांसी, नजर, उदर पीड़ा

समय— सारी रात, अंधेरा दिन

दिन— शनिवार

मसनूई ग्रह— केतु स्वभाव— शुक्र+बुध राहु स्वभाव— मंगल+बुध

देवता— भैरव

पेशा-व्यवसाय— चमार, लुहार, मैकेनिक, बढ़ई

विशेषता— मूर्ख, अक्खड़, कारीगर

गुण— चालाकी, देखना-भालना, मौन, बीमारी

शक्ति— जादू-टोना देखने-दिखाने की

धातु— लोहा, फौलाद, कोयला, नीलम

शरीर के अंग— दृष्टि

चेहरे के अंग— बाल, भौं, कनपटी

पोशाक— जूता-मोजा

तरबूज के साथ तुलना— छाल

पशु— भैंस या भैंसा

वृक्ष— कीकर, आक, खजूर का पेड़

अनाज— काला नमक, उड़द की दाल

निवास— श्मशान, वीरान, मयखाना

राहु

पक्का घर— 12

श्रेष्ठ घर— 3, 4, 6

मंदे घर— 1, 2, 5, 7, 12

रंग— नीला

शत्रु ग्रह— सूर्य, मंगल, शुक्र

मित्र ग्रह— शनि, बुध, केतु

सम ग्रह— बृहस्पति, चन्द्र

कार्य— बिजली से संबंधित

उच्च— 3, 6

नीच— 8, 9, 11

समय— पक्की दोपहर

दिन— रविवार की शाम

बीमारी— ज्वर

मसनूई ग्रह— मंगल+शनि=उच्च, सूर्य+शनि=नीच

देवता— सरस्वती

पेशा-व्यवसाय— मेहतर, भंगी, शूद्र

विशेषता— मक्कार, नीच, चालबाज, जालिम

गुण— सोचना, विचारों की बिजली, डर

शक्ति— कल्पनाशक्ति का स्वामी, मार्गदर्शक

धातु— सिक्का, गोमेद, नीलम

शरीर के अंग— दिमागी लहरें, सिर्फ सिर का हिस्सा

चेहरे के अंग— ठोड़ी

पोशाक— पाजामा, पतलून

तरबूज के साथ तुलना— कच्चा-पक्कापन

पशु— हाथी, कांटेदार जंगली चूहा, कुत्ता

वृक्ष— नारियल का पेड़, घास

अनाज— जौ आदि

निवास— सन्नाटा, वीराना, पाताल

केतु

पक्का घर— 6

श्रेष्ठ घर— 3, 6, 9, 10, 12

मंदे घर— 7, 8, 11

रंग— काला, सफेद

शत्रु ग्रह— चन्द्र, मंगल

मित्र ग्रह— शुक्र, राहु

सम ग्रह— बृहस्पति, शनि, बुध, सूर्य

उच्च— 5, 9, 12

नीच— 6, 8

समय— सवेरे, उषाकाल

दिन— रविवार

बीमारी— जोड़ों में दर्द, टांगों व मूत्र संबंधी

मसनूई ग्रह— शुक्र+शनि=उच्च, चन्द्र+शनि=नीच

देवता— गणेशजी

पेशा-व्यवसाय— भारवाहक, कुली, मजदूर

विशेषता— धर्म और संस्कृति के बंधनों से मुक्त

गुण— सुनना, पांव की हलचल

शक्ति— चलना-फिरना, गैरों से मिलने की शक्ति

धातु— दोरंगा पत्थर, लहसुनिया

शरीर के अंग— सिर को छोड़कर पूरा शरीर

चेहरे के अंग— कान, दांत

पोशाक— दुपट्टा, कंबल, ओढ़नी

तरबूज के साथ तुलना— रंग, धारियाँ

पशु— छिपकली, कुत्ता, गधा, सूअर

वृक्ष— इमली, केला, नीबू का पेड़

अनाज— तिल, जौ

निवास— पलंग, स्वर्ग

संयुक्त ग्रहों का फल

यदि दो या दो से अधिक ग्रह अपनी चाल के अनुसार चलते-चलते एक ही घर में पहुँच जाते हैं तो उनका प्रभाव व कुप्रभाव जातक पर अवश्य पड़ता है। ऐसी स्थिति तब भी उत्पन्न होती है, जब दो ग्रहों की दृष्टि एक साथ किसी खाने पर पड़ती है। विभिन्न ग्रहों का संयुक्त प्रभाव ग्रहवार निम्नवत है—

सूर्य

- सूर्य स्वास्थ्य व व्यक्तित्व का मालिक होता है। यदि सूर्य बृहस्पति के साथ पांचवें स्थान में हो तो मान-सम्मान देता है।
- केतु के साथ 8वें खाने में सूर्य के होने पर जातक अपनी पसन्द को प्राप्त करने में समर्थ होता है।
- यदि सूर्य बृहस्पति के साथ नं. 9 स्थान में हो तो व्यक्ति मूर्ख होता है।

- यदि पांचवें खाने में सूर्य के साथ कोई अच्छा ग्रह आ जाये तो जातक काफी प्रभावशाली व्यक्तित्व होता है।
- यदि सूर्य केतु के साथ छठवें खाने में हो तो जातक पर सदा उदासी का आलम छाया रहेगा।
- सूर्य और शनि के सातवें खाने में होने पर जातक दोहरे व्यक्तित्व वाला होता है।
- शनि के साथ अष्टम में सूर्य के होने से जातक दोगली प्रवृत्ति का, मुंह पर वाहवाही तथा पीठ पीछे गाली देने वाला होता है।

मंगल

- यदि मंगल चन्द्र के साथ नं. 4 में हो तो व्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है।
- सूर्य के साथ नं. 5 में मंगल के होने पर जातक मानवता के प्रति दयालु होता है।
- बुध के साथ छठे में मंगल के होने पर जातक नकलची प्रवृत्ति का होता है।
- शनि के साथ आठवें में मित्र ग्रह के आने पर मंगल व्यक्ति की यश-कीर्ति बढ़ाने वाला होता है।
- शनि के साथ नं. 1 में मंगल के होने पर जातक संगीतप्रेमी होगा।
- बृहस्पति के साथ दूसरे खाने में मंगल के होने पर जातक जिम्मेदार प्रवृत्ति का होता है।
- मंगल के साथ तीसरे खाने में शुक्र होने पर किसी घटना की वास्तविकता ज्ञात करने की शक्ति आती है।
- सूर्य के साथ पहले खाने में मंगल के होने पर जातक में विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति होती है तथा वह ओजवान बनता है।
- मंगल और बृहस्पति के तीसरे खाने में होने से व्यक्ति न्यायप्रिय होता है।
- यदि मंगल बद के साथ चौथे खाने में राहु हो तो जातक को मान-सम्मान मिलता है।

बृहस्पति

- बृहस्पति के साथ सूर्य पांचवें खाने में होने पर जातक दुर्लभ कार्य सम्पन्न कराने वाला होता है।
- बुध के साथ बृहस्पति छठे खाने में होने पर व्यक्ति मिथ्या आशावादी तथा तबाही फैलाने वाला होता है।
- बृहस्पति शुक्र के साथ नं. 2 खाने में होने पर व्यक्ति कामुक एवं हिंसक स्वभाव का होता है।
- बृहस्पति चन्द्र के साथ चतुर्थ खाने में होने पर जातक को सहानुभूत वाला दयालु व्यक्ति बनाता है।
- बृहस्पति अपने घर से नौवें खाने में होने पर जातक को आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बना देता है।
- बृहस्पति राहु के साथ 12वें खाने में होने पर जातक को काफी विश्वासपात्र तथा राजदार बना देता है।

शुक्र

- शुक्र केतु के साथ छठे खाने में स्थित होने पर जातक सच्चा प्रेमी तथा प्यार पर कुर्बान होने वाला होता है। परन्तु केतु के होने से सन्तान नष्ट होने का संशय बना रहता है।
- शुक्र बुध के साथ सातवें खाने में होने पर व्यक्ति जीवन में काफी तरक्की करने वाला होता है।
- यदि शुक्र बृहस्पति के साथ पांचवें घर में हो तो जातक पक्का देशप्रेमी तथा स्वामिभक्त होता है।

- अगर शुक्र चन्द्र के साथ चतुर्थ खाने में हो तो जातक घनिष्ठ मित्र, अतिसंवेदनशील, गहरे प्रेम का पुजारी व इश्क का दीवाना होता है। द्वितीय तथा तृतीय खानों में भी ऐसा ही प्रभाव होता है। परन्तु उस स्थिति में लम्बी उम्र तक वह प्रणय साधना में लगा रहता है।

शनि

- शनि शुक्र के साथ पहले खाने में होने पर जातक को परम स्वार्थी तथा लालची बना देता है।
- यदि शनि-शुक्र दूसरे खाने में एक साथ हों तो जातक को आगे बढ़ने की शक्ति प्राप्त होती है।
- शनि बुध के साथ तीसरे खाने में होने पर व्यक्ति काफी चाटुकार व स्वादिष्ट भोजन का प्रेमी होता है।
- यदि शनि चन्द्र के साथ चतुर्थ भाव में हो तो जातक पर मित्रता व इश्कबाजी की सनक सवार होती है।
- अगर शनि बृहस्पति के साथ पंचम भाव में हो तो जातक स्वाभिमानी तथा अपने गौरव को कायम रखने वाला होता है।
- शनि केतु के साथ छठे भाव में हो तो व्यक्ति धैर्यवान होता है।
- राहु के साथ शनि होने से व्यक्ति लड़ाई-झगड़ा करने वाला होता है।
- शनि केतु के साथ होने पर व्यक्ति ऐशो-आराम का साज-सामान संग्रह कर लेता है तथा काफी विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

ग्रहों का मंदा असर वर्षफल में मन्दे ग्रहों के साथ आ जाने के कारण होता है। इसी प्रकार अच्छा ग्रह अच्छे प्रभाव तभी देता है, जब वर्षफल के अनुसार वह अच्छे घर में जाता है। सभी ग्रह अपनी चाल व स्थिति के अनुसार ही अच्छे-बुरे प्रभाव देते हैं। सारी उम्र कोई भी ग्रह खराब फल नहीं देता।

आयु पर ग्रहों का प्रभाव

जातक की आयु पर हर ग्रह अपना-अपना प्रभाव विशिष्ट वर्षों में डालते हैं। इनको ग्रहों के प्रभाव का 35 वर्षीय चक्र कहा जाता है। जातक के जीवन में कौन-सी भली-बुरी घटना कब घटित होगी, यह जानने के लिये दशा-महादशा, विंशोत्तरी या योगिनी दशा का इस्तेमाल किया जाता है। अष्टक वर्ग का उपयोग भी इस दशा में एक ठोस कदम है। परन्तु 'लाल किताब' में दशाओं की अपनी प्रणाली है। दशा के आधार पर जातक की आयु के किस वर्ष में किस ग्रह का मुख्यत: प्रभाव रहेगा, इसकी जानकारी प्राप्त की जाती है। उसके परिणाम स्वरूप ही होने वाली घटना का पता चलता है।

जैसे दशा में ग्रहों का निश्चित क्रम है, वैसे ही 'लाल किताब' में ग्रहों का क्रम है। उदाहरण के लिये— आयु के 1 से 6 वर्ष तक शनि का प्रभाव होगा। यदि उन वर्षों में वर्षफल में शनि आठवें घर में आ जाये तो बीमारी आ सकती है। आठवें घर का शनि बीमारी का संकेत देता है। यदि यही शनि ग्यारहवें घर में आ जाये तो संपन्नता आयेगी, खुद का घर बनेगा तथा रोजगार तरक्की पर रहेगा। अब किसी 6वर्ष के बच्चे का इससे क्या लेना-देना? हां, उसके माँ-बाप के जीवन पर अच्छा असर अवश्य पड़ेगा।

इसी क्रम में शनि के बाद राहु का समय आता है। राहु 7 से 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है। इसके बाद फिर केतु का समय आता है जो 13 से 15 साल तक असर करता है। यही वजह है कि इस समयावधि में बच्चे का मन पढ़ाई की तरफ से उचट जाता है। उसकी एकाग्रता डावांडोल हो जाती है। केतु पांव तथा दिमाग के चक्कर का कारक है, इसीलिये ऐसा होता है। केतु हमारी मानसिक स्थिरता को अस्थिर करता है। अल्प वयस्क बच्चे होने पर

भी 13 से 15 वर्ष के विद्यार्थियों पर प्राय: केतु का प्रभाव पड़ता है। यदि इन तीन वर्षों में केतु अशुभ घरों में भ्रमण करता है तो पिछले वर्षों की अपेक्षा उसे मिलने वाले गुणों में गिरावट आ जाती है। इसके बाद 16 से 21 वर्ष की आयु यानी छ: वर्ष तक बृहस्पति का प्रभाव होता है। आयु के 22 से 23वें वर्ष में सूर्य तथा 24वें वर्ष में चन्द्र का असर होता है। 29 वर्ष से 33 वर्ष तक मंगल का असर, इसके बाद 34-35 वर्ष बुध के होते हैं। इस तरह 35 वर्ष हमारी आयु का एक हिस्सा (कालखंड) हो गया। इसी को 35 वर्षों का चक्र कहते हैं। 35 वर्ष बाद फिर शनि के क्रम से यह चक्र पुन: कार्यरत होता है।

वर्षफल के चार चक्र

'लाल किताब' के अनुसार वर्षफल बनाने के लिये यह देखना जरूरी है कि उस वर्ष में किस ग्रह का प्रभाव है ? उस प्रभावी ग्रह की स्थिति पर विशेष ध्यान देने पर ही फ़लकथन से स्पष्टता दृष्टिगोचर होगी। यहाँ ऐसे ग्रहों के प्रभावी वर्षों का एक चार्ट दिया जा रहा है जो वर्षफल कथन में उपयोगी रहेगा—

प्रभावी ग्रह	*चक्र नं. 1 (वर्ष)*	*चक्र नं. 2 (वर्ष)*	*चक्र नं. 3 (वर्ष)*	*चक्र नं. 4 (वर्ष)*
शनि	1 से 6	36 से 41	71 से 76	106 से 111
राहु	7 से 12	42 से 47	77 से 82	112 से 117
केतु	13 से 15	48 से 50	83 से 85	118 से 120
बृहस्पति	16 से 21	51 से 56	86 से 91	—
सूर्य	22 से 23	57 से 58	92 से 93	—
चंद्र	24	59	94	—
शुक्र	25 से 27	60 से 62	95 से 97	—
मंगल	28 से 33	63 से 68	98 से 103	—
बुध	34 से 35	69 से 70	104 से 105	—

अनिष्ट ग्रह निवारक विशिष्ट प्रयोग

क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होना एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है अर्थात् कोई भी क्रिया निष्फल नहीं जाती। उसका कोई-न-कोई प्रतिफल अवश्य ही होता है। ठीक उसी प्रकार जैसे ढोल पर थाप मारने से आवाज उत्पन्न होती है। लेकिन यदि वही थाप एक निश्चित तारतम्य में लगायी जाती है तो उसमें संगीत के सुर बोल पड़ते हैं। इसी प्रकार ज्योतिष विज्ञान में उपाय या टोटकों का प्रभाव निश्चित ही होता है, बशर्ते उन्हें बिना नागा निरन्तर एक निश्चित समय पर क्रमबद्ध तरीके से किया जाये। ऐसा करने पर शत-प्रतिशत फल प्राप्त होता है। यह एक वैज्ञानिक रहस्य अथवा ईश्वरीय कृपा है। भारत की धरती पर इनका प्रयोग न जाने कितने समय से होता चला आ रहा है। नियमबद्ध तरीके से करने पर ही ये सफल होते देखे गये हैं। जिस प्रकार रेडियो या टी. वी. की सर्किट में एक छोटे से तार का संपर्क हट जाने पर वह काम करना बंद कर देता है और घरघराहट की आवाजें आने लगती हैं, वही स्थिति इनकी भी है। वर्तमान खोजें बताती हैं कि यथेष्ट ग्रहों द्वारा आवेशित वस्तुओं में उनका प्रभाव होता है जिससे उनकी कमी दूर होकर रोग का निदान हो जाता है।

टोटकों के विषय में दूसरा अति महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इनकी गोपनीयता कभी भंग न होने पाये, तभी पूर्ण सफलता मिलती है। उदाहरणार्थ– धरती के गर्भ में पड़ा बीज गहन अन्धकार में लुप्त होकर ही नये पौधे की उत्पत्ति करता है। यदि उसे प्रतिदिन कुछ समय के लिये बाहर निकाल लिया जाये तो उसके जमने की गति धीमी पड़ जाती है या बिल्कुल नहीं होती। अत: पाठकों को इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस विद्या का अमल करना चाहिये।

- जब सूर्य सप्तम भाव में हो तो निम्न बातों का ध्यान रखें–
  - भोजन पकाने के बाद कुछ अंश खाने से पहले आग में डालें। ऐसा नित्य करें।
  - जब बच्चों व परिवार पर आर्थिक दुष्प्रभाव हो तो तांबे के चौकोर टुकड़े जमीन में गाड़ें या काम पर जाने से पहले थोड़ा मीठा खाकर पानी पियें। शुक्र की चीजें दही आदि मनहूस सिद्ध होगी। काला रंग शुभ होगा।
  - जब सब कुछ बुरा-ही-बुरा हो रहा हो तो बुध का उपाय करें।
- शनि के लग्न में गोचर हो तो चन्द्रमा नि:सहाय हो जाता है। ऐसे में चूल्हे की आग दूध से बुझायें। अगली सुबह से पहले दुबारा न जलायें।
- सूर्य-बुध 9 से तथा बुध 3 या 5 में हो तो सूर्य दुष्फल देगा। ऐसी स्थिति में घर में पुराने बड़े-बड़े बर्तन रखने से क्षेम होगा।
- यदि सूर्य पर शनि की कुदृष्टि के कारण अशुभ फल बढ़ता हो तो जातक घर की दक्षिणी दीवार के पास पूर्व दिशा की ओर मुंह करके पानी से भरा घड़ा दाहिने हाथ की तरफ गाड़ दें। ध्यान रहे 41-42 दिन तक वह सूखने न पाये। यदि सूर्य के पूर्ववर्ती भावों में शनि हो तो अशुभ निवारणार्थ शनि के उपाय करने चाहिये।
- चार बड़ों के पांव छूकर आशीर्वाद लेने से चन्द्रमा के फलों में वृद्धि होगी। ऐसे में चन्द्रमा की वस्तुओं– दूध, दही आदि को नहीं बेचना चाहिये। चांदी, चावल या मोती घर में रखना विशेष शुभकारक होगा।
- एकादश का सूर्य सात्विक प्रवृत्ति, शाकाहार एवं धार्मिक होने पर ही शुभदायी होगा, अन्यथा बहुत बुरे फल देता है। सूर्य के कुप्रभावों से बचने के लिये सोने के बजाय लाल तांबा लें। चन्द्रमा की स्थिति में मोती धारण करें।
- जब सूर्य अन्य ग्रहों को पीड़ित करे तो सूर्य के मित्रों (चन्द्र, मंगल, बुध) का उपचार करें। चूल्हे की आग बुझाने में दूध का उपयोग हितकारी होगा।
- जब सूर्य दूसरे भाव में हो एवं आठवां घर खाली हो तो द्वितीय भाव की तथा सूर्य की वस्तुयें लाभकारी होंगी। द्वितीय भावस्थ सूर्य घर की स्त्रियों (माँ, बहन, भाभी, चाची) के लिये अशुभ फलदायी होता है। ऐसे में गोले का तेल अखरोट मंदिर में दान करें।
- यदि सूर्य 4 में, उसके मित्र 10 में और शत्रु 5 में हों तो अशुभ फल होगा। चाहे चन्द्र ही 5 में क्यों न हो। ऐसे में मंगल के उपचार लाभ देते हैं।
- जब षष्ठम में बैठकर सूर्य केतु संबंधी रिश्तेदारों (बच्चे, मामा) को प्रभावित करे तो इसके उपचारार्थ बन्दरों को गुड़, दीमकों को गेहूँ या बाजरा देना हितकर होगा। सूर्य के दुष्प्रभाव से उन्हें बचाने के लिये घर में घोड़ा पालना, नदी-जल व चांदी रखना अति उत्तम होगा।

◇ सूर्य 6 में और 3 खाली हो तो नौकरी-व्यापार में बाधायें आती हैं। ऐसे में कुत्तों को खाना खिलाना लाभकारी है।

◇ यदि मंगल 10 में तथा सूर्य 6 में हो तो बच्चों को कष्ट होता है। चन्द्र से संबंधित वस्तुयें रात में तकिये के नीचे रखें तथा सुबह गरीबों में बांट दें।

◇ यदि एकादश चन्द्रमा जातक की माँ को सताये तो माँ अपना सिर और आंखें दूध से धोये या दूध भैरव मंदिर में चढ़ाये।

◇ अगर चन्द्रमा 11 में हो और जातक की पत्नी बच्चे को जन्म देने वाली हो तो माँ को घर छोड़कर अन्यत्र चले जाना चाहिये। तत्पश्चात् 43 दिन से पहले पोते का मुंह नहीं देखना चाहिये।

◇ यदि एकादश चन्द्रमा जातक की माँ का अनिष्ट कर रहा हो तो 121 पेड़े बच्चों में बांटना चाहिये। पेड़े लेने के लिये बच्चे न मिलें तो उसे नदी-जल में प्रवाहित करें।

◇ यदि जन्मकुण्डली का द्वादश चंद्रमा लग्न में गोचर को या गोचर करता हुआ फिर द्वादश में आये तो बहुत बुरे फल देता है। ऐसे में बृहस्पति की मदद या उपचार करने से लाभ होता है। कभी-कभी मंदिर जाना लाभकर होगा।

◇ चतुर्थ भाव में शुक्र के स्थित होने से दो विवाह होते हैं। अतएव ऐसे दम्पत्ति को सारे रस्मो-रिवाज के साथ दुबारा अपनी पत्नी के साथ विवाह कर लेना चाहिये।

◇ जो महिलायें एक ही व्यक्ति से दो बार विवाह करती हैं, उनके लिये मंगल से संबंधित वस्तुयें व रिश्तेदार सहायक होते हैं।

◇ चतुर्थस्थ शुक्र जातक को विषयी तथा स्त्रियों के प्रति अनैतिक बना देता है। ऐसे व्यक्ति के मामा को कष्ट होता है तथा वे नि:संतान हो जाते हैं। इस स्थिति से बचने के लिये चन्द्रमा के उपचार लाभदायक होते हैं अथवा बृहस्पति की वस्तुयें जल में प्रवाहित करने से लाभ होता है।

◇ जब शुक्र 5वें भाव में हो तथा चन्द्रमा दुष्फल दे तो चन्द्रमा के उपचार सहायक होते हैं। गाय और माता की सेवा से समृद्धि बढ़ेगी।

◇ यदि जातक का शुक्र 6 में हो तो उसे माँ-बाप की इकलौती संतान से विवाह नहीं करना चाहिये—

- यदि शुक्र मंगल और बृहस्पति के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह के साथ षष्ठस्थ हो और 2 खाली हो तो अशुभ फल देता है। ऐसी स्थिति में घर में ठोस चांदी रखना शुभकारी होगा।
- जातक की पत्नी के द्वारा बालों में सोना पहनने तथा गुप्ताङ्गों को दूध से धोने पर समृद्धि बढ़ेगी।

◇ विवाह के समय जातक का पिता अपनी संतान को सोने के दो टुकड़े दे। इसे सदा अपने पास रखना शुभकारक होगा।

◇ शुक्र 7 में और राहु 8 में अशुभ होता है। ऐसे जातक की पत्नी काले वा नीले रंग के कपड़े न पहने।

◇ यदि शुक्र नवम में हो तो—

- नीम के तने में छेद करके उसमें वर्गाकार चांदी का टुकड़ा रख उसी की टहनी से दबाकर छेद बन्द कर दें। इससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

- रक्षाबन्धन पर बहन को लाख की (लाल) चूड़ियां दें, जिन पर चांदी का पानी चढ़ा हो। यदि शनि लग्न में गोचर करता हो या जातक ने गृह निर्माण किया हो तो यह अत्यन्त आवश्यक है।

◈ अगर शुक्र दशम में हो तो संतानोत्पत्ति में बाधक होता है। ऐसे जातक की पत्नियाँ ज्यादा विषयी हो जाती हैं। इसके उपचारार्थ जातक की पत्नी अपने गुप्ताङ्ग को दही से धोये तथा बीमार होने पर गौ-दान करे। यदि रोग साध्य हुआ तो ठीक हो जायेगा, अन्यथा शांति से मौत आयेगी।

◈ अगर शुक्र द्वादश भाव में हो तो पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। पत्नी स्वयं दान करे या उसके नाम पर दान किया जाये। परन्तु लाभ तभी होगा, जब पत्नी आस्तिक हो। शीघ्र लाभ हेतु किसी निर्जन स्थान में नीले रंग के फूल जमीन के अन्दर दबा दें।

◈ मंगल या तृतीयस्थ मंगल के अनिष्टकारी होने पर हाथी-दांत या हाथी-दांत से बनी वस्तुयें घर में रखने पर लाभ होगा।

◈ यदि कुण्डली में मंगल 2 में और 7, 9, 11 खाली हों तो—

- बृहस्पति के उपचार द्वारा उसे सक्रिय करें या उसकी वस्तुयें घर में रखें।
- शुक्र के व्यवसाय करें तो सप्तम सक्रिय होगा।
- जब तक 39 वर्ष की आयु न हो जाये, साधुओं की संगति न करें।

◈ अगर चतुर्थस्थ मंगल दुष्फल देने लगे तो—

- प्रात:काल भोर में दांत साफ करें।
- चन्द्रमा का उपचार करें।
- यदि बच्चे न होते हों या होते ही मर जाते हों तो मिट्टी का घड़ा शहद से भरकर श्मशान भूमि में दबा दें।
- घर के दक्षिणी द्वार पर एक लोहे की कील जमीन के अन्दर गाड़ दें, जो बाहर से न दिखायी दे। पक्षियों को मीठी चीजें खिलायें तथा हाथी-दांत सदैव अपने पास रखें।

◈ पंचमस्थ मंगल के कुप्रभाव से रात में बुरे स्वप्न दिखायी देते हैं। यदि व्यक्ति सोते में डरता हो तो पानी से भरा पात्र सिरहाने रखे तथा सुबह किसी गमले में डाल दें। वह पानी पैर के नीचे न आने पाये।

◈ षष्ठस्थ मंगल जातक के भाइयों को कष्ट देता है। अत: सभी भाई अपनी कमाई में से कुछ अंश जातक को दें या नदी में डाल दें। बच्चों को कष्ट होने पर उनके जन्मोत्सव न मनायें। यदि मिठाई बांटनी पड़े तो नमकीन का स्पर्श कराकर बांटें।

- निजी जिन्दगी बेहतर बनाने के लिये शनि का उपचार करें। कन्याओं के पांव पूजकर भोजन-वस्त्रादि का दान कर उनसे आशीर्वाद लें।
- बच्चों के कुशल-क्षेम के लिये चन्द्रमा के उपचार करें। सुरा-सुंदरी से दूर रहें।

◈ यदि द्वादश मंगल दुष्फल देने लगे तो बड़े भाइयों को लाल कपड़े न पहनने दें। मंगल संबंधी खिलौने घर में न लायें। सिर पर टोपी रखें। खाकी टोपी या पगड़ी पहनना लाभदायी सिद्ध होगा।

- जातक के बड़े भाई चन्द्रमा की वस्तुयें अपने पास रखें। सुबह-सुबह सूर्य को मीठे जल का अर्घ्य दें।

- ◈ अगर शनि पंचम में स्थित होकर बुरे प्रभाव उत्पन्न करे तो पैतृक घर में सूर्य, चन्द्रमा व मंगल की वस्तुयें रखें। सूर्य की वस्तुयें– गुड़, स्लेटी रंग की भैंस, पालतू बन्दर, चंद्रमा की वस्तुयें– चांदी, चावल, मोती तथा मंगल की वस्तुयें– शहद, मूंगा इत्यादि हैं।
- ◈ यदि षष्ठम भावस्थ शनि कष्टकारक हो तो जातक बहते जल में अखरोट या नारियल इत्यादि प्रवाहित करें। बच्चों की वृद्धि के लिये सांप को दूध पिलायें।
- ◈ शनि के सभी प्रकार के दुष्फल टालने के लिये सरसों के तेल से भरा घड़ा नदी की तली में गाड़ें जिसके ऊपर से पानी बहता रहे।
- ◈ यदि सप्तम भाव में शनि हो तो एक बांसुरी में शक्कर भरकर जमीन में गाड़ें।
- ◈ दशम शनि बुरा नहीं होता। यदि कुछ कुप्रभाव हो तो गुरु के उपचार करें।
- ◈ मानसिक शांति के लिये राहु का उपचार करें। सुबह-सुबह लाल मसूर की दाल सफाई कर्मचारी को दान दें तथा उसमें कुछ पैसे भी डालें।
  - बीमार आदमी के वजन के बराबर जौ पानी में प्रवाहित करें।
  - रात को सोते समय सिरहाने किसी पात्र में जौ रखें। सुबह उसे जानवरों को खिला दें या गरीबों में बांट दें।
- ◈ षष्ठम और दशम के विष से बचने के लिये जन्मपत्री का पंचम भाव देखें। ग्रह के शत्रु या ग्रह की वस्तुओं को जमीन मे दबा दें। यदि जातक पैतृक घर में रहता है तो इन वस्तुओं को तब तक रखें, जब तक अष्टम अशुभ फल दे।
- ◈ यदि द्वितीय और द्वादश में लाभदायक ग्रह हों तो षष्ठस्थ ग्रह को जगायें। इसके लिये अपने मामा व अपनी बेटियों की सहायता करें।
- ◈ यदि गुरु 10 में, शुक्र 11 में और केतु 8 में हो तो बेटे के वजन के बराबर रोटियाँ 25 से 28 दिन तक कुत्तों को खिलायें।
- ◈ वर्षफल में जो ग्रह षष्ठम में गोचर करे, वह जातक के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है। अत: उस ग्रह से संबंधित वस्तुयें दान करनी चाहिये।
- ◈ बुध, शनि और केतु सप्तम भाव के फल देते है। यदि वे अशुभ हों तो उनका उपचार करें। उनसे संबंधित वस्तुओं का दान करें या रिश्तेदारों की सेवा करें।
- ◈ जो ग्रह जन्मकुण्डली में एकादश हो, वही गोचर से 11 या 8 में आये तो उस ग्रह से संबंधित वस्तुयें न तो खरीदें और न ही घर में सम्भाल कर रखें।
- ◈ यदि 3, 5 घर खाली हों तो द्वितीय के माध्यम से नवम को जगा सकते हैं।
- ◈ यदि दशम भाव खाली हो तो चतुर्थस्थ ग्रह अच्छे फल नहीं देते। तब माता-पिता की सेवा से सहायता मिलेगी। दस अंधों को भोजन करायें। पैसा देना शुभ नहीं होगा।
- ◈ एकादश ग्रह लग्न में शुभकारी एवं अष्टम में अनिष्टकारी होता है। ऐसे में एकादश ग्रह या उसके मित्र ग्रहों के पदार्थ सहायक होंगे। बशर्ते कि राहु, केतु व शनि में से कोई ग्रह लग्न में गोचर न करता हो।

यदि ऐसा हो तो नवम ग्रह के पदार्थ उपयोगी होंगे। यदि नवम खाली हो तो गुरु के पदार्थ सहायक होंगे।

◇ यदि कुण्डली में गुरु और केतु शुभ हों तो चन्द्रमा 11 में बहुत शुभ फल देता है, कम-से-कम जब तक जातक के माता-पिता जीवित हैं।

◇ यदि कुण्डली में गुरु अशुभ फल देता हो तो बेटी के विवाह के समय उचित वजन के सोने के दो टुकड़े बनवाकर एक नदी में प्रवाहित करें तथा दूसरा दुल्हन को दे दें। वह इसे सदा अपने पास रखे। जब तक वह सोने का टुकड़ा उसके पास रहेगा, तब तक गुरु कल्याणकारी बना रहेगा।

- यदि चन्द्रमा अशुभ फल दे तो सोने के बजाय लाल तांबा या मोती लें।
- यदि शुक्र अशुभ फल दे तो दही के रंग का मोती लें।
- यदि मंगल अशुभ हो तो चमकीला लाल पत्थर लें।
- यदि शनि अशुभ हो तो हीरा लें।
- यदि राहु अशुभ हो तो लोहा या स्टील लें।
- यदि केतु अशुभ हो तो दो रंग के पत्थर लें।

◇ नेत्र रोग होने या शनि के अशुभ होने पर बहते पानी में नारियल विसर्जित करना चाहिये।

◇ षष्ठस्थ शनि चाहे स्वयं शुभ या अशुभकारी हो, परन्तु गुरु का फल निश्चित ही बिगाड़ देता है। इससे बचने के लिये नारियल, अखरोट आदि शनि की वस्तुयें पानी से विसर्जित करें।

◇ गुरु लग्न में और शनि एकादश में हो तो गायों की सेवा करें।

◇ यदि गुरु 2 में और शनि 10 में स्थिति होकर अशुभ फल दे तो शनि से संबंधित उपचार करें।

◇ अगर गुरु 2 से तथा बुध-शुक्र 10 में हों तो चन्द्रमा के उपाचर करें।

◇ गुरु 3 में हो तो दुर्गापाठ करें।

◇ गुरु 4 में और 10 खाली हो तो गुरु प्रसुप्त होता है। गुरु से शुभफल पाने के लिये अनावृत्त देह दूसरों को न दिखायें अर्थात् नंगे बदन न रहें। हमेशा ठीक से कपड़े पहने रहें। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

◇ गुरु 6 में और केतु अशुभ स्थान में हो तो केतु का उपचार करना चाहिये।

◇ अगर बृहस्पति 10 में और मंगल 4 में हो तो मंगल से संबंधित रिश्तेदारों की सेवा करना उत्तम फलदायी होगा।

◇ यदि गुरु 11 में और सूर्य, चन्द्रमा या मंगल 5 में स्थित होकर अशुभ फल दें तो भाई के साथ व्यापार-व्यवसाय करना चाहिये। सगा भाई न हो तो चचेरे भाई के साथ ही काम करें।

◇ अगर तृतीयस्थ चन्द्रमा दुष्फल दे तो चन्द्रमा की वस्तुयें दान करें। धन-दौलत की रक्षा के लिये बुध का उपचार करना चाहिये।

◇ यदि जातक दूसरों से दुर्व्यवहार करे और चन्द्रमा 5 में हो तो उसके ईर्ष्यालु कई गुना बढ़ जाते हैं। अत: ऐसी स्थिति में सदाचार अपनाना हितकारी होगा।

अध्याय –18

अनुभूत प्रश्न विषयक योगों पर विचार

दैवज्ञ - ज्योतिष सम्बन्धी गणित का ज्ञाता हो, प्रश्न लग्न, आरूढ़ छत्र आदि का जिसे विचार हो, ग्रहों का बलाबल, केन्द्र, त्रिकोण आदि स्थान, ग्रहों का क्षेत्र, दृष्टि अवस्था, ग्रहों की मंद-शीघ्रगति-वक्री मार्गी, ग्रहों का अनेक योग, ग्रहों का नवांश-द्रेष्काण आदि का ज्ञान कर राशियों एवं ग्रहों के गुण धर्म, उनके शरीर पर प्रभाव, रोग आदि अनेक आवश्यक बातों का निर्णय कर अन्तरात्मा से उस पर विचार करता है, वह साधक दैवज्ञ प्रश्न का उचित उत्तर देने में समर्थ होता है। दैवज्ञ को देवोपासना करना तथा सदाचारी अवश्य होना चाहिये, प्रलोभनवृत्ति का भी त्याग करना चाहिये।

जातक और प्रश्न में भेद –

जातक और प्रश्न में कोई भेद नहीं है। जिस प्रकार लग्नकुण्डली से ग्रहों के आधार पर जातक का विचार होता है, उसी प्रकार प्रश्न कुण्डली से ग्रहों के आधार पर विचार किया जाता है।

प्रश्नकर्ता –

जब कोई प्रश्न पूछने आता है, तो निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए; क्योंकि उत्तर देने में ये बातें सहायक हो सकती हैं।

(1) प्रश्नकर्ता के मुख से जो प्रथम वाक्य निकले, उसके आदि के अक्षर पर ध्यान देना चाहिए; क्योंकि इस आदि के अक्षर पर से ध्वज, धूम आदि 8 प्रकार से विचार कर, उनके ध्रुवांकों पर से फल का विचार होता है।

(2) प्रश्नकर्ता अपने शरीर का कोई भी अंग स्पर्श करे तो उससे संयुक्त असंयुक्त आदि 8 प्रकार के फल का विचार होता है।

(3) प्रश्नकाल का ठीक समय नोट कर, उससे प्रश्नकुण्डली बनाकर उससे फल का निर्णय होता है। घड़ी के टाइम को स्थानीय समय में परिवर्तन कर उस स्थानिक समय का लग्न निकालकर, उस लग्न के आधार पर प्रश्न की कुण्डली बना लेना। यही प्रश्नकुण्डली है।

(4) प्रश्नकर्ता अपने से किस दिशा में बैठा है, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इससे आरूढ़ लग्न, छत्रलग्न आदि निकाल कर फल के विचार में सहायता मिलती है।

(5) प्रश्न समय अपनी नासिका से कौन स्वर चल रहा है, उससे स्वरोदय के अनुसार विचार होता है।

(6) प्रश्नकर्ता समीप या दूर खड़ा है या बैठा है। भूमि पर या कोई आसन में बैठा है। मुख किस दिशा की ओर है। इन बातों के विचार की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

(7) प्रश्नकर्ता की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति एवं चेष्टा।

(8) प्रश्नसमय का वातावरण या परिस्थिति एवं शगुन यदि कोई दृष्टिगोचर हो।

उपरोक्त बातें फल निर्णय में सहायक हो सकती हैं; परन्तु मुख्य बात यह है कि प्रश्नसमय की इष्ट कुण्डली बना लेनी चाहिये और उस समय के ग्रह स्पष्ट कर लेना। नवांश एवं द्रेष्काण कुण्डली भी बना लेना चाहिए, जिनकी प्राय: आवश्यकता पड़ रहती है।

प्रश्न पूछने की रीति -

ज्योतिषी को भेंट स्वरूप फल-पुष्प आदि मांगलिक पदार्थ एवं कुछ द्रव्य हाथ में लेकर पूर्वाभिमुख स्थित होकर प्रणाम कर अल्प शब्दों में प्रात:काल एक ही प्रश्न पूछे।

प्रच्छक सरल या वक्र चित्त का है

कुटिल प्रश्न -

1. लग्न में चंद्र, केन्द्र में शनि हो, बुध अस्तंगत हो तथा चन्द्र को मंगल बुध की पूर्ण दृष्टि हो।
2. लग्न में पाप ग्रह हो।
3. बुध या गुरु सप्तमेश को शत्रु दृष्टि से देखें।

सरल चित्त -

1. लग्न में शुभग्रह हो।
2. लग्न और सप्तम में शुभग्रहों की दृष्टि हो व चंद्र पर बुध, गुरु की दृष्टि हो।
3. बुध या गुरु सप्तमेश को मित्रदृष्टि से देखें।
4. लग्न व सप्तम में शुभग्रह हो।
5. सप्तम में शुभग्रह की दृष्टि हो या चंद्र पर गुरु की दृष्टि हो या चंद्र गुरु एक राशि पर हों।

प्रश्न का उत्तर नहीं देना -

प्रश्न करने वाला धूर्त हो, पाखंडी हो, उपहास करने वाला हो, श्रद्धाहीन हो या अविश्वासी हो, ऐसा जब प्रतीत हो, तो उत्तर नहीं देना चाहिये।

अनेक प्रश्न -

एक प्रश्न पूछा जाता है तो, उत्तर सत्य निकलता है। एक लग्न में बहुत प्रश्न करने पर बहुधा सत्य नहीं निकलता। यदि कई प्रश्नों का उत्तर देना है, तो इस प्रकार विचार करें।

पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पाँचवाँ
लग्न से	चन्द्र स्थान से	सूर्य से	गुरु से	बुध शुक्र में जो बली हो।

इनकी राशियों के अनुसार जो राशियों का रंग, रूप, आकार, गुण, धातु राशियों की संज्ञाएँ जो बताया है व ग्रहस्थिति व ग्रहों की संज्ञा पर भी विचार कर फल का निर्णय करना।

कार्यसिद्धि विचार -

लग्नेश - चतुर्थ, पंचम और दशम में = सिद्धि

दशम में उच्च का मंगल या सूर्य हो, तो = अवश्य सिद्धि हो।

पंचमेश और चतुर्थेश दशम में = कार्यसिद्धि।

लग्न मंगल गुरु से दृष्ट हो = कार्यसिद्धि।

कार्य हानि -

ज्योतिषी के बायें बाजू बैठकर प्रश्न करें।

ज्योतिषी के बहुत दूर बैठकर प्रश्न करें।

ज्योतिषी के बिल्कुल समीप बैठकर प्रश्न करें।

उच्च भूमि से नीचे भूमि में खिसक कर आ जायें या उठकर बैठे। पापी आरूढ़ ग्रह की दिशा में बैठकर प्रश्न करें।

अंग स्पर्श से -

कार्यसिद्धि - प्रच्छक अपने सिर का दाहिना भाग, दाहिनी आँख, दाहिनी भौंह, दाहिना कंधा, कर्ण, मुख, स्तन का अग्रभाग, पेट या दाहिना पैर का स्पर्श करें।

कार्य सिद्धि न हो - यदि उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य अंगों का स्पर्श करे, तो कार्य सिद्ध न हो।

मुख से निकले अक्षर पर से विचार -

क्रम	आय	वर्ग	स्वामी	फल	दान	कितने समय में होगा
1	ध्वज	अवर्ग	सूर्य	कार्यसिद्धि	गेहूँ	7 दिन
2	धूम्र	कवर्ग	मंगल	कार्य नहीं	तिल	1 वर्ष
3	सिंह	चवर्ग	शुक्र	सिद्ध हो	पीतवस्त्र	पक्ष
4	श्वान	टवर्ग	बुध	सिद्ध हो	बलिदान	6 मास
5	वृष	तवर्ग	गुरु	सिद्ध हो	चावल	मास
6	खर	पवर्ग	शनि	नहीं हो	चना	6 मास
7	गज	यवर्ग	चंद्र	सिद्ध हो	गुड़	3 मास
8	ध्वांक्ष	शवर्ग	चंद्र	नहीं हो	यव	1 वर्ष

किस भाव से क्या-क्या विचार करना -

सप्तम स्थान से चोर

चतुर्थ से उसकी प्राप्ति। लग्न से द्रव्य। चंद्रमा धन का स्वामी है और अष्टम स्थान चोर का धन है। जिसकी चोरी हुई हो, उसे लग्नेश समझो। अर्थात् सप्तम चोर का स्थान है। उससे धनलाभ संभव है और चतुर्थ चुराया हुआ धन का स्थान है। लग्न और चन्द्र दोनों के स्वामी हैं। चोरी जाने के पहले धन किस दिशा में रखा था।

मेष मीन वृष	3-4	5	6-7	8	9-10	11	= लग्न
ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर = दिशा

नष्ट माला कहाँ है -

जो पदार्थ नष्ट हो उसके अक्षर गिनकर योग करे, फिर 3 अंक और मिलाकर 5 का भाग दें, शेष से फल विचारना।

शेष 1 = घर में हैं, 2 = घर के बाहर चला गया, 3 = श्यन स्थान में, 4 = अपने से समीप अन्य स्थान में, 5 = अपने आप ही हास्य कर धन चुराया होगा अन्य कोई नहीं।

माल मिले –

चंद्र लग्नेश को लग्नेश चन्द्र को देखें।

लग्नेश या लाभेश लाभ में हो चन्द्र दृष्ट हो।

लग्न में 3, 7, 11 राशि हो शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

बलवान् गुरु लग्न में हो।

बलवान् लग्नेश लग्न में हो, शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो।

लग्न या दशम में बलवान् चन्द्र हो।

धन नहीं मिले –

उदय लग्न चर हो, तो माल नहीं मिले।

उदय लग्न द्विस्वभाव हो, तो माल नहीं मिले।

सप्तम घर में 1, 6, 10 राशि हो।

धनेश अष्टम या सप्तम हो।

मंगल सप्तम या अष्टम हो।

लग्न में राहु अष्टम सूर्य हो।

सूर्य लग्न में चंद्रमा सप्तम हो।

माल नहीं मिले –

अष्टमेश सप्तम या अष्टम भाव में हो।

लग्नेश सप्तम में वक्री सप्तमेश लग्न में हो।

लाभेश अष्टमेश युक्त हो।

सप्तम में शुभग्रह हो।

धनेश सूर्य के साथ अस्त हो चोर मिले, धन नहीं मिले।

सुनाई दे पर मिले नहीं –

मकर लग्न हो और शनि अपनी राशि को न देखे, तो चोरी की वस्तु सुनने को मिले पर मिले नहीं।

धनेश और लग्नेश पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो।

माल मिलने का समय –

जिस राशि में चन्द्र हो और चन्द्र से जितनी दूर लग्न हो, उतने दिनों की कल्पना करना। चर राशि = एक गुना। स्थिर में दुगुना। द्विस्वभाव में = तिगुना समय होगा।

जो सबसे बलीग्रह हो उसकी जो अवधि है, उसी अवधि में चोरी मिलेगी। बलीग्रह की किरणों की संख्या से दिन वर्ष आदि ग्रह के अनुसार जो भी हो लेना चाहिये।

खर्च –

12वाँ चन्द्र हो, तो चोरी गई चीज खर्च में आ गई। चन्द्र निर्बल हो, तो थोड़ा-सा माल बचा है।

चोर मिले पकड़ा जाये –

सप्तमेश सूर्य सान्निध्य से अस्तंगत हो।

सप्तमेश पापयुक्त केन्द्र में हो।

धनेश सूर्य के साथ व अस्तंगत हो।

दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो, तो राज्य से धनसहित चोर पकड़ा जाये।

लग्नेश दशमेश साथ हो, तो राज्य द्वारा चोरी मिले।

लग्नेश सप्तमेश साथ हो, तो राजद्वारा धन सहित चोर मिले।

चन्द्रमा और सप्तमेश अस्तंगत हो धन सहित चोर मिले।

चोर स्वत: धन लौटा दे –

लग्नेश लग्न में हो।

लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो।

चोरी का माल विदेश गया –

या 9 या 3 घर में धनेश हो।

या लग्न में चर राशि का चन्द्र हो।

धनेश अष्टमेश का इत्थशाल हो, तो राजा के कारण चोर नहीं मिलेगा।

आपस का चोर माल घर के समीप –

स्थिर लग्न या स्थिर नवांश हो या वर्गोत्तम हो, तो आपस ही का कोई मनुष्य चोर है। माल अपने घर के समीप ही होगा। या स्वजातीय या उच्चजातीय व्यक्ति या दास चोर होगा या माल अपने ही घर में होगा।

घर का कौन चोर है –

सप्तमेश के आधार पर चोर या उसके सहायक की कल्पना करना - गृहस्वामी या पिता चोर = सप्तमेश सूर्य हो।

माता	सप्तमेश	चन्द्र	– यह ग्रह नीच के हो तब ऐसा फल होता है इसमें ऐसा भी विचार है और इसमें
पुत्र या भाई	सप्तमेश	मंगल	पुण्य सहम भी देखकर विचार करना चाहिये।
स्वजन या मित्र	सप्तमेश	बुध	
गृह का प्रधान	सप्तमेश	गुरु	
स्त्री	सप्तमेश	शुक्र	

पुत्र या दास सप्तमेश शनि हो

गाने वाला सप्तमेश लग्न और चन्द्र को शुक्र देखें।

चोर स्त्री-पुरुष या नपुंसक है –

आर्द्रा से स्वाती तक 10 नक्षत्र हों = स्त्री चोर।

विशाखा अनुराधा ज्येष्ठ = नपुंसक चोर।

शेष मूल से खेती तक और अश्वनी से मृग तक = पुरुष चोर है।

चोर की जाति –

लग्नेश या सप्तमेश सूर्य = क्षत्रिय। चन्द्र = वैश्य, मंगल = क्षत्रिय, बुध = शूद्र, गुरु = ब्राह्मण, शुक्र = ब्राह्मण, शनि = अंत्यज।

सप्तम में जो ग्रह बलीग्रह हो या सप्तमेश से चोरी की जाति जानना चाहिये, संयुक्त ग्रह से चोर के साथी की जाति जानना चाहिये।

राशि अनुसार जाति –

लग्न मेष = ब्राह्मण चोर, वृष = क्षत्रिय, मिथुन = वैश्य, कर्क = शूद्रः अंत्यज।

कन्या = स्त्री चोर, तुला = भाई मित्र, वृश्चिक = सेवक, धनु = भाई या स्त्री, मकर = वैश्य, कुम्भ = चूहा, मीन = पृथ्वी या धरातल में वस्तु।

चोर के घर की दिशा –

लग्न से चन्द्र जिस दिशा में हो वह जिस दिशा का स्वामी हो, उस दिशा की ओर चोर का घर होगा।

चन्द्रमा लग्न = पूर्व, चतुर्थ = उत्तर, सप्तम = पश्चिम, दशम = दक्षिण दिशा में जायें।

परम लाभ –

लग्नेश या लाभेश लाभस्थान में हो, चन्द्र से दृष्ट हों, चन्द्र लग्नेश धनेश परस्पर एक-दूसरे देखते हो।

चतुर्थ या सप्तम में चन्द्र, दशम में सूर्य, लग्न में शुभग्रह हो।

सट्टा या लाटरी –

पंच में चन्द्र हो, शुक्र की दृष्टि हो, तो लाटरी आदि मिले।

लग्नेश शुभग्रह होकर धनस्थान में हो, धनेश अष्टम स्थान में हो, तो गड़ा धन मिले।

युद्ध या राजद्वार आदि में जय-पराजय –

चर राशि - शत्रु से पराजय लग्न में।

जय - बुध, गुरु, शुक्र नवम में हो।

वाद-विवाद में जीत –

विवाद में जीत - बलवान् क्रूरग्रह लग्न में हो।

विवाद में नहीं जीते - लग्न में नीच व अस्तंगत पापग्रह हो।

पराजय - सप्तम स्थान में नीच ग्रह हो।

बंदी छूटेगा या नहीं -

सौम्यग्रह लग्न में हो, तो शीघ्र छूटे।

तृतीयेश और नवमेश साथ हो।

स्थान लाभ = दशम सप्तम घर में शुभग्रह हो, तो स्थान लाभ।

नौकर आप ही आ जाये = सप्तमेश लग्न में हो।

बेचना अच्छा है = लग्न बलवान् हो।

धनेश अस्त हो, तो चोर मिले धन नहीं मिले। पाप दृष्टियुक्त चन्द्र हो, तो चोर के पास धन नहीं रहे।

चर लग्न या चर नवमांश हो, तो माल बाहर के आदमी के पास दूर है। स्थिर लग्न, स्थिर नवमांश में या वर्गोत्तम में आपस का ही कोई व्यक्ति चोर है, स्वाजातीय उच्च जाति का या नौकर चोर होगा, चोरी का माल नजदीक में है। धनेश अष्टमेश का इत्थसाल होने पर चोर पकड़ा नहीं जाये।

घर का कौन चोर है - सूर्यादिग्रहों में सप्तमेश नीच का हो, तो सूर्य से पिता, चन्द्र से माता, मंगल से पुत्र या भाई, बुध से स्वजन या मित्र, गुरु का घर का मुखिया, शुक्र से स्त्री, शनि से नौकर या पुत्र, लग्न और चन्द्र को शुक्र हो, तो गाने वाला चोर है। चोरी की वस्तु आर्द्रा से स्वाती नक्षत्र तक चोरी हो, तो स्त्री चोर। मूल से खेती तक अश्विनी से मृघशिर तक पुरुष चोर हो।

चोर की जाति - लग्नेश या सप्तमेश सूर्य मंगल हो, तो क्षत्रिय, गुरु शुक्र से ब्राह्मण, चन्द्र से वैश्य, बुध से शूद्र, शनि से अन्त्यज चोर होता है।

यदि कोई वस्तु खो गई हो, तो लग्न में पूर्णचन्द्र पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो, तो वस्तु शीघ्र मिले। लग्न से 2, 3, 5 स्थान में शुभग्रह होने पर भी शीघ्र मिले। पृष्ठोदय लग्न में भी शीघ्र मिले। लग्न में सप्तमेश और सप्तम में लग्नेश हो तब भी शीघ्र मिले।

चौथे घर से नीचे के स्थानों में सूर्य चन्द्र हों, तो वस्तु नहीं मिले।

चोरी गये पशु का प्रश्न - सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनने पर 1 से 4 नक्षत्र तक वन में, इसके आगे 6 नक्षत्र तक बगीचे के मार्ग में, इसके आगे 7 नक्षत्र तक पशु अपने घर आ जाये, इसके आगे 2 नक्षत्र में नहीं मिले, इसके आगे 1 नक्षत्र में नहीं मिले, इसके आगे 1 नक्षत्र में पशु मर गया।

धन लाभ प्रश्न - 1, 2, 4, 5 भावों में चन्द्र लग्नेश व धनेश का योग हो अथवा परस्पर दृष्टि हो, तो धन लाभ। लग्नेश धनेश लग्न में या लग्नेश लाभेश लाभ में। द्वितीयेश धन भाव में या लग्न में हो। चतुर्थ या सप्तम में चन्द्र दशम में सूर्य लग्न में शुभग्रह हो। लग्नेश और लाभेश पर चन्द्र की दृष्टि हो, तो इन योगों में धन का लाभ होता है।

सट्टा या लाटरी से धन लाभ के योग - लग्नेश का चतुर्थेश, पञ्चमेश या नवमेश दशमेश लाभेश में से किसी से सम्बन्ध हो जाय।

पञ्चम में चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो। द्वितीयेश लाभेश चतुर्थ में और चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में शुभग्रह से दृष्ट हो। राहु, केतु, बुध नवम या पञ्चम में हो।

भूमिगत द्रव्य लाभ - द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो। लाभेश और धनेश चतुर्थ में और चतुर्थेश शुभग्रह के साथ शुभग्रह से दृष्ट हो। लाभेश चतुर्थ में शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो। लग्नेश धन भाव में धनेश लाभ में लाभेश लग्न में हो। लग्नेश शुभग्रह होकर धन भाव में हो और धनेश अष्टम स्थान में हो। इन योगों में भूमि में गड़ा हुआ धन मिले।

विवाह-सम्बन्धी प्रश्न – प्रश्न लग्न में केन्द्र या त्रिकोण में शुभग्रह हो, तो विवाह शीघ्र हो। समराशि में शनि हो, तो विवाह हो। 6, 5, 10, 11 भाव में स्थित चन्द्र पर दशमेश या सूर्य की दृष्टि हो, तो विवाह हो। चन्द्रमा 3, 5, 6, 7, 11 भाव में नहीं हो और केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह हो, तो विवाह नहीं हो। शनि सप्तम भाव न हो, तो विवाह नहीं हो। लग्न से 2, 6, 8, 10, 12 भाव में शनि हो, तो वर को वधू मिले। 1, 7, 10, 11 भाव में शुक्र शुभग्रह से दृष्ट हो। लग्न से विषम स्थान में अकेला शनि हो, तो कन्या को वर मिले। पुरुष लग्न हो लग्न या लाभ में गुरु हो, तो कन्या को वर मिले।

विवाह होने के अन्य योग - लग्नेश लग्न में, सप्तमेश सप्तम में हो या लग्नेश धन भाव में हो। सप्तम और द्वितीय भाव शुभ दृष्ट हो तथा द्वितीय और सप्तमेश शुभ राशिगत हों। सप्तम में चन्द्र या शुक्र हो अथवा दोनों हों। सप्तमेश लग्न में हो या सप्तमेश शुभग्रह युक्त, 2 या 7 भाव में हो। सप्तम में लग्नेश या चन्द्र हो विवाह नहीं होने के अन्य योग - सप्तम में शनि चन्द्र हों। शुक्र व चन्द्र पर मंगल शनि की दृष्टि हो। सप्तमेश व्यय में हो। सप्तम में पापग्रह हों। पञ्चम में चन्द्र हो और 7, 12 घर में 2, 2 पापग्रह हों।

विवाह कब होगा - लग्नेश और सप्तमेश की राशि का योग करने पर जो राशि हो, उस राशि में गोचर जब गुरु आये। जन्म राशि अष्टमेश की राशि का योग करने जो राशि आये उसमें जब गोचर में गुरु आये। सप्तम या सप्तमेश पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो शीघ्र विवाह हो। शुक्र जिस राशि में हो, उस राशि के स्वामी की दशा अन्तर्दशा में विवाह हो।

लग्नेश का नवमांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में चन्द्र गुरु हों, तब विवाह हो।

शुक्र से सप्तमेश की जो दिशा हो, उसी दिशा में विवाह होगा।

सप्तम भाव में यदि ग्रह हो, उस भाव की राशि की जो दिशा हो, उसमें विवाह होगा।

यदि वह राशि चर हो, दूर देश में स्थिर हो, समीप में द्विस्वभाव हो, तो कुछ दूरी पर विवाह होगा।

स्त्री का स्वभाव व आचरण –

पतिव्रता योग - लग्न से 3, 7, 10, 11 भाव में चन्द्र गुरु से युक्त दृष्ट हो।

चन्द्रमा, सूर्य या शुक्र से युक्त दृष्ट हो। लग्नेश और चन्द्र का गुरु से इत्थशाल हो। केन्द्र त्रिकोण में गुरु हो।

पञ्चम या केन्द्र बुध गुरु हो या केन्द्र त्रिकोण व लाभ में शुभग्रह हों, तो स्त्री भाग्यवान् होगी।

षष्ठ भाव में शुक्र अखण्ड सुहागिन। षष्ठ भाव में बुध झगड़ा हो। षष्ठ भाव में चन्द्र बुध को छोड़कर अन्य ग्रह हो, तो स्त्री भाग्यवान् हो।

दूसरा पति करे - सूर्य मंगल अष्टम में हो। दूसरे भाव में राहु हो। केन्द्र राहु से युक्त दृष्ट हो। चन्द्र शनि का योग हो। मंगल शुक्र से युक्त दृष्ट हो। लग्नेश सप्तम में शत्रुक्षेत्री हो। दशम में शुक्र हो। गुरु, बुध और मंगल से युक्त हो, तो बाल्यावस्था में परपुरुष के संग हो।

स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध कैसा रहेगा -

दोनों में मित्रता - सप्तमेश लग्नेश लग्न में या सप्तम में।

स्त्री आज्ञाकारिणी - लग्न में लग्नेश हो।

पति स्त्री का आज्ञाकारी - लग्नेश सप्तम हो।

पति स्त्री के धन को भोगे - चतुर्थ स्थान शुभग्रहों से दृष्ट हो।

पति स्त्री को सब धन दें - चतुर्थ स्थान शुभग्रहों से दृष्ट हो।

रूठी स्त्री लौटेगी या नहीं -

लौट आये - पूर्णचन्द्र सूर्य से दृष्ट हो।

नहीं लौटे - सूर्य 1-2-3 घर में हो, शुक्र 5-6-7 घर में हो।

गर्भ है या नहीं -

लग्न स्थिर हो या लग्न में बुध हो या बुध की दृष्टि हो।

चन्द्र, सूर्य और शुक्र तीनों एकत्र हों।

लग्न से तीसरा शुक्र, नवम सूर्य, पंचम चन्द्र हो।

गर्भ नहीं - व्ययेश शुभग्रह युक्त व दृष्ट केन्द्र में हो।

कितने मास का गर्भ है -

लग्न से बली शुक्र जितने स्थान में हो उतने ही महीने का।

जो नवम स्थान से ऊपर शुक्र हो, तो पंचम भाव से शुक्र तक भाव गिनकर गर्भमास कहे।

प्रश्न में चन्द्रमा जिस द्वादशांश में हो उसके तुल्य राशिस्थ चन्द्रमा में नवम या दशम मास में जन्म होगा।

पुत्र या कन्या -

लग्न से 3, 9, 10, 11 घर में सूर्य शनि हो, तो पुत्र।

लग्न और लग्नेश पुरुष राशि या विषम राशि के नवांश में हो तथा विषम राशि में शनि हो, तो पुत्र होगा।

सूर्य लग्न में चर राशि का हो, तो पुत्र होगा।

रोग विचार -

रोग नाश - लग्नेश तथा चन्द्र का शुभग्रह से इत्थशाल हो।

रोग नाश - 9, 3, 6, 11 में शुभग्रह हो।

रोग नाश - स्वगृही चन्द्र 10 या 4थे घर में हो।

रोग नाश - दशमेश लग्नेश की मित्रता हो।

रोग में रोग - लग्न द्विस्वभाव हो, तो रोग में दूसरा रोग हो।

रोग बढ़े - लग्न में पापग्रह हो।

वैद्य और औषधि विचार -

वैद्य से लाभ - लग्न में शुभग्रह हो, तो वैद्य की दवा से लाभ हो।

दवा से लाभ - चतुर्थ में शुभग्रह हो, तो अच्छे वैद्य की दवा से लाभ हो।

दोष विचार -

दोष असाध्य - चन्द्र और गुरु निर्बल हो, तो रोग असाध्य हो।

किसके दोष से रोग - 8, 12 स्थान में राहु - प्रेत दोष से।

गुरु, पितर दोष। चन्द्र - जलदेवी। सूर्य -देवी। शनि - कुल देवता, बुध - भूतप्रेत बाधा। मंगल - शाकिनी दोष। शुक्र - जलदेवी का दोष। ईश्वर भक्ति से रहित ये दोष होते हैं।

रोगी की मृत्यु -

1, 7, 8 घर में पापग्रह निर्बल हो।

चन्द्रमा 4-8 घर में 2 पापग्रहों के बीच हो।

लग्न में अष्टमेश हो चन्द्र अष्टम हो।

यात्रा की चिन्ता, मेरा जाना होगा या नहीं -

जाना होगा - लग्न चन्द्र चरराशि का होकर सौम्य ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जाना होगा, जय प्राप्त होगा।

दशम या चतुर्थ में पापग्रह हो।

लग्न लग्नेश नवमेश चर राशि में हो।

नवमेश लग्न में लग्नेश केन्द्र में हो।

शीघ्र जाना होगा - लग्नेश या चन्द्रमा नवम घर में हो।

लग्न व चन्द्र स्थिर राशि में हो सौम्यग्रह से युक्त दृष्ट हो, तो जाना न हो।

दशम व चतुर्थ में सौम्यग्रह हो।

विघ्न - धनेश वक्री हो, तो कार्य सिद्ध नहीं हो।

यात्रा में सुख - दशम में शुभग्रह - कार्यसिद्ध। सप्तम में शुभग्रह - सुख से गमन।

चतुर्थ में शुभग्रह - कार्य का परिणाम शुभ होगा।

अष्टम में शुक्र बुध - सुख मिले।

यात्रा में कार्यसिद्ध होगा या नहीं -

लग्न में शुभग्रह हो, तो कार्यसिद्ध से सुख हो।

चतुर्थ में शुभग्रह हो, तो कार्यसिद्ध जय सुख।

शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो, तो शुभ कार्यसिद्ध हो।

यात्री कब लौटेगा –

जब शुभग्रह लग्न से तीसरे स्थान में पहुँचे तब यात्री लौटेगा।

जब चन्द्रमा सप्तम घर छोड़कर केन्द्र से आगे बढ़े उस समय लौटेगा।

जब सप्तमेश लग्न में आये या लग्नेश से इत्थशाल करे तब लौटेगा।

चर लग्न हो, तो विशेष फल होगा।

लग्न से सप्तम स्थान का स्वामी जब वक्री हो।

यात्री जीवित है या मर गया –

यात्री वही है जीवित है - लग्न स्थिर हो, तो परदेसी जीवित है और वहीं पर है।

बंधन - शनि केन्द्र या त्रिकोण में पापराशि में हो पापग्रह से दृष्ट हो, तो अवश्य बंधन हो।

शस्त्र से मृत्यु - अष्टम में मंगल हो तथा चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो।

खेत से लाभ या हानि –

खेती से लाभ - लग्न शुभग्रह हो।

अच्छी खेती - सप्तम स्थान में शुभग्रह हो।

अन्न आदि अच्छे हो - दशमेश दशम हो शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो वृक्ष, अन्न आदि अच्छे हो।

दशमेश 10 या 7 घर में शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो, तो बगीचा, खेत आदि में सफल हो।

पुराने वृक्ष अच्छे रहे - दशमेश वक्री न होकर अस्त हो।

कृषि खराब - सप्तम में पापग्रह हो, तो कृषि खराब हो।

कृषि में चोर आदि उपद्रव - लग्न में पापग्रह हो, तो कृषक को चोर आदि का उपद्रव होगा - हानि होगी।

वृक्षों का नाश - चर लग्न दशमेश दृष्ट हो।

वृक्ष, खेत आदि नाश - वक्री दशमेश शुभग्रह हो और वक्रीग्रह से युक्त हो।

भूमि लाभ हो –

भूमि लाभ - लग्नेश चन्द्र और चतुर्थेश परस्पर इत्थशाली हो व एक ही स्थान में हो, तो भूमि लाभ हो।

7 और 10वें भाव में शुभग्रह हो, तो गई भूमि वापिस मिले।

भाड़ा या किराया विचार –

बहुत भाड़ा मिले - केन्द्र में शुभग्रह हो, तो धन प्राप्ति हो। पापग्रह हो, तो धन प्राप्त न हो।

भाड़ा न मिले - दशम में पापग्रह हो।

फसल विचार –

शरदकाल में धान्य की वृद्धि - वृष के सूर्य के प्रवेश समय 2, 11, 5, 8, राशियों में शुभग्रह हो और 6-10, 7, 4 राशि पर पापग्रह हो, तो धान्य की वृद्धि हो।

वृषार्क प्रवेश समय चन्द्र तथा गुरु बली होकर 5-11, 8 राशि पर हो 5-8-12 राशि पर हो।

सूखा पड़े - वृषार्क प्रवेश समय 8-9-2 राशि पर पापग्रह हो या 3-8-1 राशि पर पापग्रह शुभग्रह का योग दृष्टि रहित हो।

शरद का अन्न वृद्धि - मेषार्क प्रवेश में बुध और शुक्र मीन पर और चन्द्र गुरु बलवान् होकर केन्द्र में हो शुभग्रह युक्त या दृष्टि हो।

अकाल - सुकाल विचार -

भाव सस्ता - उदय लग्न और दशम में शुभग्रह हो।

अकाल - मेषार्क प्रवेश या प्रश्न लग्न का स्वामी पापग्रह हो, पापाक्रांत बलरहित हो, तो राज भय हो, अन्न थोड़ा हो भाव मँहगा हो।

अन्न नाश - वृश्चिक का सूर्य पापग्रहों के बीच हो तथा सप्तम में पापग्रह हो।

फसल नष्ट - सप्तम केन्द्र में वृश्चिक के सूर्य से 2 पापग्रह हो, तो फसल नष्ट हो यदि शुभग्रह की दृष्टि हो, तो कहीं--कहीं फसल अच्छी भी होगी।

कूप के लिये भूमि झिर (सोती) आदि विचार -

बहुत जल - केन्द्र में शुक्र या चन्द्र हो बहुत जल निकले।

केन्द्र शनि या राहु से युक्त या दृष्ट हो, तो एक झिर में बहुत जल निकले योग कारक ग्रह जिस राशि में हो, उसके स्वभाव अनुकूल और उसकी दिशा अनुसार जल का विचार करे।

केन्द्र में चन्द्र गुरु से युक्त या दृष्ट हो, तो अपार जल निकले।

जल कैसा निकलेगा -

अच्छा जल - केन्द्र में गुरु चन्द्र हो या इनसे दृष्ट हो।

थोड़ा खारा - केन्द्र में चन्द्र बुध हो या इनसे दृष्ट हो।

खारा जल - केन्द्र में सूर्य परिवेष और धनुष हो।

कुंडली जीवित या मृतक की है -

जन्मलग्न + अष्टम लग्न + प्रश्नलग्न = x अष्टमेश ÷ लग्नेश की राशि = शेष - विषम = जीवित।

जन्मलग्न + अष्टम की राशि + प्रश्नकाल x जन्म के अष्टमेश की राशि = शेष विषम = जीवित, सम = मृतक की।

स्त्री या पुरुष की कुण्डली है -

सूर्य की राशि + राहु की राशि + लग्न की राशि अंक के योग में ÷ 4, शेष सम -2 = स्त्री। विषम 1-3 = पुरुष।

लग्न + सूर्य + राहु के राशि अंक ÷ 30 शेष विषम = स्त्री।

प्रश्न के वर्ण और मात्रा का योग + वर्तमान तिथि + वार + नक्षत्र ÷ 7 = शेष सम = स्त्री। विषम पुरुष।

ध्वज धूम आदि 8 प्रकार से आय का फल विचार -

वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श वर्ग
आय के नाम	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
स्वामी ग्रह	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	गुरु	चंद्र	राहु	बुध

इन आय के वर्ग के प्रत्येक अक्षर की पृथक्-पृथक् संख्या दी है। प्रश्नकर्त्ता का बालक आदि के मुख से प्रश्न करते समय जो अक्षर आदि में हो, उसको लेकर उनकी मात्रा अलग कर सबके अंकों का योग करना, वह अक्षर पिंड कहलाता है। या प्रच्छक से फूल-फल नदी या देवता का नाम लेने को कहे, उससे अक्षर पिंड बना लेवें। जैसे किसी ने फूल का नाम 'गुलाब' लिया। इसके अंक जोड़े ग + उ + ल + आ + ब + अ = इनके पृथक् क्षेपक होते हैं।

21 + 15 + 13 ₑ 21 + 26 + 12 = 108 और विशेष क्रिया द्वारा उत्तर प्राप्त होता है। जैसे किसी ने प्रश्न किया - वह जीवित है या मर गया? इसका क्षेपक 40 है। पिंड 108 + क्षेपक 40 = 148 ÷ 3 = शेष 1 = जीवित है। 2 = मर गया। 3 = अति कष्ट में हैं।

आय के वर्ग और उनके अंक -

आय	वर्ग	वर्ग के अक्षर										
1 ध्वज	अ	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
	अंक	12	21	11	18	15	22	18	32	25	19	25
12 धूम्र	क	क	ख	ग	घ	ङ						
	अंक	13	11	21	30	10						
3 सिंह	च	च	छ	ज	झ	ञ						
	अंक	15	21	23	21	26						
4 श्वान	ट	ट	ठ	ड	ढ	ण						
	अंक	10	13	22	35	45						
5 वृष	त	त	थ	द	धा	न						
	अंक	14	19	17	13	35						
6 खर	प	प	फ	ब	भ	म						
	अंक	28	18	26	27	86						
7 गज	य	य	र	ल	व							
	अंक	16	13	13	35							
८ ध्वांक्ष	श	श	ष	स	ह							
	अंक	26	35	35	12							

1. प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न का प्रथमाक्षर
2. जाति के आधार पर
3. समय प्रात: मध्याह्न सायं रात्रि के आधार पर

जाति ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र
पुष्प नदी देवता फल

इन का नाम लेकर प्रश्न पूछने पर चक्र से पिंड बनावे।

यदि जाति सात न हो तो प्रात: पुष्प, मध्याह्न फल अपराह्न देवता सायं व रात्रि में नदी का नाम लेने को पृच्छक से कहना चाहिये।

इन ३ आधारों पर पिंड बनाकर प्रश्न का उत्तर देना चाहिये।

प्रश्न के समय घड़ी के समय से प्रश्न लग्न कुण्डली बनाकर फलादेश की प्रक्रिया अधिक प्रसिद्ध है।

प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न का प्रथमाक्षर से अथवा जाति के आधार पर अथवा समय के आधार पर चक्र नं.-1 से पिंड निर्माण करना चाहिए। **जाति** :- ब्राह्मण (शर्मा) पुष्प, क्षत्रिय-नदी, वैश्य-देवता, शूद्र-फल। **समय** :- प्रातः-पुष्प, मध्याह्न -फल अपराह्न-देवता, सायंकाल व रात्रि-नदी। अभीष्ट दिन के दिनमान के घटी व पलों को घण्टे व मिनट बनाकर उसमें 3 का भाग देने पर जो घण्टे मिनट प्राप्त हों, उन्हें अभीष्ट दिन के स्टैंडर्ड समय के सूर्योदय काल में जोड़ने पर जो घण्टे मिनटादि प्राप्त हों, उस समय तक प्रातः काल रहेगा। प्रातः काल के समय में 3 से भाग दिए गए घण्टे मिनटादि को जोड़ने पर जो समय होगा, वह मध्याह्न काल के समाप्ति का होगा। मध्याह्न काल के समय में इसे विभाजित घण्टे मिनटादि का योग करने पर जो समय प्राप्त होगा वह मध्याह्न काल की समाप्ति का होगा। मध्याह्न काल के समय में इसे विभाजित घण्टे मिनटादि का योग करने पर जो समय होगा वह अपराह्न काल की समाप्ति का होगा।

ध्वजादि 8 आय से प्रश्नों का विचार :- वस्तु, वाहन आदि का भी पिण्डांक इस चक्र से ही निर्माण करें। प्रश्नकर्त्ता मध्याह्न काल में आया-अतःफल केला उसने बोला अतः क ए ल आ = 13+18+13+21= 65/65 पिण्डांक से प्रश्नों का उत्तर देना है। **प्रश्नकर्त्ता** वैश्य जाति से हो तो देवता के नाम से पिण्डांक बनाना चाहिए। **देवता**-शिव=श+इ+व+अ 26+11+35+12=84 पिण्डांक आय : ध्वज- अवर्ग, धूम्र-कवर्ग, सिंह-चवर्ग, श्वान-टवर्ग, वृष-तवर्ग, खर-पवर्ग, कुंजर(गज)-यवर्ग, ध्वांक्ष (कौआ)-शवर्ग। प्रश्नकर्त्ता के फल के नाम का प्रथमाक्षर ध्वज, सिंह, वृष, कुंजर में आवे तो कार्य सिद्धि, शेष आय में **असफलता का विचार प्रश्नकर्त्ता को इन 14 प्रश्न करना चाहिये**- **1.** मेरा कार्य पूर्ण होगा कि नहीं। 2. मुझे अमुक स्थन से लाभ होगा कि नहीं। 3. मेरा मनोरथ सिद्ध होगा कि नहीं। 4. व्यापार से हानि व लाभ 5. गर्भिणी के पुत्र हो। 6. परदेशी कुशल पूर्वक है। 7. सुना हुआ सत्य है। 8. युद्ध में स्वयं विजयी होवे। 9. बन्धन से नहीं छूटे। 10. साझेदारी व व्यवहार श्रेष्ठ नहीं रहे। 11. भूमि प्राप्त होगी। **12.** जल यात्रा सफल हो। 13. विवाह होगा (गज को छोड़कर) 14. स्त्री का स्वभाव व वर्ण श्रेष्ठ होगा (गज को छोड़कर) 15. **आयु विचारः**-ध्वज सिंह (100), गज (80), वृष(60) खर (40) श्वान (20) ध्वांक्ष(कौआ)(16) धूम्र (1) 16. **कार्य कब सिद्ध होगाः**-ध्वज कु.(विलम्ब से), वृष सिंह (शीघ्र), श्वान खर (अत्यधिक विलम्ब), धूम्र ध्वांक्ष (कौआ)(कार्य सिद्ध नहीं हो)। **17. कार्य कितने दिन में:**- ध्वज (दिन7), सिंह (दिन 15), वृष (1 मास), गज (3 मास), खर श्वान (6 मास), धूम्र ध्वांक्ष (कौआ) (1 वर्ष)। **18. किस देवता की पूजा से लाभः**- ध्वज (भैरव), धूम्र (जगदम्बा), सिंह (पीतनस्यादि), श्वान (बलिवैश्वदेव), वृष (चावल), खर (वरण), कु. (गुड), ध्वांक्ष (कौआ) (जौ)। **19. वर्षा कितने दिन में:**- धूम्र (दिन 7), वृष (10), श्वान (20), कु.(17), सिंह (40), खर ध्वांक्ष (कौआ)(2 मास)। 20. **परेदसी आगमनः**-ध्वज (दि. 15) नगर समीप, धूम्र (दि.7) नगर के समीप, गज सिंह (21) नगर से दूर, खर वृष (डेढ़-दो मास) रास्ते में, ध्वांक्ष (कौआ) (6 माह) वापस लौट गया, श्वान (1 मास), गज (3 मास)। **नोटः**- कार्य सिद्धि में उपरोक्त दिन की संख्या ग्रहण करें।

पिण्डांक द्वारा फल कथन : जिस प्रश्न में पिण्डांक में 3 का भाग दिया जाता है, उसमें 1 शेष में कार्य सिद्धि 2 शेष में विघ्न बाधा पूर्वक कार्य सिद्धि, ०० शेष में कार्य नहीं होता है। जिन प्रश्नों में पिण्डांक में 3 का भाग दिया हो, वे निम्नोक्त हैं। कार्य होगा कि नहीं, मुकदमें में हार-जीत (झगडा, कुश्ती, वाद-विवाद), सन्तान होगी कि नहीं, चोरी में गई वस्तु। 1. पुत्र व पुत्री होगी प्रश्न में शेष 1 में पुत्र 2 शेष में पुत्री, ०० शेष में कुछ नहीं। **2.** सन्तान होगी कि नहीं प्रश्न में 1 शेष में सन्तान होगी 2 शेष में उपाय करने से होगी ०० शेष में नहीं होगी। **3.** चोरी गई वस्तु मिलेगी कि नहीं प्रश्न में 1 शेष में मिलेगी, 2 शेष में अधिक प्रयास करने पर थोड़ी (कम) मिले, ०० शेष में नहीं मिले। **नोट** :- इन तीनों प्रश्नों में पिण्डांक में 3 का भाग दिया जाता है। **गड़ा** हुआ धन है कि नहीं : पिण्डांक में 2 का भाग देने पर 1 शेष में धन है। 2 शेष में नहीं। **रोग** नष्ट होगा कि नहीं : पिण्डांक में 2 का भाग देने पर शेष 1 में रोग नष्ट, ०० में रोग दूर न हो। **रोगी** जियेगा कि नहीं : पिण्डांक में 2 का भाग देने पर 1 शेष में जियेगा, ०० शेष में नहीं। **धन** कौन सी दिशा में गड़ा है : पिण्डांक में 4 का भाग देने पर 1 शेष में पूर्वी दिशा में 2 शेष में उत्तर 3 शेष में पश्चिम में ०० शेष में दक्षिण दिशा में धन है। **गर्भ** है कि नहीं : क्षे 26 को पिण्डांक में जोड़कर 3 का भाग देने पर शेष 1 में गर्भ है, 2 शेष में सन्देहास्पद, ०० शेष में नहीं है। **तीर्थ** यात्रा : क्षे. 39 पिण्डांक में जोड़कर 3 का भाग देने पर 1 शेष में यात्रा सफल, 2 शेष में कष्टप्रद यात्रा, ०० शेष में यात्रा नहीं होये। **कार्य** में लाभ : क्षे. 42 को पिण्डांक में जोड़कर 3 का भाग देने पर 1 शेष में पूर्ण लाभ 2 में शेष में अल्प लाभ, ०० शेष में लाभ नहीं। **किस** कार्य से लाभःपिंडाक नं.3 का भाग देने पर शेष 1 में खेती से 2 शेष में व्यापार से, ०० शेष नौकरी से।

सम्मान मिलेगा कि नहीं:- क्षेपक 41 को पिंडांक में जोड़कर 3 का भाग देने पर 1 शेष में सम्मान मिले, 2 में अधिक

चिंता बनी रहे साधारण सम्मान मिले ०० शेष में नहीं मिले। **जीवनयापन** सुख से या दुःख से :- क्षे. 38 को पिण्डांक में जोड़कर 2 का भाग देने पर शेष 1 में सुख से ०० से दुख से। **वस्तु** खरीदने से लाभ या हानि: त्रिगुणित पिंडांक में वस्तु के नाम का पिंडांक मिलाकर 1 जोड़कर क्षे. का भाग देने पर शेष ०० में लाभ, शेष में हानि। **सवारी** सुख:त्रिगुणित पिंडांक में वाहन के नाम का पिंडांक जोड़कर 1 जोड़कर 2 का भाग देने पर शेष 1 में सुख नहीं, ०० शेष में सुख मिले। **झगड़े** में हार जीत: क्षे. 39 को पिंडांक में मिलाकर 3 का भाग देने पर शेष 1 में जीत होगी शेष 2 में सन्धि, ०० शेष में हार होगी। **विवाह** होगा कि नहीं:पिंडांक में 8 का भाग देने पर 1 शेष में विवाह होगा.2 शेष में विशेष प्रयास से होगा, 3 शेष में नहीं होगा। अन्य शेष अंकों में विघ्नबाधा रहे, शुभ नहीं।

प्रश्न लग्न से फल कथन- कार्य सिद्धि चक्र 1,5,9 पर अंगुली रखने पर शीघ्र लाभ। 2,8 पर कार्य सिद्ध न हो। 3,7 पर विलम्ब से। 4,6 पर कार्य सिद्ध होवे।
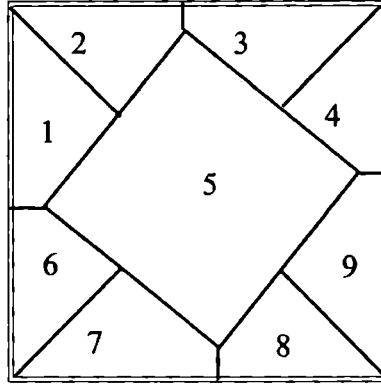
धन लाभ: लग्रेश या लाभेश लाभ स्थान में चंद्रमा से दृष्ट हो। लग्रेश धनेश व चन्द्र परस्पर एक दूसरे को देखते हो। लग्रेश लाभेश पर चन्द्रमा की दृष्टि हो। **धन** हानि: लाभेश अष्टमेश युक्त हो। लग्रेश धनेश पापग्रहों से पीड़ित हो। लग्रेश पापग्रह हो या पापग्रह लग्न में हो। लग्रेश 6,8,12 स्थान में हो। 6,7,8 स्थान में लग्रेश अथवा पापग्रह हो। नष्टधन मिले: चन्द्र शुभग्रह से इत्थशाल कर लग्न या दशम में हो। सट्टा लाटरी से लाभ: पंचम में चंद्रमा शुक्र से दृष्ट हो। द्वितीयेश लाभेश चतुर्थ में हो और चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में शुभग्रह से दृष्ट हो। राहु, केतु व बुध नवम या पंचम में हो। **भूमिगत** धन लाभ: द्वितीयेश षठ में चतुर्थेश शुभ राशि गत व शुभ ग्रह से दृष्ट हो। लाभेश चतुर्थ स्थान में शुभ राशि गत शुभ ग्रह से दृष्ट हो। लग्रेश द्वितीय में द्वितीयेश लाभ में व लाभेश लग्न में हो।

विवाह:- केंद्र या त्रिकोण में शुभग्रह हो, सम राशि में शनि हो। 5,6,10,11 स्थान में चन्द्रमा दशमेश या सूर्य से दृष्ट हो। **वर को वधू मिले**: लग्न को छोड़कर सम स्थान में शनि हो। शुक्र शुभग्रहों से दृष्ट हो। 4,7,2,8 राशि का चन्द्रमा लग्न में। लग्न, आरूढ़ और छत्र में चर राशि हो। 1,7,10,11 स्थान में शुक्र शुभग्रहों से दृष्ट हो। 7,2,3,6,10,11 स्थान में चन्द्रमा गुरु से दृष्ट हो। शीघ्र विवाह: प्रश्नलग्न में 3,5,7 ,10,11 स्थान में से किसी में चन्द्र गुरु से दृष्ट हो। 2,4,7 राशि का लग्न शुभ ग्रहों से युक्त व दृष्ट हो। विषम लग्न विषम राशि का नवमांश में चन्द्र शुक्र बली होकर लग्न को देखते हों, तो कन्या को वर मिले। सम राशि व सम राशि के नवमांश में चन्द्र शुक्र बली होकर लग्न को देखे, तो वर को स्त्री मिले। कन्या को वर मिले: लग्न से विषम स्थान मे शनि हो। पुरुष लग्न हो लग्न या लाभ में गुरु हो लग्न, आरू ढ़ व छत्र को उच्च ग्रह देखें।

चोरी का माल घर में: स्थिर लग्न या स्थिल नवमांश या वर्गोत्तम नवमांश में माल घर में ही। लग्न यदि 4,8 हो तो खोई वस्तु घर में। चोरी गया माल मिले:जिस राशि में चन्द्र उस राशि का स्वामी चन्द्रमा को पूर्णदृष्टि से देखे, तो माल मिले। लग्रेश सप्तम हो सप्तमेश लग्न में हो तो माल मिले। गुरु सप्तम में हो। आरूढ़ से दशम या चतुर्थ चन्द्र हो। अष्टमेश धनेश का ईत्थशाल हो। कन्या लग्न हो मीन आरूढ़ हो तुला लग्न हो मेष आरूढ़ में लग्न हो। सिंह लग्न हो कुंभ आरूढ़ लग्न हो। मिथुन लग्न हो धनु आरूढ़ लग्न हो। वृश्चिक लग्न हो वृष आरूढ़ लग्न हो। मकर लग्न हो कर्म आरूढ़ लग्न हो। उपरोक्त में स्वामी से युक्त दृष्टा का भी विचार करना चाहिए। माल मिले: उदय लग्न शीर्षोदय आरूढ़ पृष्टोदय हो। सप्तम में 2,7,9,11 राशि हो उदय लग्न या आरूढ़ लग्न घर में शुभ ग्रह हो। सप्तम में बलवान चन्द्र हो (क्षीण चन्द्रमा-कृष्ण पक्ष की दशमी में शुक्ल पक्ष की पूर्वी तक क्षीण चन्द्रमा इसके अलावा पूर्ण चन्द्र (बलवान))। लाभ स्थान में बलवान शुभ ग्रह हो। त्रिकोणस्थ चन्द्र पर गुरु व शुक्र की दृष्टि हो। 1,7,8,10 स्थान में चन्द्र गुरु हो लग्न से 2,3,5 स्थानों में शुभ ग्रह हो लग्रेश सप्तमेश लग्न में हो, धनेश दो या चार भाव में हो। बलवान गुरु लग्न में हो लग्रेश दशम में चन्द्रमा बलवान हो, चन्द्र जिस राशि में हो उसके स्वामी

को चन्द्रमा देखे। धन नहीं मिले: लग्नेश पापग्रह हो तथा लग्न में पाप ग्रह हो, लग्न आरूढ़, छत्र में शनि मंगल हो सप्तम में आरूढ़ हो उदय लग्न चर हो, उदय लग्न द्विसभाव हो, सप्तम में 1,6,10 राशि छत्र लग्न 6,8,12 घर में हो, लग्नेश सप्तम में हो धनेश सप्तम या अष्टम में हो, मंगल सप्तम या अष्टम में हो लग्न में सूर्य सप्तम में चन्द्रमा हो अष्टमेश सप्तम या अष्टम भाव में हो चोर पकड़ा जाए: सप्तमेश अस्त हो सप्तमेश पापयुक्त केंद्र में हो, सप्तमेश लग्नेश का इत्थशाल हो चोरी का माल विदेश में: धनेश या लग्न या तृतीयस्थ ग्रह के साथ इत्थशाल करे। चोर न मिले: धनेश अष्टमेश का ईत्थशाल हो। अविख्यात चोर:शनि सप्तम में गुरु से दृष्ट हो। सप्तमेश स्वग्रहीया उच्च का हो। चोर स्त्री या पुरुष: अश्विनी से मृगशिर तथा मूल से रेवती तक-पुरुष चोर ।आर्द्रा से स्वाती तक- स्त्री चोर। विशाखा, अनुराधा, जप नपुंसक चोर। पुरुष राशि को पुरुष ग्रह देखे-पुरुष चोर। स्त्री राशि को स्त्री ग्रह देखे तो स्त्री चोर। चोर के घर की दिशा: लग्न से चन्द्रमा जिस दिशा में उस दिशा में अथवा वह जिस दिशा का स्वामी हो उस दिशा की ओर चोर का घर जानना। लग्न-पूर्व दिशा, चतुर्थ-उत्तर दिशा सप्तम-पश्चिम, दशम-दक्षिण दिशा इनकी बीच की राशियों को कोष जानना। **वस्तु** शीघ्र मिले: लग्न में चन्द्र पर शुक्र या गुरु की दृष्टि हो। लाभ भाव में शुभ ग्रह हो सभी ग्रह 2,3,5 स्थानों में हो आरुढ से दशम या चतुर्थ में चन्द्र हो चतुष्पद विचार: दशम घर में पाप ग्रह हो तो सुरक्षित लग्न या चतुष्पद राशि में राहु को नष्ट लग्न में द्विपदराशि में राहु हो तो बन्धन में। **चोरी** गए पशु का पता: सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिने तथा गणना 1 से 9 तक-वन में 10 से 16 तक-बगीचे में, मार्ग में 17 से 23 तक-स्वयं वापस आए अंत में तीन नक्षत्रों से नहीं मिले। **विवाह** होगा:द्वितीय व सप्तम भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो तथा द्वितीयेश सप्तमश शुभ राशिगत हो। सप्तमेश लग्न में हो या सप्तम भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो। सप्तमश व धनेश केन्द्र व त्रिकोण में हो। सप्तम में लग्नेश या चन्द्रमा। विवाह नहीं होगा: प्रश्नलग्न में सप्तम में शनी चन्द्र हो। चन्द्र शुक्र पर मंगल शनी की दृष्टि हो सप्तम में पापग्रह हो। सप्तमेश व्ययभाव में हो।

विवाह कब होगा:सप्तम व अष्टम भाव की राशि संख्या के योग तुल्य वर्ष में लग्नेश सप्तमेश की राशि के योग तुल्य राशि में जब गुरु गोचर में हो। शुक्र जिस राशि में उसके स्वामी की दशा में विवाह होगा। लग्नेश से शुक्र जितना नजदीक हो उतनी जल्दी विवाह होगा। जन्मराशि व अष्टमेश राशि का योग तुल्य राशि पर गुरु गोचर में हो। **विवाह** किस दिशा में हो: शुक्र सप्तमेश की दिशा में। यदि सप्तम में पापग्रह हो तो सप्तम में राशि की दिशा में। विवाह समीप या दूर:विवाह होने की दिशा में राशि चर हो तो दूर व स्थित पर में समीप तथा द्विस्वभाव में थोड़ी दूरी । **स्त्री** का स्वभाव:लग्नेश से 3,7,10,11 स्थान में चन्द्र गुरु से दृष्ट हो पतिव्रत हो। चन्द्रमा को सूर्य या शुक्र देखे या युत हो पतिव्रत हो। लग्नेश व चन्द्रमा का गुरु से इत्थशाल हो पतिव्रता हो। केंद्र या त्रिकोण में गुरु हो पतिव्रता हो। सुहागिन:छठे भाव में शुक्र हो।

(पृष्ठ 121 से आगे)

- मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

- हम नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

- संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

- परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

- सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

- राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

-"हम बदलेंगे-युग बदलेगा" "हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा" इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

- युग निर्माण योजना

प्रच्छक के मुख में आदि शब्द पर ध्यान रहे, तो उससे प्रात:काल हो, तो ब्राह्मण से पुष्प का नाम लेने को कहे। मध्याह्न में शूद्र से फल का नाम, तीसरा प्रहर हो, तो वैश्य से देवता का नाम, संध्या हो, तो क्षत्रिय से कोई नदी का नाम लेने के कहे और उस नाम के अक्षरों पर से पिंडांक बना कर भिन्न-भिन्न प्रश्नों के अनुसार उनके क्षेपक द्वारा प्रश्न का उत्तर बताना पड़ता है।

भोजन सम्बन्धी प्रश्न –

विचार-भोजन दाता = लग्नेश। भोजन योग्य अन्न = चतुर्थेश। भोजन की इच्छा, भूख, रुचि = सप्तमेश। भोजन करने वाला = दशमेश। भोजन चिंता = दिन प्रवेश लग्न से या प्रश्नलग्न से। इनके बलाबल से प्राप्ति या अप्राप्ति का विचार करना। व इनकी प्रकृति-गुण आदि पर भी विचार करे।

जैसे लग्नेश बली शुभ स्थानगत - श्रद्धा से दाता भोजन देवे यदि निर्बल हो, तो अश्रद्धा (तिरस्कार) आदि से देवे।

चतुर्थेश बली = भोजन अन्न अच्छा मिले। निर्बल हो, तो न मिले या निंद्य अन्न मिले।

सप्तमेश बली - भोजन में रुचि अच्छी हो। निर्बल = थोड़ी भूख, अस्तंगत = मंदाग्नि।

दशमेश बली - भोक्ता प्रसन्नतापूर्वक भोजन करेगा। यदि निर्बल हो, तो भोजन में विघ्न आदि हो। इनका शुभयोग से शुभफल। पापयोग दृष्टि से अशुभ फल होता है। इसका भी विचार करे।

सुभोजन - लग्न या लाभ में शुभग्रह युक्त दृष्टि हो, तो सुभोजन मीठा, घृत-दही-दूध आदि से युक्त।

लग्न में गुरु और शुक्र हो, तो क्लेश स्थान में भी सुभोजन।

लग्न और चतुर्थ घर शुभग्रह से युक्त हो।

अच्छा रुचि से भोजन - विषम राशि को शुभग्रह देखें।

थोड़ा भोजन - समराशि पर पापदृष्टि हो।

अच्छा भोजन - चतुर्थेश चतुर्थ में बलवान् हो या स्वगृही हो।

कष्ट से भोजन - चतुर्थ में पापग्रह हो।

हर्षयुक्त भोजन - अन्न सूचक ग्रह या राशि पर शुभदृष्टि हो, तो आनंद से। यदि पापदृष्टि योग = क्रोध से भोजन मिले।

कितने बार भोजन - चतुर्थ में चरराशि = कई बार। स्थिर = 1 बार। द्विस्वभाव = 2 बार।

ठंडा या गरम भोजन - दिन प्रवेश लग्न या प्रश्नलग्न से चंद्र दशम = गरम। मंगल दशम = ठंडा या बासी भोजन।

भोजन नहीं मिले - लग्न में राहु व शनि हो, सूर्य से दृष्ट हो, तो यत्न करने पर भी उस दिन भोजन नहीं मिले और शस्त्र का भय भी होना संभव है।

उपवास व रात्रि में कुभोजन - यदि लग्न सूर्य से युक्त या दृष्ट न हो, तो उस दिन उपवास करना पड़ता है व रात्रि में कुभोजन मिलता है।

भोजन का रस - जो ग्रह लग्न को देखे और सबसे बली हो, उसका रस भोजन आदि में कहना।

या चन्द्र को जिस ग्रह से इत्थशाल हो, उसका रस।

या चतुर्थ में जो ग्रह हो, उसके अनुसार।

लग्न पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो, तो केन्द्र स्थित ग्रह से रस का विचार करना चाहिये।

सुरस-निरस - लग्न में शुभराशिस्थ ग्रह से सुरस और अशुभराशिस्थ ग्रहों से निरस भोजन होगा।

ग्रहों का रस - सूर्य = कडुवा। चंद्र = सलोना। मंगल = तीखा। बुध = मिश्रित। गुरु = मीठा। शुक्र = खट्टा। शनि = कषाय अर्थात् कांजी - सिरका आदि कुछ दिनों का बनाया हुआ।

भोजन प्रकार- भोज्य रूप सूर्य = मूल (जड़) आलू, घुइयाँ सकरकंद आदि। चंद्र = पुष्प, फूलगोभी आदि। मंगल = पत्ता, शाख-भाजी आदि। गुरु, शुक्र निष्पाप। बुध = अनेक प्रकार के व्यंजन। शनि-राहु-केतु = मांस सहित या तेल की बनी।

अन्य प्रकार - लग्नगत बलीग्रह से या लग्न में कोई ग्रह न हो, तो द्रष्टा ग्रह से विचारे। सूर्य = तिल का अन्न। चंद्र = चावल। मंगल = मसूर-चना। बुध = मूंग-राज-माष। गुरु = गेंहू। शुक्र = जौ-बाजरा आदि। शनि = कुत्थी-मक्का-उड़द आदि। राहु केतु = कोदों, सामा आदि छोटे अन्न भूसी सहित।

अन्यमत - लग्न में सूर्य मंगल = चावल का भोजन। चंद्र, शुक्र, राहु एकत्र किसी राशि पर बैठ कर सूर्य से युक्त या दृष्ट = दही-दूध-चावल मिला भोजन।

मतांतर - सूर्य को चंद्र देखे = दही मिला चावल का भोजन। शुक्र देखे = दूध मिला चावल। राहु देखे = घी मिला चावल। घी से तेल भी ग्रहण करना।

लग्न को गुरु देखे - काला उड़द, पत्ते, दाल, मछली। चंद्र देखे = शाक, कंद। शुक्र देखे = मधु, दूध, इमली। शनि देखे = ठंडा भोजन, ठंडा चावल।

मतांतर -मकर कुंभ में जो ग्रह हो उससे पूर्वोक्त फल ही कहना है।

उदयलग्न में विषमराशि या विषमग्रह = केवल भोजन। समराशि या समग्रह = साग युक्त भोजन। शनि या राहु = विषम राशि में या विषमग्रह युक्त = साग सहित भोजन। ये समराशि में समग्रह युक्त हो = केवल चावल का भोजन।

अन्यमत - सूर्य = चरपरा खड़ा खारा अन्न। मंगल - खिचड़ी और शहद। बुध = भुजे पदार्थ का व्यंजन। गुरु = खीर घी। शनि = तेल और कोदों। राहु-केतु = चना।

गुरु - उड़द के बरा और दालयुक्त। चंद्र = कंदयुक्त। शुक्र = शहद पुआ दूध से मिला व्यंजन।

ग्रह अनुसार अन्न - चतुर्थ में जो ग्रह हो, उसके अनुसार भोज्य अन्न या रस विचारे।

चतुर्थ में शुक्र - स्निग्ध अन्न। शनि = तेल पक्का अन्न। नीचग्रह = रसहीन बिना पका कुत्सित भोजन।

अन्य विचार - केन्द्र में सूर्य = गेहूँ गुड़ भात आदि। चंद्र = श्रेष्ठ अन्न दही घी तथा स्वेत अन्न। मंगल = गुड़ और हविष्य युक्त। गुरु = हल्दी चना तथा दधि आदि।

शुक्र - कोमल तथा घी युक्त। शनि = खटाई तेल तिलादि। राहु = दुर्गन्धयुक्त या अपवित्र, सरसों तथा उड़द। केतु = बहुत पदार्थों वाला भोजन।

भोजन - पापग्रह बली हों = भोजन चावल और तेलयुक्त। शुभग्रह बली = घृत सहित भोजन।

मतांतर - पापग्रह अतिबली = भोजन करने वाला पुरुष या स्त्री दुर्जन और परोसने वाला उसका सम्बन्धी नहीं। भोजन स्वादिष्ट भी नहीं होगा। बली शुभग्रह = इसके विरुद्ध फल हो।

अन्यमत - सबसे बलीग्रह पुरुष राशि में = घृत साग सहित भोजन। स्त्री राशि में हो, तो भोजन दिन को किया और साग सहित भोजन।

किसके घर भोजन - सूर्य आदि जो ग्रह उच्चादि बलयुक्त लग्न में हों, उसकी जाति के अनुसार घर में।

सूर्य - राजगृह। चंद्र = वैश्य। मंगल = क्षत्रिय। बुध = शूद्र। गुरु = ब्राह्मण। शुक्र = ब्राह्मण। शनि = निम्न।

किसके घर भोजन - लग्न में सूर्य बली = राजा आदि के घर में। सूर्य चन्द्र बली = राजा के घर। सूर्य = राजा। चन्द्र = रानी। मंगल = सेनापति। बुध = राजपुत्र। गुरु = मंत्री। शुक्र = नेता। शनि = सेवक के घर में।

अन्यमत - लग्नगत ग्रह मूल त्रिकोण में = पिता के घर व अपने घर में। मित्र राशि का या मित्रगृही = मित्र के घर। शत्रुराशि या शत्रुगृही = शत्रु के घर में।

लग्न में कोई ग्रह न हो, तो लग्न पर जिसकी पूर्ण दृष्टि हो, उसके अनुसार ग्रह जानें।

लग्न शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो बली भी हो = तो अपने घर में भोजन।

इसी प्रकार ग्रह की राशि स्वभाव आदि के अनुसार बुद्धि से विचार करे।

मूल त्रिकोण में प्राप्त ग्रह जिस घर में बैठा हो, उस घर की स्वामी के यहाँ भोजन किया अथवा अधिक बलवान् ग्रह के घर में भोजन किया।

लग्न आदि घर बलवान् हो, तो क्रम से भाव के अनुसार -

(1) निज घर में (2) कुटुम्ब (3) भाई (4) माता-पिता (5) पुत्र (6) शत्रु (7) वधू (8) कर्ज वाले से (9) माँगने से (10) राजा (11) मित्र (12) खरीदने से भोजन की प्राप्ति हो।

समय पर मित्र के साथ अच्छा भोजन किया - चन्द्र की राशि का स्वामी चंद्र के साथ हो। इसके विरुद्ध हो, तो अन्यथा फल हो।

स्त्री प्रसूता हुई या नहीं (संतान हुई या नहीं) -

प्रसूति नहीं हुई - कुंभ का शुक्र व सिंह का बुध हो।

मंगल बुध शुक्र या चंद्र धनु में हों, तो स्त्री प्रसूता हुई न होगी।

प्रसूता हुई -

वृश्चिक का शुक्र, वृष का बुध।

मंगल बुध शुक्र और चंद्र धनु राशि को छोड़कर और राशि में द्विस्वभाव राशि में हो, तो स्त्री प्रसूता हो चुकी।

शुक्र और बुध दोनों वृश्चिक में या वृष में ही हों, तो प्रसूता हुई।

स्त्री प्रसववती होगी या नहीं –

प्रसूती होगी – पंचमेश व षष्ठेश सूर्य के साथ में उदय हो गया हो या गुरु मंगल शुक्र दशम में हो।

संतान होगी – यदि पंचमेश लग्नेश व चंद्र से इत्थशाल करे तथा पंचमेश शुभग्रह हो और शुभयुक्त या दृष्ट हो।

स्त्री बंध्या – शनि और सूर्य स्वगृही हो लग्न से अष्टम में हो।

काकबंध्या – चंद्रमा और बुध अष्टम हो, तो काकबंध्या हो या कन्या ही कन्या हों।

संतान होगी या नहीं –

संतान होगी – पंचमेश शुभग्रह हो और लग्नेश व चंद्र से इत्थशाल करता हो शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो।

उदय या आरूढ़ लग्न सूर्य राहु से युक्त हो।

चंद्र उदय लग्न या आरूढ़ में शुभग्रह युक्त हो।

उदय लग्न या आरूढ़ या 5-7 घर में गुरु हो।

उदय लग्न या आरूढ़ में परिवेष राहु चंद्र गुरु हो।

पंचम या नवम घर में गुरु या शुक्र बली हो।

लग्नेश पंचमेश चंद्र परस्पर इत्थशाल करें।

लग्नेश पंचमेश का इत्थशाल हो, तो इस वर्ष निश्चय संतान हो।

लग्नेश पंचम में पंचमेश लग्न में।

पंचमेश लग्न में या लग्नेश चंद्र पंचम में।

लग्नेश पंचमेश एक ही स्थान में शुभग्रह युक्त या दृष्ट।

पंचमेश युक्त शुक्र 11-5 घर में।

पंचमेश अपने स्वामी या शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट।

पंचमेश लग्न में, लाभेश व चंद्र पंचम में।

अल्प संतान – लग्नेश व चंद्र से पंचम घर में 8-2-5-6 राशि हो या लग्न या चंद्र से पंचम पापदृष्ट हो।

विलम्ब से संतान – लग्न में पापग्रह, गुरु 4-2 घर केन्द्र में शुभग्रह हो।

दूसरे विवाह से पुत्र – चंद्र के तुल्य बुध से भी चंद्र का वर्ग पंचमभाव में सूर्य शनि से दृष्ट हो।

संतान नहीं = चंद्र बुध शुक्र द्विस्वभाव धनु राशि में हों।

पुत्र सुख की हानि – पंचम में गुरु की राशि।

संतान न हो – चन्द्र 3, 5, 9 घर में सूर्य या शुक्र से युक्त हो।

संतान होकर मरे या गर्भश्राव – अष्टम में गुरु शुक्र हो, तो संतान होकर मरे।

मंगल हो, तो गर्भश्राव हो।

संतान हानि फिर न हो – पापग्रह 2-8-12 में हो, तो प्रथम हुई संतान की हानि हो फिर संतान न हों।

स्त्रीबंध्या – अष्टम में स्वगृही सूर्य शनि।

काकबंध्या – अष्टम में चन्द्र बुध।

जप-दान आदि से पुत्रलाभ - पंचम में शनि का वर्ग बुध से दृष्ट हो सूर्य मंगल से अदृष्ट हो। एवं पंचम में बुध का वर्ग शनि से दृष्ट हो मंगल बुध से अदृष्ट हो।

संतान न हो - लग्नेश और पंचमेश परस्पर एक दूसरे को न देखे तथा लग्न और पंचम को भी न देखें।

सन्तान विचार - लग्न लग्नेश, द्वितीय द्वितीयेश, पंचम और पंचमेश एवं गुरु की स्थिति पर से विचार करना चाहिये।

संतान विचार - तिथि x 4 + 1 + वार + योग ÷ 2 = लब्धि x 3 ÷ 4 = शेष 1 = विलम्ब से हो, 2 = अभाव। 3 = प्राप्ति। 4 = शीघ्र प्राप्त हो।

लड़की को कैसी सन्तान होगी - प्रश्नलग्न में या प्रश्नमुहूर्त में कोई स्त्री या कन्या जैसी सन्तान लिए अकस्मात ज्योतिषी के समीप आ जाये वैसी सन्तान होगी अर्थात् पुत्र लिए हुए हो, तो पुत्र। कन्या लिए हुए हो, तो कन्या होगी।

गर्भ है या नहीं -

गर्भ है - प्रश्न लग्न में लग्नेश और चन्द्र पंचम हो।

या पंचम घर में इनकी दृष्टि हो।

सप्तमेश लग्नेश पंचम घर में या सप्तमेश पंचमेश लग्न में।

केन्द्र में लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल हो।

केन्द्र में लग्नेश और चंद्र दोनों ही पंचमेश से इत्थशाल करते हों।

लग्न स्थिर हो या लग्न में बुध हो या बुध की दृष्टि हो।

लग्न लाभ या पंचम में बली शुभग्रह हो अस्त वक्री या नीच के न हों।

लग्न आरूढ़ या छत्र में राहु हो।

लग्न व चंद्र से 9-5-7वें घर में गुरु युक्त या दृष्ट हो।

चंद्र शुभग्रहों से युक्त दृष्ट कहीं भी हो।

चंद्र सूर्य और शुक्र तीनों एकत्र हों।

उदय लग्न या आरूढ़ लग्न से 4-5-9 घर में राहु।

गर्भ है या नहीं - ध्वज आदि में बताये अनुसार वर्ग का पिंडांक ले लेवे।

(पिंडांक + 26 क्षेपक) ÷ 3 = शेष 1 = गर्भ है, 2 = संदेह है। शेष 0 = गर्भ नहीं है। यहाँ पिंडाक में 26 क्षेपक जोड़ कर 3 का भाग देकर शेष से उपरोक्त फल जानना चाहिये।

(वर्तमान वार x 3 ÷ वर्तमान तिथि) ÷ 2 = शेष 1 गर्भ है, शेष = 2 गर्भ नहीं है।

गर्भ नहीं है - लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल आपोक्लीम में हो और पंचमेश लग्न व पंचम को न देखें।

लग्न से तीसरा शुक्र, नवम सूर्य, पंचम चंद्र हो।

चंद्र का पापग्रह के साथ इत्थशाल हो।

क्षीण चंद्र के योग से भी विचार करना चाहिये।

गर्भ नाश तो नहीं होगा -

गर्भ स्थिर रहे - पंचमेश शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और शुभग्रह बलवान् भी हों।

व्ययेश शुभग्रह युक्त व दृष्ट केन्द्र में हो।

गर्भ (पात) गिरे -पंचम ग्रह का नवांश जितने पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, उतने गर्भ गिरें यदि शुभग्रह की दृष्टि न हो, तो ऐसा योग होता है। पापग्रह पंचम में हो और लग्नेश भी अशुभ हो तथा चंद्रमा पापग्रह से इत्थशाल करे।

गर्भ नष्ट होगा - चर लग्न में पापग्रह चंद्र से इत्थशाल करता हो।

लग्नेश और चंद्र का नीचादि पाप या वक्री ग्रह से इत्थशाल हो।

पंचम स्थान में पापग्रह की दृष्टि हो।

चंद्र का चर लग्नेश तथा वक्री ग्रह से इत्थशाल हो।

गर्भ गले - अष्टम मंगल हो।

जमीन खोदने पर भीतर क्या मिलेगा -

प्रश्न समय मनुष्य की छाया पाँव से नापकर उसमें उदय लग्न की संख्या और 28 मिलाकर योग में 13 गुणाकार 16 का भाग दे। शेष 1-कपाल निकले। 2-हड्डी। 3-ईंट। 4-ठीकरी। 5-लकड़ी। 6-मूर्ति। 7-राख। 8-कोयला। 9-मृतक शरीर। 10-नाज। 11-धन। 12-पत्थर। 13-मेंढ़क। 14-सींग। 15-मरा कुत्ता। 16-मनुष्य का बाल। इसमें धन-धान्य अशुभ है। शेष शुभ है।

शल्य जनाने का अन्य प्रकार -

प्रश्नकाल का लग्न जो है, उसमें कौन नक्षत्र आता है देखो वह नक्षत्र उपरोक्त शल्यचक्र में जहाँ कृतिका लिखा है, वही नक्षत्र लिखकर आगे क्रमानुसार नक्षत्र उपरोक्त विधि से भरकर उसमें ग्रह भी लिख दें। जिस नक्षत्र पर चंद्र हों उस स्थान में शल्य होगा। चक्र में भरने का क्रम यहाँ अंकों में देकर बताया है, उस क्रम से नक्षत्र क्रमानुसार लिख लेना चाहिये। जहाँ 1 दिया है वहाँ से लिखना आरम्भ करना चाहिये।

27	28	1	2	3	14	15
26	7	6	5	4	13	16
25	8	9	10	11	12	17
24	23	22	21	20	19	18

शल्य की गहराई -

शंकास्थान की लम्बाई-चौड़ाई गज (2 हाथ) से नापकर लम्बाई-चौड़ाई का गुणा करने से वर्ग गज में 28 का भाग दे, लब्धि गज आयेगा, शेष के भी बित्ता आदि निकाल ले, 2 बित्ता का एक हाथ। 4 गिरह = 1 बित्ता। इस प्रकार लब्धि गज हाथ बित्ता आदि जो प्राप्त हो, उतने गहराई पर शल्य मिलेगा।

अन्य प्रकार - शल्यसूचक ग्रहों की किरणें और उस राशि की किरणें जिस पर यह ग्रह हो जोड़ने से जो प्राप्त हो उतने नीचे शल्य है। उच्च क्षेत्रीग्रह = उतने बित्ता। स्वगृही हो = हाथ। मित्रगृही = पुरुष। शत्रु या नीचक्षेत्री = बहुत गहराई पर मिले।

कुंडली जीवित या मृतक की है -

जन्मलग्न + अष्टमलग्न + प्रश्नलग्न = योग x लग्नेश की राशि = शेष - विषम = जीवित।

कुंडली जीवित या मृत की है (अन्यमत) -

जन्मलग्न + अष्टम की राशि + प्रश्नलग्न x जन्म के अष्टमेष की राशि = शेष विषम = जीवित, सम = मृतक की।

अन्य प्रकार = जन्म लग्न + प्रश्नलग्न + जन्म अष्टमेश की राशि x अष्टमेश की राशि ÷ प्रश्न समय जिस नक्षत्र में हो वह संख्या = शेष विषम = जीवित, सम = मृत जाने।

स्त्री या पुरुष की कुण्डली है -

सूर्य की राशि + राहु की राशि + लग्न की राशि अंक के योग में ÷ 4 = शेष सम 0 - 2 = स्त्री। विषम 1-3 = पुरुष।

लग्न + सूर्य + राहु के राशि अंक ÷ 30 शेष विषम = स्त्री। सम = पुरुष।

प्रश्न के वर्ण और मात्रा का योग + वर्तमान तिथि + वार + नक्षत्र ÷ 7 = शेष सम = स्त्री। विषम = पुरुष।

मेरा जन्म नक्षत्र क्या होगा मुझे मालूम नहीं -

(1) आरूढ़ से उदय लग्न तक संख्या x 2	इन तीनों को जोड़कर
(2) उदय लग्न के दूसरे घर से मेष तक संख्या	27 का भाग देने से
(3) और वृष के आरूढ़ के 12वें घर तक संख्या	जन्म नक्षत्र होगा।

इत्थशाल आदि योग

ताजिकोक्त 16 योग फारसी भाषा के हैं, जिसका वर्णन उदाहरणसहित वर्षफल खंड में दे दिये गये। जिनका उपयोग फलित में कई स्थान पर हुआ है। प्रश्नखंड में भी उनका उपयोग हुआ है। आशा है कि पाठक वर्षफल खंड में उसका अध्ययन कर चुके होंगे। प्रश्नखंड में मुथशिल (इत्थशाल) और इशराफ योग का उपयोग हुआ है, उनको यहाँ भी दे देते हैं, जिनको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

मुथशिल - मुंथशिल = इत्थशाल = इत्तिसाल = प्राप्त करना ये शुभ योग है, यह संयोजक है। इसके 4 भेद हैं।

मुंथशिल (इत्थशाल) = मिलाप -

इस योग में पहले यह देखना चाहिये कि ग्रह शीघ्र या मंदगामी है और ग्रह के वर्तमान में कितने अंग हैं।

शीघ्र गति ग्रह - दो ग्रहों में से जिसकी गति अधिक हो, वह शीघ्रगति वाला ग्रह है।

मंद गति ग्रह - दो ग्रहों में से जिसकी गति अल्प हो (मंद हो) वह मंदगति वाला ग्रह है।

यहाँ वर्तमान में गोचर के अनुसार पंचांग में जो ग्रह की गति दी हो, वही गति लेना चाहिये।

मंदगति वाला ग्रह बहुत अंश का होकर आगे हो और शीघ्रगति वाला ग्रह अल्प अंश के पीछे हो और दोनों ग्रहों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो, तो मुथशिल योग होता है। इसमें शीघ्रगति ग्रह अपना तेज (सामर्थ्य) मंदगति ग्रह को दे देता है। घनभाग = बहुत अंश। मंद भाग = अल्प अंश।

ग्रहों की गति = एक राशि में चलने का समय -

चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि
21	30	30	30	45	360	900
दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन

यहाँ शीघ्रगति ग्रह चंद्र-सूर्य-बुध-शुक्र-मंगल है, मंदगति ग्रह गुरु-शनि हैं। इनमें भी शनि से गुरु शीघ्रगामी है। गुरु से मंगल शीघ्रगामी है, मंगल से सूर्य-बुध-शुक्र शीघ्रगामी है। इन सबसे चंद्र शीघ्रगामी है। एक राशि को पार करने के लिये जिसे अधिक समय लगता है, वह मंदगति वाला ग्रह मंदग्रह या मंदी ग्रह है। जिसे थोड़ा समय लगता है, वह शीघ्रगति वाला ग्रह शीघ्र ग्रह या शीघ्रगामी ग्रह है।

इस प्रकार परस्पर दृष्टि करने वाले दो ग्रह हो। इनमें एक की गति मंद और दूसरे की गति शीघ्र हो। यह पंचांग से देख लेना चाहिये। इन दोनों ग्रहों में से उनके अंशों पर विचार करना। यदि शीघ्रगामी ग्रह के अल्प अंश हैं और मंदी ग्रह के अधिक अंश है और शीघ्रगामी ग्रह से मंदी ग्रह आगे हो और दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो, तो मुथशिल योग हो जाता है। इसमें शीघ्रगामी ग्रह मंद ग्रह को अपना तेज दे देता है।

ग्रहों के दीप्तांश -

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	15	12	8	7	9	7	9

यहाँ शीघ्रगामी ग्रह के आगे या पीछे विचारकर शीघ्र गति ग्रह के अंश के भीतर दीप्तांश लेना अर्थात् जो ऊपर बताये दीप्तांश के अंश दिये गये हैं, उनसे दोनों ग्रहों के अंशों का अंतर विचारना। दोनों ग्रहों के अंशों का अंतर इनसे अधिक नहीं होना चाहिये।

रोग आराम न हो - आरूढ़ अष्टम घर हो, चंद्र उससे अष्टम हो या अष्टम घर या चंद्रराशि या अंग स्पर्श से जो राशि ज्ञात हो, उस पर केवल पापग्रह हो, तो आराम न हो।

मरण - आरूढ़ मरण स्थान वहाँ से अष्टम चंद्र पापदृष्ट हो।

मरण - अष्टम और आरूढ़ लग्न पापयुक्त हो या दृष्ट हो।

परदेश में मरण - निर्बल सौम्यग्रह 6-8-12 में अशुभग्रहों से दृष्ट हो, सूर्य और चंद्र पापग्रह युक्त हो, तो दूर देश गया हुआ मर जाता है।

रोग से पीड़ित - शनि नवम में जो पापग्रह युक्त हो शुभ दृष्टि नहीं हो।

मरण - शनिपापग्रह युक्त शुभग्रह सहित अष्टम में हो।

जीवन-मरण विचार - पूर्व बताये ध्वज आदि के वर्ग के अक्षरों का पिंड लेना (अक्षर पिंड + 40 क्षेपक) ÷ 3 = शेष 1 जीवित है। 2 = कष्ट साध्य बहुत प्रयत्न करने से बचे। शेष = 0 मरण होगा या मर गया।

अन्यमत 0 (प्रश्न अक्षरों के वर्णांक ध्रुवांक x 2 + मात्राएँ 24) ÷ 3 = शेष 1 जिये। 2 = अति कष्ट। 0 = मरे।

मृत्यु अवधि - प्रश्न आलिंगति = 1 दिन। अभिधूमित = 1 मास। दग्ध = 1 वर्ष।

आरूढ़ या मृत्यु घर को जो ग्रह देखते हैं, उनकी जो अवधि वर्ष मास दिन घटी की है, उस अवधि में मृत्यु हो।

प्रश्नकाल में चंद्रमा उदय लग्न में हो और पापग्रहों से युक्त हो या उदय लग्न से छठे घर में चंद्र हो और सातवें घर में पापग्रह हो, तो जो ग्रह चंद्र को देखते हैं, उन दृष्टा ग्रह की जो अवधि है, उसमें मृत्यु हो।

10 दिन में मृत्यु-लग्न से सातवें घर में पापग्रह हो और तीसरे घर में सूर्य हो। तीसरे घर में सूर्य, दशम पापग्रह। सप्तम में पापग्रह।

14 दिन में मृत्यु-लग्न से दूसरे स्थान में पापग्रह हो।

8 दिन में मृत्यु-सूर्य मंगल शनि राहु आरूढ़ से अष्टम घर में हो।

7 दिन में मृत्यु-शुक्र और गुरु तीसरे स्थान में हो।

मतांतर = दशम घर से तीसरे घर में शुक्र-गुरु हो।

लग्न में चौथे आठवें पापग्रह हो।

3 दिन में मृत्यु-सूर्य मंगल शनि या राहु 2, 7 या 10 घर में हो।

दशम में पापग्रह हो।

उसी दिन मृत्यु-दशम में सूर्य वा राहु और सप्तम में मंगल या शनि हो।

मृत्यु कहाँ होगी - अष्टम घर में स्थिर राशि = स्वदेश। चर = परदेश। द्विस्वभाव = निकट के देश में मृत्यु हो।

बाधा -प्रश्नसमय पृथ्वीतत्त्व-अपने प्रारब्ध का रोग है। जलतत्त्व हो = मातृकाओं का। अग्नितत्त्व = शाकिनी या पित्त दोष से रोग की पीड़ा है।

रोगी जीये - पृच्छक दाहिने शून्य अंग की ओर आया हो पश्चात् पूर्ण अंग की ओर (चालू स्वर) आकर बैठ जाय तो रोगी निश्चय जी जायेगा। यदि जिस अंग में स्वर स्थित है, उसी अंग की ओर बैठा हुआ प्रश्न पूछे, तो वह रोगी अवश्य जियेगा।

यदि स्वर दक्षिण नाड़ी को बहता हो प्रच्छक के मुख से अचानक वचन निकले तो वह जियेगा।

मरे - जीव (स्वाश) चंद्रमा में स्थित हो और प्रश्नकर्ता सूर्य की ओर स्थिर हो, तो कितनी ही दवा हो, वह मरेगा अवश्य।

यदि जीव पिंगला में स्थित हो और प्रच्छक वाम ओर बैठकर पूछे तो उपरोक्त फल हो।

शगुन-प्रश्न समय- कोई शस्त्रधारी दिखाई पड़े, संन्यासी, विधवा, लंगड़ा या दु:खित या बहेलिया या शत्रु या काष्टभार लिये या हाथ में डण्डा लिये कोई रस्सी या सूत बाँटता दिखे या नेत्र मसलता या टांगों को पकड़े हुए या लेटे हुये प्रश्न करे या तेल लगा रहो हो, बाल बनवाता हो इत्यादि अपशगुन दिखे तो रोगी की मृत्यु संभव है।

रोग कब अच्छा होगा - सबसे बलवान् ग्रह की जो अवधि है, उस अवधि में रोग जायेगा।

6-8 स्थान में शुभग्रह जितने दिन हो उतने दिनों में रोग दूर होगा।

चंद्ररोग स्थान को देखे और चंद्र को जो ग्रह देखें उसके जितने वर्ष मास दिन आदि हैं, उतने दिन में रोग दूर होगा।

अब नक्षत्रों से रोग की उत्पत्ति हो और कितने तक कष्ट भोगना पड़ेगा यह चक्र दिया जाता है।

इन नक्षत्रों के इतने चरणों में कोई बीमार हो, तो नीचे के चक्र के दिनों तक कष्ट होगा। अधिक कष्ट के दिन अन्यमत से अंकों में भी बताया है और उसके आगे बताये दान से कष्ट शांत होगा।

क्रम	नक्षत्र	1 चरण दिन	2 चरण दिन	3 चरण दिन	4 चरण दिन	1 चरण	2 चरण अन्य	3 चरण मत	4 चरण	कष्ट दिन
1	अश्वि0	9	13	13	3	9	11	10	20	9
2	भरणी	11	13	27	17	0	80	40	11	11
3	कृतिका	9	8	25	14	9	11	16	28	9
4	रोहि0	7	20	4	34	7	9	18	30	7
5	मृग	3	18	22	28	9	5	17	10	10
6	आर्द्रा	1	27	28	17	0	18	0	0	मृत
7	पुनर्व	7	5	18	28	7	14	2	21	7
8	पुष्य	7	17	24	19	7	7	20	21	7
9	श्ले0	6	0	0	0	0	7	41	0	मृत
10	मघा	20	16	18	28	15	7	17	20	20
11	पूफा	1	18	24	16	0	15	0	30	मृत
12	उफा	7	15	29	28	7	14	6	60	7
13	हस्त	15	23	14	26	15	17	15	0	15
14	चित्रा	11	18	16	15	11	9	9	16	11
15	स्वाती	1	22	15	24	60	17	30	0	मृत
16	विशा0	14	6	28	19	15	0	4	13	15
17	अनु0	1	26	14	26	60	12	36	60	स्थिर
18	ज्ये0	6	15	28	17	69	9	6	4	मृत
19	मूल	9	30	19	11	0	9	15	6	9
20	पूषा	1	26	17	18	0	15	24	10	मृत
21	उषा	3	15	26	17	30	24	26	16	30
22	श्रवण	11	26	14	29	60	24	6	9	11
23	धनि0	15	18	26	25	15	4	20	21	15
24	शत0	12	16	18	16	0	45	3	22	11
25	पूभा	1	14	1	19	0	12	21	19	मृत
26	उभा	7	13	26	18	10	1	9	15	7
27	रेवती	1	28	20	40	18	10	19	20	स्थिर

ग्रहशांति के निमित्त दान -

1 अश्वि = ब्राह्मण भोजन। 2 भर० = अन्नदान गौदान। 3 कृत्तिका = सुवर्ण दान। 4 रो० = घृतदान। 5 मृग = तिलदान। 6 आर्द्रा, गौदान। 7 पुन० = पीतल दान। 8 पु० = चावल अन्न तिल। 9 श्ले० = गौ भैंस दान, मृत्युंजय जप। 10 मघा = वस्त्र भोजन। 11 पूफा० = ब्राह्मण भोजन। 12 उफा० = अन्न। 13 ह० = तिल। 14 चित्रा = दुग्धदान। 15 स्वाती = घी गौ। 16 विशा = सोना, गौ। 17 अनु० = घी गौदान। 18 ज्ये० = तिल, उपानह। 19 मूल = गौ चाँदी। 20 पूषा = गौदान मोती। 21 उषा = ब्राह्मण भोजन। 22 श्रव० = नारियल। 23 घनि० = अन्न घोड़ा। 24 श० = भोजन अन्न। 25 पूभा० = अन्न भोजन। 26 उभा० = अन्न। 27 रे० = वृषभ।

ग्रह शान्त्यर्थ प्रत्येक ग्रह के निम्नोक्त यन्त्र हैं। जिस ग्रह का जो यन्त्र है, वह उस ग्रह के वार को धारण करें। उस वार में यदि विंशोत्तरी दशा में जिन नक्षत्रों से संबन्ध है, उनमें से कोई नक्षत्र उस ग्रह के वार में पड़ जाय, तो वह अत्युत्तम मुहूर्त होता है। यन्त्र धारण के पूर्व उस ग्रह की वस्तुओं का यथाशक्ति दान कर इष्टदेव का स्मरण कर यन्त्र धारण करे। अधिक जानकारी के लिये किसी दैवज्ञ से परामर्श कर लें।

सूर्य का यन्त्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

चन्द्र का यन्त्र

7	2	9
8	6	4
3	7	5

भौम का यन्त्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

गुरु का यन्त्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

शुक्र का यन्त्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

बुध का यन्त्र

9	4	11
10	8	6
5	12	7

शनि का यन्त्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

राहु का यन्त्र

13	8	15
14	12	10
9	16	11

केतु का यन्त्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

ग्रहों की शान्ति और दान के अतिरिक्त मुख्य तथ्य स्मरण रखने योग्य है कि गायत्री महामंत्र की साधना, ध्यान, जप ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है, जिसका प्रमुख कारण है, गायत्री मन्त्र के देवता - सविता। 'सविता' सौरमंडल के अधिष्ठाता हैं, उनकी प्रसन्नता से अन्यान्य ग्रहों का अनुकूल होना था प्रतिकूलता कम होना स्वाभाविक है। गायत्री मन्त्र की साधना से सविता देवता - सूर्य देवता की अनुकूलता-प्रसन्नता सहज संभव है। यथा :-

महामंत्र जितने जगमाहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥

गायत्री महामंत्र का शाब्दिक अर्थ है - उस प्राणस्वरूप, दु:खनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतरात्मा में धारण करते हैं, वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे। दैवज्ञ (भविष्यफल करने वाला) बनने का भी यही मूलमंत्र है। नित्य प्रति 11 माला का जप करने मात्र से देवत्व की अभिवृद्धि सहज संभव है।

माँ गायत्री महामन्त्र के प्रचण्ड तेज से अमंगल करने वाले सभी अशुभ मुहूर्त्त एवं अशुभ योगादि सभी दोष भस्म हो जाते हैं। जैसे कि हमारे ऋषियों ने कहा भी है।

मुहूर्त्तयोगदोषा वा येऽप्यमंगलकारिणः।
भस्मतां यान्ति ते सर्वे गायत्र्यास्तीव्रतेजसा॥

ग्रहों के प्रभावशाली उपचार:- **सूर्य-** बहते पानी में गुड़ प्रवाहित करें। **चन्द्र-** दूध या जल से भरा पात्र सिरहाने रखकर प्रात: उस दूध या जल से बबूल का पेड़ सींचें। **मंगल-** बहते पानी में बताशा बहायें। **बुध-** तांबे के पात्र में छेदकर पानी में प्रवाहित करें। **गुरु-** केसर का सेवन करें। नाभि या जीभ पर लगाएँ। **शुक्र-** गोदान करें अथवा ज्वार या चने का चारा दान करें। **शनि-** तैल का छायादान लोहे के पात्र में काँसे का पात्र का ढक्कन लगाकर शुक्रवार की रात्रि में सिरहाने रखें। शनिवार को प्रात: उठते ही उसमें मुँह देखकर दान करें।

नीच ग्रहों का उपाय:- **सूर्य-** चावल दूध में गुड़ मिलाकर खाएँ। स्कूली बच्चों को गुड़ मिश्रित गेहूँ का पदार्थ खिलाएँ। **चन्द्र-** चावल का भोजन, श्वेत वस्त्र धारण, सफेद चन्दन लेपन, मोती चाँदी की अँगूठी में। **मंगल-** मंगलवार को मसूर की दाल न खाएँ। पानी में तिल गुड़ की रेवड़ी बहाएँ। **बुध-** घर की छत पर चौड़े पत्ते वाले पौधे लगाएँ। घर के पास बाँस न रहे। बुधवार को भीगे हुए मूँग का दान करें। **गुरु-** पीत वस्तुएँ ब्राह्मण को दें। **शुक्र-** दही और लाल ज्वार मंदिर में चढ़ाएँ। श्वेत रेशमी वस्त्र दान करें। बादाम व तेल से बने पदार्थ सेवन करें। **शनि-** शनिवार को तेल, उड़द, शराब, माँसादि का सेवन न करें। श्वेत वस्त्र में काले तिल बाँधकर जल में प्रवाहित करें, रेवड़ी दान करें। **राहु-** बादाम, जौ, सरसों का दान। **केतु-** नीच का हो तो स्वर्ण भष्म का सेवन करें। पुरोहित को केला, गेहूँ, स्वर्ण, गुड़, काला-सफेद कम्बल दान करें। कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएँ।

सक्षिप्त हस्तरेखा विज्ञान

भारतीय मतानुसार स्कंद पुराण काशीखण्ड, भविष्य पुराण, गुरुड़ पुराण, विष्णु पुराण, धर्मोत्तर पुराण, वहन्नारदीय पुराण, गर्ग संहिता, संहिता वारही संहिता वृहत्संहिता, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद् भागवत, कात्यायन ऋषि समुद्र ऋषि पाराशर ऋषि सामुद्र तिलक वाराह मिहिर रचित ग्रन्थ हेमाद्रि विवेक विलास आदि भारतीय ग्रन्थों से संक्षिप्त विवरण के रूप में योगों का संकलन किया है तथा पाश्चात्य देशीय विद्वानों में Practical Palmistry (pysainigermath) Gheivo's Language of the hand./ Hands up (By Capinivequin) Paimistry (By Eimojeen) आदि अनेक विद्वानों की ग्रन्थ रचना के आधार पर हस्तरेखा के योगों का संकलन किया गया है। सबसे अधिक महत्व की बात यह भी है कि परम पूज्य गुरुदेव युगद्रष्टा वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की सन् 1956 में लिखी हस्त रेखा की पुस्तक के विशिष्ट योगों का भी समावेश किया है जो अत्यन्त चमत्कारिक है। इस पुस्तक के विभिन्न योग भी इसमें समावेशित है। पुरुष स्त्री के अंगों के लक्षण उन पर तिल,मस्से क्रॉस ट्रार वृत्त जाल द्वीप त्रिकोण समकोण आदी तिरछी रेखा, मत्स्य गदा त्रिशूल वज्र शंख, चक्र, अंकुश आदि के चिन्हों का वर्णन भारतीय मतानुसार व पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार इस संदर्भ में संक्षिप्त रूप से किया गया है।

चिह्न :- नक्षत्र, द्वीप, समकोण, त्रिभुज चिह्न जिस रेखा पर अथवा उसके समीप हो तो उस रेखा के शुभ फल को बढ़ाते हैं। दाग, गुणक, जाल चिह्न रेखा के गुण धर्मों की न्यूनता करते हैं। भारतीय पद्धति के अनुसार मछली का आकार हाथ में कार्य सिद्धिप्रद होता है। धनी व संतान वाला होता है। तराजू, मकान, वज्र के चिह्न व्यापार से लाभ, कमल, धनुष, तलवार, चक्र, पुष्प चिह्न धनी, स्वस्थ व योद्धा बनाते हैं। त्रिशूल चिह्न सात्विक प्रकृति, राजदरबारी, अंकुश कुण्डल राजनेता राजमंत्री, पर्वत कंकण पंख चिह्न पराक्रमी, यशस्वी, विजयी, त्रिकोण मंदिर हाथी, घोड़े के चिह्न धनी, सुखी समृद्धिशाली बनाते हैं। ''अंगूठे के बीच में जौ का चिह्न वैभवशाली बनाता है। तर्जनी और मध्यमा की जड़ में जौ का चिह्न दाम्पत्य जीवन का सुख प्रदान करता है। मछली की आकृति से यश का, हथियारों से वीरता, कोठरी से धन का, त्रिकोण से स्वास्थ्य का परिचय प्राप्त होता है'' अंगूठे की जड़ में 4 अंक जैसा चिह्न निष्ठुरता, क्रुरता और लड़ाई-झगड़े की प्रवृत्ति बनाता है। कलाई में से कटा हुआ त्रिकोण का चिह्न जीवन का अधिकांश भाग विदेश में व्यतीत करता है। अनामिका अंगुली के तीसरे पोरवें में दो खड़ी रेखा कुशाग्रबुद्धि, कुशलता व पराक्रमी का योग बनाती है। मध्यमा अंगुली की जड़ में दो खड़ी रेखा परिश्रमी व उत्साही बनाती है। कलाई पर सांप का चिह्न चोरी, छल, कपट व नीच कर्म की प्रवृत्ति बनाता है। कनिष्ठिका के तीसरे पोरवें में गुणित का चिह्न मंद बुद्धि व संशयशील प्रवृत्ति बनाता है। अनामिका अंगुली की जड़ में टेढ़े-मेढ़े रेखा के चिह्न भोग-विलासिता में रुचि दर्शाते हैं।

अंगूठे के मध्य में सर्प की जैसी टेढ़ी-मेढ़ी रेखा वाले व्यभिचारी होते हैं। पहले और दूसरे पोरवे की मध्य रेखा को काटती हुई खड़ी रेखा किसी भी अंगुली में हो तो वह रेखा धन-वैभव और योग की प्रतीक होती है।

दार्शनिक हाथ - ऐसा हाथ प्राय: लम्बा और नुकीला होता है, अंगुलियों की गाठें उन्नत निकली हुई और नाखून लम्बे होते हैं। बीच में झुका हुआ होता है। इस आकार के हाथ वाले व्यक्ति बुद्धिमान, महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ता, विचारक, अध्यात्मवादी होते हैं, उनका जीवन अर्थ प्रधान नहीं होकर बौद्धिक विकास में तल्लीन होता है। कम बोलते हैं और चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी होती है। हथेली का आगे का भाग कम चौड़ा, अंगुलियाँ पुष्ट, किन्तु नाखूनों तक पहुँचने तक नुकीली होने से इच्छा शक्ति और मन की सूझबूझ की प्रधानता होती है ये लोग विलासी आराम पंसद व आलसी होते हैं। परिश्रम पूर्ण कार्य नहीं कर पाते, ऊपरी दिखावा अधिक व ठोस योग्यता की कमी होती है। इनकी मैत्री या प्रेम भी स्थिर नहीं होता, संगीत में रुचि रखने वाले उदारचित्त तथा सहानुभूति रखने वाले होते हैं। जिनका हाथ लम्बा, पतला और कोमल होता है, अंगुलियाँ भी लम्बी पतली तथा नाखून लम्बे बादाम के आकार

होते हैं वे कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं होते, भाग्यवादी होते हैं। चिकनी अंगुलियाँ होने पर व्यक्ति अत्यन्त गंभीर कार्यदक्ष, सत्यवादी, उच्च विचार, तत्त्वज्ञानी, परोपकार में खर्चा करने वाले होते हैं। अंगुलियों में गांठे उठी हुई होने से विश्लेषणकर्त्ता अंगुलियों का अग्रभाग चौकोर होने से या नुकीला होने से आत्मबोध की रुचि को बढ़ावा मिलता है, वर्गाकार अंगुलियों से धैर्य बना रहता है।

3 चमसाकार-मध्यम आकार की अंगुलियाँ कुछ टेढ़ी-मेढ़ी, मुड़ी हुई और कलाई के पास हाथ फैला हुआ अथवा अंगुलियों की जड़ के पास फैला हुआ होता है। यदि अंगुलियों के पास फैला हुआ हो तो आविष्कारक प्रवृत्ति को उपयोगिता का रूप देने में विशेष सफल होते हैं। तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति आविष्कारक कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। कल-कारखाने, रेल, जहाज आदि में काम आने वाले यंत्र बनाने में निपुण होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी, ख्यातिप्राप्त, आविष्कारक, इंजिनीयर, मल्लाह, व्यापारी, समाजसुधारक होते हैं। अंगूठा बड़ा होने पर विलासी व प्रशासक, अंगूठा छोटा होने पर झगड़ालू भी होते हैं। कलाई के पास वाला भाग चौड़ा होने से आविष्कारक बुद्धि तो होती है, किन्तु उसमें पूर्ण सफलता नहीं मिलती तथा अन्य व्यक्तियों को भी लाभ नहीं देते हैं।

हाथ 7 प्रकार व आकृति के होते हैं-

(1) वर्गाकार हाथ सर्वोत्तम होता है, इसमें रजोगुण की प्रधानता होती है, जिस हाथ में कलाई के पास का भाग और अंगुलियों के जड़ के पास का भाग मापदण्ड में बराबर जैसा हो तथा अंगुलियों के अग्रभाग की चौरस हों, वे काम करने वाले कार्यकुशल, आज्ञापालक, मिलनसार, नेता, डॉक्टर, व्यापारी, वकील, समय के पाबन्द अधिकारी व्यक्तियों का सम्मान करने वाले मर्यादा का पालन करने वाले होते हैं। विरोधियों का डटकर मुकाबला करने वाले लोक व्यवहार में चतुर होते हैं, ऐसे व्यक्ति कृषि तथा व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे हाथ में अंगुलियाँ छोटी और वर्गाकार होने से धन संचय की वृद्धि होती है। वर्गाकार बड़ी अंगुलियाँ छोटी और वर्गाकार होने से तर्क करने की आदत अधिक होती है तथा मानसिक विकास और उदरता अधिक होती है। यदि अंगुलियों में गाठें उभरी (ऊँची उठी) हो तो कल-कारखाने चलाने वाले, मकान व कलपुर्जे बनाने वाले अथवा गणितज्ञ होते हैं। नुकीली अंगलियों से गाने-बजाने वाले भाट, साहित्यकार होते हैं।

5 शिल्पी या व्यावसायिक हाथ- हाथ की लम्बाई, चौड़ाई मध्यम आकार की (न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा) हथेली आगे की ओर कुछ कम चौड़ी अंगलियाँ मूल में पुष्ट ऊपर से पतली होती हैं। नाखूनों के पास उंगली नुकीली होती हैं। ऐसे व्यक्ति उतावले जल्दबाज होते हैं, अधिक सोच-विचार कर काम नहीं करते, चंचल, बातूनी, शेखीखोर (आत्मप्रवंचक) भावुक, बहकावे में आने वाले, कार्य को अधूरा छोड़ने वाले जरा-सी बात में झगड़ा करने वाले, स्पष्ट वक्ता, उदार, सहानुभूति रखने वाले, कला, संगीत नाटकादि में रुचि रखने वाले होते हैं। लचीला हाथ हो तो कलकार होते हैं। व्यक्तियों को आकर्षित जल्दी ही कर लेते हैं। अंगुलियाँ सख्त होने से व्यापारी लोकप्रिय अंगुलियाँ पतली व ऐंठी होने से ईर्ष्या, द्वेष, छलकपट करने वाले हाथ अधिक नरम हो तो ओछापन, कर्ज लेकर नहीं देने वाले विषयी व मनोरंजन प्रिय होते हैं। इनमें तर्क व युक्ति का अभाव होता है।

मणिबन्ध- कलाई पर जो रेखा दृष्टिगोचर होती है वह मणिबन्ध रेखा कहलाती है। कलाई का मांस युक्त पुष्ट होना शुभ माना गया है। इस जगह हड्डी उभरी हुई दिखना अशुभ होता है। ये 3 रेखा होती है, यदि तीनों रेखाओं में यवमाला (जौ की तरह सुडौल) रेखा के अन्दर कलाई के चारों ओर हो तो अर्थात् यवमाला की तरह स्पष्ट दिखाई देवे तो राजा दो रेखा के इस प्रकार होना बुद्धिमान् तथा राज्यमंत्री, एक रेखा पर यवमाला हो तो प्रतिष्ठित व धनी योग बनता है। मणिबन्ध से ऊपर की तरफ जाने वाली रेखाएँ शुभ तथा हथेली से कोई रेखा नीचे की ओर मणिबन्ध रेखा से आकर मिलना अशुभ माना गया है। मणिबन्ध की तीनों रेखाएँ सुस्पष्ट, सुन्दर और अच्छे वर्ण की हो तो जातक दीर्घाष्यु, स्वस्थ व भाग्यशाली होता है। हाथ की ओर से गिनने पर प्रथम रेखा शृंखलाकार होने से परिश्रम व चिन्तायुक्त जीवन होते हुए सफलता मिलती है। दो रेखा स्पष्ट दिखने पर मध्यमायु व रेखा स्पष्ट दिखने पर अल्पायु

जीवन होता है। स्वास्थ्य रेखा खराब हो मणिबन्ध रेखा अच्छी हो तो स्वास्थ्य खराब और भाग्यशाली योग बनता है। मणिबन्ध से कोई रेखा गुरु क्षेत्र पर जाती हो तो लम्बी यात्रा द्वारा सफलता, सूर्य क्षेत्र पर जाने से यात्रा में विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क से लाभ, बुध क्षेत्र पर जाने से अकस्मात् द्रव्य प्राप्ति यदि दो रेखा आपस में काटती हुई शनि क्षेत्र पर जाना यात्रा में अत्यन्त कष्टप्रद मानी गई है। चन्द्र क्षेत्र पर रेखा जाने पर समुद्री यात्रा का योग परन्तु भयभीत होकर यात्रा करनी पड़ती है। मणिबन्ध रेखा कटी हुई होने से मिथ्याभिमानी व असत्यवक्ता होता है। सुन्दर प्रथम मणिबन्ध रेखा पर क्रास का चिह्न होने पर प्रथम भाग आयु का कष्टप्रद होकर जीवन सुखमय, त्रिकोण का चिह्न होने से विरासत में द्रव्य प्राप्त होता है। तारे के चिह्न से भी द्रव्य प्राप्ति होती है यदि मणिबन्ध से रेखा निकलकर जीवन रेखा पर जाकर रुक जाये तो यात्रा में ही व्यक्ति की जीवनलीला समाप्त हो जाती है।

5. विषम (आदर्शवादी) हाथ-यह लम्बा, पताल, कोमल होता है। हाथों की अंगुलियाँ बहुत पतली नोकदार जड़ में पतली ऊपर कुछ भारी नाखून लम्बे बादामी रंग जैसे होते हैं। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति थोड़ी-सी चिन्ता होने पर ही व्याकुल, भयभीत, क्रियाकुशलता का अभाव असंभव कार्यों की उड़ान भरना, करना कुछ नहीं, देवी-देवता, संत, महन्तों की कृपा के चक्कर में रहना जन्मपत्री दिखाने का अधिक स्वभाव तर्क का अभाव भाग्यहीन, अकर्मण्य परिश्रम से दूर भागने वाले, सौन्दर्यप्रिय, सुशील, नम्र, शान्त, प्रकृति विचारों की दुनिया में घूमते रहना आदि लक्षण पाये जाते हैं।

6. मिश्रित हाथ- उपर्युक्त हाथों की बनावट का मिश्रित भाग इसमें होता है (सभी हाथों की बनावट का थोड़ा-थोड़ा होना) मिश्रित हाथ वाले व्यक्ति परिस्थिति के अनुकूल अपने को ढालने वाले होते हैं। इनमें अस्थिरता, परिवर्तनशीलता बहुत होती है। हथेली जिस प्रकार की हो उसके गुण धर्म इनमें अधिक मिलते हैं, अंगुलियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की होने पर जिस-जिस ढंग की हो वे ही लक्षण इनमें प्रगट करती हैं। इस प्रकार के हाथ में मस्तक, हृदय जीवन स्वास्थ्य, भाग्य, सूर्य आदि रेखाओं का अध्ययन करते हुए गुण-धर्म, स्वभाव कार्य सम्पादन आदि का विचार करना चाहिये।

7. निकृष्ट हाथ-आवश्यकता से अधिक मोटा, छोटा, भारी बेडौल, खुरदरा हाथ होता है। अंगूठा छोटा, व मोटा और रेखाएँ भी कम होती हैं। अंगुलियाँ और नाखून भी छोटे होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में पशुवृत्ति, आहार, निद्रा, भय, विषय वासना का आधिक्य होता है। विद्या, विचार, शांति, साहित्यकलादि का जीवन में अभाव रहता है। शारीरिक परिश्रम से पेट पालने वाले होते हैं।

त्रिकोण - **मध्यमा** दूसरे पर्व पोर पर त्रिकोण से गुप्त विद्या ज्ञाता,तीसरे पर्व पर मंदभागी, दुष्ट। **अनामिका** प्रथम पर्व पर सौन्दर्यप्रिय दूसरे पर्व पर त्रिकोण से विशिष्ट कलाकार, तीसरे पर नाम और ख्याति के लिए प्रयत्नशील **कनिष्ठ** प्रथम पर्व पर होने से गुप्त विद्याओं में विशेष रुचि, दूसरे पर्व पर गुप्त विद्याओं के अध्ययन में सफलता, तीसरे पर राजनीति में कुशलता प्राप्त करता है। नाखून के पास वाला भाग प्रथम पर्व होता है।

वर्ग - दूसरे पर्व पर अपमृत्यु, तीन पर वर्गचिह्न से व्यक्ति कंजूस व निष्ठुर प्रकृति होता है।दूसरे पर्व पर वर्ग से योग्यता के अनुकूल व्यवसाय नहीं मिलता। प्रथम पर्व से व्यापार में लाभ, दूसरे पर्व पर वर्ग का चिह्न हो और हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हो तो जेल यात्रा होती है, तथा व्यापार में लाभ कम होता है। तीसरे पर्व पर वर्ग चिह्न से उसके मन की बात जान लेना कठिन पड़ता है।

खड़ी रेखा - **अनामिका**-प्रथम पर्व पर-2,3 रेखा से कलाकार, के 2,3 पर 1 खड़ी रेखा से यशस्वी प्रख्यात, तीसरे पर्व पर अनेक रेखा से स्त्री के कारण से हानि व दु:ख, तीसरे पर्व पर एक रेखा से भाग्यवान सुखी **कनिष्ठिका**-तीनों पर्वों पर एक या दो रेखा से सत्यवादी, प्रथम पर्व पर दो छोटी रेखा से पर कार्य में विघ्नकर्त्ता, तीसरे पर्व पर घिचपिच अनेक रेखा से चोरी करने वाला

आड़ी रेखा - तीनों पर्वों पर आडी रेखाएँ अशुभफल सूचक। प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी आडी रेखा असत्यवक्ता, चोर, बातूनी, दूसरे पर्व पर छोटी-छोटी रेखा से व्यवसाय बदलता रहे, दूसरे पर्व पर चोर

क्रास - तर्जनी- प्रथम पर्व पर से पागलपन तथा अचानक मृत्यु, दूसरे पर क्रास से उच्च कोटि के व्यक्तियों से सहायता मिलना, तीसरे पर्व पर कामुकता।

तारा - प्रथम पर्व पर शुभफलप्रद, दूसरे पर्व पर तारे के दोनों तरफ रेखा एकपत्नी व्रत स्त्री के पतिव्रता, तीसरे पर क्रास से निर्लज्जता।

खड़ी रेखा - तर्जनी-प्रथम पर्व पर धार्मिक उन्नति, द्वितीय पर्व पर महात्वाकांक्षा की पूर्ति, शाखायुक्त से अधिक सफलता, शुक्र क्षेत्र से तर्जनी के द्वितीय पर्व तक प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा उच्च विचार। तृतीय पर्व पर छोटी-छोटी रेखा से प्रशासक। **मध्यमा**-प्रथम पर्व छोटी-छोटी रेखा से आत्महत्या के विचार, प्रथम पर्व से तीसरे पर्व तक एक खड़ी रेखा से मूर्खता, यदि 2,3 रेखा हो तो बुद्धिमत्ता। तृतीय पर्व पर कुछ तिरछी रेखा से सैनिक विभाग में कार्यरत, यदि स्पष्ट कई रेखा हो तो खनिज पदार्थ से लाभ।

आड़ी रेखा - प्रथम पर्व, धर्मान्धता, द्वितीय-तृतीय पर्व, ईर्ष्यालु, धोखे बाज, तृतीय पर्व पर आकस्मिक द्रव्य प्राप्ति, प्रशासन कार्य में असफलता। प्रथम द्वितीय पर्व पर अनेक खड़ी रेखा से अज्ञानता, जिद्दीपन,पर्व पर अनेक खड़ी रेखा से आत्महत्या के विचार तृतीय पर अनेक आडी रेखा से दुखी जीवन।

क्रॉस - मध्यमा-प्रथम पर्व पर होने से आत्महत्या के विचार, अंधविश्वास, दूसरे पर अशुभफलप्रद, तीसरे पर स्त्री के हाथ में क्रास से बन्ध्या। **अनामिका**-प्रथम पर्व पर पतिव्रता, पत्नीव्रता, दूसरे पर ईर्ष्यालु, प्रतिपक्ष से पराजय। तीसरे पर पूर्ण सफलता में बाधा। **कनिष्ठिका**-प्रथम पर्व पर शुभफलकारक, यदि अन्य शुभ लक्षण हों। भविष्यवक्ता, अशुभ अन्य लक्षण हो तो क्रास का चिह्न चोर व डाकू बनता है। तीसरे पर्व पर चोर।

तारा - दोनों हाथों में प्रथम पर्व पर क्रास का चिह्न होने से शस्त्र से मृत्यु, प्रथम व दूसरे पर क्रास से फाँसी, तीसरे पर हत्या करने की प्रवृत्ति। प्रथम पर्व पर होने से उच्चकोटि का कलाकार, दूसरे पर योग्यता प्राप्त, तीसरे पर आत्मप्रशंसक, खुशामद पसंद। प्रथम पर्व पर वक्ता किन्तु धन के उपार्जन में विशेष सफल नहीं, दूसरे पर चोरी, जालसाजी, बदनामी, बेईमान, तीसरे पर एक तारे का चिह्न हो तो हाजिर जबाव, तीसरे पर दो तारों का चिह्न चोरी करने से अपमानित।

त्रिकोण - तर्जनी-प्रथम पर गुप्त विद्या व धार्मिक ग्रंथों का अध्ययनशील होता है। दूसरे पर कुशल राजनीतिज्ञ, तीसरे पर भी शुभफलदायक, तर्जनी पर तिल धनी, शत्रुबाधा, झगड़ा-फिसाद।

वर्ग - प्रथम पर्व पर धैर्य व अध्यवसाय वर्धक, दूसरे पर भी यह ही फल। तीसरे पर तानाशाही प्रवृत्ति तथा कामुक। **वृत्त - तर्जनी**-प्रथम पर्व पर भक्ति में विशेष रुचि, दूसरे पर महत्त्वाकांक्षा की सफलता मिलती है। तीसरे पर भी दो पर्व के ही लक्षण होते हैं। **अंगूठे** -दूसरे पर्व पर होने से विशेष तर्क करने वाला, प्रथम पर्व पर इरादे पक्का, कार्यपूर्ण करने की प्रवृत्ति।

अंगूठे के चिह्नों का फल-

जाल - प्रथम पर्व पर एकान्तवास या जेलयात्रा अथवा धर्मान्धता होती है। दूसरे पर असफलताएँ व बुरे विचार उत्पन्न होते हैं। तीसरे पर चरित्रहीन व जेलयात्रा। दूसरे पर वग्र का चिह्न से तर्कसिद्ध बातें को मानने वाला प्रथम पर्व पर सिद्धान्तवादी, कठोरता से प्रशासनकर्त्ता।

यव - धनी, विख्यात लोकप्रिय बुद्धिमान, प्रथम पर्व पर १,२,३ सीधी रेखाएँ व्यक्ति को धुन का पक्का, दृढ़चित्त। आड़ी रेखा से असफलता। त्रिकोण से पशुधन से लाभ।

त्रिकोण - प्रथम पर्व पर त्रिकोण से वैज्ञानिक या नापतोल करने वाला अथवा गणितज्ञ होता है। दूसरे पर्व पर वैज्ञानिक व दार्शनिक।

आड़ी, खड़ी रेखा - प्रथम पर्व से जीवनरेखा तक जाने वाली रेखा से शस्त्र द्वारा मृत्यु। दूसरे पर एक खड़ी रेखा प्रथम पर्व व शुक्रक्षेत्र पर जाने से तर्ककर्त्ता, आड़ी रेखा हो तो अशुभ अंगूठे पर तिल, कर्त्तव्यपराण, लोकप्रिय।

क्रास - नाखून के बिल्कुल पास में क्रास का चिह्न हो और उन्नत शुक्रक्षेत्र पर जाल हो तो अनुचित प्रेम होता है। दूसरे क्रास नाखून के पास से आराम तलब, प्रथम पर्व छोटा हो दूसरे पर क्रास का चिह्न हो तो दूसरे से शीघ्र प्रभावित होता है।

तारा - प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न चरित्रहीन बनाता है। दूसरे पर तारे का चिह्न से प्रसन्नचित्त, दुष्कर्मकर्त्ता होता है। प्रथम पर्व पर दो तारे के चिह्न से नुकताचीनी करने वाला।

जाल - दूसरे पर्व पर जाल के चिह्न से कुतर्क करने वाला व बेईमान, नाखून के पास जाल का चिह्न पति-पत्नि में कलह करता है।

वृत्त - **मध्यमा**-दूसरे पर गुप्त विद्या का विद्वान होता है। तीसरे पर दर्शनशास्त्रज्ञ, मध्यमा पर तिल सुखशान्ति। **अनामिका**-प्रथम पर्व पर वृत्त चिह्न उच्चकोटि की सफलता दिलाता है। 2 व 3 पर कार्य में सफलता का द्योतक है। अनामिका का तिल यशस्वी, धनी, पराक्रमी। **कनिष्ठिका**-तृतीय पर्व पर वृत्त के चिह्न से चोरी करने की इच्छा होती है परन्तु चोरी नहीं करता। कनिष्ठिका तिल धनी होते हुए भी सुखी नहीं, दाहिनी आँख पर तिल बुद्धिमान, बांयी का संघर्षमय जीवन, वस्तुओं की कमी नहीं रहे।

जाल - दूसरे पर जाल चिह्न से मन्दभागी व रोगी होता है। कान की बीमारी पैरों की बीमारी व बातव्याधि ग्रसित, तीसरे पर जाल अत्यन्त कंजूस, अनुदारवृत्ति प्रदान करता है। प्रथम पर्व पर पागलपन का लक्षण है, 2 पर ईर्ष्यालु, 3 पर दरिद्री, ईर्ष्यालु तथा अपमानित जीवन बनाता है। प्रथम पर्व पर जाल के चिह्न से मंत्र विद्या में निपुण, यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हो तो झूठ बोलना, चोरी करना आदि दुर्गुण होते हैं। दूसरे पर जेल जाने का योग बनता है तथा अपना काम धंधा ऊटपटांग ढंग से करता है। तीसरे पर मूर्खता के लक्षण होते हैं।

अंगुलियाँ-अंगुलियों का सीधा होना दीर्घायुकारक अंगुलियों के बीच में छिद्र दिखाई देना दरिद्रता का लक्षण है। पतली होना स्मरण शक्ति अच्छी होने का संकेत देती है। चपटी से सेवाकार्य करने और करपष्ठ की तरफ झुकना शस्त्र द्वारा मृत्यु का लक्षण है। अंगुलियों के बीच में छेद दिखाई देना सूखापन होना अधिक मोटा होना और टेढ़ा होना दरिद्रता का लक्षण है। अंगुलियाँ लम्बी तथा पोरवे भी लम्बाई लिए हुए होने पर मनुष्य सौभाग्यशाली होता है। यदि कनिष्ठिका का अनामिका के नख तक लम्बी होना धनवान् तथा दीर्घायु होने का चिह्न है तथा मातृपक्ष आदि शक्तिशाली होता है। यदि अंगूठे और तर्जनी बीच का अन्तर अधिक होने से जातक उदार, स्वतंत्रताप्रिय, व कड़े अनुशासन से अप्रसन्न होता है। बहुत लम्बी अंगुली हो तो छिद्रन्वेषण, लम्बी होने पर विश्लेषणात्मक योग्यता, लम्बी और पतली होने से चतुर नीतिज्ञ यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हो तो चतुरता का दुरुपयोग करना छोटी होने पर जल्दी ही बात को समझ लेना, अधिक छोटी होना स्वार्थी व सुस्त अकर्मण्यता तथा क्रुर प्रकृति, का संकेत देती है। ढेडी अंगुली वाले को सम्मान प्राप्त नहीं होता। तर्जनी का मध्यमा के बराबर होना हुकूमत करने की प्रबल इच्छा प्रकट करती है। तर्जनी अनामिका से बहुत बड़ी होने से महत्त्वाकांक्षा, मध्यमा तर्जनी से बहुत बड़ी होने पर दुखी, मध्यमा के तर्जनी के बराबर होने पर उच्चपद व प्रतिष्ठा प्राप्त करने की प्रबल इच्छा, मध्यमा का तर्जनी से छोटा होना पागलपन का लक्षण है। मध्यमा का अनामिका के बराबर होने से व्यक्ति जुआरी व सट्टेबाज होता है। अनामिका तर्जनी से बड़ी होने पर साहित्य से प्रेम होता है। अनामिका मध्यमा से बहुत बड़ी हो तो लम्बा चौड़ा करोबार करने वाला होता है, जिसमें अधिक लाभ या नुकसान भी हो सकता है, अनामिका मध्यमा के बराबर होने पर जुआ सट्टा करने वाला, मध्यमा से अनामिका अधिक छोटी होने परदुखी रहना। अनामिका कनिष्ठिका के बराबर होने से अनेक विषयों में चतुर, कनिष्ठिका तर्जनी के बराबर होने पर कुशल राजनीतिज्ञ, कनिष्ठिका अनामिका के बराबर होने पर वाक्चातुर्य हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हो तो वाक्चातुर्य नहीं होकर धोखेबाज होता है।

कर पृष्ठ (हाथ का ऊपर का भाग)- कर पृष्ठ सूखा, मांस रहित मणिबन्ध स्थान से नीचा रोएं व बाल सहित खुरदरा फीके रंग का अशुभ माना गया है। इसके विपरीत शुभ होता है। कर पृष्ठ पर रोएँ बाल हो तथा नसें दिखाई देती हों तो निर्धनता के लक्षण समझना चाहिये। स्त्रियों के हाथ में उपर्युक्त कुलक्षण का कर पृष्ठ भाग वैधव्य

कारक होता है। कर पृष्ठ पर भूरे रंग के बाल वाले मृदु स्वभाव के सज्जन व दूसरों के प्रभाव में शीघ्र आने वाले, आलसी व परिश्रम से दूर भागने वाले, काले रंग के बाल वालों में प्रेम वासना व ईर्ष्या की मात्रा अधिक उग्र स्वभाव, लाल रंग के और मोटे बाल वालों में काले रंग के बाल वालों की जैसी प्रकृति होतीा है।

नाखून-जिनके नाखून टेढ़े और रेखा(धारियाँ) वाले होते हैं, वे निर्धनी तथा नाखून का टुकड़ा जरा सा जोर लगाने पर ही टूट जाये तो नपुंसकता के लक्षण होते हैं। नाखूनों पर धब्बे होने पर सेवक का कार्य करने वाले, कछुवे की पीठ की तरह ऊँचे मूंगे की तरह लाल चिकने और चमकदार नाखून होना अच्छा माना गया है। नाखूनों का पीलापन रोगी होना बतलाता है। सफेद होना वैराग्य प्रकृति का द्योतक है। स्त्रियों के हाथ के नाखून अंगुलियों के अग्रभाग से कुछ आगे निकले हुए गुलाबी रंग के शुभ होते हैं। पीले कान्तिहीन नीचे धसे हुए भद्दे विवर्ण नाखून दरिद्रता के सूचक होते हैं। नखों पर सफेद बिन्दु होना व्याभिचार का लक्षण है। स्वस्थ मनुष्यों के नाखून मुलायम व लचकदार होते हैं। नाखूनों पर खड़ी धारी सी स्नायुमण्डल सम्बन्धी बीमारी उत्पन्न करते हैं। आड़ी धारी भी होना निर्बलता की सूचक होती है। नाखून चौड़े अधिक लम्बे कम आलोचनात्मक प्रकृतिप्रदान करते हैं। नाखून छोटे ऊपरी ओर चौकोर नीचे की तरफ पतले हों तो हृदय रोग के सूचक होते हैं। अंगुलियों का अग्रभाग कांच की गोली की तरह गोल तथा स्वास्थ्य रेखा के लक्षण भी देखने चाहिए।

हथेली-बिल्कुल लम्बी चौड़ी गोलाई लिये हथेली से पराश्रित जीवन व्यीत होता है। असत्यवादी पैसा होते हुए भी पैसे का सुख नहीं सदा भयभीत रहता है। अंगुलियाँ इतनी लचकदार हों जो मोड़ने पर कलाई को छू ले तो व्यक्ति भाग्यवान् व सम्पन्न होता है। जिनकी हथेली अंगुलियों से छोटी है वे रोगी और उदर व्याधियुक्त होते हैं। उद्योगी, पराक्रमी, उत्साही, कर्त्तव्यपरायण व्यक्तियों की हथेली बड़ी होती है। मोटी मुलायम भारी हथेली वाले व्यसनी, इन्द्रिय लोलुप होते हैं। चौड़ी हथेली वाले उदार व परोपकारी होते हैं। लम्बी व नरम हथेली से आलसी आराम पसंद, सख्त कड़ी हथेली से डरपोक और निरुत्साही होते हैं। जिनकी हथेली में गहरा खड्डा होता है, उन्हें पारिवारिक सुख नहीं मिलता, गृहकलह बना रहता है एवं स्वास्थ्य भी कमजोर होता है। बड़ी हथेली वाले छोटे अक्षर एवं छोटी हथेली वाले बड़े अक्षर लिखते हैं, जीवन रेखा मस्तष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा से एक बड़ा त्रिकोण, जिस हथेली में बनता है, रोगी हथेली वाला व्यक्ति बुद्धिमान, परोपकारी व दयालु होता है।

अंगुलियों का शेष भाग-अंगुलियों के बीच दो गांठ होती है, नाखून की तरफ की गांठ मोटी होने से अर्थात् भारी और बड़ी होने से आध्यात्मिक जीवन बनता है और निचले भाग में हथेली के पास वाली गांठ भारी व मोटी होने से सांसारिक भौतिक जीवन व्यतीत होता है। ऐसे व्यक्ति धन सम्पन्नता व भाग विलास प्राप्त करते हैं।

दोनों गांठ पतली व छोटी होने पर व्यक्ति थोड़े में से ही संतुष्ट हो जाते हैं, कोई बड़ी सफलता प्राप्त नहीं होती। मध्यमांगुली से हथेली ड्योढ़ी से बड़ी होने पर मनुष्य श्रद्धालु, धर्मवीर, ईश्वर भक्त तथा सोच समझकर कार्य करने वाले होते हैं। छोटी-छोटी उंगली वाले अहंकारी, नास्तिक व चिड़चिड़ स्वभाव के होते हैं। मोटी-मोटी उंगली से व्यवहार शून्य जीवन होता है। पतली कोमल उंगली से व्यक्ति प्रसन्नचित्त, हंसमुख व हासपरिहास करने वाला होता है।

त्रिशूल का चिह्न सभी क्षेत्रों पर शुभ फल कारक होता है। वृत्त का चिह्न गुरु व शनि क्षेत्र पर अशुभ सूर्य क्षेत्र पर ख्याति प्राप्त, बुध क्षेत्र पर विषाक्त भोजन से हानि, मंगल क्षेत्र पर अनेक कष्ट, चन्द्र क्षेत्र पर जल से भय, शुक्र क्षेत्र पर रोगी बनाता है। **जाल का चिह्न**-यह चिह्न प्राय: अशुभ फल कारक होता है। जिस ग्रह के क्षेत्र में हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित योगों का अशुभ फल करता है। गुरु क्षेत्र पर मिथ्याभिमान, चरित्रहीन, धर्मान्धता, दूसरे को दबाकर रखना आदि योग बनाता है। सूर्य क्षेत्र पर घमण्डी अयोग्य होते हुए अपने को योग्यता प्राप्त दिखाना, बुध क्षेत्र पर बेईमान व अस्थिर बुद्धि, मंगल क्षेत्र पर रक्तस्राव की बीमारी अथवा रक्तजन्य व्याधि अधिक लम्बा चौड़ा जाल चिह्न मंगल क्षेत्र पर उदर विकार व अंतड़ियों की बीमारी करता है। चन्द्र क्षेत्र पर मानसिक अशान्ति, शुक्र क्षेत्र पर अधिक काम वासना होती है।

खड़ी व आड़ी रेखा-गुरु क्षेत्र पर खड़ी रेखा अतड़ियों की कमजोरी मध्यभाग में शुभ फल, अधिक खड़ी रेखा, असफलता की द्योतक, आडी रेखा भी असफलता प्रदान करती है। शनि क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा से भाग्यशाली तथा भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पर लम्बी हो तो वृद्धावस्था, सुखमय, सूर्य क्षेत्र पर खड़ी रेखा से धनी, यशस्वी, बुध क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा से व्यापार में अकस्मात लाभ, अधिक खड़ी रेखा से डॉक्टर, अत्यधिक रेखा से चालाक, स्त्री के हाथ में बुध के खेत्र पर अनेक रेखाओं से बातूनी, 1 गहरी खड़ी रेखा से चोरी से द्रव्य हानि। मंगल क्षेत्र पर खड़ी रेखा से साहसी, घिचपिच अनेक रेखा से क्रोधी व चरित्रहीन आड़ी रेखाओं से शत्रु बाधा। शुक्र क्षेत्र पर 2, 3 जगह प्रेम सम्बन्ध। चन्द्र क्षेत्र पर खड़ी रेखा से बीमारी होती है।

ग्रह का स्थान- अनामिका के नीचे सूर्य का स्थान, मणिबन्ध के पास चन्द्र का मंगल का अंगूठे और तर्जनी के मध्य, बुध का कनिष्ठिका नीचे। गुरु की तर्जनी के नीचे, शुक्र का अंगूठे की जड से मणीबन्ध तक, शनि का मध्यमांगुली के बीच हथेली के मध्य राहु का स्थान माना गया है। जिस ग्रह का स्थान उभरा हुआ हो वह उस ग्रह के गुण धर्मों को बढ़ावा देता है, पिचका हुआ गुण धर्म में न्यूनता देता है। **सूर्य**-उन्नति की तीव्र इच्छा, कलाप्रेम, चित्रकारी, कविता, यश, तीर्थयात्रा, विद्या, प्रतिष्ठा धर्म। **चन्द्र**-मातृ सुख, स्त्री सुख, धनधान्य, प्रकृति प्रेम, आदर्श, विचार मग्नता, राज्य कृपा। **मंगल**-बल, पराक्रम, पेट के रोग रक्त विकार, भूमि मातृ सुख, पुत्र कुटुम्ब। **बुध**-व्यापार, काव्य, देशाटन, वाक्‌शक्ति, विवेक मित्र। **गुरु**-धर्म, मान प्रतिष्ठा, स्वाभिमान, उत्साह, न्यायप्रियता, भोग विलास की इच्छा, उच्चपद प्राप्ति की अभिलाषा, विद्या बुद्धि, विवेक । **शुक्र**-स्त्री सुख, विवाह, प्रेम, सौन्दर्य, मनोरंजन, सवारी, आभूषण, कामवासना। **शनि**-क्लेश, पीडा, व्यसन, जुआ, मौन, एकान्तवास, उदासी, निराशा, वैराग्य, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता

तिल व मस्से का विचार - लाल तिल शुभ, काला तिल स्थान विशेष से शुभाशुभ फलप्रद होता है। तिल का जोड़ा शरीर पर प्रायः दृष्टिगोचर होता है। माथे पर दाहिनी ओर के तिल का जोड़ा पेट या भुजा पर होता है, वह दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाता हे, माथे पर बाँयी होर का तिल दाम्पत्य जीवन में मनोमालिन्य करता है, इसका जोड़ा पेट व भुजा पर होता है। बाईं भौं पर हो तो इसका जोड़ा छाती के बाईं ओर होता है, यह यात्रा अधिक करवाता है, दोनों भौं के बीच का तिल व्यक्ति को बकवादी और घमण्डी बनाता है, इसका जोड़ा पेट पर होता है। नाक के तिल का जोड़ा नाभी के नीचे होता है, यह प्रसन्नता, प्रेम करने वाला और यारबास का योग बनाता है, यह तिल नाक के दायें व बायें भाग पर उपर्युक्त योग बनाता है। कनपटी के तिल का जोड़ा कुच पर मिलता है। यह दाहिनी ओर शुभ और बांयी ओर अशुभफलप्रद होता है। कान की जड़ के पास का तिल का जोड़ा पेट पर होता है, जो जिगर व आंतों की बीमारी उत्पन्न करता है। गाल का जोड़ा, कूल्हे पर जो दायें व बायें दोनों तरफ का शुभफल कारक होता है।

ऊपर के होठ (ओष्ट) के तिल का जोड़ा जंघाओं पर दिखाई है। वह कंजूसी का स्वभाव मतान्तर से नीचे के होट का तिल कंजूस बनता है, नीचे का होठ का तिल शादी विवाह के विषय में अधिक रुचि रखता है। गर्दन का तिल श्रद्धालु विनम्र भक्त व दीर्घायु बनाता है। ठोड़ी का तिल कायरता अथवा जनानापन दर्शाता है, भुजा पर तिल बहादुर, पेट पर चटोरा, छाती पर बहादुर, पराक्रमी यदि छाती पर दाहिनी तरफ हो तो अच्छे स्वभाव की पत्नी की प्राप्ति करवाता है, पीठ पर परिश्रमी, चूतड पर निरुत्साही, परमुखापेक्षी (दूसरे का सहारा चाहने वाला) गुप्त स्थान पर कामुकता वर्धक, जांघ पर फौजी जीवन, सवारी सुख, पैर पर भ्रमणशील सीधे हाथ पर तिल स्वोपार्जित द्रव्य प्रद, दाहिने कंधे पर विद्वान, हाथ के पंजे पर उदारचित्त पुरुष को बनाता है। मस्तष्क पर तिल यशस्वी, गाल पर पत्नी सुन्दर, ऊपर होठ पर द्रव्य प्राप्ति, नीचे पर कंजूस, कान पर आभूषणधारी, मस्तष्क पर तिल होने पर शनी ललाट पर तिल होने से धनीपति की प्राप्ति, आँखों पर पतिप्रिया, गले पर तिल से घर में हुकूमत करे, छाती पर पुत्र प्राप्ति, हाथ पर पतिप्रिय, जांघ पर नौकरचाकर बने रहें, पैरों पर यात्रा अधिक होता है।

स्त्री के शरीर पर तिल, मस्सादि का विचार-चलते समय पैरों से धूल उड़ने पर कुल का विनाश। कनिष्ठिका भूमि की स्पर्श नहीं करने पर अनेक पति, अनामिका छोटी से झगड़ालू, मस्तक पर दाहिने भाग पर तिल मस्सा लहसुन का चिह्न दाम्पत्य जीवन को सुखमय बांयी तरफ का दाम्पत्य जीवन में मनोमालिन्य, चौड़ी एड़ी से क्रोध करनेवाली, ऐड़ी पर चार अंगुल लम्बी रेखा से चोर, एक अंगुल लम्बी से पति सुखप्रद होता है, मोटी गर्दन से विधवा, टेढ़ी गर्दन से दासी, छोटी बायें पैर की एड़ी पर तीन रेखा से दीर्घायु, रतिसुख व धार्मिकता प्राप्त होती है। चपटी से बन्ध्या बहुत बड़ी से चरित्रभ्रष्ट, लम्बे ललाट पर तिलादि श्वसुर घातक, चमकीला हो तो पाँच पुत्रप्रद, पैर की उंगलियाँ बहुत छोटी होने से अल्पायु , मोटी होने से दासी की तरह कार्य करने वाली, पैर के तलुवे पीले होने से व्यभिचारी, काले होने से यात्रा अधिक, सफेद होने से भक्ष्याभक्ष्य खानपान, अंगूठे के पास वाली अंगुली, अंगूठे से बड़ी होने पर स्त्री सुख की प्राप्ति यदि अंगूठे से अधिक छोटी हो तो स्त्री सुख की हानि अथवा प्रथम पुत्र का नाश अथवा झगड़ालू होती है। मध्यमा से तर्जनी बड़ी होने पर विद्वान, मध्यमा अनामिका से छोटी हो तो स्त्री की हानि। अनामिका मध्यमा से बड़ी होने पर सुवर्ण की प्राप्ति, अनामिका कनिष्ठिका से छोटी होने पर व्यभिचारी होता है। नख लाल, घुमावदार, चमकीले शुभ होते हैं। टेड़ेमेढ़े नाखून वाला दुष्ट प्रवृत्ति का तथा जीवन सुख नहीं मिलता, नाखूनों में कालेपन से पापी तथा भ्रातृ सुखहीन, दायें पैर के अनामिका व कनिष्ठिका पर किसी भी तरह के बिन्दु शुभ, अन्य अंगुलियों पर अशुभ। बांये पैर की अंगूठे व प्रदेशिनी (तर्जनी) और मध्यमा के नाखून पर दाग शुभ और अनामिका कनिष्ठिका के नाखून पर दाग अभुश समझनाचाहिये। दाहिने पैर के तलुवे में पसीना अना शुभ लक्षण है। स्त्रियों के दाहिने पैर के तलुवे में पसीना आना शुभफल प्रद, बांये पैर के तलुवे में पसीना आना अशुभ होता है।

आँखें गोलाकार होने से कुलटा तथा ऊपर के होठ पर मूँछ की जगह बाल होने पर विधवा, काले, पीले, चंचल नेत्र से चरित्रभ्रष्ट होती है। आँख पर तिल होने से प्रतिप्रिया होती है। गाल पर तिलादि का चिह्न प्रणय सुख की लालसा अधिक उत्पन्न करता है, बांये गाल पर का स्वादिष्ट भोजन प्रिय बनाता है। गले पर उच्च पदाधिकारी, गाल पर बोलते समय खड्डा सा बनने पर सास के सुख से रहित तथा गाल के दांये-बांये तिल, शुभफलप्रद, छाती पर तिलादि से पुत्र प्राप्ति, घुमावदार नाभि से पतिव्रता, बांये हाथ पर तिलादि से पतिप्रिया, पुत्र सुखयुत, जांघ पर तिलादि से नौकर चाकर सुख। जल्दी-जल्दी चलने का अशुभफल, टेड़ा अंगूठा पैर का अत्यन्त अशुभ, संतान की प्राप्ति में बाधक। पैर की अंगुलियाँ एक-दूसरे पर घुंघराले बाल हों तथा नेत्र गोलाकार के होवें तो वैधव्य सूचक, नाक अधिक लम्बी होने पर झगड़ालू, जीभ बहुत बड़ी से बेपरवाह स्त्री होती है। परस्पर भौहें मिली हुई हो तो यह कुलक्षण की बोधक, यदि पेट लम्बा हो, पैर के तलुवे लाल वर्ण के भूमि पर लगने से देवर को घातक भग लम्बा हो तो पति को घातक, पैर की तर्जनी (अंगूठे के पास की अंगुली) अंगूठे से लम्बी हो तो व्यभिचारिणी होती है। पैरों पर नसों का दिखना भी अशुभ है।

स्त्री के शुभ लक्षण-कोमलांगी, नेत्र जानु उदरमृग के समान छिद्र रहित, अंगुलियाँ हाथ में थोड़ी रेखाएँ, करपृष्ठ उन्नत और नसों व रोम रहित करतल में मत्स्य स्वस्ति पद्म, शंख, चक्र, कच्छप के चिह्न वाली स्त्री राजमाता की तरह सौभाग्यशालिनी होती है। नाभि घुमावदार होने से पतिव्रता, कमर पर भौंरी मनमानी करने वाली, पीठ पर भौंरी से विधवा, व्यभिचारिणी, कंठ 4 अंगुल लम्बा मांसल और गोल हो तो शुभफलकारक होता है। भँवरी (घुमावदार रोम से भँवरी की शकल बनती है) दांये-बांये हाथ में और पैरों में दाहिनी ओर घुमने वाली भँवरी शुभफलप्रद बायी ओर घुमने वाली भँवरी पीठ, कमर, कण्ठ, ललाट पर अशुभफल कारक होती है।

पुरुष के पद के लक्षण-पैर चिकने मांसल, अंगुलियाँ परस्पर सटी हुई, ऐड़ियाँ गोल मांसल, कछुवे की तरह पैर उन्नत होना, अंगूठे के पास वाली अंगुली बड़ी होनो मध्यमा से तर्जनी बड़ी होना शुभ फलकारक होता है। पैर आगे अधिक चौड़े पीछे का भाग अधिक सिकुड़ा हुआ अंगुलियाँ दूर-दूर होना पैरों पर नसों का जाल दिखना पैरों पर पसीना आना ये पैर के अशुभ लक्षण होते हैं। ऐसे पैर वाले दरिद्री व दुखी होते हैं। अंगूठे और तर्जनी के बीच से प्रारंभ होकर शुक्र क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध या उसके समीप जाने वाली रेखा को गरुडपुराण के अनुसार कुल

रेखा कहते हैं। इसी रेखा को अन्य ज्योतिष के ग्रंथों में पिण्ड रेखा, गोल रेखा, प्रगूढ़ रेखा आदि भिन्न-भिन्न नाम दिये गये हैं। सामुद्रिक जातक सुधाकर के मतानुसार यह रेखा पुष्ट, सुन्दर व खूब गोलाई लिये हो तो जातक दार्घायु स्वस्थ व ऐश्वर्ययुक्त होता है। यदि खण्डित हो तो जीवन में अपमान व असफलता प्राप्त होती है। इस रेखा पर तिल होने र. सवारी प्राप्त होने का योग बनता है। इस रेखा को पाश्चात्य मतानुसार जीवन रेखा या आयु रेखा कहते हैं। यदि जीवन रेखा बहुत पतली हो तो स्वास्थ्य उत्तम नहीं होता, अंगूठा लम्बा न हो और मस्तिष्क रेखा श्रेष्ठ हो तो दीर्घायु होता है।

गुरु क्षेत्र से यह रेखा निकलती हो तो यश व धन दोनों की प्राप्ति चाहता है। प्रत्येक ग्रह क्षेत्रों के उन्नत (ऊपर उठे हुए) होने से भिन्न-भिन्न प्रकार का जीवन बनता है। बुध क्षेत्र उन्नत हो तो वक्ता, विज्ञान या व्यापार करता है। सूर्य क्षेत्र उन्नत होने से कला और धन की प्राप्ति की इच्छा अधिक रखता है। अधिक गोलाई व घुमावदार रेखा से प्रेममय जीवन इसके विपरीत अनुराग प्रेमासक्ति कम होती है। स्पष्ट पुष्ट गहरी व दीर्घ रेखा जीवन में बल शक्ति व उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती है। चन्द्र बुध व शनि के क्षेत्र उन्नत हो तो व्यक्ति के अपेक्षाकृत संयमित वृत्ति होती है। जीवन रेखा को आड़ी रेखा काटती हुई जिस अन्य रेखा हृदय, मस्तष्क, स्वास्थ्य रेखा आदि तक जाती हो और समाप्ति की जगह उस रेखा पर द्वीपजाल क्रास आदि अशुभ चिह्न हो तो उस रेखा व ग्रह क्षेत्र के अनुसार रोग उत्पन्न करती है। उपर्युक्त अशुभ लक्षण सहित जीवन रेखा को काटती हुई आड़ी रेखा शनि क्षेत्र तक जोने से आयु रेखा लहरदार स्वास्थ्य रेखा पर रुकने पर पीलिया या पित्त ज्वर, चन्द्र क्षेत्र के मध्य भाग जाने पर वायु जनित गठिया आदि रोग, चन्द्र क्षेत्र पर अधिक अशुभ चिह्न होने पर मूत्राशय सम्बनधी बीमारी होती है, इस प्रकार अन्य रेखाओं व क्षेत्रों पर जाने वाली जीवन रेखा से निकलकर आड़ी रेखा से ग्रह क्षेत्र हृदय मस्तक, स्वास्थ्य रेखा पर तद्नुसार रोग का निर्णय करना चाहिये।

जीवन रेखा पर चिह्न-जीवन रेखा पर द्वीप चिह्न अस्वस्थता, छोटे-बड़े बिन्दु से हल्का, भारी बीमारी होती है। जीवन रेखा टूटी हुई होने से स्वास्थ्य को अधिक धक्का पहुँचता है। टूटा हुआ स्थान चतुष्कोण चिह्न से घिरा हो तो स्वास्थ्य बिगड़कर फिर सुधर जाता है। अशुभ चिह्न क्रॉस जाल आदि अशुभ लक्षण से स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ ही रहता है। जीवन रेखा के पीछे मंगल क्षेत्र पर समानान्तर रेखाओं के होने पर जीवन में अधिक बीमारी नहीं होने देती ये रेखाएँ जीवन सहायक होती है। जीवन रेखा बीच में ही समाप्त हो रही हो तो अकालमृत्यु, परन्तु ऐसी स्थिति दोनों हाथों में बनने पर होती है। जीवन रेखा पर जिस अवस्था में क्रास तारा, जाल, द्वीप आदि अशुभ चिह्न हो उस समय व्यक्ति बीमार रहता, मानसिक रोग भी हो जाता है। वास्तव में जीवन में कौन-सा रोग होगा, यह ग्रह क्षेत्र व अन्य रेखाओं पर अशुभ चिह्न के द्वारा निर्णय करना चाहिये।

शीर्ष रेखा-स्कन्दपुराण के अनुसार हाथ के मूल तथा हथेली के बगल के भाग से निकलकर अंगूठे और तर्जनी बीच वाले मध्यमा भाग तक तीन रेखा क्रमशः गोत्र रोग, द्रव्य रेखा तथा आयु रेखा कहते हैं। द्रव्य रेखा विभव रेखा को ही शीर्ष रेखा कहते हैं। यह रेखा सुन्दर बलिष्ठ और लम्बी हो तो मनुष्य धनी, तथा बुद्धिमान होता है। पाश्चात्य मतानुसार शीर्ष रेखा का उद्गम तीन स्थानों से होता है-(1) गुरु क्षेत्र के नीचे तथा जीवन रेखा के प्रारंभ के ऊपरी भाग से। (2) गुरु क्षेत्र के अन्दर से (3) जीवन रेखा के भीतरी मंगल क्षेत्र से।

(1) प्रथम स्थान से निकल कर चन्द्र क्षेत्र तक जाती है। गुरु क्षेत्र से शीर्ष रेखा व जीवन रेखा परस्पर स्पर्श करती हुई निकलने वाली शीर्ष रेखा अधिक शुभ मानी गई है। इस प्रकार की रेखा लम्बी हो तो व्यक्ति महत्वाकांक्षी व प्रशासन में निपुण होता है तथा उदारचित्त, दयालु, न्यायप्रिय तथा बुद्धिमान होते हैं। गुरु क्षेत्र से जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई नहीं निकले तो उपर्युक्त गुण तो होते हैं, परन्तु दूरदर्शिता का अभाव होता है। जीवन रेखा व शीर्ष रेखा (मस्तष्क रेखा) के मध्य अधिकत्तरअदूरदर्शिता होने से दुःसाहस कर कार्य में जल्दबाजी करने से हानि उठाते रहते हैं। यदि गुरु क्षेत्र को छोड़कर उसके नीचे से जीवन रेखा से मिली मस्तष्क रेखा निकलती है, तो साहस व हिम्मत कम होने से प्रत्येक कार्य करने झिझकते रहते हैं, सोच-विचार में अधिक पड़ते हैं।

जीवन रेखा का भाग-जीवन रेखा एक हाथ में छिन्न-भिन्न और दूसरे हाथ में लम्बी व स्पष्ट हो और भिन्न-भिन्न नहीं हो तो मनुष्य रोगी रहता है। यह रेखा मणिबन्ध से उठकर गुरु स्थान तक शुद्ध रूप से दृष्टिगोचर हो तो व्यक्ति उच्चभिलाषी, दीर्घ जीवी व प्रतिष्ठित होता है। यदि जीवन रेखा से नीचे की तरफ कोई रेखा चन्द्र पर्वत तक जाती हो तो व्यक्ति के द्रव्य स्त्री पुत्रादि की हानि होती है।

ऊर्ध्वरेखा (भाग्यरेखा) कटी-फटी नहीं हो छिन्न-भिन्न शाखाओं से रहित हो तो विप्र को वेदज्ञाता, क्षत्रिय को राज्यलाभ, वैश्य को व्यापार से लाभ और शूद्रों को सुख प्रदान करती है। भाग्य रेखावाला व्यक्ति अनेक व्यक्तियों का भरण-पोषण करता है। भाग्य रेखा के प्रारंभ में शंख व मत्स्य का चिह्न हो तो प्रचुर मात्रा में आर्थिक समृद्धि मिलती है। यह रेखा अनामिका के मूल में जाकर समाप्त हो तो विशिष्ट भाग्येदयकारक, अंगूठे व तर्जनी के बीच में समाप्त हो तो पशुतुल्यजीवन, तर्जनी के मूल में समाप्त हो तो राज्यपदाधिकारी, अनामिका मध्यमा के मूल में समाप्त हो तो धनी योग बनाती है।

मणिबन्ध से अनामिका तक यह स्वस्थ रेखा हो तो किसी हलकानेपन व लोक प्रसिद्ध होता है। यदि मणिबन्ध से कनिष्ठा तक जाती हो तो यशस्वी होता है। सूर्य रेखा (पुण्य रेखा) यह रेखा कहीं से भी निकल अनामिका मूल (सूर्य क्षेत्र) तक जाती हो तो व्यक्ति बुद्धि जीवी, धनी, लोकप्रिय, यशस्वी, कुशाग्र बुद्धि होता है। बहुत हाथों में यह रेखा स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होती है तो भाग्य रेखा के प्रभाव में न्यूनता आ जाती है। भाग्य रेखा और सूर्य रेखा दोनों का हाथ में होना उत्तमफलकारक माना गया है। सूर्य रेखा पर तिरछी रेखा व्यक्ति को अन्वेषक बनाती है। चन्द्र स्थान तक जाने वाली सूर्य रेखा व्यक्ति को लोकप्रिय, यशस्वी बनाती है। हृदय रेखा तक जाने वाली सूर्य रेखा शिल्पशास्त्र में उन्नति प्रदान करती है। जीवन के जिस काल में भाग्य रेखा और सूर्य रेखा खण्डित हो तो वह समय कष्टदायक होता है।

मस्तष्क रेखा का भाग-जिसके हाथ कोमल हो सूर्य और गुरु के पर्वत उन्नत हो तो मस्तष्क रेखा के सभी दोष समाप्त हो जाता है। **मस्तष्क रेखा**- छोटी हो और शनि स्थान तक गई हो तो अकाल मृत्यु, शृंखलाकार से प्रतिज्ञाभ्रष्ट अपनी बात पर कायम नहीं रहने वाला चंचल प्रकृति, दीर्घ और बहुत पतली (सूक्ष्म) हो तो विश्वास रहित और धूर्त होता है7 जिसके हाथ में जीवन रेखा और मस्तष्क रेखा दोनों हाथों में भग्न होकर मणिबन्ध तक गई हो वह आत्मघाती होता है। मस्तष्क रेखा जीवन रेखा से जुड़ी नहीं हो तो व्यक्ति वक्ता, स्वाभिमानी, अस्थिरबुद्धि तथा कार्यदक्ष होता है।

आयु रेखा (हृदय रेखा) - यह रेखा कनिष्ठिका अंगुल के नीचे से निकलकर तर्जनी और मध्यमा के बीच में होती है। भारतीय मतानुसार यह रेखा कनिष्ठिका से कुछ दूर जाकर समाप्त हो तो आयु **20** वर्ष अनामिका तक समाप्त होतो **40** वर्ष मध्यमा के प्रारंभ में समाप्त हो तो **60** वर्ष, तर्जनी के प्रारंभ तक हो तो **80** वर्ष, इसके अंत तक हो तो **90** वर्ष की आयु निर्धारित की गयी है।

यह रेखा कनिष्ठ मूल से निकल गुरु और शनि के पर्वत तक जाती हो तो मनुष्य जीवन भर सौभाग्यशाली बना रहता है। यदि इस जगह यह रेखा द्विजीह्व दो शाखा वाली बन जाय तो व्यक्ति धर्मोन्मादी अपने धर्म में दृढ़ता रखता है। दोनों हाथों में मस्तिष्क रेखा दो शाखायुक्त होकर शनि स्थान (मध्यमांगुलि के नीचे) तक जाय तो अकस्मात् मृत्यु का योग बनता है।

जीवन रेखा का भाग-पितृ रेखा (जीवन रेखा) यह रेखा अंगूठे और तर्जनी के मध्य से निकल कर मणिबन्ध तक जाती है। यह रेखा खण्डित हो तो जीवन में असफलता ही प्रदान करती है। इस पर कोई चिह्न हो तो मनुष्य को सवारी सुख मिलता है। मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा छिन्न-भिन्न हो तो मातृ-पितृ सुख में बाधक होती है। जीवन रेखा लम्बी स्पष्ट हो तो उत्तमफलकारक, छिन्न-भिन्न रेखाओं से कटी हुई नहीं हो तो मनुष्य दीर्घ जीवी सज्जन व सच्चरित्र होता है। चिन्तित रहने का स्वभाव बना रहता है। जीवन रेखा के अन्दर मंगल क्षेत्र से मस्तक रेखा निकलने पर व्यक्ति चिड़चिड़े स्वभाव का होने से पड़ौसी व सहयोगियों से झगड़ता रहता है। यदि अंगूठे का प्रथम

पर्व (नाखून के पास) बलिष्ठ हो और गुरु क्षेत्र उठा हुआ हो तो यह दोष कम हो जाता है। तर्जनी के नीचे से निकल कर गुरु क्षेत्र पर गोलाई लिये आगे सीधी होकर हथेली को पार करने वाली रेखा से वृथाभिमानी होता हैं। यदि चन्द्रक्षेत्र की ओर रुकावट हो तथा हृदय रेखा अच्छी न हो और अंगूठा का प्रथम पर्व छोटा और मोटा होने पर जिद्दी व झगड़ालू होता है। यदि शीर्ष रेखा शनि क्षेत्र से निकलती हो तो युवावस्था में नेत्र रोग होता है। शीर्ष रेखा आरंभ में दो शाखावाली हो तथा हृदय रेखा भी आरंभ में दो शाखा की हो होती है, उतना ही आत्मविश्वास कम होता है तथा ऐसे व्यक्ति जल्दी ही नाराज हो जाते हैं। दर्शन आदि शास्त्रों में निपुण नहीं होता। शीर्ष रेखा हृदय रेखा के बहुत नजदीक होने से दमा की बीमारी होती है तथा उदारचित्त नहीं होता। शीर्ष रेखा अत्यन्त पतली व साफ दिखाई नहीं देती है तो दिमाग में कमजोरी होती है, बौद्धिक कार्यों में सफल नहीं होता। इसका अधिक गहरी होना भी अच्छा नहीं होता।

लहरदार रेखा सूर्य क्षेत्र व बुध क्षेत्र के नीचे हृदय के बहुत नजदीक हो तो पागलपन का लक्षण है। ऐसी स्थिति में बुध क्षेत्र भी उन्नत होने से व्यक्ति बेईमान होता है। शीर्ष रेखा शनि क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो आकस्मिक मृत्यु के लक्षण होते हैं। शृंखलाकार रेखा तथा द्वीपयुक्त रेखा मस्तिष्क में विकार उत्पन्न करती है। शीर्ष रेखा लम्बी, सुन्दर हो तो मंगल बुध और गुरु के क्षेत्र उन्नत हो तो आध्यात्मिक उन्नति होती है, चित्त में एकाग्रता बढ़ती है। शीर्ष रेखा लम्बी व सुन्दर होते हुए यदि अंगुलियों की गांठें निकली हुई और सबसे छोटी अंगुली बहुत छोटी हो तो व्यवहारिक कुशलता नहीं होती। शीर्ष रेखा के बीच में झुकाव व गोलाई नहीं हो तो उदारता व उपकारवृत्ति का अभाव होता है। यदि शीर्ष रेखा बिल्कुल सीधी डंडे की तरह हो तो हृदय रेखा उत्तम नहीं हो तो अपने ही भोग-विलास में व्ययकर्त्ता होता है। अन्य लोगों के लिये नहीं। शीर्ष रेखा की अन्त में दो शाखा हो जाये और चन्द्र क्षेत्र पर चली जावे तो अधिक सोच-विचार करने से दिमाग कमजोर हो जाता है या पागलपन सा प्रतीत होने लगता है। यदि दो शाखा में एक चन्द्र क्षेत्र पर और एक हृदय रेखा पर चली जाये तो प्रेम के पीछे सर्वस्व बलिदान कर बैठता है। एक शाखा तर्जनी मूल तक पहुँचे तो महत्त्वाकांक्षी प्रकट करती है। चन्द्र क्षेत्र पर दो शाखा होना अथवा अधिक झुकाव होना गुप्त विद्या की ओर झुकाव और प्रेम करने वाला, बुध क्षेत्र जाने पर विज्ञान व व्यापार में कुशलता, सूर्य क्षेत्र पर जाने से यशस्वी होने की कामना शनि क्षेत्र पर शाखा जाने पर विचार गाम्भीर्य, संगीतज्ञ व धार्मिक होना, गुरु क्षेत्र पर प्रशासन का अभिलाषी व अभिमानी होता है। शीर्ष रेखा पर काला नीला दाग सिरदर्द व मोतीझरा यदि शुक्र क्षेत्र ऊँचा हो तथा शीर्ष रेखा पर काला दाग वृद्धावस्था में बहरापन, क्रॉस व आड़ी रेखा कटी हुई शीर्ष रेखा पर सिर में चोट से बीमारी करती है। द्वीप का चिह्न हो तो मस्तिष्क की बीमारी।

हृदय रेखा-हृदय रेखा गुरु व शनि क्षेत्र से प्रारंभ होकर सीधी या कुछ गोलाई लेते हुए हथेली के अन्त तक जाती है। गुरु क्षेत्र से निकलना अधिक शुभ माना गया है। यदि अंगुलियों की जड़ से बहुत नीचे होकर जाती है और हाथ में मांसलता, वर्ण व अंगुली की गांठ आदि, शुभ लक्षण प्रतीत करती हो तो ऐसे व्यक्ति प्रेम के सम्बन्ध में अपने पर संयम बरतते हैं। प्रदर्शन नहीं होने देते यदि हाथ में शुभ लक्षण नहीं हो और यह रेखा अंगलियों के मूल से बहुत दूर होकर गुजरती है तो व्यक्ति कठोर प्रकृति का लालची व धोखे-बाज होता है। अंगुलियों के मूल से जितनी समीप होकर गुजरती है, उतना ही प्रेमाधिक्य होता है तथा ईर्ष्या व डाह की मात्रा अधिक होती है। इस रेखा में अधिक गोलाई होना भी अधिक प्रेम करने का स्वभाव बनाती है साथ ही ईर्ष्या की भी बढ़ोत्तरी करती है।

हृदय रेखा का झुकाव मस्तक रेखा की तरफ अधिक हो अथवा उसके अधिक समीप हो और चन्द्र क्षेत्र उच्च हो तो व्यक्ति के मन में कुछ और तथा बाहर कुछ और होने से दोरंगी नीति होकर झूठ बोलने की आदत बहुत होती है। हृदय रेखा टूटी-फूटी, कटी-फटी, अधिक पतली, क्रास जाल द्वीप आदि अशुभ चिह्नयुक्त हो तो अशुभफलप्रद मानी गई है, उसका प्रेम सम्बन्ध मजबूत व अधिक दिन चलने वाला नहीं होता। शृंखलाकार होने से अनुचित प्रेम सम्बन्ध को बढ़ावा देती है। हृदय रेखा और मस्तक रेखा सुन्दर शुभ लक्षण युक्त हो तथा जीवन रेखा की समाप्ति पर त्रिकोण का चिह्न हो तो व्यक्ति चतुर तथा व्यवहार कुशल होता है। हृदय रेखा व मस्तक रेखा शुद्ध

व सुन्दर नहीं हो और जीवन रेखा के अंत में त्रिकोण चिह्न हो तो वाणी में कटुता तथा निंदा करने की प्रवृत्ति होती हैं। हृदय रेखा शृंखलाकार हो, अस्पष्ट हो तथा मस्तक रेखा भी ऐसी ही हो तथा शुक्र क्षेत्र उन्नत हो तो अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध हो जाते हैं, स्त्रियों का अनेक पुरुष्ों से। गुरु क्षेत्र के ऊपर की ओर क्षेत्र के अन्दर से शाखा रहित हृदय रेखा प्रारंभ हो तो ऐसे व्यक्ति आदर्श प्रेमी होते हैं। तर्जनी और मध्यमा के बीच से हृदय रेखा निकलती हो तो कठिन परिश्रमकर्त्ता, शनि क्षेत्र के नीचे से निकलने पर आरंभ में शाखा न हो तो कामुकता अधिक होती है। शाखा हीन छोटी हृदय रेखा शनि क्षेत्र से निकलने पर अल्पायु में ही मृत्यु होती है। बुध क्षेत्र को अर्धवृत्ताकार हृदय रेखा के घेरने पर मंत्र,यंत्र तंत्रादि गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। भाग्य रेखा पर द्वीप हो हृदय रेखा की एक शाखा बुध क्षेत्र तक चली गई हो तो व्यभिचारी होने के कारण पति-पत्नी में खटपट होती रहती है। संबंध विच्छेद भी हो सकता है। हृदय रेखा की शाखाएँ नीचे की ओर मस्तक रेखा की तरफ जाने से जातक जिन से प्रेम करता है वे उससे प्रेम नहीं करते, चन्द्र क्षेत्र से लहरदार कोई रेखा हृदय रेखा से मिलती है तो हिंसात्मक प्रवृत्ति बनाती है। शनि क्षेत्र परमुडकर हुक जैसा चिह्न बनाने वाली हृदय रेखा से व्यक्ति जिससे प्रेम करता है, वह उसके प्रेम को ठुकरा देता है, अतः व्यक्ति को अत्यधिक कष्ट होता है। सूर्य क्षेत्र के नीचे इस रेखा के टूटने पर प्रेम सम्बन्ध का विच्छेद हो जाता है। बुद्ध क्षेत्र पर टूटने पर लोभ के कारण सम्बन्ध विच्छेद। हृदय रेखा के नीचे दोनों हाथों में टूटने पर हृदय रोग से मृत्यु होती है।

हृदय रेखा का भाग-चन्द्र क्षेत्र से निकली भाग्य रेखा, गुरु क्षेत्र से निकली हृदय रेखा में विलीन हो तो प्रेम सम्बन्ध हर्षमय सानन्द व्यतीत होता है। स्त्री के हाथ में भी यह योग उत्तम होता है। हृदय रेखा पर छोटी-छोटी आड़ी-रेखाएँ निराशाजनक प्रेम बिन्दु होने पर हृदय रोग, परन्तु सफेद बिन्दु सफल प्रेम सम्बन्ध बनाता है। शनि क्षेत्र के नीचे सफेद बिन्दु होने पर कृपण, लम्बी श्यामवर्ण की स्त्री से विवाह होने का लक्षण है। सूर्य क्षेत्र के नीचे होने से कलाकार उच्च कुल की स्त्री की प्राप्ति होती है। बुध क्षेत्र पर क्रॉस के चिह्न की एक रेखा हृदय रेखा को काटने पर व्यापार में भारी नुकसान की द्योतक है। हृदय रेखा की कोई शाखा चन्द्र क्षेत्र पर जाकर तारे का चिह्न बनाती हो तो अतृप्त काम-वासना से हिस्टीरिया या हृदय रोग उत्पन्न होता है। हृदय रेखा पर वृत्त का चिह्न या द्वीप का चिह्न अनुचित प्रेम सम्बन्ध बनाता है। सूर्य क्षेत्र के नीचे हृदय रेखा पर द्वीप का चिह्न नेत्र ज्योति पर आघात करता है तथा वृद्धावस्था में अंधेपन का द्योतक होता है।

जीवन रेखा का भाग-गुरु क्षेत्र उन्नत हो और आकार में बड़ा हो और तर्जनी अधिक लम्बी हो तथा उंगलियों के तृतीय पर्व पुष्ट व फैले हुये हों तो स्वच्छ जीवन रेखा होते हुये भी व्यक्ति अत्यधिक भोजन करने व मदिरापान करने से स्वास्थ्य को खराब करता रहता है। यदि हथेली का वर्ण लाल हो तो ज्यादा स्वास्थ्य खराब होता है। अधिक भोजन व मदिरापान से रक्तचाप मूर्छा चक्कर आना मंगल क्षेत्र उन्नत होने पर भी उपर्युक्त दोष पाये जाते हैं। चन्द्र बुध या शनि के क्षेत्र उन्नत होने से संयमित जीवन व्यतीत करते हैं जीवन रेखा दोषयुक्त हो और शनि क्षेत्र बड़े आकार का हो तो दुःखी होकर आत्महत्या करने की इच्छा हो जाती है।

शीर्ष रेखा का भाग- शीर्ष रेखा पर कहीं भी तारे का चिन्ह हो तो मस्तक पर चोट लगती है यदि तारे का चिन्ह इस रेखा पर दोनों हाथों में हो तो चोट के कारण मृत्यु भी हो सकती है। मस्तक (शीर्ष रेखा) पर त्रिकोण का चिन्ह किसी दुर्घटना व विपत्ति से रक्षा करता हे शीर्ष रेखा के अन्त में बहुत बड़ा द्वीप चिन्ह हो तो अंतड़ियों का रोग होता है, शीर्ष रेखा मणीबन्ध तक जाती हो अन्त में तारे का चिन्ह हो तो प्रबल भाग्योदय का लक्षण है। किसी स्त्री के हाथ में मस्तक रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटकर आगे निकल जाय तो मस्तक व स्वास्थ्य रेखा के योगपर तारे का चिन्ह हो तो वन्ध्या या प्रसव काल में भयंकर कष्ट होता है।

यदि शुक्र क्षेत्र के मूल से रेखाऐं निकलकर जीवन रेखा और मस्तक रेखा दोनों को काटती हो तो कौटुम्बिक परिस्थिति के कारण आर्थिक कष्ट होता है यदि शीर्ष रेखा (मस्तक रेखा) जीवन रेखा हृदय रेखा तीनों प्रारम्भिक स्थान पर मिली हुई हों तो अचानक मृत्यु होती है। यदि मस्तक रेखा चन्द्रक्षेत्र पर स्वास्थ्य रेखा को काटकर आगे बढ़

जाय तो कल्पना अधिक बढ़ जाने से पागलपन का रोग बन जाता है। मस्तक रेखा के खण्डित होने से शिर में चोट लगती है, जगह-जगह टूटने पर सिरदर्द की बीमारी होती है।

शीर्ष (मस्तक) रेखा का भाग- मस्तक रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र तक सीधी हो और वहां से मुड़कर ऊपर की ओर जाती हो तो व्यापार में अधिक सफलता मिलती है। मस्तक रेखा का हृदय रेखा के अधिक समीप हो दोनों में अन्तर कम हो तो दमा का रोगी व ओछापन प्रगट करता है।

अकस्मात् (अचानक) द्रव्य प्राप्ति के योग- 1 सूर्य रेखा भाग्य रेखा से निकलती हो और मस्तिष्क रेखा पर अनेक त्रिकोण हों। 2 भाग्य रेखापर त्रिकोण हो। 3 भाग्य रेखा के समानान्तर रेखा हो। 4 दो सूर्य रेखा हों। 5 शुक्र पर्वत पर जीवन रेखा के समानान्तर निर्दोष रेखा हो और मध्यमा व अनामिका की लम्बाई बराबर हो तो लाटरी या सट्टे से द्रव्य प्राप्ति होती है। 6 सूर्य रेखा के आरम्भ में त्रिकोण हो जीवन रेखा पर त्रिकोण होने पर पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलता है। 7 मस्तिष्क रेखा के साथ-साथ सहायक रेखा चले तो वसीयत से धन लाभ। 8 जीवन रेखा से छोटी रेखा निकलकर मस्तक रेखा से मिले। 9 हृदय रेखा के मध्य में त्रिकोण हो। 10 प्रथम मणिबन्ध पर स्टार (नक्षत्र)का चिन्ह हो या त्रिकोण का चिन्ह हो।

सौभाग्य कारक योग- सीधा लम्बा अंगूठा, सीधी उंगलियां, मध्यमा और अनामिका बराबर, सभी मुख्य रेखा पतली और गहरी, जीवन रेखा और मस्तक रेखा उद्गम स्थान से थोड़ी मिली हुई हो। भाग्य रेखा और सूर्य रेखा के अन्त में दो शाखा हो। जीवन रेखा से ऊर्ध्वमुखी रेखा गुरु,शनि व सूर्य पर्वत की ओर जाती हो। अंगूठे मध्य जोड़ पर द्वीप का चिन्ह हो। चन्द्रपर्वत पर मछली का चिन्ह हो। इन योगों की संख्या जितनी अधिक हो उतना ही सौभाग्य कारक योग उत्तरोत्तर उत्तम होता है।

धनसम्पति के योग

भाग्य रेखा के समानान्तर चलने वाली जितनी रेखा हों उतने ही आय के साधन समझने चाहिये। किन्तु भाग्य रेखा अत्यन्त निकट रेखा कुठार रेखा होती है वह संघर्षमय समय बनाती है। 1 चन्द्रपर्वत से भाग्य रेखा निकलकर शनि पर्वत पर जाना। 2 भारी हाथ, निर्दोष और गोलाकार जीवन रेखा का होना। 3 भाग्य रेखा पतली व लम्बी होना। 4 सूर्य रेखा हो और हृदय रेखा पर त्रिकोण हो। 5 जीवन रेखा की शाखा गुरु पर्वत पर जाती हो। 6 जीवन रेखा पर त्रिकोण हो। 7 दो शाखा मस्तिष्क रेखा के प्रारंभ में हो एक शाखा गुरु पर्वत पर जाती हो। 8 दो मस्तक रेखा हों तो धनागम के लिये शुभ, यदि दोनों मस्तक रेखा मिलकर द्वीप बनाती हों तो संघर्ष के बाद द्रव्य प्राप्ति होती है। 9 मस्तक रेखा पर ऊपर नीचे अलग-अलग त्रिकोण हो। 10 मणिबन्ध की ३ रेखा स्पष्ट दिखती हों। 11 हथेली पर मछली का चिन्ह हो उसकी पूँछ मणिबन्ध की ओर तथा मुंह उंगलियों की ओर होने से विद्या और धन दोनों की प्राप्ति होती है। 12 गुरु पर्वत पर त्रिशूल हो। 13 शुक्र पर्वत से सूर्य पर्वत पर रेखा जाती हो। 14 अंगूठे के मध्य की गाँठ के जोड़ पर यव माला या द्वीप हो।

उपर्युक्त योगों का कितने वर्ष की अवधि में होगा इसका विचार भाग्य रेखा के विभाजन से होता है उसका दिग्दर्शन हाथ में बनी भाग्य रेखा के वर्ष गणना के आधार पर होता है। जीवन रेखा और भाग्य रेखा जहाँ मोटी हो वहाँ अधिक ऋण माथे पर होता है जहाँ पतली हो वहाँ ऋण मुक्ति होती है।

भाग्य रेखा:-

समुद्रऋषि के मतानुसार भाग्य रेखा अंगूठे और तर्जनी के बीच में जाकर समाप्त हो और अखंडित व बलवान होने से नृपतितुल्य वैभव प्रदान करती है तर्जनी के मूल में समाप्ति से राज्याधिकार, मध्यमा के मूल तक समाप्ति से तथ अनामिका के मूल तक समाप्ति से धनाढ्य, कानिष्ठका के मूल तक सुखी व सौभाग्यशाली बनाती है। कटी फटी टूटी या दोषयुक्त नहीं होने पर ही पूर्णा फलप्रद होती है। पाश्चात्य मतानुसार:-

मणिबन्ध की तृतीय रेखा से प्रारंभ होना भारी शोक प्रदर्शित करती हैं प्रथम रेखा मणिबन्ध से प्रारंभ होने

वाली बचपन से ही अपना तथा कुटुम्बी जनों की बोझा सिर पर डाल देती है। तथा ये रेखा हृदय रेखा तक जाती है तो प्रेम सम्बन्ध में बाधा अथवा रोगी बनाती है। शनि क्षेत्र तक जाने वाली भाग्य रेखा गहरी हो तो गम्भीरता दूरदर्शिता तथा वृद्धावस्था में पूर्ण भाग्योदय करती है। करतल के नीचे से प्रारंभ होने वाली भाग्य रेखा से स्वावलम्बी जीवन प्रदान करती है।

यदि चन्द्रक्षेत्र से निकलकर शनि क्षेत्र तक जाती हो तो किसी स्त्री की सहायता से भाग्योदय होता है या विवाहोत्तर भाग्योदय होता है। स्त्री के हाथ में यह रेखा उच्च कुल में विवाह होना तथा धन्धे में पुरुष के सहयोग से लाभ होता है। शुक्रक्षेत्र से निकलने पर सगे सम्बन्धियों के सहयोग से भाग्योदय यदि जीवन रेखा से सटकर निकलती है तो स्वावलम्बी जीवन स्वयं के पुरुषार्थ से भाग्योदय में कुटुम्ब के लोग सहायक होते हैं। हथेली के मध्य से निकलने वाली मध्यावस्था में भाग्योदय प्रद होती है। केवल शनि क्षेत्र पर ही भाग्य रेखा से 50 वर्ष के बाद परिपूर्ण भाग्योदय होता है। यदि भाग्य रेखा जिस जगह अधिक गहरी हो वहां तक के वर्षों में विशेष उन्नति होती है। हल्की दूरी लहरदार जहाँ हो वह समय भाग्योदय के बाधक होती है बार-बार धन्धा बदलना परिश्रम अधिक तथा लाभ कम होना आदि योग बनते हैं। भाग्यरेखा से ऊपर की ओर उठने वाली रेखा उन्नति कारक नीचे की ओर जाने वाली रेखा कठिनता व निराशा उतपन्न करती है।

भाग्य रेखा के प्रारंभ में द्वीप का चिह्न माता पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर होने का संकेत करता है यदि शुक्र क्षेत्र से निकलकर कोई रेखा उस द्वीप से योग करे तो आर्थिक स्थिति में ज्यादा गिरावट दर्शाती है। भाग्य रेखा जीवन रेखा से निकली छोटी अर्गला रेखाओं से कटी हुई भाग्य में रुकावटें पैदा करती हैं। भाग्य रेखा को काटने वाली रेखा मस्तक रेखा से निकलती हो तो गलत निर्णय लेने से भाग्य हानि, हृदय रेखा से निकलकर भाग्यरेखा को काटने से काम धन्धे में रुकावट, उत्पन्न करती है। टूटी हुई भाग्य रेखा लहरदार रेखा या अशुभ चिह्न से दूषित भाग्य रेखा वर्ग के चिह्न में होकर आगे बढ़े तो भाग्य हानि के दोष को दूरकर अभ्युदय प्रदान करती है। जीवन रेखा से निकलने वाली भाग्यरेखा गहरीव पृष्ट होकर गुरुक्षेत्र तक जाती है तो किसी सम्बन्धी की सहयाता से महत्वाकांक्षा सफल होती हैं। यदि चन्द्रक्षेत्र से निकलकर गुरुक्षेत्र पर जाने से स्त्री वर्ग भाग्यवृद्धि में सहायक होता है। भाग्य रेखा से एक शाखा निकल कर सूर्य क्षेत्र में जावे तो जातक कला व्यापार आदि में सफलता प्राप्त करता है। बुध के क्षेत्र पर जाने से वाक चातुर्य से व्यापार में लाभ होता है। भाग्य रेखा शनि व गुरु क्षेत्र पर स्पष्ट हो तो वृद्धावस्था में द्रव्य प्राप्ति अधिक होती है। परन्तु वहाँ क्षेत्र पर बिन्दु कॉस जाल हो तो वृद्धावस्था में अधिक कष्ट होता है।

सूर्यरेखा - विवेक विलास ग्रन्थ के आधार पर अनामिका के प्रथम पर्व पर पतली लम्बी सूर्यरेखा प्रभुत्व प्रदान करती है पाश्चात्य मतानुसार मणिबन्ध से निकलकर सूर्य क्षेत्र तक सीधी अखण्डित सूर्य रेखा से व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान होने से जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है यश मान प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन यापन करता है। यदि सूर्य रेखा मस्तक रेखा और हृदय रेखा के बीच में हो तो 35 से 50 वर्ष तक जीवन विकसित रहता है। जीवन रेखा से निकलकर सूर्यक्षेत्र पर जाने वाली सूर्य रेखा, भाग्य रेखा से निकलकर सूर्यक्षेत्र पर जाने वाली मणिबन्ध से सूर्यक्षेत्र तक जाने वाली सूर्यरेखा अति उत्तम मानी जाती है। अंगुलियों के प्रथम पर्व (नाखून की जड़ से सटा हुआ) लम्बे हों और सूर्यरेखा हाथ में हो तो कलाकार, दूसरे 2/3 पर्व लम्बे होने से धन कमाने की क्षमता विशेष पाई जाती है। सूर्य रेखा चौड़ी, उथली हुई कमजोर तथा लहरदार शृंखलाकार हो तो उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होता। सूर्य रेखा के अन्त में तारे के चिह्न होने से वृद्धावस्था में अधिक मान प्रतिष्ठा होती है। द्वीप चिन्ह से कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है यदि साथ में अनामिका अंगुली मध्यमा के बराबर हो तो सट्टेबाज होता है। यदि अनामिका अंगुली का 3 रा पर्व (अंगुली का मूलभाग) लम्बा व मोटा हो तो साधारण सट्टेबाज होगा। कनिष्ठका टेडी हो तो बेईमानी से धन और यश कमाता है। सूर्य रेखा पर बिन्दु का चिन्ह गहरा हो तो बदनामी होती है। हल्के बिन्दु से कानाफुसी होकर बदनामी रूक जाती है। सूर्य रेखा के आरंभ और अन्त में तारे का चिन्ह होने से आजीवन सफलता मिलती रहती है। रेखा के अन्त में क्रॉस द्वीप पर चिन्ह होने से अनुमान गलत हो जाते हैं जिससे सफलता नहीं मिलती

उलटा नुकसान हो जाता है। उनमें दो शाखा वाली सूर्य रेखा होने से अनेक प्रकार से लाभ होता रहता है। सूर्य रेखा पर हल्की सी खड़ी रेखा में शुभफल प्रद तथा आड़ी रेखाओं से कटने पर अशुभ फल होता है। हल्की रेखा नीचे की ओर होने से विशेष परिश्रम द्वारा फल प्राप्ति होती है। सूर्य रेखा की शाखा शनि क्षेत्र पर जाती हो बुद्धिमान व मितव्ययी होता है। अगर अंगूठा बहुत मजबूत हो तो अत्यंत कंजूस होता है। सूर्य रेखा की शाखा बुधक्षेत्र पर जाने से और कनिष्ठका केमूल (प्रथम पर्व) के लम्बे होने से अच्छा लेखक व वक्ता यदि कनिष्ठका का 2 रा पर्व लम्बा हो और बुध क्षेत्र पर कई खड़ी रेखा हो तो डॉक्टर 3 रा पर्व लम्बा हो तो खूम धन कमाने वाला यदि कनिष्ठका मुड़ी हुई व टेड़ी हो तो बेईमानी से द्रव्य कमाता है। सूर्य रेखा की शाखा मस्तक रेखा तक जाने से अपनी बुद्धिमानी से सफलता, हृदय रेखा तक जाने से मित्रों के सहयोग से द्रव्य प्राप्ति होती है।

स्वास्थ्य रेखा – इसको बुध रेखा भी कहते हैं। चन्द्र क्षेत्र से या हथेली के नीचे किसी भाग से निकलकर जो रेखा बुध के क्षेत्र की जाती है। वह स्वास्थ्य रेखा बुध रेखा कहलाती है। सब लोगों के हाथ में स्वास्थ्य रेखा दिखाई नहीं देती इसका नहीं दिखना पूर्ण स्वस्थ होने का लक्षण है। यदि यह रेखा लम्बी सुन्दर दोष रहित हो तब भी स्वास्थ्य उत्तम रहता है। स्वास्थ्य रेखा खण्डित व दूषित होने से जिगर व पेट की खराबी रहती है स्वास्थ्य रेखा का भाग्य रेखा या जीवन रेखा अथवा इस दोनों मध्य से निकलना रहती है स्वास्थ्य रेखा का भाग्य रेखा या जीवन रेखा अथवा इस दोनों मध्य से निकलना अशुभ है परन्तु जीवन रेखा से निकली हुई कोई रेखा स्वास्थ्य रेखा से मिल जाय तो वह शुभफल करती है।

स्वास्थ्य व रोग- दानों हाथों की जीवन रेखा, मस्तक रेखा, हृदय रेखा छोटी होने से असाध्य रोग की सूचना देती है। जीवन रेखा की समाप्ति पर उसे आड़ी रेखा से काटने पर अनिष्ट कारक सूचना मिलनी है। तथा समाप्ति स्टार या का चिन्ह भी अनिष्टकारक यदि जीवन रेखा अशुभ चिन्हों को पार कर आगे बढ़ जाती है आगे जीवन की आशा प्रबल रहती है जीवन रेखा और स्वास्थ्य रेखा का संगम जिस अवस्था में हो वहीं तक जीवन समझना चाहिये। हृदय और जीवन रेखा गहरी व लम्बी होने पर दीर्घायु, इनके दूषित होने पर शुक्र पर्वत यदि विकसित हो तो इनके दोष की निवृत्ति हो जाती है। यदि माणीबन्ध की रेखा कटी या अधूरी हो तो अल्पायु योग बनता है। हाथ पर अधिक रेखाऐं मानसिक तनाव रखती है। जीवन रेखा मंगल क्षेत्र से निकलने पर पेट में अम्लता जीवन रेखा गुरु पर्वत के नीचे टूटने पर आंतों का रोग जीवन रेखा दूषित हो दूषित भाग्य रेखा हृदय रेखा पर रुकने पर दिल की बीमारी दोषयुक्त हृदय रेखा पर चतुष्कोण बनने पर इसका दोष दूर हो जाता है सूर्य पर्वत से हृदय रेखा निकलने पर आर्थिक कष्ट व दाम्पत्य जीवन कष्ट कारक होता है। हृदय रेखा मस्तक रेखा का अधिक समीप हो स्वास्थ्य रेखा टूटी हो तो श्वास की (दमे की) बीमारी होती है। स्त्री की मस्तक रेखा चन्द्र क्षेत्र की ओर झुके और शुक्र पर्वत उन्नत हो तो हिस्टीरिया की बीमारी यदि अंगूठा न्यून कोण बनाता हो तो यह बीमारी निश्चित होती है। मस्तक व हृदय रेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे द्वीप दोनों होथों में होने पर नेत्र रोग, शनि पर्वत के नीचे इन रेखाओं पर द्वीप होने से बात व्याधि दांत व हड्डी सम्बन्धी बीमारी जोड़ों में दर्द पक्षाघात की बामारी होती है। मस्तक रेखा छोटी रेखाओं से कटने पर शिरदर्द की बीमारी मस्तक रेखा व स्वास्थ्य रेखा के योग पर स्टार का चिन्ह तथा शुक्र पर्वत पर भी स्टार का चिन्ह हो जाता है। तो श्रेष्ठ स्वास्थ्य से स्मरण शक्ति प्रबल, बुध पर्वत पर स्वास्थ्य में द्वीप हो तो पेट की खराबी स्वास्थ्य रेखा लहरदार से या जगह-जगह टूटने से अपचन व जिगर के रोग, मस्तक रेखा बहुत ज्यादा झुकी हुई चन्द्र पर्वत पर जाने से आत्महत्या की प्रवृत्ति बनती है। शुक्र पर्वत दूषित होने से यौन सम्बन्धी बीमारी, सूर्य पर्वत पर द्वीप से आंखों की बीमारी चन्द्र पर्वत पर स्टार के चिन्ह से मानसिक आघात से बीमारी होती है।

नाखूनों से रोग का निर्णय- बड़े चमकीले गुलाबी रंग के नाखून होने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है कछुवे की पीठ की तरह उभरे नाखूनों से फेफड़े की बीमारी, नाखूनों पर आड़ी धारियां होने पर मानसिक आघात, सफेद नाखून होने से अहंकारी, पीले नाखून से जिगर की खराबी, नीले नाखून से फफड़े की बीमारी छोटे नाखून होने से स्नायु सम्बन्धी रोग, चौड़ा कम लम्बाई अधिक नाखून होने शारीरिक शक्ति कमजोर, थोड़ा परिश्रम करने पर ही

थकान का अनुभव होता है। ऐसे नाखून बालों को रीड की हड्डी की बामारी की भी आशंका बनती है।

जीवन रेखा से गुरु पर्वत की ओर गई शाखा पर स्टार का चिन्ह होने पर परिवार में किसी व्यक्ति का अनिष्ट होता है। दो शाखा वाली आरम्भ में जीवन रेखा की एक शाखा शुक्र पर्वत को घेरती हो दूसरी शाखा कलाई की ओर जाने से बचपन में व्यक्ति अन्य के संरक्षण में पलता है तथा यह योग विदेश यात्रा का भी बनता है। जीवन रेखा के निकट भाग्य रेखा जिस उम्र में हो उस समय पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ती है। जीवन रेखा से लगता हुआ भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह पारिवारिक स्थिति खराब करता है। मस्तक व जीवन रेखा दूर तक मिली हुई चलने से तब तक के समय तक व्यक्ति विषम परिस्थिति में गुजरता है।

विवाह रेखा - बुध पर्वत के बाहिरी भाग से आरम्भ होकर बुध पर्वत जो कनिष्ठिका के मूल में होता है उस पर जाने वाली विवाह रेखा (काम भाव की रेखा)कहलाती है। प्रेम तथा दाम्पत्य जीवन के सम्बन्ध में विचार करने के पूर्व विवाह रेखा, भाग्य रेखा में चन्द्र व शुक्र पर्वत से आने वाली रेखा, गुरु पर्वत पर क्रास मंगल रेखा हृदय मस्तिष्क जीवन और सूर्य रेखा पर दृष्टि डालनी चाहिये।

विवाह रेखा 1 हो और शुक्र पर्वत विकसित हो तो विवाह होता है। 2 रेखा होने पर कनिष्ठिका के पास की रेखा छोटी होने पर विलम्ब से विवाह होता है। विवाह की आयु निश्चित करने में चन्द्र ओर शुक्र पर्वत से भाग्य रेखा में आकर मिलने वाली रेखा सहायक होती है। कनिष्ठिका मूल से हृदय रेखा तक के अन्तर को 50 वर्ष का मान कल्पना कर इस बीच में विवाह रेखा की स्थिति से विवाह का समय ज्ञात करना चाहिये जैसे कनिष्ठका मूल और हृदय रेखा के ठीक मध्य भाग विवाह रेखा होने पर 25 वर्ष की आयु में विवाह योग समझना तथा कनिष्ठका के मूल के अत्यन्त निकट होने से अधिक उम्र में हृदय रेखा के निकट होने से कम उम्र होने पर लगभग 15 से 25 वर्ष की अवस्था में विवाह योग बनता है। विवाह रेखा 2 होने पर 2स्त्रियों से सम्पर्क 3 हो तो 3 स्त्रियों से सम्पर्क होता है इनमें जो बड़ी रेखा हो व विवाह अन्य छोटी रेखा यौन सम्बन्ध की होती है। कनिष्ठिका लम्बी हो बुध व शुक्र के पर्वत पुष्ट हों तो यौन सम्बन्ध प्रबल होता है।

विवाहित जीवन के सुखमय होने के योग- **1** गुरु पर्वत से हृदय रेखा का प्रारम्भ होना **2** हृदय रेखा आरम्भ में शाखा की हो। **3** भाग्य रेखा पतली और गहरी हो। **4** दोनों अंगूठे के मध्य की विभाजक रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो। **5** स्त्री के दोनों हाथों में हृदय रेखा पतली लम्बी गहरी और शाखा युक्त हो। **6** हृदय रेखा सूर्य पर्वत पर जाने वाली शाखा। **7** दो मस्तिष्क रेखा समानान्तर हों। **8** दो हृदय रेखा में एक हृदय रेखा चन्द्र पर्वत की ओर हो।

अनिष्टकारी विवाह तथा प्रेम सम्बन्ध कष्टकारक योग - **1** विवाह रेखा का झुकाव हृदय रेखा की तरफ हो। **2** विवाह रेखा या उसकी शाखा हृदय रेखा का स्पर्श करती हो। **3** विवाह रेखा अन्त में दो शाखा की हो अथवा अन्त में द्वीप का चिन्ह हो। **4** विवाह रेखा पर या नक्षत्र (स्टार) का चिन्ह हो। **5** अंगूठे का ऊपरी भाग गदा की तरह मोटा अथवा चिपटा हो या अंगूठा छोटा हो। **6** जीवन रेखा से ऊपर की ओर उठी हुई रेखा को मंगल रेखा काटती हो। **7** चन्द्र पर्वत के द्वीप से आरम्भ भाग्य रेखा मोटे आकार की मस्तक रेखा पर रुक जाय। **8** हृदय रेखा शनि पर्वत से आरम्भ हो और तर्जनी छोटी हो। **9** दूषित मस्तक रेखा को हृदय की गहरी शाखा गुरु पर्वत के नीचे काटती हो। **10** तर्जनी के मूल से निकली हृदय रेखा की शाखा मस्तिष्क रेखा तक जाती हो। **11** भाग्य रेखा में चन्द्र पर्वत से निकली रेखा मिलती हो। **12** हृदय रेखा शाखा ही न हो।

विवाह रेखा - कनिष्ठिका और हृदय रेखा के बीच में जो छोटी गहरी रेखा बुध के पर्वत पर कनिष्ठिका के नीचे के भाग में विवाह रेखा होती है। विवाह रेखा जितनी गहरी और बिना टूट फूट की हो तो दाम्पत्य जीवन सुखमय, यदि रेखा बीच में टूट गई हो तो सम्बन्ध विच्छेद व मृत्यु की सूचक है। कई जगह टूटने पर सम्बन्ध विच्छेद बार-बार होते रहते हैं। कोई पतली सी रेखा शुक्रस्थान से निकल कर विवाह रेखा में आकर मिले तो पत्नि परेशानी की जड़ बन ताजी है। सूर्यस्थान से कोई पतली रेख्रा विवाह रेखा में आकर मिले तो सब प्रकार से सुख शान्ति, और सन्तोष के लक्षण होते हैं। विवाह रेखा फांकदार होने से पति-पत्नी के बीच मनोमालिन्य बना रहता है।

सन्तान रेखा - सन्तान रेखा का विचार दो स्थानों से किया जाता है एक शुक्रक्षेत्र के कर पृष्ठ की ओर का भाग उससे तथा दूसरा स्थान विवाह रेखा पर जो अति सूक्ष्म रेखाओं से विचार होता है। परन्तु अंगुष्ठ के नीचे भाग पर कर पृष्ठ की ओर निकली रेखाओं से सन्तान संख्या का निर्णय अधिक मान्य है रेखा कटी-टूटी हुई व पतली सी सन्तान की मृत्यु की सूचक लम्बी व गहरी स्पष्ट रेखा जीवित सन्तान की होती है। भविष्य पुराण में इसका संकेत मिलता है।

वसीयत लाटरी अथवा अकस्मात् धन प्राप्ति - शनि रेखा से सूर्य रेखा निकले और मस्तिष्क रेखा पर अनेक त्रिकोण हों। शनि रेखा पर त्रिकोण हो शनि रेखा के समानानन्तर रेखा कुछ दूरी पर हो। शरीर रेखा के समानान्तर रेखा अधिक निकट शनि रेखा के हो उसे कुठार रेखा कहते हैं यह अशुभ फल कारक होती है। सूर्य रेखा 2 हों। मध्यमा और अनामिका बराबर हों और शुक्र पर्वत पर जीवन रेखा के समानान्तर रेखाऐं निर्दोष हों। सूर्य रेखा का आरम्भ त्रिकोण से हो। जीवन रेखा पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो पिता पक्ष से धन मिलता है। मस्तिष्क रेखा पर त्रिकोण का चिन्ह मातृपक्ष से धन की प्राप्ति करवाता है। जीवन रेखा से छोटी रेखा निकलकर मस्तिष्क रेखा से मिले। हृदय रेखा के मध्य में त्रिकोण हो। हृदय रेखा से सूर्य रेखा पर शाखा जाती हो। चन्द्रपर्वत की प्रभाव रेखा सूर्य रेखा के साथ चलकर सूर्य रेखा को स्पर्श करें। इन सब योगों में अचानक द्रव्य की प्राप्ति होती है।

संतान - जीवन रेखा से शनि पर्वत की ओर जाने वाली रेखा सन्तान प्रद होती है। जिस जगह से जीवन से रेखा निकलती हो उस अवस्था में सन्तान योग बनता है। हृदय रेखा के ऊपर व नीचे दो त्रिकोण से वर्गका चिन्ह बनता हो तो सन्तान अवश्य होती है। शनि रेखा शनि पर्वत पर दो शाखायुक्त होकर एक शाखा गुरु पर्वत पर जाय तो सन्तान अवश्य होती है।

सन्तान बाधक - द्वीपयुक्त जीवन रेखा शुक्र पर्वत पर घेराकम करे, मोटी शनि रेखा हृदय रेखा पर रुके तो पुत्र सन्तति में बाधा जीवन रेखा के साथ कुठार (मुख्य रेखासे अत्यन्त सटी हुई रेखा) रेखा हो। शनि क्षेत्र में मस्तिष्क रेखा में द्वीप हो। दुहरी मस्तिष्क रेखा के सिरे मिलकर द्वीप का चिन्ह बनाये। हृदय रेखा शाखा द्वीप हो जीवन रेखा सीधी होकर शुक्र पर्वत पर जाती हो। शुक्र पर्वत पर मंगल रेखा की समानान्तर रेखायें टूटी फूटी हो।

पुरुष के बांये हाथ की हृदय रेखा उसकी पत्नी के विषय में स्त्री दायें हाथ की हृदय रेखा उसके पति के विषय में पुरुष के बांये हाथ की मस्तिष्क रेखा उसकी सास और जीवन रेखा ससुर के विषय में, स्त्री के दायें हाथ की मस्तिष्क रेखा उसकी सास के विषय में तथा जीवन रेखा ससुर के विषय में शुभाशुभ पुल की द्योतक होती है। शुभलक्षण युक्त तत्सम्बन्धी सुख व अशुभ लक्षण युक्त अशुभफलप्रद होती है।

माता पिता का संरक्षण - गुरु पर्वत से आरम्भ होनेवाला जीवन रेखा व्यक्ति को माता पिता या संरक्षक से भरपूर प्यार दिलाती है। गुरु पर्वत की प्रभाव रेखा मस्तिष्क रेखा का स्पर्श करती हो तो माता का सुख चिर काल तक रहे। हृदय रेखा का आरम्भ कई शाखाओं से हो तो माता-पिता दीर्घायु होते हैं।

माता पिता व संरक्षक के सुख से वंचित - जीवन रेखा आरम्भ में द्वीप युक्त हो, या दो शाखा वाली हो, या आरम्भ में क्रास का चिन्ह हो। जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा के आरम्भ में स्टार हो तो बचपन में परिवार में अनेक दुःखद समाचार मिलते हैं।

विवाह सम्बन्धी विचार - गुरु पर्वत के केन्द्र में क्रास चिन्ह हो तो रीति रिवाज के अनुसार आयु में विवाह होता है। गुरु पर्वत पर तर्जनी के आधार के निकट क्रास का चिन्ह हो तो देर से विवाह होता है। गुरु पर्वत पर जीवन रेखा के निकट क्रास का चिन्ह हो तो विवाह शीघ्र, अर्थात् रीति रिवाज के अनुसार विवाह के वर्षों के पूर्व ही होता है।

विवाहित जीवन सुखमय - हृदय रेखा गुरु पर्वत से आरम्भ हो, हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा की शाखा गुरु पर्वत की आरे हो। हृदय रेखा के आरम्भ में तीन शाखाऐं हो। हृदय रेखा की शाखाऐं अंगुलियों के पर्वत की आरे जाय। स्त्री के दोनों हाथों की हृदय रेखा पतली और गहरी शाखायुक्त हो तो पति व सन्तान का सुख चिर काल तक। हृदय रेखा की शाखाऐं सूर्य पर्वत की आरे जाये तो सुखी परिवार में विवाह योग बनाती है। अच्छी विवाह रेखा के साथ शुक्र पर्वत पर स्टार का चिन्ह हो तो धनी परिवार में विवाह होता है। दो मस्तिष्क रेखाएँ अलग-अलग होने पर भी धनी परिवार में विवाह होता है।

वैवाहिक जीवन कष्टप्रद - विवाह रेखा में क्रास या स्टार होना। अंगूठा छोटा हो। अंगूठे के दो पोरों के मध्य की रेखा टूटी-फूटी हो। विवाह रेखा का झुकाव हृदय रेखा की तरफ हो। विवाह रेखा दो शाखाशुक्त हो या द्वीप युक्त हो। शनि रेखा मोटी हो और चन्द्र पर्वत के द्वीप से आरम्भ हो क मस्तिष्क रेखा पर रुकती है। हृदय रेखा शनि पर्वत से आरम्भ हो उसके साथ तर्जनी छोटी हो तो दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होता। तर्जनी के आधार से हृदय रेखा आरम्भ हो तो प्रेम सम्बन्ध निराशा जनक होता है। यदि ऐसी हृदय रेखा की शाखा मस्तिष्क रेखा तक पहुँचे तो तलाक की सम्भावना होती है। शनि रेखा पर द्वीप का चिन्ह या स्टार हो तो जीवन साथी से सुख नहीं मिलता शनि रेखा को भाग्य रेखा कहते हैं। भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा पर रुके जीवन रेखा सीधी า अधूरी हो और तर्जनी छोटी हो तो जीवन साथी पर संकट पैदा होता है।

धार्मिक प्रवृत्ति तथा गुप्त विद्याएँ - मध्यमा अंगूली लम्बी हो। शनि पर्वत विकसित हो गठीली अंगूलियाँ हों। शनि पर्वत पर त्रिकोण हो हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा मध्य शनि व गुरु पर्वत के नीचे क्रॉस का चिन्ह हो अथवा डमरु का चिन्ह हो हृदय रेखा या गुरु पर्वत पर त्रिकोण हो। हृदय रेखा की शाखा तर्जनी तक जाती है। सूर्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से निकली हो गुरु मुद्रिका या शुक्र मुद्रिका हाथ में हो। उपर्युक्त सब योगों से आध्यात्मिकवृत्ति, योगविद्या, यंत्र तंत्र ज्यौतिष, हस्तरेखा विज्ञान मनोविज्ञान सन्सास योगों में से कोई योग हो उसकी प्राप्ति होती है। भाग्य रेखा पर द्वीप से निकलती हो। हृदय रेखा टूटी-फूटी हो। शुक्र पर्वत के केन्द्र में क्रॉस का चिन्ह हो। हृदय रेखा तर्जनी के मूल से निकलती हो। इन सब योगों मे स्त्री पुरुष के प्रेम में बाधा बनी रहती है।

सम्बन्ध विच्छेद - विवाह रेखा हृदय रेखा में मिलती हो। विवाह रेखा पर द्वीप हो भाग्य रेखा पर द्वीप हो। हृदय रेखा की शाखा मस्तिष्क रेखा में लिती हो मंगल रेखा पर द्वीप हो। हृदय रेखा की मोटी शाखा भाग्य रेखा का स्पर्श करे। भाग्य रेखा अनेक स्थानों पर टूटी हो। भाग्य रेखा के टूकड़े एक दूसरे पर चढ़े हों। शुक्र पर्वत की प्रभाव रेखा मस्तिष्क रेखा पर पहुँच कर दो शाखायुक्त हो।